جامع سُنن ترمذی

تالیف : الاما حافظ ابوعیسیٰ محمد بن عیسیٰ الترمذی رحمہ اللہ

जामेअ सुनन तिर्मिज़ी

मय शरह

तालीफ़

इमाम हाफ़िज़ अबू ईसा मुहम्मद बिन ईसा अत्तिर्मिज़ी (रह.)

तहक़ीक़

अल्लामा नासिरूद्दीन अल्बानी (रह.)

तख़रीज

फ़ज़ीलतुश्शैख़ हाफ़िज अबू सुफ़यान मीर मुहम्मदी

उर्दू तर्जुमा

फ़ज़ीलतुश्शैख़ मौलाना अली मुर्तज़ा ताहिर

ज़िल्द नम्बर

3

हदीस नम्बर 2036 से 2949

नाम किताब	**जामेअ सुनन तिर्मिज़ी (जिल्द - 3)**
तालीफ़	**इमामुल हाफ़िज़ अबू ईसा मुहम्मद बिन ईसा अत्तिर्मिज़ी**
उर्दू तर्जुमा	**मौलाना अली मुर्तज़ा ताहिर (हफिजहुल्लाह)**
हिन्दी तर्जुमा	**दारूत-तर्जुमा, शोबा नश्रो इशाअत जमीअत अहले हदीस, जोधपुर (राज.)**
तहक़ीक़	**मौलाना मुहम्मद नासिरुद्दीन अल्बानी (رحمه الله)**
तख़रीज	**हाफ़िज़ अबू सुफ़यान मीर मुहम्मदी**
तस्हीह व नज़रे सानी	**मौलाना जमशेद आलम सल्फ़ी** (97857-69878)
लेज़र टाइपसेटिंग	**मोहम्मद शकील, (9351998441)**
मेनेजिंग डायरेक्टर	**अली हम्ज़ा,** (82338-55857)
प्रिण्टिंग	**आदर्श आफसेट**, स्टेडियम शॉपिंग सेन्टर, जोधपुर 92144-85741
बाइंडिंग	**कमाल बाईण्डिंग हाउस** मो. शाहिद भाई 93516-68223 0291-2551615

तादाद पेज	608	तादाद कॉपी	500 (पांच सौ)
प्रकाशन (प्रथम संस्करण)	नवम्बर 2020	क़ीमत	800/- (आठ सौ रुपये)

प्रकाशक	**मर्कज़ी अन्जुमन खुद्दामुल क़ुरआन वल हदीस, जोधपुर**
ज़ेरे निगरानी	**शहरी व सूबाई जमीअत अहले हदीस, जोधपुर-राजस्थान**

फरमाने रसूले अकरम (ﷺ)

जिसने मेरी इताअत की तो बिलाशुबा उसने
अल्लाह तआला की इताअत की
और जिसने मेरी नाफरमानी की तो बिलाशुबा
उसने अल्लाह तआला की नाफरमानी की।

[सहीह मुस्लिम (1835) 4739]

मिलने के पते

मकतबा तर्जुमान, 4116 उर्दू बाजार, नई दिल्ली
फोन: 011-23273407

इकरा बुक डिपो, 2/3978, ग्राउण्ड फ्लोर, फारूकी मंजिल सरगरामपुरा, सूरत, गुजरात 84608-53200

अल हिरा पब्लिकेशन, 423 उर्दू बाजार, मटिया महल जामा मस्जिद, दिल्ली 090153-82970

मदरसा दारूल उलूम सलफिया,
मोहल्ला सब्जी फरोश, रतलाम, (एम.पी.)

मोहम्मद अब्बास, 903, बडे ओम्ती,
जबलपुर, (एम.पी.) 89595-13602

हाफ़िज़ मोहम्मद राशिद,
विज्ञान नगर, कोटा (राज.) 70146-75559

तौहीद किताब सेन्टर, 08039-72503 सीकर (राज.)
कलीम बुक डिपो, सीकर (राज.) 70148-98515

नईम कुरैशी, 2 सी.एच.ए. 18 हाउसिंग बोर्ड, शास्त्री नगर, भट्टा बास, पुलिस स्टेशन के पास, जयपुर (राज.) 82091-64214

अल कौसर ट्रेडर्स, जोधपुर 94141-920119

अमरीन बुक एजेन्सी:
जमालपुर, अहमदाबाद। फोन: 84010-10786

साद सिद्दीकी:
राजा बाजार चौक, लखनऊ। फोन: 78608-22244

मकतबा दारूस्सलाम, मऊ: इस्लामिया सीनियर धोबिया इमली रोड़ मऊनाथ भंजन, मऊ, (यूपी) 275101

मकतबा अस्सून्नह,
मुम्बई 08097-44448

उमरी बुक डिपो, मदरसा तालीमुल कुरआन, अशोक नगर, हिल नं. 3 कुर्ला, मुम्बई 82918-33897

दारूल इल्म,
नागपाड़ा, मुम्बई 022-23088989, 23082231

मो. इस्हाक, अल हुदा रिफाई फाउण्डेशन,
खजराना, इन्दौर 95846-51411

सैफुल्लाह खालिद,
माणक बाग, इन्दौर 98273-97772

अबू रेहान मुहम्मदी मदनी,
जुलैखा चिल्ड्रन हॉस्पीटल केसर कॉलोनी,
औरंगाबाद 88307-46536, 95452-45056

शैख सुहैल सल्फ़ी,
मकतबा सलफिया, वारणासी 094519-15874

आई.आई.सी. नूरी होटल के पास, डाण्डा बाजार, भुज, कच्छ (गुजरात) 094291-17111

मकतबा अलफहीम,
मऊनाथ, भंजन (यूपी) 0547-2222013

उम्मेद अली: इस्लामिया सीनियर सैकण्डरी स्कूल, वार्ड नं. 10, सीकर। फोन: 7742457343

सल्फ़ी बुक सेन्टर,
मटिया महल, दिल्ली। फोन: 91365-05582

GUIDANCE PUBLISHERES & DISTRIBUTORS
D-105, Shop No. 2, Abul Fazl Enclaves, Jamia nagar, Okhla, New Delhi-110025,
9899693655, 9958923032

ALL INDIA DISTRIBUTOR
AL KITAB INTERNATIONAL
JAMIA NAGAR, NEW DELHI-25
PH: 26986973 M. 9312508762

SOLE DISTRIBUTOR
POPULAR BOOK STORE
OUT SIDE MERTI GATE, JODHPUR [RAJ.]
9460768990, 9664159557

फेहरिस्ते मज़ामीन

रसूलुल्लाह (ﷺ) से मर्वी ज़िन्दगी गुज़ारने के आदाब 480

मज़मून नम्बर 26

أَبْوَابُ الطِّبِّ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

रसूलुल्लाह(ﷺ) से मर्वी इलाज व मुआलजे के तरीक़े और अदवियात (दवाएँ)

तआरुफ़

54 अहादीस और 35 अबवाब पर मुश्तमिल यह मज़मून इन बातों पर मुश्तमिल है कि:

- बीमारियों में क्या चीज़ फ़ायदेमंद है?
- कौनसी अदवियात (दवाओं) का इस्तेमाल मना है?
- मस्नून इलाज कौन से हैं?

1 بَابُ مَا جَاءَ فِي الْحِمْيَةِ

2036 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مُحَمَّدٍ الفَرْوِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ غَزِيَّةَ، عَنْ عَاصِمِ بْنِ عُمَرَ بْنِ قَتَادَةَ، عَنْ مَحْمُودِ بْنِ لَبِيدٍ، عَنْ قَتَادَةَ بْنِ النُّعْمَانِ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِذَا أَحَبَّ اللَّهُ عَبْدًا حَمَاهُ الدُّنْيَا كَمَا يَظَلُّ أَحَدُكُمْ يَحْمِي سَقِيمَهُ الْمَاءَ.

1 - परहेज़ का बयान

2036 - सय्यदना क़तादा बिन नौमान (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: " जब अल्लाह तआला किसी बन्दे से मोहब्बत करता है तो उसे दुनिया से (उसी तरह) बचाता है जैसे तुम में से कोई शख़्स अपने बीमार को पानी से बचाता है।"

सहीह: मुसनद अहमद: 5/427. इब्ने हिब्बान:669. हाकिम: 4/207.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: इस बारे में सुहैब और उम्मे मुन्ज़िर (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है और यह हदीस हसन ग़रीब है। नीज़ यह हदीस बवास्ता महमूद बिन लबीद, नबी(ﷺ) से मुर्सल भी मर्वी है।

2037 - حَدَّثَنَا عَبَّاسُ بْنُ مُحَمَّدٍ الدُّورِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ التَّيْمِيِّ، عَنْ يَعْقُوبَ بْنِ أَبِي يَعْقُوبَ، عَنْ أُمِّ الْمُنْذِرِ قَالَتْ: دَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَعَهُ عَلِيٌّ وَلَنَا دَوَالٍ مُعَلَّقَةٌ، قَالَتْ: فَجَعَلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْكُلُ وَعَلِيٌّ مَعَهُ يَأْكُلُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لِعَلِيٍّ: مَهْ مَهْ يَا عَلِيُّ، فَإِنَّكَ نَاقِهٌ، قَالَ: فَجَلَسَ عَلِيٌّ وَالنَّبِيُّ ﷺ يَأْكُلُ، قَالَتْ: فَجَعَلْتُ لَهُمْ سِلْقًا وَشَعِيرًا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: يَا عَلِيُّ، مِنْ هَذَا فَأَصِبْ، فَإِنَّهُ أَوْفَقُ لَكَ.

2037 - उम्मे मुन्ज़िर (رضي الله عنها) रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) मेरे यहाँ तशरीफ़ लाये आप के साथ अली (رضي الله عنه) भी थे और हमारे यहाँ खुजूर का खोशा लटका हुआ था, फ़रमाती हैं: रसूलुल्लाह(ﷺ) (वह खुजूरें) खाने लगे और आप(ﷺ) के साथ अली भी खाने लगे तो अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने अली से फ़रमाया: "ठहरो, ठहरो! अली तुम अभी बीमारी से उठे हो, "फिर अली (رضي الله عنه) बैठ गए और नबी(ﷺ) खाते रहे। कहती हैं: मैंने उनके लिए चुक़न्दर और जौ तैयार किए तो नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: ''ऐ अली! इस से तनावुल करो यह तुम्हारे लिए मुवाफ़िक़ है।"(1)

हसन: अबू दाऊद: 3855. इब्ने माजह: 3452

तौज़ीह: (1) इस हदीस में यह बताया गया है कि सय्यदना अली (رضي الله عنه) के लिए खुजूरों का इस्तेमाल नुक़सानदेह था इसलिए नबी(ﷺ) ने इस से परहेज़ करने को कहा।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे फुलैह बिन सुलैमान के तरीक़ से ही जानते हैं और यह फुलैह बिन सुलैमान इस हदीस को अय्यूब बिन अब्दुर्रहमान से भी रिवायत करते हैं।

अबू ईसा कहते हैं, हमें मोहम्मद बिन बश्शार ने (वह कहते हैं, हमें अबू आमिर और अबू दाऊद ने वह दोनों कहते हैं: हमें फुलैह बिन सुलैमान ने अय्यूब बिन अब्दुर्रहमान से बवास्ता याक़ूब बिन अबी याक़ूब, सय्यदा उम्मे मुन्ज़िर अन्सारिया (رضي الله عنها) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) मेरे यहाँ तशरीफ़ लाये। फिर अनस बिन मोहम्मद की फुलैह बिन सुलैमान से बयान कर्दा रिवायत की तरह हदीस बयान की लेकिन इसमें है "यह तुम्हारे लिए बहुत फ़ायदेमंद है।" और मुहम्मद बिन बश्शार अपनी सनद में कहते हैं: मुझे यह हदीस अय्यूब बिन अब्दुर्रहमान ने सुनाई। यह हदीस जय्यद ग़रीब है।

अबू ईसा कहते हैं, हमें अली बिन हुज्र ने वह कहते हैं: हमें इस्माईल बिन जाफ़र ने अम्र बिन अबी अम्र से बवास्ता आसिम बिन उमर बिन क़तादा, महमूद बिन लबीद के ज़रिए नबी(ﷺ) से ऐसे ही हदीस बयान की है और इसमें क़तादा बिन नौमान (رضي الله عنه) का ज़िक्र नहीं है।

इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: क़तादा बिन नौमान (رضي الله عنه) मां की तरफ से अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) के भाई थे और महमूद बिन लबीद (رضي الله عنه) ने नबी(ﷺ) का ज़माना पाया था और जब वह छोटे बच्चे थे आप(ﷺ) को देखा था।

2 - दवा का इस्तेमाल और उसकी तरगीब

2 بَابُ مَا جَاءَ فِي الدَّوَاءِ وَالحَثِّ عَلَيْهِ

2038 - सय्यदना उसामा बिन शरीक़ (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि देहातियों ने कहा: क्या हम दवा का इस्तेमाल न करें? आप(ﷺ) ने फ़रमाया "हाँ, अल्लाह के बन्दों! दवा इस्तेमाल करो। बेशक अल्लाह तआला ने कोई बीमारी नहीं बनाई मगर उसकी शिफ़ा या दवा भी रखी है सिवाए एक बीमारी के।" लोगों ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! वह कौन सी (बीमार) है? आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "बुढ़ापा।"

2038 - حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مُعَاذٍ العَقَدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ زِيَادِ بْنِ عِلاَقَةَ، عَنْ أُسَامَةَ بْنِ شَرِيكٍ، قَالَ: قَالَتِ الأَعْرَابُ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَلاَ نَتَدَاوَى؟ قَالَ: نَعَمْ، يَا عِبَادَ اللهِ تَدَاوَوْا، فَإِنَّ اللَّهَ لَمْ يَضَعْ دَاءً إِلاَّ وَضَعَ لَهُ شِفَاءً، أَوْ قَالَ: دَوَاءً إِلاَّ دَاءً وَاحِدًا قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ، وَمَا هُوَ؟ قَالَ: الهَرَمُ.

सहीह: अबू दाऊद: 3855. इब्ने माजह: 3436.

वज़ाहत: इस बारे में इब्ने मसऊद, अबू हुरैरा, अबू खुज़ामा के वालिद और इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ यह हदीस हसन सहीह है।

3 - मरीज़ को क्या खिलाया जाए?

3 بَابُ مَا جَاءَ مَا يُطْعَمُ الْمَرِيضُ

2039 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) के घर वालों में किसी को जब बुखार होता तो आप के हुक्म पर हिसा[1] बनाया जाता, फिर उन्हें हुक्म देते तो वह उसे पीते और आप फ़रमाया करते थे: ''बेशक यह गमगीन के दिल को तस्कीन देता है और बीमार के दिल (बीमारी) का दर्द ख़त्म

2039 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ السَّائِبِ بْنِ بَرَكَةَ، عَنْ أُمِّهِ، عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَخَذَ أَهْلَهُ الوَعَكُ أَمَرَ بِالحِسَاءِ فَصُنِعَ ثُمَّ أَمَرَهُمْ فَحَسَوْا مِنْهُ، وَكَانَ يَقُولُ: إِنَّهُ لَيَرْتُقُ

فُؤَادَ الحَزِينِ، وَيَسْرُو عَنْ فُؤَادِ السَّقِيمِ كَمَا تَسْرُو إِحْدَاكُنَّ الوَسَخَ بِالمَاءِ عَنْ وَجْهِهَا.

कर देता है जैसा कि तुम से कोई एक पानी के साथ अपने चेहरे से मैल साफ़ करती है।"

ज़ईफ़: इब्ने माजह: 3445. मुसनद अहमद: 6/32. हाकिम: 4/117.

तौज़ीह: (1) आटे, पानी और घी को मिलाकर मरीज़ के लिए तैयार किया जाता था बअ़ज़ दफ़ा मीठा करने के लिए शहद भी मिला लिया जाता यह पानी की तरह पतला होता था।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और इब्ने मुबारक ने भी यूनुस से बवास्ता ज़ोहरी उर्वा से और उन्होंने आयशा (رضي الله عنها) के ज़रिए नबी(ﷺ) से इसमें कुछ बयान किया है।

यह हदीस हमें हुसैन बिन मुहम्मद जुरैरी ने (वह कहते हैं:) हमें अबू इस्हाक़ अत्तालिक़ानी ने इब्ने मुबारक से उन्होंने यूनुस से बवास्ता ज़ोहरी उर्वा से और उन्होंने आयशा (رضي الله عنها) के वास्ते के साथ नबी(ﷺ) से इसी तरह की रिवायत की है। हमें यह हदीस अबू इस्हाक़ ने भी बयान की है।

4 بَابُ مَا جَاءَ لَا تُكْرِهُوا مَرْضَاكُمْ عَلَى الطَّعَامِ وَالشَّرَابِ

4 - बीमारों को खाने पीने पर मजबूर न करो।

2040 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا بَكْرُ بْنُ يُونُسَ بْنِ بُكَيْرٍ، عَنْ مُوسَى بْنِ عَلِيٍّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ الجُهَنِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ تُكْرِهُوا مَرْضَاكُمْ عَلَى الطَّعَامِ، فَإِنَّ اللَّهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى يُطْعِمُهُمْ وَيَسْقِيهِمْ.

2040 - सय्यदना उक़्बा बिन आमिर जुहनी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "तुम अपने मरीजों को खाने पर मजबूर न करो बेशक अल्लाह तआला उन्हें खिलाता और पिलाता है।"

सहीह: इब्ने माजह: 3444. अबू यअ़्ला: 1741. हाकिम: 1/350.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे इसी सनद से ही जानते हैं।

5 بَابُ مَا جَاءَ فِي الحَبَّةِ السَّوْدَاءِ

5 - सियाह दाने (कलौंजी) का बयान।

2041 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، وَسَعِيدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْمَخْزُومِيُّ، قَالاَ: حَدَّثَنَا

2041 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: " तुम इस सियाह दाने(कलौंजी) का (इस्तेमाल)

سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: عَلَيْكُمْ بِهَذِهِ الحَبَّةِ السَّوْدَاءِ فَإِنَّ فِيهَا شِفَاءً مِنْ كُلِّ دَاءٍ إِلاَّ السَّامَ وَالسَّامُ الْمَوْتُ.

लाजिम पकड़ो। बेशक इसमें साम के अलावा हर बीमारी की शिफ़ा है:" और साम (से मुराद) मौत है।

बुख़ारी: 5688. मुस्लिम: 2215. इब्ने माजह: 3447.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: इस बारे में बुरैदा, इब्ने उमर और आयशा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ यह हदीस हसन सहीह है और सियाह दाना "कलौंजी" है।

6 بَابُ مَا جَاءَ فِي شُرْبِ أَبْوَالِ الإِبِلِ

6 - ऊंटों का पेशाब पीना।

2042 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدٍ الزَّعْفَرَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَفَّانُ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا حُمَيْدٌ، وَثَابِتٌ، وَقَتَادَةُ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ نَاسًا مِنْ عُرَيْنَةَ قَدِمُوا الْمَدِينَةَ فَاجْتَوَوْهَا فَبَعَثَهُمْ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي إِبِلِ الصَّدَقَةِ وَقَالَ: اشْرَبُوا مِنْ أَلْبَانِهَا وَأَبْوَالِهَا.

2042 - सय्यदना अनस (ﷺ) से रिवायत है कि क़बील-ए-उरैना के कुछ लोग मदीना में आए तो यह उनको ना मुवाफ़िक़ रहा अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने उन्हें सदक़ा के ऊंटों के हमराह भेजा और फ़रमाया: " उनका दूध और पेशाब पियो।"

बुख़ारी: 2334. मुस्लिम: 1671. अबू दाऊद: 4368. इब्ने माजह: 2578. निसाई: 4042

वज़ाहत: इस बारे में इब्ने अब्बास (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है और यह हदीस हसन सहीह है।

7 بَابُ مَا جَاءَ فِيمَنْ قَتَلَ نَفْسَهُ بِسُمٍّ أَوْ غَيْرِهِ

7 - जो शख़्स ज़हर या किसी और चीज़ से ख़ुदकुशी कर ले।

2043 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبِيدَةُ بْنُ حُمَيْدٍ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَرَاهُ رَفَعَهُ قَالَ: مَنْ قَتَلَ نَفْسَهُ بِحَدِيدَةٍ جَاءَ يَوْمَ القِيَامَةِ وَحَدِيدَتُهُ

2043 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) मर्फ़ू हदीस बयान करते हैं कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: "जिस ने अपने आप को लोहे (की किसी चीज़, छुरी, तलवार वगैरह) से क़त्ल कर लिया वह शख़्स क़यामत के दिन आयेगा तो उसका लोहा उसके हाथ में होगा और जहन्नम की आग

فِي يَدِهِ يَتَوَجَّأُ بِهَا فِي بَطْنِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدًا مُخَلَّدًا أَبَدًا، وَمَنْ قَتَلَ نَفْسَهُ بِسُمٍّ فَسُمُّهُ فِي يَدِهِ يَتَحَسَّاهُ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدًا مُخَلَّدًا أَبَدًا.

में हमेशा के लिए अपने पेट में घोंपता रहेगा, और जिसने अपने आप को ज़हर से क़त्ल कर लिया तो उसका ज़हर उसके हाथ में होगा वह उसे जहन्नम की आग में हमेशा के लिए तनावुल करता रहेगा।"

बुख़ारी: 5778. मुस्लिम: 109. अबू दाऊद: 3872. इब्ने माजह: 3460. निसाई: 1965

2044 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ قَتَلَ نَفْسَهُ بِحَدِيدَةٍ فَحَدِيدَتُهُ فِي يَدِهِ يَتَوَجَّأُ بِهَا فِي بَطْنِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدًا مُخَلَّدًا فِيهَا أَبَدًا، وَمَنْ قَتَلَ نَفْسَهُ بِسُمٍّ فَسُمُّهُ فِي يَدِهِ يَتَحَسَّاهُ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدًا مُخَلَّدًا فِيهَا أَبَدًا، وَمَنْ تَرَدَّى مِنْ جَبَلٍ فَقَتَلَ نَفْسَهُ فَهُوَ يَتَرَدَّى فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدًا مُخَلَّدًا فِيهَا أَبَدًا.

2044 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: " जिस ने अपने आप को लोहे से क़त्ल कर लिया तो उसका लोहा उसके हाथ में होगा और जहन्नम की आग में हमेशा के लिए उसे अपने पेट में घोंपता रहेगा, जिस ने ज़हर के साथ अपने आप को क़त्ल कर लिया तो उसका ज़हर उसके हाथ में होगा वह जहन्नम की आग में हमेशा के लिए उसको निगलता रहेगा और जिस ने पहाड़ से गिर कर अपने आप को क़त्ल कर लिया तो वह जहन्नम की आग में हमेशा के लिए (अपने आप को) गिराता रहेगा।"

सहीह: गुज़िश्ता हदीस देखें।

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं:) हमें मुहम्मद बिन अला ने वह कहते हैं, हमें वकी और मुआविया ने आमश से उन्होंने अबू सालेह से बवास्ता सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) नबी(ﷺ) से शोबा की आमश से बयान कर्दा हदीस की तरह रिवायत है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस पहले हदीस से ज़्यादा सहीह है।आमश से बवास्ता अबू सालेह, अबू हुरैरा (ﷺ) से नबी(ﷺ) की हदीस ऐसे ही मर्वी है। जबकि मुहम्मद बिन अजलान ने सईद मक़्बुरी से बवास्ता अबू हुरैरा (ﷺ), नबी करीम(ﷺ) से रिवायत की है कि "जिस ने अपने आप को ज़हर से क़त्ल कर लिया उसे जहन्नम की आग में अज़ाब दिया जाएगा।" लेकिन इसमें यह ज़िक्र नहीं है कि "वह हमेशा-हमेशा उस में रहेगा।" अबू ज़िनाद ने भी आरज से बवास्ता अबू हुरैरा (ﷺ) नबी करीम(ﷺ) से इसी तरह रिवायत की है।

यही ज़्यादा सहीह है क्योंकि बहुत सी रिवायात आई हैं कि अहले तौहीद को जहन्नम में अज़ाब होगा। फिर उन्हें उस से निकाल लिया जाएगा जब कि यह ज़िक्र नहीं है कि वह उसमें हमेशा के लिए रखे जायेंगे।

2045 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ يُونُسَ بْنِ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الدَّوَاءِ الخَبِيثِ.

2045 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने नापाक दवा से मना फ़रमाया।

सहीह: अबू दाऊद: 3870. इब्ने माजह: 3459. मुसनद अहमद: 2/305.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस से मुराद ज़हर है।

8 بَابُ مَا جَاءَ فِي كَرَاهِيَةِ التَّدَاوِي بِالمُسْكِرِ

8 - नशा आवर से इलाज करना मना है।

2046 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ سِمَاكٍ، أَنَّهُ سَمِعَ عَلْقَمَةَ بْنَ وَائِلٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّهُ شَهِدَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَسَأَلَهُ سُوَيْدُ بْنُ طَارِقٍ، أَوْ طَارِقُ بْنُ سُوَيْدٍ عَنِ الخَمْرِ فَنَهَاهُ عَنْهُ فَقَالَ: إِنَّا نَتَدَاوَى بِهَا، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّهَا لَيْسَتْ بِدَوَاءٍ وَلَكِنَّهَا دَاءٌ.

2046 - अल्क़मा बिन वाइल अपने बाप (सय्यदना वाइल बिन हुज्र (رضي الله عنه) से रिवायत करते हैं कि वह नबी(ﷺ) के पास हाज़िर थे कि आप(ﷺ) से सुवैद बिन तारिक़ या तारिक़ बिन सुवैद ने शराब के बारे में पूछा तो आप ने उन्हें मना कर दिया, उन्होंने अर्ज़ किया, हम इससे इलाज करते हैं तो अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने फ़रमाया: "यह दवा नहीं है बल्कि यह तेरी बीमारी है।"

मुस्लिम: 1948. अबू दाऊद: 3873. इब्ने माजह: 3500.

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं, हमें महमूद ने वह कहते हैं: हमें नज़र बिन शुमैल और शबाबा ने शोबा से इसी तरह ही रिवायत की है।महमूद कहते हैं: नज़र ने तारिक़ बिन सुवैद और शबाबा ने सुवैद बिन तारिक़ कहा है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

9 - नाक में दवा डालना।

9 بَابُ مَا جَاءَ فِي السَّعُوطِ وَغَيْرِهِ

2047 - सय्यदना इब्ने अब्बास (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "बेशक बेहतरीन दवा जो तुम देते हो वह नाक में डाली जाने वाली, सींगी और इस्हाल की दवा है। जब रसूलुल्लाह(ﷺ) बीमार हुए तो आपके सहाबा ने आप के हलक़ में दवा डाली फिर जब वह फारिग हुए तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "इनके मुंह में भी दवा डालो।" तो अब्बास के अलावा सब के हलक़ में दवा डाली गई।

ज़ईफ़: 1757 नम्बर हदीस देखें।

2047 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَدُّوَيْهِ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ حَمَّادٍ الشُّعَيْثِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبَّادُ بْنُ مَنْصُورٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ خَيْرَ مَا تَدَاوَيْتُمْ بِهِ السَّعُوطُ وَاللَّدُودُ وَالحِجَامَةُ وَالمَشِيُّ، فَلَمَّا اشْتَكَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَدَّهُ أَصْحَابُهُ، فَلَمَّا فَرَغُوا قَالَ: لُدُّوهُمْ قَالَ: فَلُدُّوا كُلُّهُمْ غَيْرَ العَبَّاسِ.

2048 - सय्यदना इब्ने अब्बास (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "बेहतरीन दवा जो तुम करते हो वह हलक़ में डाली जाने वाली, नाक में डाली जाने वाली दवा, सींगी और इस्हाल की दवा है और जो तुम सुर्मा लगाते हो इसमें बेहतरीन इस्मिद[1] है। यह नज़र को तेज़ करता है और पलकों के बालों को उगाता है। और रावी कहते हैं: रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास एक सुर्मे दानी थी जिससे आप सोते वक़्त हर आँख में तीन सलाइयां डालते थे।

ज़ईफ़: इस्मिद सुर्मा लगाने वाला फिक्रा सहीह है।

2048 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبَّادُ بْنُ مَنْصُورٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ خَيْرَ مَا تَدَاوَيْتُمْ بِهِ اللَّدُودُ وَالسَّعُوطُ وَالحِجَامَةُ وَالمَشِيُّ، وَخَيْرُ مَا اكْتَحَلْتُمْ بِهِ الإِثْمِدُ. فَإِنَّهُ يَجْلُو البَصَرَ وَيُنْبِتُ الشَّعْرَ. " وَكَانَ لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُكْحُلَةٌ يَكْتَحِلُ بِهَا عِنْدَ النَّوْمِ ثَلَاثًا فِي كُلِّ عَيْنٍ.

तौज़ीह: (1) إِثْمِد : सुर्ख रंग का अस्फ़हानी सुर्मा है जो हिजाज़ में मिलता है।

10 - जिस्म दागने की कराहत।

10 بَابُ مَا جَاءَ فِي كَرَاهِيَةِ التَّدَاوِي بِالكَيِّ

2049 - सय्यदना इमरान बिन हुसैन (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने दागने से मना किया। रावी कहते हैं: फिर हम (बीमारियों में) घिरे तो हम ने दाग लगाए (लेकिन) हमने न तो छुटकारा पाया और न ही मक़सद को पहुंचे।

सहीह: अबू दाऊद: 3865. इब्ने माजह: 3490. मुसनद अहमद: 4/427.

2049 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنِ الحَسَنِ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنِ الكَيِّ قَالَ: فَابْتُلِينَا فَاكْتَوَيْنَا فَمَا أَفْلَحْنَا وَلاَ أَنْجَحْنَا.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

अबू ईसा कहते हैं, हमें अब्दुल क़ुद्दूस बिन मुहम्मद ने (वह कहते हैं, हमें अम्र बिन आसिम ने (वह कहते हैं, हमें हम्माम ने क़तादा से बवास्ता हसन, सय्यदना इमरान बिन हुसैन (ﷺ) से बयान किया है कि हमें दाग लगाने से मना किया गया है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस बारे में इब्ने मसऊद, उक़्बा बिन आमिर और इब्ने अब्बास (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ यह हदीस हसन सहीह है।

11 - इस काम की रुख़्सत।

11 بَابُ مَا جَاءَ فِي الرُّخْصَةِ فِي ذَلِكَ

2050 - सय्यदना अनस (ﷺ) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने अस्अद बिन ज़ुरारा (के जिस्म) को सुर्ख़ फुंसियों[1] की वजह से दाग़ा था।

सहीह: इब्ने अबी शैबा: 8/65. अबू याला:3582. हाकिम: 4/417.

2050 - حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ مَسْعَدَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَوَى أَسْعَدَ بْنَ زُرَارَةَ مِنَ الشَّوْكَةِ.

तौज़ीह: الشَّوْكَةُ: एक बीमारी है जिस में मुंह और बदन पर सुर्ख़ रंग की तकलीफ़ देह फुंसियां नुमूदार हो जाती हैं। (अल-मोजमुल वसीत:पृ.590)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस बारे में उबय और जाबिर (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है और यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

12 - हिजामा (सींगी) का बयान।

12 بَابُ مَا جَاءَ فِي الْحِجَامَةِ

2051 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) गर्दन के दोनों अतराफ और कन्धों के दर्मियान सींगी (हिजामा) लगवाते थे और आप सत्तरह, उन्नीस और इक्कीस तारीख को सींगी लगवाते थे।

सहीह: अबू दाऊद: 3860. इब्ने माजह: 3483. मुसनद अहमद: 3/119.

2051 - حَدَّثَنَا عَبْدُ الْقُدُّوسِ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، وَجَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ، قَالاَ: حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَحْتَجِمُ فِي الأَخْدَعَيْنِ وَالكَاهِلِ، وَكَانَ يَحْتَجِمُ لِسَبْعَ عَشْرَةَ وَتِسْعَ عَشْرَةَ وَإِحْدَى وَعِشْرِينَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में इब्ने अब्बास और माक़िल बिन यसार (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है और यह हदीस हसन सहीह है।

2052 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उस रात के बारे में बयान किया "जिसमें आपको सैर कराई गई कि वह फरिश्तों की जिस जमात के पास से भी गुज़रे उसने आप से यही कहा था कि आप अपनी उम्मत को सींगी (हिजामा) लगाने का हुक्म दें।"

सहीह।

2052 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ بُدَيْلٍ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ إِسْحَاقَ، عَنِ القَاسِمِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ هُوَ ابْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: حَدَّثَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ لَيْلَةِ أُسْرِيَ بِهِ أَنَّهُ لَمْ يَمُرَّ عَلَى مَلَإٍ مِنَ الْمَلاَئِكَةِ إِلاَّ أَمَرُوهُ أَنْ مُرْ أُمَّتَكَ بِالحِجَامَةِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) की यह हदीस हसन ग़रीब है।

2053 - इक्रिमा (رحمه الله) बयान करते हैं कि इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) के तीन गुलाम सींगी (हिजामा) लगाने वाले थे उनमें से दो उनके

2053 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا النَّضْرُ بْنُ شُمَيْلٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبَّادُ بْنُ

مَنْصُورٍ، قَالَ: سَمِعْتُ عِكْرِمَةَ، يَقُولُ: كَانَ لِابْنِ عَبَّاسٍ، غِلْمَةٌ ثَلاَثَةٌ حَجَّامُونَ فَكَانَ اثْنَانِ مِنْهُمْ يُغِلاَّنِ عَلَيْهِ وَعَلَى أَهْلِهِ وَوَاحِدٌ يَحْجُمُهُ وَيَحْجُمُ أَهْلَهُ قَالَ: وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: قَالَ نَبِيُّ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: نِعْمَ العَبْدُ الحَجَّامُ، يُذْهِبُ الدَّمَ، وَيُخِفُّ الصُّلْبَ، وَيَجْلُو عَنِ البَصَرِ وَقَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ عُرِجَ بِهِ مَا مَرَّ عَلَى مَلَإٍ مِنَ الْمَلاَئِكَةِ إِلاَّ قَالُوا: عَلَيْكَ بِالحِجَامَةِ وَقَالَ: إِنَّ خَيْرَ مَا تَحْتَجِمُونَ فِيهِ يَوْمَ سَبْعَ عَشْرَةَ وَيَوْمَ تِسْعَ عَشْرَةَ وَيَوْمَ إِحْدَى وَعِشْرِينَ وَقَالَ: إِنَّ خَيْرَ مَا تَدَاوَيْتُمْ بِهِ السَّعُوطُ وَاللَّدُودُ وَالحِجَامَةُ وَالمَشِيُّ وَإِنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَدَّهُ العَبَّاسُ وَأَصْحَابُهُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ لَدَّنِي؟ فَكُلُّهُمْ أَمْسَكُوا، فَقَالَ: لاَ يَبْقَى أَحَدٌ مِمَّنْ فِي البَيْتِ إِلاَّ لُدَّ غَيْرَ عَمِّهِ العَبَّاسِ قَالَ عَبْدٌ: قَالَ النَّضْرُ: اللَّدُودُ: الوَجُورُ.

और उनके घर वालों के लिए मज़दूरी पर काम करते और एक उन्हें और उनके घर वालों को सींगी लगाता और इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) ने फ़रमाया: हज्जाम बेहतरीन बन्दा है जो फ़ासिद ख़ून को ख़त्म कर देता है, कमर को हल्का और नज़र को तेज़ कर देता है, और उन्होंने फ़रमाया कि जब रसूलुल्लाह(ﷺ) को मेराज करवाया गया तो आप फरिश्तों की जिस जमात के पास से भी गुज़रे उन्होंने यही कहा: आप हिजामा (सींगी) को लाज़िम रखें और आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "जिन दिनों में तुम हिजामा करवाते हो उनमें बेहतरीन 17, 19 और 21 तारीख़ है।" आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "जिन चीजों से इलाज करते हो उनमें बेहतरीन इलाज नाक में दवा डालना, सींगी और इस्हाल की दवा है।" और रसूलुल्लाह(ﷺ) के हलक़ में भी अब्बास (رضي الله عنه) और उनके साथियों ने दवा डाली थी तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "मेरे हलक़ में दवा किस ने डाली है सब खामोश रहे तो आप ने फ़रमाया: "उनके चचा अब्बास के अलावा घर में मौजूद सब लोगों के हलक़ में दवा डाली जाए।" नज़र कहते हैं: اللدود से मुराद (वजूर यानी) हलक़ में दवा डालना है।

इस नहज़ पर ज़ईफ़ है कुछ टुकड़े अलाहिदा सहीह हैं। अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा: 2036. इब्ने माजह: 3478.

वज़ाहत: इस बारे में आयशा (رضي الله عنها) से भी हदीस मर्वी है और यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे अब्बाद बिन मंसूर के तारीक़ से ही जानते हैं।

13 - मेहंदी से इलाज करना।

13 بَابُ مَا جَاءَ فِي التَّدَاوِي بِالْحِنَّاءِ

2054 - अली बिन उबैदुल्लाह अपनी दादी सलमा (ﷺ) से रिवायत करते हैं कि वह नबी(ﷺ) की ख़िदमत किया करती थीं, कहती हैं: नबी(ﷺ) के कोई ज़ख्म होता या पत्थर काँटा वगैरह लग जाता तो आप मुझे उस पर मेहंदी लगाने का हुक्म देते।

सहीह: अबू दाऊद: 3858. इब्ने माजह: 3502. अब्द बिन हुमैद: 1563

2054 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ خَالِدٍ الخَيَّاطُ، قَالَ: حَدَّثَنَا فَائِدٌ، مَوْلًى لِآلِ أَبِي رَافِعٍ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ جَدَّتِهِ سَلْمَى، وَكَانَتْ تَخْدُمُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَتْ: مَا كَانَ يَكُونُ بِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَرْحَةٌ وَلاَ نَكْبَةٌ إِلاَّ أَمَرَنِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ أَضَعَ عَلَيْهَا الحِنَّاءَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे फ़ाइद के तरीक़ से ही जानते हैं और बअ्ज़ ने इस हदीस को फ़ाइद से बयान करते हुए उबैदुल्लाह बिन अली कहा है। वह अपनी दादी सलमा से रिवायत करते हैं और उबैदुल्लाह बिन अली ही ज़्यादा सहीह है। नीज़ (सलमा की बजाये) सुल्मा भी कहा जाता है।

अबू ईसा कहते हैं, हमें मुहम्मद बिन अला ने वह कहते हैं: हमें ज़ैद बिन हुबाब ने फ़ाइद मौला उबैदुल्लाह बिन अली से उनके मौला उबैदुल्लाह बिन अली के ज़रिए उनकी दादी से नबी(ﷺ) की ऐसी ही हदीस बयान की है।

14 - दम कराने की कराहत।

14 بَابُ مَا جَاءَ فِي كَرَاهِيَةِ الرُّقْيَةِ

2055 - मुग़ीरा बिन शोबा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "जिसने जिस्म को दाग़ा या दम करवाया यक़ीनन वह तवक्कुल से निकल गया।"

सहीह: इब्ने माजह: 3489. मुसनद अहमद: 4/249. इब्ने हिब्बान: 608. हाकिम: 4/415

2055 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنْ عَقَّارِ بْنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ، عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ اكْتَوَى أَوْ اسْتَرْقَى فَقَدْ بَرِئَ مِنَ التَّوَكُّلِ.

वज़ाहत: इस बारे में इब्ने मसऊद, इब्ने अब्बास और इमरान बिन हुसैन (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

15 - उस काम की रूख़सत।

15 بَابُ مَا جَاءَ فِي الرُّخْصَةِ فِي ذَلِكَ

2056 - सय्यदना अनस (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने बिच्छू वगैरह के डसने, नज़र लगने और नम्ला[1] की वजह से दम करवाने की रूख़सत दी है।

मुस्लिम: 2196. अबू दाऊद: 3889. इब्ने माजह: 3516.

2056 - حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الخُزَاعِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ هِشَامٍ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ عَاصِمٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الحَارِثِ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَخَّصَ فِي الرُّقْيَةِ مِنَ الْحُمَةِ وَالْعَيْنِ وَالنَّمْلَةِ.

तौज़ीह: النَّمْلَة: इस बीमारी में पहलु और कमर वगैरह पर दाने नुमूदार होते हैं।

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं: हमें महमूद बिन गैलान ने (वह कहते हैं) हमें यह्या बिन आदम और अबू नुऐम ने, वह कहते हैं: हमें सुफ़ियान ने, आसिम से उन्होंने बवास्ता यूसुफ़ बिन अब्दुल्लाह बिन हारिस, सय्यदना अनस (ﷺ) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने डसे जाने और नम्ला की वजह से दम कराने की रूख़सत दी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। और मेरे नज़दीक यह हदीस मुआविया बिन हिशाम की सुफ़ियान से रिवायतकर्दा हदीस से ज़्यादा सहीह है। नीज़ इस बारे में बुरैदा, इमरान बिन हुसैन, जाबिर, आयशा, तल्क़ बिन अली, अम्र बिन हज़म (ﷺ) और अबू ख़ुज़ामा की अपने बाप से भी रिवायत है।

2057 - . सय्यदना इमरान बिन हुसैन (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "दम यानी झाड़ फूँक सिर्फ नज़रे बद में है या ज़हरीले डंक में।"

सहीह: मुसनद अहमद: 4/436. अबू दाऊद: 3884.

2057 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ حُصَيْنٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لاَ رُقْيَةَ إِلاَّ مِنْ عَيْنٍ أَوْ حُمَةٍ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: शोबा ने इस हदीस को हुसैन से बवास्ता शाबी, बुरैदा (ﷺ) से उन्होंने नबी(ﷺ) से इसी तरह ही रिवायत किया है।

16 بَابُ مَا جَاءَ فِي الرُّقْيَةِ بِالمُعَوِّذَتَيْنِ

2058 - حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُونُسَ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا القَاسِمُ بْنُ مَالِكٍ الْمُزَنِيُّ، عَنِ الجُرَيْرِيِّ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَعَوَّذُ مِنَ الجَانِّ وَعَيْنِ الإِنْسَانِ حَتَّى نَزَلَتِ الْمُعَوِّذَتَانِ فَلَمَّا نَزَلَتَا أَخَذَ بِهِمَا وَتَرَكَ مَا سِوَاهُمَا.

16 - मुअव्विज़तैन (फ़लक़ और अन्नास) सूरतों से दम करना।

2058 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) जिन्नात और इंसान की नज़र से पनाह मांगते थे यहाँ तक कि मुअव्विज़तैन सूरतें नाजिल हुई, जब यह नाजिल हुई तो आप ने इनको ले लिए और इनके सिवा हर चीज़ को छोड़ दिया।"

सहीह: इब्ने माजह: 3511. निसाई: 5494.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस बारे में अनस (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है और यह हदीस हसन ग़रीब है।

17 بَابُ مَا جَاءَ فِي الرُّقْيَةِ مِنَ العَيْنِ

2059 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ عُرْوَةَ وَهُوَ ابْنُ عَامِرٍ، عَنْ عُبَيْدِ بْنِ رِفَاعَةَ الزُّرَقِيِّ، أَنَّ أَسْمَاءَ بِنْتَ عُمَيْسٍ قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّ وَلَدَ جَعْفَرٍ تُسْرِعُ إِلَيْهِمُ العَيْنُ أَفَأَسْتَرْقِي لَهُمْ؟ فَقَالَ: نَعَمْ، فَإِنَّهُ لَوْ كَانَ شَيْءٌ سَابَقَ القَدَرَ لَسَبَقَتْهُ العَيْنُ.

17 - नज़र लग जाने की वजह से दम करना।

2059 - सय्यदा अस्मा बिन्ते उमैस (ﷺ) से रिवायत है कि उन्होंने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! जाफ़र की औलाद को नज़र बहुत जल्द लग जाती है क्या मैं उनको दम करवा लिया करूं? आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "हाँ, अगर तक्दीर से आगे बढ़ने वाली कोई चीज़ होती तो वह नज़र होती।"

सहीह: इब्ने माजह: 3510. मुसनद अहमद: 6/438.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस बारे में इमरान बिन हुसैन और बुरैदा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है और यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है।

नीज़ यह हदीस अय्यूब से अम्र बिन दीनार, उर्वा बिन आमिर के ज़रिए उबैद बिन रिफ़ाआ से भी मर्वी है वह अस्मा बिन्ते उमैस (رضی اللہ عنہا) से और वह नबी(ﷺ) से रिवायत करती हैं। यह हदीस हमें हसन बिन अली खल्लाल ने उन्हें अब्दुर्रज्ज़ाक ने बवास्ता मामर, अय्यूब से रिवायत की है।

18 - बच्चों को दम कैसे किया जाए।

18 بَابٌ كيف يعوز الصبيان

2060 - सय्यदना इब्ने अब्बास (رضی اللہ عنہ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) हसन और हुसैन (رضی اللہ عنہما) को दम करते हुए कहते: "मैं तुम दोनों के लिए अल्लाह के कामिल कलिमात के साथ फ़िक्र का वस्वसा डालने वाले शैतान और जूनून में मुब्तला करने वाली हर आँख से पनाह माँगता हूँ" और आप फ़रमाते : "इब्राहीम (علیہ السلام) भी इस्माईल (علیہ السلام) के लिए इसी तरह पनाह माँगा करते थे।"

बुख़ारी: 3351. अबू दाऊद: 4737. इब्ने माजह: 3525.

2060 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، وَيَعْلَى، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنِ الْمِنْهَالِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعَوِّذُ الحَسَنَ وَالحُسَيْنَ يَقُولُ: أُعِيذُكُمَا بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّةِ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَهَامَّةٍ، وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لاَمَّةٍ، وَيَقُولُ: هَكَذَا كَانَ إِبْرَاهِيمُ يُعَوِّذُ إِسْحَاقَ وَإِسْمَاعِيلَ عليهم السلام .

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं, हमें हसन बिन अली खल्लाल ने (वह कहते हैं;) हमें यज़ीद बिन हारून और अब्दुर्रज्ज़ाक ने बवास्ता सुफ़ियान, मंसूर से इसी तरह हदीस बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

19 - नज़र लग जाना हक़ है और उसके लिये गुस्ल करना।

19 بَابُ مَا جَاءَ أَنَّ العَيْنَ حَقٌّ وَالغَسْلُ لَهَا

2061 - हय्या बिन हाबिस अत्तमीमी (رحمہ اللہ) बयान करते हैं कि मुझे मेरे बाप ने बताया कि उसने रसूलुल्लाह(ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "हाम[1] में कुछ हक़ीक़त नहीं है और नज़र (का लग जाना) बरहक़ है।"

2061 - حَدَّثَنَا أَبُو حَفْصٍ عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ كَثِيرٍ أَبُو غَسَّانَ العَنْبَرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي حَيَّةُ بْنُ

خَابِسٍ التَّمِيمِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: لاَ شَيْءَ فِي الهَامِ، وَالعَيْنُ حَقٌّ.

अल-ऐन हक़ के अलावा ज़ईफ़ है। मुसनद अहमद: 4/67. अदबुल मुफ़रद:914. अबू याला:1582.

तौज़ीह: (1) अरब के लोगों में अक़ीदा पाया जाता था कि मक़्तूल की रूह एक परिंदे (उल्लू) में दाख़िल होकर रात को चक्कर लगाती है और वह कहता है कि मुझे पानी पिलाओ, जब तक उसका बदला न ले लिया जाए वह इसी तरह ही चक्कर लगाता रहता है लेकिन रसूलुल्लाह(ﷺ) ने इस बारे में फ़रमाया: ''कि यह एक जाहिलाना अक़ीदा है। इस्लाम से इसका कोई ताल्लुक़ नहीं है।''

2062 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ الحَسَنِ بْنِ خِرَاشٍ البَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ إِسْحَاقَ الحَضْرَمِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، عَنِ ابْنِ طَاوُوسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَوْ كَانَ شَيْءٌ سَابَقَ القَدَرَ لَسَبَقَتْهُ العَيْنُ، وَإِذَا اسْتُغْسِلْتُمْ فَاغْسِلُوا.

2062 - सय्यदना इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "अगर कोई चीज़ तक़्दीर से आगे निकलने वाली होती तो नज़र उस से आगे निकल जाती और जब तुम से गुस्ल का मुतालबा किया जाए तो गुस्ल करो।"

मुस्लिम: 2188. इब्ने अबी शैबा:8/59

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: इस बारे में अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) से भी मर्वी है और यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है और हय्या बिन हाबिस की हदीस ग़रीब है। शैबान ने भी यह्या बिन अबी कसीर के वास्ते से हय्या बिन हाबिस से उनके बाप के ज़रिए अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से नबी(ﷺ) की हदीस बयान की है जबकि अली बिन मुबारक और हर्ब बिन शद्दाद (رحمهما الله) इसमें अबू हुरैरा का ज़िक्र नहीं करते।

20 بَابُ مَا جَاءَ فِي أَخْذِ الأَجْرِ عَلَى التَّعْوِيذِ

20 - दम[1] करने की उजरत लेना।

2063 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ إِيَاسٍ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ قَالَ: بَعَثَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي

2063 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हमें एक लश्कर में रवाना किया, हम एक क़ौम के पास उतरे उनसे मेहमान नवाज़ी का कहा उन्होंने हमारी मेहमान नवाज़ी न की, फिर उनका

سَرِيَّةٍ فَنَزَلْنَا بِقَوْمٍ، فَسَأَلْنَاهُمُ الْقِرَى فَلَمْ يَقْرُونَا، فَلُدِغَ سَيِّدُهُمْ فَأَتَوْنَا فَقَالُوا: هَلْ فِيكُمْ مَنْ يَرْقِي مِنَ الْعَقْرَبِ؟ قُلْتُ: نَعَمْ أَنَا، وَلَكِنْ لاَ أَرْقِيهِ حَتَّى تُعْطُونَا غَنَمًا، قَالُوا: فَإِنَّا نُعْطِيكُمْ ثَلاَثِينَ شَاةً، فَقَبِلْنَا فَقَرَأْتُ عَلَيْهِ: الْحَمْدُ لِلَّهِ سَبْعَ مَرَّاتٍ، فَبَرَأَ وَقَبَضْنَا الْغَنَمَ، قَالَ: فَعَرَضَ فِي أَنْفُسِنَا مِنْهَا شَيْءٌ فَقُلْنَا: لاَ تَعْجَلُوا حَتَّى تَأْتُوا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: فَلَمَّا قَدِمْنَا عَلَيْهِ ذَكَرْتُ لَهُ الَّذِي صَنَعْتُ، قَالَ: وَمَا عَلِمْتَ أَنَّهَا رُقْيَةٌ؟ اقْبِضُوا الْغَنَمَ وَاضْرِبُوا لِي مَعَكُمْ بِسَهْمٍ.

सरदार डसा गया तो वह हमारे पास आकर कहने लगे: क्या तुममें कोई ऐसा शख़्स है जो बिच्छू के डसे का दम करता हो? मैंने कहा: हाँ मैं हूँ लेकिन मैं उसे दम नहीं करूंगा यहाँ तक कि तुम हमें बकरियां दो, उन्होंने कहा हम तुम्हें तीस बकरियां देंगे तो हमने इस बात को मान लिया मैंने सात मर्तबा उस पर الحَمْدُ لِلَّهِ (सूरह फातिहा) पढ़ी तो वह ठीक हो गया और हम ने बकरियां ले लीं, रावी कहते हैं: इस बारे में हमारे दिलों में कुछ (खटका) हम ने कहा: जल्दी न करना यहाँ तक कि तुम रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास पहुँच जाओ, रावी कहते हैं: जब हम आप के पास आए तो हमने वह ज़िक्र किया जो मैंने किया था आप(ﷺ) ने फ़रमाया : "तुम कैसे जानते थे कि यह (सूरह) दम है? उन बकरियों को अपने क़ब्ज़े में करो और अपने साथ मेरा भी हिस्सा निकालो।"

बुख़ारी: 2276. मुस्लिम: 2201. अबू दाऊद: 3418. इब्ने माजह: 2156.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

अबू नज़रह् का नाम मुन्ज़िर बिन मालिक बिन कतआ है। इमाम शाफ़ेई ने मुअल्लिम को तालीमे क़ुरआन पर उज्रत लेने की रूख़सत दी है। उनके मुताबिक वह तै भी कर सकता है। उन्होंने इसी हदीस से दलील ली है।

जाफ़र बिन इयास, जाफ़र बिन अबी वहिशया ही हैं जिनकी कुनियत अबू बिश्र है। नीज़ शोबा, अबू अवाना, हिशाम और दीगर लोगों ने भी बवास्ता अबू बिश्र, अबू मुतवक्किल के ज़रिए अबू सईद (رضي الله عنه) की नबी(ﷺ) से मर्वी यह हदीस रिवायत की है।

2064 - حَدَّثَنَا أَبُو مُوسَى مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الصَّمَدِ بْنُ عَبْدِ الْوَارِثِ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو بِشْرٍ،

2064 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी(ﷺ) के कुछ सहाबा अरब के एक कबीले के पास से गुज़रे तो उन्होंने उनकी मेहमान नवाजी न की, फिर उनका

قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا الْمُتَوَكِّلِ يُحَدِّثُ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، أَنَّ نَاسًا مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرُّوا بِحَيٍّ مِنَ العَرَبِ فَلَمْ يَقْرُوهُمْ وَلَمْ يُضَيِّفُوهُمْ، فَاشْتَكَى سَيِّدُهُمْ فَأَتَوْنَا فَقَالُوا: هَلْ عِنْدَكُمْ دَوَاءٌ؟ قُلْنَا: نَعَمْ، وَلَكِنْ لَمْ تَقْرُونَا وَلَمْ تُضَيِّفُونَا، فَلاَ نَفْعَلُ حَتَّى تَجْعَلُوا لَنَا جُعْلاً، فَجَعَلُوا عَلَى ذَلِكَ قَطِيعًا مِنَ الغَنَمِ، قَالَ: فَجَعَلَ رَجُلٌ مِنَّا يَقْرَأُ عَلَيْهِ بِفَاتِحَةِ الكِتَابِ فَبَرَأَ، فَلَمَّا أَتَيْنَا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَكَرْنَا ذَلِكَ لَهُ، قَالَ: وَمَا يُدْرِيكَ أَنَّهَا رُقْيَةٌ؟، وَلَمْ يَذْكُرْ نَهْيًا مِنْهُ، وَقَالَ: كُلُوا وَاضْرِبُوا لِي مَعَكُمْ بِسَهْمٍ.

सरदार बीमार हो गया तो वह हमारे पास आकर कहने लगे: क्या तुम्हारे पास कोई दवा है? हमने कहा: हाँ" लेकिन तुम लोगों ने हमारी मेहमान नवाजी नहीं की थी हम भी इलाज नहीं करेंगे यहाँ तक कि हमारे लिए कोई चीज़ मुक़र्रर करो, उन्होंने इस काम पर बकरियों का एक हिस्सा तै किया, रावी कहते हैं: हम में से एक आदमी उस पर सूरह फातिहा पढ़ने लगा तो वह ठीक हो गया। जब हम नबी(ﷺ) के पास आए तो हम ने आप से इसका ज़िक्र किया आप ने फ़रमाया: "तुम्हें यह किसने बताया कि यह सूरह दम है?" और सहाबी ने आप(ﷺ) की तरफ़ से मुमानअत ज़िक्र नहीं की और आप(ﷺ) ने फ़रमाया; "खाओ और अपने साथ मेरा भी हिस्सा निकालो।"

बुख़ारी: 3/ 121. मुस्लिम: 7/ 19

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और आमश की जाफ़र बिन इयास से रिवायतकर्दा हदीस से ज़्यादा सहीह है। नीज़ बहुत से लोगों ने इस हदीस को अबू बिशर जाफ़र बिन अबी वह्शिया से बवास्ता अबू मुतवक्किल, अबू सईद (رضي الله عنه) से रिवायत किया है। जबकि जाफ़र बिन इयास, जाफ़र बिन अबी वह्शिया ही हैं।

21 بَابُ مَا جَاءَ فِي الرُّقَى وَالأَدْوِيَةِ

21 - दम झाड़ और अदवियात (दवाओं) का बयान।

2065 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي خِزَامَةَ، عَنْ أَبِيهِ قَالَ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَرَأَيْتَ

2065 - अबू खिज़ामा अपने बाप से रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से सवाल किया: मैंने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आप बताइए कि यह जो हम दम करवाते हैं, दवा जिससे इलाज करवाते हैं और कोई बचाव की चीज़ जिस से हम अपना बचाव करते हैं

رُقًى نَسْتَرْقِيهَا وَدَوَاءً نَتَدَاوَى بِهِ وَتُقَاةً نَتَّقِيهَا، هَلْ تَرُدُّ مِنْ قَدَرِ اللهِ شَيْئًا؟ قَالَ: هِيَ مِنْ قَدَرِ اللهِ.

क्या यह अल्लाह की तक्दीर से कुछ रद्द कर सकती है? आप ने फ़रमाया: "यह चीजें (इस्तेमाल करना) भी अल्लाह की तक़्दीर के साथ ही हैं।

ज़ईफ़:इब्ने माजह: 3437. मुसनद अहमद: 3/421.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

अबू ईसा कहते हैं, हमें सईद बिन अब्दुर्रहमान ने (वह कहते हैं, हमें सुफ़ियान ने ज़ोहरी से बवास्ता अबू खिज़ामा उनके बाप से नबी(ﷺ) की ऐसी ही हदीस रिवायत की है और यह हदीस भी हसन सहीह है। नीज़ इब्ने उयय्ना से दोनों रिवायतें मर्वी हैं। बअ़ज़ ने अबू खिज़ामा अन अबीह और बअ़ज़, अन अबी.खिजामा अन अबीह ज़िक्र किया है और बअ़ज़ ने सिर्फ अन अबी खिज़ामा कहा है और यह ज़्यादा सहीह है नीज़ हम अबू खिज़ामा की उनके बाप से उनके अलावा कोई और हदीस नहीं जानते।

22 بَابُ مَا جَاءَ فِي الْكَمْأَةِ وَالْعَجْوَةِ

22 - खुम्बी और अज्वा खुजूर का बयान।

2066 - حَدَّثَنَا أَبُو عُبَيْدَةَ أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الْهَمْدَانِيُّ وَهُوَ ابْنُ أَبِي السَّفَرِ، وَمَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَا: حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِرٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الْعَجْوَةُ مِنَ الْجَنَّةِ وَفِيهَا شِفَاءٌ مِنَ السُّمِّ، وَالْكَمْأَةُ مِنَ الْمَنِّ وَمَاؤُهَا شِفَاءٌ لِلْعَيْنِ.

2066 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضی اللہ عنہ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: " अज्वा खुजूर जन्नत (के फलों में से) है, इसमें ज़हर की तर्याक है और खुम्बी[1] मन्न में से है इसका पानी आँख के लिए शिफा है।"

हसन: सहीह: मुसनद अहमद: 2/325.

तौज़ीह: الكَمْأةُ: खुम्बी यह ज़मीन में फलती फूलती है इसे चुनकर पका कर खाया जाता है। इसका हजम मुख्तलिफ़ अक्साम के एतबार से मुख्तलिफ़ होता है।(अल-मोजमुल वसीत:पृ.946)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं:इस बारे में सईद बिन ज़ैद, अबू सईद और जाबिर (رضی اللہ عنہ) से भी हदीस मर्वी है।

नीज़ इस सनद के साथ यह हदीस ग़रीब है और यह तरीक़ मुहम्मद बिन अम्र का है और हम मुहम्मद बिन अम्र की हदीस सईद बिन आमिर से जानते हैं।

2067 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ عُبَيْدٍ الطَّنَافِسِيُّ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ (ح) وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ حُرَيْثٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ زَيْدٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: الكَمْأَةُ مِنَ الْمَنِّ وَمَاؤُهَا شِفَاءٌ لِلْعَيْنِ.

2067 - सय्यदना सईद बिन ज़ैद (رضی اللہ عنہ) रिवायत करते हैं कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: "खुम्बी मन्न[1] में से है और इसका पानी आँख के लिए शिफ़ा है।"

बुख़ारी: 4478. मुस्लिम: 2049. इब्ने माजह: 3454.

तौज़ीह: (1) الْمَنّ: वह चीज़ है जो बनी इस्राईल के खाने के लिए उतारी जाती थी।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2068 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ شَهْرِ بْنِ حَوْشَبٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ نَاسًا مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالُوا: الكَمْأَةُ جُدَرِيُّ الأَرْضِ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الكَمْأَةُ مِنَ الْمَنِّ وَمَاؤُهَا شِفَاءٌ لِلْعَيْنِ، وَالعَجْوَةُ مِنَ الجَنَّةِ وَهِيَ شِفَاءٌ مِنَ السُّمِّ.

2068 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضی اللہ عنہ) रिवायत करते हैं कि नबी(ﷺ) के सहाबा में से कुछ लोगों ने कहा कि खुम्बी ज़मीन की चेचक है तो अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने फ़रमाया: "खुम्बी मन्न में से है और इसका पानी आँख के लिए शिफ़ा है। नीज़ अज्वा जन्नत (के फलों में) से है यह ज़हर के लिए शिफा है।

सहीह: गुज़िश्ता हदीस देखें। मुसनद अहमद: 2/301. दारमी: 2843. इब्ने माजह:3455.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2069 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاذٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ قَتَادَةَ، قَالَ: حُدِّثْتُ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: أَخَذْتُ ثَلَاثَةَ أَكْمُؤٍ أَوْ خَمْسًا أَوْ سَبْعًا فَعَصَرْتُهُنَّ فَجَعَلْتُ مَاءَهُنَّ فِي قَارُورَةٍ فَكَحَلْتُ بِهِ جَارِيَةً لِي فَبَرَأَتْ.

2069 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضی اللہ عنہ) रिवायत करते हैं कि मैंने तीन, पांच, सात खुम्बियाँ लीं, उन्हें निचोड़ा (और) उनका पानी एक शीशी में डाल लिया फिर एक लड़की की आँख में लगाया तो वह ठीक हो गई।

ज़ईफ़ मौक़ूफ़।

2070 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاذٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ قَتَادَةَ، قَالَ: حُدِّثْتُ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: الشُّونِيزُ دَوَاءٌ مِنْ كُلِّ دَاءٍ إِلاَّ السَّامَ قَالَ قَتَادَةُ: يَأْخُذُ كُلَّ يَوْمٍ إِحْدَى وَعِشْرِينَ حَبَّةً فَيَجْعَلُهُنَّ فِي خِرْقَةٍ فَيَنْقَعُهُ فَيَسْتَعِطُ بِهِ كُلَّ يَوْمٍ فِي مَنْخَرِهِ الأَيْمَنِ قَطْرَتَيْنِ وَفِي الأَيْسَرِ قَطْرَةً، وَالثَّانِي فِي الأَيْسَرِ قَطْرَتَيْنِ وَفِي الأَيْمَنِ قَطْرَةً، وَالثَّالِثُ فِي الأَيْمَنِ قَطْرَتَيْنِ وَفِي الأَيْسَرِ قَطْرَةً.

2070 - क़तादा कहते हैं: मुझे बताया गया कि अबू हुरैरा (رضي الله عنه) ने फ़रमाया: "कलौंजी मौत के अलावा हर बीमारी का इलाज है। क़तादा कहते हैं: (इस्तेमाल करने वाला) हर दिन 21 दाने लेकर उन्हें कपड़े के एक टुकड़े में बाँध कर उसे (पानी में) भिगोये फिर हर दिन अपने दायें नथुने में एक क़त्रह डाले और दुसरे दिन बाएं में दो क़त्रे और बाएं में एक क़त्रह टपकाए।

ياخذ ... ... आख़िर तक। के अलावा बाकी रिवायत मौकूफन ज़ईफ़ और मर्फूअन सहीह है। अस-सिलसिला अस-सहीहा: 1905.

23 بَابُ مَا جَاءَ فِي أَجْرِ الكَاهِنِ

23 - काहिन की उजरत।

2071 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الأَنْصَارِيِّ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ ثَمَنِ الكَلْبِ، وَمَهْرِ البَغِيِّ، وَحُلْوَانِ الكَاهِنِ.

2071 - सय्यदना अबू मसऊद अंसारी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने कुत्ते की क़ीमत (खाने), जानिया को पैसे देने और काहिन की मिठाई से मना किया है।

बुख़ारी: 2237. मुस्लिम: 1567. अबू दाऊद: 3428. इब्ने माजह: 2159. निसाई: 4292.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

24 بَابُ مَا جَاءَ فِي كَرَاهِيَةِ التَّعْلِيقِ

24 - (तावीज़ वग़ैरह) लटकाने का बयान।

2072 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَدُّوَيْهِ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ عِيسَى، أَخِيهِ قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى عَبْدِ اللهِ بْنِ عُكَيْمٍ أَبِي

2072 - ईसा बिन अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला से रिवायत है कि मैं अब्दुल्लाह बिन उकैम अबू माबद जुहनी के पास उनकी तीमारदारी के लिए गया उन्हें ख़सरा[1] की बीमारी थी। मैंने कहा आप कोई चीज़ क्यों नहीं लटका लेते? उन्होंने

مَعْبَدِ الجُهَنِيِّ، أَعُودُهُ وَبِهِ حُمْرَةٌ، فَقُلْنَا: أَلاَ تُعَلِّقُ شَيْئًا؟ قَالَ: الْمَوْتُ أَقْرَبُ مِنْ ذَلِكَ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مَنْ تَعَلَّقَ شَيْئًا وُكِلَ إِلَيْهِ

कहा: मौत इस से ज़्यादा करीब है। नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: "जिस ने कोई चीज़ लटकाई वह उसी (चीज़) के सुपुर्द कर दिया जाता है।"

सहीह: मुसनद अहमद: 4/310. हाकिम: 4/216. बैहक़ी: 9/351.

वज़ाहत: حُمْرَةٌ: एक जिल्दी बीमारी (चर्मरोग) जिस में मर्ज़ वाली जगह सुर्ख होने के अलावा तेज़ बुखार भी होता है। (यानी ख़सरा देखिये अल-मोजमुल वसीत:पृ.232. अल-कामूसुल वहीद:पृ.374)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: अब्दुल्लाह बिन उकैम की हदीस को हम मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला के तरीक़ से ही जानते हैं और अब्दुल्लाह बिन उकैम ने नबी(ﷺ) से सिमा नहीं किया। वह नबी(ﷺ) के ज़माना में ही थे। वह फ़रमाते हैं: रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हमारी तरफ़ ख़त लिखा था।

अबू ईसा कहते हैं: हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने वह कहते हैं, हमें यह्या बिन सईद ने इब्ने अबी लैला से इसी मानी व मफ्हूम की हदीस बयान की है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: इस बारे में उक़्बा बिन आमिर (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

25 بَابُ مَا جَاءَ فِي تَبْرِيدِ الحُمَّى بِالمَاءِ

25 - बुख़ार को पानी से ठंडा करना।

2073 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَبَايَةَ بْنِ رِفَاعَةَ، عَنْ جَدِّهِ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: الحُمَّى فَوْرٌ مِنَ النَّارِ فَأَبْرِدُوهَا بِالمَاءِ.

2073 - सय्यदना राफ़े बिन ख़दीज (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: "बुखार जहन्नम के जोश की वजह से है। तुम इसे पानी के साथ ठंडा करो।"

बुख़ारी: 3262. मुस्लिम: 2212. इब्ने माजह: 3473

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: इस बारे में अस्मा बिन्ते अबी बक्र, इब्ने उमर, इब्ने अब्बास ज़ुबैर की बीवी और आयशा (رضي الله عنها) से भी हदीस मर्वी है।

2074 - حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ إِسْحَاقَ الهَمْدَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ

2074 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "बुखार जहन्नम की भाप (की वजह) से है। तुम इसे पानी के साथ ठंडा करो।"

बुख़ारी: 5724. मुस्लिम: 2211. इब्ने माजह: 3474.

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ الحُمَّى مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ فَأَبْرِدُوهَا بِالمَاءِ. حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ إِسْحَاقَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ فَاطِمَةَ بِنْتِ الْمُنْذِرِ، عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ نَحْوَهُ.

अबू ईसा कहते हैं, हमें हारून बिन इस्हाक़ ने वह कहते हैं, हमें अब्दा ने हिशाम बिन उर्वा से उन्होंने फातिमा बिन्ते मुन्ज़िर से बवास्ता सय्यदा अस्मा बिन्ते अबी बक्र (رضي الله عنها), नबी करीम(ﷺ) से ऐसे ही रिवायत की है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: अस्मा (رضي الله عنها) की हदीस में इस से ज़्यादा कलाम है और दोनों हदीसें ही सहीह हैं।

26 بَابٌ دعاء الحمي و الأوجاع كلها

26 - बुखार और तमाम दर्दों (से निजात) की दुआ।

2075 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ العَقَدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي حَبِيبَةَ، عَنْ دَاوُدَ بْنِ حُصَيْنٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يُعَلِّمُهُمْ مِنَ الحُمَّى وَمِنَ الأَوْجَاعِ كُلِّهَا أَنْ يَقُولَ: بِسْمِ اللهِ الكَبِيرِ، أَعُوذُ بِاللَّهِ العَظِيمِ مِنْ شَرِّ كُلِّ عِرْقٍ نَعَّارٍ، وَمِنْ شَرِّ حَرِّ النَّارِ.

2075 - सय्यदना इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी(ﷺ) ने उन्हें बुखार और तमाम दर्दों के लिए (यह दुआ) सिखाते, आप कहते: तर्जुमा "अल्लाह बड़े के नाम से, मैं अज़मत वाले अल्लाह के नाम से हर भड़कने वाली रग के शर और जहन्नम की गर्मी के शर से पनाह माँगता हूँ।"

ज़ईफ़: इब्ने माजह: 3526. मुसनद अहमद: 1/300

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे इब्राहीम बिन इस्माईल बिन अबी हबीबा के तरीक़ से ही जानते हैं और इब्राहीम हदीस में ज़ईफ़ है नीज़(عرق يعار): (आवाज़ देने वाली रग) के अल्फ़ाज़ भी मर्वी हैं।

27 - ग़ीला का बयान।

27 بَابُ مَا جَاءَ فِي الغِيلَةِ

2076 - सय्यदा जुदामा बिन्ते वहब (رضي الله عنها) रिवायत करती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "मैंने ग़ीला[1] से मना करने का इरादा किया था, (फिर देखा कि) फारस और रूम के लोग भी यह करते हैं और वह अपनी औलाद को क़त्ल नहीं करते" (यानी इस से नुकसान नहीं होता)

मुस्लिम: 1442. अबू दाऊद: 3882. इब्ने माजह: 2100.निसाई: 3326.

2076 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ إِسْحَاقَ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ نَوْفَلٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، عَنْ ابْنَةِ وَهْبٍ وَهِيَ جُدَامَةُ قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: أَرَدْتُ أَنْ أَنْهَى عَنِ الغِيَالِ فَإِذَا فَارِسُ وَالرُّومُ يَفْعَلُونَ وَلاَ يَقْتُلُونَ أَوْلاَدَهُمْ.

तौज़ीह: الغِيلَةِ: बच्चे को दूध पिलाने वाली औरत से मुबाशिरत (जिमा) (हमबिस्तरी) करने को गीला कहा जाता है। इसकी मुमानअत (मनाही) नहीं है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: इस बारे में अस्मा बिन्ते यज़ीद (رضي الله عنها) से भी हदीस मर्वी है।और यह हदीस हसन सहीह है। इमाम मालिक ने भी अबू अस्वद से बवास्ता उर्वा आयशा (رضي الله عنها) से और उन्होंने जुदामा बिन्ते वहब (رضي الله عنها) के ज़रिए नबी(ﷺ) से ऐसे ही रिवायत की है।

इमाम मालिक फ़रमाते हैं: आदमी का अपने दूध पिलाने वाली बीवी से जिमा (हमबिस्तरी) करना ग़ीला कहा जाता है।

2077 - सय्यदा जुदामा बिन्ते वहब असदिया (رضي الله عنها) रिवायत करती हैं कि उन्होंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: " मैंने ग़ीला से रोकने का इरादा किया था यहाँ तक कि मुझे बताया गया कि फारस और रूम के लोग यह करते हैं चुनांचे यह चीज़ उनकी औलाद को नुक़सान नहीं पहुंचाती।"

सहीह: तख़रीज के लिए हदीसे साबिक़ा मुलाहज़ा फ़रमाएं।

2077 - حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ أَحْمَدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ أَبِي الأَسْوَدِ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ نَوْفَلٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، عَنْ جُدَامَةَ بِنْتِ وَهْبٍ الأَسَدِيَّةِ، أَنَّهَا سَمِعَتْ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ أَنْهَى عَنِ الغِيلَةِ حَتَّى ذَكَرْتُ أَنَّ الرُّومَ وَفَارِسَ يَصْنَعُونَ ذَلِكَ فَلاَ يَضُرُّ أَوْلاَدَهُمْ

वज़ाहत: इमाम मालिक फ़रमाते हैं: ग़ीला यह है कि आदमी अपनी दूध पिलाने वाली बीवी से हम बिस्तारी करे। ईसा बिन अहमद कहते हैं: हमें इस्हाक़ बिन ईसा ने भी बवास्ता मालिक अबू अस्वद से ऐसे ही हदीस बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

28 - ज़ातुल जन्ब का बयान।

28 بَابُ مَا جَاءَ فِي دَوَاءِ ذَاتِ الجَنْبِ

2078 - सय्यदना ज़ैद बिन अरक़म (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी(ﷺ) ज़ातुल जन्ब (मर्ज़े- सिल) की वजह से जैतून का तेल और रस तजवीज़ किया करते थे। क़तादा कहते हैं: जिस तरफ़ दर्द हो उसी तरफ़ से मुंह में डाली जाए।

ज़ईफ़: इब्ने माजह:3467. मुसनद अहमद: 4/369. हाकिम: 4/202

2078 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي عَبْدِ اللهِ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَنْعَتُ الزَّيْتَ وَالوَرْسَ مِنْ ذَاتِ الجَنْبِ قَالَ قَتَادَةُ: وَيُلَدُّ مِنَ الْجَانِبِ الَّذِي يَشْتَكِيهِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।और अबू अब्दुल्लाह का नाम मैमून था। यह बुज़ुर्ग बस्रा के रहने वाले थे।

2079 - सय्यदना ज़ैद बिन अरक़म (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हमें हुक्म दिया कि हम ज़ातुल जन्ब (मर्ज़े सिल) का इलाज कुस्ते[1] बहरी और जैतून से करें।

ज़ईफ़: अस- सिलसिला अज़- ज़ईफ़ा: 3396

2079 - حَدَّثَنَا رَجَاءُ بْنُ مُحَمَّدٍ العُذْرِيُّ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي رَزِينٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ خَالِدٍ الحَذَّاءِ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَيْمُونٌ أَبُو عَبْدِ اللهِ، قَالَ: سَمِعْتُ زَيْدَ بْنَ أَرْقَمَ قَالَ: أَمَرَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ نَتَدَاوَى مِنْ ذَاتِ الجَنْبِ بِالقُسْطِ البَحْرِيِّ وَالزَّيْتِ.

तौज़ीह: القُسْط : इसे क़ुस्त हिन्दी में भी कहा जाता है। यह हिन्दुस्तान में पैदा होती है। इसे खुशबू के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है हिन्दुस्तानी लोग इसे किट कहते हैं। जबकि लातीनी में इसे Castas Arabicus कहा जाता है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है। हम इसे ज़ैद बिन अरक़म से मैमून के ज़रिए ही जानते हैं और मैमून से कई मुहद्दिसीन ने इस हदीस को रिवायत किया है। नीज़ ज़ातुल जन्ब से मुराद (मर्ज़े सिल)[1] है।

तौज़ीह: (मर्ज़े सिल): फेफड़े की एक बीमारी है जो मरीज़ को लागर और कमज़ोर करके हलाक कर देती है। (अल-मोजमुल वसीत:पृ.526. अल-कामूसुल वहीद:पृ.794) बअज़ कहते हैं कि यह एक बड़ा फोड़ा होता है जो पहलू में अन्दर की तरफ़ ज़ाहिर होता है और अन्दर ही फट जाता है इसका मरीज़ कम ही जांबर होता है। (बच पाता है)

29 - अपने आप से दर्द को कैसे दूर किया जा सकता है?

29 بَابٌ كيف يدفع الوجع عن نفسه

2080 - सय्यदना उस्मान बिन अबिल आस (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) **मेरे पास तशरीफ़ लाये और मुझे ऐसा दर्द था कि क़रीब था कि मुझे हलाक कर देता तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "सात मर्तबा अपना दायाँ हाथ (तकलीफ़ वाली जगह पर) फेरो और साथ में कहो: "मैं अल्लाह की इज़्ज़त, उसकी कुदरत और उसकी हाकिमियत के साथ अपनी तकलीफ़ के शर से पनाह माँगता हूँ।" रावी कहते हैं: "मैंने ऐसे ही किया तो अल्लाह तआला ने मेरी तकलीफ़ को दूर कर दी। फिर मैं हमेशा अपने घर वालों और दूसरे लोगों को इस काम का हुक्म देता रहा।**

मुस्लिम: 2202. अबू दाऊद: 3891. इब्ने माजह: 3522.

2080 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مُوسَى الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ خُصَيْفَةَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ كَعْبٍ السُّلَمِيِّ، أَنَّ نَافِعَ بْنَ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ أَخْبَرَهُ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ أَبِي العَاصِ أَنَّهُ قَالَ: أَتَانِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَبِي وَجَعٌ قَدْ كَادَ يُهْلِكُنِي، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: امْسَحْ بِيَمِينِكَ سَبْعَ مَرَّاتٍ وَقُلْ: أَعُوذُ بِعِزَّةِ اللهِ وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ قَالَ: فَفَعَلْتُ، فَأَذْهَبَ اللَّهُ مَا كَانَ بِي، فَلَمْ أَزَلْ آمُرُ بِهِ أَهْلِي وَغَيْرَهُمْ.

30 - सनामकी का बयान।

30 بَابُ مَا جَاءَ فِي السَّنَا

2081 - सय्यदा अस्मा बिन्ते उमैस (رضي الله عنها) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उन से पूछा

2081 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَكْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الحَمِيدِ بْنُ

جَعْفَرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عُتْبَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ عُمَيْسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَأَلَهَا: بِمَ تَسْتَمْشِينَ؟ قَالَتْ: بِالشُّبْرُمِ قَالَ: حَارٌّ جَارٌّ قَالَتْ: ثُمَّ اسْتَمْشَيْتُ بِالسَّنَا، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَوْ أَنَّ شَيْئًا كَانَ فِيهِ شِفَاءٌ مِنَ الْمَوْتِ لَكَانَ فِي السَّنَا.

तुम किस चीज़ से अपने पेट का इस्हाल[1] करती हो? उन्होंने कहा: शुब्रूम[2] से आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "(यह) गर्म और नुकसान देह है" कहती हैं: फिर मैंने سَنًا के साथ इस्हाल किया तो नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: "अगर किसी चीज़ में मौत की शिफा होती तो सना में होती।"

ज़ईफ़: इब्ने माजह: 3461. मुसनद अहमद: 6/369

तौज़ीह: (1)اسهال : इस से मुराद जुलाब लेना है।

(2) شُبْرُم: क़द्दे आदम जितना एक दरख़्त है। इसकी शाख़ें सुर्ख़ व सफ़ेद होती हैं इस पर फूल लगते हैं जो ज़र्द और सफेदी माइल होते हैं। फिर उस पर फल नुमूदार होते हैं जिन में छोटे छोटे दाने होते हैं।

(3)سنا مكي : एक मारूफ पौधा है इसकी पत्ती क़ब्ज़ कुशा है।

31 بَابُ مَا جَاءَ فِي التَّدَاوِي بِالعَسَلِ

31 - शहद के साथ इलाज करना।

2082 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي الْمُتَوَكِّلِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِنَّ أَخِي اسْتَطْلَقَ بَطْنُهُ، فَقَالَ: اسْقِهِ عَسَلاً فَسَقَاهُ ثُمَّ جَاءَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، قَدْ سَقَيْتُهُ عَسَلاً فَلَمْ يَزِدْهُ إِلاَّ اسْتِطْلاَقًا، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اسْقِهِ عَسَلاً فَسَقَاهُ ثُمَّ جَاءَهُ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، قَدْ سَقَيْتُهُ عَسَلاً فَلَمْ يَزِدْهُ إِلاَّ

2082 - अबू सईद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि एक आदमी ने नबी(ﷺ) के पास आकर अर्ज़ की कि मेरे भाई को दस्त आते हैं, आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "उसे शहद पिलाओ" उसने पिलाया, फिर आकर कहने लगा: ऐ अल्लाह के रसूल ! मैंने उसे शहद पिलाया था उस से तो दस्त और बढ़ गए हैं, अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने फ़रमाया: "उसे शहद पिलाओ।" उसने पिलाया फिर आप के पास आकर कहने लगा: ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने उसे पिलाया था उसे दस्त और बढ़ गए हैं तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया; "अल्लाह तआला ने सच कहा है और तुम्हारे भाई का पेट

اسْتِطْلَاقًا، قَالَ: فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: صَدَقَ اللَّهُ وَكَذَبَ بَطْنُ أَخِيكَ، اسْقِهِ عَسَلاً فَسَقَاهُ عَسَلاً فَبَرَأَ.

झूठ बोलता है, उसे शहद पिलाओ।" उसने पिलाया तो वह ठीक हो गया।

बुख़ारी: 5684. मुस्लिम: 2217

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

32 بَابٌ مع يقول عند عيادة المريض

32 - मरीज़ की तीमारदारी करते वक़्त क्या कहा जाए?

2083 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ يَزِيدَ أَبِي خَالِدٍ، قَالَ: سَمِعْتُ الْمِنْهَالَ بْنَ عَمْرٍو يُحَدِّثُ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ: مَا مِنْ عَبْدٍ مُسْلِمٍ يَعُودُ مَرِيضًا لَمْ يَحْضُرْ أَجَلُهُ فَيَقُولُ سَبْعَ مَرَّاتٍ: أَسْأَلُ اللَّهَ الْعَظِيمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ أَنْ يَشْفِيَكَ إِلاَّ عُوفِيَ.

2083 - सय्यदना इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: "जो मुसलमान आदमी" (ऐसे) मरीज़ की इयादत करे जिसकी मौत का वक़्त नहीं आया और कहे: मैं अल्लाह अज़मत वाले, अर्शे अजीम के रब से सवाल करता हूँ कि तुम्हें शिफा दे दे, तो वह (अल्लाह के हुक्म से) तंदुरुस्त हो जाएगा।"

सहीह: अबू दाऊद:3106. मुसनद अहमद:1/239. हाकिम: 1/342. अबू याला:243.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे मिन्हाल बिन अम्र की सनद से ही जानते हैं

33 بَابٌ كيفية تبريد الحمي بالماء

33 - बुख़ार (की गर्मी) को पानी के साथ ठंडा करने का तरीक़ा।

2084 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ سَعِيدٍ الأَشْقَرُ الرِّبَاطِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَرْزُوقٌ أَبُو عَبْدِ اللهِ الشَّامِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الشَّامِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا

2084 - सय्यदना सौबान (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: " जब तुम में से किसी शख़्स को बुखार हो जाए तो बुखार आग का एक टुकडा है, उसे चाहिए कि उसे पानी के साथ बुझाए। इसका तरीका यह है कि वह

ثَوْبَانُ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِذَا أَصَابَ أَحَدَكُمُ الحُمَّى فَإِنَّ الحُمَّى قِطْعَةٌ مِنَ النَّارِ فَلْيُطْفِئْهَا عَنْهُ بِالمَاءِ فَلْيَسْتَنْقِعْ نَهْرًا جَارِيًا لِيَسْتَقْبِلَ جَرْيَةَ الْمَاءِ فَيَقُولُ: بِسْمِ اللهِ، اللَّهُمَّ اشْفِ عَبْدَكَ وَصَدِّقْ رَسُولَكَ، بَعْدَ صَلَاةِ الصُّبْحِ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ فَلْيَغْتَمِسْ فِيهِ ثَلَاثَ غَمَسَاتٍ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ، فَإِنْ لَمْ يَبْرَأْ فِي ثَلَاثٍ فَخَمْسٍ، وَإِنْ لَمْ يَبْرَأْ فِي خَمْسٍ فَسَبْعٌ، فَإِنْ لَمْ يَبْرَأْ فِي سَبْعٍ فَتِسْعٍ فَإِنَّهَا لَا تَكَادُ تُجَاوِزُ تِسْعًا بِإِذْنِ اللَّهِ.

बहती हुई नहर में उतरे, जिधर से पानी आ रहा हो उधर मुंह कर के यह कहे: अल्लाह के नाम से, ऐ अल्लाह! अपने बन्दे को शिफ़ा दे और अपने रसूल की तस्दीक कर, (यह काम) सुबह की नमाज़ के बाद और तुलू- ए- आफ़ताब से पहले करे, फिर इसमें तीन गोते लगाए, तीन दिन तक यह काम करे) अगर तीन दिन में ठीक न हो तो पांच दिन, अगर पांच दिन में तंदुरुस्त न हो तो सात दिन, अगर सात दिन में भी ठीक न हो तो नौ दिन, अल्लाह के हुक्म से नौवें दिन से तजावुज़ नहीं कर सकता।

ज़ईफ़ मुसनद अहमद: 5/281

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

34 بَابُ التَّدَاوِي بِالرَّمَادِ

34 - राख से इलाज करना।

2085 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، قَالَ: سُئِلَ سَهْلُ بْنُ سَعْدٍ وَأَنَا أَسْمَعُ، بِأَيِّ شَيْءٍ دُووِيَ جَرْحُ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ فَقَالَ: مَا بَقِيَ أَحَدٌ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّي، كَانَ عَلِيٌّ يَأْتِي بِالمَاءِ فِي تُرْسِهِ وَفَاطِمَةُ تَغْسِلُ عَنْهُ الدَّمَ، وَأُحْرِقَ لَهُ حَصِيرٌ فَحُشِيَ بِهِ جُرْحُهُ.

2085 - अबू हाजिम (رحمه الله) कहते हैं कि मेरी मौजूदगी में सहल बिन साद (رضي الله عنه) से पूछा गया कि नबी(ﷺ) के ज़ख्म का इलाज किस चीज़ से किया गया था? उन्होंने फ़रमाया: उस चीज़ को मुझसे ज़्यादा बेहतर जानने वाला और कोई नहीं रहा। अली (رضي الله عنه) अपनी ढाल में पानी लेकर आते और फातिमा (رضي الله عنها) आप(ﷺ) से खून को धोतीं फिर टाट जलाया गया उसके साथ आप(ﷺ) के ज़ख्म को भर दिया गया।

बुखारी: 243. मुस्लिम: 1790. इब्ने माजह: 3464.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2086 - सय्यदना अनस बिन मालिक (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "मरीज़ जब तंदुरुस्त हो जाता है सफाई और रंग में उसकी मिसाल आसमान से गिरने वाले बर्फ़ के टुकड़े (ओले) की तरह होती है।"

मौज़ू: मुहक़्क़िक़ ने इसकी तख़रीज ज़िक्र नहीं की।

2086 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا الوَلِيدُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْمُوقَرِيُّ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّمَا مَثَلُ الْمَرِيضِ إِذَا بَرَأَ وَصَحَّ كَالبَرْدَةِ تَقَعُ مِنَ السَّمَاءِ فِي صَفَائِهَا وَلَوْنِهَا

35 - मरीज़ (को तसल्ली दे कर उस) का दिल ख़ुश करना।

35 بَابٌ تطييب نفس المريض

2087 - सय्यदना अबू सईद (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "जब तुम कभी मरीज़ के पास जाओ तो उसके लिए लम्बी उम्र की दुआ करो, यह काम किसी चीज़ को हटा तो नहीं सकता (लेकिन) उसके दिल को खुश कर देता है।"

ज़ईफ़: जिद्दा: इब्ने माजह: 1438.

2087 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ سَعِيدٍ الأَشَجُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُقْبَةُ بْنُ خَالِدٍ السَّكُونِيُّ، عَنْ مُوسَى بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا دَخَلْتُمْ عَلَى الْمَرِيضِ فَنَفِّسُوا لَهُ فِي أَجَلِهِ فَإِنَّ ذَلِكَ لاَ يَرُدُّ شَيْئًا وَيُطَيِّبُ نَفْسَهُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है।

2088 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी(ﷺ) ने बुखार में मुब्तला एक शख़्स की इयादत करते हुए फ़रमाया: "ख़ुश हो जाओ, यक़ीनन अल्लाह तआला फ़रमाता है, यह मेरी आग है मैं इसे अपने गुनाहगार बन्दे पर मुसल्लत करता हूँ ताकि यह उसका जहन्नम से हिस्सा हो जाए।"

इब्ने अबी शैबा: 3/229. मुसनद अहमद:2/440. इब्ने माजह: 3470.

2088 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، وَمَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالاَ: حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ بْنِ جَابِرٍ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ الأَشْعَرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ عَادَ رَجُلاً مِنْ وَعَكٍ كَانَ بِهِ فَقَالَ: أَبْشِرْ، فَإِنَّ اللَّهَ يَقُولُ: هِيَ نَارِي أُسَلِّطُهَا عَلَى عَبْدِي الْمُذْنِبِ لِتَكُونَ حَظَّهُ مِنَ النَّار

2089 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، عَنْ سُفْيَانَ الثَّوْرِيِّ، عَنْ هِشَامِ بْنِ حَسَّانَ، عَنِ الحَسَنِ قَالَ: كَانُوا يَرْتَجُونَ الحُمَّى لَيْلَةً كَفَّارَةً لِمَا نَقَصَ مِنَ الذُّنُوبِ

2089 - हसन बसरी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: लोग एक रात के बुख़ार को अपने गुनाहों के लिए कफ्फ़ारा कहा करते थे।

मुहक़्क़िक़ ने इस पर तहक़ीक़ व तख़रीज ज़िक्र नहीं की लेकिन सुफ़ियान और हिशाम के अनअना की वजह से ज़ईफ़ है।

ख़ुलासा

- परहेज़ करना बीमारियों में फ़ायदेमन्द है।
- दवा का इस्तेमाल मस्नून है।
- कलौंजी में हर बीमारी का इलाज है।
- ख़ुदकुशी करना बहुत बड़ा गुनाह है। इसके सबब जहन्नम में सख़्त अज़ाब होगा।
- नशा आवर अदवियात (दवाओं) का इस्तेमाल हराम है। नीज़ इसमें शिफ़ा नहीं होती।
- हिजामा (सींगी) एक बेहतरीन इलाज है।
- क़ुरआनी आयात और मस्नून दुआओं से दम करना जायज़ है।
- नज़रेबद का लग जाना बरहक़ है और इसका इलाज क़ुरआन से किया जा सकता है।
- तावीज़ लटकाना जायज़ नहीं है।
- दूध पिलाने वाली औरत से मुबाशिरत करने में शरअन कोई क़बाहत (ख़राबी) नहीं।
- शहद में लोगों के लिए शिफ़ा है।
- बीमार की इयादत के वक़्त उसे तसल्ली दी जाए।

मज़मून नम्बर 27

أَبْوَابُ الْفَرَائِضِ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

रसूलुल्लाह(ﷺ) से मर्वी विरासत के अहकामो-मसाइल

तआरुफ़

23 अबवाब और 26 अहादीस पर मुश्तमिल इस उन्वान के तहत आप पढ़ेंगे कि:

- अस्हाबुल फुरूज़ कौन- कौन से रिश्ते हैं?
- अस्बात कौन हैं और किस सूरत में वारिस बनते हैं?
- विरासत से माने (रोकने वाले) कौन से अस्बाब हैं?

1 بَابُ مَا جَاءَ مَنْ تَرَكَ مَالاً فَلِوَرَثَتِهِ

2090 - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ الأُمَوِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرٍو، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ تَرَكَ مَالاً فَلِوَرَثَتِهِ، وَمَنْ تَرَكَ ضَيَاعًا فَإِلَيَّ.

1 - जो शख़्स माल छोड़ कर मरे वह उसके वारिसों का है।

2090 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: " जिसने माल छोड़ा तो वह माल उसके वारिसों का है और जिसने मोहताज वरसा छोड़े उनकी किफ़ालत मेरे ज़िम्मे है।"

बुख़ारी: 2298. मुस्लिम: 1619. अबू दाऊद: 2955. इब्ने माजह: 2415. निसाई: 1263.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और ज़ोहरी ने भी बवास्ता अबू सलमा सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) के ज़रिए नबी करीम(ﷺ) की इस से लम्बी और मुकम्मल हदीस बयान की है।

इस बारे में जाबिर और अनस (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है और आप(ﷺ) का फ़रमान: "ضَيَاعًا : से मुराद ضائع है। यानी जिस के पास कुछ भी न हो तो मैं उसकी किफ़ालत करूंगा।

2 - फ़राइज़ को सीखना।

2 بَابُ مَا جَاءَ فِي تَعْلِيمِ الفَرَائِضِ

2091 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: " फ़राइज़[1] और कुरआन सीखो और इसे लोगों को सिखाओ (क्योंकि) मैं फौत किया जाने वाला हूँ।"

ज़ईफ़।

2091 - حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى بْنُ وَاصِلٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ القَاسِمِ الأَسَدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الفَضْلُ بْنُ دَلْهَمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَوْفٌ، عَنْ شَهْرِ بْنِ حَوْشَبٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: تَعَلَّمُوا القُرْآنَ وَالفَرَائِضَ وَعَلِّمُوا النَّاسَ فَإِنِّي مَقْبُوضٌ.

तौज़ीह: الفَرَائِضِ से मुराद विरासत का इल्म है। इसको तक़्सीम करना और इस को पहचानना वग़ैरह।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: इस हदीस में इज़्तिराब है। अबू उसामा ने इस हदीस को औफ़ से एक मज्हूल (गुमनाम) आदमी के ज़रिए सुलैमान बिन जाबिर (رضي الله عنه) से रिवायत किया है और वह बवास्ता इब्ने मसऊद (رضي الله عنه) नबी करीम(ﷺ) से रिवायत करते हैं।

हमें यह हदीस हसन बिन हुरैस ने और उन्हें उसामा ने बयान की है। नीज़ मुहम्मद बिन कासिम असदी को इमाम अहमद बिन हंबल वग़ैरह ने ज़ईफ़ कहा है।

3 - बेटियों की विरासत।

3 بَابُ مَا جَاءَ فِي مِيرَاثِ البَنَاتِ

2092 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि साद बिन रबीअ की बीवी साद की दो बेटियों को लेकर रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई, कहने लगी: ऐ अल्लाह के रसूल! यह दोनों साद बिन रबीअ की बेटियाँ हैं, इनका बाप उहुद के दिन आपके साथ (मिलकर लड़ता हुआ) शहीद हो गया है और इनके चचा ने उनका माल ले लिया है, इनके लिए माल नहीं छोड़ा इनके

2092 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي زَكَرِيَّا بْنُ عَدِيٍّ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَمْرٍو، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ عَقِيلٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: جَاءَتْ امْرَأَةُ سَعْدِ بْنِ الرَّبِيعِ بِابْنَتَيْهَا مِنْ سَعْدٍ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، هَاتَانِ ابْنَتَا سَعْدِ بْنِ الرَّبِيعِ، قُتِلَ أَبُوهُمَا

مَعَكَ يَوْمَ أُحُدٍ شَهِيدًا، وَإِنَّ عَمَّهُمَا أَخَذَ مَالَهُمَا، فَلَمْ يَدَعْ لَهُمَا مَالاً وَلاَ تُنْكَحَانِ إِلاَّ وَلَهُمَا مَالٌ، قَالَ: يَقْضِي اللَّهُ فِي ذَلِكَ فَنَزَلَتْ: آيَةُ الْمِيرَاثِ، فَبَعَثَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى عَمِّهِمَا، فَقَالَ: أَعْطِ ابْنَتَيْ سَعْدٍ الثُّلُثَيْنِ، وَأَعْطِ أُمَّهُمَا الثُّمُنَ، وَمَا بَقِيَ فَهُوَ لَكَ.

पास माल होगा तो इनका निकाह हो सकता है, नबी करीम(ﷺ) ने फ़रमाया: "इस बारे में अल्लाह तआला फैसला करेगा" फिर मीरास के अहकामात वाली आयत नाजिल हुई तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उन दोनों लड़कियों के चचा को पैगाम भेजा आप ने फ़रमाया, साद की दोनों बेटियों को दो तिहाई और उनकी मां को आठवां हिस्सा दो और जो बच जाए वह तुम्हारा है।

हसन: अबू दाऊद: 2891. इब्ने माजह: 2720. मुसनद अहमद: 3/352

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। हम इसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अकील के तरीक़ से ही जानते हैं।

नीज़ शरीक़ ने भी अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अकील से इस हदीस को इसी तरह रिवायत किया है।

4 بَابُ مَا جَاءَ فِي مِيرَاثِ ابْنَةِ الابْنِ مَعَ ابْنَةِ الصُّلْبِ

4 - हक़ीक़ी बेटी के साथ पोती की मीरास।

2093 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَرَفَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، عَنْ سُفْيَانَ الثَّوْرِيِّ، عَنْ أَبِي قَيْسٍ الأَوْدِيِّ، عَنْ هُزَيْلِ بْنِ شُرَحْبِيلَ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى أَبِي مُوسَى، وَسَلْمَانَ بْنِ رَبِيعَةَ فَسَأَلَهُمَا عَنِ الابْنَةِ وَابْنَةِ الابْنِ وَأُخْتٍ لأَبٍ وَأُمٍّ؟ فَقَالاَ: لِلابْنَةِ النِّصْفُ، وَلِلأُخْتِ مِنَ الأَبِ وَالأُمِّ مَا بَقِيَ، وَقَالاَ لَهُ: انْطَلِقْ إِلَى عَبْدِ اللهِ، فَاسْأَلْهُ فَإِنَّهُ

2093 - हुज़ैल बिन शुरहबील (رحمه الله) कहते हैं एक आदमी ने अबू मूसा और सलमान बिन रबीया (رضي الله عنه) के पास आकर उनसे बेटी, पोती और मां बाप की तरफ़ से सगी बहन की मीरास के बारे में पूछा तो उन दोनों ने फ़रमाया: बेटी का आधा और हक़ीक़ी बहन के लिए बाकी बचने वाला सब है और इसमें यह भी कहा कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद के पास जाकर उनसे भी पूछो वह हमारी मुवाफिक़त करेंगे। वह आदमी अब्दुल्लाह के पास आया और उनको उन दोनों हज़रात के फतवा के बारे में बताया तो

سَيُتَابِعُنَا، فَأَتَى عَبْدَ اللهِ فَذَكَرَ ذَلِكَ لَهُ وَأَخْبَرَهُ بِمَا قَالاَ: قَالَ عَبْدُ اللهِ: قَدْ ضَلَلْتُ إِذًا، وَمَا أَنَا مِنَ الْمُهْتَدِينَ، وَلَكِنِّي أَقْضِي فِيهِمَا كَمَا قَضَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لِلابْنَةِ النِّصْفُ، وَلِابْنَةِ الِابْنِ السُّدُسُ تَكْمِلَةَ الثُّلُثَيْنِ، وَلِلأُخْتِ مَا بَقِيَ.

अब्दुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: तब तो मैं गुमराह हो जाउंगा और हिदायत याफ्ता लोगों में से नहीं रहूंगा बल्कि मैं इसमें ऐसे ही फैसला करूं जैसे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फैसला किया था कि बेटी को आधा और पोती को दो तिहाई मुकम्मल करते हुए छठा मिलेगा और बाकी बचने वाला माल बहन का है।

बुख़ारी: 6736. अबू दाऊद: 2890. इब्ने माजह:2721.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। अबू कैस औदी का नाम अब्दुर्रहमान बिन सर्वान कूफी है। नीज़ शोबा ने भी अबू कैस से इसी तरह रिवायत की है।

5 بَابُ مَا جَاءَ فِي مِيرَاثِ الإِخْوَةِ مِنَ الأَبِ وَالأُمِّ

5 - सगे भाइयों की मीरास।

2094 - حَدَّثَنَا بُنْدَارٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الحَارِثِ، عَنْ عَلِيٍّ أَنَّهُ قَالَ: إِنَّكُمْ تَقْرَءُونَ هَذِهِ الآيَةَ:{مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوصُونَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ} وَإِنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَضَى بِالدَّيْنِ قَبْلَ الوَصِيَّةِ، وَإِنَّ أَعْيَانَ بَنِي الأُمِّ يَتَوَارَثُونَ دُونَ بَنِي العَلاَّتِ، الرَّجُلُ يَرِثُ أَخَاهُ لأَبِيهِ وَأُمِّهِ دُونَ أَخِيهِ لأَبِيهِ

2094 - सय्यदना अली (ﷺ) से रिवायत है वह फ़रमाते हैं कि तुम इस आयत को इस तरह पढ़ते हो: "वसीयत के बाद जिसकी तुम वसीयत करते हो या क़र्ज़ के बाद" और बेशक रसूलुल्लाह(ﷺ) ने क़र्ज़ को वसीयत से पहले अदा करने का हुक्म दिया है और बेशक हक़ीक़ी बहन भाई अल्लाती[(1)] भाइयों के बरअक्स वारिस बनते हैं, आदमी अपने हक़ीक़ी भाई का वारिस बनता है न कि बाप की तरफ़ से भाई का।

हसन: अल-इर्वा: 1688. इब्ने माजह:2715. मुसनद अहमद: 1/79.

तौज़ीह: (1) जो सिर्फ बाप की तरफ़ से भाई हो उसे अल्लाती भाई कहा जाता है और जो सिर्फ मां की तरफ़ से हो उसे अख्याफ़ी कहा जाता है।

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं, हमें बुन्दार ने वह कहते हैं: हमें यज़ीद बिन हारून ने (वह कहते हैं, हमें ज़करिया बिन अबी ज़ायदा ने अबू इस्हाक़ से उन्हें हारिस ने बवास्ता अली (ﷺ) नबी करीम(ﷺ) से ऐसे ही रिवायत की है।

2095 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ، عَنِ الحَارِثِ، عَنْ عَلِيٍّ قَالَ: قَضَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّ أَعْيَانَ بَنِي الأُمِّ يَتَوَارَثُونَ دُونَ بَنِي العَلاَّتِ.

2095 - सय्यदना अली (رضی اللہ عنہ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़ैसला किया कि हक़ीक़ी भाई एक दूसरे के वारिस बनते न कि अल्लाती भाई।

हसन

6 بَابُ مِيرَاثِ البَنِينَ مَعَ البَنَاتِ

6 - बेटों के साथ बेटियों की विरासत।

2096 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ سَعْدٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ أَبِي قَيْسٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: جَاءَنِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعُودُنِي وَأَنَا مَرِيضٌ فِي بَنِي سَلِمَةَ فَقُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللهِ، كَيْفَ أَقْسِمُ مَالِي بَيْنَ وَلَدِي؟ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيَّ شَيْئًا فَنَزَلَتْ:{يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الأُنْثَيَيْنِ} الآيَةَ.

2096 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضی اللہ عنہ) रिवायत करते हैं कि मैं बीमार था चुनांचे रसूलुल्लाह(ﷺ) मेरी इयादत करने बनू सलमा में मेरे पास तशरीफ़ लाये। मैंने कहा: ऐ अल्लाह के नबी! मैं अपनी औलाद के दर्मियान कैसे तक़्सीम करूं? आप(ﷺ) ने मुझे कोई जवाब न दिया फिर ये आयत नाज़िल हुई: "अल्लाह तआला तुम्हें तुम्हारी औलाद के बारे में हुक्म देता है कि लड़के के लिए दो लड़कियों जितना हिस्सा है।" (अन्निसा: 11)

बुख़ारी: 4577.. मुस्लिम: 1616. अबू दाऊद: 2886. इब्ने माजह: 1434

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ शोबा और इब्ने उयय्ना वग़ैरह ने भी इस हदीस को बवास्ता मुहम्मद बिन मुन्कदिर, सय्यदना जाबिर (رضی اللہ عنہ) से रिवायत किया है।

7 بَابُ مِيرَاثِ الأَخَوَاتِ

7 - बहनों की मीरास।

2097 - حَدَّثَنَا الفَضْلُ بْنُ الصَّبَّاحِ البَغْدَادِيُّ، قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُنْكَدِرِ، سَمِعَ جَابِرَ بْنَ

2097 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضی اللہ عنہ) रिवायत करते हैं कि मैं बीमार हो गया था तो रसूलुल्लाह(ﷺ) मेरी इयादत करने के लिए तशरीफ़ लाये, आप(ﷺ) ने मुझे बेहोशी

عَبْدِ اللهِ يَقُولُ: مَرِضْتُ فَأَتَانِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعُودُنِي، فَوَجَدَنِي قَدْ أُغْمِيَ عَلَيَّ، فَأَتَانِي وَمَعَهُ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَهُمَا مَاشِيَانِ، فَتَوَضَّأَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَصَبَّ عَلَيَّ مِنْ وَضُوئِهِ فَأَفَقْتُ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، كَيْفَ أَقْضِي فِي مَالِي أَوْ كَيْفَ أَصْنَعُ فِي مَالِي؟ فَلَمْ يُجِبْنِي شَيْئًا، وَكَانَ لَهُ تِسْعُ أَخَوَاتٍ حَتَّى نَزَلَتْ آيَةُ الْمِيرَاثِ{يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِي الكَلاَلَةِ} الآيَةَ، قَالَ جَابِرٌ: فِيَّ نَزَلَتْ.

की हालत में पाया, आप(ﷺ) आए तो आपके साथ अबू बक्र व उमर (رضي الله عنهما) भी पैदल तशरीफ़ लाये। फिर रसूलुल्लाह(ﷺ) ने वुज़ू फ़रमाया और अपने वुज़ू वाला पानी मेरे ऊपर फेंका तो मुझे होश आ गया, मैंने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! मैं अपने माल का कैसे फैसला करूं? या मैं अपने माल में क्या तसर्रुफ़ करूं? आप ने मुझे कोई जवाब न दिया और मेरी नौ बहनें थी यहाँ तक कि मीरास की यह आयत नाज़िल हुई; "आप से कलाला[1] के बारे में मसला पूछते हैं आप कह दीजिये कि अल्लाह तुम्हें कलाला के बारे में मसला बताता है।(अन्निसा: 176) जाबिर कहते हैं यह आयत मेरे बारे में नाज़िल हुई थी।

बुख़ारी: 194. मुस्लिम: 1616. अबू दाऊद: 2886. इब्ने माजह: 2728.

(1) الكَلاَلَة: कलाला वह शख़्स होता है जिसके ऊपर आबाई जानिब और नीचे अब्नाई जानिब कोई वारिस न हो और अत्राफ़ में उसके वारिस हों यानी उसकी औलाद और बाप वग़ैरह न हो बल्कि बहन भाई हो।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

8 بَابٌ فِي مِيرَاثِ العَصَبَةِ

8 - अस्बात की मीरास।

2098 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ: حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ طَاوُسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: أَلْحِقُوا الفَرَائِضَ بِأَهْلِهَا فَمَا بَقِيَ فَهُوَ لأَوْلَى رَجُلٍ ذَكَرٍ.

2098 - सय्यदना इब्ने अब्बास (رضي الله عنهما) रिवायत करते हैं कि नबी करीम(ﷺ) ने फ़रमाया: "फ़राइज़[1] को उनके अहल तक पहुंचा दो जो बाक़ी बच जाए वह उसके क़रीबी मर्द रिश्तेदार[2] के लिए है।"

बुख़ारी: 6832. मुस्लिम: 1615. अबू दाऊद: 2898. इब्ने माजह: 2740

तौज़ीह: (1) अहले फ़राइज़: इस्तिलाह में उन्हें अस्हाबुल फ़राइज़ कहा जाता है और इनसे मुराद वह लोग जिनके हिस्से कुरआन व सुन्नत में मुक़र्रर कर दिए गए हैं। यह कुल 12 अफ़राद हैं: 4 मर्दों में और 8 औरतों में। मर्दों में: (1) खाविंद (2)बाप (3)दादा (4) मादरी भाई, और औरतों में (1) बीवी (2) मां (3) दादी/नानी (4) बेटी (5) पोती/ पड़पोती (6) हक़ीक़ी बहन (7) पेदरी बहन (8) मादरी बहन।

(2) इसे असबा कहा जाता है और असबा के लफ़्ज़ी मानी मिलाने, जोड़ने और मज़बूत करने के हैं। इस्तिलाह में मय्यत के वह क़रीबी रिश्तेदार जो अस्हाबुल फुरूज़ से बचा हुआ हिस्सा लेते हैं और वारिस न होने की सूरत में सारे तरके का वारिस बनते हैं।

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं, हमें अब्दा बिन हुमैद ने वह कहते हैं: हमें अब्दुर्रज़्ज़ाक ने मामर से उन्होंने ताऊस से उन्होंने अपने बाप से बवास्ता इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) नबी करीम(ﷺ) से ऐसे ही रिवायत की है।

इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है और बअ़ज़ (कुछ) ने इसे इब्ने ताऊस से उनके बाप के ज़रिए नबी करीम(ﷺ) से मुर्सल रिवायत की है।

9 - दादे की मीरास।

9 بَابُ مَا جَاءَ فِي مِيرَاثِ الجَدِّ

2099 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَرَفَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ يَحْيَى، عَنْ قَتَادَةَ، عَنِ الحَسَنِ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِنَّ ابْنِي مَاتَ فَمَا لِي فِي مِيرَاثِهِ؟ قَالَ: لَكَ السُّدُسُ، فَلَمَّا وَلَّى دَعَاهُ فَقَالَ: لَكَ سُدُسٌ آخَرُ، فَلَمَّا وَلَّى دَعَاهُ قَالَ: إِنَّ السُّدُسَ الآخَرَ طُعْمَةٌ.

2099 - सय्यदना इमरान बिन हुसैन (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि एक आदमी नबी करीम(ﷺ) के पास आकर कहने लगा: मेरा बेटा फौत हो गया है मुझे उसकी मीरास से क्या मिलेगा? आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "तुम्हारे लिए छठा हिस्सा है।" जब वह वापस मुड़ा तो आप(ﷺ) ने उसे बुला कर फ़रमाया: "तुम्हारे लिए एक छठा हिस्सा और भी है।" जब वह वापस मुड़ा तो आपने फिर उसे बुला कर फ़रमाया: "एक और छठा हिस्सा तुम्हें बतौर तुअ़्मा मिलेगा।"

ज़ईफ़: अबू दाऊद:2796. मुसनद अहमद: 4/428. दारे कुत्नी: 4/84. बैहक़ी: 6/244.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और इस मसला में माकिल बिन यसार (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

10 - दादी या नानी की मीरास।

2100 - क़बीसा बिन ज़ुऐब रिवायत करते हैं कि एक नानी या दादी अबू बक्र (ﷺ) के पास आकर कहने लगी कि मेरा पोता (या कहा कि) मेरा नवासा फ़ौत हो गया है और मुझे बताया गया है कि किताबुल्लाह में मेरा हिस्सा मुक़र्रर किया गया है, तो अबू बक्र (ﷺ) ने फ़रमाया: मैं किताबुल्लाह में तुम्हारा हक़ नहीं पाता और न ही मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को तुम्हारे बारे में कोई फ़ैसला करते हुए सुना है मगर मैं लोगों से पूछूंगा तो मुग़ीरा बिन शोबा ने गवाही दी कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसे छठा हिस्सा दिलवाया था। उन्होंने कहा: आपके अलावा और किसने ये बात सुनी थी उन्होंने कहा मुहम्मद बिन मस्लमा (ﷺ) ने। रावी कहते हैं: अबू बक्र (ﷺ) ने उसे छठा हिस्सा दिलवाया फिर एक दादी या नानी उसी बात को लेकर उमर (ﷺ) के पास आयी, सुफ़ियान कहते हैं: इसमें मामर ने ज़ोहरी की तरफ़ कुछ ज़्यादा अल्फ़ाज़ बयान किए थे, मैं ज़ोहरी से तो उनको याद न रख सका लेकिन मामर की तरफ़ से याद हैं कि उमर (ﷺ) ने फ़रमाया अगर तुम दोनों (दादी या नानी) जमा हो तो यह (छठा हिस्सा) तुम दोनों का है और तुम में से जो भी अकेली हो तो यह उसका है।

ज़ईफ़: अबू दाऊद: 2894. इब्ने माजह: 2724. मुसनद अहमद: 4/225.

10 بَابُ مَا جَاءَ فِي مِيرَاثِ الجَدَّةِ

2100 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، قَالَ: حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ، قَالَ مَرَّةً: قَالَ قَبِيصَةُ، وَقَالَ مَرَّةً: عَنْ رَجُلٍ، عَنْ قَبِيصَةَ بْنِ ذُؤَيْبٍ، قَالَ: جَاءَتِ الْجَدَّةُ أُمُّ الأُمِّ، وَأُمُّ الأَبِ إِلَى أَبِي بَكْرٍ، فَقَالَتْ: إِنَّ ابْنَ ابْنِي، أَوْ ابْنَ بِنْتِي مَاتَ، وَقَدْ أُخْبِرْتُ أَنَّ لِي فِي كِتَابِ اللهِ حَقًّا، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: مَا أَجِدُ لَكِ فِي الْكِتَابِ مِنْ حَقٍّ، وَمَا سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَضَى لَكِ بِشَيْءٍ وَسَأَسْأَلُ النَّاسَ، قَالَ: فَسَأَلَ فَشَهِدَ الْمُغِيرَةُ بْنُ شُعْبَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَعْطَاهَا السُّدُسَ قَالَ: وَمَنْ سَمِعَ ذَلِكَ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ، قَالَ: فَأَعْطَاهَا السُّدُسَ ثُمَّ جَاءَتِ الْجَدَّةُ الأُخْرَى الَّتِي تُخَالِفُهَا إِلَى عُمَرَ، قَالَ سُفْيَانُ: وَزَادَنِي فِيهِ مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، وَلَمْ أَحْفَظْهُ عَنِ الزُّهْرِيِّ وَلَكِنْ حَفِظْتُهُ مِنْ مَعْمَرٍ، أَنَّ عُمَرَ قَالَ: إِنْ اجْتَمَعْتُمَا فَهُوَ لَكُمَا، وَأَيَّتُكُمَا انْفَرَدَتْ بِهِ فَهُوَ لَهَا.

2101 - حَدَّثَنَا الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ إِسْحَاقَ بْنِ خَرَشَةَ، عَنْ قَبِيصَةَ بْنِ ذُؤَيْبٍ قَالَ: جَاءَتِ الجَدَّةُ إِلَى أَبِي بَكْرٍ تَسْأَلُهُ مِيرَاثَهَا، قَالَ: فَقَالَ لَهَا: مَا لَكِ فِي كِتَابِ اللهِ شَيْءٌ، وَمَا لَكِ فِي سُنَّةِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَيْءٌ، فَارْجِعِي حَتَّى أَسْأَلَ النَّاسَ، فَسَأَلَ النَّاسَ فَقَالَ الْمُغِيرَةُ بْنُ شُعْبَةَ: حَضَرْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَعْطَاهَا السُّدُسَ فقَالَ أَبُو بَكْرٍ: هَلْ مَعَكَ غَيْرُكَ؟ فَقَامَ مُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ الأَنْصَارِيُّ، فَقَالَ مِثْلَ مَا قَالَ الْمُغِيرَةُ بْنُ شُعْبَةَ، فَأَنْفَذَهُ لَهَا أَبُو بَكْرٍ قَالَ: ثُمَّ جَاءَتِ الجَدَّةُ الأُخْرَى إِلَى عُمَرَ بْنِ الخَطَّابِ تَسْأَلُهُ مِيرَاثَهَا، فَقَالَ: مَا لَكِ فِي كِتَابِ اللهِ شَيْءٌ، وَلَكِنْ هُوَ ذَاكَ السُّدُسُ، فَإِنْ اجْتَمَعْتُمَا فِيهِ فَهُوَ بَيْنَكُمَا، وَأَيَّتُكُمَا خَلَتْ بِهِ فَهُوَ لَهَا.

2101 - क़बीसा बिन ज़ुऐब रिवायत करते हैं कि एक नानी या दादी ने अबू बक्र (ﷺ) के पास आकर अपनी मीरास का सवाल किया, उन्होंने उनसे फ़रमाया: तुम्हारे लिए अल्लाह की किताब में कुछ नहीं है और न अल्लाह के रसूल की सुन्नत में कोई हुक्म है। तुम चली जाओ मैं लोगों से पूछूंगा। फिर उन्होंने लोगों से पूछा तो मुग़ीरा बिन शोबा (ﷺ) ने कहा: मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास था कि आप ने उसे छठा हिस्सा दिया था, उन्होंने फ़रमाया: क्या तुम्हारे साथ कोई और भी था? तो मुहम्मद बिन मस्लमा (ﷺ) ने खड़े होकर मुग़ीरा बिन शोबा की तरह बात की तो अबू बक्र (ﷺ) ने इसी को उस औरत के ऊपर नाफ़िज़ कर दिया। रावी कहते हैं: फिर एक दूसरी दादी या नानी उमर बिन खत्ताब (ﷺ) के पास आकर अपनी मीरास का सवाल किया तो उन्होंने फ़रमाया: तुम्हारे लिए किताबुल्लाह में इस छठे हिस्से के अलावा कुछ नहीं है अगर तुम (दादी और नानी) दोनों इकट्ठी हो तो यह (छठा हिस्सा) तुम दोनों के दर्मियान होगा और अगर अकेली हो तो सारा उसके लिए है।

ज़ईफ़: गुज़िश्ता हदीस देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और यह इब्ने उयय्ना की हदीस से ज़्यादा सहीह है। नीज़ इस बारे में बुरैदा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

11 بَابُ مَا جَاءَ فِي مِيرَاثِ الجَدَّةِ مَعَ ابْنِهَا

11 - जद्दा (दादी/नानी) की मीरास अपने बेटे के साथ।

2102 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَرَفَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سَالِمٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ فِي الجَدَّةِ مَعَ ابْنِهَا: إِنَّهَا أَوَّلُ جَدَّةٍ أَطْعَمَهَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سُدُسًا مَعَ ابْنِهَا وَابْنُهَا حَيٌّ.

2102 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (ﷺ) जद्दा (दादी) के बेटे के साथ विरासत के बारे में फ़रमाते हैं: बेशक वह पहली दादी थी जिसे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसके बेटे (यानी मय्यत के बाप) के होते हुए भी छठा हिस्सा दिलवाया था।

ज़ईफ़: बैहक़ी: 6/226.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: इस हदीस को हम सिर्फ इसी सनद से मर्फू जानते हैं। नबी करीम(ﷺ) के बअज़ सहाबा ने दादी को बेटे के साथ वारिस बनाया है और बअज़ ने नहीं बनाया।

12 بَابُ مَا جَاءَ فِي مِيرَاثِ الخَالِ

12 - मामू की मीरास।

2103 - حَدَّثَنَا بُنْدَارٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ الزُّبَيْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الحَارِثِ، عَنْ حَكِيمِ بْنِ حَكِيمِ بْنِ عَبَّادِ بْنِ حُنَيْفٍ، عَنْ أَبِي أُمَامَةَ بْنِ سَهْلِ بْنِ حُنَيْفٍ قَالَ: كَتَبَ مَعِي عُمَرُ بْنُ الخَطَّابِ إِلَى أَبِي عُبَيْدَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: اللَّهُ وَرَسُولُهُ مَوْلَى مَنْ لَا مَوْلَى لَهُ، وَالخَالُ وَارِثُ مَنْ لَا وَارِثَ لَهُ.

2103 - अबू उमामा बिन सहल बिन हुनैफ़ बयान करते हैं कि उमर बिन खत्ताब (ﷺ) ने मुझे ख़त देकर अबू उबैदा (ﷺ) की तरफ़ भेजा कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "अल्लाह और उसके रसूल उसके रफीक हैं जिसका कोई रफीक़ नहीं और मामू उसका वारिस है जिसका कोई वारिस न हो।"

सहीह: इब्ने माजह: 2737. मुसनद अहमद: 1/28. इब्ने अबी शैबा: 11/263.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: इस बारे में आयशा और मिक्दाम बिन मादीकरिब (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है नीज़ यह हदीस हसन सहीह है।

2104 - أَخْبَرَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا أَبُو عَاصِمٍ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُسْلِمٍ ، عَنْ طَاوُوسٍ، عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: الخَالُ وَارِثُ مَنْ لاَ وَارِثَ لَهُ.

2104 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "मामू उसका वारिस है जिसका कोई और वारिस न हो।"

सहीह: दारे क़ुत्नी: 4/85.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। बअ़ज़ ने इसे मुर्सल रिवायत करते हुए सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) का ज़िक्र नहीं किया। नीज़ नबी करीम(ﷺ) के सहाबा का इसमें इख़्तिलाफ है। बअ़ज़ ने मामू, खाला और फूफी को वारिस क़रार दिया है और जुम्हूर उलमा इस हदीस के मुताबिक ذوالارحام के वारिस बनने के कायल हैं। लेकिन ज़ैद बिन साबित उन्हें वारिस नहीं कहते। उनके मुताबिक यह मीरास बैतूल माल में जमा होगी।

13 بَابُ مَا جَاءَ فِي الَّذِي يَمُوتُ وَلَيْسَ لَهُ وَارِثٌ

13 - जिस मय्यत का कोई वारिस न हो।

2105 - حَدَّثَنَا بُنْدَارٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الأَصْبِهَانِيِّ، عَنْ مُجَاهِدٍ وَهُوَ ابْنُ وَرْدَانَ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ مَوْلًى لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَعَ مِنْ عِذْقِ نَخْلَةٍ فَمَاتَ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: انْظُرُوا هَلْ لَهُ مِنْ وَارِثٍ؟ قَالُوا: لاَ، قَالَ: فَادْفَعُوهُ إِلَى بَعْضِ أَهْلِ القَرْيَةِ.

2105 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) रिवायत करती हैं कि नबी करीम(ﷺ) का एक आज़ाद किया हुआ गुलाम खुजूर के दरख़्त से गिर कर मर गया तो नबी करीम(ﷺ) ने फ़रमाया: "देखो इसका कोई वारिस है?" लोगों ने कहा: नहीं" तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "तो इसका माल इसकी बस्ती में किसी को दे दो। "

सहीह: अबू दाऊद: 2902. इब्ने माजह: 2733. मुसनद अहमद: 6/173.

वज़ाहत: इस बारे में बुरैदा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है और यह हदीस हसन है।

14 بَابٌ فِي مِيرَاثِ الْمَوْلَى الأَسْفَلِ

14 - आज़ाद किए गए गुलाम की विरासत।

2106 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ عَوْسَجَةَ،

2106 - सय्यदना इब्ने अब्बास (رضي الله عنهما) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) के दौर में एक आदमी फौत हो गया उसका कोई वारिस नहीं

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَجُلاً مَاتَ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَمْ يَدَعْ وَارِثًا إِلاَّ عَبْدًا هُوَ أَعْتَقَهُ فَأَعْطَاهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِيرَاثَهُ.

था सिवाए एक गुलाम के जिसे उस ने आज़ाद कर दिया था तो नबी करीम(ﷺ) ने उसे उसकी मीरास दी।

ज़ईफ़: अबू दाऊद: 2905. इब्ने माजह: 2741. मुसनद अहमद: 1/221.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है और इस मसले में उलमा का इसी बात पर अमल है कि जब आदमी फौत हो जाए और उसके अस्बात भी न हों तो उसे मुसलमानों के बैतूल माल में जमा करा दिया जाए।

15 بَابُ مَا جَاءَ فِي إِبْطَالِ الْمِيرَاثِ بَيْنَ الْمُسْلِمِ وَالْكَافِرِ

15 - मुसलमान और काफिर के दर्मियान मीरास नहीं होती।

2107 - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْمَخْزُومِيُّ، وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ (ح) وَحَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ عُثْمَانَ، عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لاَ يَرِثُ الْمُسْلِمُ الكَافِرَ، وَلاَ الكَافِرُ الْمُسْلِمَ.

2107 - सय्यदना उसामा बिन ज़ैद (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "मुसलमान काफ़िर का वारिस नहीं बनता और न ही काफ़िर मुसलमान का वारिस बनता है।"

बुख़ारी: 6774. मुस्लिम: 1614. अबू दाऊद: 2909. इब्ने माजह: 2729.

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं: हमें इब्ने अबी उमर ने भी बवास्ता सुफ़ियान, ज़ोहरी से ऐसी ही हदीस बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: इस बारे में जाबिर और अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ यह हदीस सहीह है। इस हदीस को मामर वग़ैरह ने भी ज़ोहरी से इसी तरह रिवायत किया है और इमाम मालिक ने ज़ोहरी से, उन्होंने अली बिन हुसैन से, उन्होंने उमर बिन उस्मान से बवास्ता उसामा बिन ज़ैद नबी करीम(ﷺ) से ऐसे ही रिवायत की है। लेकिन इमाम मालिक की हदीस वहम है इसमें इमाम मालिक को वहम हुआ है।

बअ़ज़ ने इसे इमाम मालिक से रिवायत करते हुए अम्र बिन उस्मान से कहा है। जबकि इमाम मालिक के अक्सर शागिर्द इसे बवास्ता मालिक, उमर बिन उस्मान ज़िक्र करते हैं। और अम्र बिन उस्मान बिन अफ़्फ़ान ही सय्यदना उस्मान (ﷺ) की औलाद में मशहूर हैं। लेकिन अम्र बिन उस्मान को हम नहीं जानते।

नीज़ उलमा का इसी हदीस पर अमल है और उलमा ने मुर्तद आदमी की विरासत के बारे में इख़्तिलाफ किया है: नबी करीम(ﷺ) के सहाबा और दीगर लोगों में से कुछ उलमा कहते हैं कि उसके मुसलमान वारिसों को मिलेगा। बअ़ज़ कहते हैं: मुसलमान वरसा उसके वारिस नहीं बन सकते। उनकी दलील नबी करीम(ﷺ) की हदीस है कि " मुसलमान काफ़िर का वारिस नहीं बन सकता" इमाम शाफ़ेई का भी यही कौल है।

16 - दो मुख़्तलिफ़ दीन वाले एक दूसरे के वारिस नहीं बन सकते।

16 بَابُ لاَ يَتَوَارَثُ أَهْلُ مِلَّتَيْنِ

2108 - सय्यदना जाबिर (ﷺ) से रिवायत है कि नबी करीम(ﷺ) ने फ़रमाया: "दो दीनों (मिल्लतों) वाले एक दूसरे के वारिस नहीं बन सकते।"

सहीह: दारमी: 2997. दारे कुत्नी: 4/75.

2108 - حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ مَسْعَدَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا حُصَيْنُ بْنُ نُمَيْرٍ، عَنِ ابْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لاَ يَتَوَارَثُ أَهْلُ مِلَّتَيْنِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। जाबिर (ﷺ) की इस हदीस को हम इब्ने अबी लैला से ही जानते हैं।

17 - क़ातिल (मक़्तूल का) वारिस नहीं बन सकता।

17 بَابُ مَا جَاءَ فِي إِبْطَالِ مِيرَاثِ الْقَاتِلِ

2109 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) से रिवायत है कि नबी करीम(ﷺ) ने फ़रमाया: "क़ातिल (मक़्तूल का) वारिस नहीं बन सकता।"

सहीह: इब्ने माजह: 2645. दारे कुत्नी: 4/96.

2109 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: الْقَاتِلُ لاَ يَرِثُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह नहीं है। यह इसी तरीक़ से मारूफ़ है और इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी फ़रदा को बअज़ उलमा ने मतरूक कहा है जिन में अहमद बिन हंबल (رحمه الله) भी हैं।

नीज़ अहले इल्म का इसी पर अमल है कि क़ातिल (मक़्तूल) का वारिस नहीं बनता, वह क़त्ले खता हो या क़त्ले अमद। जबकि बअज़ कहते हैं: अगर क़त्ले खता हो तो वारिस बन सकता है। इमाम मालिक का भी यही कौल है।

18 - औरत की अपने खाविंद की दियत से मीरास।

18 بَابُ مَا جَاءَ فِي مِيرَاثِ الْمَرْأَةِ مِنْ دِيَةِ زَوْجِهَا

2110 - सय्यदना सईद बिन मुसय्यब (رضي الله عنه) से रिवायत है कि उमर (رضي الله عنه) ने फ़रमाया: "दियत (अदा करने की ज़िम्मेदारी) आकिला[1] पर है और औरत अपने खाविंद की दियत से किसी चीज़ की वारिस नहीं बनती तो ज़ह्हाक बिन सुफ़ियान किलाबी (رضي الله عنه) ने उन्हें बताया कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उन्हें ख़त लिखा था कि अश्यम ज़ियाबी की बीवी को उसके खाविंद की दियत से मीरास दो।

सहीह: अबू दाऊद: 2927. इब्ने माजह: 2642.

2110 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، وَأَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، قَالَ: قَالَ عُمَرُ: الدِّيَةُ عَلَى العَاقِلَةِ، وَلاَ تَرِثُ الْمَرْأَةُ مِنْ دِيَةِ زَوْجِهَا شَيْئًا، فَأَخْبَرَهُ الضَّحَّاكُ بْنُ سُفْيَانَ الكِلاَبِيُّ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَتَبَ إِلَيْهِ: أَنْ وَرِّثْ امْرَأَةَ أَشْيَمَ الضِّبَابِيِّ مِنْ دِيَةِ زَوْجِهَا.

तौज़ीह: العَاقِلَة: बाप की तरफ़ से वह रिश्तेदार जो अस्बात होते हैं और दियत देने में शरीक होते हैं।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह है।

19 - मीरास वरसा के लिए और दियत अस्बात के ज़िम्मे है।

19 بَابُ مَا جَاءَ أَنَّ الأَمْوَالَ لِلْوَرَثَةِ وَالعَقْلَ عَلَى العَصَبَةِ

2111 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने बनू लिह्यान की

2111 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ،

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَضَى فِي جَنِينِ امْرَأَةٍ مِنْ بَنِي لِحْيَانَ سَقَطَ مَيِّتًا بِغُرَّةٍ عَبْدٍ أَوْ أَمَةٍ، ثُمَّ إِنَّ الْمَرْأَةَ الَّتِي قُضِيَ عَلَيْهَا بِالغُرَّةِ تُوُفِّيَتْ فَقَضَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّ مِيرَاثَهَا لِبَنِيهَا وَزَوْجِهَا، وَأَنَّ عَقْلَهَا عَلَى عَصَبَتِهَا.

औरत के पेट के बच्चे के बारे में जो मर कर ज़ाया हो गया था फैसला करते हुए गुलाम या लौंडी देने का हुक्म दिया था। फिर वह औरत मर गई जिस पर गुलाम या लौंडी का हुक्म दिया था तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फैसला किया कि उसकी मीरास उसके बेटों और उसके खाविंद के लिए है और उसकी दियत उसके अस्बात पर है।

बुखारी: 6740, मुस्लिम: 1681, अबू दाऊद: 4577, निसाई: 4817.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यूनुस ने यह हदीस ज़ोहरी से बवास्ता सईद बिन मुसय्यब और अबू सलमा, सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) के ज़रिए नबी करीम(ﷺ) की इसी तरह रिवायत की है। जबकि इमाम मालिक ने ज़ोहरी से बवास्ता अबू सलमा, सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत की है और इमाम मालिक ने ज़ोहरी से बवास्ता सईद बिन मुसय्यब नबी करीम(ﷺ) से मुर्सल रिवायत की है।

20 بَابُ مَا جَاءَ فِي مِيرَاثِ الَّذِي يُسْلِمُ عَلَى يَدَيِ الرَّجُلِ

20 - उस आदमी की विरासत जो किसी के हाथ पर इस्लाम क़ुबूल करता है।

2112 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، وَابْنُ نُمَيْرٍ، وَوَكِيعٌ، عَنْ عَبْدِ العَزِيزِ بْنِ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ العَزِيزِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَوْهَبٍ، وَقَالَ بَعْضُهُمْ: عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ وَهْبٍ، عَنْ تَمِيمٍ الدَّارِيِّ قَالَ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا السُّنَّةُ فِي الرَّجُلِ مِنْ أَهْلِ الشِّرْكِ يُسْلِمُ عَلَى يَدَيْ رَجُلٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: هُوَ أَوْلَى النَّاسِ بِمَحْيَاهُ وَمَمَاتِهِ.

2112 - सय्यदना तमीम दारी (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से सवाल किया कि जो मुश्रिक मुसलमानों में से किसी आदमी के हाथ पर मुसलमान होता है तो उसकी विरासत की तक़्सीम का क्या तरीक़ा है? रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "वह उसकी ज़िंदगी में और मरने के बाद लोगों से उसका ज़्यादा करीबी होता है।"

सहीह: अबू दाऊद: 2918, इब्ने माजह: 2752

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस हदीस को हम अब्दुल्लाह बिन वहब की सनद से ही जानते हैं और इब्ने मौहब अन तमीम दारी भी कहा जाता है और बअ़ज़ ने अब्दुल्लाह बिन मौहब और तमीम दारी के दर्मियान क़बीसा बिन ज़ुऐब को भी दाख़िल किया है। उसे यह्या बिन हम्ज़ा ने अब्दुल अज़ीज़ बिन उमर रिवायत करते वक़्त क़बीसा बिन ज़ुऐब का इजाफ़ा किया है लेकिन मेरे नज़दीक यह सनद मुत्तसिल नहीं है।

नीज़ बअ़ज़ उलमा का इसी पर अमल है और बअ़ज़ कहते हैं: ऐसे आदमी की मीरास बैतूल माल में जमा करा दी जाएगी यह कौल इमाम शाफ़ेई का है। उनकी दलील यह है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: "वला आज़ाद करने वाले के लिए है।"

21 - वलदुज़्ज़िना विरासत से महरूम है।

21 بَابُ مَا جَاءَ فِي إِبْطَالِ مِيرَاثِ وَلَدِ الزِّنَا

2113 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ لَهِيعَةَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: أَيُّمَا رَجُلٍ عَاهَرَ بِحُرَّةٍ أَوْ أَمَةٍ فَالوَلَدُ وَلَدُ زِنَا لاَ يَرِثُ وَلاَ يُورَثُ.

2113 - अम्र बिन शोऐब अपने बाप से, वह अपने दादा (अब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "जो आदमी किसी आज़ाद औरत या लोंडी से ज़िना करे तो (उसके नतीजे में पैदा होने वाला) बच्चा ज़िना का बच्चा है न वह वारिस बन सकता है और न ही उसका कोई वारिस है।" (1)

सहीह: इब्ने माजह:2745.

तौज़ीह: (1) यह विरासत की रूकावटों में से है। यानी जिसकी वजह से कोई विरासत से महरूम हो जाता है और मवाने विरासत (विरासत से रोकने वाली) चार चीजें हैं: (1) इख़्तिलाफे दीन (2) क़त्ल (3)वलदुज़्ज़िना (4) गुलामी.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इब्ने लहीया के अलावा बाकी लोगों ने भी इसे अम्र बिन शोऐब से रिवायत किया है और उलमा का इसी पर अमल है कि वलदुज़्ज़िना अपने बाप का वारिस नहीं बनता।

22 - वला का वारिस कौन?

22 بَابُ مَا جَاءَ فِيمَنْ يَرِثُ الوَلاَءَ

2114 - अम्र बिन शोऐब अपने बाप से, वह अपने दादा (अब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "वला का वारिस वही बनता है जो माल का वारिस होता है।"

ज़ईफ़।

2114 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ لَهِيعَةَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يَرِثُ الوَلاَءَ مَنْ يَرِثُ الْمَالَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस हदीस की सनद क़वी नहीं है।

23 - औरत वला की वारिस बनती है।

23 بَابُ مَا جَاءَ مَا يَرِثُ النِّسَاءُ مِنَ الوَلاَءِ

2115 - वासिला बिन अस्क़ा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "औरत तीन तरकों को इकट्ठा करती है: अपने आज़ाद किए हुए (गुलाम) का, लेपालक का और उस लड़के का (तरका) जिसकी तरफ़ से उसने (अपने शौहर) से लिआन किया हो।"

ज़ईफ़: अबू दाऊद: 2906. इब्ने माजह: 2742. मुसनद अहमद:3/ 106

2115 - حَدَّثَنَا هَارُونُ أَبُو مُوسَى الْمُسْتَمْلِي البَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَرْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ رُؤْبَةَ التَّغْلَبِيُّ، عَنْ عَبْدِ الوَاحِدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ بُسْرٍ النَّصْرِيِّ، عَنْ وَاثِلَةَ بْنِ الأَسْقَعِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الْمَرْأَةُ تَحُوزُ ثَلاَثَةَ مَوَارِيثَ: عَتِيقَهَا وَلَقِيطَهَا وَوَلَدَهَا الَّذِي لاَعَنَتْ عَلَيْهِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: ये हदीस हसन ग़रीब है। इस तर्ज़ पर हम इसे मुहम्मद बिन हर्ब के तरीक़ से जानते हैं।

ख़ुलासा

- अस्हाबुल फुरूज़ के हिस्से क़ुरआन व सुन्नत में मुतअय्यन कर दिए गए हैं और यह आठ अफराद हैं।
- बाप न हो तो दादा और बेटा न हो तो पोता वारिस बनता है।
- कोई और वारिस न हो तो भाई बतौरे असबा वारिस बनते हैं।
- आज़ाद किए गए गुलाम का वारिस उसे आज़ाद करने वाला बनेगा।
- मुसलमान काफ़िर का और काफ़िर मुसलमान का वारिस नहीं बन सकता।
- क़ातिल, मक़्तूल का वारिस नहीं बनेगा।
- वलदुज्ज़िना भी विरासत से महरूम है।
- औरत अगर जुर्म कर ले तो उसकी दियत उसके बाप और भाइयों से ली जाएगी जबकि उसकी दियत उसके ख़ाविंद और औलाद को मिलेगी।

मज़मून नम्बर 28.

28أَبْوَابُ الْوَصَايَا عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

रसूलुल्लाह(ﷺ) से मर्वी वसीयत के अहकामो-मसाइल।

तआरुफ़

8 अबवाब और 9 अहादीस पर मुश्तमिल इस उन्वान में आप पढ़ेंगे कि:

- वसीयत की हक़ीक़त क्या है?
- वसीयत कितने माल तक की जा सकती है?
- वसीयत किस के लिए हो सकती है?

1 بَابُ مَا جَاءَ فِي الوَصِيَّةِ بِالثُّلُثِ

2116 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، عَنْ أَبِيهِ قَالَ: مَرِضْتُ عَامَ الفَتْحِ مَرَضًا أَشْفَيْتُ مِنْهُ عَلَى الْمَوْتِ، فَأَتَانِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعُودُنِي، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّ لِي مَالاً كَثِيرًا، وَلَيْسَ يَرِثُنِي إِلاَّ ابْنَتِي، أَفَأُوصِي بِمَالِي كُلِّهِ؟ قَالَ: لاَ، قُلْتُ: فَثُلُثَيْ مَالِي؟ قَالَ: لاَ، قُلْتُ: فَالشَّطْرُ؟ قَالَ: لاَ، قُلْتُ: فَالثُّلُثُ؟ قَالَ: الثُّلُثُ وَالثُّلُثُ كَثِيرٌ، إِنَّكَ إِنْ

1 - एक तिहाई (1/3) माल तक की वसीयत की जा सकती है।

2116 - सय्यदना साद बिन वक़्क़ास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि फ़तहे मक्का के साल मैं ऐसा बीमार हुआ कि मुझे (अपनी) मौत[1] नज़र आने लगी, रसूलुल्लाह(ﷺ) मेरी इयादत करने के लिए तशरीफ़ लाये तो मैंने अर्ज़ किया, ''ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! मेरे पास बहुत सारा माल है और मेरे पास सिर्फ़ मेरी एक बेटी ही है, क्या मैं अपने सारे माल (को अल्लाह के रास्ते में देने) की वसीयत कर दूं? आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "नहीं!" मैंने कहा: दो तिहाई (2/3) की? आप ने फ़रमाया: ''नहीं'' मैंने कहा: आधे की? आप ने फ़रमाया "नहीं" मैंने कहा: तीसरे (1/3) की? आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "हाँ, एक

تَذَرْ وَرَثَتَكَ أَغْنِيَاءَ خَيْرٌ مِنْ أَنْ تَذَرَهُمْ عَالَةً يَتَكَفَّفُونَ النَّاسَ، وَإِنَّكَ لَنْ تُنْفِقَ نَفَقَةً إِلاَّ أُجِرْتَ فِيهَا حَتَّى اللُّقْمَةَ تَرْفَعُهَا إِلَى فِي امْرَأَتِكَ، قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، أُخَلَّفُ عَنْ هِجْرَتِي؟ قَالَ: إِنَّكَ لَنْ تُخَلَّفَ بَعْدِي فَتَعْمَلَ عَمَلاً تُرِيدُ بِهِ وَجْهَ اللهِ إِلاَّ ازْدَدْتَ بِهِ رِفْعَةً وَدَرَجَةً وَلَعَلَّكَ أَنْ تُخَلَّفَ حَتَّى يَنْتَفِعَ بِكَ أَقْوَامٌ وَيُضَرَّ بِكَ آخَرُونَ، اللَّهُمَّ أَمْضِ لأَصْحَابِي هِجْرَتَهُمْ وَلاَ تَرُدَّهُمْ عَلَى أَعْقَابِهِمْ لَكِنِ الْبَائِسُ سَعْدُ ابْنُ خَوْلَةَ يَرْثِي لَهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ مَاتَ بِمَكَّةَ.

तिहाई (1/3) कर सकते हो लेकिन एक तिहाई भी ज़्यादा है, तुम अपने वारिसों को मालदार छोड़ो यह उस बात से बेहतर है कि तुम उन्हें मोहताज छोड़ो वह लोगों के सामने हाथ फैलाते रहें और जो चीज़ भी ख़र्च करोगे तुम्हें उसका अज्र दिया जाएगा, यहाँ तक कि वह लुक्मा भी जिसे तुम अपनी बीवी के मुंह की तरफ़ उठाते हो।" रावी कहते हैं: मैंने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! क्या मैं अपनी हिजरत से पीछे हटाया जाउंगा?[2] आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "तुम मेरे बाद ज़िंदा रहे तो जो भी अमल अल्लाह की चाहत के लिए करोगे उस पर तुम्हारी बुलंदी और दर्जात में इज़ाफ़ा होगा और शायद कि तुम ज़िंदा रहो यहाँ तक कि तुम्हारी वजह से कुछ लोग नफ़ा उठाएंगे और कुछ दूसरे नुकसान उठायेंगे। (फिर दुआ की) ''ऐ अल्लाह! मेरे सहाबा की हिजरत को जारी फ़रमा और उन्हें उनकी एड़ियों के बल न फेर" लेकिन बेचारे साद बिन खौला (رضي الله عنه) की मक्का में फौत होने पर आप उन पर तरस खाते थे।

बुख़ारी: 1295, मुस्लिम: 1628, अबू दाऊद: 2864, इब्ने माजह: 2708, निसाई: 3626, 3632.

तौज़ीह: أشفيت :बमानी أشرفت है। जिसका मतलब होता है झांकना और झाँक कर किसी चीज़ को देखना। इसी लिए इसका माना "नज़र आने लगी" किया गया है।

(2) यानी मक्का से हिजरत करके मदीना गए थे और अगर मक्का में ही मुझे मौत आ गई तो मेरी हिजरत का क्या बना?

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस मसले में इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। यह हदीस हसन सहीह है और कई इस्नाद के साथ साद बिन अबी वक्कास से मर्वी है।

नीज़ उलमा का इसी पर अमल है कि आदमी एक तिहाई (1/3) से ज़्यादा की वसीयत नहीं कर सकता,

बल्कि बअ़ज़ उलमा एक तिहाई से कम माल की वसीयत करने को मुस्तहब कहते हैं क्योंकि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया था: "एक तिहाई भी ज़्यादा है।"

2 - वसीयत में किसी को नुकसान पहुंचाना।

2 بَابُ مَا جَاءَ فِي الضِّرَارِ فِي الوَصِيَّةِ

2117 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "बेशक एक मर्द और औरत साठ साल तक अल्लाह की इताअत वाले आमाल करते हैं फिर उन पर मौत का वक़्त आता है तो वह वसीयत में किसी को नुकसान पहुंचाते हैं तो उनके लिए जहन्नम वाजिब हो जाती है।" फिर अबू हुरैरा (رضي الله عنه) ने यह आयत पढ़ी: "वसीयत के बाद जो तुम वसीयत करो या क़र्ज़ के बाद (लेकिन इस वसीयत में) किसी को नुक़सान न हो यह अल्लाह की तरफ़ से वसीयत है।" (अन्निसा: 12- 13) यहाँ{ ذَلِكَ الفَوْزُ العظيم } तक पढ़ी।

ज़ईफ़: अबू दाऊद:2867. इब्ने माजह:2704. मुसनद अहमद: 278

2117 - حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الجَهْضَمِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ بْنُ عَبْدِ الوَارِثِ، قَالَ: حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ، وَهُوَ جَدُّ هَذَا النَّصْرِ، قَالَ: حَدَّثَنَا الأَشْعَثُ بْنُ جَابِرٍ، عَنْ شَهْرِ بْنِ حَوْشَبٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّهُ حَدَّثَهُ، عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ الرَّجُلَ لَيَعْمَلُ وَالمَرْأَةُ بِطَاعَةِ اللهِ سِتِّينَ سَنَةً ثُمَّ يَحْضُرُهُمَا الْمَوْتُ فَيُضَارَّانِ فِي الوَصِيَّةِ فَتَجِبُ لَهُمَا النَّارُ، ثُمَّ قَرَأَ عَلَيَّ أَبُو هُرَيْرَةَ:{مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصَى بِهَا أَوْ دَيْنٍ غَيْرَ مُضَارٍّ وَصِيَّةً مِنَ اللَّهِ} ، إِلَى قَوْلِهِ،{ذَلِكَ الفَوْزُ العَظِيمُ} .

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस इस सनद से ग़रीब है और नस्र बिन अली जिन्होंने अशअस बिन जाबिर से रिवायत की है यह नस्र बिन अली जहज़मी के दादा हैं।

3 - वसीयत की तरग़ीब।

3 بَابُ مَا جَاءَ فِي الحَثِّ عَلَى الوَصِيَّةِ

2118 - सय्यदना इब्ने उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "मुसलमान आदमी का हक़ है कि अगर उसके पास इतना माल भी हो जिस में वह वसीयत कर

2118 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا

حَقُّ امْرِئٍ مُسْلِمٍ يَبِيتُ لَيْلَتَيْنِ وَلَهُ مَا يُوصِي فِيهِ إِلاَّ وَوَصِيَّتُهُ مَكْتُوبَةٌ عِنْدَهُ.

सकता हो तो दो रातें भी बसर करे तो उसकी वसीयत उसके पास लिखी होनी चाहिए।"

बुख़ारी: 2738. मुस्लिम: 1627. अबू दाऊद: 2862. इब्ने माजह्: 2699. निसाई: 3615, 3619.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और ज़ोहरी से भी बवास्ता सालिम, सय्यदना इब्ने उमर (ﷺ) से नबी करीम(ﷺ) की ऐसी ही हदीस मर्वी।

4 بَابُ مَا جَاءَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمْ يُوصِ

4 - नबी करीम(ﷺ) ने वसीयत नहीं की।

2119 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو قَطَنٍ عَمْرُو بْنُ الهَيْثَمِ البَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ مِغْوَلٍ، عَنْ طَلْحَةَ بْنِ مُصَرِّفٍ قَالَ: قُلْتُ لِابْنِ أَبِي أَوْفَى: أَوْصَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ: لاَ قُلْتُ: كَيْفَ كُتِبَتِ الوَصِيَّةُ وَكَيْفَ أَمَرَ النَّاسَ؟ قَالَ: أَوْصَى بِكِتَابِ اللَّهِ.

2119 - तल्हा बिन मुसर्रिफ कहते हैं: मैंने इब्ने अबी औफ़ा (ﷺ) से कहा: क्या रसूलुल्लाह(ﷺ) ने वसीयत की थी? उन्होंने फ़रमाया: नहीं" मैंने कहा: तो फिर वसीयत कैसे फ़र्ज़ हुई और आप ने लोगों को कैसे हुक्म दिया? उन्होंने कहा: आप(ﷺ) ने किताबुल्लाह (पर अमल करने) की वसीयत की थी।

बुख़ारी: 2740. मुस्लिम: 1634. इब्ने माजह्:2696. निसाई: 3620

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। हम इसे मालिक बिन मिग़वल के तरीक़ से ही जानते हैं।

5 بَابُ مَا جَاءَ لاَ وَصِيَّةَ لِوَارِثٍ

5-वारिस के लिए वसीयत नहीं की जा सकती

2120 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، وَهَنَّادٌ، قَالاَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَيَّاشٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُرَحْبِيلُ بْنُ مُسْلِمٍ الخَوْلاَنِيُّ، عَنْ أَبِي أُمَامَةَ البَاهِلِيِّ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ

2120 - सय्यदना अबू उमामा (ﷺ) बयान करते हैं कि मैंने हज्जतुल विदा के साल रसूलुल्लाह(ﷺ) को खुत्बा में इर्शाद फ़रमाते हुए सुना: "बेशक अल्लाह तबारक तआला ने हर हक़ वाले को उसका हक़ दे दिया है अब

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ فِي خُطْبَتِهِ عَامَ حَجَّةِ الْوَدَاعِ: إِنَّ اللَّهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى قَدْ أَعْطَى لِكُلِّ ذِي حَقٍّ حَقَّهُ، فَلاَ وَصِيَّةَ لِوَارِثٍ، الْوَلَدُ لِلْفِرَاشِ، وَلِلْعَاهِرِ الْحَجَرُ، وَحِسَابُهُمْ عَلَى اللهِ، وَمَنْ ادَّعَى إِلَى غَيْرِ أَبِيهِ أَوْ انْتَمَى إِلَى غَيْرِ مَوَالِيهِ فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللهِ التَّابِعَةُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ، لاَ تُنْفِقُ امْرَأَةٌ مِنْ بَيْتِ زَوْجِهَا إِلاَّ بِإِذْنِ زَوْجِهَا، قِيلَ: يَا رَسُولَ اللهِ وَلاَ الطَّعَامَ؟ قَالَ: ذَلِكَ أَفْضَلُ أَمْوَالِنَا ثُمَّ قَالَ: الْعَارِيَةُ مُؤَدَّاةٌ، وَالمِنْحَةُ مَرْدُودَةٌ، وَالدَّيْنُ مَقْضِيٌّ، وَالزَّعِيمُ غَارِمٌ.

वारिस के लिए वसीयत नहीं है। बच्चा साहिबे बिस्तर का है, जानी के लिए पत्थर हैं और उनका हिसाब अल्लाह तआला पर है। जिसने अपने बाप के अलावा किसी और की तरफ़ निस्बत का दावा किया या अपने मालिकों के अलावा किसी और की तरफ़ निस्बत की तो उस पर क़ियामत तक पीछा करने वाली अल्लाह की लानत है। औरत अपने खाविंद की इजाज़त के बग़ैर उसके घर से अल्लाह के रास्ते में ख़र्च न करे। "कहा गया: ऐ अल्लाह के रसूल! खाना भी नहीं" ? आप ने फ़रमाया: "यह हमारा सब से बेहतर माल है।" और आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "इस्तेमाल के लिए ली गई चीज़ वापस की जाए। मिन्हा[(1)] को वापस किया जाए। क़र्ज़ को अदा किया जाए और ज़ामिन (अपनी ज़मानत) का ज़िम्मेदार है। "

सहीह: 670. नम्बर हदीस देखें।

तौज़ीह: (1) मिन्हा: से मुराद दूध वाला जानवर है जो कोई आदमी किसी दूसरे को दूध पीने के लिए दे दे या कोई दरख़्त दे दे कि उसका फल तुम इस्तेमाल करना तो वह आदमी उस पर क़ब्ज़ा न करे बल्कि उसे वापस कर दे।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस बारे में अम्र बिन खारिजा और अनस बिन मालिक (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ यह हदीस हसन सहीह है और बवास्ता अबू उमामा नबी(ﷺ) से कई सनदों से मर्वी है।

इस्माईल बिन अयाश की अहले इराक़ और अहले हिजाज़ से वह रिवायत क़वी नहीं है। जिस में वह अकेला हो, क्योंकि यह उन से मुन्कर अहादीस रिवायत करता है। और अहले शाम से रिवायत सहीह है। मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी भी ऐसे ही कहते हैं, वह मज़ीद फ़रमाते हैं कि मैंने अहमद बिन हसन से सुना कि इमाम अहमद बिन हंबल फ़रमाते हैं कि इस्माईल बिन अयाश बदन (यानी होशो हवास) में बक़िय्या से ज़्यादा सहीह हैं और बक़िय्या, सिक़ा रावियों से मुन्कर अहादीस भी बयान करते हैं और मैंने अब्दुर्रहमान से सुना कि ज़करिया बिन अदी कहते हैं कि अबू इस्हाक़ फ़ज़ारी का कौल है: बक़िय्या की

वह रिवायात ले लो जो वह सिक़ा रावियों से बयान करे और इस्माईल बिन अयाश की सिक़ा या गैर सिक़ा से बयान कर्दा अहादीस को न लो।

2121 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ شَهْرِ بْنِ حَوْشَبٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ غَنْمٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ خَارِجَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَطَبَ عَلَى نَاقَتِهِ وَأَنَا تَحْتَ جِرَانِهَا وَهِيَ تَقْصَعُ بِجِرَّتِهَا، وَإِنَّ لُعَابَهَا يَسِيلُ بَيْنَ كَتِفَيَّ فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: إِنَّ اللَّهَ أَعْطَى كُلَّ ذِي حَقٍّ حَقَّهُ، وَلاَ وَصِيَّةَ لِوَارِثٍ، وَالوَلَدُ لِلْفِرَاشِ، وَلِلْعَاهِرِ الحَجَرُ.

2121 - सय्यदना अम्र बिन खारिजा (ﷺ) बयान करते हैं कि नबी करीम(ﷺ) ने अपनी ऊंटनी पर बैठ कर खुत्बा दिया, मैं उसकी गर्दन के नीचे था, वह जुगाली कर रही थी तो उसका लुआब मेरे कन्धों के दर्मियान गिर रहा था, मैंने सुना आप फ़रमा रहे थे: " बेशक अल्लाह तआला ने हर हक़ वाले को उसका हक़ दे दिया है। (अब) वारिस के लिए वसीयत नहीं है, बच्चा साहिबे बिस्तर का है और ज़ानी के लिए पत्थर हैं।"(1)

सहीह: इब्ने माजह: 2712. निसाई: 3641, 3643. मुसनद अहमद: 4/ 186

तौज़ीह: (1)मतलब यह है कि अगर कोई शख़्स किसी आदमी की बीवी से ज़िना करे तो उस ज़िना के नतीजे में पैदा होने वाला बच्चा उस औरत के शौहर का कहलाएगा और ज़ानी को पत्थर मार कर रज्म किया जाएगा।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

6 بَابُ مَا جَاءَ يُبْدَأُ بِالدَّيْنِ قَبْلَ الوَصِيَّةِ

6 - वसीयत से पहले क़र्ज़ अदा किया जाए।

2122 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ الهَمْدَانِيِّ، عَنِ الحَارِثِ، عَنْ عَلِيٍّ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَضَى بِالدَّيْنِ قَبْلَ الوَصِيَّةِ، وَأَنْتُمْ تَقْرَءُونَ الوَصِيَّةَ قَبْلَ الدَّيْنِ.

2122 - सय्यदना अली (ﷺ) से रिवायत है कि नबी करीम(ﷺ) ने क़र्ज़ को वसीयत से पहले अदा करने का हुक्म दिया हालांकि तुम (क़ुरआन में) वसीयत को क़र्ज़ से पहले पढ़ते हो।

हसन 2094. नम्बर हदीस देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: तमाम उलमा का इसी पर अमल है कि क़र्ज़ को वसीयत से पहले अदा किया जाए।

7 - जो शख़्स मौत के वक़्त सदक़ा करे या अपना गुलाम आज़ाद करे।

7 بَابُ مَا جَاءَ فِي الرَّجُلِ يَتَصَدَّقُ أَوْ يَعْتِقُ عِنْدَ الْمَوْتِ

2123 - अबू हबीबा अत्ताई (ﷺ) कहते हैं: मुझे मेरे भाई ने अपने माल के कुछ हिस्से की वसीयत की तो मैं अबू दर्दा से मिला, मैंने उनसे कहा: मेरे भाई ने मुझे अपने कुछ माल (को अल्लाह की राह में देने) की वसीयत की थी आप के मुताबिक मैं उसे कहाँ दूं? फ़ुक़रा में, मसाकीन में या अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वालों में? तो उन्होंने फ़रमाया: अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो मैं मुजाहिदीन के बराबर किसी को न समझता, मैं ने रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुना आप फ़रमा रहे थे: "जो शख़्स अपनी मौत के वक़्त गुलाम को आज़ाद करता है वह उस शख़्स की तरह है जो सैर हो कर तोहफ़ा देता है। "

ज़ईफ़: अबू दाऊद: 3986. निसाई: 3614. मुसनद अहमद: 5/ 196. दारमी: 3229.

2123 - حَدَّثَنَا بُنْدَارٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي حَبِيبَةَ الطَّائِيِّ قَالَ: أَوْصَى إِلَيَّ أَخِي بِطَائِفَةٍ مِنْ مَالِهِ، فَلَقِيتُ أَبَا الدَّرْدَاءِ فَقُلْتُ: إِنَّ أَخِي أَوْصَى إِلَيَّ بِطَائِفَةٍ مِنْ مَالِهِ، فَأَيْنَ تَرَى لِي وَضْعَهُ، فِي الْفُقَرَاءِ، أَوِ الْمَسَاكِينِ، أَوِ الْمُجَاهِدِينَ فِي سَبِيلِ اللهِ؟ فَقَالَ: أَمَّا أَنَا فَلَوْ كُنْتُ لَمْ أَعْدِلْ بِالْمُجَاهِدِينَ، سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: مَثَلُ الَّذِي يَعْتِقُ عِنْدَ الْمَوْتِ كَمَثَلِ الَّذِي يُهْدِي إِذَا شَبِعَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

8 - एक और बाब।

8 بَابٌ

2124 - सय्यदा आयशा (ﷺ) बयान करती हैं कि बरीरा (ﷺ) ने आकर आयशा (ﷺ) से अपनी मुकातिबत के लिए तआवुन माँगा और उन्होंने अपनी मुकातिबत में से कुछ भी अदा नहीं किया था। तो आयशा (ﷺ) ने उन से कहा: अपने मालिकों के पास जाओ अगर वह चाहें तो मैं तुम्हारी तरफ़ से मुकातिबत की रक़म अदा कर

2124 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، أَنَّ عَائِشَةَ أَخْبَرَتْهُ، أَنَّ بَرِيرَةَ جَاءَتْ تَسْتَعِينُ عَائِشَةَ فِي كِتَابَتِهَا وَلَمْ تَكُنْ قَضَتْ مِنْ كِتَابَتِهَا شَيْئًا، فَقَالَتْ لَهَا عَائِشَةُ: ارْجِعِي إِلَى أَهْلِكِ فَإِنْ

أَحَبُّوا أَنْ أَقْضِيَ عَنْكِ كِتَابَتَكِ وَيَكُونَ لِي وَلَاؤُكِ فَعَلْتُ، فَذَكَرَتْ ذَلِكَ بَرِيرَةُ لأَهْلِهَا فَأَبَوْا، وَقَالُوا: إِنْ شَاءَتْ أَنْ تَحْتَسِبَ عَلَيْكِ وَيَكُونَ لَنَا وَلَاؤُكِ فَلْتَفْعَلْ، فَذَكَرَتْ ذَلِكَ لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ابْتَاعِي فَأَعْتِقِي فَإِنَّمَا الوَلَاءُ لِمَنْ أَعْتَقَ، ثُمَّ قَامَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: مَا بَالُ أَقْوَامٍ يَشْتَرِطُونَ شُرُوطًا لَيْسَتْ فِي كِتَابِ اللهِ؟ مَنْ اشْتَرَطَ شَرْطًا لَيْسَ فِي كِتَابِ اللهِ فَلَيْسَ لَهُ، وَإِنْ اشْتَرَطَ مِائَةَ مَرَّةٍ.

देती हूँ और तुम्हारी वला मेरे लिए होगी (इस शर्त पर) मैं यह काम कर देती हूँ। बरीरा ने यह बात अपने मालिकों से ज़िक्र की तो उन्होंने इन्कार कर दिया और कहने लगे: अगर वह चाहें तो तुम्हारी आज़ादी पर सवाब की उम्मीद रख लें लेकिन तुम्हारी वला हमारे लिए ही होगी, वह यह काम कर सकती हैं। (आयशा (رضي الله عنها) कहती हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से इस बात का ज़िक्र किया तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "उसे खरीद कर आज़ाद करो वला उसी के लिए होगी जिसने आज़ाद किया: फिर रसूलुल्लाह(ﷺ) (ख़ुत्बा के लिए) खड़े हुए तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "उन लोगों को क्या हो गया जो ऐसी शर्तें लगाते हैं जो अल्लाह की किताब में नहीं हैं! जिस ने ऐसी शर्त लगाई जो अल्लाह की किताब में नहीं है तो उसके लिए वह शर्त नहीं अगरचे सौ मर्तबा भी शर्त लगा ले।"

बुख़ारी: 456. मुस्लिम: 1504. अबू दाऊद: 3929. इब्ने माजह: 2076. निसाई: 2614.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और कई इस्नाद के साथ सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) से मर्वी है। नीज़ उलमा का इसी पर अमल है कि वला आज़ाद करने वाले के लिए होगी।

ख़ुलासा

- वसीयत एक तिहाई माल तक की, की जा सकती है।
- वसीयत में किसी भी फरीक़ को नुकसान न पहुंचाया जाए।
- वारिस के लिए वसीयत नहीं हो सकती।
- क़र्ज़, वसीयत से पहले अदा किया जाए।
- वला की निस्बत आज़ाद करने वाले की तरफ़ ही होगी।

मज़मून नम्बर 29

أَبْوَابُ الْوَلاَءِ وَالْهِبَةِ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

रसूलुल्लाह(ﷺ) से मर्वी वला और हिबा का अहकाम व मसाइल।

तआरुफ़

7 अबवाब के साथ 8 अहादीस पर मुश्तमिल इस उन्वान में आप पढ़ेंगे कि:

- वला क्या है?
- तोहफ़ों का लेन देन कैसे किया जाए?
- किसी गैर की तरफ़ मंसूब होना कैसा है?

1 بَابُ مَا جَاءَ أَنَّ الوَلاَءَ لِمَنْ أَعْتَقَ

1 - वला की निस्बत आज़ाद करने वाले की तरफ़ होगी।

2125 - حَدَّثَنَا بُنْدَارٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّهَا أَرَادَتْ أَنْ تَشْتَرِيَ بَرِيرَةَ فَاشْتَرَطُوا الوَلاَءَ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الوَلاَءُ لِمَنْ أَعْطَى الثَّمَنَ أَوْ لِمَنْ وَلِيَ النِّعْمَةَ.

2125 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) से रिवायत है कि उन्होंने बरीरा को ख़रीदने का इरादा किया तो उन लोगों ने वला की शर्त रखी, नबी करीम(ﷺ) ने फ़रमाया: " वला[1] उसी के लिए है जिसने क़ीमत दी या जिस ने एहसान किया। "

सहीह: तख़रीज के लिए हदीस नम्बर 1256 देखें।

तौज़ीह: (1) आज़ाद करने वाले और जिसे आज़ाद किया जा रहा है उन दोनों के दर्मियान जो ताल्लुक़ और रिश्ता होता है उसे वला कहते हैं और उसकी निस्बत का मतलब यह है कि वह आज़ाद होने वाला अगर मर जाए और उसके वारिस न हों तो आज़ाद करने वाला ही उसका वारिस बनेगा।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस मसले में इब्ने उमर और अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। यह हदीस हसन सहीह है और उलमा का इसी पर अमल है।

2 बَابُ مَا جَاءَ فِي النَّهْيِ عَنْ بَيْعِ الْوَلَاءِ وَعَنْ هِبَتِهِ

2 - वला को बेचना और हिबा करना मना है

2126 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ دِينَارٍ، سَمِعَ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ بَيْعِ الْوَلَاءِ وَعَنْ هِبَتِهِ.

2126 - सय्यदना इब्ने उमर (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने वला को बेचने और इसे हिबा करने से मना फ़रमाया है।

बुख़ारी: 2534. मुस्लिम: 1506.अबू दाऊद: 2919. इब्ने माजह: 2747.निसाई: 4657.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। हम इसे अम्र बिन दीनार के ज़रिए ही इब्ने उमर (ﷺ) से जानते हैं। वह नबी करीम(ﷺ) से रिवायत करते हैं, नीज़ शोबा, सुफ़ियान सौरी और मालिक बिन अनस ने भी उसे अब्दुल्लाह बिन दीनार से रिवायत किया है।

शोबा से मर्वी है वह कहते हैं कि मेरी ख़्वाहिश थी कि अब्दुल्लाह बिन दीनार ने जब इस हदीस को बयान किया था तो मुझे इजाज़त दे देते कि मैं उनके सर को बोसा देता।

यह्या बिन सुलैम इस हदीस को उबैदुल्लाह बिन उमर से बवास्ता नाफ़े, इब्ने उमर (ﷺ) के ज़रिए नबी करीम(ﷺ) से रिवायत किया है। लेकिन यह वहम है। इसमें यह्या बिन सुलैम को वहम हुआ है। उबैदुल्लाह बिन उमर से बवास्ता अब्दुल्लाह बिन दीनार, सय्यदना इब्ने उमर (ﷺ) से ही सहीह है। कई रावियों ने इसी तरह ही उबैदुल्लाह बिन उमर से रिवायत की है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: अब्दुल्लाह बिन दीनार इस हदीस को रिवायत करने में अकेले हैं।

3 بَابُ مَا جَاءَ فِيمَنْ تَوَلَّى غَيْرَ مَوَالِيهِ أَوْ ادَّعَى إِلَى غَيْرِ أَبِيهِ

3 - जो शख़्स अपने आज़ाद करने वाले को छोड़ कर किसी दूसरे की तरफ़ निस्बत कर ले या किसी ग़ैर को अपना बाप कहे।

2127 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ

2127 - इब्राहीम अत्तैमी अपने बाप से रिवायत करते हैं कि सय्यदना अली (ﷺ) ने हमें ख़ुत्बा देते हुए फ़रमाया: जो शख़्स यह ख्याल करे कि

التَّيْمِيِّ، عَنْ أَبِيهِ قَالَ: خَطَبَنَا عَلِيٌّ فَقَالَ: مَنْ زَعَمَ أَنَّ عِنْدَنَا شَيْئًا نَقْرَؤُهُ إِلاَّ كِتَابَ اللهِ وَهَذِهِ الصَّحِيفَةَ، صَحِيفَةٌ فِيهَا أَسْنَانُ الإِبِلِ وَأَشْيَاءُ مِنَ الجِرَاحَاتِ، فَقَدْ كَذَبَ، وَقَالَ فِيهَا: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الْمَدِينَةُ حَرَمٌ مَا بَيْنَ عَيْرٍ إِلَى ثَوْرٍ، فَمَنْ أَحْدَثَ فِيهَا حَدَثًا أَوْ آوَى مُحْدِثًا فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللهِ وَالمَلاَئِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ، لاَ يَقْبَلُ اللَّهُ مِنْهُ يَوْمَ القِيَامَةِ صَرْفًا وَلاَ عَدْلاً، وَمَنْ ادَّعَى إِلَى غَيْرِ أَبِيهِ أَوْ تَوَلَّى غَيْرَ مَوَالِيهِ فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللهِ وَالمَلاَئِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ، لاَ يُقْبَلُ مِنْهُ صَرْفٌ وَلاَ عَدْلٌ، وَذِمَّةُ الْمُسْلِمِينَ وَاحِدَةٌ يَسْعَى بِهَا أَدْنَاهُمْ.

हमारे पास कोई चीज़ है जो हम पढ़ते हैं सिवाए अल्लाह की किताब और इस सहीफ़े (किताबचे) के। इस सहीफ़े में ऊंटों की उम्रें और ज़ख्मों के कुछ अहकामात हैं। तो वह शख़्स झूठा है और उन्होंने फ़रमाया: इसमें यह है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "मदीना ऐर से सौर[1] तक हरम है। जिसने इसमें कोई बिद्अत की या किसी बिद्अती को जगह दी तो उस पर अल्लाह तआला, फरिश्तों और तमाम लोगों की लानत है। क़यामत के दिन अल्लाह तआला उससे कोई फ़र्ज़ और नफ़ल कुबूल नहीं करेंगे, और जिस ने किसी ग़ैर को अपना बाप कहा या जिसने अपने आज़ाद करने वालों को छोड़ कर दूसरों को अपना मालिक बना लिया[2] उस पर भी अल्लाह तआला, फरिश्तों और तमाम लोगों की लानत है। क़यामत के दिन उस से फ़र्ज़ और नफ़ल कुबूल नहीं की जाएगी और मुसलमानों का ज़िम्मा एक ही है इसमें अदना आदमी (का ज़िम्मा भी) चलता है।

बुख़ारी: 3172. मुस्लिम: 1370. अबू दाऊद: 2034. निसाई: 4734.

तौज़ीह: (1) सौर पहाड़ मक्का के एक तरफ़ मशहूर पहाड़ है। लेकिन मदीना में भी उहुद के पीछे एक पहाड़ का नाम सौर है। (2) आज़ाद होने वाला अपने आज़ाद करने वाले को छोड़ कर किसी दूसरे शख़्स से कहे कि मेरी निस्बत तुम्हारी तरफ़ है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और बअ़ज़ ने इसे आमश से उन्होंने इब्राहीम अत्तैमी से बवास्ता हारिस बिन सुवैद, सय्यदना अली (رضي الله عنه) से ऐसे ही रिवायत किया है। नीज़ बवास्ता अली (رضي الله عنه) नबी करीम(ﷺ) से दीगर इस्नाद के साथ भी मर्वी है।

4 - जो शख़्स अपने बच्चे का इंकार करे।

4 بَابُ مَا جَاءَ فِي الرَّجُلِ يَنْتَفِي مِنْ وَلَدِهِ

2128 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) बयान करते हैं कि क़बील-ए-बनू फ़ज़ारा का एक आदमी नबी करीम(ﷺ) के पास आकर कहने लगा: ऐ अल्लाह के रसूल! मेरी बीवी ने एक सियाह रंग के बच्चे को जना है। तो नबी करीम(ﷺ) ने उन से फ़रमाया: क्या तुम्हारे पास ऊँट हैं?" उसने कहा : जी हाँ" आप ने फ़रमाया: "उनका रंग क्या है? उस ने कहा: सुर्ख़, आप ने फ़रमाया: क्या उन में कोई सियाही[1] माइल भी है?" उसने कहा: उसमें कई सियाह माइल हैं। आप ने फ़रमाया: "कहाँ से आए?" उस ने कहा: शायद किसी रंग ने उन्हें खींचा हो।[2] आप ने फ़रमाया: "इस बच्चे को भी शायद किसी रंग ने खींचा हो। "

बुख़ारी: 5305. मुस्लिम: 1500. अबू दाऊद: 2260. इब्ने माजह: 2002. निसाई: 3478, 3480.

2128 - حَدَّثَنَا عَبْدُ الجَبَّارِ بْنُ العَلَاءِ الْعَطَّارُ، وَسَعِيدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْمَخْزُومِيُّ، قَالَا: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي فَزَارَةَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّ امْرَأَتِي وَلَدَتْ غُلَامًا أَسْوَدَ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: هَلْ لَكَ مِنْ إِبِلٍ؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: فَمَا أَلْوَانُهَا؟ قَالَ: حُمْرٌ، قَالَ: فَهَلْ فِيهَا أَوْرَقُ؟ قَالَ: نَعَمْ، إِنَّ فِيهَا لَوُرْقًا، قَالَ: أَنَّى أَتَاهَا ذَلِكَ؟ قَالَ: لَعَلَّ عِرْقًا نَزَعَهَا، قَالَ: فَهَذَا لَعَلَّ عِرْقًا نَزَعَهُ.

तौज़ीह: (1) الأورق :हर खाकी रंग की चीज़ को الأورق कहा जाता है नीज़ सियाही माइल सफ़ेद ऊँट को भी الأورق कहते हैं। (अल-मोजमुल वसीत:पृ. 1248)

(2) यानी हो सकता है कि उस ऊँट के बाप दादा या उस से ऊपर में कोई उस रंग का हो तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया: " यह भी तो हो सकता है कि तुम्हारे आबा व अज्दाद में भी कोई काले रंग का हो।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

5 - क़याफा शनासी।

5 بَابُ مَا جَاءَ فِي القَافَةِ

2129 - सय्यदा आयशा (ﷺ) से रिवायत है कि नबी करीम(ﷺ) उनके पास तशरीफ़ लाये खुशी से आप के चेहरे मुबारक की सल्वटें

2129 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ

النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَخَلَ عَلَيْهَا مَسْرُورًا تَبْرُقُ أَسَارِيرُ وَجْهِهِ فَقَالَ: أَلَمْ تَرَيْ أَنَّ مُجَزِّزًا نَظَرَ آنِفًا إِلَى زَيْدِ بْنِ حَارِثَةَ وَأُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ فَقَالَ: هَذِهِ الأَقْدَامُ بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ.

चमक रही थीं आप ने फ़रमाया: "क्या तुम नहीं जानती कि (مُجَزِّزُ المدلجي[1]) ने अभी अभी ज़ैद बिन हारिसा और उसामा बिन ज़ैद को देख कर कहा है कि यह पाँव एक दूसरे से हैं।"[2]

बुख़ारी: 3555. मुस्लिम: 1459. अबू दाऊद: 2267. इब्ने माजह: 2329. निसाई: 4393.

तौज़ीह: (1) अरब का मशहूर काफ़िया शनास आदमी था। (2) सय्यदना ज़ैद बिन हारिसा (ﷺ) का रंग गोरा जबकि उनके बेटे का रंग काला था तो लोग तरह तरह की बातें करते थे। चुनाँचे इत्तिफ़ाक़ से इस मशहूर काफ़िया शनास की नज़र उन बाप-बेटे के पैरों पर पड़ी तो उसने कहा: इन दोनों में बाप बेटे का रिश्ता नज़र आता है। इसलिए आप(ﷺ) के चेहरे पर खुशी के आसार थे कि लोग अब ख़ामोश हो जायेंगे। (अल्लाह बेहतर जानता है)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ सुफ़ियान बिन उयय्ना ने भी इस हदीस को ज़ोहरी से बवास्ता उर्वा, सय्यदा आयशा से रिवायत किया है। इसमें इज़ाफ़ा है कि, क्या तुम नहीं जानती कि मुज़ज़्ज़िज़, ज़ैद बिन हारिसा और उसामा बिन ज़ैद के पास से गुजरा उन्होंने अपने सर ढांपे हुए थे जबकि उनके पाँव नंगे थे तो उसने कहा: यह पाँव एक दूसरे से हैं। सईद बिन अब्दुर्रहमान और दीगर लोगों ने हमें सुफ़ियान बिन उयय्ना से बवास्ता ज़ोहरी, उर्वा से सय्यदा आयशा (ﷺ) से इस हदीस को इसी तरह रिवायत किया है और यह हदीस हसन सहीह है: नीज़ बअ़ज़ उलमा ने इस हदीस से क़याफ़ा शनासी के जवाज़ की दलील ली है।

6 بَابٌ فِي حَثِّ النَّبِيِّ (ﷺ) عَلَى التَّهَادِي

6 - नबी करीम(ﷺ) का तोहफ़े देने की तरग़ीब देना।

2130 - حَدَّثَنَا أَزْهَرُ بْنُ مَرْوَانَ الْبَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَوَاءٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مَعْشَرٍ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: تَهَادَوْا فَإِنَّ الْهَدِيَّةَ تُذْهِبُ وَحَرَ الصَّدْرِ، وَلاَ تَحْقِرَنَّ جَارَةٌ لِجَارَتِهَا وَلَوْ شِقَّ فِرْسِنِ شَاةٍ.

2130 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) बयान करते हैं कि नबी करीम(ﷺ) ने फ़रमाया: "एक दूसरे को तोहफ़े दिया करो। बेशक तोहफ़ा दिल का कीना और बुग़्ज़ ख़त्म कर देता है और पड़ोसन अपने पड़ोसन के लिए (किसी भी तोहफ़े को) हक़ीर न समझे अगर बकरी के खुर का टुकड़ा ही हो।"

ज़ईफ़:अलअदबुल मुफ़रद: 123. मुसनद अहमद: 2/405

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस ग़रीब है और अबू मिस्अर का नाम नजीह मौला बिन हाशिम है और बअ़ज़ उलमा ने उसके हाफ़िज़े की वजह से उस पर जरह की है।

7 بَابُ مَا جَاءَ فِي كَرَاهِيَةِ الرُّجُوعِ فِي الهِبَةِ

7 - कोई चीज़ हिबा या (अतिय्या) करके वापस लेना मना है।

2131 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ يُوسُفَ الأَزْرَقُ، قَالَ: حَدَّثَنَا حُسَيْنٌ الْمُكَتِّبُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ طَاوُوسٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَثَلُ الَّذِي يُعْطِي العَطِيَّةَ ثُمَّ يَرْجِعُ فِيهَا كَالكَلْبِ أَكَلَ حَتَّى إِذَا شَبِعَ قَاءَ ثُمَّ عَادَ فَرَجَعَ فِي قَيْئِهِ.

2131 - सय्यदना इब्ने उमर (ﷺ) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "उस शख़्स की मिसाल जो तोहफ़ा देकर वापस ले लेता है उस कुत्ते की तरह है जो खाता है यहाँ तक कि जब सैर होकर क़ै कर देता है फिर अपनी क़ै की तरफ़ लौटता है।"

सहीह: इब्ने माजह: 2386. 1299 नम्बर हदीस देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस बारे में इब्ने अब्बास और अब्दुल्लाह बिन अम्र (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

2132 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ حُسَيْنٍ الْمُعَلِّمِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ قَالَ: حَدَّثَنِي طَاوُوسٌ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، وَابْنِ عَبَّاسٍ، يَرْفَعَانِ الحَدِيثَ قَالَ: لاَ يَحِلُّ لِلرَّجُلِ أَنْ يُعْطِيَ عَطِيَّةً ثُمَّ يَرْجِعُ فِيهَا إِلاَّ الوَالِدَ فِيمَا يُعْطِي وَلَدَهُ، وَمَثَلُ الَّذِي يُعْطِي العَطِيَّةَ ثُمَّ يَرْجِعُ فِيهَا كَمَثَلِ الكَلْبِ أَكَلَ حَتَّى إِذَا شَبِعَ قَاءَ ثُمَّ عَادَ فِي قَيْئِهِ.

2132 - सय्यदना इब्ने उमर और इब्ने अब्बास (ﷺ) मर्फ़ू बयान करते हैं कि (रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, किसी आदमी के लिए हलाल नहीं है कि वह कोई तोहफ़ा देकर वापस ले सिवाए बाप के जो वह अपने बेटे को अतिय्या देता है (उसे वापस ले सकता है) और तोहफ़ा देकर वापस लेने वाले की मिसाल कुत्ते की तरह है। जो खाता है यहाँ तक कि जब सैर हो जाता है क़ै कर देता है फिर अपनी क़ै की तरफ़ लौटता है।"

सहीह: अबू दाऊद: 3539. निसाई: 3690

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। इमाम शाफ़ेई (ﷺ) फ़रमाते हैं: जो शख़्स कोई चीज़ हिबा कर दे तो उसे वापस लेना हलाल नहीं है सिवाये बाप के बेटे को दी हुई चीज़ वापस ले सकता है। उन्होंने इसी हदीस से दलील ली है।

ख़ुलासा

- वला का ताल्लुक़ उसी के लिए साबित होगा जिस ने आज़ाद किया हो।
- आज़ाद करने वाले और आज़ाद होने वाले के दर्मियान जो रिश्ता होता है उसे वला कहा जाता है।
- वला को बेचा या हिबा नहीं किया जा सकता।
- अपनी निस्बत किसी ग़ैर के बाप की तरफ़ करना गुनाहे कबीरा है।
- बच्चा जिसके घर पैदा हो उसकी तरफ़ उसकी निस्बत की जाएगी।
- क़याफ़ा शनास के लिए अंदाज़ा लगाना जायज़ है।
- एक दूसरे को तोहफ़े दिए जाएँ क्योंकि इस से ताल्लुक़ मज़बूत होता है।
- कोई तोहफ़ा देकर वापस लेना ऐसे ही है जैसे कुत्ता क़ै करके चाट ले।

मज़मून नम्बर 30

أَبْوَابُ الْقَدَرِ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

रसूलुल्लाह(ﷺ) से मर्वी तक़्दीर के मसाइल

तआरुफ़

25 अहादीस और 17 अबवाब पर मुश्तमिल यह उन्वान इन मौज़ूआत पर मुश्तमिल है:

- तक़्दीर क्या है?
- तक़्दीर कैसे लिखी गई?
- तक़्दीर को झुठलाने वाला कौन है।

1 بَابُ مَا جَاءَ فِي التَّشْدِيدِ فِي الْخَوْضِ فِي الْقَدَرِ

2133 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُعَاوِيَةَ الْجُمَحِيُّ الْبَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا صَالِحٌ الْمُرِّيُّ، عَنْ هِشَامِ بْنِ حَسَّانَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَحْنُ نَتَنَازَعُ فِي الْقَدَرِ فَغَضِبَ حَتَّى احْمَرَّ وَجْهُهُ، حَتَّى كَأَنَّمَا فُقِئَ فِي وَجْنَتَيْهِ الرُّمَّانُ، فَقَالَ: أَبِهَذَا أُمِرْتُمْ أَمْ بِهَذَا أُرْسِلْتُ إِلَيْكُمْ؟ إِنَّمَا هَلَكَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ حِينَ تَنَازَعُوا فِي هَذَا الأَمْرِ، عَزَمْتُ عَلَيْكُمْ أَلاَّ تَتَنَازَعُوا فِيهِ.

1 - तक़्दीर में ग़ौरो खोज करना सख़्ती से मना है।

2133 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) हमारे पास तशरीफ़ लाये, हम तक़्दीर (के मसला) में एक दूसरे से झगड़ रहे थे, तो आप(ﷺ) को इस कदर गुस्सा आया कि आपका चेहरा सुर्ख़ हो गया, यहाँ तक कि ऐसे लगता था कि आप के दोनों रुख़सारों पर अनार निचोड़ा गया हो, आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "क्या तुम्हें इस काम का हुक्म दिया गया है? या मुझे यह चीज़ देकर तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है? बेशक तुम से पहले लोग तभी हलाक हुए जब उन्होंने इस मामले में झगड़ा किया, मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ कि तुम इस बारे में बहस व तकरार ना करो।

हसन: अबू याला: 6045

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस बारे में उमर, आयशा और अनस (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है और यह हदीस ग़रीब है। हम सालेह मुर्री के इसी तरीक़ से ही जानते हैं और सालेह मुर्री की वह अहादीस अजीबो ग़रीब हैं जिन में वह अकेला हो और उसकी मुताबअत न की गई हो।

2 بَابُ مَا جَاءَ فِي حِجَاجِ آدَمَ وَمُوسَى عَلَيْهِمَا السَّلاَمُ

2 - आदम और मूसा (ﷺ) का झगड़ा।

2134 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَبِيبِ بْنِ عَرَبِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ سُلَيْمَانَ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: احْتَجَّ آدَمُ وَمُوسَى، فَقَالَ مُوسَى: يَا آدَمُ أَنْتَ الَّذِي خَلَقَكَ اللَّهُ بِيَدِهِ وَنَفَخَ فِيكَ مِنْ رُوحِهِ، أَغْوَيْتَ النَّاسَ وَأَخْرَجْتَهُمْ مِنَ الجَنَّةِ، قَالَ: فَقَالَ آدَمُ: وَأَنْتَ مُوسَى الَّذِي اصْطَفَاكَ اللَّهُ بِكَلاَمِهِ أَتَلُومُنِي عَلَى عَمَلٍ عَمِلْتُهُ كَتَبَهُ اللَّهُ عَلَيَّ قَبْلَ أَنْ يَخْلُقَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضَ، قَالَ: فَحَجَّ آدَمُ مُوسَى.

2134 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) से रिवायत है कि नबी करीम(ﷺ) ने फ़रमाया: " आदम और मूसा (ﷺ) ने तकरार की तो मूसा ने कहा: ऐ आदम! आप वह हैं जिन्हें अल्लाह ने अपने हाथ से पैदा किया और आप के जिस्म में अपनी रूह फूंकी लेकिन आप ने लोगों को भटका दिया और उन्हें जन्नत से निकाल दिया? तो आदम ने फ़रमाया: " तुम वह मूसा हो जिसे अल्लाह ने अपने कलाम के लिए चुन लिया? क्या तुम मुझे ऐसे काम पर मलामत करते हो जो अल्लाह तआला ने आसमानों और ज़मीन को पैदा करने से पहले ही मुझ पर लिख दिया था?" (नबी(ﷺ)) ने फ़रमाया: "आदम ने मूसा को लाजवाब कर दिया।"

बुख़ारी: 4738. मुस्लिम: 2652. अबू दाऊद: 4701. इब्ने माजह: 80

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस बारे में उमर, और जुन्दुब (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है। और बवास्ता सुलैमान अत्तैमी आमश से रिवायत की गई यह हदीस इस तरीक़ से हसन सहीह ग़रीब है। नीज़ आमश के बअज़ शागिर्दों ने इसे आमश से बज़रिया अबू सालेह, अबू हुरैरा (ﷺ) के वास्ते के साथ नबी करीम(ﷺ) से रिवायत किया है और बअज़ कहते हैं: आमश ने अबू सालेह से बवास्ता अबू सईद, नबी करीम(ﷺ) से रिवायत की है। नीज़ यह हदीस अबू हुरैरा (ﷺ) से कई सनदों के साथ नबी करीम(ﷺ) से मर्वी है।

3 - बद बख़्ती और खुश बख़्ती का बयान।

3 بَابُ مَا جَاءَ فِي الشَّقَاءِ وَالسَّعَادَةِ

2135 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (ﷺ) से रिवायत है कि उमर (ﷺ) ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आप बतलाइए कि यह जो अमल हम करते हैं यह अम्र (मामला) नए सिरे से है या इसकी भी इब्तिदा है या इस (के फ़ैसले) से फरागत हो चुकी है? आप(ﷺ) ने फ़रमाया: ''ऐ इब्ने खत्ताब! इस से फ़रागत हो चुकी है और हर आदमी के लिए आसानी रखी गई है। जो शख़्स खुशबख़्ती वालों में से है वह सआदत के लिए ही अमल करेगा और जो बदबख़्ती वालों में से है वह बदबख़्ती के लिए ही अमल करेगा।

सहीह: अलअदबुल मुफ़रद: 903, मुसनद अहमद: 2/952.

2135 - حَدَّثَنَا بُنْدَارٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَاصِمِ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ، قَالَ: سَمِعْتُ سَالِمَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يُحَدِّثُ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ عُمَرُ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَرَأَيْتَ مَا نَعْمَلُ فِيهِ أَمْرٌ مُبْتَدَعٌ أَوْ مُبْتَدَأٌ أَوْ فِيمَا قَدْ فُرِغَ مِنْهُ؟ فَقَالَ: فِيمَا قَدْ فُرِغَ مِنْهُ يَا ابْنَ الخَطَّابِ وَكُلٌّ مُيَسَّرٌ، أَمَّا مَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ السَّعَادَةِ فَإِنَّهُ يَعْمَلُ لِلسَّعَادَةِ، وَأَمَّا مَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الشَّقَاءِ فَإِنَّهُ يَعْمَلُ لِلشَّقَاءِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस बारे में अली, हुज़ैफा बिन उसैद, अनस और इमरान बिन हुसैन (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है नीज़ यह हदीस हसन सहीह है।

2136 - सय्यदना अली (ﷺ) से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ थे और आप ज़मीन कुरेद रहे थे आप(ﷺ) ने अचानक अपना सर मुबारक आसमान की तरफ़ उठा कर फ़रमाया: "तुममें से कोई शख़्स नहीं है मगर उसका हाल मालूम हो चुका है।" वकीअ ने यह लफ्ज़ कहे हैं कि उसका जहन्नम का ठिकाना और जन्नत का ठिकाना लिखा जा चुका है। "सहाबा ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! क्या हम (अपनी तक़्दीर) पर तवक्कुल (भरोसा) न कर लें? आप(ﷺ) ने

2136 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الحُلْوَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ نُمَيْرٍ، وَوَكِيعٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَيْدَةَ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ، عَنْ عَلِيٍّ قَالَ: بَيْنَمَا نَحْنُ مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَنْكُتُ فِي الأَرْضِ إِذْ رَفَعَ رَأْسَهُ إِلَى السَّمَاءِ ثُمَّ قَالَ: مَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ إِلاَّ قَدْ عُلِمَ، وَقَالَ وَكِيعٌ: إِلاَّ قَدْ كُتِبَ، مَقْعَدُهُ مِنَ النَّارِ وَمَقْعَدُهُ

مِنَ الجَنَّةِ، قَالُوا: أَفَلاَ نَتَّكِلُ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: لاَ، اعْمَلُوا فَكُلٌّ مُيَسَّرٌ لِمَا خُلِقَ لَهُ.

फ़रमाया, "नहीं, तुम अमल करो। हर एक को उसी काम की तरफ़ आसानी दी जाती है जिसके लिए वह पैदा किया गया है।"

बुख़ारी: 1362. मुस्लिम: 2647.अबू दाऊद:4694. इब्ने माजह: 78.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

4 بَابُ مَا جَاءَ أَنَّ الأَعْمَالَ بِالخَوَاتِيمِ

4 - आमाल का एतबार ख़ातमा पर है।

2137 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ زَيْدِ بْنِ وَهْبٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ الصَّادِقُ الْمَصْدُوقُ: إِنَّ أَحَدَكُمْ يُجْمَعُ خَلْقُهُ فِي بَطْنِ أُمِّهِ فِي أَرْبَعِينَ يَوْمًا ثُمَّ يَكُونُ عَلَقَةً مِثْلَ ذَلِكَ، ثُمَّ يَكُونُ مُضْغَةً مِثْلَ ذَلِكَ، ثُمَّ يُرْسِلُ اللَّهُ إِلَيْهِ الْمَلَكَ فَيَنْفُخُ فِيهِ الرُّوحَ وَيُؤْمَرُ بِأَرْبَعٍ، يَكْتُبُ رِزْقَهُ وَأَجَلَهُ وَعَمَلَهُ وَشَقِيٌّ أَوْ سَعِيدٌ، فَوَالَّذِي لاَ إِلَهَ غَيْرُهُ إِنَّ أَحَدَكُمْ لَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ الجَنَّةِ حَتَّى مَا يَكُونُ بَيْنَهُ وَبَيْنَهَا إِلاَّ ذِرَاعٌ ثُمَّ يَسْبِقُ عَلَيْهِ الكِتَابُ فَيُخْتَمُ لَهُ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ فَيَدْخُلُهَا، وَإِنَّ أَحَدَكُمْ لَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ حَتَّى مَا يَكُونَ بَيْنَهُ وَبَيْنَهَا إِلاَّ

2137 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) से रिवायत है कि हमें रसूलुल्लाह(ﷺ) ने बयान किया कि जो तस्दीक किए गए सच्चे हैं कि तुममें से हर शख़्स की तख़्लीक़ (वाले नुत्फे) को चालीस दिन तक उसकी मां के पेट में जमा किया जाता है, फिर उतने ही दिनों में जमा हुआ खून (عَلَقَةً) बनता है, फिर उतने ही दिनों में गोश्त का लोथड़ा (مُضْغَةً) बनता है, फिर अल्लाह तआला उसकी तरफ़ फ़रिश्ता भेजता है वह उसमें रूह फूंकता है और उसे चार चीजों (को लिखने) का हुक्म देता है: चुनांचे वह उसका रिज्क, मौत, अमल और बदबख्त होना या नेकबख्त होना लिखता है। उस ज़ात की क़सम जिसके सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं! बेशक तुम में से एक शख़्स जन्नतियों वाले आमाल करता रहता है यहाँ तक कि उसके और उस (जन्नत) के दर्मियान एक हाथ का (फासला) रह जाता है, फिर उस पर किताब (तक़्दीर) सबक़त ले जाती है तो उसका ख़ातमा जहन्नमियों वाले अमल पर हो जाता है चुनांचे वह उसमें दाख़िल हो जाता है और

ذِرَاعٌ ثُمَّ يَسْبِقُ عَلَيْهِ الكِتَابُ فَيُخْتَمُ لَهُ بِعَمَلِ أَهْلِ الجَنَّةِ فَيَدْخُلُهَا.

बेशक तुम में से एक शख़्स जहन्नमियों वाले आमाल करता है यहाँ तक कि उस के और उस जहन्नम के दर्मियान एक हाथ का फ़ासला रह जाता है फिर उस पर किताब (तक़्दीर) सबक़त ले जाती है तो उसका ख़ातमा जन्नतियों वाले अमल पर हो जाता है चुनांचे वह उस जन्नत में दाख़िल हो जाता है।

बुख़ारी 3208. मुस्लिम:2643. अबू दाऊद: 4708. इब्ने माजह: 76.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। अबू ईसा कहते हैं: हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने वह कहते हैं, हमें यह्या बिन सईद ने आमश से बवास्ता ज़ैद बिन वहब, अब्दुल्लाह बिन मसऊद (ﷺ) से हदीस बयान की है कि हमें रसूलुल्लाह(ﷺ) ने बयान किया, फिर इसी तरह हदीस ज़िक्र की।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस बारे में अबू हुरैरा और अनस (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है और मैंने अहमद बिन हसन से सुना कि इमाम अहमद बिन हंबल (ﷺ) फ़रमाते हैं: मैंने अपनी आँखों से यह्या बिन सईद क़त्तान जैसा कोई नहीं देखा। नीज़ यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ शोबा और सौरी ने भी आमश से ऐसी ही हदीस रिवायत की है। हमें मुहम्मद बिन अला ने भी वकीअ से बवास्ता आमश, ज़ैद से ऐसी ही रिवायत बयान की है।

5 بَابُ مَا جَاءَ كُلُّ مَوْلُودٍ يُولَدُ عَلَى الفِطْرَةِ

5-हर बच्चा फ़ितरते (इस्लाम) पर पैदा होता है

2138 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى القُطَعِيُّ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ العَزِيزِ بْنُ رَبِيعَةَ البُنَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كُلُّ مَوْلُودٍ يُولَدُ عَلَى الْمِلَّةِ فَأَبَوَاهُ يُهَوِّدَانِهِ أَوْ يُنَصِّرَانِهِ أَوْ يُشَرِّكَانِهِ قِيلَ: يَا رَسُولَ اللهِ، فَمَنْ هَلَكَ قَبْلَ ذَلِكَ؟ قَالَ: اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا عَامِلِينَ بِهِ.

2138 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "हर बच्चा मिल्लते इस्लाम पर पैदा होता है, फिर उसके मां बाप उसे यहूदी या ईसाई और मुश्रिक बनाते हैं।" कहा गया: ऐ अल्लाह के रसूल! जो इससे पहले फौत हो गये हैं। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह खूब जानता है कि वह क्या आमाल करने वाले थे।"

बुख़ारी: 6599. मुस्लिम: 2685. अबू दाऊद: 4714.

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं, हमें अबू कुरैब और हसन बिन हुरैस ने वह दोनों कहते हैं: हमें वकीअ ने आमश से उन्होंने अबू सालेह से बवास्ता अबू हुरैरा (ﷺ) नबी करीम(ﷺ) से इसी मफ़्हूम की हदीस बयान की है और इसमें (मिल्लते इस्लाम) फ़ित्रते इस्लाम पर पैदा होने का ज़िक्र है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और शोबा वग़ैरह ने भी आमश से बवास्ता अबू सालेह, अबू हुरैरा (ﷺ) से रिवायत की है कि नबी करीम(ﷺ) ने फ़रमाया: "बच्चा फ़ित्रते (इस्लाम) पर पैदा होता है। "

नीज़ इस मसले में अस्वद बिन सरीअ (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

6 - तक़्दीर को सिर्फ दुआ बदल सकती है।

6 بَابُ مَا جَاءَ لاَ يَرُدُّ الْقَدَرَ إِلاَّ الدُّعَاءُ

2139 - सय्यदना सलमान (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "दुआ के सिवा कोई चीज़ तक़्दीर को रद नहीं करती और नेकी के सिवा कोई चीज़ उम्र में इज़ाफ़ा नहीं करती।" (1)

हसन: अल-मोजमुल कबीर: 6128.

2139 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حُمَيْدٍ الرَّازِيُّ، وَسَعِيدُ بْنُ يَعْقُوبَ، قَالاَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ الضُّرَيْسِ، عَنْ أَبِي مَوْدُودٍ، عَنْ سُلَيْمَانَ التَّيْمِيِّ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ، عَنْ سَلْمَانَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: لاَ يَرُدُّ الْقَضَاءَ إِلاَّ الدُّعَاءُ، وَلاَ يَزِيدُ فِي الْعُمْرِ إِلاَّ الْبِرُّ.

तौज़ीह: (1) यह चीज़ भी तक़्दीर में लिखी जा चुकी है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस बारे में अबू उसैद (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है। और यह्या बिन ज़ुरैस की यह हदीस हसन ग़रीब है। नीज़ अबू मौदूद दो हैं: एक को فِضَّةُ कहा जाता है और दूसरे को अब्दुल अज़ीज़ बिन सुलैमान, एक बस्रा का रहने वाला था और दूसरा मदीना का, यह दोनों एक ही वक़्त में थे और वह अबू मौदूद जिस ने यह हदीस रिवायत की है उसका नाम फिज़्ज़ा बसरी है।

7 - बन्दों के दिल रहमान की उँगलियों के दर्मियान हैं।

7 بَابُ مَا جَاءَ أَنَّ الْقُلُوبَ بَيْنَ أُصْبُعَيِ الرَّحْمَنِ

2140 - सय्यदना अनस (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) अक्सर कहा करते थे: ''ऐ दिलों को फेरने वाले! मेरे दिल को अपने

2140 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي سُفْيَانَ، عَنْ

أَنَسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُكْثِرُ أَنْ يَقُولَ: يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوبِ ثَبِّتْ قَلْبِي عَلَى دِينِكَ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، آمَنَّا بِكَ وَبِمَا جِئْتَ بِهِ فَهَلْ تَخَافُ عَلَيْنَا؟ قَالَ: نَعَمْ، إِنَّ الْقُلُوبَ بَيْنَ أُصْبُعَيْنِ مِنْ أَصَابِعِ اللهِ يُقَلِّبُهَا كَيْفَ يَشَاءُ.

दीन पर मज़बूत रख।" तो मैंने कहा: ऐ अल्लाह के नबी(ﷺ)! हम आप पर और जो आप लेकर आए हैं उस पर ईमान लाये तो क्या आप हमारे ऊपर डरते हैं? आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "हाँ, बेशक दिल अल्लाह की उँगलियों में से दो उँगलियों के दर्मियान हैं वह जैसे चाहता है उनको फेरता है।"

सहीह: इब्ने माजह: 3834. मुसनद अहमद: 3/112 .हाकिम: 1/526

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में नव्वास बिन समआन, उम्मे सलमा, अब्दुल्लाह, आयशा और अबू ज़र (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है और यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ बहुत से लोगों ने आमश से बवास्ता सुफ़ियान, सय्यदना अनस (رضي الله عنه) से इसी तरह रिवायत की है और बअ़ज़ ने आमश से बवास्ता अबू सुफ़ियान, जाबिर (رضي الله عنه) से रिवायत की है लेकिन अबू सुफ़ियान की सय्यदना अनस (رضي الله عنه) से रिवायतकर्दा हदीस ज़्यादा सहीह है।

8 بَابُ مَا جَاءَ أَنَّ اللَّهَ كَتَبَ كِتَابًا لأَهْلِ الْجَنَّةِ وَأَهْلِ النَّارِ

8 - अल्लाह तआ़ला ने जन्नतियों और जहन्नमियों के लिए एक किताब लिखी है।

2141 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ أَبِي قَبِيلٍ، عَنْ شُفَيِّ بْنِ مَاتِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ: خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَفِي يَدِهِ كِتَابَانِ، فَقَالَ: أَتَدْرُونَ مَا هَذَانِ الْكِتَابَانِ؟ فَقُلْنَا: لاَ يَا رَسُولَ اللهِ إِلاَّ أَنْ تُخْبِرَنَا، فَقَالَ لِلَّذِي فِي يَدِهِ الْيُمْنَى: هَذَا كِتَابٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ فِيهِ أَسْمَاءُ أَهْلِ

2141 - अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) हमारे पास तशरीफ़ लाये और आप(ﷺ) के हाथ में दो किताबें थीं आप ने फ़रमाया: "क्या तुम जानते हो यह किताबें कैसी हैं?" हमने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! नहीं" सिवाए इसके कि आप हमें बता दें आप(ﷺ) ने दायें हाथ वाली किताब के बारे में फ़रमाया: "यह किताब रब्बुल आलमीन की तरफ़ से है। इसमें जन्नती लोगों, उनके बापों और उनके क़बाइल के नाम हैं, फिर उनके आख़िर में उनका हिसाब लिख

الْجَنَّةِ وَأَسْمَاءُ آبَائِهِمْ وَقَبَائِلِهِمْ، ثُمَّ أُجْمِلَ عَلَى آخِرِهِمْ فَلاَ يُزَادُ فِيهِمْ وَلاَ يُنْقَصُ مِنْهُمْ أَبَدًا، ثُمَّ قَالَ لِلَّذِي فِي شِمَالِهِ: هَذَا كِتَابٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ فِيهِ أَسْمَاءُ أَهْلِ النَّارِ وَأَسْمَاءُ آبَائِهِمْ وَقَبَائِلِهِمْ، ثُمَّ أُجْمِلَ عَلَى آخِرِهِمْ فَلاَ يُزَادُ فِيهِمْ وَلاَ يُنْقَصُ مِنْهُمْ أَبَدًا، فَقَالَ أَصْحَابُهُ: فَفِيمَ الْعَمَلُ يَا رَسُولَ اللهِ إِنْ كَانَ أَمْرٌ قَدْ فُرِغَ مِنْهُ؟ فَقَالَ: سَدِّدُوا وَقَارِبُوا، فَإِنَّ صَاحِبَ الْجَنَّةِ يُخْتَمُ لَهُ بِعَمَلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ وَإِنْ عَمِلَ أَيَّ عَمَلٍ، وَإِنَّ صَاحِبَ النَّارِ يُخْتَمُ لَهُ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ وَإِنْ عَمِلَ أَيَّ عَمَلٍ، ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِيَدَيْهِ فَنَبَذَهُمَا، ثُمَّ قَالَ: فَرَغَ رَبُّكُمْ مِنَ الْعِبَادِ فَرِيقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ.

दिया गया है, इसमें न कभी किसी का इजाफ़ा किया जाएगा और न ही इसमें किसी को कम किया जाएगा।" फिर बाएं हाथ वाली के बारे में आप ने फ़रमाया: "यह किताब भी रब्बुल आलमीन की तरफ़ से है, इसमें जहन्नमियों, उनके बापों और उनके क़बीलों के नाम हैं, फिर उनके आख़िर पर उनका हिसाब लिख दिया गया है, कभी भी इन में इजाफ़ा नहीं होगा और न ही इसमें कमी की जायेगी। "तो आप(ﷺ) के सहाबा ने अर्ज़ की: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! अगर अंजाम से फ़रागत हो चुकी है तो आमाल की क्या ज़रूरत है? आप(ﷺ) ने फ़र्माया, "दर्मियाने चलते रहो और सहीह बात के करीब रहो।" बेशक जन्नती आदमी का खातमा जन्तियों वाले अमल पर किया जाएगा अगरचे वह कोई भी अमल करता हो।" और जहन्नमी आदमी का ख़ातमा जहन्नमियों वाले अमल पर किया जाएगा अगरचे वह कोई भी अमल करता हो।" फिर रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उनको फ़ेंक कर अपने हाथ से इशारा करके फ़रमाया: "तुम्हारे परवरदिगार बन्दों की तक़्दीर से फारिग हो चुका है, एक गिरोह जन्नत में जाएगा और एक भड़कती आग में।

हसन: मुसनद अहमद: 2/ 167.

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं, हमें कुतैबा ने बवास्ता बक्र बिन मुज़र, अबू कबील से ऐसी ही रिवायत की है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस बारे में इब्ने उमर (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है और अबू कबील का नाम हुय बिन हानी है।

2142 - सय्यदना अनस (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "बेशक अल्लाह तआला जब किसी बन्दे से भलाई का इरादा करता है तो उससे काम ले लेता है।" कहा गया, ''ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! उससे कैसे काम लेता है? आप(ﷺ) ने फरमाया, "अल्लाह तआला उसे मौत से पहले नेक अमल की तौफ़ीक़ दे दता है।"

2142 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ حُمَيْدٍ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِعَبْدٍ خَيْرًا اسْتَعْمَلَهُ فَقِيلَ: كَيْفَ يَسْتَعْمِلُهُ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: يُوَفِّقُهُ لِعَمَلٍ صَالِحٍ قَبْلَ الْمَوْتِ.

सहीह: मुसनद अहमद: 3/106. इब्ने हिब्बान: 341.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

9 - अद्वा ,सफ़र और हामा की कोई हक़ीक़त नहीं।

9 بَابُ مَا جَاءَ لاَ عَدْوَى وَلاَ هَامَةَ وَلاَ صَفَرَ

2143 - सय्यदना इब्ने मसऊद (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) हमारे सामने खड़े हुए आप ने फ़रमाया: "कोई चीज़ अपनी बीमारी दूसरे को नहीं लगाती" तो एक आराबी कहने लगा: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! एक ऊँट जिसकी फरज में ख़ारिश होती है हम उसे बाड़े में लेकर जाते हैं तो वह तमाम ऊंटों को ख़ारिशज़दा कर देता है? तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया "पहले को ख़ारिश किस ने लगाई थी? (सुन लो) अद्वा नहीं है और न ही सफ़र[1] है अल्लाह तआला ने हर जान को पैदा किया तो उसकी ज़िंदगी, रिज्क और परेशानियों को लिख दिया है।"

2143 - حَدَّثَنَا بُنْدَارٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ الْقَعْقَاعِ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو زُرْعَةَ بْنُ عَمْرِو بْنِ جَرِيرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا صَاحِبٌ لَنَا، عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَامَ فِينَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: لاَ يُعْدِي شَيْءٌ شَيْئًا، فَقَالَ أَعْرَابِيٌّ: يَا رَسُولَ اللهِ، البَعِيرُ أَجْرَبُ الْحَشَفَةِ نُدْبِنُهُ، فَتَجْرَبُ الْإِبِلُ كُلُّهَا، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: فَمَنْ أَجْرَبَ الأَوَّلَ؟ لاَ عَدْوَى وَلاَ صَفَرَ، خَلَقَ اللَّهُ كُلَّ نَفْسٍ وَكَتَبَ حَيَاتَهَا وَرِزْقَهَا وَمَصَائِبَهَا.

सहीह: मुसनद अहमद: 1/440. अबू याला: 5182.

तौज़ीह: عَدْوَى की वज़ाहत के लिए हदीस नम्बर 1615 और هامه के लिए हदीस नम्बर 2060 के तहत मुलाहजा फ़रमाएं। नीज़ صَفَر एक पेट की बीमारी है जिसके बारे में अरब लोगों का अक़ीदा था कि पेट

में एक कीड़ा होता है जो भूक के वक़्त चीखता है और बसा औकात बन्दे को मार भी देता है लेकिन नबी करीम(ﷺ) ने उसकी नफी फ़रमा दी।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में अबू हुरैरा, इब्ने अब्बास और अनस (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है और मुहम्मद बिन अम्र बिन सफ़वान सक़फ़ी बसरी कहते हैं, मैंने अली बिन मदीनी से सुना वह फ़रमा रहे थे कि अगर मुझ से हजरे अस्वद और मुक़ामे इब्राहीम के दर्मियान क़सम ली जाए तो मैं उठा सकता हूँ कि मैंने अब्दुर्रहमान बिन महदी से बड़ा आलिम नहीं देखा।

10 بَابُ مَا جَاءَ فِي الإِيمَانِ بِالقَدَرِ خَيْرِهِ وَشَرِّهِ

10 - तक़दीर अच्छी हो या बुरी उस पर ईमान लाना ज़रूरी है।

2144 - حَدَّثَنَا أَبُو الخَطَّابِ زِيَادُ بْنُ يَحْيَى البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَيْمُونٍ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ يُؤْمِنُ عَبْدٌ حَتَّى يُؤْمِنَ بِالقَدَرِ خَيْرِهِ وَشَرِّهِ، حَتَّى يَعْلَمَ أَنَّ مَا أَصَابَهُ لَمْ يَكُنْ لِيُخْطِئَهُ، وَأَنَّ مَا أَخْطَأَهُ لَمْ يَكُنْ لِيُصِيبَهُ.

2144 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "बन्दा (उस वक़्त तक) मोमिन नहीं हो सकता यहाँ तक कि तक़दीर के अच्छा और बुरा होने पर ईमान ले आए, यहाँ तक कि वह जान ले कि जो चीज़ उसे पहुंची है वह उससे खता नहीं हो सकती थी और जो चीज़ उस से खता हो गई वह उसे मिल नहीं सकती थी।"

सहीह

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में उबादा, जाबिर और अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है। और जाबिर (رضي الله عنه) से मर्वी यह हदीस ग़रीब है। हम इसे अब्दुल्लाह बिन मैमून के तरीक़ से ही जानते हैं और अब्दुल्लाह बिन मैमून मुन्करूल हदीस है।

2145 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ رِبْعِيِّ بْنِ حِرَاشٍ، عَنْ عَلِيٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ يُؤْمِنُ عَبْدٌ حَتَّى يُؤْمِنَ بِأَرْبَعٍ: يَشْهَدُ أَنْ لاَ

2145 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "बन्दा उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक चार चीज़ों पर ईमान न ले आए। वह गवाही दे कि अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) माबूद नहीं और मैं अल्लाह का रसूल हूँ, मुझे उसने हक़ देकर भेजा, वह मौत पर इमान लाये, मौत के

إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ، وَأَنِّي رَسُولُ اللهِ بَعَثَنِي بِالحَقِّ، وَيُؤْمِنُ بِالمَوْتِ، وَبِالبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ، وَيُؤْمِنُ بِالقَدَرِ.

बाद दोबारा उठने पर ईमान लाये और तक़्दीर पर ईमान लाये।"

सहीह: इब्ने माजह:81. तोहफतुल अशराफ़: 10089

2145.حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا النَّضْرُ بْنُ شُمَيْلٍ، عَنْ شُعْبَةَ، نَحْوَهُ، إِلاَّ أَنَّهُ قَالَ: رِبْعِيٌّ، عَنْ رَجُلٍ، عَنْ عَلِيٍّ.

2145 - अबू ईसा कहते हैं: हमें महमूद बिन गैलान ने वह कहते हैं हमें नज़र बिन शुमैल ने शोबा से ऐसे ही रिवायत की है लेकिन उन्होंने कहा है कि रिबई एक आदमी के वास्ते के साथ अली (رضي الله عنه) से रिवायत करते हैं।

सहीह: तयालिसी: 106. मुसनद अहमद:1/97. इब्ने माजह: 81

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: अबू दाऊद की शोबा से बयान कर्दा हदीस मेरे नज़दीक नज़र की हदीस से ज़्यादा सहीह है और बहुत से लोगों ने मंसूर से बवास्ता रिबई, अली (رضي الله عنه) से इसी तरह रिवायत की है। हमें जारूद ने बताया कि मैं वकीअ से सुना वह कह रहे थे, मुझे यह ख़बर पहुंची है कि रिबई बिन हिराश ने इस्लाम में झूठ नहीं बोला।

11 بَابُ مَا جَاءَ أَنَّ النَّفْسَ تَمُوتُ حَيْثُ مَا كُتِبَ لَهَا

11 - किसी भी जान को मौत वहीं आती है जहां लिखी होती है।

2146 - حَدَّثَنَا بُنْدَارٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُؤَمَّلٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ مَطَرِ بْنِ عُكَامِسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا قَضَى اللَّهُ لِعَبْدٍ أَنْ يَمُوتَ بِأَرْضٍ جَعَلَ لَهُ إِلَيْهَا حَاجَةً.

2146 - सय्यदना उकामिस (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "जब अल्लाह तआला किसी बन्दे की किसी इलाक़े में मौत का फैसला करता है तो उसके लिए उस इलाक़े की तरफ़ कोई ज़रुरत बना देता है।"

सहीह: हाकिम: 1/42

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में अबू अज़्ज़ा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। और यह हदीस हसन ग़रीब है। नीज़ मतर बिन उकामिस (رضي الله عنه) की नबी करीम(ﷺ) से इसके अलावा कोई हदीस हम नहीं जानते।

अबू ईसा कहते हैं: हमें महमूद बिन गैलान ने वह कहते हैं: हमें मुअम्मल और अबू दाऊद हफरी ने सुफ़ियान से ऐसे ही रिवायत की है।

2147 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، وَعَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، الْمَعْنَى وَاحِدٌ، قَالاَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي الْمَلِيحِ بْنِ أُسَامَةَ، عَنْ أَبِي عَزَّةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا قَضَى اللَّهُ لِعَبْدٍ أَنْ يَمُوتَ بِأَرْضٍ جَعَلَ لَهُ إِلَيْهَا حَاجَةً، أَوْ قَالَ: بِهَا حَاجَةً.

2147 - सय्यदना अज़्ज़ा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "जब अल्लाह तआला किसी बन्दे की किसी इलाक़े में मौत का फ़ैसला करते हैं तो उसके लिए उस इलाक़े की तरफ़ कोई ज़रूरत बना देते हैं" या यह फ़रमाया: "कि उस जगह कोई ज़रूरत बना देते हैं।"

सहीह: अदबुल मुफ़रद: 780. मुसनद अहमद: 4/429

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और अबू अज़्ज़ा (ﷺ) सहाबी थे उनका नाम यसार बिन अब्द (ﷺ) था जबकि अबू मलीह बिन उसामा, आमिर बिन उसामा बिन उमय्या हुज़ली हैं, उन्हें ज़ैद बिन उसामा भी कहा जाता है।

12 بَابُ مَا جَاءَ لاَ تَرُدُّ الرُّقَى وَلاَ الدَّوَاءُ مِنْ قَدَرِ اللهِ شَيْئًا

12 - दम और दवा अल्लाह की तक़्दीर को नहीं बदलते।

2148 - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْمَخْزُومِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ ابْنِ أَبِي خُزَامَةَ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَجُلاً أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَرَأَيْتَ رُقًى نَسْتَرْقِيهَا وَدَوَاءً نَتَدَاوَى بِهِ وَتُقَاةً نَتَّقِيهَا هَلْ تَرُدُّ مِنْ قَدَرِ اللهِ شَيْئًا؟ فَقَالَ: هِيَ مِنْ قَدَرِ اللَّهِ.

2148 - इब्ने अबी खुज़ामा अपने बाप से रिवायत करते हैं कि एक आदमी नबी करीम(ﷺ) के पास आकर अर्ज़ करने लगा: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! यह बताइए कि हम जो दम करवाते हैं या दवा से इलाज कराते हैं और बचाव की चीज़ जिससे हम बचाव करते हैं क्या यह चीजें अल्लाह की तक़्दीर को रद्द कर सकती हैं? आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "यह भी अल्लाह की तक़्दीर ही से हैं।"

ज़ईफ़: इब्ने माजह:3437. 2065. पर मज़ीद तख़रीज देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस हदीस को हम ज़ोहरी के तरीक़ से ही जानते हैं और कई

रावियों ने इस हदीस को सुफ़ियान से बवास्ता ज़ोहरी, अबू ख़ुज़ामा के ज़रिए उनके बाप से रिवायत किया है और यही सहीह है और इसी तरह कई लोगों ने ज़ोहरी से बवास्ता अबी ख़ुज़ामा उनके बाप से रिवायत किया है।

13 بَابُ مَا جَاءَ فِي الْقَدَرِيَّةِ

13 - क़द्रिय्या (फ़िर्के) का बयान।

2149 - حَدَّثَنَا وَاصِلُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، عَنِ القَاسِمِ بْنِ حَبِيبٍ، وَعَلِيُّ بْنُ نِزَارٍ، عَنْ نِزَارٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: صِنْفَانِ مِنْ أُمَّتِي لَيْسَ لَهُمَا فِي الإِسْلاَمِ نَصِيبٌ: الْمُرْجِئَةُ وَالقَدَرِيَّةُ.

2149 - सय्यदना इब्ने अब्बास (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "मेरी उम्मत के दो गिरोह ऐसे हैं जिनका इस्लाम में कोई हिस्सा नहीं: (एक) मुर्जिआ[1] और (दूसरा) क़द्रिय्या[1]"

ज़ईफ़: इब्ने माजह:62, अस्सुन्ना लि इब्ने अबी आसिम: 951.

तौज़ीह: 1) :الْمُرْجِئَةُ (एक गुमराह फिर्का है, इस गिरोह के लोगों का अक़ीदा है कि अगर कोई आदमी एक दफ़ा क़लिमा पढ़ ले और उसके बाद सारी उम्र गुनाह करे तो फिर भी वह दोज़ख में नहीं जाएगा, उनका कहना है कि ईमान में आमाल और अहकामे शरीयत दाख़िल नहीं हैं इसी तरह ईमान में कमी और ज़्यादती नहीं होती, लोगों और फरिश्तों का ईमान एक जैसा ही है, अगर कोई आदमी ज़बान से इक़रार करे और अमल न करे तो वह मोमिन ही होता है, मुर्जिआ इनके 12 फ़िर्के हैं: (1) जहमिया, (2) सालिहिया, (3) शमारिया, (4),यूनिसिया (5) यूनानिया, (6) नजारिया, (7) गीलानिया , (8) शबीहा, (9) हनफिया, (10) मुआज़िया, (11) मरीसिया, (12) कर्रामिया। इन सब की तफ्सील के लिए देखेये: गुनियतुत्तालिबीन-

(2) الْقَدَرِيَّةُ: यह तक़्दीर के मुंकिर हैं। यह कहते हैं: बन्दों के अफ़आल मख़्लूक़ नहीं हैं उन्हें क़द्रिय्या इसलिए कहा जाता है कि उन्होंने तक़्दीर के बारे में इफ़्रात व तफ़्रीत से काम लिया।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में उमर, इब्ने अम्र और राफ़े बिन ख़दीज (ﷺ) से भी मर्वी है। नीज़ यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है। (अबू ईसा कहते हैं:) हमें मुहम्मद बिन राफ़े ने वह कहते हैं, हमें मुहम्मद बिन बिश्र ने, उन्हें सलाम बिन अबी उम्रा ने इक्रिमा से बवास्ता इब्ने अब्बास (ﷺ) नबी करीम(ﷺ) से हदीस बयान की है। मुहम्मद बिन राफ़े कहते हैं: हमें मुहम्मद बिन नज्जार ने भी नज्जार से, उन्होंने इक्रिमा से बवास्ता इब्ने अब्बास (ﷺ) से रिवायत की है।

मुहम्मद बिन राफे कहते हैं: हमें मुहम्मद बिन बिश्र ने अली बिन नज्जार से बवास्ता इक्रिमा, इब्ने अब्बास (ﷺ) से नबी करीम(ﷺ) की ऐसी ही हदीस बयान की है।

14 - इब्ने आदम अगर तक्लीफ़ों व मुसीबतों से बच भी जाए तो बुढ़ापे में चला जाता है।

14 بَابٌ المنايا إن أخطات ابن آدم وقع في الهرم

2150 - . सय्यदना अब्दुल्लाह बिन शिख्खीर (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी करीम(ﷺ) ने फ़रमाया: "इब्ने आदम को इस तरह बनाया गया है कि उस के पहलू में (99) मसाइब व आलाम[1] (परेशानिया) हैं। अगर उससे यह तक्लीफ़ खता भी हो जाएँ तो यह बुढ़ापे में चला जाता है यहाँ तक कि मर जाता है।"

हसन: अल-कामिल: 5/ 1743. हिल्या:2/ 211.

2150 - حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ مُحَمَّدُ بْنُ فِرَاسٍ الْبَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو قُتَيْبَةَ سَلْمُ بْنُ قُتَيْبَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الْعَوَّامِ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ مُطَرِّفِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الشِّخِّيرِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مُثِّلَ ابْنُ آدَمَ وَإِلَى جَنْبِهِ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ مَنِيَّةً إِنْ أَخْطَأَتْهُ الْمَنَايَا وَقَعَ فِي الْهَرَمِ حَتَّى يَمُوتَ.

तौज़ीह: مَنِيَّةً : मौत, इस से मुराद आफ़ात व मसाइब और परेशानियां हैं कि अगर उनसे बच भी जाए तो एक ऐसी बीमारी लाहिक़ हो जाती है जिसका कोई इलाज नहीं और वह बुढ़ापा है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे इसी सनद से ही जानते हैं। और अबू अव्वाम यह इमरान बिन दाऊद क़त्तान ही हैं।

15 - तक़्दीर पर राजी रहना।

15 بَابُ مَا جَاءَ فِي الرِّضَا بِالْقَضَاءِ

2151 - सय्यदना साद बिन अबी वक्क़ास (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "इब्ने आदम की खुशबख्ती यह है कि वह अल्लाह के फ़ैसले पर राजी रहे, इब्ने आदम की बदबख्ती यह है कि वह अल्लाह से इस्तिखारा करना छोड़ दे और इब्ने आदम की

2151 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي حُمَيْدٍ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ سَعْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مِنْ سَعَادَةِ ابْنِ آدَمَ رِضَاهُ بِمَا قَضَى اللَّهُ لَهُ، وَمِنْ شَقَاوَةِ ابْنِ آدَمَ تَرْكُهُ اسْتِخَارَةَ اللهِ، وَمِنْ شَقَاوَةِ ابْنِ آدَمَ سَخَطُهُ بِمَا قَضَى اللَّهُ لَهُ.

बदबख़्ती यह है कि वह अल्लाह की क़ज़ा पर नाराज़ हो।"

ज़ईफ़: मुसनद अहमद: 168. अबू याला:701.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे मुहम्मद बिन अबी हुमैद के तरीक़ से ही जानते हैं। इसे हम्माद बिन अबी हुमैद भी कहा जता है। यह इब्राहीम मदनी ही है और यह मुहद्दिसीन के नज़दीक क़वी नहीं है।

16 بَابُ مَا جَاءَ فِي الْمُكَذِّبِينَ بِالْقَدَرِ مِنَ الْوَعِيدِ

16 - तक़दीर को झुठलाने वालों के लिए वईद।

2152 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَيْوَةُ بْنُ شُرَيْحٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو صَخْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي نَافِعٌ، أَنَّ ابْنَ عُمَرَ جَاءَهُ رَجُلٌ فَقَالَ: إِنَّ فُلاَنًا يَقْرَأُ عَلَيْكَ السَّلاَمَ، فَقَالَ لَهُ: إِنَّهُ بَلَغَنِي أَنَّهُ قَدْ أَحْدَثَ، فَإِنْ كَانَ قَدْ أَحْدَثَ فَلاَ تُقْرِئْهُ مِنِّي السَّلاَمَ، فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: يَكُونُ فِي هَذِهِ الأُمَّةِ أَوْ فِي أُمَّتِي، الشَّكُّ مِنْهُ، خَسْفٌ أَوْ مَسْخٌ أَوْ قَذْفٌ فِي أَهْلِ الْقَدَرِ.

2152 - नाफ़े (رحمه الله) बयान करते हैं कि इब्ने उमर के पास एक आदमी आकर कहने लगा: फ़ुलां शख़्स आपको सलाम कहता था तो उन्होंने फ़रमाया: मुझे यह ख़बर पहुंची है कि उस ने (दीन में) नया अक़ीदा निकाल लिया है, अगर उसने नया अक़ीदा निकाला है तो तुम मेरा सलाम न कहना, क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुना आप फ़रमा रहे थे: "इस उम्मत को (या कहा कि) मेरी उम्मत में (शक का जुम्ला है) धंसाया जाएगा या चेहरों को तब्दील किया जाएगा या पत्थर पड़ेंगे, उन लोगों में जो तक़्दीर का इन्कार करेंगे।"

हसन: इब्ने माजह: 4061. मुसनद अहमद: 2/90. इब्ने माजह: 4061

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है और अबू सखर का नाम हुमैद बिन जियाद है।

2153 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا رِشْدِينُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ أَبِي صَخْرٍ حُمَيْدِ بْنِ زِيَادٍ، عَنْ

2153 - सय्यदना इब्ने उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी करीम(ﷺ) ने फ़रमाया: "मेरी उम्मत में ख़स्फ़ और मस्ख़[1] होगा और यह

نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَكُونُ فِي أُمَّتِي خَسْفٌ وَمَسْخٌ وَذَلِكَ فِي الْمُكَذِّبِينَ بِالْقَدَرِ

काम तक्दीर को झुठलाने वालों का होगा।"

हसन: तोहफतुल अशराफ़: 7651.

तौज़ीह: خَسْفٌ : का मतलब है ज़मीन में धंसा दिया जाना और مَسْخٌ से मुराद चेहरों का बदल दिया जाना, शक्लें तब्दील हो जाना।

17 - तक़्दीर पर ईमान लाना बहुत बड़ी बात है

2154 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ زَيْدِ بْنِ أَبِي الْمَوَالِي الْمُزَنِيُّ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ مَوْهَبٍ، عَنْ عَمْرَةَ، عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: سِتَّةٌ لَعَنْتُهُمْ وَلَعَنَهُمُ اللَّهُ وَكُلُّ نَبِيٍّ كَانَ: الزَّائِدُ فِي كِتَابِ اللهِ، وَالْمُكَذِّبُ بِقَدَرِ اللهِ، وَالْمُتَسَلِّطُ بِالْجَبَرُوتِ لِيُعِزَّ بِذَلِكَ مَنْ أَذَلَّ اللَّهُ، وَيُذِلَّ مَنْ أَعَزَّ اللَّهُ، وَالْمُسْتَحِلُّ لِحُرَمِ اللهِ، وَالْمُسْتَحِلُّ مِنْ عِتْرَتِي مَا حَرَّمَ اللَّهُ، وَالتَّارِكُ لِسُنَّتِي.

2154 - सय्यदा आयशा (ﷵ) रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: **"छ: आदमी ऐसे हैं जिन पर मैंने लानत की, उन पर अल्लाह ने भी लानत की और नबियों ने भी। अल्लाह की किताब में इजाफ़ा करने वाला, अल्लाह की तक़्दीर को झुठलाने वाला, और ज़बरदस्ती हुकूमत करने वाला ताकि उस शख़्स को इज्ज़त दे जिसे अल्लाह ने ज़लील किया है और जिसे अल्लाह ने इज्ज़त दी है उसे ज़लील करे, अल्लाह की हरामकर्दा चीजों को हलाल समझने वाला, मेरी आल की अल्लाह ने जो हुर्मत बनाई है उसे हलाल समझने वाला और मेरी सुन्नत को छोड़ने वाला।"**

ज़ईफ़

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: अब्दुर्रहमान बिन अबू मवाली ने भी इस हदीस को उबैदुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान बिन मोहब से बवास्ता उम्रा, सय्यदा आयशा (ﷵ) के ज़रिए नबी(ﷺ) से इसी तरह रिवायत किया है। जबकि सुफ़ियान सौरी, हफ्स बिन गियास और दीगर रावियों ने इसे उबैदुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान बिन मोहब से बवास्ता अली बिन हुसैन, नबी करीम(ﷺ) से मुर्सल रिवायत किया है और यह ज़्यादा सहीह है।

2155 - अब्दुल वाहिद बिन सुलैम (رحمه الله) कहते हैं: मैं मक्का में आया तो मेरी मुलाक़ात अता बिन अबी रबाह से हुई, मैंने उन से कहा, ''ऐ अबू मुहम्मद! बसरा वाले तक़्दीर के बारे में कुछ कहते हैं।'' उन्होंने कहा: ऐ मेरे बेटे! क्या तुम कुरआन पढ़ लेते हो? मैंने कहा: ''जी हाँ'' तो फिर सूरह '' ज़ुख्रुफ़'' पढ़ो। मैंने पढ़ी: "حم" क़सम है इस वाज़ेह किताब की। हमने इससे अरबी ज़बान का कुरआन बनाया है ताकि तुम समझ लो। यक़ीनन यह लौहे महफ़ूज़ में है और हमारे नज़दीक बलंद मर्तबा हिकमत वाली है।'' (ज़ुख्रुफ़: 1- 4) तो उन्होंने फ़रमाया: क्या तुम जानते हो कि लौहे महफ़ूज़ क्या है? मैंने कहा: अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा जानते हैं, उन्होंने कहा: यह एक किताब है जिसे अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को बनाने से पहले लिखा था इसमें ये भी था कि फिरऔन जहन्नम वालों में से है और अबू लहब के हाथ टूट गए और वह हलाक हो गया।'' (अल लहब: 1) अता कहते हैं कि मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) के सहाबी उबादा बिन सामित (رضي الله عنه) के बेटे वलीद से मिला तो उनसे पुछा कि आप के बाप ने मौत के वक़्त क्या वसीयत की थी? कहने लगे, उन्होंने मुझे बुलाया, फिर फ़रमाने लगे: ''ऐ बेटे! अल्लाह से डर और जान ले कि तु उस वक़्त तक अल्लाह से नहीं डर सकता जब तक तु अल्लाह और तक़्दीर के अच्छी और बुरी होने पर ईमान न ले

- 2155حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ الطَّيَالِسِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الوَاحِدِ بْنُ سُلَيْمٍ، قَالَ: قَدِمْتُ مَكَّةَ فَلَقِيتُ عَطَاءَ بْنَ أَبِي رَبَاحٍ فَقُلْتُ لَهُ: يَا أَبَا مُحَمَّدٍ، إِنَّ أَهْلَ البَصْرَةِ يَقُولُونَ فِي القَدَرِ، قَالَ: يَا بُنَيَّ، أَتَقْرَأُ القُرْآنَ؟ قُلْتُ :نَعَمْ، قَالَ: فَاقْرَأْ الزُّخْرُفَ، قَالَ: فَقَرَأْتُ:{حم وَالكِتَابِ الْمُبِينِ إِنَّا جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ وَإِنَّهُ فِي أُمِّ الكِتَابِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيمٌ} فَقَالَ: أَتَدْرِي مَا أُمُّ الكِتَابِ؟ قُلْتُ: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، قَالَ: فَإِنَّهُ كِتَابٌ كَتَبَهُ اللَّهُ قَبْلَ أَنْ يَخْلُقَ السَّمَوَاتِ وَقَبْلَ أَنْ يَخْلُقَ الأَرْضَ، فِيهِ إِنَّ فِرْعَوْنَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ، وَفِيهِ}:تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ { قَالَ عَطَاءٌ: فَلَقِيتُ الوَلِيدَ بْنَ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ، صَاحِبَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَأَلْتُهُ: مَا كَانَتْ وَصِيَّةُ أَبِيكَ عِنْدَ الْمَوْتِ؟ قَالَ: دَعَانِي أَبِي فَقَالَ لِي: يَا بُنَيَّ، اتَّقِ اللَّهَ، وَاعْلَمْ أَنَّكَ لَنْ تَتَّقِيَ اللَّهَ حَتَّى تُؤْمِنَ بِاللَّهِ وَتُؤْمِنَ بِالقَدَرِ كُلِّهِ خَيْرِهِ وَشَرِّهِ، فَإِنْ مُتَّ عَلَى غَيْرِ هَذَا دَخَلْتَ النَّارَ، إِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

يَقُولُ: إِنَّ أَوَّلَ مَا خَلَقَ اللَّهُ القَلَمَ، فَقَالَ: اكْتُبْ، فَقَالَ: مَا أَكْتُبُ؟ قَالَ: اكْتُبِ القَدَرَ مَا كَانَ وَمَا هُوَ كَائِنٌ إِلَى الأَبَدِ.

आए, अगर तू इसके अलावा किसी और अक़ीदा पर मर गया तो जहन्नम में जाएगा।'' मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुना आप फ़रमा रहे थे: "बेशक अल्लाह ने सब से पहले क़लम को पैदा किया फिर उससे कहा: लिख। उस ने कहा: ''मैं क्या लिखूं? अल्लाह ने फ़रमाया: जो कुछ हमेशा तक होने वाला है उसकी तक़्दीर लिख दे।''

(मर्फ़ू अल्फ़ाज़ सहीह हैं) मुसनद अहमद: 5/317

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस ग़रीब है।

2156 - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ الْمُنْذِرِ البَاهِلِيُّ الصَّنْعَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ الْمُقْرِئُ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَيْوَةُ بْنُ شُرَيْحٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو هَانِئٍ الخَوْلاَنِيُّ، أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ الحُبُلِيَّ يَقُولُ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَمْرٍو يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: قَدَّرَ اللَّهُ الْمَقَادِيرَ قَبْلَ أَنْ يَخْلُقَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضَ بِخَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ.

2156 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुना आप फ़रमा रहे थे: "अल्लाह तआला ने आसमानों और ज़मीन को पैदा करने से पच्चास हज़ार साल पहले मख़्लूकात की तक़्दीर लिखी थी।"

मुस्लिम: 2653. मुसनद अहमद:2/169. इब्ने हिब्बान: 6138.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

2157 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ مُحَمَّدُ بْنُ العَلاَءِ، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالاَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ سُفْيَانَ الثَّوْرِيِّ، عَنْ زِيَادِ بْنِ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ

2157 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि कुरैश के मुश्रिकीन रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास आकर तक़्दीर के बारे में झगड़ने लगे तो यह आयत नाजिल हुई: "जिस दिन वह अपने मुंह के बल आग में घसीटे

مُحَمَّدِ بْنِ عَبَّادِ بْنِ جَعْفَرٍ الْمَخْزُومِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: جَاءَ مُشْرِكُو قُرَيْشٍ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُخَاصِمُونَ فِي الْقَدَرِ فَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ:{يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي النَّارِ عَلَى وُجُوهِهِمْ ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ} .

जायेंगे। (और उनसे कहा जाएगा) दोज़ख की आग लगने के मज़े चखो। बेशक हम ने हर चीज़ को एक मुक़र्रर अंदाज़ से पैदा किया है।" (अल- क़मर: 48- 49)

सहीह: मुस्लिम: 2656

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

ख़ुलासा

- तक़्दीर में बहस व तकरार करना मना है। लिहाज़ा इसमें गौरो- खोज़ न किया जाए।
- इंसान की अच्छी या बुरी तक़्दीर लिखी जा चुकी है।
- हर बच्चा फ़ितरते इस्लाम पर पैदा होता है फिर उस पर वालिदैन का रंग चढ़ जाता है।
- इंसानों के दिल अल्लाह के हाथ में हैं, वह जैसे चाहे उनको फेरता है।
- कोई बीमारी मुतअद्दी नहीं और न ही हामा और सफ़र की कोई हक़ीक़त है।
- तक़्दीर जैसी भी हो उस पर ईमान लाना ज़रूरी है। इसके बग़ैर ईमान मुकम्मल नहीं होता।
- क़द्रिय्या और मुर्जिया जैसे फ़िर्के गुमराह हैं।
- तक़्दीर का इन्कार करने वाला मुसलमान नहीं रहता।

मज़मून नम्बर 31

أَبْوَابُ الْفِتَنِ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

रसूलुल्लाह(ﷺ) से मर्वी फ़ित्नों के अहवाल।

तआरुफ़

79 अबवाब और 112 अहादीस पर मुश्तमिल इस उन्वान में आप पढ़ेंगे:

- फ़ित्ने कब और कैसे शुरू होंगे?
- क़यामत कब आयेगी, उसकी अलामात क्या हैं?
- क़यामत से पहले कौन- कौन से अहम वाक़ियात रूनुमा होंगे?
- फ़ित्नों के दौर में मुसलमान अपना ईमान कैसे बचा सकता है?

1 بَابُ مَا جَاءَ لاَ يَحِلُّ دَمُ امْرِئٍ مُسْلِمٍ إِلاَّ بِإِحْدَى ثَلاَثٍ

- 2158حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدَةَ الضَّبِّيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي أُمَامَةَ بْنِ سَهْلِ بْنِ حُنَيْفٍ، أَنَّ عُثْمَانَ بْنَ عَفَّانَ أَشْرَفَ يَوْمَ الدَّارِ، فَقَالَ: أَنْشُدُكُمُ اللَّهَ، أَتَعْلَمُونَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ :لاَ يَحِلُّ دَمُ امْرِئٍ مُسْلِمٍ إِلاَّ بِإِحْدَى ثَلاَثٍ: زِنًا بَعْدَ إِحْصَانٍ، أَوْ ارْتِدَادٍ بَعْدَ إِسْلاَمٍ، أَوْ قَتْلِ نَفْسٍ بِغَيْرِ حَقٍّ فَقُتِلَ بِهِ، فَوَاللَّهِ مَا زَنَيْتُ فِي جَاهِلِيَّةٍ وَلاَ فِي إِسْلاَمٍ،

1 - तीन जराइम(जुर्मों) के अलावा मुसलमान का ख़ून (बहाना) हलाल नहीं है

2158 - अबू उमामा बिन सहल बिन हुनैफ़ बयान करते हैं कि उस्मान बिन अफ़्फ़ान (رضي الله عنه) ने अपने मुहासरे[1] के दिन (बाला खाने से बाहर) झाँक कर फ़रमाया: "मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देता हूँ क्या तुम जानते हो कि अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने फ़रमाया: "तीन में से किसी एक जुर्म के अलावा मुसलमान का ख़ून बहाना हलाल नहीं है: शादी करने के बाद ज़िना, इस्लाम क़ुबूल करके फिर जाना या नाहक़ किसी को क़त्ल करना कि उसकी वजह से उसे क़त्ल किया जाए।" पस अल्लाह की क़सम! मैंने न जहिलिय्यत में ज़िना किया और

وَلاَ ارْتَدَدْتُ مُنْذُ بَايَعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَلاَ قَتَلْتُ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ فَبِمَ تَقْتُلُونَنِي.

न इस्लाम में, जब से मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से बैअत की (इस्लाम से) मुर्तद नहीं हुआ और न ही मैंने किसी ऐसी जान को क़त्ल किया है जिसे अल्लाह ने हराम किया है। फिर तुम मुझे क्यों क़त्ल करना चाहते हो?"

सहीह: अबू दाऊद: 4502. इब्ने माजह: 2533. निसाई: 4019.

तौज़ीह: يوم الدار : घर वाला दिन यानी जिस दिन जनाब उस्मान (رضي الله عنه) को घर में महसूर (क़ैद) कर दिया गया था और मदीना में बलवाइयों और बाग़ियों का राज था।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में इब्ने मसऊद, आयशा और इब्ने अब्बास (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है और यह हदीस हसन सहीह है।

नीज़ हम्माद बिन सलमा ने भी इसे यह्या बिन सईद से मर्फ़ू रिवायत किया है जबकि यह्या बिन सईद अल-क़त्तान वग़ैरह ने इस हदीस को यह्या बिन सईद से मौक़ूफ़ रिवायत किया है मर्फ़ू नहीं और यह हदीस कई इस्नाद से बवास्ता उस्मान (رضي الله عنه) नबी करीम(ﷺ) से मर्फ़ू मर्वी है।

2بَابُ مَا جَاءَ دِمَاؤُكُمْ وَأَمْوَالُكُمْ عَلَيْكُمْ حَرَامٌ

2 - ख़ून और अमवाल हराम हैं।

2159 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ شَبِيبِ بْنِ غَرْقَدَةَ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ عَمْرِو بْنِ الأَحْوَصِ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ فِي حَجَّةِ الوَدَاعِ لِلنَّاسِ: أَيُّ يَوْمٍ هَذَا؟ قَالُوا: يَوْمُ الحَجِّ الأَكْبَرِ، قَالَ: فَإِنَّ دِمَاءَكُمْ وَأَمْوَالَكُمْ وَأَعْرَاضَكُمْ بَيْنَكُمْ حَرَامٌ كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هَذَا فِي بَلَدِكُمْ هَذَا، أَلاَ لاَ يَجْنِي جَانٍ إِلاَّ عَلَى نَفْسِهِ، أَلاَ لاَ يَجْنِي جَانٍ

2159 - सय्यदना अम्र बिन अहवस (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को हज्जतुल विदा में लोगों से फ़रमाते हुए सुना : "यह कौन सा दिन है?" उन्होंने अर्ज़ की: हज्जे अकबर का दिन। आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "बेशक तुम्हारे खून, माल और तुम्हारी इज्ज़तें तुम्हारे आपस में ऐसे ही हराम हैं जैसे इस दिन की इस शहर में हुर्मत है। याद रखो! कोई ज़्यादती करने वाला अपनी औलाद पर ज़्यादती न करे और न ही औलाद अपने वालिद पर, आगाह हो जाओ कि शैतान इस बात से ना

عَلَى وَلَدِهِ وَلاَ مَوْلُودٌ عَلَى وَالِدِهِ، أَلاَ وَإِنَّ الشَّيْطَانَ قَدْ أَيِسَ مِنْ أَنْ يُعْبَدَ فِي بِلاَدِكُمْ هَذِهِ أَبَدًا وَلَكِنْ سَتَكُونُ لَهُ طَاعَةٌ فِيمَا تَحْتَقِرُونَ مِنْ أَعْمَالِكُمْ فَسَيَرْضَى بِهِ.

उम्मीद हो चुका है कि तुम्हारे इस शहर में उसकी इबादत की जाएगी, लेकिन अन्क़रीब तुम्हारे इन अमवाल में उसकी इताअत होगी जिन्हें तुम हकीर समझते हो वह उन पर राजी होगा।

सहीह: इब्ने माजह: 3055. 1161. पर मजीद देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस बारे में अबू बक्रा, इब्ने अब्बास, जाबिर और हज़ीम बिन अम्र सादी (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

नीज़ यह हदीस हसन सहीह है और ज़ायदा ने भी इसे शबीब बिन गर्क़द से ऐसे ही रिवायत किया है और हम भी इसे शबीब बिन गर्क़द के तरीक़ से ही जानते हैं।

3 بَابُ مَا جَاءَ لاَ يَحِلُّ لِمُسْلِمٍ أَنْ يُرَوِّعَ مُسْلِمًا

3 - मुसलमान के लिए मुसलमान को ग़मगीन करना जायज़ नहीं है।

2160 - حَدَّثَنَا بُنْدَارٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ قَالَ :قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ يَأْخُذْ أَحَدُكُمْ عَصَا أَخِيهِ لاَعِبًا أَوْ جَادًّا، فَمَنْ أَخَذَ عَصَا أَخِيهِ فَلْيَرُدَّهَا إِلَيْهِ.

2160 - अब्दुल्लाह बिन साइब बिन यज़ीद अपने बाप के ज़रिए अपने दादा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "तुम में से कोई शख़्स भी अपने भाई की लाठी मज़ाक़ से या संजीदगी से न ले, जिस शख़्स ने अपने भाई की लाठी ली है तो वह उसे वापस कर दे।"

सहीह: लिग़ैरिही: अबू दाऊद: 5003. अदबुल मुफ़रद: 241. हाकिम: 3/637.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस बारे में इब्ने उमर, सलमान बिन सुर्द, जादा और अबू हुरैरा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

नीज़ यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे इब्ने अबी ज़ुऐब की सनद से ही जानते हैं और साइब बिन यज़ीद (ﷺ) सहाबी हैं। उन्होंने लड़कपन में नबी करीम(ﷺ) से अहादीस सुनी थीं। जब नबी करीम(ﷺ) की वफात हुई तो यह सात साल के थे और उनके बाप यज़ीद बिन साइब भी नबी करीम(ﷺ) के सहाबी हैं। उन्होंने नबी करीम ? (ﷺ) से रिवायत की है और साइब बिन यज़ीद, इब्ने उख़्त नमर ही हैं।

2161 - सय्यदना साइब बिन यज़ीद (ﷺ) बयान करते हैं कि (मेरे वालिद) यज़ीद (ﷺ) ने नबी करीम(ﷺ) के साथ हज्जतुल विदा किया था और मैं उस वक़्त सात साल का था।

हसन: मौक़ूफ़: तख़रीज के लिए हदीस नम्बर 926 मुलाहजा फ़रमाएं।

2161 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يُوسُفَ، عَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ، قَالَ: حَجَّ يَزِيدُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَجَّةَ الوَدَاعِ وَأَنَا ابْنُ سَبْعِ سِنِينَ،

वज़ाहत: अली बिन मदीनी, यह्या बिन सईद अल-क़त्तान का कौल बयान करते हैं कि मुहम्मद बिन यूसुफ़ बेहतरीन राविए हदीस थे और साइब बिन यज़ीद उनके नाना थे। मुहम्मद बिन यूसुफ़ भी कहा करते थे मुझे साइब बिन यज़ीद ने हदीस बयान की वह मेरे नाना थे।

4 - मुसलमान का अपने भाई की तरफ़ हथियार के साथ इशारा करना।

4 بَابُ مَا جَاءَ فِي إِشَارَةِ الْمُسْلِمِ إِلَى أَخِيهِ بِالسِّلَاحِ

2162 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) से रिवायत है कि नबी करीम(ﷺ) ने फ़रमाया: "जिस शख़्स ने अपने भाई पर लोहे के साथ इशारा किया फ़रिश्तों ने उस पर लानत की।"

मुस्लिम: 2616. मुसनद अहमद: 2/256. इब्ने हिब्बान: 5944.

2162 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الصَّبَّاحِ العَطَّارُ الهَاشِمِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَحْبُوبُ بْنُ الحَسَنِ، قَالَ :حَدَّثَنَا خَالِدُ الحَذَّاءُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ أَشَارَ عَلَى أَخِيهِ بِحَدِيدَةٍ لَعَنَتْهُ الْمَلَائِكَةُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस बारे में अबू बक्र, आयशा और जाबिर (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

नीज़ इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। इसकी गराबत ख़ालिद हज़्ज़ा के तरीक़ से होती है और अय्यूब ने मुहम्मद बिन सीरीन के ज़रिए अबू हुरैरा (ﷺ) से ऐसी ही रिवायत की है लेकिन वह ,मर्फ़ू नहीं है। इसमें यह अल्फ़ाज़ भी हैं: " ख़्वाह अपने मां और बाप की तरफ़ से भाई की तरफ़ ही इशारा किया। "

अबू ईसा कहते हैं: हमें यह हदीस कुतैबा ने बवासता हम्माद बिन ज़ैद, अय्यूब से बयान की है।

5 - एक दूसरे के हाथ में नंगी तलवार थमाना।

5بَابُ مَا جَاءَ فِي النَّهْيِ عَنْ تَعَاطِي السَّيْفِ مَسْلُولاً

2163 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُعَاوِيَةَ الْجُمَحِيُّ الْبَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يُتَعَاطَى السَّيْفُ مَسْلُولاً.

2163 - सय्यदना जाबिर (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने एक दूसरे को नंगी तलवार पकड़ाने से मना किया है।

सहीह: अबू दाऊद:2588. इब्ने हिब्बान: 5946. हाकिम: 4/290.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस बारे में अबू बक्रा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है और हम्माद बिन सलमा के तरीक़ से यह हदीस हसन ग़रीब है।

नीज़ इब्ने लहीया ने इस हदीस को अबू ज़ुबैर से बवास्ता जाबिर, बन्ना जुहनी के ज़रिए नबी करीम(ﷺ) से रिवायत किया है मेरे नज़दीक हम्माद बिन सलमा की हदीस ज़्यादा सहीह है।

6 - जिस ने सुबह की नमाज़ पढ़ ली वह अल्लाह की निगरानी (पनाह) में है।

6بَابُ مَا جَاءَ مَنْ صَلَّى الصُّبْحَ فَهُوَ فِي ذِمَّةِ اللَّهِ

2164 - حَدَّثَنَا بُنْدَارٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْدِيُّ بْنُ سُلَيْمَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ عَجْلاَنَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ صَلَّى الصُّبْحَ فَهُوَ فِي ذِمَّةِ اللَّهِ فَلاَ يُتْبِعَنَّكُمُ اللَّهُ بِشَيْءٍ مِنْ ذِمَّتِهِ.

2164 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) से रिवायत है कि नबी करीम(ﷺ) ने फ़रमाया: "जिस ने सुबह की नमाज़ पढ़ी तो वह अल्लाह के ज़िम्मे में है पस अल्लाह तआला ज़िम्मा तोड़ने की वजह से तुम में से किसी का पीछा न करे।"

सहीह: अबू याला: 6452.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस बारे में जुन्दुब और इब्ने उमर (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।

7 - जमाअत के साथ रहना।

7بَابُ مَا جَاءَ فِي لُزُومِ الجَمَاعَةِ

- 2165حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ :حَدَّثَنَا النَّضْرُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ أَبُو الْمُغِيرَةِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سُوقَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ :خَطَبَنَا عُمَرُ بِالجَابِيَةِ فَقَالَ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ، إِنِّي قُمْتُ فِيكُمْ كَمَقَامِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِينَا فَقَالَ: أُوصِيكُمْ بِأَصْحَابِي، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ يَفْشُو الكَذِبُ حَتَّى يَحْلِفَ الرَّجُلُ وَلاَ يُسْتَحْلَفُ، وَيَشْهَدَ الشَّاهِدُ وَلاَ يُسْتَشْهَدُ، أَلاَ لاَ يَخْلُوَنَّ رَجُلٌ بِامْرَأَةٍ إِلاَّ كَانَ ثَالِثَهُمَا الشَّيْطَانُ، عَلَيْكُمْ بِالجَمَاعَةِ وَإِيَّاكُمْ وَالفُرْقَةَ فَإِنَّ الشَّيْطَانَ مَعَ الوَاحِدِ وَهُوَ مِنَ الاِثْنَيْنِ أَبْعَدُ، مَنْ أَرَادَ بُحْبُوحَةَ الجَنَّةِ فَلْيَلْزَمُ الجَمَاعَةَ، مَنْ سَرَّتْهُ حَسَنَتُهُ وَسَاءَتْهُ سَيِّئَتُهُ فَذَلِكَ الْمُؤْمِنُ.

2165 - सय्यदना इब्ने उमर (ﷺ) बयान करते हैं कि उमर (ﷺ) ने जाबिया[1] के मक़ाम पर हमें ख़ुत्बा देते हुए फ़रमाया ''ऐ लोगो! मैं तुम्हारे सामने उसी तरह खड़ा हूँ जैसे हम में रसूलुल्लाह(ﷺ) खड़े हुए तो फ़रमाया: "मैं तुम्हें अपने सहाबा के बारे में (नेक जज़्बात रखने की) वसीयत करता हूँ, फिर वह लोग जो उनसे मिलें, फिर झुठ फैल जाएगा यहाँ तक कि आदमी क़सम उठाएगा हालांकि उससे क़सम उठाने का मुतालबा नहीं किया जाएगा, गवाह गवाही देगा हालांकि उसको गवाह नहीं बनाया जाएगा। ख़बरदार! कोई आदमी किसी औरत के साथ तन्हा नहीं होता मगर उनका तीसरा शैतान होता है, अपने ऊपर जमाअत को लाजिम रखो और अलाहिदा (अलग) होने से बचो, शैतान एक के साथ और दो से निस्बतन ज़्यादा दूर हो जाता है। "जो शख़्स जन्नत के दर्मियान[2] में जाना चाहता है वह जमाअत को लाजिम पकड़े, जिसकी नेकी उसे अच्छी और बुराई बुरी लगे तो यह मोमिन है।

सहीह: इब्ने माजह:2363. मुसनद अहमद: 1/18

तौज़ीह: جابیہ : शाम में दमिश्क के साथ एक बस्ती का नाम है। (2) بُحْبُوحَةَ: दर्मियान में बलंदी और उम्दा हिस्सा।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है और इब्ने मुबारक ने भी इसे मुहम्मद बिन सूकह से रिवायत किया है। नीज़ यह हदीस कई तुरूक़ (सनदों) से बवास्ता उमर (ﷺ) नबी करीम(ﷺ) से मर्वी है।

2166 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مَيْمُونٍ، عَنِ ابْنِ طَاوُوسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَدُ اللهِ مَعَ الجَمَاعَةِ.

2166 - सय्यदना इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "अल्लाह का हाथ जमाअत के साथ होता है।"

सहीह।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है हम इसी सनद से ही इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से जानते हैं।

2167 - حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ نَافِعٍ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ الْمَدَنِيُّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ اللَّهَ لاَ يَجْمَعُ أُمَّتِي، أَوْ قَالَ: أُمَّةَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، عَلَى ضَلاَلَةٍ، وَيَدُ اللهِ مَعَ الجَمَاعَةِ، وَمَنْ شَذَّ شَذَّ إِلَى النَّارِ.

2167 - सय्यदना इब्ने उमर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "बेशक अल्लाह तआला मेरी उम्मत को या यह कहा "मुहम्मद(ﷺ) की उम्मत को गुमराही पर जमा नहीं करेगा। अल्लाह का हाथ जमाअत के साथ है और जमाअत से अलाहिदा (अलग) हुआ वह आग की तरफ़ ही अलाहिदा हुआ।

من شذ ... के अलावा बाकी हदीस सहीह है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस ग़रीब है और मेरे मुताबिक सुलेमान मदनी, सुलेमान बिन सुफ़ियान ही हैं, इस बारे में इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

नीज़ उन से अबू दाऊद तयालिसी और अबू आमिर अक्दी जैसे दीगर उलमा ने भी रिवायत की है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: अहले इल्म के नज़दीक जमाअत से मुराद अहले इल्म व फ़िक़ह् और अहले हदीस हैं। और मैंने जारूद से सुना वह बयान कर रहे थे कि अली बिन हसन कहते हैं: मैंने अब्दुल्लाह बिन मुबारक से पूछा कि जमाअत से मुराद कौन लोग हैं? उन्होंने कहा: अबू बक्र और उमर (رضي الله عنهما), उनसे कहा गया: वह तो वफ़ात पा गए हैं? उन्होंने फ़रमाया: फुलां शख़्स है। कहा गया: फुलां, फुलां शख़्स भी फौत हो गए हैं? तो अब्दुल्लाह बिन मुबारक (رحمه الله) फ़रमाने लगे: अबू हम्ज़ा सुकरी जमाअत है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: अबू हम्ज़ा सुकरी, मुहम्मद बिन मैमून हैं जो नेक इंसान थे और हमारे मुताबिक उन्होंने यह बात उनकी ज़िंदगी में कही थी।

8 - जब बुराइयां ख़त्म न की जायें तो अज़ाब आता है।

8بَابُ مَا جَاءَ فِي نُزُولِ العَذَابِ إِذَا لَمْ يُغَيِّرِ الْمُنْكَرُ

- 2168حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ :حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي خَالِدٍ، عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ أَنَّهُ قَالَ: أَيُّهَا النَّاسُ، إِنَّكُمْ تَقْرَءُونَ هَذِهِ الآيَةَ:{يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ لاَ يَضُرُّكُمْ مَنْ ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ} ، وَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: إِنَّ النَّاسَ إِذَا رَأَوْا الظَّالِمَ فَلَمْ يَأْخُذُوا عَلَى يَدَيْهِ أَوْشَكَ أَنْ يَعُمَّهُمُ اللَّهُ بِعِقَابٍ مِنْهُ.

2168 - कैस बिन अबी हाजिम कहते हैं सय्यदना अबू बक्र सिद्दीक़ (ﷺ) ने फ़रमाया: ''ऐ लोगो तुम यह आयत पढ़ते हो?" ''ऐ ईमान वालो अपनी फ़िक्र करो जब तुम राहे रास्त पर चल रहे हो तो जो शख़्स गुमराह है उस से तुम्हारा कोई नुकसान नहीं।" (अल-मायदा: 105)

सहीह: अबू दाऊद: 4338, इब्ने माजह: 4005, मुसनद अहमद: 1/5.

और मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुना आप फ़रमा रहे थे: " बेशक लोग जब ज़ालिम को देखें फिर उसका हाथ न पकड़ें तो हो सकता है कि अल्लाह सब को अपनी सज़ा (अज़ाब) की लपेट में ले ले। "

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं: हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने वह कहते हैं: हमें यज़ीद बिन हारून ने इस्माईल बिन अबी ख़ालिद से ऐसे ही हदीस बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस बारे में आयशा, उम्मे सलमा, नौमान बिन बशीर, अब्दुल्लाह बिन उमर और हुज़ैफ़ा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ यह हदीस सहीह है। कई रुवात (रावियों) ने इस्माईल से यज़ीद की हदीस की तरह रिवायत की है और बअ़ज़ ने इसे इस्माईल से मर्फ़ू और बअ़ज़ ने मौक़ूफ़ रिवायत की है।

9 - नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना।

9بَابُ مَا جَاءَ فِي الأَمْرِ بِالمَعْرُوفِ وَالنَّهْيِ عَنِ الْمُنْكَرِ

2169 - सय्यदना हुज़ैफ़ा बिन यमान (ﷺ) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: "उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! तुम ज़रूर नेकी का हुक्म दो और बुराई से रोको, या करीब है कि अल्लाह तआला अपनी तरफ़ से तुम्हारे ऊपर अज़ाब नाजिल फ़रमाए, फिर तुम उस से दुआ करो तो वह तुम्हारी दुआ कुबूल न करे। "

सहीह: मुसनद अहमद: 5/ 388.

- 2169حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ العَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ أَبِي عَمْرٍو، عَنْ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيِّ، عَنْ حُذَيْفَةَ بْنِ اليَمَانِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَتَأْمُرُنَّ بِالمَعْرُوفِ وَلَتَنْهَوُنَّ عَنِ الْمُنْكَرِ أَوْ لَيُوشِكَنَّ اللَّهُ أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عِقَابًا مِنْهُ ثُمَّ تَدْعُونَهُ فَلاَ يُسْتَجَابُ لَكُمْ.

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं: हमें अली बिन हुज्र ने बवास्ता इस्माईल बिन जाफ़र, अम्र बिन अबी अम्र से इसी सनद के साथ ऐसी ही हदीस बयान की है, यह हदीस हसन है।

2170 - सय्यदना हुज़ैफ़ा बिन यमान (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "क़सम है उस ज़ात की जिस के हाथ में मेरी जान है! क़यामत कायम नहीं होगी यहाँ तक कि तुम अपने इमाम को कत्ल करोगे, अपनी तलवारें एक दूसरे पर मारोगे और तुम्हारी दुनिया के वारिस (हाकिम) तुम्हारे बुरे लोग बन जाए। "

ज़ईफ़: इब्ने माजह: 4043. मुसनद अहमद: 5/ 389

- 2170حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ العَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ أَبِي عَمْرٍو، عَنْ عَبْدِ اللهِ وَهُوَ ابْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الأَنْصَارِيُّ الأَشْهَلِيُّ، عَنْ حُذَيْفَةَ بْنِ اليَمَانِ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَقْتُلُوا إِمَامَكُمْ، وَتَجْتَلِدُوا بِأَسْيَافِكُمْ، وَيَرِثَ دُنْيَاكُمْ شِرَارُكُمْ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है। हम इसे अम्र बिन अबी अम्र की सनद से ही जानते हैं।

10 - मकामे बैदा के लश्कर का धंसना।

10بَابٌ حديث الخسف بجيش البيداء

2171 - सय्यदा उम्मे सलमा (ﷺ) से रिवायत है कि नबी करीम(ﷺ) ने उस लश्कर का ज़िक्र किया जिसे (ज़मीन में) धंसा दिया जाएगा। तो उम्मे सलमा (ﷺ) ने अर्ज़ की: शायद उन में मजबूर लोग भी हों। आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "उन्हें उनकी नीयतों पर उठाया जाएगा।"

मुस्लिम: 2882. अबू दाऊद: 4289. इब्ने माजह: 4065

- 2171حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الجَهْضَمِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سُوقَةَ، عَنْ نَافِعِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ ذَكَرَ الجَيْشَ الَّذِي يُخْسَفُ بِهِمْ فَقَالَتْ أُمُّ سَلَمَةَ: لَعَلَّ فِيهِمُ الْمُكْرَهُ؟ قَالَ: إِنَّهُمْ يُبْعَثُونَ عَلَى نِيَّاتِهِمْ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है और यह हदीस नाफ़े बिन जुबैर से बवास्ता सय्यदा आयशा (ﷺ) भी नबी करीम(ﷺ) से इसी तरह ही मर्वी है।

11 - बुराई को हाथ, ज़बान और दिल से बदलना।

11بَابُ مَا جَاءَ فِي تَغْيِيرِ الْمُنْكَرِ بِالْيَدِ أَوْ بِاللِّسَانِ أَوْ بِالْقَلْبِ

2172 - तारिक़ बिन शिहाब बयान करते हैं कि पहला शख़्स जिस ने नमाज़ से पहले ईद का खुत्बा दिया था वह मरवान था, एक आदमी ने खड़े होकर मरवान से कहा: तुमने सुन्नत की मुखालिफ़त की है। तो उसने कहा: ऐ फुलां शख़्स! जो चीज़ वहाँ (सुन्नत) में थी छोड़ दी गई है, तो अबू सईद खुदरी (ﷺ) ने फ़रमाया: उस शख़्स ने अपना हक़ अदा कर दिया है मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: " जो शख़्स बुराई देखे वह अपने हाथ से रोके, अगर ताक़त नहीं रखता तो अपनी ज़बान से और जो

- 2172حَدَّثَنَا بُنْدَارٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ قَيْسِ بْنِ مُسْلِمٍ، عَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ، قَالَ: أَوَّلُ مَنْ قَدَّمَ الخُطْبَةَ قَبْلَ الصَّلَاةِ مَرْوَانُ، فَقَامَ رَجُلٌ فَقَالَ لِمَرْوَانَ :خَالَفْتَ السُّنَّةَ، فَقَالَ: يَا فُلَانُ، تُرِكَ مَا هُنَالِكَ. فَقَالَ أَبُو سَعِيدٍ: أَمَّا هَذَا فَقَدْ قَضَى مَا عَلَيْهِ، سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: مَنْ رَأَى مُنْكَرًا فَلْيُنْكِرْهُ بِيَدِهِ، وَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ

فَبِلِسَانِهِ، وَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَبِقَلْبِهِ، وَذَلِكَ أَضْعَفُ الإِيمَانِ.

इसकी भी ताक़त नहीं रखता तो वह अपने दिल से उस बुराई को बुरा जाने और यह सब से कमज़ोर ईमान है।"

मुस्लिम: 49. अबू दाऊद: 1140. इब्ने माजह: 1275. निसाई: 5008

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

12 بَابٌ مِنْهُ

12 - उसी से मुताल्लिक़ बाब।

2173-حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ :حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَثَلُ القَائِمِ عَلَى حُدُودِ اللهِ وَالمُدْهِنِ فِيهَا كَمَثَلِ قَوْمٍ اسْتَهَمُوا عَلَى سَفِينَةٍ فِي البَحْرِ فَأَصَابَ بَعْضُهُمْ أَعْلاَهَا، وَأَصَابَ بَعْضُهُمْ أَسْفَلَهَا، فَكَانَ الَّذِينَ فِي أَسْفَلِهَا يَصْعَدُونَ فَيَسْتَقُونَ الْمَاءَ فَيَصُبُّونَ عَلَى الَّذِينَ فِي أَعْلاَهَا فَقَالَ الَّذِينَ فِي أَعْلاَهَا: لاَ نَدَعُكُمْ تَصْعَدُونَ فَتُؤْذُونَنَا، فَقَالَ الَّذِينَ فِي أَسْفَلِهَا :فَإِنَّا نَنْقُبُهَا مِنْ أَسْفَلِهَا فَنَسْتَقِي، فَإِنْ أَخَذُوا عَلَى أَيْدِيهِمْ فَمَنَعُوهُمْ نَجَوْا جَمِيعًا وَإِنْ تَرَكُوهُمْ غَرِقُوا جَمِيعًا.

2173 - सय्यदना नौमान बिन बशीर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "हुदूदुल्लाह (अल्लाह की हदों) पर क़ायम और इसमें सुस्ती करने वाले की मिसाल उस कौम की तरह है जिन्होंने समंदर में एक कश्ती पर कुर्आअंदाजी की। बअज़ को ऊपर वाला हिस्सा मिला और बअज़ को नीचे वाला, फिर जो लोग उसके निचले हिस्से में थे वह पानी लेने के लिये ऊपर चढ़ते तो ऊपर वालों पर पानी बहाते ऊपर वालों ने कहा: हम तुम्हें ऊपर नहीं आने देंगे कि तुम हमें तक्लीफ़ देते रहो। चुनांचे नीचे वाले कहने लगे: हम इस के निचले हिस्से में सूराख़ कर के पानी ले लेते हैं। पस अगर (ऊपर वाले) उनके हाथों को पकड़ लें और उन्हें रोक दें तो सब निजात पा जायेंगे और अगर उन्हें छोड़ दें तो सब गर्क़ हो जायेंगे।

बुख़ारी: 2493. मुसनद अहमद: 4/268. इब्ने हिब्बान: 297

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

بَابُ مَا جَاءَ أَفْضَلُ الجِهَادِ كَلِمَةَ عَدْلٍ عِنْدَ سُلْطَانٍ جَائِرٍ 13

- 2174حَدَّثَنَا القَاسِمُ بْنُ دِينَارٍ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مُصْعَبٍ أَبُو يَزِيدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُحَادَةَ، عَنْ عَطِيَّةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ مِنْ أَعْظَمِ الجِهَادِ كَلِمَةَ عَدْلٍ عِنْدَ سُلْطَانٍ جَائِرٍ. وَفِي البَابِ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ.

13 - ज़ालिम हुक्मरां के सामने इन्साफ की बात कहना बेहतरीन जिहाद है।

2174 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: "बेशक सबसे बड़ा जिहाद ज़ालिम हुक्मरान के सामने इन्साफ की बात कहना है।"

सहीह: अबू दाऊद: 4344. इब्ने माजह: 4011.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस बारे में अबू उमामा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है और इस सनद के साथ यह हदीस हसन ग़रीब है।

14بَابُ مَا جَاءَ فِي سُؤَالِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلاَثًا فِي أُمَّتِهِ

- 2175حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ :حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، قَالَ: سَمِعْتُ النُّعْمَانَ بْنَ رَاشِدٍ يُحَدِّثُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الحَارِثِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ خَبَّابِ بْنِ الأَرَتِّ، عَنْ أَبِيهِ قَالَ: صَلَّى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلاَةً فَأَطَالَهَا، فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ، صَلَّيْتَ صَلاَةً لَمْ تَكُنْ تُصَلِّيهَا، قَالَ: أَجَلْ

14 - नबी करीम(ﷺ) का अपनी उम्मत के लिए तीन सवाल करना।

2175 - सय्यदना खब्बाब बिन अरत (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने एक नमाज़ पढ़ाई उसे लंबा कर दिया लोगों ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! आप ने ऐसी नमाज़ पढ़ाई जैसी पहले नहीं पढ़ाते। आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "हाँ यह रग़बत करने और डरने की नमाज़ थी, मैंने इसमें अल्लाह से तीन सवाल किया, उसने मुझे दो चीजें दे दी और एक नहीं दी: मैंने उस से सवाल किया कि मेरी उम्मत को क़हत साली के साथ हलाक न करे तो अल्लाह

إِنَّهَا صَلاَةُ رَغْبَةٍ وَرَهْبَةٍ، إِنِّي سَأَلْتُ اللَّهَ فِيهَا ثَلاَثًا فَأَعْطَانِي اثْنَتَيْنِ وَمَنَعَنِي وَاحِدَةً، سَأَلْتُهُ أَنْ لاَ يُهْلِكَ أُمَّتِي بِسَنَةٍ فَأَعْطَانِيهَا، وَسَأَلْتُهُ أَنْ لاَ يُسَلِّطَ عَلَيْهِمْ عَدُوًّا مِنْ غَيْرِهِمْ فَأَعْطَانِيهَا، وَسَأَلْتُهُ أَنْ لاَ يُذِيقَ بَعْضَهُمْ بَأْسَ بَعْضٍ فَمَنَعَنِيهَا.

ने मुझे यह चीज़ दे दीं, मैंने उससे सवाल किया कि उनके ऊपर पराया दुश्मन मुसल्लत न करे उसने मुझे यह चीज़ भी दे दी। और मैंने उससे सवाल किया कि उन्हें आपस की लड़ाई न चखाए तो उसने मुझे यह चीज़ नहीं दी।"

सहीह: निसाई: 1638. मुसनद अहमद: 5/108. इब्ने हिब्बान: 7236. **वज़ाहत:** इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है और इस बारे में साद और इब्ने उमर (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

- 2176حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَبِي أَسْمَاءَ الرَّحَبِيِّ، عَنْ ثَوْبَانَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ اللَّهَ زَوَى لِيَ الأَرْضَ فَرَأَيْتُ مَشَارِقَهَا وَمَغَارِبَهَا، وَإِنَّ أُمَّتِي سَيَبْلُغُ مُلْكُهَا مَا زُوِيَ لِي مِنْهَا، وَأُعْطِيتُ الكَنْزَيْنِ الأَحْمَرَ وَالأَبْيَضَ، وَإِنِّي سَأَلْتُ رَبِّي لأُمَّتِي أَنْ لاَ يُهْلِكَهَا بِسَنَةٍ عَامَّةٍ، وَأَنْ لاَ يُسَلِّطَ عَلَيْهِمْ عَدُوًّا مِنْ سِوَى أَنْفُسِهِمْ فَيَسْتَبِيحَ بَيْضَتَهُمْ، وَإِنَّ رَبِّي قَالَ: يَا مُحَمَّدُ إِنِّي إِذَا قَضَيْتُ قَضَاءً فَإِنَّهُ لاَ يُرَدُّ، وَإِنِّي أَعْطَيْتُكَ لأُمَّتِكَ أَنْ لاَ أُهْلِكَهُمْ بِسَنَةٍ عَامَّةٍ وَأَنْ لاَ أُسَلِّطَ عَلَيْهِمْ عَدُوًّا مِنْ سِوَى أَنْفُسِهِمْ فَيَسْتَبِيحَ بَيْضَتَهُمْ وَلَوِ اجْتَمَعَ عَلَيْهِمْ مَنْ بِأَقْطَارِهَا _ أَوْ قَالَ: مَنْ بَيْنِ أَقْطَارِهَا _ حَتَّى يَكُونَ بَعْضُهُمْ يُهْلِكُ بَعْضًا وَيَسْبِي بَعْضُهُمْ بَعْضًا.

2176 - सय्यदना सौबान (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला ने मेरे लिए ज़मीन को लपेट दिया मैंने उसके मशरिक़ व मगरिब को देखा और बेशक मेरी बादशाहत वहाँ तक पहुंचेगी जितनी मेरे लिए लपेटी गई और मुझे दो ख़ज़ाने[1] सुर्ख और ज़र्द दिए गये और मैंने अपने रब से अपनी उम्मत के लिए सवाल किया कि वह उन्हें आम क़हत साली से हलाक न करे और उन पर उनकी जानों के अलावा कोई दूसरा दुश्मन मुसल्लत न करे जो उनकी जमीअत को तोड़े, मेरे रब ने कहा: ऐ मुहम्मद! बेशक मैं जब कोई फैसला कर देता हूँ तो उसे रद्द नहीं किया जाता, मैंने आप को आप की उम्मत के लिए यह (इत्तिला) दी है कि मैंने उनको आम क़हत साली से हलाक नहीं करूंगा और न ही उन पर कोई दूसरा दुश्मन मुसल्लत करूंगा जो उनकी जमीअत को तोड़ दे, अगर वह दुश्मन उस ज़मीन के अतराफ़ भी जमा हो जाए यहाँ तक कि यह एक दूसरे को हलाक और एक दूसरे को क़ैद करेंगे।"

मुस्लिम: 2889. अबू दाऊद:4252. इब्ने माजह: 2952

तौज़ीहः (1) इस से मुराद सोना और चांदी है जो बतौर जिज़्या मुसलमानों के पास आता रहा है।

वज़ाहतः इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

15 بَابُ مَا جَاءَ كَيْفَ يَكُونُ الرَّجُلُ فِي الفِتْنَةِ

15 - आदमी फ़ित्ने के दौर में कैसे रहे।

- 2177حَدَّثَنَا عِمْرَانُ بْنُ مُوسَى القَزَّازُ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الوَارِثِ بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ :حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جُحَادَةَ، عَنْ رَجُلٍ، عَنْ طَاوُوسٍ، عَنْ أُمِّ مَالِكٍ البَهْزِيَّةِ قَالَتْ: ذَكَرَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِتْنَةً فَقَرَّبَهَا قَالَتْ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، مَنْ خَيْرُ النَّاسِ فِيهَا؟ قَالَ: رَجُلٌ فِي مَاشِيَتِهِ يُؤَدِّي حَقَّهَا وَيَعْبُدُ رَبَّهُ، وَرَجُلٌ آخِذٌ بِرَأْسِ فَرَسِهِ يُخِيفُ العَدُوَّ وَيُخِيفُونَهُ.

2177 - उम्मे मालिक बहज़िय्या (ﷺ) रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने एक फ़ित्ने का तज़किरा किया तो उसे करीब क़रार दिया। कहती हैं: मैंने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! इसमें बेहतरीन आदमी कौन सा होगा? आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "वह आदमी जो अपनी मवेशियों (को चराने) में (मसरूफ़) हो, उनका हक़ (ज़कात) अदा करता हो और अपने रब की इबादत करता हो और वह आदमी जो अपने घोड़े का सर पकड़े हुए हो वह दुश्मन को डराये और वह उसे डराएँ।"

सहीहः मुसनद अहमदः 6/419.

वज़ाहतः इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस बारे में उम्मे मुबश्शिर, अबू सईद ख़ुदरी और इब्ने अब्बास (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है। इसे लैस बिन अबी सुलैम ने भी ताऊस से बवास्ता उम्मे मालिक बहज़िय्या (ﷺ) नबी करीम(ﷺ) से रिवायत किया है।

16 بَابٌ فِي كف اللسان فِي الفتنة

16 - फ़ित्ना में अपनी ज़बान को रोके रखना।

- 2178حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُعَاوِيَةَ الجُمَحِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ لَيْثٍ، عَنْ طَاوُوسٍ، عَنْ زِيَادِ بْنِ سِيْمِينَ كُوْشَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ

2178 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "एक फ़ित्ना बरपा होगा जो अरब को घेरेगा, उसके मक़्तूल जहन्नमी होंगे इसमें ज़बान (चलाना) तलवार से सख़्त होगी।"

رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: تَكُونُ فِتْنَةٌ تَسْتَنْظِفُ العَرَبُ قَتْلاَهَا فِي النَّارِ، اللِّسَانُ فِيهَا أَشَدُّ مِنَ السَّيْفِ.

ज़ईफ़: अबू दाऊद: 4265. इब्ने माजह: 3967. मुसनद अहमद: 2/211

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। मैंने मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी को फ़रमाते हुए सुना: "हम जियाद बिन सीमीन कूश की इसके अलावा कोई और हदीस नहीं जानते, उसे हम्माद बिन सलमा ने लैस से मौक़ूफ़ रिवायत किया है।"

17بَابُ مَا جَاءَ فِي رَفْعِ الأَمَانَةِ

17 - अमानत का उठ जाना।

2179- حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ زَيْدِ بْنِ وَهْبٍ، عَنْ حُذَيْفَةَ بْنِ اليَمَانِ، قَالَ: حَدَّثَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَدِيثَيْنِ قَدْ رَأَيْتُ أَحَدَهُمَا وَأَنَا أَنْتَظِرُ الآخَرَ، حَدَّثَنَا :أَنَّ الأَمَانَةَ نَزَلَتْ فِي جَذْرِ قُلُوبِ الرِّجَالِ، ثُمَّ نَزَلَ القُرْآنُ، فَعَلِمُوا مِنَ القُرْآنِ وَعَلِمُوا مِنَ السُّنَّةِ ثُمَّ حَدَّثَنَا عَنْ رَفْعِ الأَمَانَةِ فَقَالَ: يَنَامُ الرَّجُلُ النَّوْمَةَ فَتُقْبَضُ الأَمَانَةُ مِنْ قَلْبِهِ فَيَظَلُّ أَثَرُهَا مِثْلَ الوَكْتِ، ثُمَّ يَنَامُ نَوْمَةً فَتُقْبَضُ الأَمَانَةُ مِنْ قَلْبِهِ فَيَظَلُّ أَثَرُهَا مِثْلَ الْمَجْلِ كَجَمْرٍ دَحْرَجْتَهُ عَلَى رِجْلِكَ فَنَفِطَتْ فَتَرَاهُ مُنْتَبِرًا وَلَيْسَ فِيهِ شَيْءٌ، ثُمَّ أَخَذَ حَصَاةً فَدَحْرَجَهَا عَلَى رِجْلِهِ قَالَ:

2179 - सय्यदना हुज़ैफा बिन यमान (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हमें दो हदीसें बयान कीं, मैंने उन में से एक (के पूरा होने) को देख लिया है और दूसरी का इन्तिज़ार कर रहा हूँ। आपने हमें बयान किया कि अमानत (दयानतदारी की सिफ़त) लोगों के दिलों की गहराई में उतरी फिर कुरआन नाज़िल हुआ तो उन्होंने कुरआन सीखा और सुन्नत भी सीखी (चुनाँचे यह खूबी मजीद पुख्ता हो गई) फिर आप ने हमें अमानत के उठ जाने के बारे में बताते हुए फ़रमाया: "आदमी एक बार सोएगा तो अमानत उसके दिल से खींच ली जाएगी उसका निशान रह जाएगा जैसे नुक़्ते का निशान, फिर वह सोएगा तो बाकी अमानत भी उससे खींच ली जाएगी तो उसका असर आबले की तरह रह जाएगा जैसे तुम्हारे पाँव पर अंगारा गिर पड़े और वह फूल जाए तुझे वह उभरा हुआ नज़र आता है हालांकि उसके अन्दर कुछ नहीं होता। फिर (यह कहते हुए हुज़ैफा ने) कंकरियाँ उठायीं और पाँव पर गिरायीं। आप(ﷺ) ने

فَيُصْبِحُ النَّاسُ يَتَبَايَعُونَ لاَ يَكَادُ أَحَدُهُمْ يُؤَدِّي الأَمَانَةَ حَتَّى يُقَالَ إِنَّ فِي بَنِي فُلاَنٍ رَجُلاً أَمِينًا، وَحَتَّى يُقَالَ لِلرَّجُلِ: مَا أَجْلَدَهُ وَأَظْرَفَهُ وَأَعْقَلَهُ وَمَا فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ مِنْ إِيمَانٍ قَالَ: وَلَقَدْ أَتَى عَلَيَّ زَمَانٌ وَمَا أُبَالِي أَيُّكُمْ بَايَعْتُ فِيهِ لَئِنْ كَانَ مُسْلِمًا لَيَرُدَّنَّهُ عَلَيَّ دِينُهُ وَلَئِنْ كَانَ يَهُودِيًّا أَوْ نَصْرَانِيًّا لَيَرُدَّنَّهُ عَلَيَّ سَاعِيهِ، فَأَمَّا الْيَوْمَ فَمَا كُنْتُ لأُبَايِعَ مِنْكُمْ إِلاَّ فُلاَنًا وَفُلاَنًا.

फ़रमाया: "फिर लोग एक दूसरे से लेन देन करने लगेंगे और कोई भी अमानत अदा नहीं करेगा यहाँ तक कि कहा जाएगा कि फुलां कबीले में एक दयानतदार आदमी भी है और यहाँ तक कि एक आदमी के बारे में कहा जायेगा वह कितना बा हिम्मत है, कितना समझदार और कितना अक़्लमंद है हालांकि उसके दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान नहीं होगा" और (सय्यदना हुज़ैफा (ﷺ) ने फ़रमाया, मुझ पर एक वक़्त वह था कि मुझे किसी से लेन देन करने में कोई परवाह नहीं थी (मुझे यक़ीन होता था कि अगर वह मुसलमान है तो उसका ईमान उसे मेरे पास (मेरा हक़ अदा करने के लिए) वापस ले आएगा और अगर यहूदी या ईसाई है तो उसका आमिल (ज़िम्मेदार) उसे मेरे पास ले आयेगा। लेकिन आज तो (यह हालत है कि) मैं फुलां और फुलां के सिवा किसी से खरीदो फ़रोख्त नहीं करता।

बुख़ारी: 6497. मुस्लिम: 143. इब्ने माजह: 4053.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

18بَابُ مَا جَاءَ لَتَرْكَبُنَّ سُنَنَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ

18 - तुम अपने से पहले वाली उम्मतों के तरीक़े पर चलोगे।

2180 - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْمَخْزُومِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سِنَانِ بْنِ أَبِي سِنَانٍ، عَنْ أَبِي وَاقِدٍ اللَّيْثِيِّ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ

2180 - सय्यदना अबू वाकिद लैसी (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) जब हुनैन की तरफ़ निकले तो आप मुश्रिकीन के एक (पूजा वाले) दरख़्त के पास से गुज़रे जिसे " ज़ाते अन्वात"[1] कहा जाता था उस पर वह अपने

وَسَلَّمَ لَمَّا خَرَجَ إِلَى حُنَيْنٍ مَرَّ بِشَجَرَةٍ لِلْمُشْرِكِينَ يُقَالُ لَهَا: ذَاتُ أَنْوَاطٍ يُعَلِّقُونَ عَلَيْهَا أَسْلِحَتَهُمْ، فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ، اجْعَلْ لَنَا ذَاتَ أَنْوَاطٍ كَمَا لَهُمْ ذَاتُ أَنْوَاطٍ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: سُبْحَانَ اللهِ هَذَا كَمَا قَالَ قَوْمُ مُوسَى{اجْعَلْ لَنَا إِلَهًا كَمَا لَهُمْ آلِهَةٌ} وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَتَرْكَبُنَّ سُنَّةَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ.

अस्लहा(हथियार) को लटकाते थे। तो सहाबा ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! हमारे लिए भी कोई ज़ाते अन्वात मुक़र्रर कर दीजिये जिस तरह उनका ज़ाते अन्वात है। नबी करीम(ﷺ) ने फ़रमाया: "सुब्हान अल्लाह![2] यह तो ऐसे ही है जैसे कि मूसा (عليه السلام) की कौम ने कहा था कि हमारे लिए कोई माबूद बना दें जैसे उनके माबूद हैं, उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मेरी जान है! तुम ज़रूर पहले लोगों के तरीकों पर सवार हो कर चलोगे।"

सहीह: मुसन्नफ़ अब्दुर्रज्जाक: 20763. मुसनद अहमद: 5/218. अबू याला: 1441.

तौज़ीह: (1) ذَاتُ أَنْوَاط : यह एक केकर का दरख़्त था जिस पर मुश्रिकीन अपना अस्लहा लटकाते और उसके गिर्द बैठ कर एतकाफ़ करते थे। نوط का मानी लटकाना होता है इसी वजह से इसका नाम "ذَاتُ أَنْوَاط :" था।

(2) यह तअज्जुब का कलिमा है जो किसी हैरानकुन और तअज्जुब खेज़ काम को देख कर या सुनकर कहा जाता है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और अबू वाकिद लैसी का नाम हारिस बिन औफ़ (رضي الله عنه) था। नीज़ इस बारे में अबू सईद और अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

19بَابُ مَا جَاءَ فِي كَلاَمِ السِّبَاعِ

19 - दरिंदों का बातें करना।

2181 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ :حَدَّثَنَا أَبِي، عَنِ القَاسِمِ بْنِ الفَضْلِ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو نَضْرَةَ العَبْدِيُّ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تُكَلِّمَ السِّبَاعُ الإِنْسَ، وَحَتَّى تُكَلِّمَ الرَّجُلَ

2181 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! क़यामत क़ायम नहीं होगी यहाँ तक कि दरिंदे इंसानों से गुफ्तगू करेंगे यहाँ तक कि आदमी से उसके कोड़े का किनारा[1] और उसके जूते का तस्मा बात करेगा और उसकी

عَذَبَةُ سَوْطِهِ وَشِرَاكُ نَعْلِهِ وَتُخْبِرُهُ فَخِذُهُ بِمَا أَحْدَثَ أَهْلُهُ مِنْ بَعْدِهِ.

रान उसे बताएगी कि उसके बाद उसके घर वालों ने क्या किया है।"

सहीह: मुसनद अहमद:3/83. इब्ने हिब्बान: 6494. हाकिम: 4/467.

तौज़ीह: عَذَبَةٌ : किसी चीज़ का किनारा कहा जाता है: عذبة اللسان ज़बान का किनारा عذبة العمامة पगड़ी का किनारा इसी तरह عذبةالسوط कोड़े का किनारा (अल-मोजमुल वसीत:पृ.698)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है और यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है। हम इसे कासिम बिन फ़ज़ल के तरीक़ से ही जानते हैं और कासिम बिन मैमून मुहद्दिसीन के नज़दीक सिक़ह् और मामून हैं। उन्हें यह्या बिन सईद अल-क़त्तान और अब्दुर्रहमान बिन महदी ने सिक़ह् कहा है।

20بَابُ مَا جَاءَ فِي انْشِقَاقِ الْقَمَرِ

20 - चाँद का दो टुकड़े होना।

2182 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ :حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: انْفَلَقَ الْقَمَرُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اشْهَدُوا.

2182 - सय्यदना इब्ने उमर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) के दौर में चाँद (बतौर मोजिज़ा) टूटा तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "(इस मोजिज़े के) गवाह हो जाओ।"

अबू दाऊद:2801 मुस्लिम: 8/133. इब्ने हिब्बान: 6496

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में इब्ने मसऊद, अनस और जुबैर बिन मुत्इम (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है नीज़ यह हदीस हसन सहीह है।

بَابُ مَا جَاءَ فِي الخَسْفِ 21

21 - ज़मीन में धंसाये जाने का बयान।

2183 - حَدَّثَنَا بُنْدَارٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ فُرَاتٍ الْقَزَّازِ، عَنْ أَبِي الطُّفَيْلِ، عَنْ حُذَيْفَةَ بْنِ أَسِيدٍ قَالَ :أَشْرَفَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى

2183 - सय्यदना हुज़ैफा बिन उसैद (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने बालाई कमरे से हमारी तरफ़ देखा, हम क़यामत का तज़किरा कर रहे थे तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "क़यामत (तब तक) क़ायम नहीं होगी जब तक तुम दस निशानियाँ न देख लो:

اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ غُرْفَةٍ وَنَحْنُ نَتَذَاكَرُ السَّاعَةَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَرَوْا عَشْرَ آيَاتٍ :طُلُوعَ الشَّمْسِ مِنْ مَغْرِبِهَا، وَيَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ، وَالدَّابَّةَ، وَثَلاَثَةَ خُسُوفٍ: خَسْفٌ بِالْمَشْرِقِ، وَخَسْفٌ بِالْمَغْرِبِ، وَخَسْفٌ بِجَزِيرَةِ الْعَرَبِ، وَنَارٌ تَخْرُجُ مِنْ قَعْرِ عَدَنَ تَسُوقُ النَّاسَ أَوْ تَحْشُرُ النَّاسَ، فَتَبِيتُ مَعَهُمْ حَيْثُ بَاتُوا، وَتَقِيلُ مَعَهُمْ حَيْثُ قَالُوا.

सूरज का मग़रिब से निकलना, याजूज व माजूज, जानवर का निकलना, तीन खस्फ़[1] एक मशरिक़ में, एक मग़रिब में और एक जज़ीरे अरब में, आग जो अदन के दर्मियान से निकलेगी और लोगों को हांकेगी या इकट्ठा करेगी फिर जहां वह रात गुज़ारें वह भी वहीं रात बसर करेगी और जहां वह कैलूला करेंगे वह भी वहीं कैलूला करेगी।"

मुस्लिम: 2901. इब्ने माजह: 4311. इब्ने माजह:4041.

तौज़ीह: (1) خَسْفٌ: का मानी है ज़मीन में धंसा देना, यानी तीन जगह ऐसे वाक़ियात रूनुमा होंगे।

वज़ाहत: हमें महमूद बिन गैलान ने उन्हें वकीअ ने बवास्ता सुफ़ियान, फ़ुरात से ऐसे ही हदीस बयान की है लेकिन इसमें धुंए का इजाफ़ा है। हमें हन्नाद ने अबू अहवस से बवास्ता फ़ुरात क़ज़्ज़ाज़, वकीअ की सुफ़ियान से बयान कर्दा हदीस की तरह हदीस बयान की है।

हमें महमूद बिन गैलान ने, उन्हें अबू तयालिसी ने शोबा और मस्ऊदी से बवास्ता फ़ुरात अल क़ज़्ज़ाज़, अब्दुर्रहमान की सुफ़ियान के ज़रिए फ़ुरात से रिवायतकर्दा हदीस जैसी हदीस बयान की है इसमें दज्जाल और धुंए का भी ज़िक्र है।

हमें अबू मूसा मुहम्मद बिन मुसन्ना ने अबू नौमान हकम बिन अब्दुल्लाह अजली से बवास्ता शोबा, फ़ुरात से अबू दाऊद की शोबा से बयान कर्दा हदीस जैसी हदीस बयान की है। इसमें यह इज़ाफ़ा है कि दसवीं या तो एक हवा है जो उन्हें समंदर में फ़ेंक देगी या फिर ईसा बिन मरियम (عليه السلام) का नुज़ूल है।

इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: इस बारे में अली, अबू हुरैरा, उम्मे सलमा और सफ़िया बिन्ते हुई (رضي الله عنهم) से भी अहादीस मर्वी हैं। नीज़ यह हदीस हसन सहीह है।

- 2184حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ : حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ سَلَمَةَ بْنِ كُهَيْلٍ، عَنْ أَبِي إِدْرِيسَ الْمُرْهِبِيِّ، عَنْ مُسْلِمِ بْنِ صَفْوَانَ، عَنْ صَفِيَّةَ قَالَتْ: قَالَ

2184 - सय्यदा सफ़िया (رضي الله عنها) रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "लोग इस घर (बैतुल्लाह) की जंग से बाज़ नहीं आयेंगे यहाँ तक कि एक लश्कर जंग करना चाहेगा, जब वह बैदा के इलाक़े में आयेंगे तो

رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ يَنْتَهِي النَّاسُ عَنْ غَزْوِ هَذَا الْبَيْتِ حَتَّى يَغْزُوَ جَيْشٌ، حَتَّى إِذَا كَانُوا بِالْبَيْدَاءِ أَوْ بِبَيْدَاءَ مِنَ الأَرْضِ خُسِفَ بِأَوَّلِهِمْ وَآخِرِهِمْ وَلَمْ يَنْجُ أَوْسَطُهُمْ، قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، فَمَنْ كَرِهَ مِنْهُمْ؟ قَالَ: يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ عَلَى مَا فِي أَنْفُسِهِمْ.

अगले और पिछले लोगों को ज़मीन में धंसा दिया जाएगा और उनके दर्मियानी भी निजात नहीं पायेंगे।" मैंने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! जो उन में उस गज्वा को बुरा जानता हो? (यानी ज़बरदस्ती लाया गया हो) आप ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला उन्हें उनके दिलों की नीयत के मुताबिक उठाएगा।"

सहीह: इब्ने माजह: 4046. मुसनद अहमद: 6/336. अबू याला:7059.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

- 2185حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا صَيْفِيُّ بْنُ رِبْعِيٍّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَكُونُ فِي آخِرِ هَذِهِ الأُمَّةِ خَسْفٌ وَمَسْخٌ وَقَذْفٌ، قَالَتْ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَنَهْلِكُ وَفِينَا الصَّالِحُونَ؟ قَالَ: نَعَمْ إِذَا ظَهَرَ الْخُبْثُ.

2185 - सय्यदा आयशा (ﷺ) रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "इस उम्मत के आख़िर (वक़्त के लोगों) में ख़स्फ़, मस्ख और क़ज़्फ़[1] होगा।" कहती हैं: मैंने अर्ज़ की: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ! क्या हमें हलाक कर दिया जाएगा हालांकि हम नेक लोग भी होंगे? आप ने फ़रमाया: "हाँ जब नाफ़रमानी के काम बढ़ जायेंगे।"

सहीह: अबू याला: 7069.

तौज़ीह: خَسْفٌ : ज़मीन में धंसाया जाना, مَسْخٌ: शक्लें तब्दील होना और قَذْفٌ : पत्थरों का बरसना।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: सय्यदा आयशा (ﷺ) की हदीस ग़रीब है। हम इसे इसी सनद से ही जानते हैं और अब्दुल्लाह बिन उमर के हाफ़िज़े की वजह से यह्या बिन सईद ने उन पर जरह की है।

22-सूरज का मगरिब से तुलू होना (निकलना)

22بَابُ مَا جَاءَ فِي طُلُوعِ الشَّمْسِ مِنْ مَغْرِبِهَا

- 2186حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: دَخَلْتُ الْمَسْجِدَ

2186 - सय्यदना अबू ज़र (ﷺ) बयान करते हैं कि सूरज जब गुरूब हो रहा था मैं मस्जिद में दाख़िल हुआ और नबी करीम(ﷺ) (मस्जिद में) तशरीफ़ फ़रमा थे तो आप ने फ़रमाया:

حِينَ غَابَتِ الشَّمْسُ وَالنَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَالِسٌ، فَقَالَ: يَا أَبَا ذَرٍّ، أَتَدْرِي أَيْنَ تَذْهَبُ هَذِهِ؟ قَالَ: قُلْتُ: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، قَالَ: فَإِنَّهَا تَذْهَبُ تَسْتَأْذِنُ فِي السُّجُودِ فَيُؤْذَنُ لَهَا وَكَأَنَّهَا قَدْ قِيلَ لَهَا اطْلُعِي مِنْ حَيْثُ جِئْتِ فَتَطْلُعُ مِنْ مَغْرِبِهَا قَالَ: ثُمَّ قَرَأَ وَذَلِكَ مُسْتَقَرٌّ لَهَا، قَالَ :وَذَلِكَ قِرَاءَةُ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ.

"अबू ज़र! क्या जानते हो कि यह सूरज कहाँ जाता है?" मैंने कहा: अल्लाह और उसके रसूल ही ज़्यादा जानते हैं। आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "यह जाता है ताकि सज्दा करने की इजाज़त मांगे, उसे इजाज़त मिलती है और उसे एक वक़्त कहा जाएगा: जिधर आए हो उसी तरफ़ निकल पड़ो तो यह मग़रिब की तरफ़ से ही तुलू हो जाएगा।" रावी कहते हैं, फिर आप ने यह आयत पढ़ी: "यही उसके ठहरने की जगह है।" कहते हैं कि यह अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) की किरअत है। "

बुख़ारी: 3199. अबू दाऊद:4002.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में सफ़वान बिन अस्साल, हुज़ैफा बिन उसैद, अनस और अबू मूसा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ यह हदीस हसन सहीह है।

23بَابُ مَا جَاءَ فِي خُرُوجِ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ

23 - याजूज व माजूज का निकलना।

2187 - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْمَخْزُومِيُّ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ نَافِعٍ وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا :حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ زَيْنَبَ بِنْتِ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ حَبِيبَةَ، عَنْ أُمِّ حَبِيبَةَ، عَنْ زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ قَالَتْ: اسْتَيْقَظَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ نَوْمٍ مُحْمَرًّا وَجْهُهُ وَهُوَ يَقُولُ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ - يُرَدِّدُهَا ثَلاَثَ مَرَّاتٍ - وَيْلٌ لِلْعَرَبِ مِنْ شَرٍّ قَدْ اقْتَرَبَ، فُتِحَ الْيَوْمَ مِنْ رَدْمِ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مِثْلُ هَذِهِ وَعَقَدَ

2187 - सय्यदा ज़ैनब बिन्ते जहश (رضي الله عنها) रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) नींद से बेदार हुए आप का चेहरा मुबारक सुर्ख़ था और आप "لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ :" कह रहे थे आपने इसे तीन मर्तबा दोहराया (फिर फ़रमाया) : "अरब के लिए उस बुराई की वजह से हलाकत है जो क़रीब आ चुकी है। आज याजूज व माजूज की दीवार इतनी खुल चुकी है।" और आप ने दस की गिरह लगाई[1] ज़ैनब कहती हैं: मैंने अर्ज़ की: ऐ अल्लाह के रसूल! हम में नेक लोग भी होंगे हम फिर भी हलाक हो जाएंगे? आप ने फ़रमाया: हाँ, जब नाफ़रमानी वाले काम बढ़ जायेंगे।"

बुख़ारी: 3346. मुस्लिम: 2880. इब्ने माजह: 3953

عَشْرًا، قَالَتْ زَيْنَبُ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَفَنَهْلِكُ وَفِينَا الصَّالِحُونَ؟ قَالَ: نَعَمْ، إِذَا كَثُرَ الْخُبْثُ.

तौज़ीह: (1) अरब के लोग अपने हाथों की उँगलियों पर गिनती करते थे और दस तक गिनती पहुंचती तो शहादत वाली उंगली का सिरा अंगूठे के दर्मियान में आ जाता इस तरह एक छोटा सा हल्क़ा बन जाता है इसी हल्क़े की तरफ़ इशारा है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और सुफ़ियान ने इस हदीस को बहुत उम्दा क़रार दिया है।

हुमैदी अली बिन मदीनी और दीगर मुहद्दिसीन ने भी सुफ़ियान बिन उयय्ना से ऐसे ही रिवायत की है। हुमैदी कहते हैं: सुफ़ियान बिन उयय्ना ने कहा कि मैं इस सनद से ज़ोहरी से चार औरतों के नाम याद किए, ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा और हबीबा यह दोनों नबी(ﷺ) की रबीबाएं(1) थीं। उम्मे हबीबा और ज़ैनब बिन्ते जहश (ﷺ) यह दोनों नबी करीम(ﷺ) की बीवियां थी। नीज़ मामर वग़ैरह ने इस हदीस को ज़ोहरी से ऐसे ही रिवायत किया है। लेकिन इसमें हबीबा (ﷺ) का ज़िक्र नहीं है। जबकि इब्ने उयय्ना के बअज़ शागिर्दों ने इस हदीस को इब्ने उयय्ना से रिवायत करते वक़्त उम्मे हबीबा (ﷺ) का ज़िक्र नहीं किया।

तौज़ीह: (1) ربيبه : वह लड़की जिस की वालिदा से कोई शख़्स निकाह करे और यह लड़की उस निकाह करने वाले की निगह्दाश्त में हो उस आदमी को उस लड़की से निकाह करना जायज़ नहीं है। यह दोनों सहाबियात आप की रबीबाएं थीं। हबीबा आप(ﷺ) की बीवी उम्मे हबीबा (ﷺ) की पहले खाविंद से बेटी थीं और ज़ैनब बिन्ते अबू सलमा आप(ﷺ) की बीवी उम्मे सलमा (ﷺ) की अबू सलमा से बेटी थीं।

24 - खारजी फिर्का कैसा होगा?

24بَابٌ فِي صِفَةِ الْمَارِقَةِ

2188 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "आख़िरी ज़माने में एक कौम निकलेगी जो नौ उम्र होंगे, बेवकूफ होंगे, कुरआन पढ़ेंगे, वह उनके हलकों से आगे नहीं

- 2188حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ عَيَّاشٍ، عَنْ عَاصِمٍ، عَنْ زِرٍّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَخْرُجُ فِي

آخِرِ الزَّمَانِ قَوْمٌ أَحْدَاثُ الأَسْنَانِ سُفَهَاءُ الأَحْلاَمِ، يَقْرَءُونَ القُرْآنَ، لاَ يُجَاوِزُ تَرَاقِيَهُمْ، يَقُولُونَ مِنْ قَوْلِ خَيْرِ البَرِيَّةِ، يَمْرُقُونَ مِنَ الدِّينِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ.

जाएगा, बेहतरीन इंसान[1] की बातें करेंगे दीन से ऐसे निकल जायेंगे जैसे तीर शिकार से निकलता है।"[2]

हसन: सहीह: इब्ने माजह: 168. मुसनद अहमद:1/404. अबू याला:5402

तौज़ीह: خَيْرِ الْبَرِيَّةِ : से मुराद नबी करीम(ﷺ) हैं यानी आप(ﷺ) की अहादीस लोगों को सुनायेंगे।

: مروق का माना गुज़र जाना यानी दीन से निकल जायेंगे इस लिए उनको मारिक़ा नाम दिया गया.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में अली, अबू सईद और अबू ज़र (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। और यह हदीस हसन सहीह है।

नीज़ कई अहादीस में नबी करीम(ﷺ) से उनकी निशानियाँ मर्वी हैं कि यह लोग क़ुरआन पढ़ेंगे लेकिन उनके गलों से आगे नहीं जाएगा और दीन से ऐसे निकल जायेंगे जैसे तीर निशाने से निकलता है, यह हरूरिया खारजी और दीगर खारजी लोग हैं।[1]

तौज़ीह: (1) हरूरिया खारजी वह थे जो जनाबे अली और मुआविया (رضي الله عنه) पर कुफ़्र के फ़तवे लगाते थे (मआज़ अल्लाह) फिर यह लोग हरूरा मक़ाम की तरफ़ चले गए।

بَابٌ فِي الأَثَرَةِ وَمَا جَاءَ فِيهِ 25

25 - असरा का बयान।

2189-حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ :حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، قَالَ : حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، عَنْ أُسَيْدِ بْنِ حُضَيْرٍ، أَنَّ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، اسْتَعْمَلْتَ فُلاَنًا وَلَمْ تَسْتَعْمِلْنِي. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ :إِنَّكُمْ سَتَرَوْنَ بَعْدِي أَثَرَةً فَاصْبِرُوا حَتَّى تَلْقَوْنِي عَلَى الحَوْضِ.

2189 - सय्यदना उसैद बिन हुज़ैर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि अंसार के एक आदमी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आपने फुलां शख़्स को आमिल बनाया है, आपने मुझे आमिल नहीं बनाया तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "यक़ीनन तुम मेरे बाद दूसरे लोगों[1] को तरजीह मिलती देखोगे तुम सब्र करना यहाँ तक कि तुम मुझे हौज़ पर मिलना।"

बुख़ारी: 3792. मुस्लिम: 1845. निसाई: 5383.

तौज़ीह: الأَثَرَة!: किसी को किसी पर तरजीह देना या मुक़द्दम करना यानी मेरे बाद ऐसे हुक्मरान आयेंगे जो तुम्हारे ऊपर दूसरे लोगों को तरजीह देंगे।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2190 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी करीम(ﷺ) ने फ़रमाया: "तुम मेरे बाद अन्क़रीब दूसरों को तरजीह दिया जाना और ऐसे काम देखोगे जो तुम्हें बुरे लगेंगे।" सहाबा ने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! (ऐसे हालात में) आप हमें क्या हुक्म देते हैं? आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "उन (हाकिमों) को उनका हक़ अदा करो और अपने हुक़ूक़ का अल्लाह से सवाल करो।"

2190 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ : حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ زَيْدِ بْنِ وَهْبٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ :إِنَّكُمْ سَتَرَوْنَ بَعْدِي أَثَرَةً وَأُمُورًا تُنْكِرُونَهَا قَالُوا :فَمَا تَأْمُرُنَا يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: أَدُّوا إِلَيْهِمْ حَقَّهُمْ وَسَلُوا اللَّهَ الَّذِي لَكُمْ.

बुख़ारी; 3603, मुस्लिम: 1843

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

26 - नबी करीम(ﷺ) ने अपने सहाबा को क़यामत तक रूनुमा होने वाले वाक़ियात की (बज़रिया वहि) ख़बर दी।

26 بَابُ مَا جَاءَ مَا أَخْبَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَصْحَابَهُ بِمَا هُوَ كَائِنٌ إِلَى يَوْمِ القِيَامَةِ

2191 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हमें अस्र की नमाज़ पढ़ाई फिर ख़ुत्बा देने के लिए खड़े हुए तो आप(ﷺ) ने क़यामत क़ायम होने तक कोई चीज़ न छोड़ी मगर उसकी ख़बर दे दी, जिनको उसे याद रखना था याद रखा और जिसे भुलाना था भूला दिया। आप(ﷺ) के बयान में यह था कि "दुनिया सर सब्ज़ मीठी है, अल्लाह तआला ने तुम्हें इसमें (पहले लोगों का) नायब बनाया है, वह देखता है कि तुम कैसे आमाल करते हो, ख़बरदार! दुनिया से बचो और औरतों से बचो। "और आप(ﷺ) के बयान में यह भी था कि लोगों का रोब और डर किसी आदमी को हक़ बात कहने से ना रोके

2191 - حَدَّثَنَا عِمْرَانُ بْنُ مُوسَى القَزَّازُ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ زَيْدِ بْنِ جُدْعَانَ القُرَشِيُّ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ قَالَ: صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمًا صَلاَةَ العَصْرِ بِنَهَارٍ ثُمَّ قَامَ خَطِيبًا فَلَمْ يَدَعْ شَيْئًا يَكُونُ إِلَى قِيَامِ السَّاعَةِ إِلاَّ أَخْبَرَنَا بِهِ، حَفِظَهُ مَنْ حَفِظَهُ، وَنَسِيَهُ مَنْ نَسِيَهُ، وَكَانَ فِيمَا قَالَ :إِنَّ الدُّنْيَا حُلْوَةٌ خَضِرَةٌ، وَإِنَّ اللَّهَ مُسْتَخْلِفُكُمْ فِيهَا فَنَاظِرٌ كَيْفَ تَعْمَلُونَ،

أَلاَ فَاتَّقُوا الدُّنْيَا وَاتَّقُوا النِّسَاءَ وَكَانَ فِيمَا قَالَ: أَلاَ لاَ يَمْنَعَنَّ رَجُلاً هَيْبَةُ النَّاسِ أَنْ يَقُولَ بِحَقٍّ إِذَا عَلِمَهُ قَالَ: فَبَكَى أَبُو سَعِيدٍ وَقَالَ: قَدْ وَاللَّهِ رَأَيْنَا أَشْيَاءَ فَهِبْنَا، فَكَانَ فِيمَا قَالَ : أَلاَ إِنَّهُ يُنْصَبُ لِكُلِّ غَادِرٍ لِوَاءٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِقَدْرِ غَدْرَتِهِ، وَلاَ غَدْرَةَ أَعْظَمُ مِنْ غَدْرَةِ إِمَامِ عَامَّةٍ يُرْكَزُ لِوَاؤُهُ عِنْدَ اسْتِهِ فَكَانَ فِيمَا حَفِظْنَا يَوْمَئِذٍ: أَلاَ إِنَّ بَنِي آدَمَ خُلِقُوا عَلَى طَبَقَاتٍ شَتَّى، فَمِنْهُمْ مَنْ يُولَدُ مُؤْمِنًا وَيَحْيَا مُؤْمِنًا وَيَمُوتُ مُؤْمِنًا، وَمِنْهُمْ مَنْ يُولَدُ كَافِرًا وَيَحْيَا كَافِرًا وَيَمُوتُ كَافِرًا، وَمِنْهُمْ مَنْ يُولَدُ مُؤْمِنًا وَيَحْيَا مُؤْمِنًا وَيَمُوتُ كَافِرًا، وَمِنْهُمْ مَنْ يُولَدُ كَافِرًا وَيَحْيَا كَافِرًا وَيَمُوتُ مُؤْمِنًا، أَلاَ وَإِنَّ مِنْهُمُ الْبَطِيءَ الْغَضَبِ سَرِيعَ الْفَيْءِ، وَمِنْهُمْ سَرِيعُ الْغَضَبِ سَرِيعُ الْفَيْءِ، فَتِلْكَ بِتِلْكَ، أَلاَ وَإِنَّ مِنْهُمْ سَرِيعَ الْغَضَبِ بَطِيءَ الْفَيْءِ، أَلاَ وَخَيْرُهُمْ بَطِيءُ الْغَضَبِ سَرِيعُ الْفَيْءِ، أَلاَ وَشَرُّهُمْ سَرِيعُ الْغَضَبِ بَطِيءُ الْفَيْءِ، أَلاَ وَإِنَّ مِنْهُمْ حَسَنَ الْقَضَاءِ حَسَنَ الطَّلَبِ، وَمِنْهُمْ سَيِّئُ الْقَضَاءِ حَسَنُ الطَّلَبِ، وَمِنْهُمْ حَسَنُ الْقَضَاءِ سَيِّئُ الطَّلَبِ، فَتِلْكَ بِتِلْكَ، أَلاَ وَإِنَّ مِنْهُمُ السَّيِّئَ الْقَضَاءِ السَّيِّئَ

जब वह उस हक़ को जानता है।" (रावी कहते हैं:) अबू सईद यह कहकर रो पड़े फ़रमाने लगे: अल्लाह की क़सम! हम ने बहुत सी ग़ैर शरई चीजें देखीं लेकिन हम कहने से डरे। और आप(ﷺ) के बयान में यह भी था कि "सुन लो! क़यामत के दिन हर धोकेबाज़ के फ़रेब के मुताबिक़ एक झंडा गाड़ा जाएगा और कोई धोका अवाम के हुक्मरान के धोके से बड़ा नहीं है। उसका झंडा उसकी सुरीन के पास लगाया जाएगा। "उस दिन हम ने जो याद किया उसमें यह भी था कि "आगाह रहो! बनू आदम मुख़्तलिफ़ तबक़ात पर पैदा हुए हैं: कुछ उनमें ईमान की हालत में पैदा हुए हैं, ईमान की हालत में ज़िंदा रहे और ईमान की हालत में मौत आई, उनमें से कुछ काफ़िर पैदा हुए कुफ्र की हालत में रहे और कुफ्र पर मौत आयी, उनमें से कुछ ईमान की हालत में पैदा हुए, ईमान की हालत में ज़िंदा रहे और कुफ्र की हालत में मरे, कुछ कुफ्र की हालत में पैदा हुए, कुफ्र की हालत में ज़िंदा रहे और ईमान की हालत में फौत हुए, ख़बरदार! उनमें कुछ को देर से गुस्सा आता है और जल्दी चला जाता है! उनमें से कुछ को जल्दी गुस्सा आता है और देर से जाता है, याद रखो! बेहतर वह है जिसे देर से गुस्सा आए और जल्दी चला जाए, और बुरा वह है जिसे जल्दी गुस्सा आए और देर से जाए, और सुनो! उनमें कुछ अच्छे तरीक़े से अदा और अच्छे तरीक़े से मुतालबा करने वाले हैं, कुछ बुरे तरीक़े से अदा और अच्छे तरीक़े से मुतालबा करने वाले हैं।

الطَّلَبِ، أَلاَ وَخَيْرُهُمُ الحَسَنُ القَضَاءِ الحَسَنُ الطَّلَبِ، أَلاَ وَشَرُّهُمْ سَيِّئُ القَضَاءِ سَيِّئُ الطَّلَبِ، أَلاَ وَإِنَّ الغَضَبَ جَمْرَةٌ فِي قَلْبِ ابْنِ آدَمَ، أَمَا رَأَيْتُمْ إِلَى حُمْرَةِ عَيْنَيْهِ وَانْتِفَاخِ أَوْدَاجِهِ، فَمَنْ أَحَسَّ بِشَيْءٍ مِنْ ذَلِكَ فَلْيَلْصَقْ بِالأَرْضِ قَالَ :وَجَعَلْنَا نَلْتَفِتُ إِلَى الشَّمْسِ هَلْ بَقِيَ مِنْهَا شَيْءٌ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَلاَ إِنَّهُ لَمْ يَبْقَ مِنَ الدُّنْيَا فِيمَا مَضَى مِنْهَا إِلاَّ كَمَا بَقِيَ مِنْ يَوْمِكُمْ هَذَا فِيمَا مَضَى مِنْهُ:

और कुछ अच्छे तरीक़े से अदा और अच्छे तरीक़े से मुतालबा करने वाले हैं। यह मामला तो बराबर है और याद रखो! उनमें बेहतर वह है जो अच्छे तरीक़े से अदा और अच्छे तरीक़े से मुतालबा करने वाला है और बुरा वह है जो बुरे तरीक़े से मुतालबा करे। ख़बरदार! गुस्सा इब्ने आदम के दिल में एक अंगारा है, क्या तुम उसकी आँखों को सुर्ख़ होने और उसकी रगें फूलने की तरफ़ नहीं देखते? जो शख़्स यह चीज़ महसूस करे वह ज़मीन से चिमट जाए।" रावी कहते हैं: हम सूरज की तरफ़ देखने लगे कि क्या कुछ हिस्सा बाकी रह गया है? तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "सुन लो! दुनिया गुज़रे हुए अय्याम (दिनों) के लिहाज़ से उतनी ही बाकी रह गई है जिस तरह तुम्हारा यह दिन गुज़रे हुए दिन से रह गया है।"

ज़ईफ़: इब्ने माजह: 2873,4000,4007. अबू याला:1101

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में मुग़ीरा बिन शोबा, अबू ज़ैद बिन अख़्तब, हुज़ैफ़ा और अबू मरियम (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है और उन्होंने ज़िक्र किया है कि नबी करीम(ﷺ) ने उन्हें वह वाक़ियात बताए हैं जो क़यामत क़ायम होने तक रूनुमा होने वाले थे और यह हदीस हसन सहीह है।

27بَابُ مَا جَاءَ فِي الشَّامِ

27 - शाम वालों का बयान।

2192 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ : حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ قُرَّةَ، عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا فَسَدَ أَهْلُ

2192 - मुआविया बिन कुर्रा अपने बाप से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "जब शाम वाले खराब हो जायेंगे फिर तुम में ख़ैर नहीं होगी (और) मेरी उम्मत के एक गिरोह की मदद की जाती रहेगी। जो उन्हें रुस्वा करना चाहता है वह उन्हें नुकसान नहीं

الشَّامِ فَلاَ خَيْرَ فِيكُمْ، لاَ تَزَالُ طَائِفَةٌ مِنْ أُمَّتِي مَنْصُورِينَ لاَ يَضُرُّهُمْ مَنْ خَذَلَهُمْ حَتَّى تَقُومَ السَّاعَةُ

पहुंचा सकेगा यहाँ तक कि क़यामत क़ायम हो जाएगी।"

सहीह: इब्ने माजह्:6. मुसनद अहमद: 3/436. दारमी: 2763.

वज़ाहत: इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (رحمه الله) कहते हैं कि अली बिन मदीनी ने फ़रमाया: यह अस्हाबुल हदीस होंगे।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में अब्दुल्लाह बिन हवाला, इब्ने उमर, ज़ैद बिन साबित और अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ यह हदीस हसन सहीह है।

अबू ईसा कहते हैं: हमें अहमद बिन मुनी ने वह कहते हैं, हमें यज़ीद बिन हारून ने उन्हें बहज़ बिन हकीम ने अपने बाप के ज़रिए अपने दादा से हदीस बयान की है वह कहते हैं: मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आप मुझे कहाँ का हुक्म देते हैं: आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "यहाँ और आप ने शाम की तरफ़ इशारा किया।"

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

28بَابُ مَا جَاءَ لاَ تَرْجِعُوا بَعْدِي كُفَّارًا يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ

28 - मेरे बाद काफ़िर न हो जाना कि एक दूसरे को क़त्ल करने लगो।

2193 - حَدَّثَنَا أَبُو حَفْصٍ عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا فُضَيْلُ بْنُ غَزْوَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ :قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ تَرْجِعُوا بَعْدِي كُفَّارًا يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ.

2193 - सय्यदना इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "मेरे बाद काफ़िर न हो जाना कि तुम एक दूसरे की गर्दनें मारने लगो।"

बुख़ारी: 1739. मुतव्वलन- मुसनद अहमद: 1.230.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बाब से अब्दुल्लाह बिन मसऊद, जरीर, इब्ने उमर, कुर्ज़ बिन अल्क़मा, वासिला बिन अस्क़ा और सुनाबिही (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ यह हदीस हसन सहीह है।

29 - एक ऐसा फ़ित्ना होगा जिसमें बैठा हुआ खड़े हुए से बेहतर होगा।

29بَابُ مَا جَاءَ أَنَّهُ تَكُونُ فِتْنَةٌ القَاعِدُ فِيهَا خَيْرٌ مِنَ القَائِمِ

2194 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عَيَّاشِ بْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ بُكَيْرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الأَشَجِّ، عَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيدٍ، أَنَّ سَعْدَ بْنَ أَبِي وَقَّاصٍ قَالَ عِنْدَ فِتْنَةِ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ: أَشْهَدُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّهَا سَتَكُونُ فِتْنَةٌ القَاعِدُ فِيهَا خَيْرٌ مِنَ القَائِمِ، وَالقَائِمُ خَيْرٌ مِنَ الْمَاشِي، وَالمَاشِي خَيْرٌ مِنَ السَّاعِي قَالَ: أَفَرَأَيْتَ إِنْ دَخَلَ عَلَيَّ بَيْتِي وَبَسَطَ يَدَهُ إِلَيَّ لِيَقْتُلَنِي؟ قَالَ: كُنْ كَابْنِ آدَمَ.

2194 - बुस्र बिन सईद कहते हैं कि साद बिन अबी वक़्क़ास (رضي الله عنه) ने उस्मान बिन अफ़्फ़ान (رضي الله عنه) के फित्ने के वक़्त कहा: मैं गवाही देता हूँ कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "यकीनन अन्क़रीब एक ऐसा फ़ित्ना होगा जिसमें बैठने वाला खड़े होने वाले से बेहतर होगा, और खड़ा होने वाला, चलने वाले और चलने वाला दौड़ने वाले से बेहतर होगा।" रावी ने कहा: आप यह बताइए कि अगर कोई शख़्स मेरे घर में दाख़िल हो कर मुझे क़त्ल करने के लिए अपना हाथ बढ़ाए? आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "तुम आदम के बेटे (हाबील) की तरह बन जाना।"

सहीह: अबू दाऊद:4257. मुसनद अहमद: 1/185. अबू याला:750

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में अबू हुरैरा, खब्बाब बिन अरत, अबू बक्र, इब्ने मसऊद, अबू वाकिद, अबू मूसा और खर्शा (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ यह हदीस हसन है और बअ़ज़ ने इस हदीस को लैस बिन साद से रिवायत करते वक़्त उसकी सनद में एक आदमी का इजाफ़ा किया है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: साद (رضي الله عنه) की नबी करीम(ﷺ) से रिवायतकर्दा हदीस एक और सनद से भी मर्वी है।

30 - अन्क़रीब अंधेरी रात के टुकड़ों की तरह फित्ने उठेंगे।

30بَابُ مَا جَاءَ سَتَكُونُ فِتَنٌ كَقِطَعِ اللَّيْلِ الْمُظْلِمِ

2195 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ العَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنِ العَلَاءِ بْنِ عَبْدِ

2195 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "उन

الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: بَادِرُوا بِالأَعْمَالِ فِتَنًا كَقِطَعِ اللَّيْلِ الْمُظْلِمِ يُصْبِحُ الرَّجُلُ مُؤْمِنًا وَيُمْسِي كَافِرًا، وَيُمْسِي مُؤْمِنًا وَيُصْبِحُ كَافِرًا، يَبِيعُ دِينَهُ بِعَرَضٍ مِنَ الدُّنْيَا.

फ़ित्नों से पहले आमाल करने में जल्दी करो जो अंधेरी रात के टुकड़ों की तरह होंगे, आदमी सुबह को मोमिन होगा और शाम को काफ़िर (इसी तरह) शाम को मोमिन होगा और सुबह को काफ़िर उन में से हर शख़्स अपने दीन को दुनिया के कुछ सामान के एवज़ बेच देगा।"

सहीह: मुस्लिम: 118. मुसनद अहमद: 2/303. इब्ने हिब्बान: 6704.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2196- حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ :حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ هِنْدٍ بِنْتِ الحَارِثِ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اسْتَيْقَظَ لَيْلَةً فَقَالَ :سُبْحَانَ اللهِ، مَاذَا أُنْزِلَ اللَّيْلَةَ مِنَ الفِتْنَةِ مَاذَا أُنْزِلَ مِنَ الخَزَائِنِ؟ مَنْ يُوقِظُ صَوَاحِبَ الحُجُرَاتِ؟ يَا رُبَّ كَاسِيَةٍ فِي الدُّنْيَا عَارِيَةٌ فِي الآخِرَةِ.

2196 - सय्यदा उम्मे सलमा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि एक रात नबी करीम(ﷺ) बेदार हुए तो आप ने फ़रमाया: "सुब्हान अल्लाह आज रात कितने फ़ित्ने उतारे गए? कितने ख़ज़ाने उतारे गए? हुजे वालियों को कौन जगायेगा? दुनिया में कितनी लिबास पहनने वाली औरतें ऐसी हैं जो आख़िरत में नंगी होंगी।"(1)

सहीह: बुख़ारी: 115. 18290. मुसनद अहमद: 6/297

तौज़ीह: (1) मतलब यह कि दुनिया में ऐसा लिबास पहनती हैं जो सतर के तकाज़े को पूरा नहीं करता जिस तरह कि आज के दौर में बहुत बारीक, मुख़्तसर और चुस्त लिबास पहना जाता है जो दुनिया में ही जिस्म को नहीं ढाँपता तो ऐसी औरतें क़यामत के दिन महरूम ही रहेंगी। अल्लाह बेहतर जानता है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2197- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ سَعْدِ بْنِ سِنَانٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: تَكُونُ بَيْنَ يَدَيِ السَّاعَةِ فِتَنٌ كَقِطَعِ اللَّيْلِ الْمُظْلِمِ يُصْبِحُ

2197 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "क़यामत से पहले अंधेरी रात के टुकड़ों की तरह फित्ने बरपा होंगे, आदमी उन में ईमान की हालत में सुबह करेगा और कुफ्र की हालत में शाम और शाम को मोमिन होगा

الرَّجُلُ فِيهَا مُؤْمِنًا وَيُمْسِي كَافِرًا، وَيُمْسِي مُؤْمِنًا وَيُصْبِحُ كَافِرًا، يَبِيعُ أَقْوَامٌ دِينَهُمْ بِعَرَضٍ مِنَ الدُّنْيَا.

जबकि सुबह को काफ़िर, एक कौम अपने दीन को दुनिया के कुछ सामान के एवज़ बेच देगी।"

सहीह: अबू याला: 4260

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में अबू हुरैरा, जुन्दुब, नौमान बिन बशीर और अबू मूसा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ यह हदीस इस सनद से ग़रीब है।

2198- حَدَّثَنَا صَالِحُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ هِشَامٍ، عَنِ الحَسَنِ قَالَ :كَانَ يَقُولُ فِي هَذَا الحَدِيثِ: يُصْبِحُ الرَّجُلُ مُؤْمِنًا وَيُمْسِي كَافِرًا، وَيُمْسِي مُؤْمِنًا وَيُصْبِحُ كَافِرًا قَالَ: يُصْبِحُ الرَّجُلُ مُحَرِّمًا لِدَمِ أَخِيهِ وَعِرْضِهِ وَمَالِهِ وَيُمْسِي مُسْتَحِلًّا لَهُ، وَيُمْسِي مُحَرِّمًا لِدَمِ أَخِيهِ وَعِرْضِهِ وَمَالِهِ وَيُصْبِحُ مُسْتَحِلًّا لَهُ.

2198 - हिशाम कहते हैं कि हसन बसरी इस हदीस में कहा करते थे, "सुबह को मोमिन होगा और शाम को काफ़िर, या शाम को मोमिन होगा और सुबह को काफ़िर।" इसका मतलब यह है कि आदमी सुबह के वक़्त अपने मुसलमान भाई के खून, इज्ज़त और माल को हराम समझेगा और शाम को उसे हलाल जानेगा (इसी तरह) शाम को अपने भाई का खून, इज्ज़त और माल हराम समझेगा और सुबह को उसे हलाल जानेगा।

सहीह अन हसन: मुहक्किक़ ने इसकी तख़रीज ज़िक्र नहीं की।

2199- حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الخَلَّالُ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ، عَنْ أَبِيهِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَرَجُلٌ سَأَلَهُ فَقَالَ: أَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ عَلَيْنَا أُمَرَاءُ يَمْنَعُونَا حَقَّنَا وَيَسْأَلُونَا حَقَّهُمْ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: اسْمَعُوا وَأَطِيعُوا فَإِنَّمَا عَلَيْهِمْ مَا حُمِّلُوا وَعَلَيْكُمْ مَا حُمِّلْتُمْ.

2199 - सय्यदना वाइल बिन हुज्र (رضي الله عنه) से रिवायत है कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह(ﷺ) से सवाल किया था कि आप बताइए अगर हमारे ऊपर ऐसे हाकिम बन जाएँ जो हमें हमारे हक़ से रोकें और हम अपने हुकूक़ का मुतालबा करें? तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "तुम बात को सुनो और उनकी इताअत करो। उन के ऊपर वही चीज़ लाजिम है जो उनको सौंपी गई है। "यानी उनका हिसाब अल्लाह के जिम्मे है तुम अपनी ज़िम्मेदारी और फ़र्ज़ निभाओ।

सहीह: मुस्लिम: 1846.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

31 - क़त्ले आम का दौर और उसमें की गई इबादत।

31بَابُ مَا جَاءَ فِي الهَرْجِ وَالعِبَادَةِ فِيهِ

2200- حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ شَقِيقِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ مِنْ وَرَائِكُمْ أَيَّامًا يُرْفَعُ فِيهَا العِلْمُ وَيَكْثُرُ فِيهَا الهَرْجُ، قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ، مَا الهَرْجُ؟ قَالَ: القَتْلُ.

2200 - सय्यदना अबू मूसा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "तुम्हारे आगे कुछ ऐसे अय्याम आ रहे हैं जिनमें इल्म को उठा लिया जाएगा और उनमें हर्ज ज़्यादा हो जाएगा" सहाबा ने अर्ज़ की: ऐ अल्लाह के रसूल! हर्ज क्या चीज़ है? आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "क़त्ल".

बुख़ारी:7063. मुस्लिम: 2672. इब्ने माजह:4051.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में अबू हुरैरा, ख़ालिद बिन वलीद और माकिल बिन यसार (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है नीज़ यह हदीस हसन सहीह है।

2201- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنِ الْمُعَلَّى بْنِ زِيَادٍ، رَدَّهُ إِلَى مُعَاوِيَةَ بْنِ قُرَّةَ، رَدَّهُ إِلَى مَعْقِلِ بْنِ يَسَارٍ، رَدَّهُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: العِبَادَةُ فِي الهَرْجِ كَالهِجْرَةِ إِلَيَّ.

2201 - सय्यदना माकिल बिन यसार (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: "क़त्ले आम के दौर में इबादत करना मेरी तरफ़ हिजरत करने की तरह है।"

मुस्लिम: 2948. इब्ने माजह: 3985

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह ग़रीब है। हम इसे हम्माद बिन ज़ैद के ज़रिए ही मुअ़ल्ला बिन असद से जानते हैं।

32 - जब मेरी उम्मत में तलवार रख दी जायेगी तो क़यामत तक उठाई नहीं जाएगी।

32 بَابُ حديث إِذَا وُضِعَ السَّيْفُ فِي أُمَّتِي لَمْ يُرْفَعْ عَنْهَا إِلَى يَوْمِ القِيَامَةِ.

2202- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي قِلَابَةَ، عَنْ أَبِي

2202 - सय्यदना सौबान (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "जब मेरी उम्मत में तलवार रख दी जायेगी तो

أَسْمَاءَ، عَنْ ثَوْبَانَ قَالَ :قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا وُضِعَ السَّيْفُ فِي أُمَّتِي لَمْ يُرْفَعْ عَنْهَا إِلَى يَوْمِ القِيَامَةِ .

क़यामत के दिन तक उससे उठाई (यानी हटाई) नहीं जायेगी।"

सहीह: अबू दाऊद: 4252. इब्ने माजह: 3952. मुसनद अहमद:5/278.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

33بَابُ مَا جَاءَ فِي اتِّخَاذِ سَيْفٍ مِنْ خَشَبٍ فِي الفِتْنَةِ

33-फ़ित्ने के दौर में लकड़ी की तलवार रखना

2203- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ :حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُبَيْدٍ، عَنْ عُدَيْسَةَ بِنْتِ أُهْبَانَ بْنِ صَيْفِيٍّ الغِفَارِيِّ، قَالَتْ: جَاءَ عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ إِلَى أَبِي فَدَعَاهُ إِلَى الخُرُوجِ مَعَهُ، فَقَالَ لَهُ أَبِي: إِنَّ خَلِيلِي وَابْنَ عَمِّكَ عَهِدَ إِلَيَّ إِذَا اخْتَلَفَ النَّاسُ أَنْ أَتَّخِذَ سَيْفًا مِنْ خَشَبٍ فَقَدْ اتَّخَذْتُهُ، فَإِنْ شِئْتَ خَرَجْتُ بِهِ مَعَكَ قَالَتْ: فَتَرَكَهُ.

2203 - उदैसा बिन्ते उह्बान बिन सैफ़ी गिफ़ारी (رضي الله عنها) रिवायत करती है कि अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) ने मेरे वालिद के पास आकर उन्हें अपने साथ निकलने की दावत दी, तो मेरे वालिद ने उन से कहा: बेशक मेरे दोस्त और आपके चचा के बेटे (मुहम्मद(ﷺ)) ने मुझे वसीयत की थी कि जब लोगों का इख़्तिलाफ़ हो जाए तो तुम लकड़ी की तलवार बना लेना, चुनाँचे मैंने वह बना ली है। अगर आप चाहते हैं तो मैं वह लेकर आप के साथ चलता हूँ। कहती हैं: फिर उन्होंने उनको छोड़ दिया।

सहीह: इब्ने माजह:3960. मुसनद अहमद:5/69

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में मुहम्मद बिन मस्लमा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है और यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे अब्दुल्लाह बिन उबैद की सनद से ही जानते हैं।

2204- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَهْلُ بْنُ حَمَّادٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جُحَادَةَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ ثَرْوَانَ، عَنْ هُزَيْلِ بْنِ شُرَحْبِيلَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ فِي الفِتْنَةِ :كَسِّرُوا

2204 - सय्यदना अबू मूसा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी करीम(ﷺ) ने फ़ित्ने के बारे में फ़रमाया: "इसमें तुम अपनी कमानों को तोड़ दो अपनी कमानों की रस्सियाँ काट दो, अपने घरों के अन्दर बैठे रहो और आदम के बेटे (हाबील) की तरह बन जाओ।"

सहीह: अबू दाऊद: 4259. इब्ने माजह:3961. मुसनद अहमद: 4/408.

فِيهَا قَسِيَّكُمْ، وَقَطِّعُوا فِيهَا أَوْتَارَكُمْ، وَالزَمُوا فِيهَا أَجْوَافَ بُيُوتِكُمْ، وَكُونُوا كَابْنِ آدَمَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है। और अब्दुर्रहमान बिन सर्वान, अबू कैस अल-औदी ही हैं।

34 - क़यामत की निशानियाँ।

34 بَابُ مَا جَاءَ فِي أَشْرَاطِ السَّاعَةِ

2205 - क़तादा कहते हैं कि अनस बिन मालिक ने फ़रमाया: मैं तुम्हें एक हदीस बयान करता हूँ जो मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुनी थी मेरे बाद तुम्हें कोई भी यह नहीं कहेगा कि उसने रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुनी थी, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "बेशक क़यामत की निशानियाँ यह हैं कि इल्म उठ जाएगा, जिहालत आम हो जाएगी, ज़िना आम हो जाएगा, शराब पी जाएगी, औरतें ज़्यादा और मर्द कम हो जायेंगे यहाँ तक कि पच्चास औरतों का एक कफ़ील निगरान) होगा।"

बुख़ारी:80. मुस्लिम: 2671. इब्ने माजह:4045

2205- حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا النَّضْرُ بْنُ شُمَيْلٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّهُ قَالَ: أُحَدِّثُكُمْ حَدِيثًا سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لاَ يُحَدِّثُكُمْ أَحَدٌ بَعْدِي أَنَّهُ سَمِعَهُ مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ مِنْ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ: أَنْ يُرْفَعَ العِلْمُ، وَيَظْهَرَ الجَهْلُ، وَيَفْشُوَ الزِّنَا، وَتُشْرَبَ الخَمْرُ، وَيَكْثُرَ النِّسَاءُ، وَيَقِلَّ الرِّجَالُ حَتَّى يَكُونَ لِخَمْسِينَ امْرَأَةٍ قَيِّمٌ وَاحِدٌ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस बारे में अबू मूसा और अबू हुरैरा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ यह हदीस हसन सहीह है।

35 - हर आने वाला दौर पहले से बदतर होगा।

35 بَابٌ مِنْهُ لا يأتي زمان إلا الذي بعده شر منه.

2206 - ज़ुबैर बिन अदी कहते हैं: हम अनस बिन मालिक (ﷺ) के पास गए और उन से शिकायत की कि हज्जाज की तरफ़ से हमें तक्लीफ़ें मिली हैं तो उन्होंने फ़रमाया: हर

2206- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ سُفْيَانَ الثَّوْرِيِّ، عَنِ الزُّبَيْرِ بْنِ عَدِيٍّ، قَالَ: دَخَلْنَا عَلَى أَنَسِ بْنِ

مَالِكٍ فَشَكَوْنَا إِلَيْهِ مَا نَلْقَى مِنَ الحَجَّاجِ، فَقَالَ: مَا مِنْ عَامٍ إِلاَّ وَالَّذِي بَعْدَهُ شَرٌّ مِنْهُ حَتَّى تَلْقَوْا رَبَّكُمْ، سَمِعْتُ هَذَا مِنْ نَبِيِّكُمْ ﷺ

साल के बाद आने वाला साल पहले साल से बदतर होगा यहाँ तक कि तुम अपने रब से जा मिलो। मैंने यह बात तुम्हारे नबी करीम(ﷺ) से सुनी थी।

सहीह: बुख़ारी: 7068. मुसनद अहमद:3/ 117

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2207- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ حُمَيْدٍ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى لاَ يُقَالَ فِي الأَرْضِ: اللَّهُ اللَّهُ.

2207 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "क़यामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं होगी जब तक ज़मीन में अल्लाह अल्लाह कहा जाना ख़त्म न हो जाए।"

मुस्लिम: 148. मुसनद अहमद: 107

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

अबू ईसा कहते हैं, हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने उन्हें ख़ालिद बिन हारिस ने बवास्ता हुमैद, अनस (رضي الله عنه) से ऐसी ही हदीस बयान की है लेकिन वह मर्फ़ू नहीं है और यह पहली हदीस ज़्यादा सहीह है।

36بَابٌ مِنْهُ فِي طرح الأرض مع في بطنها من الكنوز.

36 - ज़मीन अपने अन्दर के ख़ज़ाने निकाल देगी।

2208- حَدَّثَنَا وَاصِلُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: تَقِيءُ الأَرْضُ أَفْلاَذَ كَبِدِهَا أَمْثَالَ الأُسْطُوَانِ مِنَ الذَّهَبِ وَالفِضَّةِ، قَالَ: فَيَجِيءُ السَّارِقُ فَيَقُولُ: فِي مِثْلِ هَذَا قُطِعَتْ يَدِي، وَيَجِيءُ

2208 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "ज़मीन अपने जिगर के टुकड़ों को सोने और चांदी के सुतूनों की सूरत में बाहर निकाल देगी, चोर आकर कहेगा: इसी चीज़ के लिए मेरा हाथ काटा गया, क़ातिल आकर कहेगा: इसी के लिए मैंने क़त्ल किया, और रिश्तेदारी तोड़ने वाला आकर कहेगा: इसी के ख़ातिर मैंने अपनी रिश्तेदारी तोड़ी। फिर वह उसे छोड़ देंगे। उससे कुछ भी नहीं लेंगे।

الْقَاتِلُ فَيَقُولُ :فِي هَذَا قَتَلْتُ، وَيَجِيءُ الْقَاطِعُ فَيَقُولُ: فِي هَذَا قَطَعْتُ رَحِمِي، ثُمَّ يَدَعُونَهُ فَلاَ يَأْخُذُونَ مِنْهُ شَيْئًا.

सहीह: मुस्लिम: 1013. अबू याला:6171. इब्ने हिबान: 6297

तौज़ीह: أَفْلاَذ : فلذ की जमा है जिसका माना टुकड़ा यानी ज़मीन अपने ख़ज़ानों को बाहर निकाल देगी जैसे कि अल्लाह का फ़रमान है। و أخرجت الارض اثقالها : (अज़-ज़िल ज़ाल: 2)

37بَابٌ مِنْهُ أَسعد الناس لكع ابن لكع

37 - ख़ुशबख़्त आदमी लुका ब लुका होगा।

2209- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ العَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ أَبِي عَمْرٍو (ح) وحَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ أَبِي عَمْرٍو، عَنْ عَبْدِ اللهِ وَهُوَ ابْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الأَنْصَارِيُّ الأَشْهَلِيُّ، عَنْ حُذَيْفَةَ بْنِ اليَمَانِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَكُونَ أَسْعَدَ النَّاسِ بِالدُّنْيَا لُكَعُ ابْنُ لُكَعٍ .

2209 - सय्यदना हुज़ैफा बिन यमान (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "क़यामत क़ायम नहीं होगी यहाँ तक कि दुनिया के लिहाज़ से लोगों में सब से ख़ुशबख़्त आदमी लुका इब्ने लुका[1] न हो जाए।"

सहीह: मुसनद अहमद:5/389

तौज़ीह: لُكَعُ ابْنُ لُكَعٍ. : लुका कमीने और घटिया शख़्स को कहते हैं। यानी दुनिया का माल उसकी हुक्मरानी नस्ल दर नस्ल कमीने और बेवक़ूफों को मिल जाएगी।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है हम इसे अम्र बिन अबी अम्र की हदीस से जानते हैं।

38بَابُ مَا جَاءَ فِي عَلاَمَةِ حُلُولِ الْمَسْخِ وَالخَسْفِ

38 - ख़स्फ़ व मस्ख़ के अस्बाब।

2210- حَدَّثَنَا صَالِحُ بْنُ عَبْدِ اللهِ التِّرْمِذِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الفَرَجُ بْنُ فَضَالَةَ أَبُو فَضَالَةَ الشَّامِيُّ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ

2210 - सय्यदना अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "मेरी उम्मत जब पन्द्रह काम करेगी उस पर मुसीबतें टूट पड़ेंगी। अर्ज़ की गईः ऐ

عَمْرِو بْنِ عَلِيٍّ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا فَعَلَتْ أُمَّتِي خَمْسَ عَشْرَةَ خَصْلَةً حَلَّ بِهَا الْبَلَاءُ فَقِيلَ: وَمَا هُنَّ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: إِذَا كَانَ الْمَغْنَمُ دُوَلاً، وَالأَمَانَةُ مَغْنَمًا، وَالزَّكَاةُ مَغْرَمًا، وَأَطَاعَ الرَّجُلُ زَوْجَتَهُ، وَعَقَّ أُمَّهُ، وَبَرَّ صَدِيقَهُ، وَجَفَا أَبَاهُ، وَارْتَفَعَتِ الأَصْوَاتُ فِي الْمَسَاجِدِ، وَكَانَ زَعِيمُ الْقَوْمِ أَرْذَلَهُمْ، وَأُكْرِمَ الرَّجُلُ مَخَافَةَ شَرِّهِ، وَشُرِبَتِ الْخُمُورُ، وَلُبِسَ الْحَرِيرُ، وَاتُّخِذَتِ الْقَيْنَاتُ وَالْمَعَازِفُ، وَلَعَنَ آخِرُ هَذِهِ الأُمَّةِ أَوَّلَهَا، فَلْيَرْتَقِبُوا عِنْدَ ذَلِكَ رِيحًا حَمْرَاءَ أَوْ خَسْفًا وَمَسْخًا.

अल्लाह के रसूल! वह क्या काम हैं? आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "जब गनीमत जाती दौलत बन जाएगी, अमानत गनीमत समझी जाएगी, ज़कात जुर्माना लगेगी, आदमी अपनी बीवी की इताअत और मां की नाफ़रमानी करेगा, अपने दोस्त से नेकी और बाप से बेवफाई करेगा। मसाजिद में आवाज़ें बलंद हो जायेंगी, लोगों का चौधरी घटिया तरीन आदमी, होगा, आदमी के शर के डर से उसकी इज्ज़त की जाएगी, शराबें पी जायेंगी, रेशम पहना जाएगा, गाने वालियां और आलाते मौसीक़ी रखे जायेंगे, और इस उम्मत के आख़िर वाले पहले लोगों को लानत करेंगे तो उस वक़्त लोग सुर्ख आंधी, खस्फ़ और मस्ख़ का इन्तिज़ार करें।"

ज़ईफ़

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे अली बिन अबी तालिब से इसी तरीक़ से ही जानते हैं और हम फ़रज बिन फज़ाला के अलावा किसी को नहीं जानते जिस ने इस हदीस को यह्या बिन सईद अंसारी से रिवायत किया हो और फ़रज बिन फज़ाला के बारे में बअज़ मुहद्दिसीन ने जरह करते हुए उसके हाफ़िज़े की वजह से उसे ज़ईफ़ कहा है। उससे वकीअ और दीगर अइम्म-ए-हदीस ने रिवायत की है।

2211 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَزِيدَ الْوَاسِطِيُّ، عَنِ الْمُسْتَلِمِ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ رُمَيْحٍ الْجُذَامِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا اتُّخِذَ الْفَيْءُ دُوَلاً، وَالأَمَانَةُ مَغْنَمًا، وَالزَّكَاةُ مَغْرَمًا، وَتُعُلِّمَ لِغَيْرِ الدِّينِ، وَأَطَاعَ

2211 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "जब माले ग़नीमत को जाती दौलत बना लिया जाएगा, अमानत को ग़नीमत, ज़कात को जुर्माना समझा जाएगा, दीन के अलावा और उलूम सीखे जायेंगे, आदमी अपनी बीवी की इताअत और मां की नाफ़रमानी करेगा, अपने दोस्त को करीब करेगा और बाप को दूर करेगा,

الرَّجُلُ امْرَأَتَهُ، وَعَقَّ أُمَّهُ، وَأَدْنَى صَدِيقَهُ، وَأَقْصَى أَبَاهُ، وَظَهَرَتِ الأَصْوَاتُ فِي الْمَسَاجِدِ، وَسَادَ القَبِيلَةَ فَاسِقُهُمْ، وَكَانَ زَعِيمُ القَوْمِ أَرْذَلَهُمْ، وَأُكْرِمَ الرَّجُلُ مَخَافَةَ شَرِّهِ، وَظَهَرَتِ القَيْنَاتُ وَالمَعَازِفُ، وَشُرِبَتِ الخُمُورُ، وَلَعَنَ آخِرُ هَذِهِ الأُمَّةِ أَوَّلَهَا، فَلْيَرْتَقِبُوا عِنْدَ ذَلِكَ رِيحًا حَمْرَاءَ، وَزَلْزَلَةً وَخَسْفًا وَمَسْخًا وَقَذْفًا وَآيَاتٍ تَتَابَعُ كَنِظَامٍ بَالٍ قُطِعَ سِلْكُهُ فَتَتَابَعَ.

मस्जिदों में आवाज़ें बलंद हो जायेंगी, क़बीला का सरदार उनका फासिक आदमी होगा। लोगों का चौधरी उनका घटिया आदमी बन जाएगा, आदमी के शर के डर से उसकी इज्ज़त की जाएगी, गाने वालियां और आलाते मौसीक़ी आम हो जायेंगे, शराबें पी जायेंगी, इस उम्मत के आख़िरी लोग पहले लोगों पर लानत करेंगे तो वह उस वक़्त सुर्ख़ आँधियों, ज़लज़ले, खस्फ़, मस्ख़, पत्थरों की बारिश और क़यामत की ऐसी निशानियों का इन्तिज़ार करें जो पे दर पे आयेंगी जैसे किसी लड़ी का धागा टूट जाए तो वह मोती पे दर पे गिर जाते हैं।"

ज़ईफ़

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में अली (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है और यह हदीस ग़रीब है। हम इसे इसी सनद से ही जानते हैं।

2212- حَدَّثَنَا عَبَّادُ بْنُ يَعْقُوبَ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ القُدُّوسِ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ هِلاَلِ بْنِ يَسَافٍ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: فِي هَذِهِ الأُمَّةِ خَسْفٌ وَمَسْخٌ وَقَذْفٌ، فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ: يَا رَسُولَ اللهِ، وَمَتَى ذَاكَ؟ قَالَ: إِذَا ظَهَرَتِ القَيْنَاتُ وَالمَعَازِفُ وَشُرِبَتِ الخُمُورُ.

2212 - सय्यदना इमरान बिन हुसैन (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "इस उम्मत में खस्फ़, मस्ख़ और क़ज़्फ़ होगा।" मुसलमानों में से एक आदमी ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! यह कब होगा? आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "जब गाने वालियां और आलाते मौसीक़ी आम हो जायेंगे, शराबें पी जायेंगी।"

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। और यह हदीस आमश से बवास्ता अब्दुर्रहमान बिन साबित, नबी करीम(ﷺ) से मुर्सल भी मर्वी है।

‏39بَابُ مَا جَاءَ فِي قَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: بُعِثْتُ أَنَا وَالسَّاعَةُ كَهَاتَيْنِ يَعْنِي السَّبَّابَةَ وَالوُسْطَى

39 - नबी करीम(ﷺ) का फ़रमान: मैं और क़यामत इन दो उँगलियों यानी शहादत और दर्मियानी उंगली की तरह भेजे गए हैं।

‏2213- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُمَرَ بْنِ هَيَّاجٍ الأَسَدِيُّ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الأَرْحَبِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدَةُ بْنُ الأَسْوَدِ، عَنْ مُجَالِدٍ، عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ، عَنِ الْمُسْتَوْرِدِ بْنِ شَدَّادٍ الفِهْرِيِّ، رَوَى عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ :بُعِثْتُ فِي نَفَسِ السَّاعَةِ فَسَبَقْتُهَا كَمَا سَبَقَتْ هَذِهِ هَذِهِ لأُصْبُعَيْهِ السَّبَّابَةِ وَالوُسْطَى.

2213 - सय्यदना मुस्तौरिद बिन शद्दाद फिहरी (ﷺ) नबी करीम(ﷺ) से रिवायत करते हैं कि आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "मैं नफ़्से[1] क़यामत में भेजा गया हूँ फिर मैं उस से सबक़त ले गया जिस तरह यह शहादत वाली उंगली दर्मियान वाली से सबक़त ले गई है।"

ज़ईफ

तौज़ीह: (1) नफ़्से क़यामत से मुराद यह है कि क़यामत के करीब और वाक़ेअ होने के वक़्त।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस मुसतौरिद बिन शद्दाद फिहरी (ﷺ) के तरीक़ से ग़रीब है। हम इसे इसी सनद से जानते हैं।

‏2214- حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ : حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: بُعِثْتُ أَنَا وَالسَّاعَةُ كَهَاتَيْنِ وَأَشَارَ أَبُو دَاوُدَ بِالسَّبَّابَةِ وَالوُسْطَى فَمَا فَضَّلَ إِحْدَاهُمَا عَلَى الأُخْرَى؟.

2214 - सय्यदना अनस (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "मैं और क़यामत इन (उँगलियों) की तरह भेजे गए हैं" - अबू दाऊद ने शहादत वाली और दर्मियानी उंगली के साथ इशारा किया, फिर एक दूसरे पर फ़ज़ीलत न दी।

बुख़ारी: 6504, मुस्लिम:2951

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

40 - तुर्कों से लड़ाई का बयान

40بَابُ مَا جَاءَ فِي قِتَالِ التُّرْكِ

2215 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: "क़यामत क़ायम न होगी यहाँ तक कि तुम ऐसी कौम से लड़ाई कर लो जिनके जूते बालों के होंगे, और क़यामत क़ायम नहीं होगी यहाँ तक कि तुम ऐसी कौम के साथ लड़ाई कर लो जिन के चेहरे तह ब तह ढालों की तरह होंगे।"

बुख़ारी: 2929. मुस्लिम:2912. अबू दाऊद: 4302. इब्ने माजह:4096.

2215- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْمَخْزُومِيُّ، وَعَبْدُ الجَبَّارِ بْنُ العَلاَءِ، قَالاَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيِّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تُقَاتِلُوا قَوْمًا نِعَالُهُمُ الشَّعَرُ، وَلاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تُقَاتِلُوا قَوْمًا كَأَنَّ وُجُوهَهُمُ الْمَجَانُّ الْمُطْرَقَةُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस बारे में अबू बक्र सिद्दीक़, बुरैदा, अबू सईद, अम्र बिन तग़्लिब और मुआविया (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है और यह हदीस हसन सहीह है।

41 - जब किस्रा चला जाएगा फिर दूसरा किस्रा नहीं आयेगा।

41 بَابُ مَا جَاءَ إِذَا ذَهَبَ كِسْرَى فَلاَ كِسْرَى بَعْدَهُ

2216 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "जब किस्रा[1] हलाक हो जाएगा फिर उस के बाद (कोई दूसरा) किस्रा नहीं होगा और जब कैसर हलाक हो जाएगा फिर इस के बाद कोई कैसर नहीं होगा, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! तुम ज़रूर उनके ख़ज़ाने अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करोगे।"

बुख़ारी:3027. मुस्लिम: 2918.

2216- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيِّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا هَلَكَ كِسْرَى فَلاَ كِسْرَى بَعْدَهُ، وَإِذَا هَلَكَ قَيْصَرُ فَلاَ قَيْصَرَ بَعْدَهُ، وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَتُنْفَقَنَّ كُنُوزُهُمَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ.

तौज़ीह: (1) फारस के बादशाह को किस्रा और रूम के बादशाह को कैसर कहा जाता था और यह दोनों बहुत बड़ी ताकतें थीं। लेकिन इस्लाम के आने के बाद उनका गुरूर ख़ाक में मिल गया और अल्लाह ने यह सल्तनतें मुसलमानों के नाम कर दी।

42 - हिजाज़ की तरफ़ से आग निकलने से पहले क़यामत नहीं आयेगी।

42 بَابُ مَا جَاءَ لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَخْرُجَ نَارٌ مِنْ قِبَلِ الحِجَازِ

2217- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ :حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ مُحَمَّدٍ البَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي قِلَابَةَ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: سَتَخْرُجُ نَارٌ مِنْ حَضْرَمَوْتَ أَوْ مِنْ نَحْوِ بَحْرِ حَضْرَمَوْتَ قَبْلَ يَوْمِ القِيَامَةِ تَحْشُرُ النَّاسَ قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ، فَمَا تَأْمُرُنَا؟ قَالَ: عَلَيْكُمْ بِالشَّامِ.

2217 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर(رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "अन्क़रीब क़यामत से पहले हजरे मौत या हजरे मौत के समन्दर की तरफ़ से आग निकलेगी जो लोगों को जमा कर देगी" सहाबा ने कहा: ''ऐ अल्लाह के रसूल! फिर आप क्या हुक्म देते हैं? आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "तुम शाम को इख़्तियार कर लेना।

सहीह: इब्ने अबी शैबा: 15/78. मुसनद अहमद: 2/8. इब्ने हिब्बान:7305

43 - नबुव्वत के झूठे दावेदारों के निकलने से पहले क़यामत नहीं आयेगी।

43 بَابُ مَا جَاءَ لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَخْرُجَ كَذَّابُونَ

2218- حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ : حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَنْبَعِثَ دَجَّالُونَ كَذَّابُونَ قَرِيبٌ مِنْ ثَلَاثِينَ كُلُّهُمْ يَزْعُمُ أَنَّهُ رَسُولُ اللَّهِ.

2218 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर(رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "क़यामत तब तक क़ायम नहीं होगी जब तक तीस के करीब झूठे कज्ज़ाब न आ जाएं, हर एक यह दावा करे कि वह अल्लाह का पैगम्बर है।"

बुख़ारी: 3609. मुस्लिम: 2923.

2219 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي قِلَابَةَ، عَنْ أَبِي

2219 - सय्यदना सौबान (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया:

أَسْمَاءَ الرَّحَبِيِّ، عَنْ ثَوْبَانَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَلْحَقَ قَبَائِلُ مِنْ أُمَّتِي بِالْمُشْرِكِينَ، وَحَتَّى يَعْبُدُوا الأَوْثَانَ، وَإِنَّهُ سَيَكُونُ فِي أُمَّتِي ثَلاَثُونَ كَذَّابُونَ كُلُّهُمْ يَزْعُمُ أَنَّهُ نَبِيٌّ وَأَنَا خَاتَمُ النَّبِيِّينَ لاَ نَبِيَّ بَعْدِي.

क़यामत नहीं आएगी यहाँ तक कि मेरी उम्मत के कुछ क़बीले मुश्रिकीन के साथ न मिल जाएँ और यहाँ तक कि बुतों की इबादत न की जाने लगे और बेशक अन्क़रीब मेरी उम्मत में तीस कज्जाब होंगे, उन में से हर एक यह दावा करेगा कि वह नबी है। हालांकि मैं ख़ातमुन्नबिय्यीन हूँ मेरे बाद कोई नबी नहीं।"

सहीह: अबू दाऊद:4252. इब्ने माजह: 3952.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

44بَابُ مَا جَاءَ فِي ثَقِيفٍ كَذَّابٌ وَمُبِيرٌ

44 - क़बील-ए-सक़ीफ़ से एक कज्जाब और एक क़त्ले आम करने वाला होगा।

2220 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ :حَدَّثَنَا الفَضْلُ بْنُ مُوسَى، عَنْ شَرِيكِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُصْمٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: فِي ثَقِيفٍ كَذَّابٌ وَمُبِيرٌ

2220 - सय्यदना इब्ने उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "सक़ीफ़ में एक कज्जाब और एक क़त्ले आम करने वाला होगा।"

सहीह: मुसनद अहमद: 2/62. तयालिसी: 1925. अबू याला:5753.

तौज़ीह: (1) كَذَّابٌ कज्जाब से मुराद नबुव्वत का दावा करने वाला। और مُبِير हलाक करने वाला।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी(رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में अस्मा बिन्ते अबी बक्र(رضي الله عنها) से भी हदीस मर्वी है।

अबू ईसा कहते हैं, हमें अब्दुर्रहमान बिन वाकिद ने और उन्हें शुरीक ने ऐसे ही हदीस बयान की है और इब्ने उमर (رضي الله عنه) की यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे शरीक़ की सनद से ही जानते हैं और शरीक़ उन्हें अब्दुल्लाह बिन उस्म, जब कि इस्राईल अब्दुल्लाह बिन उस्मा कहते हैं।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: कहा जाता है: كَذَّابٌ मुख़्तार बिन अबी उबैद और مُبِير (हलाकू) हज्जाज बिन यूसुफ़ था।

अबू ईसा कहते हैं, हमें अबू दाऊद सुलैमान बिन सल्म बल्ख़ी ने बवास्ता नज़र बिन शुमैल हिशाम बिन हस्सान से बयान किया वह कहते हैं कि लोगों ने उन लोगों को गिना जिन्हें हज्जाज ने बाँध कर मारा था, यह एक लाख बीस हज़ार मक़्तूलीन बनते थे।

45 - तीसरे दौर का बयान।

بَابُ مَا جَاءَ فِي الْقَرْنِ الثَّالِثِ 45

2221 حَدَّثَنَا وَاصِلُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْفُضَيْلِ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ مُدْرِكٍ، عَنْ هِلاَلِ بْنِ يَسَافٍ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ قَالَ :سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: خَيْرُ النَّاسِ قَرْنِي، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِهِمْ قَوْمٌ يَتَسَمَّنُونَ وَيُحِبُّونَ السِّمَنَ يُعْطُونَ الشَّهَادَةَ قَبْلَ أَنْ يُسْأَلُوهَا.

2221 - सय्यदना इमरान बिन हुसैन (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुना आप फ़रमा रहे थे: "बेहतरीन लोग मेरे अहद के लोग हैं, फिर वह लोग जो उनसे मिलेंगे, फिर उनके बाद ऐसे लोग आएंगे जो मोटा होना चाहेंगे और मोटापे को पसंद करेंगे वह गवाही तलब करने से पहले ही गवाही देंगे।"

सहीह: इब्ने अबी शैबा: 12/176. मुसनद अहमद: 4/426. इब्ने हिब्बान:7229.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: मुहम्मद बिन फ़ुजैल ने आमश से बवास्ता अली बिन मुद्रिक उन्हें हिलाल बिन यसाफ ने बवास्ता इमरान बिन हुसैन (رضي الله عنه) नबी करीम(ﷺ) से ऐसी ही हदीस बयान की है और मेरे नज़दीक यह मुहम्मद बिन फ़ुजैल की रिवायत से ज़्यादा सहीह है। नीज़ नबी करीम(ﷺ) की यह हदीस कई इस्नाद के साथ इमरान बिन हुसैन (رضي الله عنه) से मर्वी है।

2222 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ زُرَارَةَ بْنِ أَوْفَى، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ :خَيْرُ أُمَّتِي الْقَرْنُ الَّذِي بُعِثْتُ فِيهِمْ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، قَالَ: وَلاَ أَعْلَمُ ذَكَرَ الثَّالِثَ أَمْ لاَ، ثُمَّ يَنْشَأُ أَقْوَامٌ يَشْهَدُونَ وَلاَ يُسْتَشْهَدُونَ، وَيَخُونُونَ وَلاَ يُؤْتَمَنُونَ، وَيَفْشُو فِيهِمُ السِّمَنُ.

2222 - सय्यदना इमरान बिन हुसैन (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "मेरी उम्मत का बेहतरीन तबका वह है जिसमें मैं भेजा गया हूँ फिर वह लोग जो उनसे मिलेंगे (यानी ताबेईन)" रावी कहते हैं: मैं नहीं जानता कि आप ने तीसरे दौर का ज़िक्र किया या नहीं।" फिर ऐसे लोग पैदा होंगे जो गवाही देंगे हालांकि उनसे गवाही मांगी नहीं जाएगी, ख़यानत करेंगे अमानतदार नहीं होंगे और उन में मोटापा फैल जाएगा।"

बुख़ारी: 2651. मुस्लिम: 2535. अबू दाऊद: 4657. निसाई: 3809.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

46 - ख़ुलफ़ा का बयान।

46بَابُ مَا جَاءَ فِي الْخُلَفَاءِ

2223 - सय्यदना जाबिर बिन समुरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "मेरे बाद 12 अमीर होंगे, रावी कहते हैं: फिर आप ने कोई बात की जिसे मैं समझ न सका तो मैंने अपने साथ वाले से पूछा, उसने कहा: आप(ﷺ) ने फ़रमाया है: "सब के सब कुरैश से होंगे।"

बुख़ारी: 7223. मुस्लिम: 1821. अबू दाऊद: 7279.

2223 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ مُحَمَّدُ بْنُ العَلاَءِ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ عُبَيْدٍ الطَّنَافِسِيُّ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَكُونُ مِنْ بَعْدِي اثْنَا عَشَرَ أَمِيرًا، قَالَ: ثُمَّ تَكَلَّمَ بِشَيْءٍ لَمْ أَفْهَمْهُ فَسَأَلْتُ الَّذِي يَلِينِي، فَقَالَ: قَالَ: كُلُّهُمْ مِنْ قُرَيْشٍ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और कई तुरूक़ (सनदों) के साथ जाबिर बिन समुरा से मर्वी है।

अबू ईसा कहते हैं, हमें अबू कुरैब ने वह कहते हैं: हमें उमर बिन उबैद ने अपने बाप से उन्होंने अबू बक्र बिन अबू मूसा से बवास्ता जाबिर बिन समुरा (ﷺ) नबी करीम(ﷺ) से इसी तरह हदीस बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। अबू बक्र बिन अबू मूसा की जाबिर बिन समुरा से रिवायत ग़रीब समझी जाती है। नीज़ इस बारे में इब्ने मसऊद और अब्दुल्लाह बिन अम्र (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

47- ख़िलाफ़त का बयान।

47بَابُ ما جاء في الخلافة.

2224 - ज़ियाद बिन कुसैब अदवी कहते हैं कि मैं अबू बक्रा (ﷺ) के साथ इब्ने आमिर के मिंबर के नीचे था, और वो ख़ुत्बा दे रहे थे, उनके बदन पर बारीक कपड़ा था, अबू बिलाल ने कहा: हमारे अमीर को देखो फ़ासिक़ों का लिबास पहन रखा है, अबू बक्रा (ﷺ) ने कहा: ख़ामोश रहो, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को

2224 - حَدَّثَنَا بُنْدَارٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ مِهْرَانَ، عَنْ سَعْدِ بْنِ أَوْسٍ، عَنْ زِيَادِ بْنِ كُسَيْبٍ العَدَوِيِّ، قَالَ: كُنْتُ مَعَ أَبِي بَكْرَةَ تَحْتَ مِنْبَرِ ابْنِ عَامِرٍ وَهُوَ يَخْطُبُ وَعَلَيْهِ ثِيَابٌ رِقَاقٌ، فَقَالَ أَبُو بِلَالٍ:

انْظُرُوا إِلَى أَمِيرِنَا يَلْبَسُ ثِيَابَ الفُسَّاقِ، فَقَالَ أَبُو بَكْرَةَ: اسْكُتْ سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: مَنْ أَهَانَ سُلْطَانَ اللهِ فِي الأَرْضِ أَهَانَهُ اللَّهُ.

फ़रमाते सुना है: जो शख़्स ज़मीन पर अल्लाह के बनाए हुए सुल्तान (हाकिम) को ज़लील करे तो अल्लाह उसे ज़लील करेगा।

हसन: तयालिसी: 887. मुसनद अहमद: 5/42. बैहक़ी: 8/163

2225- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ قِيلَ لِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ لَوِ اسْتَخْلَفْتَ قَالَ إِنْ أَسْتَخْلِفْ فَقَدِ اسْتَخْلَفَ أَبُو بَكْرٍ وَإِنْ لَمْ أَسْتَخْلِفْ لَمْ يَسْتَخْلِفْ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . قَالَ أَبُو عِيسَى وَفِي الْحَدِيثِ قِصَّةٌ طَوِيلَةٌ . وَهَذَا حَدِيثٌ صَحِيحٌ قَدْ رُوِيَ مِنْ غَيْرِ وَجْهٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ

2225 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि उमर बिन ख़त्ताब (رضي الله عنه) से कहा गया: अगर आप ख़लीफ़ा नामज़द कर दें (तो बेहतर रहेगा) उन्होंने फ़रमाया: अगर मैं ख़लीफ़ा बना दूं तो (वह भी ठीक है क्योंकि) अबू बक्र (رضي الله عنه) ने भी ख़लीफ़ा बना दिया था और अगर मैं ख़लीफ़ा को नामज़द न करूं (तो वह भी दुरुस्त है क्योंकि) रसूलुल्लाह(ﷺ) ने ख़लीफ़ा मुक़र्रर नहीं किया था।

बुख़ारी: 7218. मुस्लिम: 1823. अबू दाऊद: 2939.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस हदीस में एक लंबा किस्सा भी है नीज़ यह हदीस सहीह है। और कई तुरूक़ (सनदों) से इब्ने उमर (رضي الله عنه) से मर्वी है।

2226- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ :حَدَّثَنَا سُرَيْجُ بْنُ النُّعْمَانِ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَشْرَجُ بْنُ نُبَاتَةَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُمْهَانَ، قَالَ: حَدَّثَنِي سَفِينَةُ قَالَ :قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الخِلاَفَةُ فِي أُمَّتِي ثَلاَثُونَ سَنَةً، ثُمَّ مُلْكٌ بَعْدَ ذَلِكَ ثُمَّ قَالَ لِي سَفِينَةُ: أَمْسِكْ خِلاَفَةَ أَبِي بَكْرٍ، وَخِلاَفَةَ عُمَرَ،

2226 - सय्यदना सफ़ीना (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "मेरी उम्मत में ख़िलाफ़त तीस साल तक रहेगी, फिर उसके बाद बादशाहत होगी।" (सईद बिन जम्हान कहते हैं, फिर सफ़ीना (رضي الله عنه) ने मुझसे फ़रमाया: अबू बक्र (رضي الله عنه) की ख़िलाफ़त गिनो। फिर कहा: उमर और उस्मान (رضي الله عنه) की ख़िलाफ़त को गिनो। फिर मुझ से कहा: अली (رضي الله عنه) की ख़िलाफ़त

وَخِلاَفَةَ عُثْمَانَ، ثُمَّ قَالَ لِي: أَمْسِكْ خِلاَفَةَ عَلِيٍّ قَالَ: فَوَجَدْنَاهَا ثَلاَثِينَ سَنَةً، قَالَ سَعِيدٌ: فَقُلْتُ لَهُ: إِنَّ بَنِي أُمَيَّةَ يَزْعُمُونَ أَنَّ الخِلاَفَةَ فِيهِمْ؟ قَالَ: كَذَبُوا بَنُو الزَّرْقَاءِ بَلْ هُمْ مُلُوكٌ مِنْ شَرِّ الْمُلُوكِ.

गिनो। हम ने गिने तो यह तीस साल पाए। सईद कहते हैं: मैंने उन से कहा: बनू उमय्या का क्या ख़याल है कि ख़िलाफ़त उन में है। उन्होंने कहा: बनू ज़र्क़ा[1] झूठ बोलते हैं। बल्कि यह बदतरीन बादशाहों में से बादशाह हैं।

सहीह: अबू दाऊद: 4646. तयालिसी: 1107. मुसनद अहमद: 5/220.

तौज़ीह: (1) उनकी अगली बस्तियों में से किसी औरत का नाम ज़र्क़ा था। जिसकी औलाद से बनू उमय्या की नस्ल चली थी।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में उमर और अली (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। वह दोनों फ़रमाते हैं: नबी करीम(ﷺ) ने ख़िलाफ़त के लिए जानशीन मुक़र्रर नहीं किया।

यह हदीस हसन है और बहुत से लोगों ने इसे सईद बिन जम्हान से रिवायत किया है और हम भी उन्हीं के तरीक़ से ही जानते हैं।

49 بَابُ مَا جَاءَ أَنَّ الخُلَفَاءَ مِنْ قُرَيْشٍ إِلَى أَنْ تَقُومَ السَّاعَةُ

49 - क़यामत क़ायम होने तक ख़ुलफ़ा क़ुरैशी ही रहेंगे।

2227 حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ مُحَمَّدٍ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الحَارِثِ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ الزُّبَيْرِ، قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أَبِي الهُذَيْلِ، يَقُولُ: كَانَ نَاسٌ مِنْ رَبِيعَةَ عِنْدَ عَمْرِو بْنِ العَاصِ فَقَالَ رَجُلٌ مِنْ بَكْرِ بْنِ وَائِلٍ: لَتَنْتَهِيَنَّ قُرَيْشٌ أَوْ لَيَجْعَلَنَّ اللَّهُ هَذَا الأَمْرَ فِي جُمْهُورٍ مِنَ العَرَبِ غَيْرِهِمْ، فَقَالَ عَمْرُو بْنُ العَاصِ: كَذَبْتَ، سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: قُرَيْشٌ وُلاَةُ النَّاسِ فِي الخَيْرِ وَالشَّرِّ إِلَى يَوْمِ القِيَامَةِ.

2227 - अब्दुल्लाह बिन अबू हुज़ैल बयान करते हैं कि रबीया के कुछ लोग अम्र बिन आस (رضي الله عنه) के पास बैठे थे कि बक्र बिन वाइल के एक आदमी ने कहा: क़ुरैश बाज़ आ जाए वर्ना अल्लाह तआला इस हुकूमत को उनके अलावा दीगर अरबों में रख देगा तो अम्र बिन आस (رضي الله عنه) ने फ़रमाया: "तुमने झूठ कहा। मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "क़ुरैश क़यामत तक भलाई और बुराई दोनों में लोगों के हाकिम रहेंगे।

सहीह: मुसनद अहमद: 204. 4/अस-सुन्ना इब्ने अबी आसिम: 1009.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में इब्ने मसऊद, इब्ने उमर और जाबिर (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है।

50 - गुलामों में से एक "जहजाह" नामी आदमी बादशाहत करेगा।

50.بَابٌ ملك رجل من الموالي يقال له: جهجاه

2228 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "रात और दिन ख़त्म न होंगे यहाँ तक कि गुलामों में से एक बादशाह न बन जाए जिसे "जहजाह"(1) कहा जाता होगा।

सहीह: मुस्लिम: 2911.मुसनद अहमद:2/339.

2228 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ العَبْدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرٍ الحَنَفِيُّ، عَنْ عَبْدِ الحَمِيدِ بْنِ جَعْفَرٍ، عَنْ عُمَرَ بْنِ الحَكَمِ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ :لاَ يَذْهَبُ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ حَتَّى يَمْلِكَ رَجُلٌ مِنَ الْمَوَالِي يُقَالُ لَهُ: جَهْجَاهُ.

तौज़ीह: दीगर रिवायत से साबित होता है कि यह कहतानी होगा और एक अच्छे हुक्मरान की हैसियत से हुकूमत करेगा। यह इमाम महदी के बाद आयेगा। (अल्लाह तआला बेहतर जानता है।)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

51 - गुमराह हुक्मरानों का बयान।

51بَابُ مَا جَاءَ فِي الأَئِمَّةِ الْمُضِلِّينَ

2229 - सय्यदना सौबान (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "मुझे अपनी उम्मत पर गुमराह हुक्मरानों का डर है। "रावी कहते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने यह भी फ़रमाया: "मेरी उम्मत की एक जमाअत हक़ पर ज़ाहिर रहेगी उनको रुस्वा करने की कोशिश करने वाले उन्हें नुक़सान नहीं पहुंचा सकेंगे यहाँ तक कि अल्लाह का हुक्म (क़यामत) आ जाए।"

सहीह: अबू दाऊद: 4252. इब्ने माजह: 39 52. मुसनद अहमद: 5/278

2229 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ :حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَبِي أَسْمَاءَ الرَّحَبِيِّ، عَنْ ثَوْبَانَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّمَا أَخَافُ عَلَى أُمَّتِي الأَئِمَّةَ الْمُضِلِّينَ، قَالَ: وَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ تَزَالُ طَائِفَةٌ مِنْ أُمَّتِي عَلَى الحَقِّ ظَاهِرِينَ لاَ يَضُرُّهُمْ مَنْ يَخْذُلُهُمْ حَتَّى يَأْتِيَ أَمْرُ اللَّهِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और मैंने मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी से सुना वह फ़रमा रहे थे कि मैंने अली बिन मदीनी से सुना उन्होंने नबी करीम(ﷺ) की यह हदीस बयान की कि मेरी उम्मत की एक जमाअत हक़ पर गलबे के साथ रहेगी फिर अली (बिन मदीनी) ने फ़रमाया: यह अहले हदीस हैं।

52 - महदी का बयान।

52بَابُ مَا جَاءَ فِي الْمَهْدِيِّ

2230 - सय्यदना अब्दुल्लाह (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "दुनिया ख़त्म न होगी जब तक अरब का मालिक (हुक्मरां) मेरे अहले बैत का एक शख़्स न बन जाए उसका नाम मेरे नाम जैसा होगा।"

सहीह: अबू दाऊद: 4282. मुसनद अहमद: 1/367. इब्ने हिब्बान:5954

2230 - حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ أَسْبَاطِ بْنِ مُحَمَّدٍ الْقُرَشِيُّ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ الثَّوْرِيُّ، عَنْ عَاصِمِ ابْنِ بَهْدَلَةَ، عَنْ زِرٍّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ :لاَ تَذْهَبُ الدُّنْيَا حَتَّى يَمْلِكَ العَرَبَ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ بَيْتِي يُوَاطِئُ اسْمُهُ اسْمِي.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस बारे में अली, अबू सईद, उम्मे सलमा और अबू हुरैरा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ यह हदीस हसन सहीह है।

2231 - सय्यदना अब्दुल्लाह (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: "मेरे अहले बैत में से एक आदमी हाकिम बनेगा जिसका नाम मेरे नाम के मुवाफिक होगा। "आसिम कहते हैं: हमें अबू सालेह ने अबू हुरैरा (ﷺ) से बयान किया कि आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "कि अगर दुनिया एक दिन भी बाकी रह जाए तो अल्लाह तआला उस दिन को लंबा कर देगा यहाँ तक कि वह हाकिम बन जाएगा।"

सहीह: अबू दाऊद: 4282.

2231 - حَدَّثَنَا عَبْدُ الجَبَّارِ بْنُ العَلاَءِ بْنِ عَبْدِ الجَبَّارِ العَطَّارُ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ عَاصِمٍ، عَنْ زِرٍّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يَلِي رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ بَيْتِي يُوَاطِئُ اسْمُهُ اسْمِي قَالَ عَاصِمٌ: وَأَخْبَرَنَا أَبُو صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: لَوْ لَمْ يَبْقَ مِنَ الدُّنْيَا إِلاَّ يَوْمٌ لَطَوَّلَ اللَّهُ ذَلِكَ اليَوْمَ حَتَّى يَلِيَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

53 - महदी की ज़िंदगी और उसकी सख़ावत।

53بَابٌ فِي عيش المهدي وعطاءه

2232 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) फ़रमाते हैं हमें डर पैदा हुआ कि कहीं नबी करीम(ﷺ) के बाद कोई हादसा न पेश आ जाए तो हमने नबी करीम(ﷺ) से सवाल किया आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "मेरी उम्मत में महदी होगा वह पांच, सात या नौ (साल) रहेगा। यह शक ज़ैद (राविए- हदीस) की तरफ़ से है। रावी कहते हैं "हम ने कहा: यह क्या हैं? आप ने फ़रमाया: "साल" आप (ﷺ) ने फ़र्माया: उसके पास एक आदमी आकर कहेगा ऐ महदी मुझे कुछ दो, मुझे कुछ दो। आप (ﷺ) ने फ़र्माया: फिर वह उसके कपड़े में इतना माल भर देगा जितनी उसमें उठाने की ताक़त होगी।"

हसन: इब्ने माजह:4083, मुसनद अहमद: 3/21

2232 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ: سَمِعْتُ زَيْدًا العَمِّيَّ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا الصِّدِّيقِ النَّاجِيَّ يُحَدِّثُ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ قَالَ: خَشِينَا أَنْ يَكُونَ بَعْدَ نَبِيِّنَا حَدَثٌ فَسَأَلْنَا نَبِيَّ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِنَّ فِي أُمَّتِي الْمَهْدِيَّ يَخْرُجُ يَعِيشُ خَمْسًا أَوْ سَبْعًا أَوْ تِسْعًا، زَيْدٌ الشَّاكُّ، قَالَ: قُلْنَا: وَمَا ذَاكَ؟ قَالَ: سِنِينَ قَالَ: فَيَجِيءُ إِلَيْهِ رَجُلٌ فَيَقُولُ: يَا مَهْدِيُّ أَعْطِنِي أَعْطِنِي قَالَ: فَيَحْثِي لَهُ فِي ثَوْبِهِ مَا اسْتَطَاعَ أَنْ يَحْمِلَهُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है। और बवास्ता अबू सईद नबी करीम(ﷺ) से कई सनदों के साथ मर्वी है।

नीज़ अबू सिद्दीक़ नाजी का नाम बक्र बिन अम्र है। इन्हें बक्र बिन कैस भी कहा जाता है।

54 - ईसा बिन मरियम (ﷺ) का नुज़ूल।

54بَابُ مَا جَاءَ فِي نُزُولِ عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ

2233 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी करीम(ﷺ) ने फ़रमाया: "उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! करीब है कि ईसा इब्ने मरियम तुम में इन्साफ

2233 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ بْنُ سَعْدٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَيُوشِكَنَّ أَنْ يَنْزِلَ فِيكُمْ ابْنُ مَرْيَمَ حَكَمًا مُقْسِطًا، فَيَكْسِرُ الصَّلِيبَ، وَيَقْتُلُ الخِنْزِيرَ، وَيَضَعُ الجِزْيَةَ، وَيَفِيضُ الْمَالُ حَتَّى لاَ يَقْبَلَهُ أَحَدٌ.

करने वाले हाकिम बन कर उतरें, फिर वह सलीब को तोड़ देंगे, खिंजीर को क़त्ल करेंगे, जिज्या को ख़त्म कर देंगे और माल आम हो जाएगा यहाँ तक कि उसे कोई भी क़ुबूल नहीं करेगा।

बुख़ारी: 2222. मुस्लिम: 155. इब्ने माजह: 4078.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

55بَابُ مَا جَاءَ فِي الدَّجَّالِ

55 - दज्जाल का बयान।

2234 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُعَاوِيَةَ الجُمَحِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ خَالِدٍ الحَذَّاءِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ شَقِيقٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ سُرَاقَةَ، عَنْ أَبِي عُبَيْدَةَ بْنِ الجَرَّاحِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: إِنَّهُ لَمْ يَكُنْ نَبِيٌّ بَعْدَ نُوحٍ إِلاَّ قَدْ أَنْذَرَ الدَّجَّالَ قَوْمَهُ وَإِنِّي أُنْذِرُكُمُوهُ فَوَصَفَهُ لَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: لَعَلَّهُ سَيُدْرِكُهُ بَعْضُ مَنْ رَآنِي أَوْ سَمِعَ كَلاَمِي قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ، فَكَيْفَ قُلُوبُنَا يَوْمَئِذٍ؟ قَالَ: مِثْلُهَا، يَعْنِي اليَوْمَ، أَوْ خَيْرٌ.

2234 - सय्यदना अबू उबैदा बिन जर्राह (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "बेशक नूह (अलैहि) के बाद कोई भी नबी ऐसा नहीं था जिसने अपनी क़ौम को दज्जाल (के फित्ने) से न डराया हो और यकीनन मैं भी तुम्हें इस से डराता हूँ।" फिर रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसका हुलिया बयान करने के बाद फ़रमाया: "शायद उसे वह शख़्स पा ले जिस ने मुझे देखा या मेरी बात सुनी है।" सहाबा (رضي الله عنهم) ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! उस दिन हमारे दिल कैसे होंगे? तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया: ''ऐसे ही जैसे आज हैं या इस से बेहतर।"

ज़ईफ़: अबू दाऊद:4756. मुसनद अहमद: 1/195. अबू याला:875

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में अब्दुल्लाह बिन बुस्र, अब्दुल्लाह बिन हारिस बिन जुज़, अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल और अबू हुरैरा (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है।

नीज़ यह हदीस अबू उबैदा बिन जर्राह (رضي الله عنه) के तरीक़ से हसन ग़रीब है। हम इसे ख़ालिद हज्ज़ा के तरीक़ से ही जानते हैं और अबू उबैदा बिन जर्राह (رضي الله عنه) का नाम आमिर बिन अब्दुल्लाह बिन जर्राह (رضي الله عنه) था।

56 - दज्जाल की निशानी

56 بَابُ مَا جَاءَ فِي عَلامَةِ الدَّجَّالِ

2235 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ :أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَامَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي النَّاسِ فَأَثْنَى عَلَى اللهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ، ثُمَّ ذَكَرَ الدَّجَّالَ فَقَالَ: إِنِّي لَأُنْذِرُكُمُوهُ وَمَا مِنْ نَبِيٍّ إِلاَّ وَقَدْ أَنْذَرَ قَوْمَهُ وَلَقَدْ أَنْذَرَ نُوحٌ قَوْمَهُ وَلَكِنِّي سَأَقُولُ لَكُمْ فِيهِ قَوْلاً لَمْ يَقُلْهُ نَبِيٌّ لِقَوْمِهِ: تَعْلَمُونَ أَنَّهُ أَعْوَرُ وَإِنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِأَعْوَرَ .قَالَ الزُّهْرِيُّ: وَأَخْبَرَنِي عُمَرُ بْنُ ثَابِتٍ الأَنْصَارِيُّ، أَنَّهُ أَخْبَرَهُ بَعْضُ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ يَوْمَئِذٍ لِلنَّاسِ وَهُوَ يُحَذِّرُهُمْ فِتْنَتَهُ: تَعْلَمُونَ أَنَّهُ لَنْ يَرَى أَحَدٌ مِنْكُمْ رَبَّهُ حَتَّى يَمُوتَ وَإِنَّهُ مَكْتُوبٌ بَيْنَ عَيْنَيْهِ :كَافِرٌ، يَقْرَأُهُ مَنْ كَرِهَ عَمَلَهُ.

2235 - सय्यदना इब्ने उमर (رضی اللہ عنہ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) लोगों में खड़े हुए, जो सना अल्लाह के लायक़ है वह सना की, फिर दज्जाल का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया "मैं तुम्हें उसके फ़ित्ने से डरा रहा हूँ और हर नबी ने ही इस से अपनी कौम को डराया है। नूह (علیہ السلام) ने भी अपनी कौम को इस से डराया था लेकिन मैं अन्क़रीब उसके बारे में एक ऐसी बात कहने लगा हूँ जो किसी नबी ने भी अपनी कौम से नहीं कही। तुम जानते हो कि वह काना है और यक़ीनन अल्लाह तआला काना नहीं है।" ज़ोहरी कहते हैं: मुझे उमर बिन साबित अंसारी ने बताया: कि उन्हें नबी करीम(ﷺ) के किसी सहाबी ने बताया कि उस दिन नबी करीम(ﷺ) ने लोगों को फ़ित्ने से डराते हुए फ़रमाया: "तुम जानते हो कोई शख़्स मरने से पहले अपने रब को हरगिज़ नहीं देख सकता और उसकी दोनों आँखों के दर्मियान काफ़िर (ك ف ر) लिखा हुआ होगा। जिसे उसके काम को बुरा जानने वाला पढ़ लेगा।"

सहीह: सहीहुल अदब: 740. उमर बिन साबित अंसारी वाली हदीस देखिए: बुख़ारी: 3057. मुस्लिम: 2931.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2236 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ :حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ

2236 - सय्यदना इब्ने उमर (رضی اللہ عنہ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "यहूदी तुम से लड़ेंगे फिर तुम उन पर ग़ालिब आ जाओगे। यहाँ तक कि पत्थर भी कहेगा: ऐ

اللہِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: تُقَاتِلُكُمُ الْيَهُودُ فَتُسَلَّطُونَ عَلَيْهِمْ حَتَّى يَقُولَ الحَجَرُ: يَا مُسْلِمُ، هَذَا الْيَهُودِيُّ وَرَائِي فَاقْتُلْهُ.

मुसलमान! यह यहूदी मेरे पीछे है तुम इसे क़त्ल कर दो।"

बुख़ारी: 2925. मुस्लिम:2931.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

57بَابُ مَا جَاءَ مِنْ أَيْنَ يَخْرُجُ الدَّجَّالُ

57 - दज्जाल कहाँ से निकलेगा?

2237 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، وَأَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالاَ: حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي عَرُوبَةَ، عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ، عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ سُبَيْعٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ حُرَيْثٍ، عَنْ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ، قَالَ: حَدَّثَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ قَالَ: الدَّجَّالُ يَخْرُجُ مِنْ أَرْضٍ بِالمَشْرِقِ يُقَالُ لَهَا :خُرَاسَانُ، يَتْبَعُهُ أَقْوَامٌ كَأَنَّ وُجُوهَهُمُ الْمَجَانُّ الْمُطْرَقَةُ.

2237 - सय्यदना अबू बक्र सिद्दीक़ (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हमें बयान किया कि "दज्जाल मश्रिक के एक इलाक़े से निकलेगा जिसे ख़ुरासान कहा जाता है उसके पीछे कुछ लोग लगेंगे जिनके चेहरे तह ब तह ढालों की तरह होंगे।"

सहीह इब्ने माजह: 20 72. मुसनद अहमद: ¼. अबू याला:33.

वज़ाहत: इस बारे में अबू हुरैरा और आयशा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है और यह हदीस हसन ग़रीब है। इसे अब्दुल्लाह बिन शौज़ब और दीगर लोगों ने भी अबू तय्याह से रिवायत किया है और अबू तय्याह के तरीक़ से ही हमें मिलती है।

58بَابُ مَا جَاءَ فِي عَلاَمَاتِ خُرُوجِ الدَّجَّالِ

58 - दज्जाल के निकलने की निशानियाँ।

2238 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا الحَكَمُ بْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: حَدَّثَنَا الوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ أَبِي مَرْيَمَ، عَنِ الوَلِيدِ بْنِ سُفْيَانَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ قُطَيْبٍ السَّكُونِيِّ ، عَنْ أَبِي بَحْرِيَّةَ صَاحِبِ مُعَاذٍ، عَنْ مُعَاذِ بْنِ

2238 - सय्यदना अबू बक्र सिद्दीक़ (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "बड़ी जंग, कुस्तुन्तुनिया की फतह और दज्जाल का ख़ुरूज (यह तमाम काम) सात महीनों में होंगे।"

ज़ईफ़; अबू दाऊद:4295. इब्ने माजह:4092. मुसनद अहमद: 5/234

جَبَلٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: الْمَلْحَمَةُ العُظْمَى، وَفَتْحُ القُسْطَنْطِينِيَّةِ، وَخُرُوجُ الدَّجَّالِ فِي سَبْعَةِ أَشْهُرٍ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस बारे में सअब बिन जस्सामा, अब्दुल्लाह बिन बुस्र, अब्दुल्लाह बिन मसऊद और अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे सिर्फ इसी सनद से ही जानते हैं।

2239 - यह्या बिन सईद (ﷺ) से रिवायत है कि अनस बिन मालिक (ﷺ) ने फ़रमाया: कुस्तुन्तुनिया की फतह क़यामत क़ायम होने के क़रीब होगी।

सहीह

2239 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: فَتْحُ القُسْطَنْطِينِيَّةِ مَعَ قِيَامِ السَّاعَةِ

वज़ाहत: महमूद कहते हैं: यह हदीस ग़रीब है और कुस्तुन्तुनिया रूम का शहर है जो ख़ुरूजे दज्जाल के वक़्त फतह किया जाएगा और कुस्तुन्तुनिया (एक दफा) नबी करीम(ﷺ) के कुछ सहाबा (ﷺ) के दौर में भी फतह हो चुका है।(1)

तौज़ीह: (1) कुस्तुन्तुनिया एक दफा फ़तह हो चुका है अब भी मुसलामनों के क़ब्ज़ा में ही है लेकिन आने वाले वक़्त में एक दफा फिर ईसाइयों के कब्ज़ा में चला जाएगा और फिर उसे दज्जाल के ख़ुरूज से कुछ अर्सा पहले फतह किया जाएगा। (अल्लाह बेहतर जानता है।)

59 – फ़ित्न-ए- दज्जाल का बयान।

59بَابُ مَا جَاءَ فِي فِتْنَةِ الدَّجَّالِ

2240 - सय्यदना नव्वास बिन समआन किलाबी (ﷺ) रिवायत करते हैं कि एक सुबह रसूलुल्लाह(ﷺ) ने दज्जाल का तज़किरा किया आप(ﷺ) ने कुछ बातों को हल्का और कुछ बातों को बहुत बड़ा बयान किया यहाँ तक कि हम ने ख़याल किया कि वह खुजूरों के झुण्ड में है। कहते हैं: हम रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास से चले गए, फिर हम शाम के वक़्त आपकी

2240 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا الوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، وَعَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ بْنِ جَابِرٍ، دَخَلَ حَدِيثُ أَحَدِهِمَا فِي حَدِيثِ الآخَرِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ بْنِ جَابِرٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ جَابِرٍ الطَّائِيِّ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ جُبَيْرٍ،

عَنْ أَبِيهِ، جُبَيْرِ بْنِ نُفَيْرٍ، عَنِ النَّوَّاسِ بْنِ سَمْعَانَ الكِلاَبِيِّ قَالَ: ذَكَرَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الدَّجَّالَ ذَاتَ غَدَاةٍ، فَخَفَّضَ فِيهِ وَرَفَّعَ حَتَّى ظَنَنَّاهُ فِي طَائِفَةِ النَّخْلِ، قَالَ :فَانْصَرَفْنَا مِنْ عِنْدِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ رَجَعْنَا إِلَيْهِ فَعَرَفَ ذَلِكَ فِينَا فَقَالَ: مَا شَأْنُكُمْ؟ قَالَ: قُلْنَا: يَا رَسُولَ اللهِ، ذَكَرْتَ الدَّجَّالَ الغَدَاةَ فَخَفَّضْتَ فِيهِ وَرَفَّعْتَ حَتَّى ظَنَنَّاهُ فِي طَائِفَةِ النَّخْلِ قَالَ: غَيْرُ الدَّجَّالِ أَخْوَفُ لِي عَلَيْكُمْ، إِنْ يَخْرُجْ وَأَنَا فِيكُمْ فَأَنَا حَجِيجُهُ دُونَكُمْ، وَإِنْ يَخْرُجْ وَلَسْتُ فِيكُمْ فَامْرُؤٌ حَجِيجُ نَفْسِهِ وَاللَّهُ خَلِيفَتِي عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ، إِنَّهُ شَابٌّ قَطَطٌ عَيْنُهُ طَافِئَةٌ شَبِيهٌ بِعَبْدِ العُزَّى بْنِ قَطَنٍ، فَمَنْ رَآهُ مِنْكُمْ فَلْيَقْرَأْ فَوَاتِحَ سُورَةِ أَصْحَابِ الكَهْفِ قَالَ: يَخْرُجُ مَا بَيْنَ الشَّامِ وَالعِرَاقِ، فَعَاثَ يَمِينًا وَشِمَالاً، يَا عِبَادَ اللهِ اثْبُتُوا، قَالَ: قُلْنَا: يَا رَسُولَ اللهِ، وَمَا لَبْثُهُ فِي الأَرْضِ؟ قَالَ: أَرْبَعِينَ يَوْمًا، يَوْمٌ كَسَنَةٍ، وَيَوْمٌ كَشَهْرٍ، وَيَوْمٌ كَجُمُعَةٍ وَسَائِرُ أَيَّامِهِ كَأَيَّامِكُمْ، قَالَ:

ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप(ﷺ) ने हमारे चेहरों में उस चीज़ को पहचान लिया, आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "तुम्हें क्या हुआ?" हम ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आप ने आज सुबह दज्जाल का तज़किरा किया तो कुछ बातें छोटी और कुछ बड़ी कहीं यहाँ तक कि हमने गुमान किया कि शायद खुजूरों के झुण्ड में है। आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "मेरे लिए दज्जाल के अलावा भी तुम पर ज़्यादा खौफनाक चीज़ है। अगर वह मेरी मौजूदगी में निकला तो मैं तुम्हारे सामने से उस से झगडूंगा और अगर उस वक़्त निकला जब मैं तुम्हारे दर्मियान न हुआ तो हर आदमी अपना दिफ़ा करेगा और अल्लाह तआला हर मुसलमान पर मेरा नायब है, बेशक वह दज्जाल घुघंराले बालों वाला नौजवान है। उसकी आँख सीधी की हुई है। अब्दुल उज्ज़ा बिन कूतन के साथ मिलता जुलता है। तुम में से जो शख़्स उसे देखे तो वह सूरह कहफ़ की इब्तिदाई आयात पढ़े।" आप ने फ़रमाया: "वह शाम और इराक़ के दर्मियान निकलेगा, फिर दायें बाएं फ़साद बरपा करेगा, अल्लाह के बन्दों! तुम ठहरे रहना। रावी कहते हैं: हमने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! वह ज़मीन में कितनी देर रहेगा? आप ने फ़रमाया: "चालीस दिन, एक दिन एक साल की तरह होगा, (फिर) एक दिन एक महीने की तरह, फिर एक दिन एक हफ़्ते की तरह और बाकी दिन तुम्हारे दिनों की तरह होंगे। "रावी कहते हैं: कि हमने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आप यह बताइए कि जो दिन एक

قُلْنَا: يَا رَسُولَ اللهِ، أَرَأَيْتَ الْيَوْمَ الَّذِي كَالسَّنَةِ أَتَكْفِينَا فِيهِ صَلاَةُ يَوْمٍ؟ قَالَ: لاَ، وَلَكِنْ اقْدُرُوا لَهُ، قَالَ: قُلْنَا: يَا رَسُولَ اللهِ، فَمَا سُرْعَتُهُ فِي الأَرْضِ؟ قَالَ: كَالْغَيْثِ اسْتَدْبَرَتْهُ الرِّيحُ فَيَأْتِي الْقَوْمَ فَيَدْعُوهُمْ فَيُكَذِّبُونَهُ وَيَرُدُّونَ عَلَيْهِ قَوْلَهُ فَيَنْصَرِفُ عَنْهُمْ فَتَتْبَعُهُ أَمْوَالُهُمْ وَيُصْبِحُونَ لَيْسَ بِأَيْدِيهِمْ شَيْءٌ، ثُمَّ يَأْتِي الْقَوْمَ فَيَدْعُوهُمْ فَيَسْتَجِيبُونَ لَهُ وَيُصَدِّقُونَهُ فَيَأْمُرُ السَّمَاءَ أَنْ تُمْطِرَ فَتُمْطِرَ، وَيَأْمُرُ الأَرْضَ أَنْ تُنْبِتَ فَتُنْبِتَ، فَتَرُوحُ عَلَيْهِمْ سَارِحَتُهُمْ كَأَطْوَلِ مَا كَانَتْ ذُرًا وَأَمَدِّهِ خَوَاصِرَ وَأَدَرِّهِ ضُرُوعًا، قَالَ: ثُمَّ يَأْتِي الْخَرِبَةَ فَيَقُولُ لَهَا: أَخْرِجِي كُنُوزَكِ فَيَنْصَرِفُ مِنْهَا فَيَتْبَعُهُ كَيَعَاسِيبِ النَّحْلِ، ثُمَّ يَدْعُو رَجُلاً شَابًّا مُمْتَلِئًا شَبَابًا فَيَضْرِبُهُ بِالسَّيْفِ فَيَقْطَعُهُ جِزْلَتَيْنِ ثُمَّ يَدْعُوهُ فَيُقْبِلُ يَتَهَلَّلُ وَجْهُهُ يَضْحَكُ، فَبَيْنَمَا هُوَ كَذَلِكَ إِذْ هَبَطَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ بِشَرْقِيِّ دِمَشْقَ عِنْدَ الْمَنَارَةِ الْبَيْضَاءِ بَيْنَ مَهْرُودَتَيْنِ وَاضِعًا يَدَيْهِ عَلَى أَجْنِحَةِ مَلَكَيْنِ إِذَا طَأْطَأَ رَأْسَهُ قَطَرَ، وَإِذَا

साल के जितना होगा क्या उस में एक दिन की नमाज़ें काफी होंगी? आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "नहीं, बल्कि उसका अंदाजा लगाना" हमने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! वह ज़मीन में कितनी जल्दी से फिरेगा? आप ने फ़रमाया: "बारिश की तरह जिसके पीछे हवा लगी हो वह एक कौम के पास जाएगा फिर उनको दावत देगा वह उसे झूठा कहेंगे और उसकी बात रद्द कर देंगे तो उनके मवेशी उसके पीछे चले जायेंगे उनके हाथ में कुछ नहीं रहेगा, फिर वह दूसरी कौम के पास जाकर उनको दावत देगा वह उसकी बात मान लेंगे और उसकी तस्दीक करेंगे तो वह आसमान को बारिश बरसाने का हुक्म देगा, वह बारिश बरसायेगा और ज़मीन को उगाने का हुक्म देगा वह पैदावार उगायगी तो उनके बाहर चरने वाले जानवर पहले से लम्बी कोहानें, बढ़ी हुई कोखें और भरे हुए थन लेकर वापस आयेंगे।" आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "वह वीरान ज़मीन में आकर उसे कहेगा: अपने ख़ज़ाने निकाल दे। चुनाँचे वापस पलटेगा तो वह (ख़ज़ाने) शहद की मक्खियों के बड़ी मक्खी के गिर्द जमा होने की तरह उसके पीछे चल पड़ेंगे फिर वह जवानी से भर पूर एक नौजवान को बुलायेगा, उसे तलवार मार कर दो टुकड़े कर देगा: फिर उसे बुलाएगा तो चमकते चेहरे के साथ मुस्कुराता हुआ उसकी तरफ़ मुतवज्जह होगा, यह (दज्जाल) अपने इन्हीं कामों में लगा होगा कि ईसा बिन मरियम (ﷺ) भी मशरिकी दमिश्क़ में सफ़ेद मिनारे के पास सुर्ख़ रंग के दो कपड़े पहने हुए,

رَفَعَهُ تَحَدَّرَ مِنْهُ جُمَّانٌ كَاللُّؤْلُؤِ، قَالَ: وَلاَ يَجِدُ رِيحَ نَفْسِهِ، يَعْنِي أَحَدًا، إِلاَّ مَاتَ وَرِيحُ نَفْسِهِ مُنْتَهَى بَصَرِهِ، قَالَ: فَيَطْلُبُهُ حَتَّى يُدْرِكَهُ بِبَابِ لُدٍّ فَيَقْتُلَهُ، قَالَ: فَيَلْبَثُ كَذَلِكَ مَا شَاءَ اللَّهُ، قَالَ :ثُمَّ يُوحِي اللَّهُ إِلَيْهِ أَنْ حَوِّزْ عِبَادِي إِلَى الطُّورِ فَإِنِّي قَدْ أَنْزَلْتُ عِبَادًا لِي لاَ يَدَانِ لأَحَدٍ بِقِتَالِهِمْ، قَالَ :وَيَبْعَثُ اللَّهُ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ وَهُمْ كَمَا قَالَ اللَّهُ:{وَهُمْ مِنْ كُلِّ حَدَبٍ يَنْسِلُونَ} قَالَ: فَيَمُرُّ أَوَّلُهُمْ بِبُحَيْرَةِ الطَّبَرِيَّةِ فَيَشْرَبُ مَا فِيهَا ثُمَّ يَمُرُّ بِهَا آخِرُهُمْ فَيَقُولُونَ: لَقَدْ كَانَ بِهَذِهِ مَرَّةً مَاءٌ، ثُمَّ يَسِيرُونَ حَتَّى يَنْتَهُوا إِلَى جَبَلِ بَيْتِ الْمَقْدِسِ فَيَقُولُونَ: لَقَدْ قَتَلْنَا مَنْ فِي الأَرْضِ، فَهَلُمَّ فَلْنَقْتُلْ مَنْ فِي السَّمَاءِ، فَيَرْمُونَ بِنُشَّابِهِمْ إِلَى السَّمَاءِ فَيَرُدُّ اللَّهُ عَلَيْهِمْ نُشَّابَهُمْ مُحْمَرًّا دَمًا، وَيُحَاصَرُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَأَصْحَابُهُ حَتَّى يَكُونَ رَأْسُ الثَّوْرِ يَوْمَئِذٍ خَيْرًا لأَحَدِهِمْ مِنْ مِائَةِ دِينَارٍ لأَحَدِكُمُ الْيَوْمَ، فَيَرْغَبُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ إِلَى اللهِ وَأَصْحَابُهُ، فَيُرْسِلُ اللَّهُ عَلَيْهِمُ النَّغَفَ فِي رِقَابِهِمْ

अपने हाथ दो फरिश्तों के परों पर रखे हुए उतरेंगे, जब वह अपने सर को झुकायेंगे तो उससे पानी गिरेगा और जब ऊपर उठायेंगे तो उस से मोतियों की तरह बूँदें गिरेंगी।" आप ने फ़रमाया: "उनके जिस्म की खुशबू जो भी काफ़िर महसूस करेगा वह मर जाएगा और उनकी खुशबू उनकी नज़र की इंतिहा तक होगी।" आप ने फ़रमाया: "फिर वह उस दज्जाल को तलाश करेंगे यहाँ तक कि उसे "बाबे लुद्द" पे पाकर क़त्ल कर देंगे। "आप(ﷺ) ने फ़रमाया "जब तक अल्लाह चाहेगा वह ऐसे ही रहेंगे, फिर अल्लाह तआला उनकी तरफ़ वहि करेगा कि मेरे बन्दों को तूर की जानिब जमा करो मैंने अपने ऐसे बन्दे उतारे हैं जिनसे लड़ने की किसी में हिम्मत नहीं है।" आप(ﷺ) ने फ़रमाया "अल्लाह तआला याजूज व माजूज को भेजेगा वह ऐसे ही होंगे जैसे अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया: "वह हर घाटी से दौड़ते आयेंगे।" (अल- अंबिया:96) आप(ﷺ) ने फ़रमाया "उन (याजूज व माजूज) के पहले लोग बुहैरा तब्रिय्या से गुजरेंगे तो उसका सारा पानी पी लेंगे। फिर उनके पिछले गुजरेंगे तो वह कहेंगे यहाँ पर कभी पानी होता होगा, फिर वह चलेंगे यहाँ तक कि बैतूल मक्दिस के पहाड़ तक जा पहुंचेंगे, वह कहेंगे : ज़मीन वालों को हमने क़त्ल कर दिया। अब आओ! हम आसमान वालों को भी क़त्ल करते हैं फिर वह अपने तीर आसमान की तरफ़ छोड़ेंगे तो अल्लाह तआला उनके तीर खून के साथ सुर्ख करके वापस भेजेगा और ईसा बिन मरियम

فَيُصْبِحُونَ فَرْسَى مَوْتَى كَمَوْتِ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ، وَيَهْبِطُ عِيسَى وَأَصْحَابُهُ فَلاَ يَجِدُ مَوْضِعَ شِبْرٍ إِلاَّ وَقَدْ مَلأَتْهُ زَهَمَتُهُمْ وَنَتَنُهُمْ وَدِمَاؤُهُمْ، فَيَرْغَبُ عِيسَى إِلَى اللهِ وَأَصْحَابُهُ، فَيُرْسِلُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ طَيْرًا كَأَعْنَاقِ البُخْتِ، فَتَحْمِلُهُمْ فَتَطْرَحُهُمْ بِالمَهْبِلِ وَيَسْتَوْقِدُ الْمُسْلِمُونَ مِنْ قِسِيِّهِمْ وَنُشَّابِهِمْ وَجِعَابِهِمْ سَبْعَ سِنِينَ، وَيُرْسِلُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مَطَرًا لاَ يُكَنُّ مِنْهُ بَيْتُ وَبَرٍ وَلاَ مَدَرٍ، فَيَغْسِلُ الأَرْضَ فَيَتْرُكُهَا كَالزَّلَفَةِ قَالَ: ثُمَّ يُقَالُ لِلأَرْضِ أَخْرِجِي ثَمَرَتَكِ وَرُدِّي بَرَكَتَكِ فَيَوْمَئِذٍ تَأْكُلُ العِصَابَةُ الرُّمَّانَةَ، وَيَسْتَظِلُّونَ بِقَحْفِهَا وَيُبَارَكُ فِي الرِّسْلِ حَتَّى إِنَّ الفِئَامَ مِنَ النَّاسِ لَيَكْتَفُونَ بِاللِّقْحَةِ مِنَ الإِبِلِ، وَإِنَّ القَبِيلَةَ لَيَكْتَفُونَ بِاللِّقْحَةِ مِنَ البَقَرِ، وَإِنَّ الفَخِذَ لَيَكْتَفُونَ بِاللِّقْحَةِ مِنَ الغَنَمِ فَبَيْنَمَا هُمْ كَذَلِكَ إِذْ بَعَثَ اللَّهُ رِيحًا فَقَبَضَتْ رُوحَ كُلِّ مُؤْمِنٍ وَيَبْقَى سَائِرُ النَّاسِ يَتَهَارَجُونَ كَمَا تَتَهَارَجُ الحُمُرُ فَعَلَيْهِمْ تَقُومُ السَّاعَةُ.

(عليه السلام) और उनके साथियों को घेर लिया जाएगा, यहाँ तक कि उस दिन बैल का सर उनके लिए आज तुम्हारे एक आदमी के लिए हज़ार दीनार से भी बेहतर होगा।" आप(ﷺ) ने फ़रमाया "ईसा इब्ने मरियम और उनके साथी अल्लाह की तरफ़ रगबत करेंगे फिर अल्लाह तआला (उन याजूज व माजूज) की गर्दनों में एक कीड़ा भेज देंगे तो वह सब सुबह तक मर जायेंगे जैसे एक आदमी की मौत होती है।" आप(ﷺ) ने फ़रमाया "ईसा (عليه السلام) और उनके साथी उतरेंगे तो एक बालिश्त बराबर जगह भी ऐसी नहीं मिलेगी जहां उनकी चर्बियाँ बदबू और उनके खून न हों।" आप(ﷺ) ने फ़रमाया "फिर ईसा (عليه السلام) और उनके साथी अल्लाह की तरफ़ रगबत करेंगे तो अल्लाह तआला उनके ऊपर ऊँटो की गर्दनों के मिस्ल (तरह) परिंदे भेजेगा वह उनकी लाशों को उठा कर पहाड़ों की खाइयों में फ़ेंक देंगे और मुसलमान उनकी कमानों, तीरों और तर्कशों को सात साल तक बतौर ईंधन जलाएंगे और अल्लाह तआला उन पर बारिश नाजिल फ़रमाएगा जिसे कोई खेमा या मिट्टी का घर नहीं रोक सकेगा, अल्लाह तआला ज़मीन को धोकर एक आईने की तरह कर देगा, फिर ज़मीन से कहा जाएगा: अपने फल निकाल दे और अपनी बरकत वापस कर दे, उस दिन एक जमाअत एक अनार खाएगी और उसके छिलके के साथ साया हासिल कर लेंगे और दूध में भी बरकत दी जाएगी यहाँ तक की लोगों की एक जमाअत को ऊंटनी का एक

वक़्त का दूध काफी होगा, एक कबीले को गाय का एक वक़्त का दूध काफी होगा और (कबीले की) एक शाख को बकरी का एक वक़्त का दूध काफी होगा यह लोग उसी हालत में होंगे कि अल्लाह तआला एक हवा भेजेगा वह हर मोमिन की रूह कब्ज़ कर लेगी और जो लोग बाकी रह जायेंगे वह गधों की तरह एलानिया जिमा (हमबिस्तरी) करते फिरेंगे, फिर उन पर ही क़यामत क़ायम होगी।"(1)

मुस्लिम: 2937. अबू दाऊद:4321. इब्ने माजह:4075

तौज़ीह: मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआनी:

طائفة النخل : ताइफा जमाअत और गिरोह को कहते हैं। यहाँ उसकी निस्बत खुजूरों की तरफ़ है। लिहाज़ा इसका माना झुण्ड किया गया है।

يعاسيب النحل : शहद की सरदार मक्खी के गिर्द मक्खियों का जमा होना।

مهروود تين : सुर्ख लिबास की दो चादरें.

بحيرة طبرية : इसके बारे में कहा जाता है कि इसका पानी इस क़दर ठंडा है कि इसमें कश्ती चलना भी मुश्किल है।

النغف : एक कीड़ा जो उनकी गर्दनों में पैदा किया जाएगा।

يتهارجون : यानी मर्द औरतों से ऐसे जिमा (हमबिस्तरी) करते फिर रहे होंगे जैसे गधे सब के सामने करते हैं.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब हसन सहीह है। हम इसे अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद बिन जाबिर के तरीक़ से जानते हैं।

60 - दज्जाल का हुलिया।

60بَابُ مَا جَاءَ فِي صِفَةِ الدَّجَّالِ

2241 - सय्यदना इब्ने उमर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी करीम(ﷺ) से दज्जाल के बारे में पूछा गया तो आप ने फ़रमाया: "याद रखो! तुम्हारा रब काना नहीं है और उस दज्जाल की

2241 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى الصَّنْعَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ

نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَنَّهُ سُئِلَ عَنِ الدَّجَّالِ، فَقَالَ : أَلاَ إِنَّ رَبَّكُمْ لَيْسَ بِأَعْوَرَ أَلاَ وَإِنَّهُ أَعْوَرُ عَيْنُهُ الْيُمْنَى كَأَنَّهَا عِنَبَةٌ طَافِيَةٌ.

दोनों आँखें कानी हैं गोया कि वह एक फूला हुआ अंगूर है।"

बुख़ारी: 7123. मुस्लिम: 169

वज़ाहत: इस बारे में साद, हुज़ैफा, अबू हुरैरा, अस्मा, जाबिर बिन अब्दुल्लाह, अबू बक्र, आयशा, अनस, इब्ने अब्बास और फल्तान बिन आसिम (ﷺ) से भी मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इब्ने उमर की यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

61 بَابُ مَا جَاءَ فِي الدَّجَّالِ لاَ يَدْخُلُ الْمَدِينَةَ

61 - दज्जाल मदीना में दाख़िल नहीं हो सकता।

2242 - حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الْخُزَاعِيُّ الْبَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ : أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَأْتِي الدَّجَّالُ الْمَدِينَةَ فَيَجِدُ الْمَلاَئِكَةَ يَحْرُسُونَهَا فَلاَ يَدْخُلُهَا الطَّاعُونُ وَلاَ الدَّجَّالُ إِنْ شَاءَ اللَّهُ.

2242 - सय्यदना अनस (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "दज्जाल मदीना में आयेगा तो फरिश्तों को उसकी हिफाज़त करते हुए पाएगा इंशा अल्लाह उस में ताऊन और दज्जाल दाख़िल नहीं हो सकता।"

बुख़ारी: 1881. मुस्लिम: 2943

वज़ाहत: इस बारे में अबू हुरैरा, फातिमा बिन्ते कैस, मेह्जन, उसामा बिन ज़ैद और समुरा बिन जुन्दुब (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इब्ने उमर की यह हदीस हसन सहीह है।

2243 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنِ الْعَلاَءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: الإِيمَانُ

2243 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "ईमान यमनी है कुफ्र मश्रिक़ की तरफ़ से है, सकीनत बकरियों वालों के लिए है और फख़्र व रिया ऊंटों व घोड़ों वालों में है जो शोर मचाते हैं,

يَمَانٍ، وَالكُفْرُ مِنْ قِبَلِ الْمَشْرِقِ، وَالسَّكِينَةُ لأَهْلِ الغَنَمِ، وَالفَخْرُ وَالرِّيَاءُ فِي الفَدَّادِينَ أَهْلِ الخَيْلِ وَأَهْلِ الوَبَرِ، يَأْتِي الْمَسِيحُ إِذَا جَاءَ دُبُرَ أُحُدٍ صَرَفَتِ الْمَلاَئِكَةُ وَجْهَهُ قِبَلَ الشَّامِ وَهُنَالِكَ يَهْلَكُ.

मसीह दज्जाल जब उहुद के पीछे पहुंचेगा तो फ़रिश्ते उसका मुंह शाम की तरफ़ फेर देंगे और वहीं वह हलाक हो जाएगा।"

बुख़ारी: 3301.मुस्लिम:52.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इब्ने उमर की यह हदीस हसन सहीह है।

62بَابُ مَا جَاءَ فِي قَتْلِ عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ الدَّجَّالَ

62 - ईसा बिन मरियम (عليه السلام) का दज्जाल को क़त्ल करना।

2244 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَنَّهُ سَمِعَ عُبَيْدَ اللهِ بْنَ عَبْدِ اللهِ بْنِ ثَعْلَبَةَ الأَنْصَارِيِّ يُحَدِّثُ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ الأَنْصَارِيِّ، مِنْ بَنِي عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ يَقُولُ: سَمِعْتُ عَمِّي مُجَمِّعَ ابْنَ جَارِيَةَ الأَنْصَارِيَّ يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: يَقْتُلُ ابْنُ مَرْيَمَ الدَّجَّالَ بِبَابِ لُدٍّ.

2244 - सय्यदना मुजम्मिअ बिन जारिया अंसारी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "इब्ने मरियम दज्जाल को बाबे लुद्द पर क़त्ल करेंगे।"

सहीह: तयालिसी: 1227. मुसनद अहमद: 3/420. इब्ने हिब्बान: 6811.

तौज़ीह: بَابِ لُدٍّ: यह जगह इस वक़्त इस्राईल में है और यहाँ इस मुल्क का एयरपोर्ट बनाया गया है।

वज़ाहत: इस बारे में इमरान बिन हुसैन, नाफ़े बिन उत्बा, अबू हुरैरा, हुजैफा बिन उसैद, कैसान, उस्मान बिन अबी आस, जाबिर, अबू उमामा, इब्ने मसऊद, अब्दुल्लाह बिन अम्र, समुरा बिन जुन्दुब, नव्वास बिन समआन, अम्र बिन औफ़ और हुज़ैफा बिन यमान (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इब्ने उमर की यह हदीस हसन सहीह है।

2245 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا قَالَ: قَالَ رَسُولُ

2245 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "कोई नबी ऐसा नहीं जिसने अपनी उम्मत को काने कज्ज़ाब से न डराया हो ख़बरदार! वह काना

اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا مِنْ نَبِيٍّ إِلاَّ وَقَدْ أَنْذَرَ أُمَّتَهُ الأَعْوَرَ الكَذَّابَ، أَلاَ إِنَّهُ أَعْوَرُ، وَإِنَّ رَبَّكُمْ لَيْسَ بِأَعْوَرَ، مَكْتُوبٌ بَيْنَ عَيْنَيْهِ: كَافِرٌ.

(आवर) है और तुम्हारा रब आवर नहीं है उस (दज्जाल) की आँखों के दर्मियान काफ़िर (का लफ्ज़) लिखा होगा।''

सहीह: बुख़ारी: 7131. मुस्लिम: 2933

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इब्ने उमर की यह हदीस हसन सहीह है।

63 بَابُ مَا جَاءَ فِي ذِكْرِ ابْنِ صَيَّادٍ

63 - इब्ने सय्याद का वाक़िया।

2246 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ :حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، عَنِ الجُرَيْرِيِّ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: صَحِبَنِي ابْنُ صَائِدٍ إِمَّا حُجَّاجًا وَإِمَّا مُعْتَمِرِينَ فَانْطَلَقَ النَّاسُ وَتُرِكْتُ أَنَا وَهُوَ، فَلَمَّا خَلَصْتُ بِهِ اقْشَعْرَرْتُ مِنْهُ وَاسْتَوْحَشْتُ مِنْهُ مِمَّا يَقُولُ النَّاسُ فِيهِ، فَلَمَّا نَزَلْتُ قُلْتُ لَهُ: ضَعْ مَتَاعَكَ حَيْثُ تِلْكَ الشَّجَرَةِ، قَالَ: فَأَبْصَرَ غَنَمًا فَأَخَذَ القَدَحَ فَانْطَلَقَ فَاسْتَحْلَبَ، ثُمَّ أَتَانِي بِلَبَنٍ فَقَالَ لِي: يَا أَبَا سَعِيدٍ، اشْرَبْ، فَكَرِهْتُ أَنْ أَشْرَبَ مِنْ يَدِهِ شَيْئًا لِمَا يَقُولُ النَّاسُ فِيهِ، فَقُلْتُ لَهُ: هَذَا اليَوْمُ يَوْمٌ صَائِفٌ وَإِنِّي أَكْرَهُ فِيهِ اللَّبَنَ، قَالَ لِي: يَا أَبَا سَعِيدٍ، هَمَمْتُ أَنْ آخُذَ حَبْلاً فَأُوثِقَهُ إِلَى شَجَرَةٍ ثُمَّ أَخْتَنِقَ لِمَا يَقُولُ النَّاسُ لِي وَفِيَّ، أَرَأَيْتَ مَنْ خَفِيَ عَلَيْهِ حَدِيثِي فَلَنْ يَخْفَى عَلَيْكُمْ؟

2246 - सय्यदना अबू सईद (ﷺ) बयान करते हैं: हम हज या उम्रा के लिए गए तो इब्ने सय्याद भी मेरे साथ था लोग चल दिए, जब कि मैं और इब्ने सय्याद पीछे रह गए जब मैं उसके साथ हुआ तो मेरे रोंगटे खड़े हो गए और मुझे उससे लोगों की उस के बारे में की जाने वाली बातों की वजह से वहशत हुई जब मैं उतरा तो मैंने उस से कहा: अपना सामान उस दरख़्त के पास रख दो। कहते हैं: उस ने एक बकरी देखी तो प्याला पकड़ कर उसकी तरफ़ चला उसका दूध निकाला फिर मेरे पास दूध लेकर आया तो कहने लगा: अबू सईद पियो! मैं उसके हाथ से कोई चीज़ पीना नहीं चाहता था इस वजह से कि लोग उसके बारे में जो बातें करते थे। तो मैंने उस से कहा: आज गर्मी है और मैं गर्मी वाले दिन में दूध नहीं पीना चाहता। उस ने मुझ से कहा: ऐ अबी सईद मैंने इरादा किया था कि मैं रस्सी लेकर उस दरख़्त के साथ बाधूँ फिर अपना गला घोंट लूं इस वजह से कि जो लोग मेरे बारे में कहते हैं। अगर किसी पर मेरी बातें पोशीदा रहीं तो रहीं लेकिन तुम्हारे ऊपर हरगिज़ पोशीदा नहीं होनी चाहिए। तुम अंसार के

أَلَسْتُمْ أَعْلَمَ النَّاسِ بِحَدِيثِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَا مَعْشَرَ الأَنْصَارِ؟ أَلَمْ يَقُلْ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّهُ كَافِرٌ وَأَنَا مُسْلِمٌ؟ أَلَمْ يَقُلْ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّهُ عَقِيمٌ لاَ يُولَدُ لَهُ وَقَدْ خَلَّفْتُ وَلَدِي بِالْمَدِينَةِ؟ أَلَمْ يَقُلْ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ تَحِلُّ لَهُ مَكَّةُ وَالْمَدِينَةُ؟ أَلَسْتُ مِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ وَهُوَ ذَا أَنْطَلِقُ مَعَكَ إِلَى مَكَّةَ، فَوَاللَّهِ مَا زَالَ يَجِيءُ بِهَذَا حَتَّى قُلْتُ فَلَعَلَّهُ مَكْذُوبٌ عَلَيْهِ، ثُمَّ قَالَ: يَا أَبَا سَعِيدٍ، وَاللَّهِ لَأُخْبِرَنَّكَ خَبَرًا حَقًّا، وَاللَّهِ إِنِّي لأَعْرِفُهُ وَأَعْرِفُ وَالِدَهُ وَأَعْرِفُ أَيْنَ هُوَ السَّاعَةَ مِنَ الأَرْضِ، فَقُلْتُ: تَبًّا لَكَ سَائِرَ الْيَوْمِ.

लोग रसूलुल्लाह(ﷺ) की हदीस खूब जानते हो। क्या रसूलुल्लाह(ﷺ) ने यह नहीं फ़रमाया: कि वह दज्जाल काफ़िर है जबकि मैं मुसलमान हूँ क्या रसूलुल्लाह(ﷺ) ने यह नहीं फ़रमाया: कि वह बाँझ होगा उसकी औलाद नहीं होगी और मैं मदीना में अपनी औलाद छोड़ कर आया हूँ? क्या रसूलुल्लाह(ﷺ) ने यह नहीं फ़रमाया: कि वह मक्का और मदीना में दाख़िल नहीं हो सकता। क्या मैं मदीना वालों में से नहीं हूँ और अब आप के साथ मक्का जा रहा हूँ, रावी कहते हैं: अल्लाह की क़सम! वह मुझे ऐसे दलाइल देता रहा यहाँ तक कि मैंने कहा: शायद लोग इस बारे में झूठ कहते हैं। फिर उसने कहा: ऐ अबू सईद! अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हें एक सच्ची ख़बर देता हूँ कि मैं उसे जानता हूँ, उसके बाप को भी पहचानता हूँ और यह भी जानता हूँ कि वह इस वक़्त किस इलाक़े में है। तो मैंने कहा: सारा दिन तेरे लिए बर्बादी हो।

मुस्लिम: 2927.मुसनद अहमद: 3/26.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2247 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، عَنِ الْجُرَيْرِيِّ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: لَقِيَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ابْنَ صَائِدٍ فِي بَعْضِ طُرُقِ الْمَدِينَةِ فَاحْتَبَسَهُ وَهُوَ غُلاَمٌ يَهُودِيٌّ وَلَهُ ذُؤَابَةٌ وَمَعَهُ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ

2247 - सय्यदना अबू सईद (رضي الله عنه) बयान करते हैं: मदीना के किसी रास्ते में रसूलुल्लाह(ﷺ) इब्ने साइद से मिले तो उसे रोक लिया वह एक यहूदी लड़का था और उसके सर पर एक चोटी भी थी और आप(ﷺ) के साथ अबू बक्र और उमर (رضي الله عنهما) भी थे। रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उस से फ़रमाया: "क्या तुम गवाही देते हो कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ?" उस ने कहा : क्या आप गवाही देते हैं कि मैं अल्लाह का रसूल हूं।" तो

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: تَشْهَدُ أَنِّي رَسُولُ اللهِ؟ فَقَالَ: أَتَشْهَدُ أَنْتَ أَنِّي رَسُولُ اللهِ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: آمَنْتُ بِاللَّهِ وَمَلاَئِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ، قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا تَرَى؟ قَالَ: أَرَى عَرْشًا فَوْقَ الْمَاءِ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَرَى عَرْشَ إِبْلِيسَ فَوْقَ الْبَحْرِ، قَالَ: فَمَا تَرَى؟ قَالَ: أَرَى صَادِقًا وَكَاذِبِينَ أَوْ صَادِقِينَ وَكَاذِبًا، قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ :لُبِسَ عَلَيْهِ فَدَعَاهُ.

नबी करीम(ﷺ) ने फ़रमाया: "मैं अल्लाह, उसके फरिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों और आख़िरत के दिन पर ईमान लाता हूँ" फिर नबी करीम(ﷺ) ने उस से कहा: "तुम क्या देखते हो?" उस ने कहा: मैं पानी के ऊपर तख़्त देखता हूँ तो नबी करीम(ﷺ) ने फ़रमाया: "यह समन्दर पर इब्लीस का तख़्त देखता है" आप ने फ़रमाया: "अब तुम क्या देखते हो?" उस ने कहा मैं एक सच्चा और दो झूठे या दो सच्चे और एक झूठा देख रहा हूँ नबी करीम(ﷺ) ने फ़रमाया: "उस पर मामला मुश्तबा (डाउटफुल/ संदेहजनक) हो गया है" फिर आप ने उसे छोड़ दिया।

मुस्लिम: 2925. मुसनद अहमद:3/66.इब्ने अबी शैबा:15/160

वज़ाहत: इस बारे में उमर, हुसैन बिन अली, इब्ने उमर, अबू ज़र, इब्ने मसऊद, जाबिर और हफ्सा (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है।

2248 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُعَاوِيَةَ الْجُمَحِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرَةَ، عَنْ أَبِيهِ قَالَ :قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَمْكُثُ أَبُو الدَّجَّالِ وَأُمُّهُ ثَلاَثِينَ عَامًا لاَ يُولَدُ لَهُمَا وَلَدٌ ثُمَّ يُولَدُ لَهُمَا غُلاَمٌ أَعْوَرُ أَضَرُّ شَيْءٍ وَأَقَلُّهُ مَنْفَعَةً، تَنَامُ عَيْنَاهُ وَلاَ يَنَامُ قَلْبُهُ، ثُمَّ نَعَتَ لَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَبَوَيْهِ، فَقَالَ: أَبُوهُ

2248 - सय्यदना अबू बक्रा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "दज्जाल के मां बाप तीस साल तक बे औलाद रहेंगे। फिर उनके यहाँ लड़का पैदा होगा जो काना होगा ज़्यादा नुकसान वाला और कम नफ़ा वाला होगा उसकी आँखें सोयेंगी दिल नहीं सोयेगा, फिर रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसके मां बाप का हुलिया बयान किया, आप ने फ़रमाया: "उसका बाप लंबा, कम गोश्त वाला (यानी दुबला पतला) होगा गोया उसकी नाक एक चोंच हो और उसकी मां लम्बी चौड़ी लम्बी पिस्तान वाली होगी। "अबू बक्रा

طِوَالٌ ضَرْبُ اللَّحْمِ كَأَنَّ أَنْفَهُ مِنْقَارٌ، وَأُمُّهُ فِرْضَاخِيَّةٌ طَوِيلَةُ الثَّدْيَيْنِ فَقَالَ أَبُو بَكْرَةَ: فَسَمِعْنَا بِمَوْلُودٍ فِي الْيَهُودِ بِالْمَدِينَةِ فَذَهَبْتُ أَنَا وَالزُّبَيْرُ بْنُ الْعَوَّامِ حَتَّى دَخَلْنَا عَلَى أَبَوَيْهِ، فَإِذَا نَعْتُ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيهِمَا، فَقُلْنَا: هَلْ لَكُمَا وَلَدٌ؟ فَقَالاَ: مَكَثْنَا ثَلاَثِينَ عَامًا لاَ يُولَدُ لَنَا وَلَدٌ، ثُمَّ وُلِدَ لَنَا غُلاَمٌ أَعْوَرُ أَضَرُّ شَيْءٍ وَأَقَلُّهُ مَنْفَعَةً، تَنَامُ عَيْنَاهُ وَلاَ يَنَامُ قَلْبُهُ، قَالَ: فَخَرَجْنَا مِنْ عِنْدِهِمَا فَإِذَا هُوَ مُنْجَدِلٌ فِي الشَّمْسِ فِي قَطِيفَةٍ لَهُ وَلَهُ هَمْهَمَةٌ، فَتَكَشَّفَ عَنْ رَأْسِهِ فَقَالَ: مَا قُلْتُمَا؟ قُلْنَا: وَهَلْ سَمِعْتَ مَا قُلْنَا؟ قَالَ: نَعَمْ، تَنَامُ عَيْنَايَ وَلاَ يَنَامُ قَلْبِي.

(ﷺ) कहते हैं: हम ने मदीना आए यहूदियों के एक नौ मौलूद बच्चे के बारे में सुना तो मैं और ज़ुबैर बिन अव्वाम (ﷺ) उस बच्चे के मां बाप के पास गए हम ने कहा: क्या तुम्हारा कोई बच्चा है? वह कहने लगे: हम तीस साल तक बेऔलाद रहे, हमारा कोई बच्चा नहीं था, फिर हमारे यहाँ एक काना लड़का पैदा हुआ उसका नुकसान ज़्यादा और नफ़ा कम है उसकी आंखे सोती हैं और दिल नहीं सोता, कहते हैं: हम उनके पास से बाहर आए तो वह बच्चा धुप में एक चादर लेकर लेटा हुआ कुछ गुनगुना[1] रहा था, उसने अपना सर नंगा किया फिर कहने लगा: तुम दोनों ने क्या कहा? हम ने कहा: हमने जो कहा क्या तुमने वह सुन लिया? उसने कहा: हाँ" मेरी आँखें सोती हैं दिल नहीं सोता।

ज़ईफ़: इब्ने अबी शैबा: 15/ 139. मुसनद अहमद: 5/ 40.

तौज़ीह: (1) هَمْهَمَة : अपने आप से बातें करना गुनगुनाहट।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे हम्माद बिन सलमा की हदीस से ही जानते हैं।

64باب: لا تاتي مائة سنة و علي الأرض نفس منفوسة اليوم

64 - जो लोग आज हैं एक सदी गुजरने पर इन में से कोई भी ज़मीन पर नहीं होगा।

2249 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ :أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّ بِابْنِ صَيَّادٍ فِي

2249 - सय्यदना इब्ने उमर (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) इब्ने सय्याद के पास से गुज़रे आप के साथ सहाबा की एक जमाअत थी जिनमें उमर बिन ख़त्ताब (ﷺ) भी थे। वह (इब्ने सय्याद) बनू मगाला के घरों

नَفَرٍ مِنْ أَصْحَابِهِ فِيهِمْ عُمَرُ بْنُ الخَطَّابِ وَهُوَ يَلْعَبُ مَعَ الغِلْمَانِ عِنْدَ أُطُمِ بَنِي مَغَالَةَ وَهُوَ غُلَامٌ، فَلَمْ يَشْعُرْ حَتَّى ضَرَبَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ظَهْرَهُ بِيَدِهِ ثُمَّ قَالَ: أَتَشْهَدُ أَنِّي رَسُولُ اللهِ؟ فَنَظَرَ إِلَيْهِ ابْنُ صَيَّادٍ قَالَ: أَشْهَدُ أَنَّكَ رَسُولُ الأُمِّيِّينَ، ثُمَّ قَالَ ابْنُ صَيَّادٍ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَتَشْهَدُ أَنْتَ أَنِّي رَسُولُ اللهِ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: آمَنْتُ بِاللَّهِ وَبِرُسُلِهِ ثُمَّ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا يَأْتِيكَ؟ قَالَ ابْنُ صَيَّادٍ: يَأْتِينِي صَادِقٌ وَكَاذِبٌ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: خُلِّطَ عَلَيْكَ الأَمْرُ، ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنِّي خَبَأْتُ لَكَ خَبِيئًا وَخَبَأَ لَهُ{يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُبِينٍ} فَقَالَ ابْنُ صَيَّادٍ: هُوَ الدُّخُّ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اخْسَأْ فَلَنْ تَعْدُوَ قَدْرَكَ قَالَ عُمَرُ: يَا رَسُولَ اللهِ، ائْذَنْ لِي فَأَضْرِبَ عُنُقَهُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنْ يَكُ حَقًّا فَلَنْ تُسَلَّطَ عَلَيْهِ، وَإِنْ لاَ يَكُنْهُ فَلاَ خَيْرَ لَكَ فِي قَتْلِهِ قَالَ عَبْدُ الرَّزَّاقِ: يَعْنِي الدَّجَّالَ .

के पास बच्चों के साथ खेल रहा था, उसे कुछ पता न चला यहाँ तक कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसकी पीठ पर अपना हाथ मारा फिर आप (ﷺ) ने फ़रमाया: " क्या तु गवाही देता है कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ?" इब्ने सय्याद ने आप की तरफ़ देख कर कहा: मैं गवाही देता हूँ कि आप अनपढ़ लोगों के रसूल हैं। नबी करीम(ﷺ) ने फ़रमाया: "मैंने अल्लाह और उसके पैगम्बरों पर ईमान लाया" फिर नबी करीम(ﷺ) ने फ़रमाया: "तुम्हारे पास क्या ख़बरें आती हैं?" इब्ने सय्याद ने कहा : मेरे पास सच्चे और झूठे आते हैं तो नबी करीम(ﷺ) ने फ़रमाया: "मैंने तुम्हारे दिल में एक बात बिठाई है और आप ने उसके लिए यह आयत बिठा दी: " जिस दिन आसमान वाज़ेह धुंए के साथ आयेगा।" (अद्दुखान: 10) तो इब्ने सय्याद कहने लगा: वह धुंवा है। अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने फ़रमाया: "तुझ पर फटकार हो। तु अपनी तक़्दीर से आगे नहीं बढ़ सकता" उमर (رضي الله عنه) ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! आप मुझे इसकी गर्दन उतारने की इजाज़त दीजिये तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "अगर यह हक़ीक़त में वही दज्जाल है तो तुम इस पर मुसल्लत नहीं हो सकते और अगर यह वह नहीं है तो इसे क़त्ल करने का कोई फ़ायदा नहीं है।" अब्दुर्रज्जाक कहते हैं : इस से मुराद दज्जाल है।

बुख़ारी: 1354. मुस्लिम: 2930. अबू दाऊद:4329.

2250 - सय्यदना जाबिर (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "ज़मीन के ऊपर आज जो लोग ज़िंदा हैं एक सौ साल तक वह नहीं होंगे।"

मुसनद अहमद: 3/313. अब्द बिन हुमैद: 1025. अदबुल मुफ़रद: 961. इब्ने माजह; 3736.

2250 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي سُفْيَانَ، عَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا عَلَى الأَرْضِ نَفْسٌ مَنْفُوسَةٌ _ يَعْنِي الْيَوْمَ _ تَأْتِي عَلَيْهَا مِائَةُ سَنَةٍ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस बारे में इब्ने उमर, अबू सईद, बुरैदा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है और यह हदीस हसन है।

2251 - सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब (ﷺ) बयान करते हैं कि ज़िंदगी के आख़िरी अय्याम (दिनों) में एक रात रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हमें इशा की नमाज़ पढ़ाई फिर जब आप ने सलाम फेरा तो खड़े होकर फ़रमाया: "याद रखो! आज जो लोग इस रात दुनिया में मौजूद हैं एक सौ साल ख़त्म होने पर इन में से कोई भी नहीं रहेगा।" इब्ने उमर (ﷺ) कहते हैं: फिर लोगों ने रसूलुल्लाह(ﷺ) की इस बात को समझने में ग़लती की वह उन सौ साल के बारे में मुख़्तलिफ़ बातें बयान करते हैं जबकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तो यही फ़रमाया था कि जो आज ज़मीन पर हैं उन में से कोई भी नहीं रहेगा इस से मुराद यह थी कि यह (सहाबा का) दौर ख़त्म हो जाएगा।[1]

मुस्लिम: 2537.

2251 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ :أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، وَأَبِي بَكْرِ بْنِ سُلَيْمَانَ وَهُوَ ابْنُ أَبِي حَثْمَةَ، أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ قَالَ: صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاتَ لَيْلَةٍ صَلاَةَ العِشَاءِ فِي آخِرِ حَيَاتِهِ، فَلَمَّا سَلَّمَ قَالَ: أَرَأَيْتَكُمْ لَيْلَتَكُمْ هَذِهِ عَلَى رَأْسِ مِائَةِ سَنَةٍ مِنْهَا لاَ يَبْقَى مِمَّنْ هُوَ عَلَى ظَهْرِ الأَرْضِ أَحَدٌ قَالَ ابْنُ عُمَرَ: فَوَهِلَ النَّاسُ فِي مَقَالَةِ رَسُولِ اللهِ ﷺ تِلْكَ فِيمَا يَتَحَدَّثُونَهُ مِنْ هَذِهِ الأَحَادِيثِ عَنْ مِائَةِ سَنَةٍ، وَإِنَّمَا قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: لاَ يَبْقَى مِمَّنْ هُوَ اليَوْمَ عَلَى ظَهْرِ الأَرْضِ أَحَدٌ، يُرِيدُ بِذَلِكَ أَنْ يَنْخَرِمَ ذَلِكَ القَرْنُ.

तौज़ीह: (1) यह बात बिलकुल उसी तरह वाक़ेअ हुई कि उस से ठीक सौ साल बाद 110 हिजरी में सय्यदना अबू तुफ़ैल (ﷺ) भी वफ़ात पा गए थे।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह है।

65 - हवाओं को बुरा कहना मना है।

65بَابُ مَا جَاءَ فِي النَّهْيِ عَنْ سَبِّ الرِّيَاحِ

2252 - सय्यदना उबय बिन काब (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "तुम हवा को गाली मत दो। जब तुम नापसंदीदा चीज़ देखो तो तुम कहो: ऐ अल्लाह! हम तुझसे इस हवा की भलाई और जिसका हुक्म उसे दिया गया है उसकी भलाई का सवाल करते हैं और तुझसे इस हवा के शर और जिसका हुक्म उसे दिया गया है उसके शर से पनाह मांगते हैं।"

सहीह: मुसनद अहमद: 5/ 123.

2252 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ حَبِيبِ بْنِ الشَّهِيدِ الْبَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ أَبِي ثَابِتٍ، عَنْ ذَرٍّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبْزَى، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ تَسُبُّوا الرِّيحَ، فَإِذَا رَأَيْتُمْ مَا تَكْرَهُونَ فَقُولُوا: اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ هَذِهِ الرِّيحِ وَخَيْرِ مَا فِيهَا وَخَيْرِ مَا أُمِرَتْ بِهِ، وَنَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ هَذِهِ الرِّيحِ وَشَرِّ مَا فِيهَا وَشَرِّ مَا أُمِرَتْ بِهِ.

वज़ाहत: इस बारे में आयशा, अबू हुरैरा, उस्मान बिन अबी आस, अनस, इब्ने अब्बास और जाबिर (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

66 - दज्जाल के बारे में तमीम दारी का वाक़िया।

66. بَابٌ حديث تميم الدارمي في الدجال

2253 - सय्यदा फातिमा बिन्ते कैस (رضي الله عنها) से रिवायत है कि नबी करीम(ﷺ) मिम्बर पर चढ़े तो आप मुस्कुरा दिए फिर फ़रमाया "तमीम दारी ने मुझे एक वाक़िया सुनाया है मैं उसके साथ खुश हुआ, मैं चाहता हूँ कि तुम्हें भी बताऊँ उसने

2253 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ :حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ قَتَادَةَ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ فَاطِمَةَ بِنْتِ قَيْسٍ، أَنَّ نَبِيَّ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَعِدَ الْمِنْبَرَ

فَضَحِكَ فَقَالَ: إِنَّ تَمِيمًا الدَّارِيَّ حَدَّثَنِي بِحَدِيثٍ فَفَرِحْتُ بِهِ فَأَحْبَبْتُ أَنْ أُحَدِّثَكُمْ، حَدَّثَنِي أَنَّ نَاسًا مِنْ أَهْلِ فِلَسْطِينَ رَكِبُوا سَفِينَةً فِي البَحْرِ فَجَالَتْ بِهِمْ حَتَّى قَذَفَتْهُمْ فِي جَزِيرَةٍ مِنْ جَزَائِرِ البَحْرِ، فَإِذَا هُمْ بِدَابَّةٍ لَبَّاسَةٍ نَاشِرَةٍ شَعْرَهَا، فَقَالُوا: مَا أَنْتِ؟ قَالَتْ: أَنَا الجَسَّاسَةُ، قَالُوا :فَأَخْبِرِينَا، قَالَتْ: لاَ أُخْبِرُكُمْ وَلاَ أَسْتَخْبِرُكُمْ، وَلَكِنْ ائْتُوا أَقْصَى القَرْيَةِ فَإِنَّ ثَمَّ مَنْ يُخْبِرُكُمْ وَيَسْتَخْبِرُكُمْ، فَأَتَيْنَا أَقْصَى القَرْيَةِ فَإِذَا رَجُلٌ مُوثَقٌ بِسِلْسِلَةٍ، فَقَالَ: أَخْبِرُونِي عَنْ عَيْنِ زُغَرَ؟ قُلْنَا: مَلأَى تَدْفُقُ، قَالَ: أَخْبِرُونِي عَنِ البُحَيْرَةِ؟ قُلْنَا: مَلأَى تَدْفُقُ، قَالَ: أَخْبِرُونِي عَنْ نَخْلِ بَيْسَانَ الَّذِي بَيْنَ الأُرْدُنِّ وَفِلَسْطِينَ هَلْ أَطْعَمَ؟ قُلْنَا: نَعَمْ، قَالَ: أَخْبِرُونِي عَنِ النَّبِيِّ هَلْ بُعِثَ؟ قُلْنَا: نَعَمْ، قَالَ: أَخْبِرُونِي كَيْفَ النَّاسُ إِلَيْهِ؟ قُلْنَا سِرَاعٌ، قَالَ: فَنَزَّى نَزْوَةً حَتَّى كَادَ، قُلْنَا : فَمَا أَنْتَ؟ قَالَ: أَنَا الدَّجَّالُ، وَإِنَّهُ يَدْخُلُ الأَمْصَارَ كُلَّهَا إِلاَّ طَيْبَةَ، وَطَيْبَةُ الْمَدِينَةُ.

मुझे बताया कि फिलस्तीन के कुछ लोग समन्दर में एक कश्ती पर सवार हुए तो वह उनको घुमाने लगी यहाँ तक कि उसने उन्हें समन्दर के जज़ायिर में से एक जज़ीरा के अन्दर ला फेंका, अचानक उन्होंने एक बिखरे बालों वाला लब्बासा[1] जानवर देखा। लोगों ने उस से कहा: तुम कौन हो? उसने कहा: मैं जस्सामा हूँ। उन्होंने कहा: हमें बताओ। वह कहने लगा: न मैं तुम्हें बताउंगा और न ही तुम से कुछ पूछूंगा बल्कि तुम बस्ती के किनारे पहुँचो, वहाँ तुम्हें बताने और पूछने वाला है। फिर हम बस्ती के किनारे पर गए। अचानक वहाँ ज़ंजीर में जकड़ा एक आदमी देखा तो उसने कहा: मुझे ज़ुगर[2] के चश्मे का बताओ। हम ने कहा : वह भरा हुआ उछल रहा है। उसने कहा: मुझे बुहैरा के बारे में बताओ। हमने कहा वह भी पानी से भरा छलक रहा है। उसने कहा: मुझे फ़िलिस्तीन और उर्दुन के दर्मियान बैसान की ख़ुजूरों के बारे में बताओ, क्या वह फल दे रही हैं? हमने कहा: हाँ" मुझे नबी करीम(ﷺ) के बारे में बताओ क्या वह आ चुके हैं? हमने कहा : हाँ" कहने लगा: बताओ लोगों का उनकी तरफ़ रुझान कैसा है? हमने कहा: जल्दी कर रहे हैं। फिर उसने बड़ी ज़बरदस्त हरकत की क़रीब था कि वह आज़ाद हो जाए। हमने कहा:तुम कौन हो? उसने कहा: मैं दज्जाल हूँ और (नबी करीम(ﷺ) ने फ़रमाया, "वह सिवाए तैबा के सारे शहरों में दाख़िल होगा और तैबा मदीना है।"

सहीह। मुस्लिम:2942

तौज़ीह: لَبَّاسَةٍ : बहुत ज़्यादा लिबास वाला यह एक जानवर था जो जासूसी के लिए जंगल में था और लोगों से क़लाम भी करता था। इसीलिए उसने अपने आपको जस्सामा कहा था।

زُغَرَ : शाम में एक चश्मे का नाम है। और बुहैरा से मुराद बुहैरा तब्रिय्या है जिसका तज़किरा हदीस 2240 में भी गुजरा है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: क़तादा की शाबी से बयान कर्दा हदीस हसन सहीह ग़रीब है। इसे बहुत से लोगों ने बवास्ता शाबी फातिमा बिन्ते कैस (رضي الله عنها) से रिवायत किया है।

67- जो शख़्स आज़माइश बर्दाश्त करने की ताक़त नहीं रखता वह उसका सामना न करे।

67. بَابٌ لا يتعرض من البلاء لما لا يطيق

2254. सय्यदना हुज़ैफ़ा(رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "मोमिन को लायक़ नहीं कि वह अपने आप को रुस्वा करे।" लोगों ने कहा: वह अपने आप को रुस्वा कैसे करता है? आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "उस आज़माइश का सामना करता है जिसकी वह ताक़त नहीं रखता।"

सहीह: इब्ने माजह: 4016. मुसनद अहमद: 5/405.

2254 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ زَيْدٍ، عَنِ الحَسَنِ، عَنْ جُنْدَبٍ، عَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ يَنْبَغِي لِلْمُؤْمِنِ أَنْ يُذِلَّ نَفْسَهُ قَالُوا: وَكَيْفَ يُذِلُّ نَفْسَهُ؟ قَالَ: يَتَعَرَّضُ مِنَ البَلاَءِ لِمَا لاَ يُطِيقُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

68 - अपने भाई की मदद करो ज़ालिम हो या मजलूम।

بَابٌ انْصُرْ أَخَاكَ ظَالِمًا أَوْ مَظْلُومًا 68

2255 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी करीम(ﷺ) ने फ़रमाया: "अपने भाई की मदद करो वह ज़ालिम हो या मजलूम।" कहा गया: ऐ अल्लाह के रसूल! मैं मजलूम की मदद तो कर सकता हूँ, ज़ालिम की

2255 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، قَالَ :حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ الطَّوِيلُ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: انْصُرْ أَخَاكَ ظَالِمًا أَوْ

مَظْلُومًا، قُلْنَا: يَا رَسُولَ اللهِ، نَصَرْتُهُ مَظْلُومًا فَكَيْفَ أَنْصُرُهُ ظَالِمًا؟ قَالَ :تَكُفُّهُ عَنِ الظُّلْمِ، فَذَاكَ نَصْرُكَ إِيَّاهُ.

मदद कैसे करूं? आप ने फ़रमाया: "तुम उसे ज़ुल्म करने से रोको।" यही उसकी मदद है।"

सहीह: बुख़ारी: 2443. मुसनद अहमद: 3/201.

वज़ाहत: इस बारे में आयशा (رضي الله عنها) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

69. بَابٌ مَنْ أَتَى أَبْوَابَ السُّلْطَانِ افْتَتَنَ

69 - जो हाकिम के दरवाज़े पर गया वह फ़ित्ने में पड़ गया।

2256 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي مُوسَى، عَنْ وَهْبِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ سَكَنَ الْبَادِيَةَ جَفَا، وَمَنْ اتَّبَعَ الصَّيْدَ غَفَلَ، وَمَنْ أَتَى أَبْوَابَ السُّلْطَانِ افْتَتَنَ

2256 - सय्यदना इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी करीम(ﷺ) ने फ़रमाया: "जंगल में रहने वाला सख़्त दिल हो जाता है। शिकार के पीछे लगने वाला दीन से ग़ाफ़िल हो जाता है और जो शख़्स हाकिम के दरवाज़े पर आए वह फ़ित्ने में पड़ जाता है।"

सहीह: अबू दाऊद: 2859. निसाई: 4309. मुसनद अहमद: 1/357.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: सय्यदना इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) की यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। हम इसे बतरीक़ सौरी ही जानते हैं। नीज़ इस बारे में अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

70 بَابٌ لزوم تقوي الله عند الفتح و النصر

70 - फ़तह और नुसरत के वक़्त अल्लाह का तक़्वा लाज़िम रखना।

2257 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ : حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ يُحَدِّثُ، عَنْ أَبِيهِ

2257 - सय्यदना इब्ने मसऊद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "तुम्हारी मदद की जाएगी, तुम्हें अमवाल मिलेंगे और तुम्हारे लिए फ़ुतूहात होंगी, फिर तुम में से जो शख़्स यह वक़्त पा ले

قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: إِنَّكُمْ مَنْصُورُونَ وَمُصِيبُونَ وَمَفْتُوحٌ لَكُمْ، فَمَنْ أَدْرَكَ ذَلِكَ مِنْكُمْ فَلْيَتَّقِ اللَّهَ وَلْيَأْمُرْ بِالمَعْرُوفِ وَلْيَنْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ، وَمَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ.

तो उसे चाहिए कि वह अल्लाह से डरे, नेकी का हुक्म दे और बुराई से रोके और जिसने जानबूझ कर मुझ पर झूठ बोला वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।"

सहीह: मुसनद अहमद: 1/389. इब्ने माजह:30. अबू दाऊद:5118.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

71 بَابُ الفِتْنَةِ الَّتِي تَمُوجُ كَمَوْجِ البَحْرِ

71 - उस फ़ित्ना का बयान जो समन्दर की तरह मौज मारेगा।

2258 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الأَعْمَشِ، وَحَمَّادٍ، وَعَاصِمِ ابْنِ بَهْدَلَةَ، سَمِعُوا أَبَا وَائِلٍ، عَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ: قَالَ عُمَرُ: أَيُّكُمْ يَحْفَظُ مَا قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الفِتْنَةِ؟ فَقَالَ حُذَيْفَةُ: أَنَا، قَالَ حُذَيْفَةُ: فِتْنَةُ الرَّجُلِ فِي أَهْلِهِ وَمَالِهِ وَوَلَدِهِ وَجَارِهِ تُكَفِّرُهَا الصَّلاَةُ وَالصَّوْمُ وَالصَّدَقَةُ وَالأَمْرُ بِالمَعْرُوفِ وَالنَّهْيُ عَنِ الْمُنْكَرِ فَقَالَ عُمَرُ: لَسْتُ عَنْ هَذَا أَسْأَلُكَ، وَلَكِنْ عَنِ الفِتْنَةِ الَّتِي تَمُوجُ كَمَوْجِ البَحْرِ؟ قَالَ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، إِنَّ بَيْنَكَ وَبَيْنَهَا بَابًا مُغْلَقًا، قَالَ عُمَرُ: أَيُفْتَحُ أَمْ يُكْسَرُ؟ قَالَ: بَلْ يُكْسَرُ، قَالَ: إِذًا لاَ يُغْلَقُ إِلَى يَوْمِ القِيَامَةِ قَالَ أَبُو وَائِلٍ فِي

2258 - सय्यदना हुज़ैफा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि उमर (رضي الله عنه) ने कहा कि रसूलुल्लाह(ﷺ) का फ़ित्ने के बारे में इर्शादे गरामी किसे याद है? हुज़ैफा ने कहा: आदमी का अपने अहल, माल औलाद और पड़ोसी के बारे में जो फ़ित्ना हो उसे नमाज़, रोज़ा, सदक़ा, नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना (यह चीजें) ख़त्म कर देती हैं। उमर (رضي الله عنه) ने कहा: "मैंने आप से इस बारे में नहीं बल्कि समन्दर की तरह मौजें मारने वाले फ़ित्ने के बारे में पूछा है, उन्होंने कहा: ऐ अमीरुल मोमिनीन! आपके और उस फ़ित्ने के दर्मियान एक बंद दरवाज़ा है। उमर(رضي الله عنه) ने कहा उस दरवाज़े को खोला जाएगा या तोड़ा जाएगा? उन्होंने कहा: तोड़ा जाएगा। उमर (رضي الله عنه) ने कहा: फिर तो क़यामत तक बंद नहीं होगा। अबू वाइल हम्माद की हदीस में कहते हैं: मैंने मसूक से कहा: आप हुज़ैफा (رضي الله عنه) से दरवाज़े के बारे में पूछें उन्होंने

حَدِيثِ حَمَّادٍ: فَقُلْتُ لِمَسْرُوقٍ: سَلْ حُذَيْفَةَ عَنِ البَابِ، فَسَأَلَهُ فَقَالَ: عُمَرُ.

पूछा तो (हुज़ैफा ﷛) ने फ़रमाया: वह दरवाज़ा उमर (﷛) हैं।

बुख़ारी: 525. मुस्लिम: 144. इब्ने माजह: 3955.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (﷫) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह है।

72 بَابٌ فِي التحذير عن موافقه أمراء السوء

72-बुरे हाकिमों की मुवाफ़िक़ात करने से बचो

2259 - حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ إِسْحَاقَ الهَمْدَانِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الوَهَّابِ، عَنْ مِسْعَرٍ، عَنْ أَبِي حَصِينٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ عَاصِمٍ العَدَوِيِّ، عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ قَالَ: خَرَجَ إِلَيْنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَحْنُ تِسْعَةٌ خَمْسَةٌ وَأَرْبَعَةٌ أَحَدُ العَدَدَيْنِ مِنَ العَرَبِ وَالآخَرُ مِنَ العَجَمِ فَقَالَ: اسْمَعُوا، هَلْ سَمِعْتُمْ أَنَّهُ سَيَكُونُ بَعْدِي أُمَرَاءُ؟ فَمَنْ دَخَلَ عَلَيْهِمْ فَصَدَّقَهُمْ بِكَذِبِهِمْ وَأَعَانَهُمْ عَلَى ظُلْمِهِمْ فَلَيْسَ مِنِّي وَلَسْتُ مِنْهُ وَلَيْسَ بِوَارِدٍ عَلَيَّ الحَوْضَ، وَمَنْ لَمْ يَدْخُلْ عَلَيْهِمْ وَلَمْ يُعِنْهُمْ عَلَى ظُلْمِهِمْ وَلَمْ يُصَدِّقْهُمْ بِكَذِبِهِمْ فَهُوَ مِنِّي وَأَنَا مِنْهُ وَهُوَ وَارِدٌ عَلَيَّ الحَوْضَ.

2259 - सय्यदना काब बिन उज्रा (﷛) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) हमारे पास तशरीफ़ लाये हम पांच अरब और चार अजमी (बैठे हुए) थे तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "गौर से सुनो, क्या तुमने सुना है कि मेरे बाद हुक्मरान होंगे जो उनके पास जाकर उनके झुठ को सच्चा कहे और जुल्म पर उनका तआवुन करे तो वह मुझ से नहीं और मैं उस से नहीं हूँ और न ही वह मेरे पास हौज़े कौसर पर आ सकेगा और जो शख़्स उनके पास गया, न जुल्म पर उनके साथ तआवुन किया और न ही उनके झूठ को सच कहा तो वह मुझसे और मैं उससे हूँ और वह मेरे पास हौज़े कौसर पर भी आयेगा।

सहीह: मुसनद अहमद: 4/243. इब्ने हिब्बान: 279. बैहक़ी: 8/165

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (﷫) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह ग़रीब है। हम इसे मिस्अर से इसी सनद से ही जानते हैं। हारून कहते हैं: मुझे मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब ने सुफ़ियान से, उन्होंने अबू हुसैन से, उन्हें शाबी ने आसिम अदवी से बवास्ता काब बिन उज्रा (﷛), नबी करीम(ﷺ) से ऐसी ही हदीस बयान की है।

हारून कहते हैं: मुझे मुहम्मद ने सुफ़ियान से बवास्ता इब्राहीम भी (यह नखई नहीं है) काब बिन उज्रा (﷛) के ज़रिए नबी करीम(ﷺ) से मिस्अर की हदीस जैसी हदीस बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी (﷫) फ़रमाते हैं: इस बारे में हुज़ैफा और इब्ने उमर (﷛) से भी हदीस मर्वी है।

73 - फ़ितनों के दौर में दीन पर सब्र करने वाला, हाथ में अंगारे थामने वाले की तरह होगा

73 بَابُ الصَّابِرُ عَلَى دِينِهِ فِي الفتن كَالقَابِضِ عَلَى الجَمْرِ.

2260 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "लोगों पर एक ऐसा ज़माना आयेगा कि उनमें से अपने दीन पर सब्र करने वाला शख़्स अंगारे पकड़ने वाले की तरह होगा।"

सहीह

2260 - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ مُوسَى الفَزَارِيُّ ابْنُ بِنْتِ السُّدِّيِّ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ شَاكِرٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ الصَّابِرُ فِيهِمْ عَلَى دِينِهِ كَالقَابِضِ عَلَى الجَمْرِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस ग़रीब है। और उमर बिन शाकिर से बहुत से उलमा ने रिवायत की है। यह बुज़ुर्ग बस्रा के रहने वाले थे। "

74 - उम्मत के बुरे लोग नेक लोगों पर कब मुसल्लत होंगे?

74 بَابٌ من يسلط شِرَارُ أُمتي عَلَى خِيَارِهَا.

2261 - सय्यदना इब्ने उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "जब मेरी उम्मत अकड़(1) कर चलेगी और फारस रूम के बादशाहों के बेटे इनकी ख़िदमत करेंगे तो इसके बुरे लोगों को अच्छे लोगों पर मुसल्लत कर दिया जाएगा।"

सहीह: ज़ुहद ले इब्ने मुबारक: 187. अल-कामिल: 6/2335

2261 - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الكِنْدِيُّ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ حُبَابٍ قَالَ :أَخْبَرَنِي مُوسَى بْنُ عُبَيْدَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا مَشَتْ أُمَّتِي بِالمُطَيْطِيَاءِ وَخَدَمَهَا أَبْنَاءُ الْمُلُوكِ أَبْنَاءُ فَارِسَ وَالرُّومِ سُلِّطَ شِرَارُهَا عَلَى خِيَارِهَا.

तौज़ीह: المُطَيْطِيَاءِ : अकड़ कर, इतराहट के साथ चलना। (अल-मोजमुल वसीत:पृ. 1060)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। इसे अबू मुआविया ने भी यह्या बिन सईद अंसारी से रिवायत किया है।

हमें यह हदीस मुहम्मद बिन इस्माईल ने, उन्हें अबू मुआविया ने यह्या बिन सईद अंसारी से बवास्ता अब्दुल्लाह बिन दीनार, इब्ने उमर (ﷺ) से उन्होंने नबी(ﷺ) से इसी तरह रिवायत की है लेकिन अबू मुआविया की यह्या बिन सईद से बवास्ता अब्दुल्लाह बिन दीनार, इब्ने उमर (ﷺ) से रिवायतकर्दा हदीस की कोई असल नहीं है। यह मूसा बिन उबैदा से ही मशहूर है। नीज़ मालिक बिन अनस (ﷺ) ने इस हदीस को यह्या बिन सईद से मुर्सल रिवायत किया है। उसने अब्दुल्लाह बिन दीनार (ﷺ) और इब्ने उमर (ﷺ) का ज़िक्र नहीं किया।

75 بَابٌ مع جاء: لَنْ يُفْلِحَ قَوْمٌ وَلَّوْا أَمْرَهُمْ امْرَأَةً

75 - वह लोग कामयाब नहीं हो सकते जो औरत को हाकिम बना लें।

2262 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الحَارِثِ، قَالَ: حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ الطَّوِيلُ، عَنِ الحَسَنِ، عَنْ أَبِي بَكْرَةَ قَالَ: عَصَمَنِي اللَّهُ بِشَيْءٍ سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا هَلَكَ كِسْرَى، قَالَ: مَنْ اسْتَخْلَفُوا؟ قَالُوا: ابْنَتَهُ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَنْ يُفْلِحَ قَوْمٌ وَلَّوْا أَمْرَهُمْ امْرَأَةً، قَالَ: فَلَمَّا قَدِمَتْ عَائِشَةُ يَعْنِي البَصْرَةَ ذَكَرْتُ قَوْلَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَعَصَمَنِي اللَّهُ بِهِ.

2262 - सय्यदना अबू बक्रा (ﷺ) बयान करते हैं कि अल्लाह तआला ने मुझे उस चीज़ की वजह से बचा लिया जो मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुनी थी कि जब किस्रा हलाक हुआ तो आप(ﷺ) ने पूछा: "उन्होंने किसे जानशीन बनाया है?" लोगों ने कहा उसकी बेटी को। तो नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: "वह कौम हरगिज़ कामयाब नहीं हो सकती जो औरत को अपना हाकिम बना ले।" रावी कहते हैं: जब सय्यदा आयशा (ﷺ) बसरा आयी तो मुझे रसूलुल्लाह(ﷺ) की हदीस याद आ गई, अल्लाह तआला ने मुझे इस (हदीस) की वजह से बचा लिया।

बुख़ारी: 4425. निसाई:5388.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

76 - बेहतरीन शख़्स वह है जिस से भलाई की उम्मीद की जाए और उसके शर (बुराई) का ख़तरा न हो।

76 بَابٌ حدیث خَيْرُكُمْ مَنْ يُرْجَى خَيْرُهُ وَيُؤْمَنُ شَرُّهُ

2263 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) बैठे हुए लोगों के पास ठहरे तो आप ने फ़रमाया: "क्या मैं बुरों में से अच्छे लोगों के बारे में न बताऊँ?" रावी कहते हैं: लोग ख़ामोश हो गए फिर आप ने तीन मर्तबा यही बात कही तो एक आदमी कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल! क्यों नहीं, हमें हमारे अच्छे और बुरे के बारे में बताइए। आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "तुम में से बेहतर वह है जिस से भलाई की उम्मीद की जाए और उसके शर का डर न हो और तुम में बदतरीन वह है जिससे भलाई की उम्मीद न की जाए और उसके शर का डर हो।"

2263 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنِ الْعَلَاءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَفَ عَلَى نَاسٍ جُلُوسٍ، فَقَالَ: أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِخَيْرِكُمْ مِنْ شَرِّكُمْ؟ قَالَ: فَسَكَتُوا، فَقَالَ ذَلِكَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، فَقَالَ رَجُلٌ: بَلَى يَا رَسُولَ اللهِ، أَخْبِرْنَا بِخَيْرِنَا مِنْ شَرِّنَا، قَالَ: خَيْرُكُمْ مَنْ يُرْجَى خَيْرُهُ وَيُؤْمَنُ شَرُّهُ، وَشَرُّكُمْ مَنْ لَا يُرْجَى خَيْرُهُ وَلَا يُؤْمَنُ شَرُّهُ.

सहीह: मुसनद अहमद: 2/368, इब्ने हिब्बान: 527.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

77 - अच्छे और बुरे हाकिमों का बयान।

77 بَابٌ فِي خِيَارِ أُمَرَاءِ وَشِرَارِهِمْ

2264 - सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: "क्या मैं तुम्हारे अच्छे और बुरे हाकिमों के बारे में न बताऊँ? अच्छे वह हैं जिनसे तुम मोहब्बत करते हो और वह तुम से मोहब्बत करते हैं, तुम उनके लिए दुआ करते हो और वह तुम्हारे लिए दुआ करते हैं और तुम्हारे बुरे हाकिम वह हैं

2264 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ الْعَقَدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي حُمَيْدٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِخِيَارِ أُمَرَائِكُمْ

وَشِرَارِهِمْ؟ خِيَارُهُمُ الَّذِينَ تُحِبُّونَهُمْ وَيُحِبُّونَكُمْ وَتَدْعُونَ لَهُمْ وَيَدْعُونَ لَكُمْ، وَشِرَارُ أُمَرَائِكُمُ الَّذِينَ تُبْغِضُونَهُمْ وَيُبْغِضُونَكُمْ وَتَلْعَنُونَهُمْ وَيَلْعَنُونَكُمْ.

जिनसे तुम नफ़रत करते हो और वह तुम से नफ़रत करते हैं, तुम उन्हें लानत करते हो और वह तुम्हें लानत करते हो।

सहीह: बज़्ज़ार: 290. अबू याला: 161.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे मुहम्मद बिन अबी हुमैद के तरीक़ से ही जानते हैं और मुहम्मद (बिन अबी हुमैद) अपने हाफ़िज़े की वजह से ज़ईफ़ है।

78 بَابٌ متي يكون ظهر الأرض خيرا من بطنها و متي يكون شرا

78 - ज़मीन की सतह उसके पेट से कब बेहतर और कब बुरी होगी।

2265 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الخَلاَّلُ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ حَسَّانَ، عَنِ الحَسَنِ، عَنْ ضَبَّةَ بْنِ مِحْصَنٍ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: إِنَّهُ سَيَكُونُ عَلَيْكُمْ أَئِمَّةٌ تَعْرِفُونَ وَتُنْكِرُونَ فَمَنْ أَنْكَرَ فَقَدْ بَرِئَ وَمَنْ كَرِهَ فَقَدْ سَلِمَ وَلَكِنْ مَنْ رَضِيَ وَتَابَعَ، فَقِيلَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَفَلاَ نُقَاتِلُهُمْ؟ قَالَ: لاَ، مَا صَلَّوْا.

2265 - सय्यदा उम्मे सलमा (ﷺ) रिवायत करती हैं कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: "अन्क़रीब तुम्हारे ऊपर ऐसे हाकिम होंगे तुम (उनके कुछ कामों को) अच्छा और (कुछ को) बुरा जानोगे, जिसने इन्कार किया वह बरी हो गया, जिसने नापसंद किया वह सलामत रहा लेकिन जिसने उसे पसंद किया और पैरवी की (वह हलाक हुआ)" कहा गया: ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हम उनसे लड़ाई न करें? आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "नहीं जब तक वह नमाज़ पढ़ते हैं।"

मुस्लिम: 1854. अबू दाऊद: 4760.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2266 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ سَعِيدٍ الأَشْقَرُ، قَالَ: حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ، وَهَاشِمُ بْنُ القَاسِمِ، قَالاَ :حَدَّثَنَا صَالِحٌ الْمُرِّيُّ، عَنْ سَعِيدٍ

2266 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "जब तुम्हारा हाकिम अच्छे लोग, तुम्हारे मालदार सखी और तुम्हारे काम आपस में मशवरे के साथ रहे तो ज़मीन की पुश्त (पीठ)

الجُرَيْرِيِّ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا كَانَ أُمَرَاؤُكُمْ خِيَارَكُمْ، وَأَغْنِيَاؤُكُمْ سُمَحَاءَكُمْ، وَأُمُورُكُمْ شُورَى بَيْنَكُمْ فَظَهْرُ الأَرْضِ خَيْرٌ لَكُمْ مِنْ بَطْنِهَا، وَإِذَا كَانَ أُمَرَاؤُكُمْ شِرَارَكُمْ وَأَغْنِيَاؤُكُمْ بُخَلاَءَكُمْ، وَأُمُورُكُمْ إِلَى نِسَائِكُمْ فَبَطْنُ الأَرْضِ خَيْرٌ لَكُمْ مِنْ ظَهْرِهَا.

तुम्हारे लिए उसके पेट से बेहतर होगी और जब तुम्हारे हाकिम बुरे, तुम्हारे मालदार कंजूस और तुम्हारे मामलात औरतों के सुपुर्द हुए तो ज़मीन का पेट तुम्हारे लिए उसकी पुश्त से बेहतर होगा।"

ज़ईफ़: अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा: 6999

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे सालेह मुर्री के तरीक़ से जानते हैं और सालेह मुर्री की हदीस में ग़राइब (अज़ीब-अज़ीब बातें) हैं जिन में वह मुन्फ़रिद (तन्हा) हैं। उनकी उन ग़राईब में किसी ने मुताबअत नहीं की। जबकि यह खुद सालेह नेक इंसान था।

79 بَابٌ فِي العمل في الفتن و الأرض ألفتن و علامة الفتن.

79 - फ़ित्ना के दौर में फ़ित्ना के इलाक़े में नेक अमल करना और फ़ित्नों की निशानियाँ।

2267 - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يَعْقُوبَ الجُوزَجَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا نُعَيْمُ بْنُ حَمَّادٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ :إِنَّكُمْ فِي زَمَانٍ مَنْ تَرَكَ مِنْكُمْ عُشْرَ مَا أُمِرَ بِهِ هَلَكَ ثُمَّ يَأْتِي زَمَانٌ مَنْ عَمِلَ مِنْهُمْ بِعُشْرِ مَا أُمِرَ بِهِ نَجَا.

2267 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) बयान करते हैं कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: "तुम (सहाबा) ऐसे ज़माने में हो कि जिसने अहकामात से दस्वाँ हिस्सा छोड़ा वह हलाक हो गया, फिर एक वक़्त आयेगा जिसने अहकामात के दस्वीं हिस्से पर भी अमल कर लिया वह निजात पा जाएगा।

सहीह

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे नुऐम बिन हम्माद के तरीक़ से ही सुफ़ियान बिन उयय्ना से जानते हैं। नीज़ इस बारे में अबू ज़र और अबू सईद (ﷺ) से भी मर्वी है।

2268 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ :حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: قَامَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ: هَاهُنَا أَرْضُ الْفِتَنِ، وَأَشَارَ إِلَى الْمَشْرِقِ، يَعْنِي حَيْثُ يَطْلُعُ قَرْنُ الشَّيْطَانِ، أَوْ قَالَ: قَرْنُ الشَّمْسِ.

2268 - सय्यदना इब्ने उमर (ﷺ) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) मिम्बर पर खड़े हुए, आप ने फ़रमाया: "यह फ़ित्नों की जगह है" और आप ने मश्रिक़ की तरफ़ इशारा किया यानी जहां से शैतान के सींग तुलू होते हैं। या आप ने फ़रमाया: "कि सूरज की टिकिया तुलू होती है।"

बुख़ारी: 3279. मुस्लिम: 2905

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2269 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا رِشْدِينُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ الزُّهْرِيِّ، عَنْ قَبِيصَةَ بْنِ ذُؤَيْبٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: تَخْرُجُ مِنْ خُرَاسَانَ رَايَاتٌ سُودٌ لاَ يَرُدُّهَا شَيْءٌ حَتَّى تُنْصَبَ بِإِيلِيَاءَ.

2269 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "ख़ुरासान से सियाह झंडे (थामे हुए लोग) निकलेंगे उन्हें कोई चीज़ नहीं रोक सकेगी यहाँ तक कि वह (झंडे) इलिया में गाड़े जाएंगे।"

ज़ईफ़ुल इस्नाद: मुसनद अहमद: 2/365

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब हसन है।

ख़ुलासा

- मुसलमान का खून सिर्फ तीन जराइम (जुर्मों) की बिना पर बहाया जा सकता है: क़त्ल, शादीशुदा होने के बावजूद ज़िना और इस्लाम से मुर्तद होना।
- मुसलमान भाई को परेशान करना मुसलमान का शेवा नहीं है।
- एक दूसरे की तरफ़ हथियार (अस्लहा) साधना मना है।
- अज़ाबों की सब से बड़ी वजह बुराइयों का ख़त्म न होना है।
- बुराई को हाथ, ज़बान और दिल से बुरा जानना ईमान की अलामत है।

- ज़ालिम हुक्मरानों के सामने कलिम-ए-हक़ कहना बेहतरीन जिहाद है।
- फ़ित्नों के दौर में आदमी लोगों से किनाराकश हो जाए।
- ईमानदारी का उठ जाना क़यामत की अलामत है।
- कुर्बे क़यामत ज़लज़ले कस्रत से आयेंगे।
- क़यामत की बड़ी निशानियाँ, दज्जाल, याजूज व माजूज का ख़ुरूज, ईसा (عليه السلام) का नुज़ूल और सूरज का मगरिब से निकलना है।
- खारजियों का इस्लाम से कोई ताल्लुक़ नहीं है।
- मुसलमान को क़त्ल करने वाला काफ़िर की तरह है।
- इस उम्मत में खस्फ़,व मस्ख़ होता रहेगा और इसकी वजह फह्हाशी व उर्यानी (नंगापन) है।
- क़यामत से पहले तीस कज़्ज़ाब नबुव्वत के दावेदार आएँगे।
- महदी इन्साफ वाले हाकिम होंगे।
- दुनिया की आख़िरी जंग मौजूदा इस्राईल में होगी।
- दज्जाल मदीना में दाख़िल नहीं हो सकेगा औए उसे ईसा (عليه السلام) क़त्ल करेंगे।
- जब लोगों में तकब्बुर आ जाए तो अल्लाह ज़ालिम हाकिमों को मुसल्लत कर देता है।
- औरत को हाकिम बनाने वाली कौम नाक़ाम रहती है।
- फ़ित्नों की इब्तिदा मश्रिक़ की तरफ़ से होगी।

मज़मून नम्बर 32.

أَبْوَابُ الرُّؤْيَا عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

रसूलुल्लाह(ﷺ) से मर्वी ख़्वाबों की ताबीर और मसाइल।

तआरुफ़

10 अबवाब और 25 अहादीस पर मुश्तमिल यह उन्वान इन मसाइल पर मुहीत है:

- ख़्वाबों की हक़ीक़त और उनकी अक्साम (क़िस्में)।
- ख़्वाब में नज़र आने वाली किस चीज़ की क्या ताबीर होती है?
- अच्छे और बुरे ख़्वाब आने पर क्या किया जाए?

1 بَابُ أَنَّ رُؤْيَا الْمُؤْمِنِ جُزْءٌ مِنْ سِتَّةٍ وَأَرْبَعِينَ جُزْءًا مِنَ النُّبُوَّةِ

2270 - حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الوَهَّابِ الثَّقَفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا اقْتَرَبَ الزَّمَانُ لَمْ تَكَدْ رُؤْيَا الْمُؤْمِنِ تَكْذِبُ، وَأَصْدَقُهُمْ رُؤْيَا أَصْدَقُهُمْ حَدِيثًا، وَرُؤْيَا الْمُسْلِمِ جُزْءٌ مِنْ سِتَّةٍ وَأَرْبَعِينَ جُزْءًا مِنَ النُّبُوَّةِ. وَالرُّؤْيَا ثَلَاثٌ: فَالرُّؤْيَا الصَّالِحَةُ بُشْرَى مِنَ اللهِ، وَالرُّؤْيَا مِنْ تَحْزِينِ الشَّيْطَانِ، وَالرُّؤْيَا مِمَّا يُحَدِّثُ

1 - मोमिन का ख़्वाब नबुव्वत का छियालिसवां हिस्सा है।

2270 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "जब वक़्त करीब आ जायेगा तो मोमिन का ख़्वाब कम ही झुठा होगा और सबसे सच्चा ख़्वाब उसका है जिसकी बात सब से सच्ची है और मुसलमान का ख़्वाब नबुव्वत का छियालिस्वां[1] हिस्सा है। नीज़ ख़्वाब की तीन अक्साम (किस्में) हैं: अच्छा ख़्वाब अल्लाह तआला की तरफ़ से ख़ुशख़बरी है। दूसरा ख़्वाब शैतान की तरफ़ से डरावा है और तीसरी क़िस्म का ख़्वाब वह है जो आदमी अपने आप से बातें करता है, फिर जब तुम में से कोई शख़्स नापसंदीदा ख़्वाब देखे तो वह उठ जाए और तअव्वुज़ (अऊज़ुबिल्लाह) पढ़ कर थूक ले और

بِهَا الرَّجُلُ نَفْسَهُ فَإِذَا رَأَى أَحَدُكُمْ مَا يَكْرَهُ فَلْيَقُمْ وَلْيَتْفُلْ وَلاَ يُحَدِّثْ بِهَا النَّاسَ قَالَ: وَأُحِبُّ الْقَيْدَ فِي النَّوْمِ وَأَكْرَهُ الْغُلَّ الْقَيْدُ: ثَبَاتٌ فِي الدِّينِ.

लोगों को बयान न करे।" आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "मैं ख़्वाब में क़ैद (बेड़ियों) को पसंद और तौक को नापसंद करता हूँ क़ैद दीन में साबित क़दमी है।"

बुख़ारी:7071. मुस्लिम:2263. अबू दाऊद: 5019. इब्ने माजह: 3894

तौज़ीह: (1) मोमिन की फ़ज़ीलत है कि उसके ख़्वाब उमूमन सच्चे होते हैं। मोमिन के ख़्वाब का नबुव्वत का छियालिस्वां हिस्सा कहने की एक तौजीह यह बयान की जाती है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) का दौरे नबुव्वत तेईस (23) साल का है और उन में से पहले छः माह तक आप को महज़ ख़्वाब आया करते थे जो इस क़दर सच्चे और हक़ीक़त हुआ करते थे जैसे रात के अँधेरे के बाद सुबहे सादिक का तुलूअ होना, तो यह छः माह तेईस साल का छियालिस्वां हिस्सा है तो इसी निस्बत से मोमिन के ख़्वाब के मुताल्लिक़ यह कहा गया है। (अल्लाह बेहतर जानता है)।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2271 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسًا، عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: رُؤْيَا الْمُؤْمِنِ جُزْءٌ مِنْ سِتَّةٍ وَأَرْبَعِينَ جُزْءًا مِنَ النُّبُوَّةِ.

2271 - सय्यदना उबादा बिन सामित (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: "मोमिन का ख़्वाब नबुव्वत का छियालिस्वां हिस्सा है।"

बुख़ारी: 6987. मुस्लिम: 2264. अबू दाऊद: 5018.

वज़ाहत: इस बारे में अबू हुरैरा, अबू रज़ीन उकैली, अबू सईद, अब्दुल्लाह बिन अम्र, औफ़ बिन मालिक, इब्ने उमर और अनस (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ उबादा बिन सामित (رضي الله عنه) की हदीस सहीह है।

2 بَابُ ذَهَبَتِ النُّبُوَّةُ وَبَقِيَتِ الْمُبَشِّرَاتُ

2 - नबुव्वत का दौर ख़त्म हो गया और बशारतें (ख़ुशख़बरियाँ) रह गयी हैं।

2272 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدٍ الزَّعْفَرَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَفَّانُ بْنُ مُسْلِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ زِيَادٍ، قَالَ:

2272 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "बेशक रिसालत व नबुव्वत का सिलसिला कट चुका है मेरे बाद कोई रसूल और नबी नहीं होगा।" रावी कहते हैं: लोगों पर

حَدَّثَنَا الْمُخْتَارُ بْنُ فُلْفُلٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ الرِّسَالَةَ وَالنُّبُوَّةَ قَدْ انْقَطَعَتْ فَلاَ رَسُولَ بَعْدِي وَلاَ نَبِيَّ، قَالَ: فَشَقَّ ذَلِكَ عَلَى النَّاسِ فَقَالَ: لَكِنِ الْمُبَشِّرَاتُ. قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ وَمَا الْمُبَشِّرَاتُ؟ قَالَ: رُؤْيَا الْمُسْلِمِ، وَهِيَ جُزْءٌ مِنْ أَجْزَاءِ النُّبُوَّةِ.

यह बात बड़ी गिराँ गुज़री तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "लेकिन मुबश्शिरात (बाकी हैं)।" लोगों ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! मुबश्शिरात क्या हैं? आप ने फ़रमाया: "मुसलमान का ख़्वाब और यह नबुव्वत के हिस्सों में से एक हिस्सा है।"

सहीह: मुसनद अहमद: 3/267. हाकिम: 4/391

वज़ाहत: इस बारे में अबू हुरैरा, हुज़ैफा बिन उसैद, इब्ने अब्बास, उम्मे कुर्ज़ और अबू उसैद (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: मुख्तार बिन फुल्फुल की सनद से यह हदीस सहीह ग़रीब है।

3 بَابُ قَوْلِهِ لَهُمُ الْبُشْرَى فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا

3 - फ़रमाने बारी तआला " उनके लिए दुनिया की ज़िंदगी में खुशख़बरी है। "

2273 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ رَجُلٍ، مِنْ أَهْلِ مِصْرَ، قَالَ: سَأَلْتُ أَبَا الدَّرْدَاءِ، عَنْ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى{لَهُمُ الْبُشْرَى فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا} فَقَالَ: مَا سَأَلَنِي عَنْهَا أَحَدٌ غَيْرُكَ إِلاَّ رَجُلٌ وَاحِدٌ مُنْذُ سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: مَا سَأَلَنِي عَنْهَا أَحَدٌ غَيْرُكَ مُنْذُ أُنْزِلَتْ، هِيَ الرُّؤْيَا الصَّالِحَةُ يَرَاهَا الْمُسْلِمُ أَوْ تُرَى لَهُ.

2273 - अता बिन यसार (ﷺ) मिस्र के एक शख़्स से रिवायत करते हैं कि मैंने अबू दर्दा (ﷺ) से फ़रमाने इलाही: "उनके लिए दुनिया की ज़िंदगी में खुशखबरी है।" (यूनुस:64) के बारे में पूछ तो उन्होंने फ़रमाया: "जब से मैंने इस के बारे में रसूलुल्लाह(ﷺ) से सवाल किया है, मुझे तुम्हारे अलावा सिर्फ एक आदमी ने इसका सवाल किया है। मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से सवाल किया तो आप ने फ़रमाया: "जब से यह नाज़िल हुई है तुम्हारे अलावा किसी और ने इस के बारे में नहीं पूछा। यह अच्छा ख़्वाब है जो मुसलमान देखे या उसे दिखाया जाए।"

सहीह: तयालिसी:976 हुमैदी: 391. मुसनद अहमद: 6/445.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस बारे में सय्यदना उबादा बिन सामित (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है और यह हदीस हसन है।

2274 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ لَهِيعَةَ، عَنْ دَرَّاجٍ، عَنْ أَبِي الهَيْثَمِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: أَصْدَقُ الرُّؤْيَا بِالأَسْحَارِ.

2274 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: "सब से सच्चा ख़्वाब सहरी के वक़्त का है।"

ज़ईफ़: मुसनद अहमद: 3/29. दारमी: 2152. इब्ने हिब्बान: 6041

2275 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَرْبُ بْنُ شَدَّادٍ، وَعِمْرَانُ القَطَّانُ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، قَالَ: نُبِّئْتُ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ، قَالَ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَنْ قَوْلِهِ{لَهُمُ البُشْرَى فِي الحَيَاةِ الدُّنْيَا} ؟ قَالَ: هِيَ الرُّؤْيَا الصَّالِحَةُ يَرَاهَا الْمُؤْمِنُ أَوْ تُرَى لَهُ

2275 - सय्यदना उबादा बिन सामित (ﷺ) रिवायत करते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह(ﷺ) से अल्लाह तआला के फ़रमान: "उन के लिए दुनिया की ज़िन्दगी में खुशखबरी है।" के बारे में पूछा तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "यह अच्छा ख़्वाब है जिसे मोमिन देखे या उसे दिखाया जाए।"

सहीह: इब्ने माजह:3898. हाकिम: 4/391.

वज़ाहत: हर्ब अपनी हदीस में कहते हैं: हमें यह्या बिन अबी कसीर ने हदीस बयान की है। इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

4 بَابُ مَا جَاءَ فِي قَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ رَآنِي فِي الْمَنَامِ فَقَدْ رَآنِي

4 - नबी(ﷺ) का फ़रमान: जिसने मुझे ख़्वाब में देखा यक़ीनन उसने मुझे ही देखा।

2276 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي الأَحْوَصِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ رَآنِي فِي الْمَنَامِ فَقَدْ رَآنِي فَإِنَّ الشَّيْطَانَ لاَ يَتَمَثَّلُ بِي.

2276 - सय्यदना अब्दुल्लाह (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: "जिसने मुझे ख़्वाब में देखा यकीनन उस ने मुझे ही देखा। (क्योंकि) शैतान मेरी सूरत इख़्तियार नहीं कर सकता।"

सहीह: इब्ने माजह: 3900. मुसनद अहमद: 1/375. दारमी: 2145.

वज़ाहत: इस बारे में अबू हुरैरा, अबू क़तादा, इब्ने अब्बास, अबू सईद, जाबिर, अनस, अबू मालिक अशजई अपने बाप से, अबू बक्रा और अबू जुहैफ़ा (ﷺ) से भी रिवायत करते हैं।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

5 - बुरा ख़्वाब देखने पर क्या करे?

5 بَابُ إِذَا رَأَى فِي الْمَنَامِ مَا يَكْرَهُ مَا يَصْنَعُ

2277 - सय्यदना अबू क़तादा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "अच्छा ख़्वाब अल्लाह की तरफ़ से और बुरा ख़्वाब शैतान की तरफ़ से होता है तुममें से कोई शख़्स जब नापसंदीदा ख़्वाब देखे तो अपनी बाएं जानिब तीन मर्तबा फूँक मारे और उस ख़्वाब के शर से अल्लाह की पनाह मांगे वह उसे नुकसान नहीं पहुंचा सकेगा।"

बुख़ारी: 3292. मुस्लिम: 2261. अबू दाऊद: 5021. इब्ने माजह: 2909.

2277 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي قَتَادَةَ، عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ: الرُّؤْيَا مِنَ اللهِ وَالحُلْمُ مِنَ الشَّيْطَانِ، فَإِذَا رَأَى أَحَدُكُمْ شَيْئًا يَكْرَهُهُ فَلْيَنْفُثْ عَنْ يَسَارِهِ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ، وَلْيَسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنْ شَرِّهَا فَإِنَّهَا لاَ تَضُرُّهُ.

वज़ाहत: इस बारे में अब्दुल्लाह बिन अम्र, अबू सईद, जाबिर और अनस (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।
इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

6 - ख़्वाबों की ताबीर।

6 بَاب: مَا جَاءَ فِي تَعْبِيرِ الرُّؤْيَا

2278 - सय्यदना अबू रज़ीन उकैली (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "मोमिन का ख़्वाब नबुव्वत का चालीस्वां हिस्सा है और उस ख़्वाब को जब तक बयान न किया जाए यह एक परिंदे की टांग पर होता है। जब उसे बयान कर दिया जाता है तो यह गिर जाता है।" कहते हैं, मेरा ख़याल है कि आप ने यह भी फ़रमाया: "उसे अक़्लमंद या दोस्त को बयान करो।"

सहीह: अबूदाऊद:5020 दारमी:2154. मुसनद अहमद: 4/ 10

2278 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ: أَخْبَرَنِي يَعْلَى بْنُ عَطَاءٍ، قَالَ: سَمِعْتُ وَكِيعَ بْنَ عُدُسٍ، عَنْ أَبِي رَزِينٍ العُقَيْلِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: رُؤْيَا الْمُؤْمِنِ جُزْءٌ مِنْ أَرْبَعِينَ جُزْءًا مِنَ النُّبُوَّةِ، وَهِيَ عَلَى رِجْلِ طَائِرٍ مَا لَمْ يَتَحَدَّثْ بِهَا، فَإِذَا تَحَدَّثَ بِهَا سَقَطَتْ. قَالَ: وَأَحْسَبُهُ قَالَ: وَلاَ يُحَدِّثُ بِهَا إِلاَّ لَبِيبًا أَوْ حَبِيبًا.

2279 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الخَلاَّلُ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ يَعْلَى بْنِ عَطَاءٍ، عَنْ وَكِيعِ بْنِ عُدُسٍ، عَنْ عَمِّهِ أَبِي رَزِينٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: رُؤْيَا الْمُسْلِمِ جُزْءٌ مِنْ سِتَّةٍ وَأَرْبَعِينَ جُزْءًا مِنَ النُّبُوَّةِ وَهِيَ عَلَى رِجْلِ طَائِرٍ مَا لَمْ يُحَدِّثْ بِهَا فَإِذَا حَدَّثَ بِهَا وَقَعَتْ.

2279 - सय्यदना अबू रज़ीन उकैली (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: "मुसलमान का ख़्वाब नबुव्वत का छियालिस्वां हिस्सा है और जब तक उसे बयान न करे यह परिंदे की पाँव पर होता है और जब बयान कर दे तो यह गिर जाता है।"

सहीह

वज़ाहत: यह हदीस हसन सहीह है और अबू रज़ीन उकैली (رضي الله عنه) का नाम लकीत बिन आमिर (رضي الله عنه) है।

हम्माद बिन सलमा ने याला बिन अता से रिवायत करते हुए वकीअ बिन अदस कहा है। जबकि शोबा अबू उयय्ना और हुशैम ने याला बिन अता से रिवायत करते हुए वकीअ बिन उदुस कहा है और यही ज़्यादा सहीह है।

7 بَابٌ فِي تَأْوِيلِ الرُّؤْيَا مَا يُسْتَحَبُّ مِنْهَا وَمَا يُكْرَهُ

7 - किस ख़्वाब की ताबीर अच्छी है और किस की बुरी?

2280 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدِ اللهِ السَّلِيمِيُّ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الرُّؤْيَا ثَلاَثٌ، فَرُؤْيَا حَقٌّ، وَرُؤْيَا يُحَدِّثُ بِهَا الرَّجُلُ نَفْسَهُ، وَرُؤْيَا تَحْزِينٌ مِنَ الشَّيْطَانِ فَمَنْ رَأَى مَا يَكْرَهُ فَلْيَقُمْ فَلْيُصَلِّ وَكَانَ يَقُولُ: يُعْجِبُنِي

2280 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "ख़्वाब तीन क़िस्म के हैं: एक ख़्वाब सच्चा होता है दूसरा आदमी के दिल के ख़यालात और तीसरा शैतान की तरफ़ से ग़मज़दा करने के लिए होता है। जो शख़्स बुरा ख़्वाब देखे तो वह खड़ा होकर नमाज़ पढ़े" और आप फ़रमाया करते थे: "मुझे ख़्वाब में क़ैद अच्छी लगती है और मैं तौक़ को नापसंद करता हूँ। क़ैद दीन में साबित कदमी है" और आप(ﷺ) फ़रमाया करते थे: "जिस ने ख़्वाब में मुझे देखा वह मैं ही

الْقَيْدُ وَأَكْرَهُ الْغُلَّ الْقَيْدُ: ثَبَاتٌ فِي الدِّينِ. وَكَانَ يَقُولُ: مَنْ رَآنِي فَإِنِّي أَنَا هُوَ فَإِنَّهُ لَيْسَ لِلشَّيْطَانِ أَنْ يَتَمَثَّلَ بِي. وَكَانَ يَقُولُ: لاَ تُقَصُّ الرُّؤْيَا إِلاَّ عَلَى عَالِمٍ أَوْ نَاصِحٍ.

हूँ" और आप(ﷺ) फ़रमाते थे: "ख़्वाब सिर्फ आलिम या ख़ैर ख़्वाह को ही बयान करो।"

बुख़ारी: 7071. मुस्लिम: 2263. अबू दाऊद: 5017. इब्ने माजह: 3906.

वज़ाहत: इस बारे में अनस, अबू बक्रा, उम्मे अला, इब्ने उमर, आयशा, अबू सईद, जाबिर, अबू मूसा, इब्ने अब्बास और अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) से भी मर्वी है। नीज़ अबू हुरैरा (رضي الله عنه) की हदीस हसन सहीह है।

8 بَابٌ فِي الَّذِي يَكْذِبُ فِي حُلْمِهِ

8 - झूठा ख़्वाब बयान करने वाला।

2281 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ الزُّبَيْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَبْدِ الأَعْلَى، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ: أُرَاهُ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ كَذَبَ فِي حُلْمِهِ كُلِّفَ يَوْمَ القِيَامَةِ عَقْدَ شَعِيرَةٍ.

2281 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: "जिसने अपने ख़्वाब के बारे में झूठ बोला उसे क़यामत के दिन जौ को गिरह लगाने का पाबन्द किया जाएगा।"

सहीह: मुसनद अहमद: 1/76. अब्द बिन हुमैद: 86

2282 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ عَبْدِ الأَعْلَى، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ، عَنْ عَلِيٍّ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ نَحْوَهُ.

2282 - अबू ईसा कहते हैं: हमें कुतैबा ने उन्हें अबू अवाना ने अबुल आला से बवास्ता अब्दुर्रहमान अस्सुलमी, सय्यदना अली(رضي الله عنه) से नबी(ﷺ) की ऐसी ही हदीस बयान की है।

सहीह

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है। और इस बारे में इब्ने अब्बास, अबू हुरैरा, अबू शुरैह और वाइल बिन अस्क़ा (رضي الله عنه) से भी मर्वी है।

अबू ईसा (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह पहली हदीस से ज़्यादा सहीह है।

2283 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الوَهَّابِ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ عِكْرِمَةَ،

2283 - सय्यदना इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: "जिस ने झूठा ख़्वाब बयान किया क़यामत के

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: مَنْ تَحَلَّمَ كَاذِبًا كُلِّفَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَنْ يَعْقِدَ بَيْنَ شَعِيرَتَيْنِ وَلَنْ يَعْقِدَ بَيْنَهُمَا .

दिन उसे जौ के दो दानों की गिरह लगाने का पाबन्द किया जाएगा और वह हरगिज़ नहीं लगा सकेगा।"

बुख़ारी: 7042. अबू दाऊद: 5024. इब्ने माजह: 3916

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

9 بَابٌ فِي رُؤْيَا النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّبَنَ وَالقُمُصَ

9 - नबी(ﷺ) का ख़्वाब में दूध और कुर्ते देखना।

2284 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ حَمْزَةَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ إِذْ أُتِيتُ بِقَدَحِ لَبَنٍ فَشَرِبْتُ مِنْهُ، ثُمَّ أَعْطَيْتُ فَضْلِي عُمَرَ بْنَ الخَطَّابِ، قَالُوا: فَمَا أَوَّلْتَهُ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: العِلْمَ.

2284 - सय्यदना इब्ने उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: " मैं सोया हुआ था कि (ख़्वाब में) अचानक मेरे पास दूध का प्याला लाया गया तो मैंने उस से दूध पिया फिर मैंने बचा हुआ (दूध) उमर बिन खत्ताब को दे दिया। " लोगों ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल आप के क्या ताबीर की? आप(ﷺ) ने फ़रमाया: " इल्म।"

बुख़ारी: 82. मुस्लिम: 2391.

वज़ाहत: इस बारे में अबू बक्रा, अबू हुरैरा, इब्ने अब्बास, अब्दुल्लाह बिन सलाम, खुज़ैमा, तुफ़ैल बिन सख्बरा, समुरा, अबू उमामा और जाबिर (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ इब्ने उमर (رضي الله عنه) की हदीस सहीह है।

2285 - حَدَّثَنَا الحُسَيْنُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْجَرِيرِيُّ البَلْخِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي أُمَامَةَ بْنِ سَهْلِ بْنِ حُنَيْفٍ، عَنْ بَعْضِ أَصْحَابِ النَّبِيِّ، صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُ النَّاسَ يُعْرَضُونَ عَلَيَّ وَعَلَيْهِمْ قُمُصٌ مِنْهَا مَا يَبْلُغُ الثُّدِيَّ،

2285 - अबू उमामा बिन सहल बिन हुनैफ़, नबी करीम(ﷺ) के किसी सहाबी से रिवायत करते हैं कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: "मैं सोया हुआ था कि मैंने ख़्वाब में देखा लोग मेरे सामने पेश किए जाते रहे हैं और उनके बदनों पर कुर्ते हैं कुछ कुर्ते छाती तक पहुँच रहे हैं और कुछ इस से नीचे तक।" आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "उमर (رضي الله عنه) मेरे सामने पेश किए गए उन पर भी क़मीस थी,

وَمِنْهَا مَا يَبْلُغُ أَسْفَلَ مِنْ ذَلِكَ فَعُرِضَ عَلَيَّ عُمَرُ وَعَلَيْهِ قَمِيصٌ يَجُرُّهُ. قَالُوا: فَمَا أَوَّلْتَهُ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: الدِّينَ.

यह उसे खींच रहे थे।" लोगों ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! आप ने इसकी ताबीर क्या की? आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "दीन।"

बुख़ारी: 23. मुस्लिम: 2390.

2286 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي أُمَامَةَ بْنِ سَهْلِ بْنِ حُنَيْفٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ نَحْوَهُ بِمَعْنَاهُ. وَهَذَا أَصَحُّ.

2286 - अबू ईसा कहते हैं: हमें अब्द बिन हमिद ने उन्हें याकूब बिन इब्राहीम बिन साद ने अपने बाप से उन्हें सालेह बिन कैसान ने ज़ोहरी से बवास्ता अबू उमामा बिन सहल बिन हुनैफ़, सय्यदना अबू सईद खुदरी (رضي الله عنه) से नबी(ﷺ) की ऐसी ही हदीस बयान की है।

सहीह: दारमी: 2157. मुसनद अहमद: 3/86

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ज़्यादा सहीह है।

10 بَابُ مَا جَاءَ فِي رُؤْيَا النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمِيزَانَ وَالدَّلْوَ

10 - नबी(ﷺ) का ख़्वाब में तराज़ू और डोल देखने की ताबीर।

2287 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَشْعَثُ، عَنِ الحَسَنِ، عَنْ أَبِي بَكْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ، قَالَ ذَاتَ يَوْمٍ: مَنْ رَأَى مِنْكُمْ رُؤْيَا؟ فَقَالَ رَجُلٌ: أَنَا رَأَيْتُ كَأَنَّ مِيزَانًا نَزَلَ مِنَ السَّمَاءِ فَوُزِنْتَ أَنْتَ وَأَبُو بَكْرٍ فَرَجَحْتَ أَنْتَ بِأَبِي بَكْرٍ، وَوُزِنَ أَبُو بَكْرٍ، وَعُمَرُ فَرَجَحَ أَبُو بَكْرٍ، وَوُزِنَ عُمَرُ وَعُثْمَانُ فَرَجَحَ عُمَرُ، ثُمَّ رُفِعَ الْمِيزَانُ، فَرَأَيْنَا الكَرَاهِيَةَ فِي وَجْهِ رَسُولِ اللهِ ﷺ.

2287 - सय्यदना अबू बक्रा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि एक दिन नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: "तुम में से ख़्वाब किसने देखा है?" तो एक आदमी कहने लगा: मैंने ख़्वाब में देखा कि आसमान से एक तराज़ू उतरा फिर आप का और अबू बक्र का वज़न किया गया तो आप उनसे वज़नी थे, अबू बक्र व उमर का वज़न किया गया तो अबू बक्र वजनी थे उमर व उस्मान का वज़न किया गया तो उमर भारी थे फिर वह तराज़ू उठा लिया गया। (रावी कहते हैं, हमने रसूलुल्लाह(ﷺ) के चेहरे में नापसंदीदगी के आसार देखे।

सहीह: अबू दाऊद: 4634

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2288 - حَدَّثَنَا أَبُو مُوسَى الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عُثْمَانُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: سُئِلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ وَرَقَةَ، فَقَالَتْ لَهُ خَدِيجَةُ: إِنَّهُ كَانَ صَدَّقَكَ وَلَكِنَّهُ مَاتَ قَبْلَ أَنْ تَظْهَرَ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أُرِيتُهُ فِي الْمَنَامِ وَعَلَيْهِ ثِيَابٌ بَيَاضٌ، وَلَوْ كَانَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ لَكَانَ عَلَيْهِ لِبَاسٌ غَيْرُ ذَلِكَ.

2288 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) से वरक़ा (बिन नौफ़ल) के बारे में सवाल किया गया, ख़दीजा (رضي الله عنها) ने आप से कहा: उसने आप की तस्दीक़ की और आपके ज़हूर से पहले ही वफ़ात पा गया था तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "मुझे वह ख़्वाब में दिखाया गया उस (के जिस्म) पर सफ़ेद कपड़े थे और अगर वह जहन्नम वालों से होता तो उस पर और रंग के कपड़े होते।"

ज़ईफ़: मुसनद अहमद: 6/65. हाकिम: 4/393.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है और मुहद्दिसीन के नज़दीक उस्मान बिन अब्दुर्रहमान क़वी रावी नहीं है।

2289 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ رُؤْيَا النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ قَالَ: رَأَيْتُ النَّاسَ اجْتَمَعُوا فَنَزَعَ أَبُو بَكْرٍ ذَنُوبًا أَوْ ذَنُوبَيْنِ فِيهِ ضَعْفٌ وَاللَّهُ يَغْفِرُ لَهُ، ثُمَّ قَامَ عُمَرُ فَنَزَعَ فَاسْتَحَالَتْ غَرْبًا فَلَمْ أَرَ عَبْقَرِيًّا يَفْرِي فَرْيَهُ حَتَّى ضَرَبَ النَّاسُ بِعَطَنٍ.

2289 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنهما) नबी(ﷺ) के उस ख़्वाब के बारे में रिवायत करते हैं जिसमें आप(ﷺ) ने अबू बक्र और उमर (رضي الله عنهما) को भी देखा था। आप ने फ़रमाया: "मैंने ख़्वाब में देखा कि लोग जमा हैं फिर अबू बक्र कुएं से एक या दो डोल कमज़ोरी के साथ खींचे और अल्लाह उन्हें बख़्श देगा फिर उमर खड़े होकर खींचने लगे तो वह डोल बड़ा हो गया मैंने किसी पहलवान को इस तरह काम करते नहीं देखा यहाँ तक कि लोग (ऊंटों को सैराब कर के) उनके बैठने की जगह ले गए।"(1)

बुख़ारी: 3634, मुस्लिम: 2393.

तौज़ीह: عَطَن : पानी के करीब ऊंटों या बकरियों के बैठने की जगह, ضرب فلان بعطن : ऊंटों को खूब पानी पिला कर पानी के पास ठहर जाना। (अल-मोजमुल वसीत:पृ.723)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से भी मर्वी है। नीज़ इब्ने उमर (رضي الله عنهما) की यह हदीस सहीह ग़रीब है।

2290 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ رُؤْيَا النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: رَأَيْتُ امْرَأَةً سَوْدَاءَ ثَائِرَةَ الرَّأْسِ خَرَجَتْ مِنَ الْمَدِينَةِ حَتَّى قَامَتْ بِمَهْيَعَةَ وَهِيَ الجُحْفَةُ وَأَوَّلْتُهَا وَبَاءَ الْمَدِينَةِ يُنْقَلُ إِلَى الجُحْفَةِ.

2290 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (ﷺ) नबी(ﷺ) के उस ख़्वाब के बारे में रिवायत करते हैं कि आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "मैंने ख़्वाब में एक सियाह रंग की बिखरे बालों वाली औरत देखी जो मदीना से निकली यहाँ तक कि महीया यानी जोह्फ़ा जाकर ठहर गई तो मैंने उसकी ताबीर की कि मदीना की वबा जोह्फ़ा में भेज दी जाएगी।"

बुखारी: 7038. मुसनद अहमद: 2/ 107.दारमी: 2167.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

2291 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الخَلاَّلُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنِ ابْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: فِي آخِرِ الزَّمَانِ لاَ تَكَادُ رُؤْيَا الْمُؤْمِنِ تَكْذِبُ وَأَصْدَقُهُمْ رُؤْيَا أَصْدَقُهُمْ حَدِيثًا، وَالرُّؤْيَا ثَلاَثٌ، الحَسَنَةُ بُشْرَى مِنَ اللهِ، وَالرُّؤْيَا يُحَدِّثُ الرَّجُلُ بِهَا نَفْسَهُ، وَالرُّؤْيَا تَحْزِينٌ مِنَ الشَّيْطَانِ، فَإِذَا رَأَى أَحَدُكُمْ رُؤْيَا يَكْرَهُهَا فَلاَ يُحَدِّثْ بِهَا أَحَدًا وَلْيَقُمْ فَلْيُصَلِّ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: يُعْجِبُنِي القَيْدُ وَأَكْرَهُ الغُلَّ. القَيْدُ: ثَبَاتٌ فِي الدِّينِ. قَالَ: وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: رُؤْيَا الْمُؤْمِنِ جُزْءٌ مِنْ سِتَّةٍ وَأَرْبَعِينَ جُزْءًا مِنَ النُّبُوَّةِ.

2291 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: "आख़िरी वक़्त में मोमिन का ख़्वाब झूठा नहीं होगा और सब से सच्चा ख़्वाब उसी का होगा जिसकी बातें सब सच्ची होंगी और ख़्वाब तीन क़िस्म का है: अच्छा ख़्वाब अल्लाह की तरफ़ से खुशख़बरी, एक ख़्वाब आदमी के दिल के ख़यालात और तीसरा शैतान की तरफ़ से परेशान करने के लिए। पस जब तुम में से कोई शख़्स ऐसा ख़्वाब देखे जो उसे नापसंद हो तो वह किसी से बयान न करे बल्कि खड़े होकर नमाज़ पढ़े," अबू हुरैरा (ﷺ) कहते हैं: मुझे ख़्वाब में क़ैद पसंद है और मैं तौक़ को नापसंद करता हूँ। क़ैद दीन में साबित कदमी की तरफ़ इशारा है और नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: "मोमिन का ख़्वाब नबुव्वत का छियालिस्वां हिस्सा है।"

सहीह: तख़रीज के लिए हदीस नम्बर 2270. तोहफतुल अशराफ़: 14452.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: अब्दुल वह्हाब सक़फ़ी ने इस हदीस को अय्यूब से मर्फ़ू रिवायत किया है और हम्माद बिन ज़ैद ने इसे अय्यूब से मौक़ूफ़ रिवायत किया है।

2292 - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعِيدٍ الجَوْهَرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو اليَمَانِ، عَنْ شُعَيْبٍ وَهُوَ ابْنُ أَبِي حَمْزَةَ، عَنِ ابْنِ أَبِي حُسَيْنٍ وَهُوَ عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي حُسَيْنٍ، عَنْ نَافِعِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: رَأَيْتُ فِي الْمَنَامِ كَأَنَّ فِي يَدَيَّ سِوَارَيْنِ مِنْ ذَهَبٍ فَهَمَّنِي شَأْنُهُمَا فَأُوحِيَ إِلَيَّ أَنْ أَنْفُخَهُمَا فَنَفَخْتُهُمَا فَطَارَا فَأَوَّلْتُهُمَا كَاذِبَيْنِ يَخْرُجَانِ مِنْ بَعْدِي يُقَالُ لأَحَدِهِمَا: مَسْلَمَةُ صَاحِبُ الْيَمَامَةِ وَالْعَنْسِيُّ صَاحِبُ صَنْعَاءَ.

2292 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "मैंने ख़्वाब में देखा कि मेरे हाथ में सोने के दो कंगन हैं मुझे इनके मामले ने फ़िक्रमन्द किया तो मेरी तरफ़ वहि की गई कि उन्हें फूँक मारे। मैंने फूँक मारी तो वह उड़ गए, फिर मैंने उसकी तावील यह की कि मेरे बाद दो झूठे (नबुव्वत के दावेदार) निकलेंगे एक को मुसैलमा साहिबे यमामा और दूसरे को अन्सी साहिबे सनआ कहा जाता होगा।"

बुख़ारी: 3621. मुस्लिम: 2274. इब्ने माजह: 3922

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह हसन ग़रीब है।

2293 - حَدَّثَنَا الحُسَيْنُ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: كَانَ أَبُو هُرَيْرَةَ، يُحَدِّثُ أَنَّ رَجُلاً جَاءَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِنِّي رَأَيْتُ اللَّيْلَةَ ظُلَّةً يَنْطِفُ مِنْهَا السَّمْنُ وَالعَسَلُ وَرَأَيْتُ النَّاسَ يَسْتَقُونَ بِأَيْدِيهِمْ فَالمُسْتَكْثِرُ وَالمُسْتَقِلُّ وَرَأَيْتُ سَبَبًا وَاصِلاً مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الأَرْضِ وَأَرَاكَ يَا

2293 - सय्यदना इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि अबू हुरैरा (رضي الله عنه) बयान किया करते थे कि एक आदमी नबी(ﷺ) के पास आकर अर्ज़ करने लगा: मैंने रात को ख़्वाब में एक साइबान देखा जिससे घी और शहद टपक रहा था और मैंने देखा लोग अपने हाथों से पी रहे हैं, कुछ ज़्यादा हासिल कर रहे हैं कुछ कम। नीज़ मैंने आसमान से ज़मीन तक मिली हुई एक रस्सी देखी। ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! फिर मैंने आप को देखा आप उसे पकड़ कर ऊपर चढ़ गए हैं फिर आप के बाद एक और आदमी उसे पकड़ कर चढ़ा फिर एक और आदमी ने उसे पकड़ा वह

رَسُولَ اللهِ أَخَذْتَ بِهِ فَعَلَوْتَ ثُمَّ أَخَذَ بِهِ رَجُلٌ بَعْدَكَ فَعَلاَ ثُمَّ أَخَذَ بِهِ رَجُلٌ بَعْدَهُ فَعَلاَ، ثُمَّ أَخَذَ بِهِ رَجُلٌ فَقُطِعَ بِهِ، ثُمَّ وُصِلَ لَهُ فَعَلاَ بِهِ، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَيْ رَسُولَ اللهِ بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي وَاللَّهِ لَتَدَعَنِّي أَعْبُرُهَا فَقَالَ: اعْبُرْهَا، فَقَالَ: أَمَّا الظُّلَّةُ فَظُلَّةُ الإِسْلاَمِ، وَأَمَّا مَا يَنْطِفُ مِنَ السَّمْنِ وَالعَسَلِ فَهُوَ القُرْآنُ لِينُهُ وَحَلاَوَتُهُ، وَأَمَّا الْمُسْتَكْثِرُ وَالمُسْتَقِلُّ فَهُوَ الْمُسْتَكْثِرُ مِنَ القُرْآنِ وَالمُسْتَقِلُّ مِنْهُ، وَأَمَّا السَّبَبُ الوَاصِلُ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الأَرْضِ فَهُوَ الحَقُّ الَّذِي أَنْتَ عَلَيْهِ فَأَخَذْتَ بِهِ فَيُعْلِيكَ اللَّهُ ثُمَّ يَأْخُذُ بِهِ رَجُلٌ آخَرُ فَيَعْلُو بِهِ ثُمَّ يَأْخُذُ بَعْدَهُ رَجُلٌ آخَرُ فَيَعْلُو بِهِ ثُمَّ يَأْخُذُ رَجُلٌ آخَرُ فَيَنْقَطِعُ بِهِ ثُمَّ يُوصَلُ لَهُ فَيَعْلُو، أَيْ رَسُولَ اللهِ لَتُحَدِّثَنِّي أَصَبْتُ أَمْ أَخْطَأْتُ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَصَبْتَ بَعْضًا وَأَخْطَأْتَ بَعْضًا، قَالَ: أَقْسَمْتُ بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي لَتُخْبِرَنِّي مَا الَّذِي أَخْطَأْتُ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ تُقْسِمْ.

भी चढ़ गया और फिर एक और आदमी ने पकड़ा तो वह टूट गई, फिर जुड़ गई तो वह भी चढ़ गया। अबू बक्र (ﷺ) ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! आप पर मेरे मां बाप कुर्बान हो आप(ﷺ) मुझे इजाज़त दीजिये अल्लाह की क़सम! मैं इसकी ताबीर करता हूँ: आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "ताबीर करो।" तो उन्होंने कहा: साइबान इस्लाम का बादल है। जो इस से घी और शहद टपक रहा है वह कुरआन की नर्मी (शगुफ्तगी) और मिठास है कुछ कुरआन से ज़्यादा हासिल करने वाले हैं और कुछ कम, आसमान से ज़मीन की तरफ़ लटकने वाली रस्सी वह हक़ है जिस पर आप(ﷺ) हैं। आप ने उसे थामा हुआ है अल्लाह आप को चढ़ाएगा, फिर आप के बाद एक और आदमी उसे थामेगा वह भी चढ़ जाएगा उसके बाद एक और आदमी उसे थामेगा वह भी चढ़ जाएगा फिर एक और आदमी पकड़ेगा टूट जाएगी। फिर जुड़ जाएगी तो वह भी चढ़ जाएगा।

ऐ अल्लाह के रसूल! आप मुझे ज़रूर बताइए कि मैंने सहीह ताबीर की या ग़लत, नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: कुछ सहीह कुछ ग़लत।" उन्होंने अर्ज़ की मेरे मां बाप आप पर कुर्बान हों। अल्लाह के रसूल(ﷺ)! मैं क़सम देता हूँ कि आप मुझे बताइए कि मैंने क्या गलती की है? तो नबी(ﷺ) ने फ़रमाया: "तुम क़सम न उठाओ।"

बुख़ारी: 7046. मुस्लिम: 2269. अबू दाऊद:3268

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2294 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرِ بْنِ حَازِمٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي رَجَاءٍ، عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدَبٍ، قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا صَلَّى بِنَا الصُّبْحَ أَقْبَلَ عَلَى النَّاسِ بِوَجْهِهِ وَقَالَ: هَلْ رَأَى أَحَدٌ مِنْكُمُ اللَّيْلَةَ رُؤْيَا.

2294 - सय्यदना समुरा बिन जुन्दुब (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी(ﷺ) हमें सुबह की नमाज़ पढ़ा लेते तो अपना चेहरा लोगों की तरफ़ करते और फ़रमाते: "क्या आज रात तुम में से किसी ने कोई ख़्वाब देखा है।"

बुख़ारी: मुतव्वलन: 1386. मुस्लिम: 2275.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ औफ़ और जरीर बिन हाज़िम, अबू रजा से बवास्ता समुरा नबी(ﷺ) की लम्बी हदीस बयान करते हैं। बुन्दार ने इस हदीस को वहब बिन जरीर से ऐसे ही मुख़्तसर बयान किया है।

ख़ुलासा

- मोमिन का ख़्वाब नबुव्वत का छियालिस्वां हिस्सा है।
- सच्चे ख़्वाब आने वाले हालात की तरफ़ इशारा करते हैं।
- ख़्वाबों की तीन अक्साम (किस्में) हैं: अच्छे ख़्वाब, दिल के ख़यालात और शैतान की तरफ़ से डरावा।
- जो शख़्स नबी(ﷺ) को ख़्वाब में देखे उसे यक़ीन कर लेना चाहिए कि उस ने आप(ﷺ) को ही देखा है।
- ख़्वाब किसी आलिमे दीन से बयान किया जाए जो उसकी ताबीर कर सकता हो।
- झूठा ख़्वाब बयान करना कबीरा गुनाह है।
- ख़्वाब में दूध देखना इल्म और क़मीस दीन पर दलील है।

मज़मून नम्बर 33.

أَبْوَابُ الشَّهَادَاتِ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

रसूलुल्लाह(ﷺ) से मर्वी गवाहियों के अहकाम व मसाइल।

तआरुफ़

4 अबवाब और 9 अहादीस पर मुश्तमिल यह उन्वान इन मसाइल पर मुश्तमिल है:

- बेहतरीन गवाह कौन है?
- शहादतुज़्ज़ूर (झूठी गवाही) क्या है?
- गवाह कैसे होने चाहिएं?

1 بَابُ مَا جَاءَ فِي الشُّهَدَاءِ أَيُّهُمْ خَيْرٌ

2295 - حَدَّثَنَا الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بَكْرِ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ حَزْمٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ عُثْمَانَ، عَنْ أَبِي عَمْرَةَ الأَنْصَارِيِّ، عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ الجُهَنِيِّ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: أَلاَ أُخْبِرُكُمْ بِخَيْرِ الشُّهَدَاءِ؟ الَّذِي يَأْتِي بِالشَّهَادَةِ قَبْلَ أَنْ يُسْأَلَهَا.

2296 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ الحَسَنِ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، نَحْوَهُ وَقَالَ ابْنُ أَبِي عَمْرَةَ. هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ وَأَكْثَرُ النَّاسِ يَقُولُونَ: عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي عَمْرَةَ.

1 - बेहतरीन गवाह का बयान।

2295 - सय्यदना ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "गौर से सुनो! क्या मैं तुम्हें बेहतरीन गवाह के बारे में न बताऊँ? वह शख़्स जो गवाही, मांगने से पहले ही गवाही दे देता है।"

मुस्लिम:1719. अबू दाऊद:3596. इब्ने माजह: 2364.

2296 - अबू ईसा कहते हैं: हमें अहमद बिन हसन ने बवास्ता अब्दुल्लाह बिन मस्लमा, मालिक से रिवायत करते हुए "इब्ने अबी अम्र" ही कहा है।

सहीह: तोहफतुल अशराफ़: 3754.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है। और अक्सर लोग अब्दुर्रहमान बिन अबी अम्र ही कहते हैं। नीज़ मालिक की इस रिवायत में इख़्तिलाफ़ है: बअ़ज़ ने इसे अबू अम्र से और बअ़ज़ ने इब्ने अबी अम्र से रिवायत किया है। और यह अब्दुर्रहमान बिन अबू अम्र अंसारी ही हैं। हमारे नज़दीक यही सहीह है क्योंकि मालिक की बहुत सी रिवायत अब्दुर्रहमान बिन अबी अम्र के ज़रिए सय्यदना ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी (رضی اللہ عنہ) से मर्वी हैं और यह हदीस भी सहीह है।

अबू अम्र सय्यदना ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी (رضی اللہ عنہ) के आज़ादकर्दा थे और उनकी अबू अम्र से माले ग़नीमत की चोरी करने के बारे में भी हदीस वारिद है।

2297 - حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ آدَمَ ابْنُ بِنْتِ أَزْهَرَ السَّمَّانِ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ الحُبَابِ، قَالَ: حَدَّثَنَا أُبَيُّ بْنُ عَبَّاسِ بْنِ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ حَزْمٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ عَمْرِو بْنِ عُثْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي خَارِجَةُ بْنُ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي عَمْرَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي زَيْدُ بْنُ خَالِدٍ الجُهَنِيُّ، أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: خَيْرُ الشُّهَدَاءِ مَنْ أَدَّى شَهَادَتَهُ قَبْلَ أَنْ يُسْأَلَهَا.

2297 - सय्यदना ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी (رضی اللہ عنہ) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "बेहतरीन गवाह वह है जो शहादत (गवाही) मांगने से पहले ही गवाही दे दे।"

सहीह

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।

2 بَابُ مَا جَاءَ فِيمَنْ لَا تَجُوزُ شَهَادَتُهُ

2 - किसकी गवाही जायज़ नहीं है?

2298 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَرْوَانُ الفَزَارِيُّ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ زِيَادٍ الدِّمَشْقِيِّ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا تَجُوزُ شَهَادَةُ خَائِنٍ وَلَا خَائِنَةٍ، وَلَا مَجْلُودٍ حَدًّا وَلَا

2298 - सय्यदा आयशा (رضی اللہ عنہا) रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "ख़यानत करने वाले मर्द और ख़यानत करने वाली औरत, हद के कोड़े लगे हुए मर्द, हद के कोड़े लगी हुई औरत[1], अदावत रखने वाले, जिसकी झूठी गवाही आजमाई जा चुकी हो, किसी भी घर

مَجْلُودَةٍ، وَلاَ ذِي غِمْرٍ لأَخِيهِ، وَلاَ مُجَرَّبِ شَهَادَةٍ، وَلاَ القَانِعِ أَهْلَ البَيْتِ لَهُمْ وَلاَ ظَنِينٍ فِي وَلاَءٍ وَلاَ قَرَابَةٍ.

वालों के ताबे शख़्स की उनके हक़ में और वला[2] और क़राबत में तोहमत ज़दा शख़्स की गवाही कुबूल नहीं हो सकती।" फजारी कहते हैं: काने से मुराद ताबे है।

ज़ईफ़: दारे कुत्नी: 4/ 244. बैहक़ी: 10/ 155

वज़ाहत: ذِي غِمْرٍ لأَخِيهِ : धोकेबाज़ दुश्मनी रखने वाला। مُجَرَّبِ شَهَادَةَ : जिसकी पहले भी गवाही आज़माई जा चुकी है और वह झूठा गवाह हो। ظَنِين: जिसने वला या क़राबत में किसी ग़ैर की तरफ़ निस्बत की हो।

वज़ाहत: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे यज़ीद बिन जियाद दमिश्क़ी के तरीक़ से जानते हैं और यज़ीद हदीस में ज़ईफ़ है और ज़ोहरी से उसके वास्ते के साथ मारूफ़ है। नीज़ इस बारे में अब्दुल्लाह बिन उमर (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

फ़रमाते हैं: हम इस हदीस का मफ़हूम नहीं जानते और न ही हमारे नज़दीक यह हदीस सनद के लिहाज़ से सहीह है। और इस बारे में अहले इल्म का अमल है कि करीबी रिश्ता दारी की अपने क़रीबी के लिए गवाही दुरुस्त है और उलमा ने बाप की बेटे और बेटे की बाप के हक़ में गवाही के बारे में इख़्तिलाफ़ किया है: अक्सर उलमा बेटे की बाप के हक़ में गवाही को जायज़ नहीं कहते और न ही बाप की बेटे के हक़ में।

जबकि बअज़ उलमा कहते हैं: जब गवाह आदिल है तो बाप की बेटे के हक़ में और बेटे की बाप के हक़ में गवाही जायज़ है और भाई की भाई के हक़ में गवाही के बारे में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं वह जायज़ है। इसी तरह हर क़राबतदार की दूसरे के हक़ में गवाही भी जायज़ है।

इमाम शाफ़ेई फ़रमाते हैं: जब दो आदमियों के दर्मियान दुश्मनी हो तो एक दूसरे के ख़िलाफ़ गवाही जायज़ नहीं, ख़्वाह वह आदिल ही हो और वह अब्दुर्रहमान आरज की नबी(ﷺ) से बयान कर्दा मुर्सल रिवायत की तरफ़ गए हैं कि आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "साहिबे अह्ना यानी साहिबे अदावत की गवाही जायज़ नहीं है।" और इस हदीस का मानी भी यही है कि साहिबे गिम्र यानी दुश्मनी रखने वाले की गवाही जायज़ नहीं है।

3 بَابُ مَا جَاءَ فِي شَهَادَةِ الزُّورِ

3 - झूठी गवाही।

2299 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَرْوَانُ بْنُ مُعَاوِيَةَ، عَنْ سُفْيَانَ بْنِ زِيَادٍ الأَسَدِيِّ، عَنْ فَاتِكِ بْنِ فَضَالَةَ، عَنْ أَيْمَنَ بْنِ

2299 - ऐमन बिन ख़ुरैम से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ख़ुत्बा देने के लिए खड़े हुए आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "ऐ लोगो! झूठी गवाही अल्लाह के साथ शिर्क करने के बराबर

خُرَيْمٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَامَ خَطِيبًا فَقَالَ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ عَدَلَتْ شَهَادَةُ الزُّورِ إِشْرَاكًا بِاللَّهِ ثُمَّ قَرَأَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ{فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ} .

है। फिर रसूलुल्लाह(ﷺ) ने यह आयत पढ़ी: "बुतों की नापाकी और झूठी बातों से बचो।"

ज़ईफ़: मुसनद अहमद: 4/ 178. तफ़सीर तबरी: 17/ 154

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे सुफ़ियान बिन ज़ियाद के तरीक़ से ही जानते हैं और सुफ़ियान बिन ज़ियाद से इस हदीस को बयान करने में भी इख़्तिलाफ़ है और हम ऐमन बिन खुरैम का नबी(ﷺ) से सिमा (सुनना) भी नहीं जानते।

2300 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ وَهُوَ ابْنُ زِيَادٍ الْعُصْفُرِيُّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ النُّعْمَانِ الأَسَدِيِّ، عَنْ خُرَيْمِ بْنِ فَاتِكٍ الأَسَدِيِّ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صلى الله عليه وسلم صَلَّى صَلاَةَ الصُّبْحِ فَلَمَّا انْصَرَفَ قَامَ قَائِمًا، فَقَالَ: عُدِلَتْ شَهَادَةُ الزُّورِ بِالشِّرْكِ بِاللَّهِ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ، ثُمَّ تَلاَ هَذِهِ الآيَةَ{وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ} إِلَى آخِرِ الآيَةِ.

2300 - सय्यदना खुरैम बिन फ़ातिक असदी (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने सुबह की नमाज़ पढ़ाई जब आप ने सलाम फेरा तो खड़े हो कर फ़रमाने लगे: "झूठी गवाही को अल्लाह के साथ शिर्क करने के बराबर कहा गया है" फिर आप ने यह आयत तिलावत की: "और कौले ज़ूर से बचो।" आख़िर तक

ज़ईफ़: अबू दाऊद: 3599. इब्ने माजह:2372.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: मेरे मुताबिक़ यह ज़्यादा सहीह है और खुरैम बिन फ़ातिक सहाबी हैं, उन्होंने नबी(ﷺ) से कई अहादीस रिवायत की हैं और यह मशहूर भी हैं।

2301 - حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ مَسْعَدَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ، عَنِ الْجُرَيْرِيِّ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرَةَ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: أَلاَ أُخْبِرُكُمْ بِأَكْبَرِ الكَبَائِرِ؟ قَالُوا: بَلَى يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ:

2301 - सय्यदना अबू बक्रा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "क्या मैं तुम्हें सब से बड़े गुनाह के बारे में न बताऊँ? लोगों ने अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह के रसूल! क्यों नहीं, आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "अल्लाह के साथ शिर्क करना, वालिदैन की नाफ़रमानी और झूठी गवाही या झूठी बात।" रावी कहते हैं:

الإِشْرَاكُ بِاللَّهِ، وَعُقُوقُ الوَالِدَيْنِ، وَشَهَادَةُ الزُّورِ أَوْ قَوْلُ الزُّورِ قَالَ: فَمَا زَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُهَا حَتَّى قُلْنَا لَيْتَهُ سَكَتَ.

रसूलुल्लाह(ﷺ) इसे कहते रहे, यहाँ तक कि हम ने कहा: काश आप ख़ामोश हो जाएँ।

बुख़ारी:2654, मुस्लिम:87.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और इस बारे में अब्दुल्लाह बिन अम्र (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

4 بَابٌ مِنْهُ : يفشو الكذب حتي يشهد الرجل ولا يستشهد ويحلف الرجل ولا يستحلف

4 - झूठ इस क़दर आम हो जाएगा कि आदमी से गवाही तलब किए बग़ैर वह गवाही देगा और क़सम का मुतालबा किए बग़ैर क़सम उठाएगा।

2302 - حَدَّثَنَا وَاصِلُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ مُدْرِكٍ، عَنْ هِلاَلِ بْنِ يَسَافٍ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: خَيْرُ النَّاسِ قَرْنِي ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ ثَلاَثًا، ثُمَّ يَجِيءُ قَوْمٌ مِنْ بَعْدِهِمْ يَتَسَمَّنُونَ وَيُحِبُّونَ السِّمَنَ يُعْطُونَ الشَّهَادَةَ قَبْلَ أَنْ يُسْأَلُوهَا.

2302 - सय्यदना इमरान बिन हुसैन (ﷺ) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "बेहतरीन लोग मेरे दौर के हैं फिर वह लोग जो उनसे मिलेंगे, फिर वह लोग जो उन से मिलेंगे।" आप(ﷺ) ने तीन दौर ज़िक्र किए फिर फ़रमाया: "इनके बाद एक कौम आएगी जो जिस्मों को मोटा करेंगे और मोटापे को पसंद करेंगे वह गवाही के मुतालबे से पहले गवाही देंगे।"

सहीह

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: आमश की अली बिन मुद्रिक से रिवायतकर्दा यह हदीस ग़रीब है। आमश के शागिर्दों ने इसे आमश से बवास्ता हिलाल बिन यसाफ़, सय्यदना इमरान बिन हुसैन (ﷺ) से रिवायत किया है।

अबू ईसा कहते हैं: हमें अबू अम्मार हुसैन बिन हुरैस ने वह कहते हैं, हमें वकीअ ने आमश से उन्हें हिलाल बिन यसाफ़ ने बवास्ता सय्यदना इमरान बिन हुसैन (ﷺ) नबी(ﷺ) से इसी तरह रिवायत की है। और यह हदीस मुहम्मद बिन फुज़ैल की हदीस से ज़्यादा सहीह है।

मुतालबे से पहले गवाही देने का मतलब उलमा के नज़दीक झूठी गवाही है। यानी गवाही मांगे बग़ैर किसी का गवाही देना।

2303 - حَدِيثِ عُمَرَ بْنِ الخَطَّابِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: خَيْرُ النَّاسِ قَرْنِي، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ يَفْشُو الكَذِبُ حَتَّى يَشْهَدَ الرَّجُلُ وَلاَ يُسْتَشْهَدُ، وَيَحْلِفَ الرَّجُلُ وَلاَ يُسْتَحْلَفُ

2303 - मज़्कूरा हदीस की वज़ाहत उमर बिन ख़त्ताब (ﷺ) की हदीस में है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, "बेहतरीन लोग मेरे दौर के हैं फिर वह लोग जो उनसे मिलेंगे, फिर वह लोग जो उन से मिलेंगे, फिर झूठ आम हो जाएगा यहाँ तक कि आदमी गवाही तलब किए बग़ैर गवाही देगा और क़सम का मुतालबा किए बग़ैर क़सम उठाएगा।"

मुहक़्क़िक़ ने इस पर तहक़ीक़ व तख़रीज ज़िक्र नहीं की।

वज़ाहत: नबी(ﷺ) की हदीस कि "बेहतरीन गवाह वह है जो गवाही मांगने से पहले गवाही दे" का हमारे नज़दीक यह मतलब है कि जब किसी आदमी से किसी चीज़ पर गवाही मांगी जाए तो वह अपनी गवाही पेश करे और गवाही देने से इन्कार न करे। बअ़ज़ उलमा के नज़दीक इसकी यही तौजीह है।

ख़ुलासा

- हक़ीक़त को जानने वाला आदमी ख़ुद ही किसी के हक़ में गवाही दे दे तो यह बेहतरीन गवाह है।
- झूठी गवाही शिर्क की तरह कबीरा गुनाह है।
- आख़िरी दौर में झूठ इस क़दर आम हो जाएगा कि लोग बिन बुलाए गवाही देंगे।
- गवाही के लिए गवाह का आदिल होना ज़रूरी है।

मज़मून नम्बर 34.

أَبْوَابُ الزُّهْدِ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

रसूलुल्लाह (ﷺ) से मर्वी दुनिया से बे रग़बती पैदा करने वाली अहादीस।

तआरुफ़

111 अहादीस के साथ 64 अबवाब पर मुश्तमिल यह उन्वान इन मसाइल पर मुश्तमिल है:

- ज़ाहिदाना ज़िन्दगी की हक़ीक़त क्या है?
- इंसान की गुज़र बसर कैसे होनी चाहिए?
- दुनिया की हैसियत क्या है?

1 بَابٌ: الصِّحَّةُ وَالفَرَاغُ نِعْمَتَانِ مَغْبُونٌ فِيهِمَا كَثِيرٌ مِنَ النَّاسِ

2304 - حَدَّثَنَا صَالِحُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، وَسُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ صَالِحٌ: حَدَّثَنَا، وَقَالَ سُوَيْدٌ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ سَعِيدِ بْنِ أَبِي هِنْدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: نِعْمَتَانِ مَغْبُونٌ فِيهِمَا كَثِيرٌ مِنَ النَّاسِ الصِّحَّةُ وَالفَرَاغُ.

1 - सेहत और फ़रागत दो ऐसी नेमतें हैं जिन में लोग नुकसान उठाते हैं

2304 - सय्यदना इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमायाः "दो नेअ्मतें ऐसी हैं जिन में बहुत से लोग इनकी क़दर न करके नुक़सान उठाते हैं। एक तंदुरुस्ती और दूसरी फ़राग़त। "

बुख़ारी: 6412. इब्ने माजह्:4170. मुसनद अहमद : .258/1दारमी:2710

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं: हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने उन्हें यह्या बिन सईद ने उन्हें अब्दुल्लाह बिन सईद बिन अबू हिन्द ने अपने बाप से बवास्ता इब्ने अब्बास(رضي الله عنه) नबी(ﷺ) से ऐसी ही हदीस बयान की है

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है और बहुत से लोगों ने इसे अब्दुल्लाह बिन सईद बिन अबी हिन्द से मर्फू रिवायत किया है और बअज़ ने इसे अब्दुल्लाह बिन सईद बिन अबी हिन्द से मौक़ूफ़ भी रिवायत किया है.

तौज़ीह: زهد लुग्वी माना है: किसी चीज़ को हिकारत या बेरग़बती की बिना पर छोड़ देना। इस से मुराद यह है कि उन कामों को छोड़ दिया जाए जिनका आख़िरत में फ़ायदा न हो।

2 بَابٌ: مَنْ اتَّقَى الْمَحَارِمَ فَهُوَ أَعْبَدُ النَّاسِ

2 - हराम चीज़ों से बचने वाला सब से बड़ा आबिद है

2305 - حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ هِلَالٍ الصَّوَّافُ الْبَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ أَبِي طَارِقٍ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ يَأْخُذُ عَنِّي هَؤُلَاءِ الْكَلِمَاتِ فَيَعْمَلُ بِهِنَّ أَوْ يُعَلِّمُ مَنْ يَعْمَلُ بِهِنَّ؟ فَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: فَقُلْتُ: أَنَا يَا رَسُولَ اللهِ، فَأَخَذَ بِيَدِي فَعَدَّ خَمْسًا وَقَالَ: اتَّقِ الْمَحَارِمَ تَكُنْ أَعْبَدَ النَّاسِ، وَارْضَ بِمَا قَسَمَ اللَّهُ لَكَ تَكُنْ أَغْنَى النَّاسِ، وَأَحْسِنْ إِلَى جَارِكَ تَكُنْ مُؤْمِنًا، وَأَحِبَّ لِلنَّاسِ مَا تُحِبُّ لِنَفْسِكَ تَكُنْ مُسْلِمًا، وَلَا تُكْثِرِ الضَّحِكَ، فَإِنَّ كَثْرَةَ الضَّحِكِ تُمِيتُ الْقَلْبَ.

2305 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "कौन है जो मुझसे यह कलिमात सीख कर इन पर अमल करे या ऐसे आदमी को सिखाये जो इन पर अमल कर सके?" अबू हुरैरा (ﷺ) कहते हैं: मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं हूँ, तो आप ने मेरा हाथ पकड़ कर पांच चीजें गिनवायी, आप ने फ़रमाया: "हराम चीज़ों से बचो, तुम सब से बड़े आबिद बन जाओगे। अल्लाह की तक़्सीम पर राजी हो जाओ, सब से ज़्यादा गनी बन जाओगे। अपने हमसाये से अच्छा सुलूक करो तुम मोमिन बन जाओगे। लोगों के लिए वही पसंद करो जो अपने लिए पसंद करते हो, सच्चे मुसलमान बन जाओगे और ज़्यादा मत हंसो क्योंकि ज़्यादा हंसना दिल को मुर्दा कर देता है।

हसन: इब्ने माजह: 4217. मुसनद अहमद: 2/310.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं : यह हदीस ग़रीब है। हम इसे जाफ़र बिन सुलैमान के तरीक़ से ही जानते हैं और हसन बसरी ने अबू हुरैरा (ﷺ) से कुछ भी नहीं सुना, अय्यूब, यूनुस बिन उबैद और अली बिन जैद से भी इसी तरह मर्वी है कि हसन ने अबू हुरैरा (ﷺ) से सिमा (सुनना) नहीं किया। नीज़ अबू उबेदा नाजी ने यह हसन का कौल रिवायत किया है और इसमें अबू हुरैरा (ﷺ) के वास्ते के साथ नबी (ﷺ) का ज़िक्र नहीं किया।

3 - नेक आमाल में जल्दी करना

3 بَابُ مَا جَاءَ فِي الْمُبَادَرَةِ بِالعَمَلِ

2306 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "सात चीज़ों से पहले नेकी के आमाल कर लो तुम्हें मोहलत नहीं दी जाती मगर ग़ाफ़िल कर देने वाली फ़क़ीरी की, सरकश बना देने वाली मालदारी, बिगाड़ पैदा करने वाली बीमारी, अक़्ल को ख़त्म कर देने वाले बुढ़ापे, जल्दी आने वाली मौत, दज्जाल जो कि पोशीदा बड़ाई है जिसका इन्तिज़ार है या क़यामत की (और) क़यामत सख़्त और तल्ख़ है।

2306 - حَدَّثَنَا أَبُو مُصْعَبٍ، عَنْ مُحَرَّرِ بْنِ هَارُونَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: بَادِرُوا بِالأَعْمَالِ سَبْعًا هَلْ تُنْظَرُونَ إِلاَّ إِلَى فَقْرٍ مُنْسٍ، أَوْ غِنًى مُطْغٍ، أَوْ مَرَضٍ مُفْسِدٍ، أَوْ هَرَمٍ مُفَنِّدٍ، أَوْ مَوْتٍ مُجْهِزٍ، أَوِ الدَّجَّالِ فَشَرُّ غَائِبٍ يُنْتَظَرُ، أَوِ السَّاعَةِ فَالسَّاعَةُ أَدْهَى وَأَمَرُّ.

ज़ईफ़: अल-कामिल: 6/2434.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं : यह हदीस ग़रीब हसन है। हम इसे बवास्ता आरज, अबू हुरैरा (ﷺ) से सिर्फ़ मुहर्रर बिन हारून की सनद से ही जानते हैं नीज़ मामर ने भी इस हदीस को सईद मक़्बुरी से सुनने वाले एक शख़्स के ज़रिए अबू हुरैरा (ﷺ) से और उन्होंने नबी (ﷺ) से ऐसे ही रिवायत किया है।

4 - मौत की याद

4 بَابُ مَا جَاءَ فِي ذِكْرِ الْمَوْتِ

2307 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "लज़्ज़तों को तोड़ने वाली (यानी मौत) को कसरत से (ज़्यादा से ज़्यादा) याद करो।"

2307 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا الفَضْلُ بْنُ مُوسَى، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَكْثِرُوا ذِكْرَ هَاذِمِ اللَّذَّاتِ يَعْنِي الْمَوْتَ.

हसन: सहीह: इब्ने माजह: 4258. निसाई: 1824

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं : यह हदीस ग़रीब हसन है। नीज़ इस बारे में अबू सईद (ﷺ) से भी मर्वी है।

5 - क़ब्र की घबराहट और यह आख़िरत की पहली मंज़िल है

5 - بَابُ ما جاء في فظاعة القبر وانه أول منازل الاخرة.

2308 - حَدَّثَنَا هَنَّادُ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مَعِينٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ بَحِيرٍ، أَنَّهُ سَمِعَ هَانِئًا، مَوْلَى عُثْمَانَ قَالَ: كَانَ عُثْمَانُ، إِذَا وَقَفَ عَلَى قَبْرٍ بَكَى حَتَّى يَبُلَّ لِحْيَتَهُ، فَقِيلَ لَهُ: تُذْكَرُ الجَنَّةُ وَالنَّارُ فَلاَ تَبْكِي وَتَبْكِي مِنْ هَذَا؟ فَقَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ القَبْرَ أَوَّلُ مَنْزِلٍ مِنْ مَنَازِلِ الآخِرَةِ، فَإِنْ نَجَا مِنْهُ فَمَا بَعْدَهُ أَيْسَرُ مِنْهُ، وَإِنْ لَمْ يَنْجُ مِنْهُ فَمَا بَعْدَهُ أَشَدُّ مِنْهُ. قَالَ: وَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا رَأَيْتُ مَنْظَرًا قَطُّ إِلاَّ وَالقَبْرُ أَفْظَعُ مِنْهُ.

2308 - हानी मौला उस्मान बयान करते हैं कि उस्मान (ﷺ) जब क़ब्र पर ठहरते तो इस क़द्र रोते यहाँ तक कि अपनी दाढ़ी को आंसुओं से तर कर लेते। उनसे कहा गया: जन्नत और दोज़ख़ का तज़किरा किया जाए तो आप नहीं रोते और इस क़ब्र के तज़किरे से रोते हैं तो उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया था: "क़ब्र आख़िरत की मंज़िलों में से पहली मंज़िल है। अगर आदमी इस से निजात पा गया तो इसके बाद इससे आसान मामला है और अगर इस से निजात न पा सका तो इसके बाद वाला मामला इससे भी ज़्यादा सख़्त होगा।" और रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "मैंने क़ब्र से बढ़कर घबराहट वाली जगह कभी नहीं देखी।"

हसन: इब्ने माजह: 4247. हाकिम:1/371. बैहक़ी:4/56.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं : यह हदीस ग़रीब है। हम इसे हिशाम बिन यूसुफ़ के तरीक़ से ही जानते हैं।

6 - जो शख़्स अल्लाह की मुलाक़ात से मोहब्बत रखता है अल्लाह भी उस से मुलाक़ात की मोहब्बत रखता है

6 بَابُ مَا جَاءَ مَنْ أَحَبَّ لِقَاءَ اللهِ أَحَبَّ اللَّهُ لِقَاءَهُ

2309 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، قَالَ:

2309 - सय्यदना उबादा बिन सामित (ﷺ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने

سَمِعْتُ أَنَسًا، يُحَدِّثُ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ أَحَبَّ لِقَاءَ اللهِ أَحَبَّ اللَّهُ لِقَاءَهُ، وَمَنْ كَرِهَ لِقَاءَ اللهِ كَرِهَ اللَّهُ لِقَاءَهُ.

फ़रमाया: "जो शख़्स अल्लाह की मुलाक़ात से मोहब्बत रखता है अल्लाह भी उस से मुलाक़ात की मोहब्बत रखता है। और जो शख़्स अल्लाह की मुलाकात को नापसंद करता है अल्लाह भी उसकी मुलाक़ात को नापसंद करता है।"

सहीह: तख़रीज हदीस नम्बर 1066. में मुलाहज़ा फ़रमाएं। तोहफतुल अशराफ़: 5070

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं : इस बारे में अबू हुरैरा, आयशा, अबू मूसा और अनस (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ उबादा बिन सामित (ﷺ) की हदीस हसन सहीह है।

7 بَابُ مَا جَاءَ فِي إِنْذَارِ النَّبِيِّ (ﷺ) قَوْمَهُ

7 - नबी (ﷺ) का अपनी कौम को डराना

2310 - حَدَّثَنَا أَبُو الأَشْعَثِ أَحْمَدُ بْنُ الْمِقْدَامِ العِجْلِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الطُّفَاوِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ {وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الأَقْرَبِينَ} قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَا صَفِيَّةُ بِنْتَ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ يَا فَاطِمَةُ بِنْتَ مُحَمَّدٍ يَا بَنِي عَبْدِ الْمُطَّلِبِ إِنِّي لاَ أَمْلِكُ لَكُمْ مِنَ اللهِ شَيْئًا، سَلُونِي مِنْ مَالِي مَا شِئْتُمْ.

2310 - सय्यदा आयशा (ﷺ) बयान करती हैं कि जब आयत: "और अपने रिश्तेदारों को डराइये।" (अश्शुअ़रा: 214) नाजिल हुई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "ऐ सफ़िया बिन्ते अब्दुल मुत्तलिब! ऐ फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद! ऐ बनू अब्दुल मुत्तलिब! यक़ीनन में तुम्हारे लिए अल्लाह की तरफ़ से किसी चीज़ का मालिक नहीं हूँ, मेरे माल में से जो कुछ चाहते हो मुझ से मांग लो।"

सहीह: मुस्लिम: 205. मुसनद अहमद: 6/ 136

वज़ाहत: इस बारे में अबू हुरैरा, इब्ने अब्बास और अबू मूसा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं : सय्यदा आयशा (ﷺ) की हदीस हसन ग़रीब है। बअ़ज़ ने इसे हिशाम बिन उर्वा से ऐसे ही रिवायत किया है और बअ़ज़ ने हिशाम बिन उर्वा से उनके बाप के ज़रिए नबी (ﷺ) से मुर्सल रिवायत की है। उसमें आयशा (ﷺ) का ज़िक्र नहीं किया।

8 - अल्लाह के डर से रोने की फ़ज़ीलत

8 بَابُ مَا جَاءَ فِي فَضْلِ الْبُكَاءِ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ

2311 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللهِ الْمَسْعُودِيِّ ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عِيسَى بْنِ طَلْحَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ يَلِجُ النَّارَ رَجُلٌ بَكَى مِنْ خَشْيَةِ اللهِ حَتَّى يَعُودَ اللَّبَنُ فِي الضَّرْعِ، وَلاَ يَجْتَمِعُ غُبَارٌ فِي سَبِيلِ اللهِ وَدُخَانُ جَهَنَّمَ.

2311 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "अल्लाह के डर से रोने वाला आदमी दोज़ख में नहीं दाख़िल हो सकता यहाँ तक कि दूध थन में वापस आ जाए और अल्लाह के रास्ते में लगने वाली गर्द और जहन्नम का धुंआ इकट्ठे नहीं हो सकते।"

सहीह: इब्ने माजह: 2374. निसाई: 3115, 3107.

वज़ाहत : इस बारे में अबू रेहाना और इब्ने अब्बास (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है। और मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान आले तल्हा के आज़ादकर्दा, मदीना के रहने वाले सिक़ह रावी थे। उन से शोबा और सुफ़ियान सौरी ने रिवायत की है।

9 - नबी (ﷺ) का फ़रमान: "अगर तुम वह जान लो जो मैं जानता हूँ तो तुम कम हंसोगे"

9 بَابٌ فِي قَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَوْ تَعْلَمُونَ مَا أَعْلَمُ لَضَحِكْتُمْ قَلِيلاً

2312 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ الزُّبَيْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ الْمُهَاجِرِ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنْ مُوَرِّقٍ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنِّي أَرَى مَا لاَ تَرَوْنَ، وَأَسْمَعُ مَا لاَ تَسْمَعُونَ أَطَّتِ السَّمَاءُ، وَحُقَّ لَهَا أَنْ تَئِطَّ مَا فِيهَا مَوْضِعُ أَرْبَعِ أَصَابِعَ إِلاَّ وَمَلَكٌ وَاضِعٌ جَبْهَتَهُ سَاجِدًا لِلَّهِ، وَاللَّهِ لَوْ تَعْلَمُونَ مَا أَعْلَمُ لَضَحِكْتُمْ

2312 - सय्यदना अबू ज़र (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "बेशक मैं वह देखता हूँ जो तुम नहीं देखते और मैं वह सुनता हूँ जो तुम नहीं सुनते। आसमान चरचराया[1] और उसे चरचराना चाहिए (क्योंकि) उसमें चार उँगलियों जितनी जगह भी नहीं है जहां कोई फ़रिश्ता अपनी पेशानी रखे हुए अल्लाह को सज्दा न कर रहा हो। अल्लाह की क़सम! अगर तुम वह जान लो जो मैं जानता हूँ तो तुम

قَلِيلاً وَلَبَكَيْتُمْ كَثِيرًا، وَمَا تَلَذَّذْتُمْ بِالنِّسَاءِ عَلَى الْفُرُشِ وَلَخَرَجْتُمْ إِلَى الصُّعُدَاتِ تَجْأَرُونَ إِلَى اللهِ، لَوَدِدْتُ أَنِّي كُنْتُ شَجَرَةً تُعْضَدُ.

कम हंसो और ज़्यादा रोने लगो और तुम बिस्तरों पर अपनी बीवियों से लज़्ज़त हासिल न करो बल्कि अल्लाह से फ़रियादें करते हुए मैदानों की तरफ़ निकल जाओ।" (रावी कहते हैं:) काश मैं एक दरख़्त होता जो काट दिया जाता।

لو ددت से आखिर के अलावा बाकी हदीस हसन लिग़ैरिही है) इब्ने माजह: 4190. मुसनद अहमद: 5/173. हाकिम:2/510.

तौज़ीह: أَطَّت: चरचराना आवाज़ निकालना। (अल-मोजमुल वसीत:पृ. 33)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं : इस बारे में आयशा, अबू हुरैरा और इब्ने अब्बास और अनस (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

2313 - حَدَّثَنَا أَبُو حَفْصٍ عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ الْفَلاَّسُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ الثَّقَفِيُّ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَوْ تَعْلَمُونَ مَا أَعْلَمُ لَضَحِكْتُمْ قَلِيلاً وَلَبَكَيْتُمْ كَثِيرًا.

2313 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "अगर तुम वह जान लो जो मैं जानता हूँ तो तुम ज़रूर हंसो कम और रोओ ज़्यादा।"

सहीह: बुखारी: 6485. मुसनद अहमद: 2/312

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं : यह हदीस सहीह है।

10 بَابٌ فِيمَنْ تَكَلَّمَ بِكَلِمَةٍ يُضْحِكُ بِهَا النَّاسَ

10 - जो शख़्स लोगों को हंसाने के लिए फ़र्ज़ी बात करता है

2314 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ قَالَ: حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عِيسَى بْنِ طَلْحَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ

2314 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "आदमी कोई जुम्ला बोलता है जिसमें कोई हर्ज नहीं देखता लेकिन उसकी वजह से सत्तर साल की मसाफ़त तक दोज़ख़ में गिर जाता है।"

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ الرَّجُلَ لَيَتَكَلَّمُ بِالكَلِمَةِ لاَ يَرَى بِهَا بَأْسًا يَهْوِي بِهَا سَبْعِينَ خَرِيفًا فِي النَّارِ.

बुख़ारी: 6477. मुस्लिम: 2988. इब्ने माजह:3970

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।

2315 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا بَهْزُ بْنُ حَكِيمٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ جَدِّي، قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: وَيْلٌ لِلَّذِي يُحَدِّثُ بِالحَدِيثِ لِيُضْحِكَ بِهِ القَوْمَ فَيَكْذِبُ، وَيْلٌ لَهُ وَيْلٌ لَهُ.

2315 - बहज़ बिन हकीम अपने बाप के ज़रिए अपने दादा से रिवायत करते हैं कि मैंने नबी (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "उस शख़्स के लिए तबाही है जो लोगों को हंसाने के लिए झूठी बात करता है। उसके लिए तबाही है, उसके लिए तबाही है।"

हसन: अबू दाऊद: 4990. मुसनद अहमद: 2/5. दारमी: 2705

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : इस बारे में सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। और यह हदीस हसन है।

11 - بَابٌ حديث ((من حسن أسلام المرء تركه مالا يعنيه))

11 - अच्छा मुसलमान वह है जो बे मक़सद कामों को छोड़ दे

2316 - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ عَبْدِ الجَبَّارِ البَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: تُوُفِّيَ رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِهِ فَقَالَ، يَعْنِي رَجُلاً،: أَبْشِرْ بِالجَنَّةِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَوَلاَ تَدْرِي فَلَعَلَّهُ تَكَلَّمَ فِيمَا لاَ يَعْنِيهِ أَوْ بَخِلَ بِمَا لاَ يَنْقُصُهُ.

2316 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) से रिवायत है कि आप (ﷺ) के सहाबा में से एक आदमी फौत हो गया तो एक आदमी ने कहा: तुम्हें जन्नत की बशारत हो। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "क्या तुम नहीं जानते हो कि हो सकता है उसने कोई फ़ुज़ूल बात की हो या ऐसी चीज़ में कंजूसी की हो जिन (के ख़र्च करने) से उसे कमी न होती हो।"

ज़ईफ़: अबू याला: 4017. हिल्या: 5/55

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं यह हदीस ग़रीब है।

2317 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ نَصْرٍ النَّيْسَابُورِيُّ، وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا أَبُو مُسْهِرٍ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ سَمَاعَةَ، عَنِ الأَوْزَاعِيِّ، عَنْ قُرَّةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مِنْ حُسْنِ إِسْلاَمِ الْمَرْءِ تَرْكُهُ مَا لاَ يَعْنِيهِ.

2317 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "आदमी के हुस्ने इस्लाम से यह भी है कि वह फ़ुज़ूल (बे मतलब की) बातों को छोड़ दे।"

सहीह: इब्ने माजह:3976. इब्ने हिब्बान:229

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं यह हदीस ग़रीब है। हम इसे अबू सलमा के तरीक़ से सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) के ज़रिए नबी (ﷺ) से जानते हैं।

2318 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ مِنْ حُسْنِ إِسْلاَمِ الْمَرْءِ تَرْكَهُ مَا لاَ يَعْنِيهِ.

2318 - सय्यदना अली बिन हुसैन (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया: "बेशक आदमी के अच्छे मुसलमान होने की एक खूबी यह है कि वह ऐसी चीज़ों को छोड़ दे जो उससे ग़ैर मुताल्लिक़ हो।"

सहीह: पिछली हदीस देखें। मालिक: 1883. अब्दुर्रज्जाक़ 20617.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: ज़ोहरी के शागिर्दों में से कई लोगों ने इसी तरह " عن زهري عن على بن حسين عن النبي صلي الله عليه وسلم की सनद से मालिक की हदीस की तरह मुर्सलन रिवायत की है। हमारे नज़दीक यह हदीस अबू सलमा की अबू हुरैरा से मर्वी हदीस से ज़्यादा सहीह है। अली बिन हुसैन (ज़ैनुल आबेदीन) की मुलाक़ात अली (ﷺ) से साबित नहीं है।

12 بَابٌ فِي قِلَّةِ الكَلاَمِ

12 - बाब: कम बोलने की ख़ूबी का बयान

2319 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ جَدِّي، قَالَ: سَمِعْتُ بِلاَلَ بْنَ الحَارِثِ الْمُزَنِيَّ، صَاحِبَ

2319 - सहाबिए रसूल बिलाल बिन हारिस मुज़नी (ﷺ) कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "तुम में से कोई अल्लाह की रजामंदी की ऐसी बात कहता है जिसके बारे में वह नहीं जानता कि उसकी

رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: إِنَّ أَحَدَكُمْ لَيَتَكَلَّمُ بِالكَلِمَةِ مِنْ رِضْوَانِ اللهِ مَا يَظُنُّ أَنْ تَبْلُغَ مَا بَلَغَتْ فَيَكْتُبُ اللَّهُ لَهُ بِهَا رِضْوَانَهُ إِلَى يَوْمِ يَلْقَاهُ، وَإِنَّ أَحَدَكُمْ لَيَتَكَلَّمُ بِالكَلِمَةِ مِنْ سَخَطِ اللهِ مَا يَظُنُّ أَنْ تَبْلُغَ مَا بَلَغَتْ، فَيَكْتُبُ اللَّهُ عَلَيْهِ بِهَا سَخَطَهُ إِلَى يَوْمِ يَلْقَاهُ.

वजह से उसका मर्तबा कहाँ तक पहुंचेगा। हालांकि अल्लाह तआला उसकी बात की वजह से उसके हक़ में उस दिन तक के लिए खुशनूदी और रजामंदी लिख देता है जिस दिन वह उस से मिलेगा और तुम में से कोई अल्लाह तआला की नाराज़गी की ऐसी बात कहता है जिसके बारे में उसे गुमान भी नहीं होता कि इसकी वजह से उसका वबाल कहाँ तक पहुंचेगा जब कि अल्लाह उसकी बात की वजह से उसके हक़ में उस दिन तक के लिए जिस दिन वह उस से मिलेगा अपनी नाराज़गी लिख देता है।"

सहीह: इब्ने माजा:3969

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं:यह हदीस हसन सहीह है। और इसे इसी तरह कई लोगों ने मुहम्मद बिन अम्र से इसी के मिस्ल रिवायत किया है। यानी " عن محمد بن عمرو عن أبيه عن جده عن بلال بن الحارث की सनद। इस हदीस को मालिक ने ' عن محمد بن عمرو عن أبيه عن بلال بن الحارث की सनद से रिवायत किया है, लेकिन इसमें "عن أبيه" का ज़िक्र नहीं है। इस बाब में उम्मे हबीबा से भी हदीस मर्वी है।

13 بَابُ مَا جَاءَ فِي هَوَانِ الدُّنْيَا عَلَى اللهِ عَزَّ وَجَلَّ

13 - बाब: अल्लाह तआला के नजदीक दुनिया की हिक़ारत का बयान

2320 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الحَمِيدِ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَوْ كَانَتِ الدُّنْيَا تَعْدِلُ عِنْدَ اللهِ جَنَاحَ بَعُوضَةٍ مَا سَقَى كَافِرًا مِنْهَا شَرْبَةَ مَاءٍ.

2320 - सय्यदना सहल बिन साद (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला के नज़दीक दुनिया की वक़अत अगर एक मच्छर के पर के बराबर भी होती तो वह किसी काफ़िर को इसमें से एक घूँट पानी भी न पिलाता।"

सहीह: इब्ने माजह:4110

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस इस सनद से सहीह ग़रीब है। इस बाब में अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से भी रिवायत है।

2321 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ مُجَالِدٍ، عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ، عَنِ الْمُسْتَوْرِدِ بْنِ شَدَّادٍ، قَالَ: كُنْتُ مَعَ الرَّكْبِ الَّذِينَ وَقَفُوا مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى السَّخْلَةِ الْمَيِّتَةِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَتَرَوْنَ هَذِهِ هَانَتْ عَلَى أَهْلِهَا حِينَ أَلْقَوْهَا، قَالُوا: مِنْ هَوَانِهَا أَلْقَوْهَا يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: فَالدُّنْيَا أَهْوَنُ عَلَى اللهِ مِنْ هَذِهِ عَلَى أَهْلِهَا.

2321 - मुस्तौरिद बिन शद्दाद (رضي الله عنه) कहते हैं कि मैं भी उन सवारों के साथ था जो रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक बकरी के मरे हुए बच्चे के पास खड़े थे। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "क्या तुम लोग इसे देख रहे हो कि जब यह इसके मालिक के नज़दीक हकीर और बे क़ीमत हो गया तो उन्होंने इसे फ़ेंक दिया सहाबा ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! इसकी बेक़ीमती होने की बुनियाद पर ही लोगों ने इसे फ़ेंक दिया है, आप ने फ़रमाया: "दुनिया अल्लाह तआला के नज़दीक इस से भी ज़्यादा हकीर और बेवक़अत है जितना यह अपने लोगों के नज़दीक हकीर और बेवक़अत है।

सहीह: इब्ने माजह: 4111. मुसनद अहमद:4/229,230

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: मुस्तौरिद बिन शद्दाद (رضي الله عنه) की हदीस हसन है। इस बाब में जाबिर और इब्ने उमर (رضي الله عنه) से भी अहादीस आई हैं।

14 بَابٌ مِنْهُ

14 - बाब: दुनिया के मलऊन और हक़ीर होने का बयान

2322 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ الْمُؤَدِّبُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ ثَابِتٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ ثَابِتِ بْنِ ثَوْبَانَ، قَالَ: سَمِعْتُ عَطَاءَ بْنَ قُرَّةَ، قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ ضَمْرَةَ، قَالَ: سَمِعْتُ

2322- सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि मैंने सुना आप(ﷺ) फ़रमा रहे थे: ख़बरदार! दुनिया (ख़ुद भी) मलऊन है और जो कुछ इसमें है वह भी मलऊन है सिवाए अल्लाह के ज़िक्र और जो उससे मुताल्लिक़ और आलिम या सीखने वाले के।"

أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: أَلاَ إِنَّ الدُّنْيَا مَلْعُونَةٌ مَلْعُونٌ مَا فِيهَا إِلاَّ ذِكْرُ اللهِ وَمَا وَالاَهُ وَعَالِمٌ أَوْ مُتَعَلِّمٌ.

हसन: इब्ने माजह:4112

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन गरीब है।

15 بَابٌ مِنْهُ حديث: ((ما الدنيا في الاخره ألا مثل ما يجعل أحدكم أصبعه في أليم))

15 - दुनिया आख़िरत के मुक़ाबले में ऐसे ही है जैसे कोई आदमी समुन्द्र में अपनी उंगली डुबो ले।

2323 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي خَالِدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ أَبِي حَازِمٍ، قَالَ: سَمِعْتُ مُسْتَوْرِدًا، أَخَا بَنِي فِهْرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ﷺ: مَا الدُّنْيَا فِي الآخِرَةِ إِلاَّ مِثْلُ مَا يَجْعَلُ أَحَدُكُمْ إِصْبَعَهُ فِي الْيَمِّ فَلْيَنْظُرْ بِمَاذَا يَرْجِعُ.

2323 - बनू फ़िहर के सय्यदना मुसतौरिद (رضي الله عنه) रिवायत करते है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "दुनिया आख़िरत के मुकाबले में ऐसे ही है जैसे तुम में से कोई शख़्स अपनी उंगली समन्दर में दाखिल कर ले फिर देखे कि वह कितना पानी लाती है।"

मुस्लिम: 2858. इब्ने माजह:4108.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और इस्माईल बिन अबी ख़ालिद की कुनियत अबू अब्दुल्लाह थी और कैस बिन अबू हाजिम के वालिद का नाम अब्द बिन औफ़ (رضي الله عنه) है यह सहाबा में शुमार होते हैं।

16 بَابُ مَا جَاءَ أَنَّ الدُّنْيَا سِجْنُ الْمُؤْمِنِ وَجَنَّةُ الكَافِرِ

16 - दुनिया मोमिन के लिए क़ैद खाना और काफ़िर के लिए जन्नत है

2324 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ العَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنِ العَلاَءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: الدُّنْيَا سِجْنُ الْمُؤْمِنِ وَجَنَّةُ الكَافِرِ.

2324 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "दुनिया मोमिन की जेल और काफ़िर की जन्नत है।"

मुस्लिम: 2956. इब्ने माजह: 4113.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और इस बारे में अब्दुल्लाह बिन अम्र से भी हदीस मर्वी है।

17 - दुनिया की मिसाल चार आदमियों जैसी है

17 بَابُ مَا جَاءَ مَثَلُ الدُّنْيَا مَثَلُ أَرْبَعَةِ نَفَرٍ

2325 - सय्यदना अबू कब्शा अन्मारी (رضي الله عنه) से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "मैं तीन बातों पर क़सम उठाता हूँ और तुम्हें एक बताता हूँ तुम इसे याद रखना। "आप ने फ़रमाया: "सदक़ा करने से बन्दे का माल कम नहीं होता, जिस बन्दे पर ज़ुल्म हो वह सब्र करे तो अल्लाह तआला उसकी इज़्ज़त में इज़ाफ़ा कर देता है और जो बन्दा मांगने का दरवाज़ा खोलता है अल्लाह उस पर फ़क़ीरी का दरवाज़ा खोल देता है। या आप (ﷺ) ने इस से मिलता जुलता कलिमा कहा। "और मैं तुम्हें एक हदीस बयान करता हूँ इसे याद रखना" आप (ﷺ) ने फ़रमाया: "दुनिया चार आदमियों के लिए है: वह बन्दा जिसे अल्लाह ने माल और इल्म दिया, वह इसमें अपने रब से डरता है, उसके साथ रिश्तेदारी मिलाता है अल्लाह का हक़ पहचानता है ये बड़े मर्तबे वाला है। (दूसरा) वह बन्दा जिसे अल्लाह तआला ने इल्म तो दिया लेकिन उसे माल नहीं अता किया वह सच्ची निय्यत के साथ कहता है: अगर मेरे पास भी माल होता तो मैं भी फुलां शख़्स की तरह नेक काम

2325 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَادَةُ بْنُ مُسْلِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ خَبَّابٍ، عَنْ سَعِيدٍ الطَّائِيِّ أَبِي الْبَخْتَرِيِّ، أَنَّهُ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو كَبْشَةَ الأَنَّمَارِيُّ، أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ثَلاَثَةٌ أُقْسِمُ عَلَيْهِنَّ وَأُحَدِّثُكُمْ حَدِيثًا فَاحْفَظُوهُ قَالَ: مَا نَقَصَ مَالُ عَبْدٍ مِنْ صَدَقَةٍ، وَلاَ ظُلِمَ عَبْدٌ مَظْلِمَةً فَصَبَرَ عَلَيْهَا إِلاَّ زَادَهُ اللَّهُ عِزًّا، وَلاَ فَتَحَ عَبْدٌ بَابَ مَسْأَلَةٍ إِلاَّ فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْهِ بَابَ فَقْرٍ أَوْ كَلِمَةً نَحْوَهَا وَأُحَدِّثُكُمْ حَدِيثًا فَاحْفَظُوهُ قَالَ: إِنَّمَا الدُّنْيَا لأَرْبَعَةِ نَفَرٍ، عَبْدٍ رَزَقَهُ اللَّهُ مَالاً وَعِلْمًا فَهُوَ يَتَّقِي فِيهِ رَبَّهُ، وَيَصِلُ فِيهِ رَحِمَهُ، وَيَعْلَمُ لِلَّهِ فِيهِ حَقًّا، فَهَذَا بِأَفْضَلِ الْمَنَازِلِ، وَعَبْدٍ رَزَقَهُ اللَّهُ عِلْمًا وَلَمْ يَرْزُقْهُ مَالاً فَهُوَ صَادِقُ النِّيَّةِ يَقُولُ: لَوْ أَنَّ لِي مَالاً لَعَمِلْتُ بِعَمَلِ

فُلاَنٍ فَهُوَ بِنِيَّتِهِ فَأَجْرُهُمَا سَوَاءٌ، وَعَبْدٍ رَزَقَهُ اللَّهُ مَالاً وَلَمْ يَرْزُقْهُ عِلْمًا، فَهُوَ يَخْبِطُ فِي مَالِهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ لاَ يَتَّقِي فِيهِ رَبَّهُ، وَلاَ يَصِلُ فِيهِ رَحِمَهُ، وَلاَ يَعْلَمُ لِلَّهِ فِيهِ حَقًّا، فَهَذَا بِأَخْبَثِ الْمَنَازِلِ، وَعَبْدٍ لَمْ يَرْزُقْهُ اللَّهُ مَالاً وَلاَ عِلْمًا فَهُوَ يَقُولُ: لَوْ أَنَّ لِي مَالاً لَعَمِلْتُ فِيهِ بِعَمَلِ فُلاَنٍ فَهُوَ بِنِيَّتِهِ فَوِزْرُهُمَا سَوَاءٌ.

करता। उसकी नीयत की वजह से वह दोनों अज्र में बराबर हैं। (तीसरा) वह बन्दा है जिसे अल्लाह ने माल दिया लेकिन इल्म नहीं दिया वह बग़ैर इल्म के अपने माल को ज़ाया करता है, उसमें न अपने रब से डरता है न रिश्तेदारी को मिलाता है और न ही अल्लाह का हक़ पहचानता है यह बुरे मर्तबा वाला है। (चौथा) वह बन्दा जिसे अल्लाह ने न माल दिया और न ही इल्म, यह कहता है: काश! मेरे पास भी माल होता मैं भी फुलां शख़्स की तरह (बुरे) काम करता तो उसकी नीयत की वजह से उनका गुनाह बराबर होगा।"

सहीह: इब्ने माजह: 4227. मुसनद अहमद: 4/231

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

18 بَابُ مَا جَاءَ فِي الهَمِّ فِي الدُّنْيَا وَحُبِّهَا

18 - दुनिया की फ़िक्र और मोहब्बत

2326 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ بَشِيرٍ أَبِي إِسْمَاعِيلَ، عَنْ سَيَّارٍ، عَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ نَزَلَتْ بِهِ فَاقَةٌ فَأَنْزَلَهَا بِالنَّاسِ لَمْ تُسَدَّ فَاقَتُهُ، وَمَنْ نَزَلَتْ بِهِ فَاقَةٌ فَأَنْزَلَهَا بِاللَّهِ، فَيُوشِكُ اللَّهُ لَهُ بِرِزْقٍ عَاجِلٍ أَوْ آجِلٍ.

2326 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "जिस पर फ़ाका उतरा फिर उसने इसे लोगों के सामने पेश किया तो उसका फ़ाका ख़त्म नहीं होगा और जिस पर फ़ाका उतरा फिर उसने इसे अल्लाह के सामने पेश किया तो अल्लाह उसे जल्द या बदेर रिज़्क अता फ़रमाएगा।"

(بموت عاجل أو غني أجل) के अल्फ़ाज़ से सहीह है। अबू दाऊद: 1645. मुसनद अहमद: 1/389

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह ग़रीब है।

19-बَابُ مَا جَاءَ فِيمَا يَكْفِي الْمَرْءَ مِنْ جَمِيعِ مَالِهِ.

19- सारे माल से इंसान को क्या चीज़ काफी है?

2327 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مَنْصُورٍ، وَالأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، قَالَ: جَاءَ مُعَاوِيَةُ إِلَى أَبِي هَاشِمِ بْنِ عُتْبَةَ، وَهُوَ مَرِيضٌ يَعُودُهُ، فَقَالَ: يَا خَالُ مَا يُبْكِيكَ أَوَجَعٌ يُشْئِزُكَ أَمْ حِرْصٌ عَلَى الدُّنْيَا؟ قَالَ: كُلٌّ لاَ، وَلَكِنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَهِدَ إِلَيَّ عَهْدًا لَمْ آخُذْ بِهِ، قَالَ: إِنَّمَا يَكْفِيكَ مِنْ جَمْعِ الْمَالِ خَادِمٌ وَمَرْكَبٌ فِي سَبِيلِ اللهِ وَأَجِدُنِي الْيَوْمَ قَدْ جَمَعْتُ.

2327 - अबू वाइल बयान करते हैं कि मुआविया (ﷺ) अबू हाशिम बिन उत्बा की इयादत के लिए आए वह बीमार थे तो उन्होंने कहा: मामूं जान आप क्यों रोते हैं? क्या कोई दर्द तक्लीफ़ देता है या दुनिया की हिर्स (लालच) है? उन्होंने कहा: इन में से कोई भी नहीं लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे वसीयत की थी मैं उस पर पूरा नहीं उतर सका, आप (ﷺ) ने फ़रमाया था: "तुम्हें सारे माल में से एक ख़ादिम और अल्लाह के रास्ते में एक सवारी ही काफी है।" और आज मैं अपने आप को देखता हूँ कि मैंने बहुत जमा कर लिया है।

हसन: इब्ने माजह: 4103. निसाई: 5372.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: ज़ायदा और उबैदा बिन हुमैद ने इसे मंसूर से बवास्ता अबू वाइल, समुरा बिन सहम से रिवायत किया है कि मुआविया (ﷺ) अबू हाशिम बिन उत्बा (ﷺ) के पास गए, फिर इस तरह रिवायत की। नीज़ इस बारे में बुरैदा अल अस्लमी (ﷺ) भी नबी (ﷺ) से रिवायत करते हैं।

20 بَابٌ مِنْهُ حديث: ((لاَ تَتَّخِذُوا الضَّيْعَةَ فَتَرْغَبُوا فِي الدُّنْيَا))

20 - साज़ो सामान न बनाओ मुबादा कि तुम्हें दुनिया की रग़बत हो जाए

2328 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ شِمْرِ بْنِ عَطِيَّةَ، عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ سَعْدِ بْنِ الأَخْرَمِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: لاَ تَتَّخِذُوا الضَّيْعَةَ فَتَرْغَبُوا فِي الدُّنْيَا.

2328- सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "साज़ो सामान[1] न बनाओ मुबादा कि तुम दुनिया में मगन न हो जाओ।"

सहीह: इब्ने अबी शैबा: 13/241. मुसनद अहमद: 1/377. इब्ने हिब्बान: 710.

तौज़ीह: الضَّيْعَةُ : हर क़िस्म का साज़ो सामान, बाग़, खेत जायदाद वग़ैरह क्योंकि इन चीज़ों की वजह से इंसान आख़िरत से ग़ाफ़िल हो जाता है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

21 - लम्बी उम्र वाला मोमिन

21 بَابُ مَا جَاءَ فِي طُولِ العُمْرِ لِلْمُؤْمِنِ

2329- सय्यदना अब्दुल्लाह बिन बुस्र(رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि एक देहाती ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! लोगों में बेहतरीन कौन है? आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "जिसकी उम्र लम्बी और आमाल अच्छे हों।"

सहीह: इब्ने अबी शैबा: 13/254. मुसनद अहमद: 4/188. इब्ने हिब्बान: 814.

2329 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ حُبَابٍ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ صَالِحٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ قَيْسٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ بُسْرٍ، أَنَّ أَعْرَابِيًّا قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ مَنْ خَيْرُ النَّاسِ؟ قَالَ: مَنْ طَالَ عُمُرُهُ، وَحَسُنَ عَمَلُهُ.

वज़ाहत: इस बारे में अबू हुरैरा और जाबिर (رضي الله عنهما) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस तरीक़ से यह हदीस हसन ग़रीब है।

22 - कौनसा आदमी भला और कौनसा आदमी बुरा है?

22 بَابٌ مِنْهُ أَيُّ النَّاسِ خَيْرٌ، أَيُّهم شَرٌّ.))

2330 - सय्यदना अबू बक्रा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! कौन सा आदमी सबसे बेहतर है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया: "जिसकी उम्र लम्बी और आमाल अच्छे हों" उसने कहा: कौनसा आदमी बदतरीन है? " आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "जिसकी उम्र लम्बी और आमाल बुरे हों।"

सहीह: मुसनद अहमद: 5/40. दारमी: 2745.

2330 - حَدَّثَنَا أَبُو حَفْصٍ عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الحَارِثِ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرَةَ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَجُلاً قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَيُّ النَّاسِ خَيْرٌ، قَالَ: مَنْ طَالَ عُمُرُهُ، وَحَسُنَ عَمَلُهُ، قَالَ: فَأَيُّ النَّاسِ شَرٌّ؟ قَالَ: مَنْ طَالَ عُمُرُهُ وَسَاءَ عَمَلُهُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

23 - इस उम्मत के लोगों की उम्र साठ से सत्तर के दर्मियान होगी

23 بَابُ مَا جَاءَ فِي فَنَاءِ أَعْمَارِ هَذِهِ الأُمَّةِ مَا بَيْنَ السِّتِّينَ إِلَى السَّبْعِينَ

2331 - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعِيدٍ الجَوْهَرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَبِيعَةَ، عَنْ كَامِلٍ أَبِي العَلَاءِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: عُمْرُ أُمَّتِي مِنْ سِتِّينَ سَنَةً إِلَى سَبْعِينَ سَنَةً.

2331 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "मेरी उम्मत के लोगों की औसत उम्र साठ साल से सत्तर साल तक की होगी।"

हसन: सही: (أعمار أمتي ما بين) के अल्फ़ाज़ के साथ: इब्ने माजह: 4236. अल-कामिल:6/2101

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: बतरीक़ अबू सालेह, अबू हुरैरा (ﷺ) से मर्वी यह हदीस हसन ग़रीब है और कई तुरूक़ (सनदों) से अबू हुरैरा (ﷺ) से मर्वी है।

24 - ज़माने का क़रीब और उम्मीद का छोटा होना

24 بَابُ مَا جَاءَ فِي تَقَارُبِ الزَّمَانِ وَقِصَرِ الأَمَلِ

2332 - حَدَّثَنَا عَبَّاسُ بْنُ مُحَمَّدٍ الدُّورِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ الْعُمَرِيُّ، عَنْ سَعْدِ بْنِ سَعِيدٍ الأَنْصَارِيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَتَقَارَبَ الزَّمَانُ، فَتَكُونُ السَّنَةُ كَالشَّهْرِ، وَالشَّهْرُ كَالْجُمُعَةِ، وَتَكُونُ الْجُمُعَةُ كَالْيَوْمِ، وَيَكُونُ الْيَوْمُ كَالسَّاعَةِ، وَتَكُونُ السَّاعَةُ كَالضَّرَمَةِ بِالنَّارِ.

2332 - सय्यदना अनस बिन मालिक (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "क़यामत कायम नहीं होगी यहाँ तक कि ज़माना करीब हो जाए, साल महीने की तरह, महीने जुमा की मानिन्द, जुमा एक दिन की तरह, दिन एक घड़ी की तरह और एक घड़ी (या घंटा) आग से दाग देने के (वक़्त के) बराबर होगा।"

सहीह

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस ग़रीब है और साद बिन सईद, यह्या बिन सईद अंसारी के भाई हैं।

25 - छोटी उम्मीदें रखना

25 بَابُ مَا جَاءَ فِي قِصَرِ الأَمَلِ

2333 - सय्यदना इब्ने उमर (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मेरे जिस्म का कोई हिस्सा पकड़ कर फ़रमाया: "दुनिया में ऐसे रहो गोया कि तुम अजनबी या मुसाफ़िर हो और अपने आप को क़ब्र वालों में शुमार करो।" मुजाहिद कहते हैं फिर इब्ने उमर (ﷺ) ने मुझसे फ़रमाया, जब तुम सुबह कर लो अपने दिल में शाम करने का यक़ीन मत रखो और जब शाम हो तो अपने दिल में सुबह करने का यक़ीन मत रखो, अपनी बीमारी से पहले तंदुरुस्ती में आमाल कर लो, अपनी मौत से पहले अपनी ज़िन्दगी में आमाल कर लो, ऐ अल्लाह के बन्दे! तुम नहीं जानते कि कल तुम्हारा क्या नाम होगा।

2333 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ لَيْثٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: أَخَذَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِبَعْضِ جَسَدِي فَقَالَ: كُنْ فِي الدُّنْيَا كَأَنَّكَ غَرِيبٌ أَوْ عَابِرُ سَبِيلٍ وَعُدَّ نَفْسَكَ فِي أَهْلِ القُبُورِ فَقَالَ لِي ابْنُ عُمَرَ: إِذَا أَصْبَحْتَ فَلاَ تُحَدِّثْ نَفْسَكَ بِالمَسَاءِ، وَإِذَا أَمْسَيْتَ فَلاَ تُحَدِّثْ نَفْسَكَ بِالصَّبَاحِ، وَخُذْ مِنْ صِحَّتِكَ قَبْلَ سَقَمِكَ وَمِنْ حَيَاتِكَ قَبْلَ مَوْتِكَ فَإِنَّكَ لاَ تَدْرِي يَا عَبْدَ اللهِ مَا اسْمُكَ غَدًا.

बुख़ारी: 6416. इब्ने माजह: 4114.

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं:) हमें अहमद बिन अब्दा ज़बी बसरी ने, वह कहते हैं: हमें हम्माद बिन ज़ैद ने लैस से उन्होंने मुजाहिद से बवास्ता इब्ने उमर (ﷺ) नबी करीम (ﷺ) से ऐसे ही रिवायत की है। नीज़ इस हदीस को आमश ने भी मुजाहिद से बवास्ता इब्ने उमर (ﷺ) नबी करीम (ﷺ) से ऐसे ही रिवायत की है।

2334 - सय्यदना अनस बिन मालिक (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "यह आदम का बेटा है और यह इसकी मौत है" और आप(ﷺ) ने अपना हाथ अपनी गुद्दी पर रखा फिर इसे फैलाया और फ़रमाया: "और यहाँ इसकी उम्मीदें हैं, यहाँ इसकी उम्मीदें हैं, यहाँ इसकी उम्मीदें हैं,"

2334 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بَكْرِ بْنِ أَنَسٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: هَذَا ابْنُ آدَمَ وَهَذَا أَجَلُهُ وَوَضَعَ يَدَهُ عِنْدَ قَفَاهُ، ثُمَّ بَسَطَهَا فَقَالَ: وَثَمَّ أَمَلُهُ وَثَمَّ أَمَلُهُ. وَثَمَّ أَمَلُهُ.

सहीह: इब्ने माजह: 4232. मुसनद अहमद: 3/123. इब्ने हिब्बान:2998.

वज़ाहत: इस बारे में अबू सईद (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2335 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي السَّفَرِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: مَرَّ عَلَيْنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَحْنُ نُعَالِجُ خُصًّا لَنَا، فَقَالَ: مَا هَذَا؟ فَقُلْنَا قَدْ وَهَى فَنَحْنُ نُصْلِحُهُ، فَقَالَ: مَا أَرَى الأَمْرَ إِلاَّ أَعْجَلَ مِنْ ذَلِكَ.

2335 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (ﷺ) बयान करते हैं कि हम अपना घर[1] दुरुस्त कर रहे थे कि अल्लाह के रसूल (ﷺ) हमारे पास से गुज़रे तो आप ने फ़रमाया: "यह क्या है?" हम ने कहा, यह कमज़ोर हो गया था हम इसे ठीक कर रहे हैं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया: "मेरे ख़्याल में मौत का मामला इससे भी जल्दी वाला है।"

सहीह: अबू दाऊद: 5235, इब्ने माजह: 4160.

तौज़ीह: خُصٌّ : लकड़ी या बांस का घर, इसी तरह उस घर भी خُصٌّ कहा जाता है। जिसकी छत लकड़ी की हो। (अल-मोजमुल वसीत:पृ. 281)

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और अबू सफ़र का नाम साद बिन युह्मिद सौरी है। अहमद सौरी भी कहा जाता है।

26 بَابُ مَا جَاءَ أَنَّ فِتْنَةَ هَذِهِ الأُمَّةِ فِي الْمَالِ

26 - इस उम्मत का फ़ित्ना माल है

2336 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ سَوَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا لَيْثُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ صَالِحٍ، أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ جُبَيْرِ بْنِ نُفَيْرٍ، حَدَّثَهُ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ كَعْبِ بْنِ عِيَاضٍ، قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: إِنَّ لِكُلِّ أُمَّةٍ فِتْنَةً وَفِتْنَةُ أُمَّتِي الْمَالُ.

2336 - काब बिन इयाज़ (ﷺ) रिवायत करते हैं कि मैंने नबी अकरम (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "हर उम्मत के लिए एक फ़ित्ना होता है और मेरी उम्मत का फ़ित्ना माल है।"

सहीह: मुसनद अहमद: 4/ 160, इब्ने हिब्बान: 3223

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। हम इसे मुआविया बिन सालेह के तरीक़ से ही जानते हैं।

27 - अगर इब्ने आदम के पास माल की दो वादियाँ भी हों तो वह तीसरी को तलाश करेगा

27 بَابُ مَا جَاءَ لَوْ كَانَ لِابْنِ آدَمَ وَادِيَانِ مِنْ مَالٍ لَابْتَغَى ثَالِثًا

2337 - सय्यदना अनस बिन मालिक (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "अगर इब्ने आदम के पास सोने की दो वादियाँ हों तो वह चाहेगा कि उसके पास तीसरी भी हो, उसका मुंह सिर्फ़ (क़ब्र की मिट्टी) ही भर सकती है और अल्लाह उसकी तौबा क़ुबूल करता है जो सच्चे दिल से तौबा करे।"

बुखारी: 3639. मुस्लिम: 1048.

2337 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي زِيَادٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَوْ كَانَ لِابْنِ آدَمَ وَادِيَانِ مِنْ ذَهَبٍ لَأَحَبَّ أَنْ يَكُونَ لَهُ ثَالِثٌ، وَلاَ يَمْلَأُ فَاهُ إِلاَّ التُّرَابُ، وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَى مَنْ تَابَ.

वज़ाहत: इस बारे में उबय बिन काब, अबू सईद, आयशा, इब्ने ज़ुबैर, अबू वाकिद, जाबिर, इब्ने अब्बास और अबू हुरैरा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

28 - दो चीज़ों पर बूढ़े आदमी का दिल भी जवान ही रहता है

28 بَابُ مَا جَاءَ فِي قَلْبُ الشَّيْخِ شَابٌّ عَلَى حُبِّ اثْنَتَيْنِ

2338 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया: "बूढ़े आदमी का दिल दो चीज़ों की मोहब्बत पर जवान रहता है (एक) लम्बी ज़िन्दगी और (दूसरी) माल की कस्रत (ज़्यादती)।"

बुखारी: 6420. मुस्लिम: 1064. इब्ने माजह: 4233

2338 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ عَجْلاَنَ، عَنِ الْقَعْقَاعِ بْنِ حَكِيمٍ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: قَلْبُ الشَّيْخِ شَابٌّ عَلَى حُبِّ اثْنَتَيْنِ: طُولِ الحَيَاةِ وَكَثْرَةِ الْمَالِ.

वज़ाहत: इस बारे में अनस (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है और यह हदीस हसन सहीह है।

2339 - सय्यदना अनस बिन मालिक (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "इब्ने आदम बूढ़ा होता है और उसकी दो चीजें जवान होती हैं, उम्र पर हिर्स और माल का लालच।"

बुखारी: 6421. मुस्लिम: 1047. इब्ने माजह्:5234.

2339 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يَهْرَمُ ابْنُ آدَمَ وَيَشُبُّ مِنْهُ اثْنَتَانِ: الحِرْصُ عَلَى العُمُرِ وَالحِرْصُ عَلَى الْمَالِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

29 - दुनिया से बेरग़बती करना

29 بَابُ مَا جَاءَ فِي الزَّهَادَةِ فِي الدُّنْيَا

2340 - सय्यदना अबू ज़र (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया: "दुनिया से ला ताल्लुक़ होना हराम को हलाल और माल को ज़ाया करना नहीं है। "बल्कि दुनिया में जाहिद बनना यह है कि तुम्हें अपने हाथ वाली चीज़ से ज़्यादा भरोसा उस पर हो जो अल्लाह के हाथ में है और तुम्हें मुसीबत के सवाब की तरफ़ ऐसी रग़बत हो कि जब तुम्हें मुसीबत आए तो तुम उस में रग़बत करो कि यह मुसीबत बाक़ी रहे। (ताकि सवाब जारी रहे।)"

ज़ईफ़: जिद्दा: इब्ने माजह्: 4100. अल-कामिल: 5/1769.

2340 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ وَاقِدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ حَلْبَسٍ، عَنْ أَبِي إِدْرِيسَ الخَوْلَانِيِّ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: الزَّهَادَةُ فِي الدُّنْيَا لَيْسَتْ بِتَحْرِيمِ الحَلَالِ وَلَا إِضَاعَةِ الْمَالِ وَلَكِنَّ الزَّهَادَةَ فِي الدُّنْيَا أَنْ لَا تَكُونَ بِمَا فِي يَدَيْكَ أَوْثَقَ مِمَّا فِي يَدِ اللهِ وَأَنْ تَكُونَ فِي ثَوَابِ الْمُصِيبَةِ إِذَا أَنْتَ أُصِبْتَ بِهَا أَرْغَبَ فِيهَا لَوْ أَنَّهَا أُبْقِيَتْ لَكَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे इसी सनद से ही जानते हैं और अबू इदरीस खौलानी का नाम आइज़ुल्लाह बिन उबैदुल्लाह है और अम्र बिन वाकिद मुन्करूल हदीस है।

30 - उन चीज़ों का बयान जिनके अलावा बाकी चीज़ों में इब्ने आदम का हक़ नहीं है

30 بَابٌ مِنْهُ الخصال التي ليس لابن آدم حق في سواها))

2341 - सय्यदना उस्मान बिन अफ्फ़ान (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया: "इन चीज़ों के अलावा बाकी चीज़ों में इब्ने आदम का हक़ नहीं है। (वह चीजें यह हैं:) एक घर जिस में वह रह सके, एक कपड़ा जिस से अपना सतर छिपा ले, सूखी रोटी और पानी।"

ज़ईफ़: तयालिसी: 83. मुसनद अहमद: 1/62

2341 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ بْنُ عَبْدِ الوَارِثِ، قَالَ: حَدَّثَنَا حُرَيْثُ بْنُ السَّائِبِ، قَالَ: سَمِعْتُ الحَسَنَ، يَقُولُ: حَدَّثَنِي حُمْرَانُ بْنُ أَبَانَ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَيْسَ لِابْنِ آدَمَ حَقٌّ فِي سِوَى هَذِهِ الخِصَالِ، بَيْتٌ يَسْكُنُهُ وَثَوْبٌ يُوَارِي عَوْرَتَهُ وَجِلْفُ الخُبْزِ وَالمَاءِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रह०) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और यह हुरैस बिन साइब की रिवायत है। नीज़ मैंने अबू दाऊद बिन सुलैमान बिन सलम से सुना कि नज़र बिन शुमैल कहते हैं: सूखी रोटी से मुराद है जिसके साथ सालन न हो।

31 - इब्ने आदम कहता है: मेरा माल, मेरा माल

31 بَابٌ مِنْهُ حديث: ((يَقُولُ ابْنُ آدَمَ: مَالِي مَالِي))

2342 - मुतर्रिफ अपने बाप से रिवायत करते हैं कि वह नबी (ﷺ) के पास पहुंचे तो आप (أَلْهَاكُمُ التَّكَاثُرُ) पढ़ रहे थे? आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "आदम का बेटा कहता है: मेरा माल, मेरा माल। तेरा माल जब कि ये तो वही है जो तूने सदक़ा करके आगे पहुंचा दिया तूने खा कर ख़त्म कर लिया या पहन कर बोसीदा कर दिया।"

मुस्लिम: 2958. निसाई: 3613.

2342 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ مُطَرِّفٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّهُ انْتَهَى إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَقُولُ: أَلْهَاكُمُ التَّكَاثُرُ قَالَ: يَقُولُ ابْنُ آدَمَ: مَالِي مَالِي، وَهَلْ لَكَ مِنْ مَالِكَ إِلاَّ مَا تَصَدَّقْتَ فَأَمْضَيْتَ، أَوْ أَكَلْتَ فَأَفْنَيْتَ، أَوْ لَبِسْتَ فَأَبْلَيْتَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रह०) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

32 بَابٌ مِنْهُ فِي فضل الاكتفاء بالكفاف وبذل الفضل

32 - बक़द्रे ज़रूरत माल ख़र्च कर के ज़ायद माल (अल्लाह की राह में) ख़र्च कर देना

2343 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ يُونُسَ هُوَ الْيَمَامِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ بْنُ عَمَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شَدَّادُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا أُمَامَةَ، يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَا ابْنَ آدَمَ إِنَّكَ إِنْ تَبْذُلِ الفَضْلَ خَيْرٌ لَكَ وَإِنْ تُمْسِكْهُ شَرٌّ لَكَ، وَلاَ تُلاَمُ عَلَى كَفَافٍ، وَابْدَأْ بِمَنْ تَعُولُ، وَالْيَدُ الْعُلْيَا خَيْرٌ مِنَ الْيَدِ السُّفْلَى.

2343 - सय्यदना अबू उमामा (رضی الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "ऐ इब्ने आदम तुम्हारा ज़रूरत से ज़्यादा माल ख़र्च करना तुम्हारे लिए बेहतर और रोकना तुम्हारे लिए बुरा है और बक़द्रे[1] ज़रूरत माल पर तुम्हें मलामत नहीं की जाएगी, उससे शुरू कर जिस की तू परवरिश करता है और ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है।"

मुस्लिम: 1036. मुसनद अहमद: 5/262

तौज़ीह: كَفَاف: ज़रूरत के मुताबिक यानी आदमी की जायज़ ज़रूरियात पूरी करने के लिए जो माल काफ़ी हो सके।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और शद्दाद बिन अब्दुल्लाह की कुनियत अबू अम्मार है।

33 بَابٌ فِي التَّوَكُّلِ عَلَى اللهِ

33 - अल्लाह पर भरोसा करना

2344 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ سَعِيدٍ الكِنْدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ حَيْوَةَ بْنِ شُرَيْحٍ، عَنْ بَكْرِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ هُبَيْرَةَ، عَنْ أَبِي تَمِيمٍ الجَيْشَانِيِّ، عَنْ عُمَرَ بْنِ الخَطَّابِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَوْ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَوَكَّلُونَ عَلَى اللهِ حَقَّ تَوَكُّلِهِ لَرُزِقْتُمْ كَمَا يُرْزَقُ الطَّيْرُ تَغْدُو خِمَاصًا وَتَرُوحُ بِطَانًا.

2344 - सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब (رضی الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "अगर तुम अल्लाह पर इस तरह भरोसा कर लो जैसे उस पर भरोसा करने का हक़ है तो तुम्हें भी परिंदों की तरह रिज़्क़ दिया जाए। वह सुबह भूके निकलते हैं और शाम को पेट भर के लौटते हैं।"

सहीह: इब्ने माजह: 4164. मुसनद अहमद: 1/30. हाकिम: 4/318. तयालिसी: 51.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। हम इसे इसी सनद से ही जानते हैं और अबू तमीम जैशानी का नाम अब्दुल्लाह बिन अब्दुलाह बिन मालिक है।

2345 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ الطَّيَالِسِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: كَانَ أَخَوَانِ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَانَ أَحَدُهُمَا يَأْتِي النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالآخَرُ يَحْتَرِفُ، فَشَكَا الْمُحْتَرِفُ أَخَاهُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: لَعَلَّكَ تُرْزَقُ بِهِ.

2345 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माना में दो भाई थे उन में से एक नबी (ﷺ) के पास आता और दूसरा मेहनत मज़दूरी[1] करता फिर मेहनत मज़दूरी करने वाले ने नबी (ﷺ) से अपने भाई की शिकायत की तो आप ने फ़रमाया: "शायद तुम्हें उसकी वजह से ही रोज़ी मिलती हो।"

सहीह

तौज़ीह: احتراف : حرفه पेशे को कहा जाता है। احتراف : का माना पेशा इख़्तियार करना कोई भी काम या मेहनत मज़दूरी करना।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

34 - بَابٌ فِي الوصف من حيزت له الدنيا

34 - किस शख़्स के लिए दुनिया जमा कर दी जाती है?

2346 - حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ مَالِكٍ، وَمَحْمُودُ بْنُ خِدَاشٍ البَغْدَادِيُّ، قَالاَ: حَدَّثَنَا مَرْوَانُ بْنُ مُعَاوِيَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي شُمَيْلَةَ الأَنْصَارِيُّ، عَنْ سَلَمَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ مِحْصَنٍ الخَطْمِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، وَكَانَتْ لَهُ صُحْبَةٌ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ أَصْبَحَ مِنْكُمْ آمِنًا فِي سِرْبِهِ مُعَافًى فِي جَسَدِهِ عِنْدَهُ قُوتُ يَوْمِهِ فَكَأَنَّمَا حِيزَتْ لَهُ الدُّنْيَا.

2346 - सय्यदना उबैदुल्लाह बिन मिह्सन ख़तमी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "जिसने अपने अहलो माल की तरफ़ से इत्मीनान की हालत[1] में और जिस्म में आफ़ियत के साथ सुबह की और उसके पास एक दिन का राशन भी हो तो गोया उसके लिए दुनिया को जमा कर दिया गया।"

हसन: इब्ने माजह: 4141. हुमैदी: 439

तौज़ीह: سِرْب: नफ़्स, दिल وامن فی سربه هو أمن السرب : यानी उसका दिल मुत्मइन है और अपने

बाल बच्चों और मालो दौलत की तरफ़ से मुतमइन है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे मरवान बिन मुआविया की सनद से ही जानते हैं।

आप (ﷺ) के फ़रमान((حيزت)) का मतलब है जमा कर दी गई।

अबू ईसा कहते हैं: हमें यह हदीस मुहम्मद बिन इस्माईल ने भी बवास्ता हुमैदी, मरवान बिन मुआविया से ऐसे ही रिवायत की है। और इस बारे में अबू दर्दा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

35 - बक़द्रे किफायत माल पर ही सब्र करना

35 بَابُ مَا جَاءَ فِي الْكَفَافِ وَالصَّبْرِ عَلَيْهِ

2347 - सय्यदना उमामा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया: "मेरे दोस्तों में से मेरे नज़दीक सब से ज़्यादा क़ाबिले रश्क वह मोमिन है जो हल्के सामान[1] वाला, नमाज़ में बहुत हिस्सा रखने वाला, जो अपने रब की अच्छी इबादत करे, तन्हाई में उसकी इताअत करे, लोगों में गुमनाम हो, उस की तरफ़ उँगलियों से इशारा ना किया जाता हो और उसकी रोज़ी बक़द्रे किफ़ायत हो वह उसी पर ही सब्र करे।" फिर आप ने अपनी दो उंगलियाँ अपनी ज़मीन पर मारी और फ़रमाया: "उस की मौत जल्द आ गई, उस पर रोने वालियां कम हो और उसकी मीरास भी कम हो।" इसी सनद के साथ यह भी मर्वी है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया: "मेरे रब ने मुझे यह पेशकश की कि वह मेरे लिए मक्का की कंकरीली ज़मीन सोना बना दे। मैंने कहा: "ऐ मेरे रब! नहीं, बल्कि मैं एक दिन सैर हो कर खाऊँ और एक दिन भूका रहूँ, या आप ने तीन दिन कहा, या इसके करीब, फिर जब

2347 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَيُّوبَ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ زَحْرٍ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ يَزِيدَ، عَنِ الْقَاسِمِ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي أُمَامَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: إِنَّ أَغْبَطَ أَوْلِيَائِي عِنْدِي لَمُؤْمِنٌ خَفِيفُ الْحَاذِ ذُو حَظٍّ مِنَ الصَّلاَةِ، أَحْسَنَ عِبَادَةَ رَبِّهِ وَأَطَاعَهُ فِي السِّرِّ، وَكَانَ غَامِضًا فِي النَّاسِ لاَ يُشَارُ إِلَيْهِ بِالأَصَابِعِ، وَكَانَ رِزْقُهُ كَفَافًا فَصَبَرَ عَلَى ذَلِكَ، ثُمَّ نَقَرَ بِإِصْبَعَيْهِ فَقَالَ: عُجِّلَتْ مَنِيَّتُهُ قَلَّتْ بَوَاكِيهِ قَلَّ تُرَاثُهُ وَبِهَذَا الإِسْنَادِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: عَرَضَ عَلَيَّ رَبِّي لِيَجْعَلَ لِي بَطْحَاءَ مَكَّةَ ذَهَبًا، قُلْتُ: لاَ يَا رَبِّ وَلَكِنْ أَشْبَعُ يَوْمًا وَأَجُوعُ يَوْمًا، أَوْ قَالَ ثَلاَثًا أَوْ نَحْوَ هَذَا، فَإِذَا

मुझे भूक लगे तो मैं तेरे सामने गिड़गिड़ाऊं और तुझे याद करूं जब सैर हो जाऊं तो तेरा शुक्र और तारीफ़ करूं।"

جُعْتُ تَضَرَّعْتُ إِلَيْكَ وَذَكَرْتُكَ، وَإِذَا شَبِعْتُ شَكَرْتُكَ وَحَمِدْتُكَ,

ज़ईफ़: मुसनद अहमद: 5/252. हाकिम: 4/123

तौज़ीह: خَفِيفُ الْحَاذِ: जिस पर अयाल का बोझ कम हो, जिस पर अयाल का बोझ कम होगा, उसका सामान भी कम होगा इसी लिए इसका यह माना किया गया है, लुग़त में حاذ घोड़े के पीठ की वह जगह होती है जहां हाथ लगता है।

वज़ाहत: इस बारे में फ़ज़ाला बिन उबैद से भी हदीस मर्वी है और यह हदीस हसन है। कासिम, अब्दुर्रहमान के बेटे हैं। उनकी कुनियत अबू अब्दुर्रहमान है। यह अब्दुर्रहमान बिन ख़ालिद बिन यज़ीद बिन मुआविया के मौला (आजादकर्दा) और शाम के रहने वाले सिक़ह् रावी थे। नीज़ अली बिन यज़ीद को हदीस के मामले में ज़ईफ़ कहा गया है। उसकी कुनियत अबू अब्दुल मलिक थी।

2348 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "यक़ीनन वह शख़्स कामयाब हो गया जो इस्लाम ले आया, उसे बक़द्रे ज़रूरत रिज़्क मिला और अल्लाह तआला ने उसे कनाअत (सब्र) दे दी।"

मुस्लिम: 1054. इब्ने माजह: 4138.

2348 - حَدَّثَنَا العَبَّاسُ الدُّورِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ الْمُقْرِئُ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ، عَنْ شُرَحْبِيلَ بْنِ شَرِيكٍ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ الحُبُلِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: قَدْ أَفْلَحَ مَنْ أَسْلَمَ وَرُزِقَ كَفَافًا وَقَنَّعَهُ اللَّهُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2349 - सय्यदना फ़ज़ाला बिन उबैद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आप फ़रमा रहे थे: "मुबारकबाद हो उस आदमी को जिसे इस्लाम की हिदायत मिल गई, उसकी गुज़र बसर बक़द्रे ज़रूरत हो और वह कनाअत इख़्तियार कर ले।"

सहीह: मुसनद अहमद: 6/19. इब्ने हिब्बान:705.

2349 - حَدَّثَنَا العَبَّاسُ الدُّورِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ الْمُقْرِئُ، قَالَ: أَخْبَرَنَا حَيْوَةُ بْنُ شُرَيْحٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو هَانِئٍ الخَوْلَانِيُّ، أَنَّ أَبَا عَلِيٍّ عَمْرَو بْنَ مَالِكٍ الجَنْبِيَّ، أَخْبَرَهُ عَنْ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ، أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: طُوبَى لِمَنْ هُدِيَ إِلَى الإِسْلَامِ، وَكَانَ عَيْشُهُ كَفَافًا وَقَنَعَ

वज़ाहत: अबू ख़ौलानी का नाम हुमैद बिन हानी है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है

36 - फ़क़ीरी की फ़ज़ीलत

36 بَابُ مَا جَاءَ فِي فَضْلِ الفَقْرِ

2350 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि एक आदमी ने नबी(ﷺ) से कहा: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! अल्लाह की क़सम मैं आप से मोहब्बत करता हूँ। आप(ﷺ) ने फ़रमाया: देखो तुम क्या कह रहे हो?" उस ने तीन बार कहा: अल्लाह की क़सम मैं आप से मोहब्बत करता हूँ। आप (ﷺ) ने फ़रमाया: "अगर तु मुझ से मोहब्बत करता है तो फ़क़ीरी के लिए तिज्फ़ाफ़[1] तैयार रख क्योंकि जो मुझ से मोहब्बत करता है फ़क़ीरी उसकी तरफ़ सैलाब के अपने इख़्तिताम की तरफ़ बढ़ने से भी ज़्यादा तेज़ी के साथ आती है।"

2350 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ نَبْهَانَ بْنِ صَفْوَانَ الثَّقَفِيُّ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ أَسْلَمَ، قَالَ: حَدَّثَنَا شَدَّادٌ أَبُو طَلْحَةَ الرَّاسِبِيُّ، عَنْ أَبِي الوَازِعِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُغَفَّلٍ، قَالَ: قَالَ رَجُلٌ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَا رَسُولَ اللهِ وَاللَّهِ إِنِّي لَأُحِبُّكَ. فَقَالَ لَهُ: انْظُرْ مَاذَا تَقُولُ، قَالَ: وَاللَّهِ إِنِّي لَأُحِبُّكَ، ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، فَقَالَ: إِنْ كُنْتَ تُحِبُّنِي فَأَعِدَّ لِلْفَقْرِ تِجْفَافًا، فَإِنَّ الفَقْرَ أَسْرَعُ إِلَى مَنْ يُحِبُّنِي مِنَ السَّيْلِ إِلَى مُنْتَهَاهُ.

ज़ईफ़: इब्ने हिब्बान: 2922.

तौज़ीह: تَجْفَافٌ : जिस जैसा लिबास जो जंगजू पहनता है, मोटा कपड़ा या ज़ीन वग़ैरह जो घोड़े को ज़ख़्म से बचाने के लिए रखी जाती है उसे भी تَجْفَافٌ कहा जाता है। (अल-मोजमुल वसीत:पृ. 267) इस से मुराद यह है कि फ़क़ीरी के लिए तैयार रहो।

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं: हमें नस्र बिन अली ने उन्हें उनके बाप ने शद्दाद अबू तल्हा से इसी मफ़हूम की हदीस बयान की है।

37 - फ़ुक़रा मुहाजिरीन मालदारों से पहले जन्नत में दाख़िल होंगे

37 بَابُ مَا جَاءَ أَنَّ فُقَرَاءَ الْمُهَاجِرِينَ يَدْخُلُونَ الجَنَّةَ قَبْلَ أَغْنِيَائِهِمْ

2351 - सय्यदना अबू सईद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "फ़ुक़रा मुहाजिरीन मालदारों से पांच सौ साल पहले जन्नत में दाख़िल होंगे।"

2351 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُوسَى البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا زِيَادُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ عَطِيَّةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ

اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: فُقَرَاءُ الْمُهَاجِرِينَ يَدْخُلُونَ الجَنَّةَ قَبْلَ أَغْنِيَائِهِمْ بِخَمْسِمِائَةِ سَنَةٍ.

सहीह: अबू दाऊद: 3666. इब्ने माजह:4123.

वज़ाहत: इस बारे में अबू हुरैरा, अब्दुल्लाह बिन अम्र और जाबिर (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।

2352 - حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى بْنُ وَاصِلٍ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا ثَابِتُ بْنُ مُحَمَّدٍ العَابِدُ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحَارِثُ بْنُ النُّعْمَانِ اللَّيْثِيُّ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: اللَّهُمَّ أَحْيِنِي مِسْكِينًا وَأَمِتْنِي مِسْكِينًا وَاحْشُرْنِي فِي زُمْرَةِ الْمَسَاكِينِ يَوْمَ القِيَامَةِ فَقَالَتْ عَائِشَةُ: لِمَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: إِنَّهُمْ يَدْخُلُونَ الجَنَّةَ قَبْلَ أَغْنِيَائِهِمْ بِأَرْبَعِينَ خَرِيفًا، يَا عَائِشَةُ لاَ تَرُدِّي الْمِسْكِينَ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَةٍ، يَا عَائِشَةُ أَحِبِّي الْمَسَاكِينَ وَقَرِّبِيهِمْ فَإِنَّ اللَّهَ يُقَرِّبُكِ يَوْمَ القِيَامَةِ.

2352 - सय्यदना अनस (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "ऐ अल्लाह! मुझे मिस्कीन की हालत में ज़िंदा रखना, मिस्कीन की हालत में मुझे मौत आए और क़यामत के दिन मुझे मिस्कीनों के गिरोह में जमा करना।" आयशा (ﷺ) ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! किसलिए? आप(ﷺ) ने फ़रमाया: " यक़ीनन यह लोग मालदारों से चालीस साल पहले जन्नत में दाखिल होंगे। ऐ आयशा! तुम मिस्कीन को वापस न लौटाओ अगरचे खुजूर का टुकड़ा ही देना पड़े। ऐ आयशा! मसाकीन से मोहब्बत करो और उन्हें क़रीब करो तो अल्लाह तआला क़यामत के दिन तुम्हें क़रीब करेगा।"

सहीह: 861. बैहक़ी: 7/ 12.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

2353 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: يَدْخُلُ الْفُقَرَاءُ الْجَنَّةَ قَبْلَ الأَغْنِيَاءِ بِخَمْسِمِائَةِ عَامٍ نِصْفِ يَوْمٍ.

2353 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "फ़ुक़रा मालदारों से पांच सौ साल, (क़यामत का) आधा दिन पहले जन्नत में दाखिल होंगे।"

हसन सहीह: इब्ने माजह:4122.इब्ने अबी शैबा: 13/ 246. मुसनद अहमद:2/ 296.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2354 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمُحَارِبِيُّ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَدْخُلُ فُقَرَاءُ الْمُسْلِمِينَ الجَنَّةَ قَبْلَ أَغْنِيَائِهِمْ بِنِصْفِ يَوْمٍ وَهُوَ خَمْسُمِائَةِ عَامٍ.

2354 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "मुसलमानों में से फ़ुक़रा (फ़क़ीर लोग) मालदारों से आधा दिन पहले जन्नत में जाएँगे और वह (आधा दिन) पांच सौ साल का होगा।"

हसन सहीह।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2355 - حَدَّثَنَا العَبَّاسُ الدُّورِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ الْمُقْرِئُ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ جَابِرٍ الحَضْرَمِيِّ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يَدْخُلُ فُقَرَاءُ الْمُسْلِمِينَ الجَنَّةَ قَبْلَ أَغْنِيَائِهِمْ بِأَرْبَعِينَ خَرِيفًا.

2355 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "फ़ुक़रा मुसलमान मालदारों से चालीस साल पहले जन्नत में दाखिल होंगे।"

फ़ुक़रा मुहाजिरीन के लफ़्ज़ से सहीह है। मुसनद अहमद:3/324. अब्द बिन हुमैद:1117

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

38 بَابُ مَا جَاءَ فِي مَعِيشَةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَهْلِهِ

38 - नबी (ﷺ) और आपके अहले खाना की गुज़र बसर

2356 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبَّادُ بْنُ عَبَّادٍ، عَنْ مُجَالِدٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ مَسْرُوقٍ، قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى عَائِشَةَ، فَدَعَتْ لِي بِطَعَامٍ وَقَالَتْ: مَا أَشْبَعُ مِنْ طَعَامٍ فَأَشَاءُ أَنْ أَبْكِيَ إِلاَّ بَكَيْتُ قَالَ: قُلْتُ لِمَ؟ قَالَتْ: أَذْكُرُ الحَالَ الَّتِي فَارَقَ عَلَيْهَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ

2356 - मसरूक़ (ﷺ) कहते हैं: मैं सय्यदा आयशा (ﷺ) के पास गया तो उन्होंने मेरे लिए खाना मंगवाया और फ़रमाने लगीं: मैं किसी खाने से सैर होती हूँ तो रोना चाहती हूँ तो रो देती हूँ। कहते हैं: मैंने कहा: वह क्यों? फ़रमाने लगीं: मैं उस हालत को याद करती हूँ जिस हालत में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दुनिया छोड़ी। अल्लाह की क़सम!

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الدُّنْيَا، وَاللَّهِ مَا شَبِعَ مِنْ خُبْزٍ وَلَحْمٍ مَرَّتَيْنِ فِي يَوْمٍ.

आप(ﷺ) एक दिन में दो मर्तबा गोश्त और रोटी से सैर नहीं हुए।

ज़ईफ़: अबू याला: 4538.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2357 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ يَزِيدَ، يُحَدِّثُ، عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: مَا شَبِعَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ خُبْزِ شَعِيرٍ يَوْمَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ حَتَّى قُبِضَ.

2357 - सय्यदा आयशा (ﷺ) रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) वफ़ात तक लगातार दो दिन जौ की रोटी से सैर नहीं हुए।

बुखारी:5416. मुस्लिम: 2970. इब्ने माजह:3344

वज़ाहत: इस बारे में अबू हुरैरा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2358 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمُحَارِبِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ كَيْسَانَ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: مَا شَبِعَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَهْلُهُ ثَلَاثًا تِبَاعًا مِنْ خُبْزِ الْبُرِّ حَتَّى فَارَقَ الدُّنْيَا.

2358 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) और आपकी बीवियां मुसलसल तीन दिन गंदुम (गेहूँ) की रोटी से सैर नहीं हुए यहाँ तक कि आप(ﷺ) ने दुनिया को छोड़ दी।

बुखारी:5374. मुस्लिम: 2976. इब्ने माजह:3343

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

2359 - حَدَّثَنَا عَبَّاسُ بْنُ مُحَمَّدٍ الدُّورِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي بُكَيْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَرِيزُ بْنُ عُثْمَانَ، عَنْ سُلَيْمِ بْنِ عَامِرٍ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا أُمَامَةَ، يَقُولُ: مَا كَانَ يَفْضُلُ عَنْ أَهْلِ بَيْتِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خُبْزُ الشَّعِيرِ.

2359 - सय्यदना अबू उमामा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के घर वालों (के खाने) से जौ की एक रोटी भी नहीं बचती थी।

सहीह: मुसनद अहमद:5/260. शमाइले तिर्मिज़ी: 144.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। यह्या बिन अबी बुकैर कूफा के रहने वाले थे। यह्या के वालिद अबू बुकैर से सुफ़ियान सौरी रिवायत करते हैं जब कि यह्या बिन अब्दुल्लाह बिन बुकैर मिस्र के रहने वाले लैस के शागिर्द थे।

2360 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُعَاوِيَةَ الجُمَحِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا ثَابِتُ بْنُ يَزِيدَ، عَنْ هِلاَلِ بْنِ خَبَّابٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَبِيتُ اللَّيَالِي الْمُتَتَابِعَةَ طَاوِيًا وَأَهْلُهُ لاَ يَجِدُونَ عَشَاءً وَكَانَ أَكْثَرَ خُبْزِهِمْ خُبْزَ الشَّعِيرِ.

2360 - सय्यदना इब्ने अब्बास (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) और आपका अहल लगातार कई रातें खाली पेट बसर करते थे रात का खाना मोयस्सर नहीं होता था और उनकी रोटी ज़्यादातर जौ की होती थी।

सहीह: इब्ने माजह: 3374. मुसनद अहमद: 1/255.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2361 - حَدَّثَنَا أَبُو عَمَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ القَعْقَاعِ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: اللَّهُمَّ اجْعَلْ رِزْقَ آلِ مُحَمَّدٍ قُوتًا.

2361 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दुआ की, "ऐ अल्लाह! आले मुहम्मद का रिज़्क ज़रुरत के मुताबिक़ कर दे।"

बुखारी:6460. मुस्लिम: 1055. इब्ने माजह:4139

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2362 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لاَ يَدَّخِرُ شَيْئًا لِغَدٍ.

2362 - . सय्यदना अनस (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) अगले दिन के लिए कोई चीज़ जमा करके नहीं रखते थे।

सहीह: इब्ने हिब्बान:6356. अल-कामिल:2/572

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है और जाफ़र बिन सुलैमान के अलावा बाकियों ने इसी हदीस को बवास्ता साबित, नबी (ﷺ) से मुर्सल रिवायत किया है।

2363 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا أَبُو مَعْمَرٍ عَبْدُ اللهِ بْنُ عَمْرٍو، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الوَارِثِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي عَرُوبَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: مَا أَكَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى خِوَانٍ وَلاَ أَكَلَ خُبْزًا مُرَقَّقًا حَتَّى مَاتَ.

2363 - सय्यदना अनस (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने वफ़ात तक दस्तरख़्वान के ऊपर खाना नहीं खाया और न ही बारीक रोटी (चपाती) खाई।

बुखारी: 5386. इब्ने माजह:3292.

वज़ाहत: सईद बिन अबी अरूबा के तरीक़ से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

2364 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْمَجِيدِ الحَنَفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا أَبُو حَازِمٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ، أَنَّهُ قِيلَ لَهُ: أَكَلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ النَّقِيَّ؟ يَعْنِي الحُوَّارَى، فَقَالَ سَهْلٌ: مَا رَأَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ النَّقِيَّ حَتَّى لَقِيَ اللَّهَ، فَقِيلَ لَهُ: هَلْ كَانَتْ لَكُمْ مَنَاخِلُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ: مَا كَانَتْ لَنَا مَنَاخِلُ، قِيلَ: فَكَيْفَ كُنْتُمْ تَصْنَعُونَ بِالشَّعِيرِ؟ قَالَ: كُنَّا نَنْفُخُهُ فَيَطِيرُ مِنْهُ مَا طَارَ، ثُمَّ نُثَرِّيهِ فَنَعْجِنُهُ.

2364 - अबू हाज़िम बयान करते हैं कि सय्यदना सहल बिन साद (ﷺ) से पूछा गया कि क्या रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (نقی) यानी मैदा खाया था? तो सहल (ﷺ) ने कहा: रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मैदा देखा भी नहीं यहाँ तक कि अल्लाह से जा मिले। फिर उनसे पूछ गया: क्या रसूलुल्लाह (ﷺ) के दौर में तुम लोगों के पास छलनियाँ[1] होती थी? उन्होंने फ़रमाया: हमारे पास छलनियाँ नहीं थीं, कहा गया: फिर तुम लोग जौ के आटे का किया करते थे? उन्होंने कहा : हम उसे फूँक मारते जो उड़ना होता उड़ जाता फिर हम उसमें पानी डाल कर उसे गूंध लेते थे।

बुखारी:5414. इब्ने माजह: 3335.

तौज़ीह: مناخل : منخل की जमा है। छलनी, छानने का आला। (अल-मोजमुल वसीत:पृ. 1104)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह है और मालिक बिन अनस ने भी इसे अबू हाज़िम से रिवायत किया है।

39 بَابُ مَا جَاءَ فِي مَعِيشَةِ أَصْحَابِ النَّبِيِّ (ﷺ)

39 - नबी (ﷺ) के सहाबा की गुजर बसर

2365 - حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ بْنِ مُجَالِدِ بْنِ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ بَيَانٍ، عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ، قَالَ: سَمِعْتُ سَعْدَ بْنَ أَبِي وَقَّاص، يَقُولُ: إِنِّي لأَوَّلُ رَجُلٍ أَهْرَاقَ دَمًا

2365 - सय्यदना साद बिन अबी वक़्क़ास (ﷺ) फ़रमाते हैं: मैं पहला शख़्स हूँ जिसने अल्लाह के रास्ते में खून बहाया, मैं पहला शख़्स हूँ जिसने अल्लाह के रास्ते में तीर चलाया और मैंने अपने आप को देखा मैं

فِي سَبِيلِ اللهِ، وَإِنِّي لأَوَّلُ رَجُلٍ رَمَى بِسَهْمٍ فِي سَبِيلِ اللهِ، وَلَقَدْ رَأَيْتُنِي أَغْزُو فِي العِصَابَةِ مِنْ أَصْحَابِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا نَأْكُلُ إِلاَّ وَرَقَ الشَّجَرِ وَالحُبْلَةِ، حَتَّى إِنَّ أَحَدَنَا لَيَضَعُ كَمَا تَضَعُ الشَّاةُ أَوِ البَعِيرُ، وَأَصْبَحَتْ بَنُو أَسَدٍ يُعَزِّرُونِي فِي الدِّينِ، لَقَدْ خِبْتُ إِذًا وَضَلَّ عَمَلِي.

मुहम्मद (ﷺ) के सहाबा की एक जमाअत के साथ मिलकर जिहाद कर रहा था हम दरख़्तों के पत्ते हुब्ला[1] खाते थे यहाँ तक कि हम में से कोई आदमी ऐसे मेंग्रियाँ करता था जैसे बकरी और ऊँट मेंग्रियाँ करते हैं और अब यह मामला है कि बनू असद मुझे दीन में मलामत करने लगे हैं। (अगर यह बात है कि उनको मुझे दीन समझाना है फिर तो) यक़ीनन मैं नाक़ाम हो गया और मेरे आमाल ज़ाया हो गए।

बुखारी: 3728, मुस्लिम: 2966,इब्ने माजह:131

तौज़ीह: الحبله : लोबिये वगैरह जैसी सब्ज़ी। (अल-कामूसुल वहीद:पृ. 308)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: बयान की सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

2366 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي خَالِدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا قَيْسٌ، قَالَ: سَمِعْتُ سَعْدَ بْنَ مَالِكٍ، يَقُولُ: إِنِّي أَوَّلُ رَجُلٍ مِنَ العَرَبِ رَمَى بِسَهْمٍ فِي سَبِيلِ اللهِ، وَلَقَدْ رَأَيْتُنَا نَغْزُو مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَا لَنَا طَعَامٌ إِلاَّ الحُبْلَةَ وَهَذَا السَّمُرَ، حَتَّى إِنَّ أَحَدَنَا لَيَضَعُ كَمَا تَضَعُ الشَّاةُ، ثُمَّ أَصْبَحَتْ بَنُو أَسَدٍ يُعَزِّرُونِي فِي الدِّينِ، لَقَدْ خِبْتُ إِذًا وَضَلَّ عَمَلِي.

2366 - कैस (ﷺ) बयान करते हैं कि मैंने साद बिन मालिक (ﷺ) से सुना वह फ़रमा रहे थे: मैं अरब में से पहला शख़्स हूँ जिसने अल्लाह के रास्ते में तीर चलाया और मैंने देखा हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ मिलकर जिहाद कर रहे थे हमारा खाना हुब्ला और केकर के पत्ते थे यहाँ तक कि हम में से कोई आदमी उसी तरह मेंगनी करता जैसे बकरी मेंगनी करती है। अब बनू असद मुझे दीन के बारे में मलामत करने लगे हैं फिर तो मैं यक़ीनन नाकाम हो गया और मेरे आमाल ज़ाया हो गए।

सहीह: तख़रीज के लिए पिछली हदीस देखें। तोहफतुल अशराफ़:3913

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और इस बारे में उत्बा बिन गज़्वान (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

2367 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، قَالَ: كُنَّا عِنْدَ أَبِي هُرَيْرَةَ، وَعَلَيْهِ ثَوْبَانِ مُمَشَّقَانِ مِنْ كَتَّانٍ فَتَمَخَّطَ فِي أَحَدِهِمَا ثُمَّ قَالَ: بَخٍ بَخٍ يَتَمَخَّطُ أَبُو هُرَيْرَةَ فِي الكَتَّانِ، لَقَدْ رَأَيْتُنِي وَإِنِّي لأَخِرُّ فِيمَا بَيْنَ مِنْبَرِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَحُجْرَةِ عَائِشَةَ مِنَ الجُوعِ مَغْشِيًّا عَلَيَّ، فَيَجِيءُ الجَائِي فَيَضَعُ رِجْلَهُ عَلَى عُنُقِي يَرَى أَنَّ بِيَ الجُنُونَ، وَمَا بِي جُنُونٌ وَمَا هُوَ إِلاَّ الجُوعُ.

2367 - मुहम्मद बिन सीरीन (رحمه الله) बयान करते हैं कि हम अबू हुरैरा (رضي الله عنه) के पास थे उन पर कत्तान[1] के रंगे हुए दो कपड़े थे उन्होंने एक कपड़े में अपनी नाक साफ़ की फिर कहने लगे: बहुत खूब अबू हुरैरा कत्तान में नाक साफ़ करता है। यक़ीनन मैंने अपने आप को (ऐसी हालत में भी) देखा कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के मिम्बर और आयशा (رضي الله عنها) के हुज्रा के दर्मियान भूक की वजह से गश खा कर गिरा हुआ था, आने वाला आता अपना पाँव मेरी गर्दन पर रखता उसका ख्याल होता था कि मैं मजनून हूँ हालांकि मुझे जुनून (पागलपन) नहीं होता था वह तो सिर्फ भूक होती थी।

बुखारी:7324, शमाइले तिर्मिज़ी:71

तौज़ीह: كتان : एक ज़रई पौधा है जो मोतदिल गरमाई इलाक़ों में होता है। इसकी ऊंचाई निस्फ़ मीटर से ज़ायद और इसका फूल नीले रंग का होता है और इसका फल गोल होता है जिसे بزر الكتان कहा जाता है इस से तेल भी निकाला जाता है और इस के रेशों से मारूफ धागा (सिल्क) तैयार होता है। (अल-मोजमुल वसीत:पृ. 938)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।

2368 - حَدَّثَنَا العَبَّاسُ الدُّورِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَيْوَةُ بْنُ شُرَيْحٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو هَانِئٍ الخَوْلاَنِيُّ، أَنَّ أَبَا عَلِيٍّ عَمْرَو بْنَ مَالِكٍ الجَنْبِيَّ، أَخْبَرَهُ عَنْ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا صَلَّى بِالنَّاسِ يَخِرُّ رِجَالٌ مِنْ قَامَتِهِمْ فِي الصَّلاَةِ مِنَ الخَصَاصَةِ وَهُمْ أَصْحَابُ الصُّفَّةِ

2368 - सय्यदना फ़ज़ाला बिन उबैद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब लोगों को नमाज़ पढ़ाते तो कुछ लोग भूक की वजह से खड़े खड़े गिर जाते। यह सुफ्फा वाले लोग थे यहाँ तक कि देहाती यह कहने लगे यह लोग दीवाने हैं। जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नमाज़ मुकम्मल की तो उनकी तरफ़ मुतवजह हो कर फ़रमाया: "अगर तुम जान लो कि अल्लाह के पास तुम्हारे लिए क्या

حَتَّى تَقُولَ الأَعْرَابُ هَؤُلاَءِ مَجَانِينُ أَوْ مَجَانُونَ، فَإِذَا صَلَّى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ انْصَرَفَ إِلَيْهِمْ، فَقَالَ: لَوْ تَعْلَمُونَ مَا لَكُمْ عِنْدَ اللهِ لأَحْبَبْتُمْ أَنْ تَزْدَادُوا فَاقَةً وَحَاجَةً قَالَ فَضَالَةُ: وَأَنَا يَوْمَئِذٍ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ

कुछ है तो तुम यह चाहो कि तुम्हारा फ़ाका और हाजत और बढ़ जाए। फ़ज़ाला कहते हैं: उस दिन मैं भी रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ था।

सहीह: मुसनद अहमद: 6/ 18. इब्ने हिब्बान: 724. हिल्या:2/ 17.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2369 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شَيْبَانُ أَبُو مُعَاوِيَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ عُمَيْرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: خَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَاعَةٍ لاَ يَخْرُجُ فِيهَا وَلاَ يَلْقَاهُ فِيهَا أَحَدٌ، فَأَتَاهُ أَبُو بَكْرٍ، فَقَالَ: مَا جَاءَ بِكَ يَا أَبَا بَكْرٍ؟ فَقَالَ: خَرَجْتُ أَلْقَى رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنْظُرُ فِي وَجْهِهِ وَالتَّسْلِيمَ عَلَيْهِ، فَلَمْ يَلْبَثْ أَنْ جَاءَ عُمَرُ، فَقَالَ: مَا جَاءَ بِكَ يَا عُمَرُ؟ قَالَ: الجُوعُ يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَأَنَا قَدْ وَجَدْتُ بَعْضَ ذَلِكَ، فَانْطَلَقُوا إِلَى مَنْزِلِ أَبِي الهَيْثَمِ بْنِ التَّيِّهَانِ الأَنْصَارِيِّ وَكَانَ رَجُلاً كَثِيرَ النَّخْلِ وَالشَّاءِ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ خَدَمٌ

2369 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी अकरम (ﷺ) ऐसी घड़ी में बाहर निकले जिसमें उमूमन निकला नहीं करते थे और न ही उस घड़ी में आप(ﷺ) से कोई मुलाक़ात करता था, फिर अबू बक्र आप(ﷺ) के पास आए तो आप ने फ़रमाया: "ऐ अबू बक्र तुम्हें कौन सी चीज़ लाई है?" उन्होंने कहा: मैं इसलिए निकला कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से मिलूँ, आप(ﷺ) के चेहरे को देखूं और आपको सलाम कहूं, थोड़ा वक़्त गुज़रा था कि उमर (رضي الله عنه) भी आ गए। आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "उमर तुम्हें कौन सी चीज़ लेकर आई है?" उन्होंने कहा :ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! भूक। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: " मुझे भी कुछ महसूस हो रही है।" फिर यह सब अबू हैसम बिन तैहान अंसारी के घर की तरफ़ चले गए। यह बहुत खुजूरों और बकरियों वाले थे लेकिन उनका ख़ादिम कोई नहीं था। यह घर पर न मिले तो उन्होंने उनकी बीवी से पूछा: तुम्हारा शौहर कहाँ है? कहने लगीं: वह हमारे

لَمْ يَجِدُوهُ، فَقَالُوا لِامْرَأَتِهِ: أَيْنَ صَاحِبُكِ؟ فَقَالَتْ: انْطَلَقَ يَسْتَعْذِبُ لَنَا الْمَاءَ، فَلَمْ يَلْبَثُوا أَنْ جَاءَ أَبُو الْهَيْثَمِ بِقِرْبَةٍ يَزْعَبُهَا فَوَضَعَهَا ثُمَّ جَاءَ يَلْتَزِمُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَيُفَدِّيهِ بِأَبِيهِ وَأُمِّهِ، ثُمَّ انْطَلَقَ بِهِمْ إِلَى حَدِيقَتِهِ فَبَسَطَ لَهُمْ بِسَاطًا، ثُمَّ انْطَلَقَ إِلَى نَخْلَةٍ فَجَاءَ بِقِنْوٍ فَوَضَعَهُ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَفَلاَ تَنَقَّيْتَ لَنَا مِنْ رُطَبِهِ؟ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي أَرَدْتُ أَنْ تَخْتَارُوا، أَوْ قَالَ: تَخَيَّرُوا مِنْ رُطَبِهِ وَبُسْرِهِ، فَأَكَلُوا وَشَرِبُوا مِنْ ذَلِكَ الْمَاءِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: هَذَا وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ مِنَ النَّعِيمِ الَّذِي تُسْأَلُونَ عَنْهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، ظِلٌّ بَارِدٌ، وَرُطَبٌ طَيِّبٌ، وَمَاءٌ بَارِدٌ، فَانْطَلَقَ أَبُو الْهَيْثَمِ لِيَصْنَعَ لَهُمْ طَعَامًا، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ تَذْبَحَنَّ ذَاتَ دَرٍّ، قَالَ: فَذَبَحَ لَهُمْ عَنَاقًا أَوْ جَدْيًا فَأَتَاهُمْ بِهَا فَأَكَلُوا، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: هَلْ لَكَ خَادِمٌ؟ قَالَ: لاَ، قَالَ: فَإِذَا أَتَانَا سَبْيٌ فَأْتِنَا فَأُتِيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِرَأْسَيْنِ لَيْسَ مَعَهُمَا ثَالِثٌ فَأَتَاهُ أَبُو الْهَيْثَمِ،

लिए मीठा पानी लेने गए हैं। थोड़ी ही देर गुजरी थी कि अबू हैसम मीठे पानी की मश्क ले कर आ गए। उसे रखा और नबी (ﷺ) के साथ चिमट कर अपने मां बाप को आप(ﷺ) पर वारने लगे, फिर उन्हें लेकर अपने बाग़ में चले गए। उनके लिए एक चटाई बिछाई। फिर ख़ुद एक खुजूर के दरख़्त की तरफ़ गए और एक गुच्छा ला कर रख दिया। नबी (ﷺ) ने फ़रमाया: "तुम हमारे लिए रोतब[1] खुजूरें चुनकर क्यों नहीं लाये?" उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! मैंने चाहा कि आप ख़ुद ही पसंद फ़रमा लें या यह कहा कि पकी और नीम पुख़्ता खुजूरें ख़ुद ही पसंद कर लें। (नबी (ﷺ) और अबू बक्र व उमर (رضي الله عنهما) ने खुजूरें) खाई और पानी पिया। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! यह उन नेअ्मतों में से हैं जिन के बारे में क़यामत के दिन तुम से सवाल किया जाएगा, ठंडा साया, पाकीज़ा व उम्दा खुजूरे और ठंडा पानी।" फिर अबू हैसम आप लोगों के लिए खाना बनाने के लिए चले तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया: "दूध वाली बकरी ज़बह न करना।" रावी कहते हैं: उन्होंने आप के लिए बकरी का बच्चा नर या मादा ज़बह किया और उसे लेकर आप(ﷺ) के पास आए तो आप लोगों ने खाया। फिर नबी (ﷺ) ने फ़रमाया: "क्या तुम्हारे पास कोई खादिम

فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اخْتَرْ مِنْهُمَا، فَقَالَ: يَا نَبِيَّ اللهِ اخْتَرْ لِي، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ الْمُسْتَشَارَ مُؤْتَمَنٌ، خُذْ هَذَا فَإِنِّي رَأَيْتُهُ يُصَلِّي وَاسْتَوْصِ بِهِ مَعْرُوفًا، فَانْطَلَقَ أَبُو الْهَيْثَمِ إِلَى امْرَأَتِهِ فَأَخْبَرَهَا بِقَوْلِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَتْ امْرَأَتُهُ: مَا أَنْتَ بِبَالِغٍ مَا قَالَ فِيهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلاَّ أَنْ تَعْتِقَهُ، قَالَ: فَهُوَ عَتِيقٌ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ اللَّهَ لَمْ يَبْعَثْ نَبِيًّا وَلاَ خَلِيفَةً إِلاَّ وَلَهُ بِطَانَتَانِ بِطَانَةٌ تَأْمُرُهُ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَاهُ عَنِ الْمُنْكَرِ، وَبِطَانَةٌ لاَ تَأْلُوهُ خَبَالاً، وَمَنْ يُوقَ بِطَانَةَ السُّوءِ فَقَدْ وُقِيَ.

है?" उन्होंने अर्ज़ किया: ''नहीं'' आप ने फ़रमाया: "जब हमारे पास कैदी आयें तो तुम हमारे पास आना।" फिर नबी (ﷺ) के पास दो कैदी आए उनके साथ कोई तीसरा नहीं था तो अबू हैसम आप के पास हाज़िर हुए, नबी (ﷺ) ने फ़रमाया: "इन दोनों में से पसंद कर लो।" उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आप ही मेरे लिए पसंद फ़रमाइए। नबी (ﷺ) ने फ़रमाया: "जिससे मश्वरा लिया जाए वह अमीन है इसे ले लो। मैंने उसे नमाज़ पढ़ते हुए देखा था और उससे अच्छा सुलूक करना।" अबू हैसम उसे लेकर अपनी बीवी के पास गए (और) उसे रसूलुल्लाह (ﷺ) के फ़रमान के बारे में बताया तो वह कहने लगी: इस के बारे में जो नबी (ﷺ) ने तुम्हें हुक्म दिया है तुम इसे आज़ाद करके ही उस बात को पहुँच सकते हो। उन्होंने कहा: यह आज़ाद है। तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला ने कोई नबी और ख़लीफ़ा नहीं भेजा मगर उसके दो साथी होते हैं एक साथी[1] नेकी का हुक्म देता है और बुराई से रोकता है जबकि दूसरा साथी कोई परवाह नहीं करता और जो बुरे साथी से बचा लिया गया यक़ीनन वह जहन्नम या गुनाह से बचा लिया गया।"

सहीह: इमाम मुस्लिम ने इसी मफ़हूम की मुख़्तसर रिवायत की है। मुस्लिम:2038. निसाई:4201

तौज़ीह: رطب : ताज़ा नर्म और पुख़्ता खजूरें, कहा जाता है البسر أرطب : नीम पुख़्ता खुजूर पक गई इसमें पुख़्तगी शुरू हो गई। (अल-मोजमुल वसीत:पृ. 415) : بطانة रफ़ीक़, साथी हमराज़ वग़ैरह.

2370 - अबू ईसा कहते हैं हमें सालेह बिन अब्दुल्लाह ने वह कहते हैं हमें अब्दुल्लाह बिन अवाना ने अब्दुल मलिक बिन उमैर से उन्होंने अबू मस्लमा बिन अब्दुर्रहमान से बयान किया है कि एक रोज़ रसूलुल्लाह (ﷺ) और अबू बक्र व उमर (رضي الله عنه) निकले फिर इसी मफ़हूम की हदीस बयान की लेकिन इसमें अबू हुरैरा (رضي الله عنه) का ज़िक्र नहीं है।

सहीह।

2370 - حَدَّثَنَا صَالِحُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَرَجَ يَوْمًا وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ، فَذَكَرَ نَحْوَ هَذَا الحَدِيثِ وَلَمْ يَذْكُرْ فِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَحَدِيثُ شَيْبَانَ أَتَمُّ مِنْ حَدِيثِ أَبِي عَوَانَةَ وَأَطْوَلُ وَشَيْبَانُ ثِقَةٌ عِنْدَهُمْ صَاحِبُ كِتَابٍ وَقَدْ رُوِيَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ هَذَا الحَدِيثُ مِنْ غَيْرِ هَذَا الوَجْهِ وَرُوِيَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَيْضًا.

वज़ाहत: शैबान की रिवायत अबू उयय्ना की रिवायत से लम्बी और मुकम्मल है और मुहद्दिसीन के नज़दीक शैबान सिक़ह् और साहिबे किताब हैं। जबकि यह हदीस एक और सनद से भी अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से मर्वी है नीज़ इस बारे में इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

2371 - सय्यदना अबू तल्हा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि हम ने नबी (ﷺ) से भूक का शिक्वा किया और अपने पेटों से कपड़ा उठा कर एक- एक पत्थर दिखाया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दो पत्थरों से (कपड़ा) उठाया।"

ज़ईफ़: शमाइले तिर्मिज़ी: 371

2371 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي زِيَادٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَيَّارُ بْنُ حَاتِمٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي مَنْصُورٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ أَبِي طَلْحَةَ، قَالَ: شَكَوْنَا إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الجُوعَ وَرَفَعْنَا عَنْ بُطُونِنَا عَنْ حَجَرٍ حَجَرٍ فَرَفَعَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ حَجَرَيْنِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे इसी सनद से ही जानते हैं।

2372 - सिमाक बिन हर्ब (رحمه الله) बयान करते हैं कि मैंने नौमान बिन बशीर (رضي الله عنه) को फ़रमाते हुए सुना क्या तुम ऐसे खाने और पीने में नहीं हो जो तुम चाहते हो? मैंने तुम्हारे

2372 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، قَالَ: سَمِعْتُ النُّعْمَانَ بْنَ بَشِيرٍ، يَقُولُ: أَلَسْتُمْ فِي طَعَامٍ

وَشَرَابٍ مَا شِئْتُمْ؟ لَقَدْ رَأَيْتُ نَبِيَّكُمْ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَا يَجِدُ مِنَ الدَّقَلِ مَا يَمْلَأُ بِهِ بَطْنَهُ.

नबी (ﷺ) को देखा आप को रद्दी खुजूर भी नहीं मिलती थी जिससे आप अपना पेट भर लें।

सहीह: मुस्लिम: 2977.मुसनद अहमद:4/268. अज-ज़ुहद ले-हन्नाद:727

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। हमें अबू उयय्ना और दीगर लोगों ने भी सिमाक बिन हर्ब से। अबू अहवस की रिवायत जैसी ही हदीस बयान की है। जबकि शोबा ने इस हदीस को सिमाक से बवास्ता नौमान बिन बशीर (ﷺ) उमर (ﷺ) से रिवायत किया है।

40 بَابُ مَا جَاءَ أَنَّ الغِنَى غِنَى النَّفْسِ

40 - मालदारी दिल का गनी होना है

2373 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ بُدَيْلِ بْنِ قُرَيْشٍ اليَامِيُّ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ عَيَّاشٍ، عَنْ أَبِي حَصِينٍ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَيْسَ الغِنَى عَنْ كَثْرَةِ العَرَضِ وَلَكِنَّ الغِنَى غِنَى النَّفْسِ.

2373 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "मालदारी ज़्यादा साजो सामान से नहीं बल्कि मालदारी दिल का गनी (सखी) होना है।"

बुखारी:6446. मुस्लिम:1051.इब्ने माजह:4137

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और अबू हुसैन का नाम उस्मान बिन आसिम असदी है।

41 بَابُ مَا جَاءَ فِي أَخْذِ المَالِ

41 - अपने हक़ के मुताबिक़ माल लेना

2374 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي الوَلِيدِ، قَالَ: سَمِعْتُ خَوْلَةَ بِنْتَ قَيْسٍ، وَكَانَتْ تَحْتَ حَمْزَةَ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ تَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: إِنَّ هَذَا الْمَالَ خَضِرَةٌ حُلْوَةٌ،

2374 - सय्यदा खौला बिन्ते कैस (ﷺ) जो सय्यदना हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब (ﷺ) की बीवी थीं बयान करती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "यह माल सरसब्ज़ और मीठा है जो इसे अपने हक़ के साथ ले उसके लिए इसमें

बरकत होती है और कुछ लोग अल्लाह और उसके रसूल के माल में अपनी मर्ज़ी से दख़ल[1] देने वाले हैं। क़यामत के दिन उनके लिए आग ही होगी।"

مَنْ أَصَابَهُ بِحَقِّهِ بُورِكَ لَهُ فِيهِ، وَرُبَّ مُتَخَوِّضٍ فِيمَا شَاءَتْ بِهِ نَفْسُهُ مِنْ مَالِ اللهِ وَرَسُولِهِ لَيْسَ لَهُ يَوْمَ القِيَامَةِ إِلاَّ النَّارُ.

सहीह: अब्दुर्रज्ज़ाक़: 6962. मुसनद अहमद:6/364. इब्ने हिब्बान:4512.

तौज़ीह: مُتَخَوِّض: घुसने वाला यानी जो शख़्स नाहक़ माल हासिल करता है या बैतूल माल के माल और अवामी माल में अपनी मर्ज़ी से तसर्रुफ़ (इन्टरफेयर/ हस्तक्षेप) करता है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और अबुल वलीद का नाम उबैद बिन सनूता है।

42 - दीनार व दिरहम का ग़ुलाम

42-بَابٌ فيما جاء في عَبْدُ الدِّينَارِ. عَبْدُ الدِّرْهَمِ))

2375 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "दीनार के बन्दे पर लानत की गई है, दिरहम के बन्दे पर लानत की गई है।"

ज़ईफ़।

2375 - حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ هِلاَلٍ الصَّوَّافُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الوَارِثِ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ الحَسَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لُعِنَ عَبْدُ الدِّينَارِ، وَلُعِنَ عَبْدُ الدِّرْهَمِ..

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है। और यह हदीस दूसरी सनद से भी बवास्ता अबू हुरैरा(رضي الله عنه) नबी करीम(ﷺ) से मर्वी है जो कि इस से लम्बी और मुकम्मल है।

43 - वह हदीस जिस में दो भूके भेड़ियों को बकरियों में छोड़ने का ज़िक्र है

43-بَابٌ ((مَا ذِئْبَانِ جَائِعَانِ أُرْسِلاَ فِي غَنَمٍ))

2376 - सय्यदना काब बिन मालिक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "अगर दो भूके भेड़िये बकरियों (के रेवड़) में छोड़ दिए जाएँ वह इतना फ़साद(नुक़सान) नहीं करेंगे जितना माल

2376 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ زَكَرِيَّا بْنِ أَبِي زَائِدَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَعْدِ بْنِ زُرَارَةَ،

عَنِ ابْنِ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ الأَنْصَارِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا ذِئْبَانِ جَائِعَانِ أُرْسِلاَ فِي غَنَمٍ بِأَفْسَدَ لَهَا مِنْ حِرْصِ الْمَرْءِ عَلَى الْمَالِ وَالشَّرَفِ لِدِينِهِ.

और जाह व हशमत का लालच आदमी के दीन को खराब करता है।"

सहीह: अज-ज़ुहद ले-इब्ने मुबारक: 181. दारमी: 2733. मुसनद अहमद:3/456.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और इस बारे में उमर (رضي الله عنه) भी नबी (ﷺ) से रिवायत करते हैं लेकिन इसकी सनद सहीह नहीं है।

44 - بَابٌ حديث ((ما الدُّنْيَا إِلاَّ كَرَاكِبٍ اسْتَظَلَّ))

44 - दुनिया साए में बैठने वाले मुसाफिर की तरह है

2377 - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الكِنْدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ حُبَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي الْمَسْعُودِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ مُرَّةَ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: نَامَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى حَصِيرٍ فَقَامَ وَقَدْ أَثَّرَ فِي جَنْبِهِ، فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللهِ لَوِ اتَّخَذْنَا لَكَ وِطَاءً، فَقَالَ: مَا لِي وَلِلدُّنْيَا، مَا أَنَا فِي الدُّنْيَا إِلاَّ كَرَاكِبٍ اسْتَظَلَّ تَحْتَ شَجَرَةٍ ثُمَّ رَاحَ وَتَرَكَهَا.

2377 - सय्यदना अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक चटाई पर सोए, फिर खड़े हुए तो उस चटाई ने आप(ﷺ) के पहलू में निशान छोड़ दिए थे हम ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! हम आप के लिए कोई बिछौना[1] बना दें? आप (ﷺ) ने फ़रमाया: "मुझे दुनिया से क्या गरज़! मैं तो दुनिया में उस मुसाफिर की तरह हूँ जो एक दरख़्त के नीचे साए में ठहरा फिर आराम कर के उसे छोड़ दिया।"

सहीह: इब्ने माजह: 4109. तयालिसी: 277. मुसनद अहमद: 1/391

तौज़ीह: وِطَاء : नरम और आराम देह बिस्तर। कहा जाता है: وطاء الفراش : उस ने बिस्तर को हमवार नरम और आराम देह बनाया। (अल-मोजमुल वसीत:पृ. 1265)

वज़ाहत: इस बारे में इब्ने उमर और इब्ने अब्बास (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

45 - आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है

45 - بَابٌ حديث ((الرَّجُلُ عَلَى دِينِ خَلِيلِهِ))

2378 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है तुम में से हर आदमी को चाहिए कि वह देखे किस से दोस्ती कर रहा है।"(1)

हसन: अबू दाऊद:4833. मुसनद अहमद:3/303. अब्द बिन हुमैद: 1431.

2378 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ، وَأَبُو دَاوُدَ، قَالاَ: حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي مُوسَى بْنُ وَرْدَانَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الرَّجُلُ عَلَى دِينِ خَلِيلِهِ، فَلْيَنْظُرْ أَحَدُكُمْ مَنْ يُخَالِلُ.

तौज़ीह: यानी अगर आप किसी बे नमाज़ी और दीन के अहकामात से तहीदामन (बेज़ार) शख़्स से दोस्ती करेंगे तो वह आपको भी अपने जैसा ही बना लेगा जबकि किसी मुत्तकी आदमी और दाई इलल्लाह से दोस्ती करने की वजह से आप पर भी उसका रंग चढ़ जाएगा।

वज़हात: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

46 - आदमी के अहलो अयाल, माल और आमाल की मिसाल

46 بَابُ مَا جَاءَ مَثَلُ ابْنِ آدَمَ وَأَهْلِهِ وَوَلَدِهِ وَمَالِهِ وَعَمَلِهِ

2379 - सय्यदना अनस बिन मालिक (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "मय्यत के पीछे क़ब्र तक तीन चीजें जाती हैं फिर दो वापस आ जाती हैं और एक उसके साथ क़ब्र में बाकी रह जाती है। उसके पीछे क़ब्र तक उसका अहल, माल और आमाल जाते हैं फिर उसका अहल और माल वापस आ जाते हैं और उसके आमाल बाकी रह जाते हैं।"

बुखारी:6514. मुस्लिम: 2960. निसाई: 1937.

2379 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ سُفْيَانَ بْنِ عُيَيْنَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ هُوَ ابْنُ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ حَزْمٍ الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَتْبَعُ الْمَيِّتَ ثَلاَثٌ، فَيَرْجِعُ اثْنَانِ وَيَبْقَى وَاحِدٌ، يَتْبَعُهُ أَهْلُهُ وَمَالُهُ وَعَمَلُهُ، فَيَرْجِعُ أَهْلُهُ وَمَالُهُ وَيَبْقَى عَمَلُهُ.

वज़ाहत: इस बारे में इब्ने उमर और इब्ने अब्बास (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

47 بَابُ مَا جَاءَ فِي كَرَاهِيَةِ كَثْرَةِ الأَكْلِ

47 - ज़्यादा खाना नापसंदीदा काम है

2380 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَيَّاشٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ الحِمْصِيُّ، وَحَبِيبُ بْنُ صَالِحٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ جَابِرٍ الطَّائِيِّ، عَنْ مِقْدَامِ بْنِ مَعْدِي كَرِبَ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: مَا مَلأَ آدَمِيٌّ وِعَاءً شَرًّا مِنْ بَطْنٍ. بِحَسْبِ ابْنِ آدَمَ أُكُلاَتٌ يُقِمْنَ صُلْبَهُ، فَإِنْ كَانَ لاَ مَحَالَةَ فَثُلُثٌ لِطَعَامِهِ وَثُلُثٌ لِشَرَابِهِ وَثُلُثٌ لِنَفَسِهِ. حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَرَفَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَيَّاشٍ، نَحْوَهُ، وَقَالَ الْمِقْدَامُ بْنُ مَعْدِي كَرِبَ: عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَلَمْ يَذْكُرْ فِيهِ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

2380 - सय्यदना मिक्दाम बिन मअ़दीकरिब (ﷺ) रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "किसी आदमी ने पेट से बढ़कर बुरा बर्तन नहीं भरा, आदमी को चन्द लुक्मे ही काफी हैं जो उसकी कमर को सीधा कर दें, अगर ज़्यादा खाना बहुत ही ज़रूरी हो तो तीसरा हिस्सा खाने के लिए, तीसरा हिस्सा पीने के लिए और तीसरा हिस्सा सांस के लिए रखे।"

सहीह: इब्ने माजह:3349. मुसनद अहमद: 4/ 132.

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं: हमें हसन बिन अरफ़ा ने इस्माईल बिन अयाश से ऐसी ही हदीस बयान की है। उन्होंने कहा है: सय्यदना मिक्दाम बिन मअ़दीकरिब (ﷺ) नबी (ﷺ) से रिवायत करते हैं (سمعت النبي) का ज़िक्र नहीं किया।

48 بَابُ مَا جَاءَ فِي الرِّيَاءِ وَالسُّمْعَةِ

48 - शोहरत और रिया कारी का बयान

2381 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ هِشَامٍ، عَنْ شَيْبَانَ، عَنْ فِرَاسٍ، عَنْ عَطِيَّةَ،

2381 - सय्यदना अबू सईद (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया:

عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ يُرَائِي يُرَائِي اللَّهُ بِهِ، وَمَنْ يُسَمِّعْ يُسَمِّعِ اللَّهُ بِهِ قَالَ: وَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ لاَ يَرْحَمِ النَّاسَ لاَ يَرْحَمْهُ اللَّهُ.

"जो शख़्स अपनी इबादत को दिखाना चाहे अल्लाह उसे दिखा देगा और जो सुनाना चाहे अल्लाह उसे सुना देगा।" और कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़रमाया: "जो शख़्स लोगों पर रहम नहीं करता अल्लाह उस पर रहम नहीं करता।"

सहीह: इब्ने माजह:4206.इब्ने अबी शैबा:13/526. मुसनद अहमद:3/40.

वज़ाहत: इस बारे में जुन्दुब और अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस ग़रीब हसन सहीह है।

2382 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا حَيْوَةُ بْنُ شُرَيْحٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي الوَلِيدُ بْنُ أَبِي الوَلِيدِ أَبُو عُثْمَانَ الْمَدَنِيُّ، أَنَّ عُقْبَةَ بْنَ مُسْلِمٍ، حَدَّثَهُ أَنَّ شُفَيًّا الأَصْبَحِيَّ، حَدَّثَهُ أَنَّهُ، دَخَلَ الْمَدِينَةَ، فَإِذَا هُوَ بِرَجُلٍ قَدْ اجْتَمَعَ عَلَيْهِ النَّاسُ، فَقَالَ: مَنْ هَذَا؟ فَقَالُوا: أَبُو هُرَيْرَةَ، فَدَنَوْتُ مِنْهُ حَتَّى قَعَدْتُ بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُوَ يُحَدِّثُ النَّاسَ، فَلَمَّا سَكَتَ وَخَلاَ قُلْتُ لَهُ: أَسْأَلُكَ بِحَقٍّ وَبِحَقٍّ لَمَا حَدَّثْتَنِي حَدِيثًا سَمِعْتَهُ مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَقَلْتَهُ وَعَلِمْتَهُ، فَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: أَفْعَلُ، لأُحَدِّثَنَّكَ حَدِيثًا حَدَّثَنِيهِ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

2382 - शुफय्या अस्बही (رحمه الله) बयान करते हैं कि मैं मदीना आया तो अचानक एक आदमी को देखा जिस के पास लोग जमा थे, मैंने कहा: यह कौन है? उन्होंने कहा: अबू हुरैरा (رضي الله عنه) हैं। फिर मैं भी उनके करीब हुआ यहाँ तक कि उनके सामने बैठ गया वह लोगों को हदीस बयान कर रहे थे, जब वह ख़ामोश हो कर अकेले रह गए तो मैंने उनसे कहा: मैं आपको हक़ ज़ात का वास्ता दे कर कहता हूँ कि आप मुझे वह हदीस सुनाइये जो आप ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी, समझी और सीखी हो। तो अबू हुरैरा (رضي الله عنه) ने कहा: मैं तुम्हें ज़रूर वह हदीस बयान करूँगा जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे बयान की थी मैंने उसे समझा और सीखा। फिर अबू हुरैरा (رضي الله عنه) ने एक लम्बी सिस्की[1] भरी और वह बेहोश हो गए थोड़ी देर बाद होश आया तो कहने लगे: मैं तुम्हें वह हदीस बयान करूंगा जो मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इस घर में बयान की थी हम दोनों के अलावा और कोई नहीं था। फिर

عَقَلْتُهُ وَعَلِمْتُهُ، ثُمَّ نَشَغَ أَبُو هُرَيْرَةَ نَشْغَةً فَمَكَثْنَا قَلِيلاً ثُمَّ أَفَاقَ، فَقَالَ: لَأُحَدِّثَنَّكَ حَدِيثًا حَدَّثَنِيهِ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي هَذَا الْبَيْتِ مَا مَعَنَا أَحَدٌ غَيْرِي وَغَيْرُهُ، ثُمَّ نَشَغَ أَبُو هُرَيْرَةَ نَشْغَةً شَدِيدَةً، ثُمَّ أَفَاقَ فَمَسَحَ وَجْهَهُ فَقَالَ: أَفْعَلُ، لَأُحَدِّثَنَّكَ حَدِيثًا حَدَّثَنِيهِ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَا وَهُوَ فِي هَذَا الْبَيْتِ مَا مَعَنَا أَحَدٌ غَيْرِي وَغَيْرُهُ، ثُمَّ نَشَغَ أَبُو هُرَيْرَةَ نَشْغَةً شَدِيدَةً، ثُمَّ مَالَ خَارًّا عَلَى وَجْهِهِ فَأَسْنَدْتُهُ عَلَيَّ طَوِيلاً، ثُمَّ أَفَاقَ فَقَالَ: حَدَّثَنِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَّ اللَّهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى إِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ يَنْزِلُ إِلَى الْعِبَادِ لِيَقْضِيَ بَيْنَهُمْ وَكُلُّ أُمَّةٍ جَاثِيَةٌ، فَأَوَّلُ مَنْ يَدْعُو بِهِ رَجُلٌ جَمَعَ الْقُرْآنَ، وَرَجُلٌ قُتِلَ فِي سَبِيلِ اللهِ، وَرَجُلٌ كَثِيرُ الْمَالِ، فَيَقُولُ اللَّهُ لِلْقَارِئِ: أَلَمْ أُعَلِّمْكَ مَا أَنْزَلْتُ عَلَى رَسُولِي؟ قَالَ: بَلَى يَا رَبِّ. قَالَ: فَمَاذَا عَمِلْتَ فِيمَا عُلِّمْتَ؟ قَالَ: كُنْتُ أَقُومُ بِهِ آنَاءَ اللَّيْلِ وَآنَاءَ النَّهَارِ، فَيَقُولُ اللَّهُ لَهُ: كَذَبْتَ، وَتَقُولُ لَهُ الْمَلَائِكَةُ: كَذَبْتَ، وَيَقُولُ اللَّهُ: بَلْ أَرَدْتَ أَنْ يُقَالَ: إِنَّ فُلَانًا

अबू हुरैरा ने लम्बी सांस भरी और बेहोश हो गए। फिर जब होश में आए तो अपने चेहरे को साफ़ कर के कहने लगे: मैं यह काम करता हूँ तुम्हें वह हदीस ज़रूर बताउंगा जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे बयान की थी। और फिर अपने चेहरे के बल गिरने लगे मैंने काफी देर तक उन्हें टेक दे रखी, फिर होश में आए तो कहने लगे मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बयान किया "जब क़यामत का दिन होगा तो अल्लाह तआला फ़ैसला करने के लिए उतरेंगे और हर उम्मत घुटनों के बल गिरी होगी फिर अल्लाह तआला सब से पहले उस शख़्स को बुलायेंगे जिसने कुरआन को अपने दिल में जमा किया होगा दूसरा वह जो अल्लाह के रास्ते में शहीद हुआ होगा और तीसरा वह जो मालदार होगा। फिर अल्लाह तआला कारी से कहेगा: क्या मैंने तुम्हें वह कुरआन नहीं सिखाया जो मैंने अपने रसूल पर नाजिल किया था? वह कहेगा: क्यों नहीं मेरे परवरदिगार। अल्लाह तआला फ़रमाएगा: तुमने अपने इल्म के मुताबिक़ क्या अमल किया? वह कहेगा: मैं उसके साथ दिन और रात के औकात में कयाम करता था। अल्लाह तआला फ़रमाएगा: तुमने झूठ बोला और फ़रिश्ते भी उससे कहेंगे: तुमने झूठ बोला और अल्लाह तआला उस से फ़रमाएगा: तूने तो यह चाहा कि कहा जाए फुलां शख़्स कारी है। और बिलाशुब्हा यह कह दिया गया।

उसके बाद मालदार को बुलाया जाएगा, अल्लाह तआला उस से फ़रमाएगा: क्या मैंने

قَارِئٌ فَقَدْ قِيلَ ذَاكَ، وَيُؤْتَى بِصَاحِبِ الْمَالِ فَيَقُولُ اللَّهُ لَهُ: أَلَمْ أُوَسِّعْ عَلَيْكَ حَتَّى لَمْ أَدَعْكَ تَحْتَاجُ إِلَى أَحَدٍ؟ قَالَ: بَلَى يَا رَبِّ، قَالَ: فَمَاذَا عَمِلْتَ فِيمَا آتَيْتُكَ؟ قَالَ: كُنْتُ أَصِلُ الرَّحِمَ وَأَتَصَدَّقُ، فَيَقُولُ اللَّهُ لَهُ: كَذَبْتَ، وَتَقُولُ لَهُ الْمَلائِكَةُ: كَذَبْتَ، وَيَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى: بَلْ أَرَدْتَ أَنْ يُقَالَ: فُلاَنٌ جَوَادٌ فَقَدْ قِيلَ ذَاكَ، وَيُؤْتَى بِالَّذِي قُتِلَ فِي سَبِيلِ اللهِ، فَيَقُولُ اللَّهُ لَهُ: فِي مَاذَا قُتِلْتَ؟ فَيَقُولُ: أُمِرْتُ بِالجِهَادِ فِي سَبِيلِكَ فَقَاتَلْتُ حَتَّى قُتِلْتُ، فَيَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى لَهُ: كَذَبْتَ، وَتَقُولُ لَهُ الْمَلائِكَةُ: كَذَبْتَ، وَيَقُولُ اللَّهُ: بَلْ أَرَدْتَ أَنْ يُقَالَ: فُلاَنٌ جَرِيءٌ , فَقَدْ قِيلَ ذَاكَ، ثُمَّ ضَرَبَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى رُكْبَتِي فَقَالَ: يَا أَبَا هُرَيْرَةَ، أُولَئِكَ الثَّلاَثَةُ أَوَّلُ خَلْقِ اللهِ تُسَعَّرُ بِهِمُ النَّارُ يَوْمَ القِيَامَةِ وَقَالَ الوَلِيدُ أَبُو عُثْمَانَ: فَأَخْبَرَنِي عُقْبَةُ بْنُ مُسْلِمٍ أَنَّ شُفَيًّا، هُوَ الَّذِي دَخَلَ عَلَى مُعَاوِيَةَ فَأَخْبَرَهُ بِهَذَا قَالَ أَبُو عُثْمَانَ: وَحَدَّثَنِي العَلاَءُ بْنُ أَبِي حَكِيمٍ، أَنَّهُ كَانَ سَيَّافًا لِمُعَاوِيَةَ فَدَخَلَ عَلَيْهِ رَجُلٌ، فَأَخْبَرَهُ بِهَذَا عَنْ

तुझे इतना ज़्यादा माल नहीं दिया था कि तुम किसी के मोहताज नहीं थे? वह कहेगा: क्यों नहीं, ऐ मेरे परवरदिगार! अल्लाह तआला फ़रमाएगा जो मैंने तुम्हें दिया उस में तूने क्या किया? वह कहेगा: मैं रिश्तेदारी को मिलाता और सदक़ा करता था। अल्लाह तआला उस से फ़रमाएंगे: तुमने झूठ कहा: फ़रिश्ते भी उस से कहेंगे: तुमने झूठ कहा। और अल्लाह तआला फ़रमाएगा: तुम्हारा इरादा तो यह था कि कहा जाए फुलां शख़्स सखी है चुनाँचे यह कह दिया गया।

और फिर उसके बाद उस शख़्स को लाया जाएगा जो अल्लाह के रास्ते में क़त्ल हुआ था, अल्लाह तआला उस से पूछेगा: तुम्हें किस लिए क़त्ल किया गया? वह कहेगा: तूने अपने रास्ते में जिहाद करने का हुक्म दिया तो मैंने लड़ाई की यहाँ तक कि मैं क़त्ल हो गया। अल्लाह तआला उस से फ़रमाएगा: तुमने झूठ बोला : फ़रिश्ते भी उस से कहेंगे: तुमने झूठ बोला है। और अल्लाह तआला उस से फ़रमाएगा: तुम्हारा इरादा तो यह था कि कहा जाए फुलां शख़्स बहादुर है तो यह कह दिया गया।

फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मेरे घुटने पर हाथ मारते हुए फ़रमाया, ऐ अबू हुरैरा! अल्लाह की मख़्लूक़ से पहले ये तीन आदमी हैं जिनसे क़यामत के दिन जहन्नम की आग को भड़काया जाएगा।"

أَبِي هُرَيْرَةَ، فَقَالَ مُعَاوِيَةُ: قَدْ فُعِلَ بِهَؤُلاَءِ هَذَا فَكَيْفَ بِمَنْ بَقِيَ مِنَ النَّاسِ؟ ثُمَّ بَكَى مُعَاوِيَةُ بُكَاءً شَدِيدًا حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهُ هَالِكٌ، وَقُلْنَا قَدْ جَاءَنَا هَذَا الرَّجُلُ بِشَرٍّ، ثُمَّ أَفَاقَ مُعَاوِيَةُ وَمَسَحَ عَنْ وَجْهِهِ، وَقَالَ: صَدَقَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ {مَنْ كَانَ يُرِيدُ الحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لاَ يُبْخَسُونَ أُولَئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الآخِرَةِ إِلاَّ النَّارُ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبَاطِلٌ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ}.

वलीद अबू उस्मान मदाइनी कहते हैं: मुझे उक़्बा बिन मस्लमा ने बताया कि शुफय्या वही शख़्स है जिसने जाकर मुआविया (ﷺ) को यह हदीस बताई थी। अबू उस्मान कहते हैं: मुझे अला बिन अबी हकीम ने बताया कि यह (शुफय्या) मुआविया का सय्याफ़ (जल्लाद) था। फिर उनके पास एक आदमी आया उसने अबू हुरैरा (ﷺ) की तरफ़ यह हदीस सुनाई तो मुआविया (ﷺ) ने कहा: उन लोगों के साथ यह किया जाएगा तो बाकी लोगों का क्या हाल होगा! फिर मुआविया (ﷺ) इस क़दर रोये कि हमें लगा शायद फौत हो जाएंगे और हमने कहा यह आदमी हमारे पास एक बुरी बात लेकर आया है। फिर मुआविया (ﷺ) को होश आया, उन्होंने अपना चेहरा साफ़ किया और फ़रमाया: अल्लाह और उसके रसूल ने सच फ़रमाया है:" जो दुनिया की ज़िंदगी और उसकी ज़ेबो ज़ीनत चाहते हैं हम उन्हें इसी दुनिया में उनके आमाल का पूरा बदला देंगे और उन्हें कम नहीं मिलेगा। यह वह लोग हैं जिनके लिए आख़िरत में सिर्फ़ आग है। जो यहाँ किया होगा वह ज़ाया और आमाल बातिल हो जाएंगे। " (हूद: 15- 16)

मुस्लिम: बेनह्विही: 1905. निसाई: 3137.

तौज़ीह: نَشَغ : इतनी सिस्कियाँ भरना कि बेहोश हो जाए, लंबा सांस लेना। (अलकामूसुल वहीद:प 1651)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

2383 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ قَالَ: حَدَّثَنِي الْمُحَارِبِيُّ، عَنْ عَمَّارِ بْنِ سَيْفٍ الضَّبِّيِّ، عَنْ

2383 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, (جُبُّ الحَزَن)से अल्लाह की पनाह मांगो।"

أَبِي مُعَانٍ الْبَصْرِيِّ، عَنِ ابْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: تَعَوَّذُوا بِاللَّهِ مِنْ جُبِّ الحَزَنِ، قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ: وَمَا جُبُّ الحَزَنِ؟ قَالَ: وَادٍ فِي جَهَنَّمَ تَتَعَوَّذُ مِنْهُ جَهَنَّمُ كُلَّ يَوْمٍ مِائَةَ مَرَّةٍ. قُلْنَا: يَا رَسُولَ اللهِ وَمَنْ يَدْخُلُهُ؟ قَالَ: الْقُرَّاءُونَ الْمُرَاءُونَ بِأَعْمَالِهِمْ.

लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! جُبُّ الحَزَنِ क्या चीज़ है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया: "जहन्नम में एक वादी है जिससे जहन्नम भी एक दिन में सौ मर्तबा पनाह मांगती है।" कहा गया: "ऐ अल्लाह के रसूल! इसमें जायेंगे कौन? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अपने आमाल का दिखलावा करने वाले क़ारी।"

ज़ईफ़: इब्ने माजह: 256. अल-कामिल: 5/ 1727

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

49 بَابُ عَمَلِ السِّرِّ

49 - छिप कर नेक अमल करना

2384 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو سِنَانٍ الشَّيْبَانِيُّ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ أَبِي ثَابِتٍ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللهِ الرَّجُلُ يَعْمَلُ العَمَلَ فَيُسِرُّهُ فَإِذَا اطُّلِعَ عَلَيْهِ أَعْجَبَهُ ذَلِكَ؟ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَهُ أَجْرَانِ، أَجْرُ السِّرِّ وَأَجْرُ العَلَانِيَةِ.

2384 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि एक आदमी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! एक आदमी छिप कर कोई नेक अमल करता है फिर जब उसका दूसरों को पता चल जाए तो उसे अच्छा लगता है, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "उसके लिए दो अज्र हैं: एक छिपकर काम करने का अज्र और दूसरा एलानिया करने का अज्र।"

ज़ईफ़: इब्ने मा.. ह्:4226

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। और आमश वग़ैरह ने इसे हबीब बिन अबी साबित से बवास्ता अबू सालेह, नबी (ﷺ) से मुर्सल रिवायत किया है और आमश के शागिर्दों ने इसमें अबू हुरैरा (رضي الله عنه) का ज़िक्र नहीं किया।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: बअज़ उलमा ने इसकी तफ़्सीर करते हुए लिखा है कि जब उसका पता चल जाए तो उसे अच्छा लगता है का मतलब है कि उसे लोगों के अच्छे लफ़्ज़ों से तारीफ़ करना अच्छा लगता है क्योंकि नबी (ﷺ) का फ़रमान है: "तुम ज़मीन में अल्लाह की तरफ़ से गवाह रहो।" इसी

लिए उसे लोगों का तारीफ़ करना अच्छा लगता है लेकिन जब उसे यह अच्छा लगता हो कि लोग उसके भलाई वाले काम को जान कर उसकी इज़्ज़त व तक्रीम करें तो यह रियाकारी है।

बअ़ज़ उलमा कहते हैं: उस काम का पता चल जाए तो उस (करने वाले) को यह बात इस लिए अच्छी लगती है कि कोई और भी ऐसा ही अच्छा काम करेगा तो उसे उनके बराबर ही अज्र मिलेगा तो यह भी ख़ुशी की बात है।

50 बَابُ مَا جَاءَ أَنَّ الْمَرْءَ مَعَ مَنْ أَحَبَّ

2385 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ حُمَيْدٍ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّهُ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ مَتَى قِيَامُ السَّاعَةِ؟ فَقَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى الصَّلاَةِ، فَلَمَّا قَضَى صَلاَتَهُ قَالَ: أَيْنَ السَّائِلُ عَنْ قِيَامِ السَّاعَةِ؟ فَقَالَ الرَّجُلُ: أَنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ. قَالَ: مَا أَعْدَدْتَ لَهَا؟ قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ مَا أَعْدَدْتُ لَهَا كَبِيرَ صَلاَةٍ وَلاَ صَوْمٍ إِلاَّ أَنِّي أُحِبُّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الْمَرْءُ مَعَ مَنْ أَحَبَّ وَأَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ فَمَا رَأَيْتُ فَرِحَ الْمُسْلِمُونَ بَعْدَ الإِسْلاَمِ فَرَحَهُمْ بِهَذَا.

50 - आदमी उसके साथ होगा जिससे मोहब्बत करता है

2385 - अनस (ﷺ) रिवायत करते हैं कि एक आदमी रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आकर कहने लगा, क़यामत कब आयेगी? नबी (ﷺ) नमाज़ के लिए खड़े हो गए जब आप(ﷺ) ने नमाज़ मुकम्मल की तो फ़रमाया: "क़यामत आने के बारे में पूछने वाला कहाँ है?" उस आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! मैं यहाँ हूँ। आप (ﷺ) ने फ़रमाया: "तुमने उसके लिए क्या तैयारी कर रखी है?" उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! मैंने उसके लिए ज़्यादा नमाज़ों और रोज़ों का एहतमाम तो नहीं किया मगर मैं अल्लाह और उसके रसूल से मोहब्बत करता हूँ तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "आदमी उसके साथ होगा जिससे उसे मोहब्बत है और तु भी उसी के साथ होगा जिससे तुझे मोहब्बत है।" रावी कहते हैं: लोग इससे इस क़दर खुश हुए कि मैंने इस्लाम के बाद मुसलमानों को ऐसे खुश होते कभी नहीं देखा था।

बुख़ारी: 3688, मुस्लिम: 2639, अबू दाऊद:5127.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह है।

2386 - حَدَّثَنَا أَبُو هِشَامٍ الرِّفَاعِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غِيَاثٍ، عَنْ أَشْعَثَ، عَنِ الحَسَنِ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الْمَرْءُ مَعَ مَنْ أَحَبَّ وَلَهُ مَا اكْتَسَبَ.

2386 - सय्यदना हज़रत अनस बिन मालिक (ﷺ) कहते हैं कि अल्लाह के नबी (ﷺ) ने फ़रमाया आदमी उसके साथ होगा जिससे वह मोहब्बत करता है और उसके लिये वही है जो उसने कमाया है

(इन अल्फ़ाज़ के साथ यह हदीस सहीह है) मुसनद अहमद: 3/226. अबू यअ़ला:2777. इब्ने हिब्बान:564.

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: हसन बसरी के तरीक़ से यह हदीस हसन ग़रीब है जो कि अनस बिन मालिक(ﷺ) के ज़रिए नबी(ﷺ) से बयान करते हैं और यह हदीस कई तुरूक़ (सनदों) से नबी(ﷺ) से मर्वी है।

2387 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَاصِمٍ، عَنْ زِرِّ بْنِ حُبَيْشٍ، عَنْ صَفْوَانَ بْنِ عَسَّالٍ، قَالَ: جَاءَ أَعْرَابِيٌّ جَهْوَرِيُّ الصَّوْتِ قَالَ: يَا مُحَمَّدُ الرَّجُلُ يُحِبُّ القَوْمَ وَلَمَّا يَلْحَقْ بِهِمْ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الْمَرْءُ مَعَ مَنْ أَحَبَّ.

2387 - सय्यदना सफ़वान बिन अस्साल (ﷺ) रिवायत करते हैं कि एक ऊंची आवाज़ वाला आराबी आकर कहने लगा, ऐ मुहम्मद(ﷺ)! एक आदमी किसी कौम से मोहब्बत करता है जबकि वह उनसे मिला नहीं है। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: ''आदमी उसी के साथ होगा जिससे उसे मोहब्बत है।'' (हसन)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

अबू ईसा कहते हैं: हमें अहमद बिन अब्दा ज़बी ने उन्हें हम्माद बिन ज़ैद ने आसिम से उन्हें ज़र ने बवास्ता सुफ़ियान बिन अस्साल (ﷺ), नबी (ﷺ) से महमूद की रिवायत जैसी हदीस बयान की है।

51 بَابُ مَا جَاءَ فِي حُسْنِ الظَّنِّ بِاللَّهِ

51 - अल्लाह तआ़ला की ज़ात से अच्छा गुमान करना

2388 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ بُرْقَانَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ الأَصَمِّ، عَنْ

2388 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया:

أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ اللَّهَ يَقُولُ: أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي بِي وَأَنَا مَعَهُ إِذَا دَعَانِي.

"बेशक अल्लाह तआला फ़र्माता है, ''मैं अपने बन्दे के साथ उसके मेरे मुताल्लिक़ गुमान के मुताबिक़ हूँ और जब वह मुझे बुलाता है मैं उसके साथ होता हूँ।''

बुखारी:7405. मुस्लिम:2675. इब्ने माजह:3822

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

52 بَابُ مَا جَاءَ فِي الْبِرِّ وَالإِثْمِ

52 - नेकी और गुनाह की पहचान

2389 - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الكِنْدِيُّ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ حُبَابٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ صَالِحٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ جُبَيْرِ بْنِ نُفَيْرٍ الحَضْرَمِيُّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ النَّوَّاسِ بْنِ سَمْعَانَ، أَنَّ رَجُلاً سَأَلَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ البِرِّ وَالإِثْمِ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: البِرُّ حُسْنُ الخُلُقِ، وَالإِثْمُ مَا حَاكَ فِي نَفْسِكَ وَكَرِهْتَ أَنْ يَطَّلِعَ عَلَيْهِ النَّاسُ.

2389 - सय्यदना नव्वास बिन समआन (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से नेकी और गुनाह के बारे में पूछा तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया: "नेकी अच्छे अख़्लाक़ हैं और गुनाह वह है जो तुम्हारे दिल में खटके और तुम उस पर लोगों का मुत्तला हो जाना नापसंद करो।"

मुस्लिम: 2553. मुसनद अहमद:4/ 182. दारमी:2793

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं: हमें बुनदार ने उन्हें अब्दुर्रहमान बिन महदी ने उन्हें मुआविया बिन सालेह ने अब्दुर्रहमान से इसी तरह हदीस बयान की है लेकिन इसमें है कि मैंने नबी (ﷺ) से सवाल किया।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

53باب مَا جَاءَ فِي الْحُبِّ فِي اللَّهِ

53 - अल्लाह के लिए मोहब्बत करना

2390 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا كَثِيرُ بْنُ هِشَامٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ بُرْقَانَ،

2390 - सय्यदना मुआज़ बिन जबल (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "अल्लाह तआला

قَالَ: حَدَّثَنَا حَبِيبُ بْنُ أَبِي مَرْزُوقٍ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رَبَاحٍ، عَنْ أَبِي مُسْلِمٍ الخَوْلاَنِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي مُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: قَالَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ: الْمُتَحَابُّونَ فِي جَلاَلِي لَهُمْ مَنَابِرُ مِنْ نُورٍ يَغْبِطُهُمُ النَّبِيُّونَ وَالشُّهَدَاءُ.

फ़रमाते हैं: मेरी अज़मत की ख़ातिर आपस में मोहब्बत करने वालों के लिए नूर के मिम्बर होंगे उन पर अंबिया और शोहदा भी रश्क करते होंगे। "

सहीह: मुसनद अहमद: 5/236. इब्ने हिब्बान:577.

वज़ाहत: इस बारे में अबू दर्दा, इब्ने मसऊद, उबादा बिन सामित, अबू मालिक अशअरी और अबू हुरैरा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और अबू मुस्लिम ख़ौलानी का नाम अब्दुल्लाह बिन सुवब है।

2391 - حَدَّثَنَا الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ خُبَيْبِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَوْ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: سَبْعَةٌ يُظِلُّهُمُ اللَّهُ فِي ظِلِّهِ يَوْمَ لاَ ظِلَّ إِلاَّ ظِلُّهُ، إِمَامٌ عَادِلٌ، وَشَابٌّ نَشَأَ بِعِبَادَةِ اللهِ، وَرَجُلٌ كَانَ قَلْبُهُ مُعَلَّقًا بِالمَسْجِدِ إِذَا خَرَجَ مِنْهُ حَتَّى يَعُودَ إِلَيْهِ، وَرَجُلاَنِ تَحَابَّا فِي اللهِ فَاجْتَمَعَا عَلَى ذَلِكَ وَتَفَرَّقَا، وَرَجُلٌ ذَكَرَ اللَّهَ خَالِيًا فَفَاضَتْ عَيْنَاهُ، وَرَجُلٌ دَعَتْهُ امْرَأَةٌ ذَاتُ حَسَبٍ وَجَمَالٍ فَقَالَ: إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ، وَرَجُلٌ تَصَدَّقَ بِصَدَقَةٍ فَأَخْفَاهَا حَتَّى لاَ تَعْلَمَ شِمَالُهُ مَا تُنْفِقُ يَمِينُهُ.

2391 - सय्यदना अबू हुरैरा या अबू सईद (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "सात आदमियों को अल्लाह तआला उस दिन अपने साए में जगह देगा जिस दिन सिर्फ़ उसी का साया होगा। इन्साफ करने वाला हुक्मरान, अल्लाह की इबादत में नशोनुमा पाने वाला नौजवान, वह आदमी जिसका दिल मस्जिद से लगा रहे जब वह उस से निकले यहाँ तक कि उसी की तरफ़ वापस आ जाए, वह दो आदमी जो एक दूसरे से अल्लाह के लिए मोहब्बत करते हैं उसी पर इकट्ठा होते हैं और उसी पर जुदा होते हैं, वह आदमी जो तन्हाई में अल्लाह को याद करे तो उसकी आँखों से आंसू जारी हो जाएँ, वह आदमी जिसे अच्छे हसब वाली खूबसूरत औरत (बुराई की) दावत दे तो वह कहे, मैं अल्लाह से डरता हूँ और वह आदमी जो छिप

कर सदक़ा करे यहाँ तक कि उसका बायाँ हाथ भी नहीं जानता कि दायें ने क्या ख़र्च किया है।"

बुख़ारी:660. मुस्लिम: 1031. निसाई:5380.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और यह हदीस और सनद से इमाम मालिक बिन अनस से भी इसी तरह मर्वी है और इसमें उन्होंने शक के साथ अबू हुरैरा या अबू सईद से रिवायत की है। जब कि उबैदुल्लाह बिन उमर ने ख़ुबैब बिन अब्दुर्रहमान से रिवायत करते वक़्त शक नहीं किया उन्होंने अबू हुरैरा (رضي الله عنه) ही कहा है।

अबू ईसा कहते हैं: हमें सवार बिन अब्दुल्लाह अंबरी और मुहम्मद बिन मुसन्ना ने बयान किया कि हमें यह्या बिन सईद ने उबैदुल्लाह बिन उमर से उन्होंने ख़ुबैब बिन अब्दुर्रहमान से बवास्ता हफ्स बिन आसिम, अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से नबी (ﷺ) की हदीस इमाम मालिक बिन अनस की तरह ही रिवायत की है लेकिन उन्होंने ज़िक्र किया है कि आप (ﷺ) ने फ़रमाया: "जिसका दिल मस्जिदों के साथ लगा हो" और "अच्छे ओहदे वाली ख़ूबसूरत औरत". यह हदीस हसन सहीह है।

54 - मोहब्बत के बारे में बताना

54 بَابُ مَا جَاءَ فِي إِعْلَامِ الْحُبِّ

2392 - सय्यदना मिक्दाम बिन मअ़दीकरिब (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "जब तुममें से कोई शख़्स अपने मुसलमान भाई से मोहब्बत करता हो तो वह उसको बता दे।"

2392 - حَدَّثَنَا بُنْدَارٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ الْقَطَّانُ، قَالَ: أَخْبَرَنَا ثَوْرُ بْنُ يَزِيدَ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ عُبَيْدٍ، عَنِ الْمِقْدَامِ بْنِ مَعْدِي كَرِبَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا أَحَبَّ أَحَدُكُمْ أَخَاهُ فَلْيُعْلِمْهُ إِيَّاهُ.

सहीह: अबू दाऊद: 5124. मुसनद अहमद: 4/130. अदबुल मुफ़रद: 542.

वज़ाहत: इस बारे में अबू ज़र और अनस (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: सय्यदना मिक्दाम बिन मअ़दीकरिब (رضي الله عنه) की हदीस हसन सहीह ग़रीब है। और सय्यदना मिक्दाम बिन मअ़दीकरिब (رضي الله عنه) की कुनियत अबू करीमा थी।

2392 (ब) - सय्यदना यज़ीद बिन नआमा अज़्ज़ब्बी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "जब कोई

2392م- حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، وَقُتَيْبَةُ، قَالَا: حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ مُسْلِمٍ الْقَصِيرِ،

عَنْ سَعِيدِ بْنِ سُلَيْمَانَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ نَعَامَةَ الضَّبِّيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا آخَى الرَّجُلُ الرَّجُلَ فَلْيَسْأَلْهُ عَنْ اسْمِهِ وَاسْمِ أَبِيهِ وَمِمَّنْ هُوَ فَإِنَّهُ أَوْصَلُ لِلْمَوَدَّةِ.

आदमी दूसरे आदमी से भाईचारा कायम करे तो उसका और उसके बाप का नाम पूछ ले और यह भी कि वह किस क़बीले से है यह चीज़ मोहब्बत को ज़्यादा मिलाने वाली है।
"

ज़ईफ़: हिल्या: 2/181. इब्ने साद:6/65.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। हम इसे इसी सनद से ही जानते हैं और हम सय्यदना यज़ीद बिन नआमा अज़्ज़ब्बी (ﷺ) का नबी (ﷺ) से सिमा (सुनना) करना नहीं जानते।

54 بَابُ مَا جَاءَ فِي كَرَاهِيَةِ الْمِدْحَةِ وَالْمَدَّاحِينَ

54 - तारीफ़ और तारीफ़ करने वालों से इज़्हारे नापसंदीदगी

2393 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ أَبِي ثَابِتٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ، قَالَ: قَامَ رَجُلٌ فَأَثْنَى عَلَى أَمِيرٍ مِنَ الأُمَرَاءِ، فَجَعَلَ الْمِقْدَادُ، يَحْثُو فِي وَجْهِهِ التُّرَابَ وَقَالَ: أَمَرَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ نَحْثُوَ فِي وُجُوهِ الْمَدَّاحِينَ التُّرَابَ.

2393 - अबू मामर कहते हैं: एक आदमी खड़ा हो कर हाकिमीन में से किसी हाकिम की तारीफ़ करने लगा तो मिक़्दाद बिन अस्वद उसके मुंह में मिट्टी डालने लग गए और फ़रमाया, "हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हुक्म दिया है कि हम बहुत ज़्यादा तारीफ़ करने वालों के मुंहों में मिट्टी डालें।

मुस्लिम: 3002. अबू दाऊद: 4804. इब्ने माजह: 4742

वज़ाहत: इस बारे में अबू हुरैरा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और ज़ायदा ने यज़ीद बिन अबी जियाद से मुजाहिद के ज़रिए इब्ने अब्बास (ﷺ) के वास्ते के साथ मिक़्दाद (ﷺ) से रिवायत की है। लेकिन मुजाहिद की अबू मामर से रिवायतकर्दा हदीस ज़्यादा सहीह है। अबू मामर का नाम अब्दुल्लाह बिन सख्बरा है क्योंकि वह और मिक़्दाद बिन अस्वद, यह मिक़्दाद बिन अम्र किंदी हैं। इनकी कुनियत अबू माबद थी। इनकी निस्बत अस्वद बिन अब्दे यग़ूस की तरफ़ है क्योंकि उन्होंने इन्हें बचपन में मुंह बोला बेटा बना लिया था।

2394 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُثْمَانَ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ سَالِمٍ الخَيَّاطِ، عَنِ الحَسَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: أَمَرَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ نَحْثُوَ فِي أَفْوَاهِ الْمَدَّاحِينَ التُّرَابَ.

2394 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें हुक्म दिया कि हम तारीफ़ करने वाले लोगों के मुंहों में मिट्टी डालें।

सहीह: पिछली हदीस देखें। अस-सिलसिला अस-सहीहा: 912

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: अबू हुरैरा (رضي الله عنه) के तरीक़ से यह हदीस ग़रीब है।

55 بَابُ مَا جَاءَ فِي صُحْبَةِ الْمُؤْمِنِ

55 - मोमिन की सोहबत

2395 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ حَيْوَةَ بْنِ شُرَيْحٍ قَالَ: حَدَّثَنِي سَالِمُ بْنُ غَيْلاَنَ، أَنَّ الوَلِيدَ بْنَ قَيْسٍ التُّجِيبِيَّ، أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا سَعِيدٍ الخُدْرِيَّ، قَالَ سَالِمٌ: أَوْ عَنْ أَبِي الهَيْثَمِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: لاَ تُصَاحِبْ إِلاَّ مُؤْمِنًا، وَلاَ يَأْكُلْ طَعَامَكَ إِلاَّ تَقِيٌّ.

2395 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "तुम सिर्फ मोमिन को साथी बनाओ और तुम्हारा खाना सिर्फ़ मुत्तक़ी ही खाए।"

हसन: अबू दाऊद: 4832, तयालिसी:2213, दारमी: 2063, मुसनद अहमद: 3/83

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है। हम इसे इसी सनद से जानते हैं।

56 بَابُ مَا جَاءَ فِي الصَّبْرِ عَلَى البَلاَءِ

56 - आज़माइश पर सब्र करना

2396 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ سَعْدِ بْنِ سِنَانٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِعَبْدِهِ الخَيْرَ عَجَّلَ لَهُ العُقُوبَةَ فِي الدُّنْيَا، وَإِذَا أَرَادَ

2396 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "जब अल्लाह तआला अपने बन्दे से भलाई का इरादा करता है तो उसे दुनिया में जल्द सज़ा दे देता है और जब अपने बन्दे से शर का इरादा करता है तो उसके गुनाहों के बावजूद

اللّٰهُ بِعَبْدِهِ الشَّرَّ أَمْسَكَ عَنْهُ بِذَنْبِهِ حَتَّى يُوَافِيَ بِهِ يَوْمَ القِيَامَةِ، وَبِهَذَا الإِسْنَادِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: إِنَّ عِظَمَ الجَزَاءِ مَعَ عِظَمِ البَلَاءِ، وَإِنَّ اللّٰهَ إِذَا أَحَبَّ قَوْمًا ابْتَلَاهُمْ، فَمَنْ رَضِيَ فَلَهُ الرِّضَا، وَمَنْ سَخِطَ فَلَهُ السَّخَطُ.

उससे सज़ा रोक लेता है, यहाँ तक कि उसे क़यामत के दिन पूरा बदला दिया जाएगा।" और इसी सनद से मर्वी है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया: "जज़ा उतनी बड़ी होती है जिस क़दर आज़माइश बड़ी हो। और अल्लाह तआला जब किसी क़ौम से मोहब्बत करता है तो उन्हें आज़माइश में डाल देता है। फिर जो राजी रहे उसके लिए अल्लाह की रज़ा और जो नाराज़ हो जाए उसके लिए अल्लाह की नाराजी होती है।"

हसन: इब्ने माजह: 4031. हाकिम: 4/608. अल-कामिल: 3/1192.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहिमहुल्लाह) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।

2397 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الأَعْمَشِ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ، يَقُولُ: قَالَتْ عَائِشَةُ: مَا رَأَيْتُ الوَجَعَ عَلَى أَحَدٍ أَشَدَّ مِنْهُ عَلَى رَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

2397 - सय्यदा आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) बयान करती हैं: मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से बढ़कर किसी के उपर तक्लीफ़ नहीं देखी।

बुख़ारी: 5646. मुस्लिम:2570. इब्ने माजह:1662. तोहफतुल अशराफ़:16155

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहिमहुल्लाह) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2398 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ عَاصِمِ ابْنِ بَهْدَلَةَ، عَنْ مُصْعَبِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللّٰهِ، أَيُّ النَّاسِ أَشَدُّ بَلَاءً؟ قَالَ: الأَنْبِيَاءُ ثُمَّ الأَمْثَلُ فَالأَمْثَلُ، فَيُبْتَلَى الرَّجُلُ عَلَى حَسَبِ دِينِهِ، فَإِنْ كَانَ دِينُهُ صُلْبًا اشْتَدَّ بَلَاؤُهُ، وَإِنْ كَانَ فِي دِينِهِ

2398 - मुस्अब बिन साद अपने बाप (सय्यदना साद रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत करते हैं कि मैंने अर्ज़ किया, ''ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! सब से ज़्यादा आज़माइश किन लोगों को होती है?'' आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "अंबिया की, फिर उन से नीचे, फिर उन से नीचे वालों की, आदमी की आज़माइश उसके दीन के मुताबिक़ होती है।

رِقَّةٌ ابْتُلِيَ عَلَى حَسَبِ دِينِهِ، فَمَا يَبْرَحُ الْبَلَاءُ بِالْعَبْدِ حَتَّى يَتْرُكَهُ يَمْشِي عَلَى الأَرْضِ مَا عَلَيْهِ خَطِيئَةٌ.

अगर उसका दीन पुख़्ता होता है तो उसकी आज़माइश भी कड़ी होती है। अगर उसके दीन में नर्मी होती है तो उसके दीन के मुताबिक़ ही उसकी आज़माइश होती है। तकालीफ़ आदमी के साथ जारी रहती हैं यहाँ तक कि वह ज़मीन पर इस हाल में चलता है कि उस पर कोई गुनाह नहीं होता।"

हसन सहीह: इब्ने माजह: 4023. दारमी:2786.मुसनद अहमद: 1/172

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ इस बारे में अबू हुरैरा और हुज़ैफा बिन यमान की बहन (رضي الله عنها) से भी हदीस मर्वी है कि नबी (ﷺ) से पूछा गया किन लोगों की आज़माइश सख़्त होती है? आप(ﷺ) ने फ़रमाया: "अंबिया की, फिर मरातिब के लिहाज़ से निचले दर्जे वाले लोगों की।"

2399 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا يَزَالُ الْبَلَاءُ بِالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنَةِ فِي نَفْسِهِ وَوَلَدِهِ وَمَالِهِ حَتَّى يَلْقَى اللَّهَ وَمَا عَلَيْهِ خَطِيئَةٌ.

2399 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "मोमिन मर्द और मोमिना औरत की जान, औलाद और माल में आज़माइश जारी रहती है यहाँ तक कि वह अल्लाह से इस हाल में मिलेगा कि उस पर कोई गुनाह नहीं होगा।"

हसन सहीह:मुसनद अहमद:2/287. इब्ने हिब्बान:2913. हाकिम: 346.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ इस बारे में अबू हुरैरा और अबू हुज़ैफा बिन यमान की बहन (رضي الله عنها) से भी हदीस मर्वी है।

57 بَابُ مَا جَاءَ فِي ذَهَابِ الْبَصَرِ

57 - नज़र का ख़त्म होना

2400 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُعَاوِيَةَ الْجُمَحِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُسْلِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو ظِلَالٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ

2400 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला फ़रमाते हैं, जब मैं दुनिया में अपने बन्दों की

اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ اللَّهَ يَقُولُ: إِذَا أَخَذْتُ كَرِيمَتَيْ عَبْدِي فِي الدُّنْيَا لَمْ يَكُنْ لَهُ جَزَاءٌ عِنْدِي إِلاَّ الجَنَّةَ.

दो प्यारी चीजें (आँखें) ले लेता हूँ तो मेरे पास उसका बदला सिवाए जन्नत के और कुछ नहीं है।"

बुख़ारी: 5653. मुसनद अहमद:3/ 144

वज़ाहत: इस बारे में अबू हुरैरा और ज़ैद बिन अर्कम (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है। और अबू ज़िलाल का नाम हिलाल था।

2401 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، رَفَعَهُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يَقُولُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ: مَنْ أَذْهَبْتُ حَبِيبَتَيْهِ فَصَبَرَ وَاحْتَسَبَ لَمْ أَرْضَ لَهُ ثَوَابًا دُونَ الجَنَّةِ.

وَفِي البَابِ عَنْ عِرْبَاضِ بْنِ سَارِيَةَ.

2401 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया: " अल्लाह अज्ज़ व जल्ल फ़रमाता है, ''मैं जिस शख़्स की दो महबूब चीजें (आँखें) ले जाऊं फिर वह सब्र करे और सवाब की उम्मीद रखे तो मैं उसके लिए जन्नत से कम सवाब पर राजी नहीं हूंगा।''

सहीह: मुसनद अहमद: 2/265. दारमी:2798. इब्ने हिब्बान:2932

वज़ाहत: इस बारे में इर्बाज़ बिन सारिया (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

58 - بَابٌ يوم القيامة وندامة المحسن والمسيئ يومئذ))

58 - क़यामत के दिन नेक और बद सभी नादिम होंगे

2402 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حُمَيْدٍ الرَّازِيُّ، وَيُوسُفُ بْنُ مُوسَى القَطَّانُ البَغْدَادِيُّ، قَالاَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَغْرَاءَ أَبُو زُهَيْرٍ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَوَدُّ أَهْلُ العَافِيَةِ يَوْمَ القِيَامَةِ حِينَ يُعْطَى أَهْلُ

2402 - सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "क़यामत के दिन जब तक्लीफों में मुब्तला होने वाले लोगों को सवाब दिया जाएगा तो अहले आफ़ियत[1] ख़्वाहिश करेंगे कि काश दुनिया में उनके जिस्मों को कैंचियों[2] से काट दिया गया होता।"

हसन: बैहक़ी: 3/ 375. तबरानी फ़िस सग़ीर:241

الْبَلاَءِ الثَّوَابَ لَوْ أَنَّ جُلُودَهُمْ كَانَتْ قُرِضَتْ فِي الدُّنْيَا بِالْمَقَارِيضِ..

तौज़ीह: (1) जो लोग दुनिया में तक्लीफों, परेशानियों और आजमाइशों से महफ़ूज़ रहे होंगे।
(2)المقرا ض : कैंची का एक क़तर जिस से कोई चीज़ काटी जाती है। यह दो जमा हों तो कैंची मुकम्मल होती है। المقرا ض, مقاريض की जमा है। (अल-मोजमुल वसीत:पृ. 878)

वज़ाहत: यह हदीस ग़रीब है। इस सनद के साथ हम इसी तरीक़ से ही जानते हैं। बअ़ज़ ने इस हदीस का कुछ हिस्सा आमश से बवास्ता तल्हा बिन मुसर्रिफ, मसरूक़ से बयान किया है।

2403 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ عُبَيْدِ اللهِ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي، يَقُولُ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا مِنْ أَحَدٍ يَمُوتُ إِلاَّ نَدِمَ، قَالُوا: وَمَا نَدَامَتُهُ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: إِنْ كَانَ مُحْسِنًا نَدِمَ أَنْ لاَ يَكُونَ ازْدَادَ، وَإِنْ كَانَ مُسِيئًا نَدِمَ أَنْ لاَ يَكُونَ نَزَعَ.

2403 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "जो शख़्स भी मरता है वह नादिम होता है" लोगों ने अर्ज़ किया, ''ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! उसकी नदामत (शर्मिंदगी) क्या है?'' आप ने फ़रमाया, ''अगर वह नेक होता है तो इसलिए नादिम होता है कि उसने नेकियाँ ज़्यादा क्यों न कर लीं और अगर बुरा होता है तो इस लिए नादिम होता है कि उसने बुराइयों से हाथ क्यों न खींचा।''

ज़ईफ़: जिद्दा: अल-कामिल: 7/2660. हिल्या:8/178

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस हदीस को हम इसी सनद से ही जानते हैं और यह्या बिन उबैदुल्लाह के बारे में शोबा ने जरह की है और यह्या बिन उबैदुल्लाह बिन मोहब मदनी हैं।

59 - بَابٌ حديث خاتلي الدنيا بالدين وعقوبتهم..

59 - दीन के ज़रिए दुनिया हासिल करने वालों की सज़ा

2404 - حَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ عُبَيْدِ اللهِ،

2404 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''आख़िर वक़्त में ऐसे लोग आयेंगे जो

قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي، يَقُولُ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَخْرُجُ فِي آخِرِ الزَّمَانِ رِجَالٌ يَخْتِلُونَ الدُّنْيَا بِالدِّينِ يَلْبَسُونَ لِلنَّاسِ جُلُودَ الضَّأْنِ مِنَ اللِّينِ، أَلْسِنَتُهُمْ أَحْلَى مِنَ السُّكَّرِ، وَقُلُوبُهُمْ قُلُوبُ الذِّئَابِ، يَقُولُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ: أَبِي يَغْتَرُّونَ، أَمْ عَلَيَّ يَجْتَرِئُونَ؟ فَبِي حَلَفْتُ لَأَبْعَثَنَّ عَلَى أُولَئِكَ مِنْهُمْ فِتْنَةً تَدَعُ الحَلِيمَ مِنْهُمْ حَيْرَانًا.

दुनिया को दीन के साथ हासिल करेंगे लोगों को नर्मी दिखाने के लिए भेड़ की खाल पहनेंगे, उनकी ज़बानें शकर से भी मीठी होंगी और उनके दिल भेड़ियों के दिलों जैसे होंगे। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं, क्या मेरी वजह से तुम धोका देते हो या मुझ पर दिलेरी दिखाते हो! मुझे अपनी ज़ात की क़सम मैं उन लोगों पर ऐसा फ़ित्ना भेजूंगा जो उन में से समझदारों को भी हैरान कर देगा।''

ज़ईफ़ जिद्दा।

तौज़ीह: يختلون : ختل से फ़ेल मुज़ारा का सेगा है। ختل का मानी है धोका देना, फ़रेब करना और चक्कर देना। यानी वह इस तरह धोका देंगे कि दीन के नाम पर दुनिया हासिल करेंगे या इस तरह समझ लें कि दुनिया कमाने के लिये दीन को आड़ बनाएंगे।

(2) भेड़ की खाल पहनने का मतलब है लोगों के साथ नर्मी ज़ाहिर करेंगे। (3) यानी समझदार, आकिल और आलिम भी उन फ़ित्नों से छुटकारे का रास्ता तलाश करने में नाकाम रहेंगे बल्कि वह भी हैरान व परेशान फिरेंगे।

वज़ाहत: इस बारे में इब्ने उमर (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

2405 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ سَعِيدٍ الدَّارِمِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا حَاتِمُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا حَمْزَةُ بْنُ أَبِي مُحَمَّدٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى قَالَ: لَقَدْ خَلَقْتُ خَلْقًا أَلْسِنَتُهُمْ أَحْلَى مِنَ العَسَلِ، وَقُلُوبُهُمْ أَمَرُّ مِنَ الصَّبْرِ، فَبِي حَلَفْتُ لَأُتِيحَنَّهُمْ فِتْنَةً تَدَعُ الحَلِيمَ مِنْهُمْ حَيْرَانًا، فَبِي يَغْتَرُّونَ أَمْ عَلَيَّ يَجْتَرِئُونَ.

2405 - सय्यदना इब्ने उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ''अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: यक़ीनन मैंने ऐसे लोग भी पैदा किए हैं जिनकी ज़बानें शहद से भी मीठी जब कि उनके दिल एल्वे से भी ज़्यादा कड़वे हैं। मैं अपनी ज़ात की क़सम उठाता हूँ कि मैं उनके लिए ऐसा फ़ित्ना भेजुंगा जो उनके समझदारों को भी हैरान कर देगा क्या यह मेरे साथ धोका देना चाहते हैं या मुझ पर दिलेरी करते हैं''

ज़ईफ़

तौज़ीह: الصبر : एल्वा, एक कड़वी जड़ीबूटी का नाम। (अल-मोजमुल वसीत:पृ. 597)

वाज़हत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इब्ने उमर के तरीक़ से यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे इसी सनद से ही जानते हैं।

60 بَابُ مَا جَاءَ فِي حِفْظِ اللِّسَانِ

60 - ज़बान की हिफ़ाज़त

2406 - حَدَّثَنَا صَالِحُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ (ح) وحَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَيُّوبَ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ زَحْرٍ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ يَزِيدَ، عَنِ القَاسِمِ، عَنْ أَبِي أُمَامَةَ، عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ، قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ مَا النَّجَاةُ؟ قَالَ: امْلِكْ عَلَيْكَ لِسَانَكَ، وَلْيَسَعْكَ بَيْتُكَ، وَابْكِ عَلَى خَطِيئَتِكَ.

2406 - सय्यदना उक़्बा बिन आमिर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैंने अर्ज़ किया, ''ऐ अल्लाह के रसूल! निजात हासिल करने का ज़रिया क्या है?'' आप(ﷺ) ने फ़रमाया: ''अपनी ज़बान को अपने काबू में रखो, तुम्हें तुम्हारा घर वसीअ (बड़ा) हो जाए और अपनी गलतियों पर रोया करो।''

सहीह: मुसनद अहमद: 4/ 148. हिल्या:2/9

वाज़हत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

2407 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُوسَى البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَبِي الصَّهْبَاءِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، رَفَعَهُ قَالَ: إِذَا أَصْبَحَ ابْنُ آدَمَ فَإِنَّ الأَعْضَاءَ كُلَّهَا تُكَفِّرُ اللِّسَانَ فَتَقُولُ: اتَّقِ اللَّهَ فِينَا فَإِنَّمَا نَحْنُ بِكَ، فَإِنْ اسْتَقَمْتَ اسْتَقَمْنَا وَإِنْ اعْوَجَجْتَ اعْوَجَجْنَا.

2407 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) मर्फ़ू हदीस बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ''इंसान जब सुबह करता है तो तमाम आज़ा (अंग) ज़बान से मिन्नत(1) व समाजत करते हुए कहते हैं, हमारे बारे में अल्लाह से डरना हम तुम्हारे साथ ही महफ़ूज़ रह सकते हैं अगर तु सीधी रही तो हम भी सीधे रहेंगे और अगर तु टेढ़ी हुई तो हम भी टेढ़े हो जायेंगे।''

हसन: तयालिसी:2209. मुसनद अहमद: 3/95. अबू याला:1185.

तौज़ीह: تُكَفِّرُ : बाबे तफ़ईल से वाहिद मुअन्नस ग़ायब का सेगा है और تُكَفِّرُ का मानी होता है झुक जाना, आजिज़ी दिखाना पस्त हो जाना, كفر لسيده अपने आक़ा की ताज़ीम के लिए उसके सामने झुक कर खड़ा हो गया। (अल-मोजमुल वसीत:पृ. 957)

वज़ाहतः अबू ईसा कहते हैं, हमें हन्नाद ने वह कहते हैं, हमें अबू उसामा ने हम्माद बिन ज़ैद से ऐसे ही रिवायत की है लेकिन वह मर्फ़ू नहीं है और हम्माद बिन ज़ैद से कई रावियों ने यह रिवायत की है लेकिन उसे मर्फ़ू ज़िक्र नहीं किया। हमें सालेह बिन अब्दुल्लाह ने उन्हें हम्माद बिन ज़ैद ने अबू सहबा से बवास्ता सईद बिन जुबैर, सय्यदना अबू सईद खुदरी (ﷺ) से हदीस बयान की है वह कहते हैं: मैं गुमान करता हूँ नबी (ﷺ) से, फिर ऐसे ही ज़िक्र की।

2408 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى الصَّنْعَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ عَلِيٍّ الْمُقَدَّمِيُّ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ يَتَوَكَّلْ لِي مَا بَيْنَ لَحْيَيْهِ وَمَا بَيْنَ رِجْلَيْهِ أَتَوَكَّلْ لَهُ بِالْجَنَّةِ.

2408 - सय्यदना सहल बिन साद (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमायाः ''जो शख़्स मुझे अपने दोनों जबड़ों और दोनों टांगों के दर्मियान (वाली चीज़) की ज़मानत दे दे मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूँ।''

बुखारी:6474. मुसनद अहमदः 333. अबू याला:7555.

वज़ाहतः इस बारे में अबू हुरैरा और इब्ने अब्बास (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: सय्यदना सहल बिन साद (ﷺ) के तरीक़ से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

2409 - حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدِ الأَشَجُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو خَالِدٍ الأَحْمَرُ، عَنِ ابْنِ عَجْلاَنَ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ وَقَاهُ اللَّهُ شَرَّ مَا بَيْنَ لَحْيَيْهِ، وَشَرَّ مَا بَيْنَ رِجْلَيْهِ دَخَلَ الجَنَّةَ.

2409 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमायाः ''जिसे अल्लाह ने उस के दोनों जबड़ों वाली चीज़ (ज़बान) के शर और दो टांगों के दर्मियान वाली चीज़ (शर्मगाह) के शर से बचा लिया वह जन्नत में दाखिल हो गया।''

हसन सहीह: इब्ने हिब्बान: 5703. हाकिम: 4/357

वज़ाहतः इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और अबू हाज़िम जिन्होंने सहल बिन साद (ﷺ) से रिवायत की है यह अबू हाज़िम अज-ज़ाहिद मदनी हैं। इनका नाम सलमा बिन दीनार है और अबू हुरैरा से रिवायत लेने वाले अबू हाज़िम का नाम सलमान अशजई है जो अज़्ज़ा अश्जइया के मौला और कूफ़ा के रहने वाले थे।

2410 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ مَاعِزٍ، عَنْ سُفْيَانَ بْنِ عَبْدِ اللهِ الثَّقَفِيِّ، قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ حَدِّثْنِي بِأَمْرٍ أَعْتَصِمُ بِهِ، قَالَ: قُلْ رَبِّيَ اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقِمْ، قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ مَا أَخْوَفُ مَا تَخَافُ عَلَيَّ، فَأَخَذَ بِلِسَانِ نَفْسِهِ، ثُمَّ قَالَ: هَذَا.

2410 - सय्यदना सुफ़ियान सक़फ़ी (ﷺ) कहते हैं: मैंने अर्ज़ किया, ''ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! मुझे कोई ऐसा काम बताइए जिसे मैं मज़बूती से थाम लूं आप (ﷺ) ने फ़रमाया: ''तुम कहो मेरा रब अल्लाह है फिर उसी पर डट जाओ।'' कहते हैं: मैंने अर्ज़ किया, ''ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! सब से ज़्यादा ख़ौफ़ वाली क्या चीज़ है जिसका आपको मेरे बारे में डर है? तो आप (ﷺ) ने अपनी ज़बाने मुबारक पकड़ी, फिर फ़रमाया: " इसका"

सहीह: इब्ने माजह्:3972. मुसनद अहमद: 3/413. दारमी:2714

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और कई तुरूक़ (सनदों) से सुफ़ियान बिन अब्दुल्लाह सक्फी (ﷺ) से मर्वी है।

61 بَابٌ مِنْهُ النهي عن كثرة الكلام ألا بذكر الله ..

61 - ज़्यादा बातें करना मना है सिवाए अल्लाह के ज़िक्र के

2411 - حَدَّثَنَا أَبُو عَبْدِ اللهِ مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي ثَلْجٍ البَغْدَادِيُّ، صَاحِبُ أَحْمَدَ بْنِ حَنْبَلٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حَفْصٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ حَاطِبٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ تُكْثِرُوا الكَلاَمَ بِغَيْرِ ذِكْرِ اللهِ فَإِنَّ كَثْرَةَ الكَلاَمِ بِغَيْرِ ذِكْرِ اللهِ قَسْوَةٌ لِلْقَلْبِ، وَإِنَّ أَبْعَدَ النَّاسِ مِنَ اللهِ القَلْبُ القَاسِي.

2411 - सय्यदना इब्ने उमर (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "तुम अल्लाह के ज़िक्र के अलावा ज़्यादा कलाम न करो क्योंकि अल्लाह के ज़िक्र के सिवा ज़्यादा बातें करना दिल की सख्ती का बाइस है और अल्लाह तआला से सब से ज़्यादा दूर सख्त दिल वाला आदमी है।''

ज़ईफ़

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं: हमें अबू बक्र बिन अबी नज़र ने वह कहते हैं: मुझे अबू नज़र ने इब्राहीम बिन अब्दुल्लाह बिन हातिब से उन्हें अब्दुल्लाह बिन दीनार से बवास्ता इब्ने उमर (ﷺ) नबी (ﷺ) से इसी मफ़हूम की हदीस बयान की है। इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे इब्राहीम बिन अब्दुल्लाह बिन हातिब के तरीक़ से ही जानते हैं।

62 بَابٌ مِنْهُ حديث ((كُلُّ كَلاَمِ ابْنِ آدَمَ عَلَيْهِ لاَ لَهُ))

2412 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَزِيدَ بْنِ خُنَيْسٍ الْمَكِّيُّ، قَالَ: سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ حَسَّانَ الْمَخْزُومِيَّ، قَالَ: حَدَّثَتْنِي أُمُّ صَالِحٍ، عَنْ صَفِيَّةَ بِنْتِ شَيْبَةَ، عَنْ أُمِّ حَبِيبَةَ، زَوْجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: كُلُّ كَلاَمِ ابْنِ آدَمَ عَلَيْهِ لاَ لَهُ إِلاَّ أَمْرٌ بِمَعْرُوفٍ أَوْ نَهْيٌ عَنْ مُنْكَرٍ أَوْ ذِكْرُ اللَّهِ.

62 - इब्ने आदम को हर कलाम का उसे नुक़सान होता है नफ़ा नहीं

2412 - नबी (ﷺ) की ज़ौजा मोहतरमा सय्यदा उम्मे हबीबा (ﷺ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ''इब्ने आदम का कलाम उस पर वबाल है उसके हक़ में नहीं है सिवाए नेकी का हुक्म देने, और बुराई से रोकने या अल्लाह का ज़िक्र करने के।''

ज़ईफ़: इब्ने माजह:3974. अबू याला:7132. हाकिम:2/512.

वज़ाहत: । इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे मुहम्मद बिन यज़ीद बिन ख़ुनैस के तरीक़ से ही जानते हैं।

63 - بَابٌ إعطاء حقوق النفس والرب والضيف والأهل..

2413 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْنٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الْعُمَيْسِ، عَنْ عَوْنِ بْنِ أَبِي جُحَيْفَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ:

63 - अपनी जान, रब, मेहमान, और बीवी इन सब के हुक़ूक़ अदा करना

2413 - औन बिन अबू जुहैफ़ा अपने बाप (सय्यदना अबू जुहैफ़ा ﷺ) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सलमान और अबू दर्दा के दर्मियान रिश्त-ए-

آخَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَ سَلْمَانَ وَبَيْنَ أَبِي الدَّرْدَاءِ، فَزَارَ سَلْمَانُ أَبَا الدَّرْدَاءِ، فَرَأَى أُمَّ الدَّرْدَاءِ مُتَبَذِّلَةً، فَقَالَ: مَا شَأْنُكِ مُتَبَذِّلَةً؟ قَالَتْ: إِنَّ أَخَاكَ أَبَا الدَّرْدَاءِ لَيْسَ لَهُ حَاجَةٌ فِي الدُّنْيَا، قَالَ: فَلَمَّا جَاءَ أَبُو الدَّرْدَاءِ قَرَّبَ إِلَيْهِ طَعَامًا، فَقَالَ: كُلْ فَإِنِّي صَائِمٌ، قَالَ: مَا أَنَا بِآكِلٍ حَتَّى تَأْكُلَ، قَالَ: فَأَكَلَ، فَلَمَّا كَانَ اللَّيْلُ ذَهَبَ أَبُو الدَّرْدَاءِ لِيَقُومَ، فَقَالَ لَهُ سَلْمَانُ: نَمْ، فَنَامَ، ثُمَّ ذَهَبَ يَقُومُ، فَقَالَ لَهُ: نَمْ، فَنَامَ، فَلَمَّا كَانَ عِنْدَ الصُّبْحِ، قَالَ لَهُ سَلْمَانُ: قُمِ الآنَ، فَقَامَا فَصَلَّيَا، فَقَالَ: إِنَّ لِنَفْسِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَلِرَبِّكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَلِضَيْفِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّ لأَهْلِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، فَأَعْطِ كُلَّ ذِي حَقٍّ حَقَّهُ فَأَتَيَا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرَا ذَلِكَ، فَقَالَ لَهُ: صَدَقَ سَلْمَانُ.

मुवाख़ात (भाई चारा) कायम किया। फिर सलमान, अबू दर्दा से मिलने गए तो उम्मे दर्दा को मैली कुचैली[1] हालत में देखा कहने लगे, आप की हालत मैली कुचैली क्यों है? तो उन्होंने कहा: आपके भाई अबू दर्दा को दुनिया की हाजत ही नहीं है। (रावी कहते हैं:) फिर जब अबू दर्दा घर आए तो उन (सलमान) की तरफ़ खाना बढ़ाते हुए कहने लगे, तुम खाओ मेरा रोज़ा है। उन्होंने कहा, जब तक आप न खाएंगे मैं भी नहीं खाउंगा। रावी कहते हैं: फिर उन्होंने भी खा लिया फिर जब रात हुई तो अबू दर्दा (رضي الله عنه) नमाज़ के लिए खड़े होने लगे तो सलमान ने कहा सो जाएँ। वह सो गए। फिर कुछ देर बाद उठने लगे तो उन से कहा: सो जाएँ, वह सो गए। जब सुबह का वक़्त करीब हुआ तो सलमान ने उन से कहा: अब उठें, फिर वह दोनों उठे और नमाज़े तहज्जुद पढ़ी फिर सलमान ने अबू दर्दा से कहा: आप पर आप की जान का हक़ है, आप के रब का आप पर हक़ है, आप के मेहमान का आप पर हक़ है और आप की बीवी का भी आप पर हक़ है, चुनांचे आप हर हक़दार को उसका हक़ दें। फिर वह दोनों नबी (ﷺ) के पास आए तो आप(ﷺ) से इसका ज़िक्र किया। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "सलमान ने सच कहा।"

सहीह: बुख़ारी: 1968, इब्ने खुज़ैमा:2144, इब्ने हिब्बान:320

तौज़ीह: مُتَبَذِّلَةً : बग़ैर ज़ीनत के मैली कुचैली हालत।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह है। और अबू उमैस का नाम उत्बा बिन अब्दुल्लाह है जो अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह मसऊदी के भाई थे।

64 بَابٌ مِنْهُ وَمَنِ التَمَسَ رِضَاءَ النَّاسِ بِسَخَطِ اللهِ ومن عكسه ..

64 - जो शख़्स लोगों को खुश कर के अल्लाह को नाराज़ करे उसकी सज़ा और उसके बरअक्स काम करने वाले का बयान

2414 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ عَبْدِ الوَهَّابِ بْنِ الوَرْدِ، عَنْ رَجُلٍ، مِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ قَالَ: كَتَبَ مُعَاوِيَةُ إِلَى عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ أَنِ اكْتُبِي إِلَيَّ كِتَابًا تُوصِينِي فِيهِ، وَلاَ تُكْثِرِي عَلَيَّ، فَكَتَبَتْ عَائِشَةُ إِلَى مُعَاوِيَةَ: سَلاَمٌ عَلَيْكَ. أَمَّا بَعْدُ: فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: مَنِ التَمَسَ رِضَاءَ اللهِ بِسَخَطِ النَّاسِ كَفَاهُ اللَّهُ مُؤْنَةَ النَّاسِ، وَمَنِ التَمَسَ رِضَاءَ النَّاسِ بِسَخَطِ اللهِ وَكَلَهُ اللَّهُ إِلَى النَّاسِ، وَالسَّلاَمُ عَلَيْكَ.

2414 - मदीना के एक आदमी से रिवायत है कि मुआविया (رضي الله عنه) ने आयशा (رضي الله عنها) की तरफ़ ख़त लिखा कि मुझे कोई नसीहत लिख कर भेजिए लेकिन बहुत ज़्यादा न हो। रावी कहते हैं: फिर सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) ने मुआविया (رضي الله عنه) की तरफ़ ख़त लिखा, सलामुन अलैक अम्मा बाद! मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना, ''जो शख़्स लोगों को नाराज़ कर के अल्लाह को राजी कर लेता है तो अल्लाह तआला उसे लोगों की बातों से काफी हो जाएगा और जो शख़्स अल्लाह की नाराज़गी के साथ लोगों की रजामंदी तलाश करे तो अल्लाह तआला उसे लोगों की तरफ़ सौंप देते हैं। वस्सलामु अलैक''

सहीह: इब्ने हिब्बान:276.

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं: हमें मुहम्मद बिन यह्या ने वह कहते हैं: हमें मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने सुफ़ियान सौरी से उन्होंने हिशाम बिन उर्वा से उनके बाप के ज़रिए सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) से बयान की है कि उन्होंने मुआविया (رضي الله عنه) की तरफ़ ख़त लिखा। फिर इस मफ़हूम की हदीस बयान की लेकिन वह मर्फ़ू नहीं है।

ख़ुलासा

- सेहत और फ़रागत को ग़नीमत समझते हुए नेक आमाल की तरफ़ तवज्जोह दी जाए।
- सबसे बड़ा इबादत गुज़ार वह है जो हराम चीज़ों से बचता हो।
- हर वक़्त मौत को याद रखना चाहिए क्योंकि यह खुशियों को ख़त्म कर देती है।
- क़ब्र आख़िरत की मंजिलों में से पहली मंज़िल है।
- अल्लाह के डर से रोते हुए आंखों से निकलने वाले आंसू अल्लाह की गज़ब की आग को ठंडा कर देते हैं।
- लोगों को हंसाने के लिए लतीफ़ा गोई करना जहन्नम में जाने का बाइस है।
- अच्छा मुसलमान बनने के लिए फ़ुज़ूल बातों को छोड़ना होगा।
- कम बोलना अक़्लमंदी है।
- अल्लाह के नज़दीक पूरी दुनिया मच्छर के पर के बराबर भी हैसियत नहीं रखती।
- दुनिया मोमिन के लिए क़ैद खाना और काफ़िर के लिए जन्नत है।
- दुनिया का साजो सामान इंसान को अल्लाह और आख़िरत से गाफ़िल कर देने वाला है।
- इब्ने आदम फ़ित्रतन लालची है।
- इंसान का माल वही है जो खा कर ख़त्म कर दे या आगे अल्लाह के रास्ते में जमा करा दे।
- नबी (ﷺ) और आप के सहाबा ने इन्तिहाई मुश्किल हालात में ज़िंदगी बसर की थी।
- रूपये पैसे का पुजारी आखिरकार हलाक ही होता है।
- रियाकारी के लिए किया गया अमल बेकार और ज़ाया है।
- आजमाइशों पर सब्र करने वालों के लिए जन्नत की खुशख़बरी है।
- ज़बान और शर्मगाह की हिफाज़त करने वाले को जन्नत की ज़मानत दी गई है।

मज़मून नम्बर 35.

أَبْوَابُ صِفَةِ الْقِيَامَةِ وَالرَّقَائِقِ وَالْوَرَعِ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

रसूलुल्लाह (ﷺ) से मर्वी क़यामत के अहवाल, दिलों को नर्म करने वाली और ख़ौफ़े इलाही पैदा करने वाली बातें

तआरुफ़

60 अबवाब और 108 अहादीस पर मुश्तमिल इस उन्वान में आप पढ़ेंगे कि:

- क़यामत की हौल्नाकियां कैसे होंगी?
- नबी (ﷺ) की शफ़ाअत किन लोगों के लिए होगी?
- दुनिया में गुज़ारा कैसे किया जाए?

1 بَابٌ فِي الْقِيَامَةِ

2415 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ خَيْثَمَةَ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا مِنْكُمْ مِنْ رَجُلٍ إِلاَّ سَيُكَلِّمُهُ رَبُّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَيْسَ بَيْنَهُ وَبَيْنَهُ تُرْجُمَانٌ، فَيَنْظُرُ أَيْمَنَ مِنْهُ فَلاَ يَرَى شَيْئًا إِلاَّ شَيْئًا قَدَّمَهُ، ثُمَّ يَنْظُرُ أَشْأَمَ مِنْهُ فَلاَ يَرَى شَيْئًا إِلاَّ شَيْئًا قَدَّمَهُ، ثُمَّ يَنْظُرُ تِلْقَاءَ وَجْهِهِ فَتَسْتَقْبِلُهُ النَّارُ. قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ اسْتَطَاعَ مِنْكُمْ أَنْ يَقِيَ وَجْهَهُ حَرَّ النَّارِ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَةٍ فَلْيَفْعَلْ.

1 - क़यामत का बयान।

2415 - सय्यदना अदी बिन हातिम (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''तुम में से हर एक आदमी से अन्क़रीब क़यामत के दिन उसका रब बात करेगा उनके दर्मियान कोई तर्जुमान नहीं होगा फिर आदमी अपनी दायें तरफ देखेगा तो उसे अपनी भेजी हुई चीजों के अलावा कुछ नज़र नहीं आयेगा। फिर बाएं तरफ़ देखेगा तो वही नज़र आएगा जो उस ने आगे भेजा था। फिर अपने चेहरे के सामने देखेगा तो सामने से आग (जहन्नम) नज़र आयेगी।''

बुख़ारी:7512.मुस्लिम:1012.इब्ने माजह: 185. निसाई:2552.

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''तुम में जो शख़्स खुजूर के एक टुकड़े से भी अपने चेहरे को आग से बचाने की ताक़त रखता है तो उसे यह काम करना चाहिए।''

तौज़ीह: قيامت: यह लफ़्ज़ قيام से मुश्तक़ है जिसका मानी है खड़ा होना, क़यामत की वजहे तस्मिया भी यही है कि उस दिन लोग रब्बुल आलमीन के सामने आमाल की जज़ा व सज़ा के लिए खड़े होंगे। (अल्लाह बेहतर जानता है।)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

अबू ईसा कहते हैं: हमें अबू साइब ने वह कहते हैं: हमें एक दिन वकीअ़ ने आमश के हवाले से यह हदीस बयान की फिर जब इस हदीस को बयान करने से फ़ारिग़ हुए तो फरमाने लगे, यहाँ पर अहले खुरासान का जो आदमी है। वह खुरासान में इस हदीस को ज़ाहिरन बयान करने में सवाब की उम्मीद रखे।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इसकी वजह यह थी कि खुरासान में रहने वाले जहमिय्या इसका इन्कार करते थे। अबू साइब का नाम सल्म बिन जुनादा बिन ख़ालिद बिन जाबिर बिन समुरा कूफी है नीज़ यह हदीस हसन सहीह है।

2416 - حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ مَسْعَدَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا حُصَيْنُ بْنُ نُمَيْرٍ أَبُو مِحْصَنٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ قَيْسٍ الرَّحَبِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَطَاءُ بْنُ أَبِي رَبَاحٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لاَ تَزُولُ قَدَمُ ابْنِ آدَمَ يَوْمَ القِيَامَةِ مِنْ عِنْدِ رَبِّهِ حَتَّى يُسْأَلَ عَنْ خَمْسٍ، عَنْ عُمُرِهِ فِيمَ أَفْنَاهُ، وَعَنْ شَبَابِهِ فِيمَ أَبْلاَهُ، وَمَالِهِ مِنْ أَيْنَ اكْتَسَبَهُ وَفِيمَ أَنْفَقَهُ، وَمَاذَا عَمِلَ فِيمَا عَلِمَ.

2416 - सय्यदना इब्ने मसऊद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''क़यामत के दिन इब्ने आदम के क़दम उसके रब के पास उठ नहीं सकेंगे जब तक उससे पांच चीजों के बारे में सवाल न किया जाए, उसकी उम्र के बारे में कि किस काम में ख़त्म की, उसकी जवानी के बारे में कि किस काम में ख़राब किया, उसके माल के बारे में कि कहाँ से कमाया और किस काम में ख़र्च किया और अपने इल्म पर क्या अमल किया?''

सहीह: अबू याला:5271. अल-कामिल:2/763

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे इब्ने मसऊद के ज़रिए नबी (ﷺ) से बतरीक हुसैन बिन कैस ही जानते हैं और हुसैन बिन कैस को हदीस के मामले में उसके हाफ़िज़े की वजह से ज़ईफ़ कहा गया है। नीज़ इस बारे में अबू बर्ज़ा और अबू सईद (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

2417 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا الأَسْوَدُ بْنُ عَامِرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ عَيَّاشٍ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ جُرَيْجٍ، عَنْ أَبِي بَرْزَةَ الأَسْلَمِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ تَزُولُ قَدَمَا عَبْدٍ يَوْمَ القِيَامَةِ حَتَّى يُسْأَلَ عَنْ عُمُرِهِ فِيمَا أَفْنَاهُ، وَعَنْ عِلْمِهِ فِيمَ فَعَلَ، وَعَنْ مَالِهِ مِنْ أَيْنَ اكْتَسَبَهُ وَفِيمَ أَنْفَقَهُ، وَعَنْ جِسْمِهِ فِيمَ أَبْلاَهُ.

2417 - सय्यदना अबू बर्ज़ा अल अस्लमी (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''क़यामत के दिन बन्दे के पाँव उस वक़्त तक नहीं हिल सकेंगे जब तक उस से पूछा न जाए कि उम्र कहाँ ख़त्म की, इल्म के मुताबिक़ क्या अमल किया, माल कहाँ से कमाया और किस काम में खर्च किया और जिस्म को कहाँ बोसीदा किया?''

सहीह: दारमी, 543. अबू याला:7434

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और सईद बिन अब्दुल्लाह बिन जुरैज बस्रा के रहने वाले और सय्यदना अबू बर्ज़ा अल अस्लमी (ﷺ) के मौला थे और अबू बर्ज़ा अल अस्लमी (ﷺ) का नाम नज़ला बिन उबैद (ﷺ) है।

2 بَابُ مَا جَاءَ فِي شَأْنِ الحِسَابِ وَالقِصَاصِ

2 - हिसाब और क़िसास कैसे होगा?

2418 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ العَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنِ العَلاَءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: أَتَدْرُونَ مَنِ الْمُفْلِسُ؟ قَالُوا: الْمُفْلِسُ فِينَا يَا رَسُولَ اللهِ مَنْ لاَ دِرْهَمَ لَهُ وَلاَ مَتَاعَ، قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الْمُفْلِسُ مِنْ أُمَّتِي مَنْ يَأْتِي يَوْمَ القِيَامَةِ بِصَلاَتِهِ وَصِيَامِهِ وَزَكَاتِهِ، وَيَأْتِي قَدْ شَتَمَ هَذَا وَقَذَفَ هَذَا، وَأَكَلَ مَالَ هَذَا، وَسَفَكَ دَمَ هَذَا، وَضَرَبَ هَذَا

2418 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''क्या तुम जानते हो कि मुफ़्लिस कौन है?'' लोगों ने अर्ज़ किया, ''ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! हम में मुफ़्लिस वह है जिसके पास दिरहम और सामान न हो।'' रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ''मेरी उम्मत में मुफ़्लिस वह है जो क़यामत के दिन नमाज़, रोज़ा और ज़कात का अमल लेकर आयेगा और इस हालत में आयेगा कि किसी को गाली दी होगी, किसी पर बोहतान लगाया होगा, किसी का माल खाया होगा, किसी का खून बहाया होगा और किसी को मारा होगा, फिर उसे बिठाया जाएगा यह मज़लूम उसकी नेकियाँ ले लेगा। यह भी उसकी

فَيَقْعُدُ فَ يَقْتَصُّ هَذَا مِنْ حَسَنَاتِهِ، وَهَذَا مِنْ حَسَنَاتِهِ، فَإِنْ فَنِيَتْ حَسَنَاتُهُ قَبْلَ أَنْ يَقْتَصَّ مَا عَلَيْهِ مِنَ الخَطَايَا أُخِذَ مِنْ خَطَايَاهُمْ فَطُرِحَ عَلَيْهِ ثُمَّ طُرِحَ فِي النَّارِ.

नेकियाँ ले लेगा फिर अगर उसकी नेकियाँ उसके गुनाहों के क़िसास (बदले) से पहले ख़त्म हो जायेंगी तो उन (मजलूमों) की बुराइयां उस पर डाल दी जायेंगी फिर उसे जहन्नम में फ़ेंक दिया जाएगा।''

मुस्लिम:2581, मुसनद अहमद:2/303.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2419 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، وَنَصْرُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الكُوفِيُّ، قَالاَ: حَدَّثَنَا الْمُحَارِبِيُّ، عَنْ أَبِي خَالِدٍ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَبِي أُنَيْسَةَ، عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: رَحِمَ اللَّهُ عَبْدًا كَانَتْ لأَخِيهِ عِنْدَهُ مَظْلِمَةٌ فِي عِرْضٍ أَوْ مَالٍ، فَجَاءَهُ فَاسْتَحَلَّهُ قَبْلَ أَنْ يُؤْخَذَ وَلَيْسَ ثَمَّ دِينَارٌ وَلاَ دِرْهَمٌ، فَإِنْ كَانَتْ لَهُ حَسَنَاتٌ أُخِذَ مِنْ حَسَنَاتِهِ، وَإِنْ لَمْ تَكُنْ لَهُ حَسَنَاتٌ حَمَّلُوهُ عَلَيْهِ مِنْ سَيِّئَاتِهِمْ.

2419 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''अल्लाह तआला उस बन्दे पर रहम करे जिस से अपने किसी मुसलमान भाई पर माल या इज़्ज़त के लिहाज़ से कोई ज्यादती हुई हो तो वह उसके पास आकर उसे माफ़ करवा लेता है इससे पहले कि उस से वहाँ (हिसाब) लिया जाए जहां दीनार होंगे न दिरहम। फिर अगर उसकी नेकियाँ होंगी तो उसकी नेकियाँ ले ली जायेंगी और अगर न हुई तो उस पर उन मजलूमों के गुनाह डाल दिए जायेंगे।"

तयालिसी:2318, मुसनद अहमद:2/435, बुखारी: 3/170

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: सईद मक़्बुरी के तरीक़ से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। और मालिक बिन अनस ने भी इसे सईद मक़्बुरी से बवास्ता अबू हुरैरा (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) से ऐसे ही रिवायत किया है।

2420 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ العَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنِ العَلاَءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَتُؤَدُّنَّ الحُقُوقَ إِلَى أَهْلِهَا حَتَّى يُقَادَ لِلشَّاةِ الجَلْحَاءِ مِنَ الشَّاةِ القَرْنَاءِ.

2420 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''तुममें से हकदारों के हुक़ूक़ ज़रूर लिए जायेंगे यहाँ तक कि सींगों के[1] बग़ैर बकरी को सींगों वाली बकरी से बदला लेकर दिया जाएगा।''

मुस्लिम:2582, मुसनद अहमद:2/230, बैहक़ी:6/93

तौज़ीह: الجَلْحَاء : वह बकरी जिस के सींग न हों इस के बरअक्स सींगों वाली को قرناء कहा जाता है।

वज़ाहत: इस बारे में अबू ज़र और अब्दुल्लाह बिन उनैस (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2421 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ يَزِيدَ بْنِ جَابِرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي سُلَيْمُ بْنُ عَامِرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمِقْدَادُ، صَاحِبُ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: إِذَا كَانَ يَوْمُ القِيَامَةِ أُدْنِيَتِ الشَّمْسُ مِنَ العِبَادِ حَتَّى تَكُونَ قِيدَ مِيلٍ أَوْ اثْنَيْنِ، قَالَ سُلَيْمٌ: لاَ أَدْرِي أَيَّ الْمِيلَيْنِ عَنَى؟ أَمَسَافَةُ الأَرْضِ، أَمْ الْمِيلُ الَّذِي يُكْحَلُ بِهِ الْعَيْنُ؟، قَالَ: فَتَصْهَرُهُمُ الشَّمْسُ، فَيَكُونُونَ فِي العَرَقِ بِقَدْرِ أَعْمَالِهِمْ، فَمِنْهُمْ مَنْ يَأْخُذُهُ إِلَى عَقِبَيْهِ، وَمِنْهُمْ مَنْ يَأْخُذُهُ إِلَى رُكْبَتَيْهِ، وَمِنْهُمْ مَنْ يَأْخُذُهُ إِلَى حِقْوَيْهِ، وَمِنْهُمْ مَنْ يُلْجِمُهُ إِلْجَامًا فَرَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُشِيرُ بِيَدِهِ إِلَى فِيهِ: أَيْ يُلْجِمُهُ إِلْجَامًا.

2421 - सहाबिए रसूल सय्यदना मिक़्दाद बिन अस्वद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: ''जब क़यामत का दिन होगा तो सूरज को बन्दों के (इस क़दर) क़रीब कर दिया जाएगा यहाँ तक कि वह एक या दो मील के फ़ासिले पर आ जायेगा।'' सुलैम बिन आमिर कहते हैं, मुझे मालूम नहीं कि कौनसा मील मुराद लिया है। ज़मीन की मसाफ़त का या वह मील जिससे आँख में सुर्मा लगाया जाता है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, ''फिर सूरज उनको पिघला देगा तो वह अपने आमाल के मुताबिक़ पसीने में (गर्क़) होंगे उनमें से किसी को उसकी एड़ी तक पकड़ लेगा, किसी को उसके घुटनों तक, किसी को उसकी कमर तक और उन में से किसी को उसकी लगाम पहनाई जायेगी'' फिर मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा आप(ﷺ) अपने हाथ से अपने मुंह की तरफ इशारा कर रहे थे यानी इसे लगाम दी जाए।

सहीह: मुस्लिम: 2864. मुसनद अहमद:3/6. इब्ने हिब्बान:6330.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।और इस बारे में अबू सईद और इब्ने उमर (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

2422 - حَدَّثَنَا أَبُو زَكَرِيَّا يَحْيَى بْنُ دُرُسْتَ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ

2422 - नाफ़े, इब्ने उमर (رضي الله عنه) से रिवायत करते हैं जब कि हम्माद कहते हैं, हमारे नजदीक यह मर्फ़ू हदीस है आयत, ''जिस दिन लोग

أَيُّوبَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ حَمَّادٌ: وَهُوَ عِنْدَنَا مَرْفُوعٌ، {يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ} قَالَ: يَقُومُونَ فِي الرَّشْحِ إِلَى أَنْصَافِ آذَانِهِمْ.

रब्बुल आलमीन के सामने खड़े होंगे।'' (अल मुतफ्फिफीन: 6) के बारे में फ़र्माते हैं : ''लोग निस्फ़ कानों तक पसीने में खड़े होंगे।''

बुखारी:4938. मुस्लिम:2862. इब्ने माजह:4278.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

अबू ईसा कहते हैं: हमें हन्नाद ने उन्हें ईसा बिन यूनुस ने इब्ने औन से उन्हें नाफ़ेअ ने बवास्ता इब्ने उमर (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) से ऐसी ही हदीस बयान की है।

3 بَابُ مَا جَاءَ فِي شَأْنِ الحَشْرِ

3 - हश्र की कैफ़ियत।

2423 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ الزُّبَيْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ النُّعْمَانِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يُحْشَرُ النَّاسُ يَوْمَ القِيَامَةِ حُفَاةً عُرَاةً غُرْلاً كَمَا خُلِقُوا، ثُمَّ قَرَأَ {كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ وَعْدًا عَلَيْنَا إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ} وَأَوَّلُ مَنْ يُكْسَى مِنَ الخَلاَئِقِ إِبْرَاهِيمُ، وَيُؤْخَذُ مِنْ أَصْحَابِي بِرِجَالٍ ذَاتَ اليَمِينِ وَذَاتَ الشِّمَالِ، فَأَقُولُ: يَا رَبِّ أَصْحَابِي فَيُقَالُ: إِنَّكَ لاَ تَدْرِي مَا أَحْدَثُوا بَعْدَكَ، إِنَّهُمْ لَمْ يَزَالُوا مُرْتَدِّينَ عَلَى أَعْقَابِهِمْ مُنْذُ فَارَقْتَهُمْ، فَأَقُولُ كَمَا قَالَ العَبْدُ الصَّالِحُ: {إِنْ تُعَذِّبْهُمْ

2423 - सय्यदना इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''क़यामत के दिन लोगों को नंगे पाँव, नंगे बदन और बगैर ख़त्ना के जमा किया जाएगा जिस तरह पैदा किए गये थे फिर आप (ﷺ) ने यह आयत पढ़ी ''जिस तरह हमने पहली मर्तबा पैदा किया हम दोबारा भी बनाएंगे यह हमारा वादा है यक़ीनन हम यह काम करने वाले हैं।'' (अंबिया: 104) और पूरी मख्लूक़ में सब से पहले इब्राहीम (عليه السلام) को लिबास दिया जाएगा और मेरी उम्मत के कुछ लोगों को दायें और बाएं जानिब से पकड़ लिया जाएगा तो मैं कहूंगा: ''ऐ मेरे परवरदिगार! मेरे उम्मती हैं। तो कहा जाएगा: आप नहीं जानते कि इन्होंने आप के बाद क्या- क्या नए काम किए। जब से आप ने इन्हें छोड़ा है यह अपनी एड़ियों के बल फिरते रहे फिर मैं ऐसे ही कहूंगा जैसे नेक बन्दे (ईसा عليه السلام) ने कहा था: ''अगर तु इन्हें

فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَإِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ}.

अज़ाब दे तो यह तेरे ही बन्दे हैं और अगर तु इन्हें बख़्श दे तो बेशक तु ग़ालिब हिक्मत वाला है।''(अल- मायदा: 118)

बुखारी:3349. मुस्लिम:2860.निसाई:2081

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं: हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने और मुहम्मद बिन मुसन्ना ने वह दोनों कहते हैं: हमें मुहम्मद बिन जाफ़र ने बवास्ता शोबा, मुग़ीरह बिन नौमान से इसी सनद के साथ ऐसे ही रिवायत की है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2424 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا بَهْزُ بْنُ حَكِيمٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: إِنَّكُمْ تُحْشَرُونَ رِجَالاً وَرُكْبَانًا، وَتُجَرُّونَ عَلَى وُجُوهِكُمْ.

2424 - बहज़ बिन हकीम अपने बाप के ज़रिए अपने दादा (सय्यदना मुआविया (ﷺ) से रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फरमाते हुए सुना, ''तुम पैदल और सवार हालत में जमा किए जाओगे और तुम्हें चेहरों के बल घसीटा जाएगा।''

सहीह: 2192 पर तख़रीज देखें।

वाज़हत: इस बारे में अबू हुरैरा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

4 بَابُ مَا جَاءَ فِي العَرْضِ

4 - (अदालते इलाही में) पेशी का बयान।

2425 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ عَلِيٍّ، عَنِ الحَسَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يُعْرَضُ النَّاسُ يَوْمَ القِيَامَةِ ثَلَاثَ عَرَضَاتٍ، فَأَمَّا عَرْضَتَانِ فَجِدَالٌ وَمَعَاذِيرُ، وَأَمَّا العَرْضَةُ الثَّالِثَةُ، فَعِنْدَ ذَلِكَ تَطِيرُ الصُّحُفُ فِي الأَيْدِي، فَآخِذٌ بِيَمِينِهِ وَآخِذٌ بِشِمَالِهِ.

2425 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''क़यामत के दिन लोगों की (अल्लाह के सामने) तीन पेशियाँ होंगी: दो मर्तबा तो झगड़ा और उज़्र होंगे लेकिन तीसरी पेशी के वक़्त आमाल नामे हाथों में दिए जायेंगे, कोई दायें हाथ से लेगा और कोई बाएं हाथ से।''

ज़ईफ़

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह नहीं है। क्योंकि हसन (ﷺ) ने अबू हुरैरा (ﷺ) से सिमा (सुनना) नहीं किया। बअ़ज़ ने इसे अली बिन अली रिफ़ाई से बवास्ता हसन, अबू मूसा (ﷺ) के ज़रिए नबी (ﷺ) से रिवायत किया है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस भी हसन (ﷺ) के अबू मूसा (ﷺ) से सिमा (सुनना) न होने की वजह से सहीह नहीं है।

5 - जिस से (हिसाब में) मुनाकशा किया गया वह हलाक हो गया।

5 بَابٌ مِنْهُ مَنْ نُوقِشَ هلك

2426 - सय्यदा आयशा (ﷺ) बयान करती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना आप फ़रमा रहे थे: ''जिससे (हिसाब में) मुनाकशा किया गया वह हलाक हो गया।" मैंने अर्ज़ किया, ''ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह तआला तो फ़रमाता है, पस जिस शख़्स के दायें हाथ में नामे आमाल दिया गया तो अन्क़रीब उससे आसान हिसाब होगा।'' (अल-इंशिकाक़:7- 8) आप (ﷺ) ने फ़रमाया, ''वह सिर्फ़ आमाल को सामने करना है।''

2426 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ الأَسْوَدِ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: مَنْ نُوقِشَ الحِسَابَ هَلَكَ، قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى يَقُولُ: {فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا} قَالَ: ذَلِكَ العَرْضُ.

बुखारी:103. मुस्लिम:2876. अबू दाऊद:3093.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह हसन है। इसे अय्यूब ने भी इब्ने अबी मुलैका से इसी तरह रिवायत किया है।

6 - रब तआ़ला का बन्दे से उन नेअ़मतों के बारे में पूछना जो उसे दुनिया में अता की थीं।

6 بَابٌ مِنْهُ سوال الرب عبده خوله في الدنيا.

2427 - सय्यदना अनस (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ''क़यामत के दिन इब्ने आदम को ऐसी हालत में लाया जाएगा कि गोया वह बकरी का बच्चा हो। फिर

2427 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ مُسْلِمٍ، عَنِ الحَسَنِ، وَقَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ،

عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يُجَاءُ بِابْنِ آدَمَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كَأَنَّهُ بَذَجٌ فَيُوقَفُ بَيْنَ يَدَيِ اللهِ فَيَقُولُ اللَّهُ لَهُ: أَعْطَيْتُكَ وَخَوَّلْتُكَ وَأَنْعَمْتُ عَلَيْكَ، فَمَاذَا صَنَعْتَ؟ فَيَقُولُ: يَا رَبِّ جَمَعْتُهُ وَثَمَّرْتُهُ فَتَرَكْتُهُ أَكْثَرَ مَا كَانَ فَارْجِعْنِي آتِكَ بِهِ كُلِّهِ، فَيَقُولُ لَهُ: أَرِنِي مَا قَدَّمْتَ، فَيَقُولُ: يَا رَبِّ جَمَعْتُهُ وَثَمَّرْتُهُ فَتَرَكْتُهُ أَكْثَرَ مَا كَانَ، فَارْجِعْنِي آتِكَ بِهِ كُلِّهِ، فَإِذَا عَبْدٌ لَمْ يُقَدِّمْ خَيْرًا، فَيُمْضَى بِهِ إِلَى النَّارِ.

उसे अल्लाह तआला के सामने खड़ा किया जाएगा तो अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, मैंने तुझे माल अता किया, मैंने तुझे गुलाम, लौंडियों और दीगर अस्बाब से नवाज़ा और तुझ पर नेअ्मतें निछावर की। तूने क्या किया? तो वह कहेगा, मैंने उसे जमा किया, उसे बढ़ाया और पहले से ज़्यादा छोड़ कर आया हूँ। मुझे वापस भेज दे मैं तेरे पास सारा माल लेकर आता हूँ। अल्लाह तआला उससे फ़रमाएंगे, मुझे वह दिखा जो तूने आगे भेजा। वह कहेगा : ''ऐ मेरे परवरदिगार! मैंने उसे जमा किया उसे बढ़ाया और पहले से ज़्यादा छोड़ कर आया हूँ, मुझे वापस भेज दे मैं वह सारा तेरे पास लेकर आता हूँ लेकिन उस बन्दे ने आगे कोई माल नहीं भेजा होगा फिर उसे जहन्नम की तरफ चला दिया जाएगा।''

ज़ईफ़

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस हदीस को बहुत से लोगों ने हसन से उनका कौल बयान किया है और इस्माईल बिन मुस्लिम हाफ़िज़े की वजह से इस हदीस में ज़ईफ़ है।

नीज़ अबू हुरैरा और अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

2428 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ الزُّهْرِيُّ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ سُعَيْرٍ أَبُو مُحَمَّدٍ التَّمِيمِيُّ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ، قَالاَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يُؤْتَى بِالعَبْدِ يَوْمَ القِيَامَةِ فَيَقُولُ اللَّهُ لَهُ: أَلَمْ أَجْعَلْ لَكَ سَمْعًا وَبَصَرًا

2428 - सय्यदना अबू हुरैरा और अबू सईद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''क़यामत के दिन एक बन्दे को लाया जाएगा तो अल्लाह तआला उससे फ़रमाएंगे, क्या मैंने तुम्हें कान, आँखें, माल और औलाद नहीं दी और तुम्हारे लिए चौपायों और खेती को मुसख्खर नहीं किया और मैंने तुम्हें छोड़ दिया कि तुम रईस बनो और लोगों के मालों का चौथा हिस्सा लो। क्या तुम्हें यक़ीन

وَمَالاً وَوَلَدًا، وَسَخَّرْتُ لَكَ الأَنْعَامَ وَالحَرْثَ، وَتَرَكْتُكَ تَرْأَسُ وَتَرْبَعُ فَكُنْتَ تَظُنُّ أَنَّكَ مُلاَقِي يَوْمَكَ هَذَا؟ فَيَقُولُ: لاَ، فَيَقُولُ لَهُ: اليَوْمَ أَنْسَاكَ كَمَا نَسِيتَنِي.

था कि तु मुझे इस दिन मिलेगा? वह कहेगा, ''नहीं'' तो अल्लाह तआला उस से फ़रमाएंगे, आज मैं तुम्हें भुला दूंगा जैसे तुमने मुझे भुला दिया था।''

सहीह: अत-तौहीद ले-इब्ने खुज़ैमा: 155.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह ग़रीब है। और (اليَوْمَ أَنْسَاكَ كَمَا نَسِيتَنِي) का मानी है कि आज मैं तुम्हें अज़ाब में छोड़ दूंगा, मुहद्दिसीन ने यही तफ़्सीर की है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: बअ़ज़ उलमा ने {فَالْيَوْمَ نَنْسَاهُمْ} (अल-आराफ़:51) की भी यही तफ़्सीर की है कि आज हम तुम्हें अज़ाब में छोड़ देंगे।

7 بَابٌ مِنْهُ تفسير قوله تعالى: {يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا}

7 - फ़रमाने इलाही: यौमइज़िन तुहद्दिसु अख़्बारहा की तफ़सीर।

2429 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي سُلَيْمَانَ، عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَرَأَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: {يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا} قَالَ: أَتَدْرُونَ مَا أَخْبَارُهَا؟ قَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، قَالَ: فَإِنَّ أَخْبَارَهَا أَنْ تَشْهَدَ عَلَى كُلِّ عَبْدٍ أَوْ أَمَةٍ بِمَا عَمِلَ عَلَى ظَهْرِهَا أَنْ تَقُولَ: عَمِلَ كَذَا وَكَذَا يَوْمَ كَذَا وَكَذَا، قَالَ: فَهَذِهِ أَخْبَارُهَا.

2429 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने यह आयत पढ़ी, ''उस दिन ज़मीन अपनी ख़बरें बयान कर देगी।'' (अज-ज़िल्ज़ाल:4) फिर आप (ﷺ) ने फ़रमाया, ''क्या तुम जानते हो उसकी ख़बरें क्या हैं?'' लोगों ने अर्ज़ किया, अल्लाह और उसके रसूल ही जानते हैं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, ''उसका ख़बर देना यह है कि हर मर्द और औरत के बारे में गवाही देगी जो उस ने इस ज़मीन की पुश्त (पीठ) पर किया होगा और वह यह कहेगी, इस ने फुलां फुलां दिन यह काम किया था।'' आप(ﷺ) ने फ़रमाया, ''अल्लाह ने उसे यही हुक्म दिया है।''

ज़ईफ़ुल इस्नाद: मुसनद अहमद: 2/374. हाकिम:2/256.इब्ने हिब्बान:7360.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

8 - सूर की कैफ़ियत।

8 بَابُ مَا جَاءَ فِي شَأْنِ الصُّورِ

2430 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (ﷺ) बयान करते हैं कि एक देहाती नबी (ﷺ) के पास आकर पूछने लगा, सूर क्या है? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, ''वह एक सींग है जिसमें फूँक मारी जाएगी।''

सहीह: अबू दाऊद:4742. मुसनद अहमद:2/162. दारमी:2801.

2430 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ التَّيْمِيُّ، عَنْ أَسْلَمَ العِجْلِيِّ، عَنْ بِشْرِ بْنِ شَغَافٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ العَاصِ، قَالَ: جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: مَا الصُّورُ؟ قَالَ: قَرْنٌ يُنْفَخُ فِيهِ. هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ وَقَدْ رَوَى غَيْرُ وَاحِدٍ عَنْ سُلَيْمَانَ التَّيْمِيِّ، وَلاَ نَعْرِفُهُ إِلاَّ مِنْ حَدِيثِهِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और कई लोगों ने इसे सुलैमान तैमी से रिवायत किया है। हम इसे सिर्फ़ इन्हीं के तरीक़ से ही जानते हैं।

2431 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''मैं कैसे आराम कर लूं जबकि सींग (में फूँक मारने) वाले फ़रिश्ते ने सींग को मुंह में लिया हुआ है और कान लगाए हुए हैं कि कब उसे फूँक मारने का हुक्म हो और वह फूँक मार दे।'' यह बात नबी (ﷺ) के सहाबा पर बड़ी गिराँ गुज़री, तो आप(ﷺ) ने उन से फ़रमाया, ''तुम कहो, हमें अल्लाह ही काफी है और वह अच्छा कारसाज़ है हम अल्लाह पर ही भरोसा करते हैं।''

सहीह: हुमैदी:754. मुसनद अहमद:3/7. तफ़सीर तबरी:16/29.

2431 - حَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا خَالِدٌ أَبُو الْعَلاَءِ، عَنْ عَطِيَّةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَيْفَ أَنْعَمُ وَصَاحِبُ الْقَرْنِ قَدِ الْتَقَمَ الْقَرْنَ وَاسْتَمَعَ الإِذْنَ مَتَى يُؤْمَرُ بِالنَّفْخِ فَيَنْفُخُ فَكَأَنَّ ذَلِكَ ثَقُلَ عَلَى أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ لَهُمْ: قُولُوا: حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الوَكِيلُ عَلَى اللهِ تَوَكَّلْنَا.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है और यह हदीस कई सनदों से बवास्ता अतिय्या सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) के ज़रिए नबी (ﷺ) से ऐसे ही मर्वी है।

9 - सिरात की कैफ़ियत।

9 بَابُ مَا جَاءَ فِي شَأْنِ الصِّرَاطِ

2432 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ سَعْدٍ، عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: شِعَارُ الْمُؤْمِنِ عَلَى الصِّرَاطِ، رَبِّ سَلِّمْ سَلِّمْ.

2432 - सय्यदना मुग़ीरह बिन शोबा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''सिरात पर मोमिनों का शिआर होगा: ऐ परवरदिगार! सलामत रखना, सलामत रखना।''

ज़ईफ़ इब्ने अबी शैबा: 12/505.हाकिम:2/376.

तौज़ीह: شِعَارُ : अलामत निशानी जिस से उनकी पहचान होगी।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: सय्यदना मुग़ीरह बिन शोबा (رضي الله عنه) की यह हदीस ग़रीब है। हम इसे अब्दुर्रहमान बिन इस्हाक़ के तरीक़ से ही जानते हैं। नीज़ इस बारे में अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

2433 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الصَّبَّاحِ الهَاشِمِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا بَدَلُ بْنُ الْمُحَبَّرِ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَرْبُ بْنُ مَيْمُونٍ الأَنْصَارِيُّ أَبُو الخَطَّابِ، قَالَ: حَدَّثَنَا النَّضْرُ بْنُ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: سَأَلْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَشْفَعَ لِي يَوْمَ القِيَامَةِ، فَقَالَ: أَنَا فَاعِلٌ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ فَأَيْنَ أَطْلُبُكَ؟ قَالَ: اطْلُبْنِي أَوَّلَ مَا تَطْلُبُنِي عَلَى الصِّرَاطِ. قَالَ: قُلْتُ: فَإِنْ لَمْ أَلْقَكَ عَلَى الصِّرَاطِ؟ قَالَ: فَاطْلُبْنِي عِنْدَ الْمِيزَانِ. قُلْتُ: فَإِنْ لَمْ أَلْقَكَ عِنْدَ الْمِيزَانِ؟ قَالَ: فَاطْلُبْنِي عِنْدَ الحَوْضِ فَإِنِّي لاَ أُخْطِئُ هَذِهِ الثَّلاَثَ الْمَوَاطِنَ.

2433 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैंने नबी (ﷺ) से अर्ज़ किया वह क़यामत के दिन मेरी सिफ़ारिश कर देंगे तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, ''मैं यह करूंगा।'' कहते हैं, मैंने अर्ज़ किया, मैं आप को कहाँ तलाश करूं? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, ''पहले तुम मुझे सिरात पर तलाश करना।'' मैंने कहा: अगर सिरात पर मेरी आप से मुलाक़ात न हो सके तो? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, ''फिर तुम मुझे मीजान यानी तराज़ू के पास तलाश करना।'' मैंने कहा, अगर मैं आप से मीजान के पास भी न मिल सकूं? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, ''तो तुम मुझे हौज़े कौसर के पास तलाश करना मैं इन तीन जगहों में इधर उधर नहीं हूंगा।''

सहीह: अस-सिलसिला अस-सहीहा: 2630. मुसनद अहमद:3/178.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहमतुल्लाह अलैह) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।हम इसे इसी सनद से ही जानते हैं।

10 بَابُ مَا جَاءَ فِي الشَّفَاعَةِ

2434 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا أَبُو حَيَّانَ التَّيْمِيُّ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ بْنِ عَمْرِو بْنِ جَرِيرٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: أُتِيَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِلَحْمٍ فَرُفِعَ إِلَيْهِ الذِّرَاعُ فَأَكَلَهُ وَكَانَتْ تُعْجِبُهُ فَنَهَسَ مِنْهَا نَهْسَةً ثُمَّ قَالَ: أَنَا سَيِّدُ النَّاسِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ هَلْ تَدْرُونَ لِمَ ذَاكَ؟ يَجْمَعُ اللَّهُ النَّاسَ الأَوَّلِينَ وَالآخِرِينَ فِي صَعِيدٍ وَاحِدٍ فَيُسْمِعُهُمُ الدَّاعِي وَيَنْفُذُهُمُ الْبَصَرُ وَتَدْنُو الشَّمْسُ مِنْهُمْ فَيَبْلُغُ النَّاسُ مِنَ الْغَمِّ وَالْكَرْبِ مَا لاَ يُطِيقُونَ وَلاَ يَحْتَمِلُونَ. فَيَقُولُ النَّاسُ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ: أَلاَ تَرَوْنَ مَا قَدْ بَلَغَكُمْ؟ أَلاَ تَنْظُرُونَ مَنْ يَشْفَعُ لَكُمْ إِلَى رَبِّكُمْ؟ فَيَقُولُ النَّاسُ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ: عَلَيْكُمْ بِآدَمَ، فَيَأْتُونَ آدَمَ فَيَقُولُونَ: أَنْتَ أَبُو الْبَشَرِ، خَلَقَكَ اللَّهُ بِيَدِهِ وَنَفَخَ فِيكَ مِنْ رُوحِهِ وَأَمَرَ الْمَلاَئِكَةَ فَسَجَدُوا لَكَ اشْفَعْ لَنَا

10 - शफ़ाअत का बयान।

2434 - सय्यदना अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास गोश्त लाया गया फिर आप(ﷺ) को दस्त का गोश्त दिया गया जो आप(ﷺ) को पसंद था आप(ﷺ) ने उसे एक मर्तबा नोचा फिर फ़रमाने लगे, ''मैं क़यामत के दिन लोगों का सरदार हूंगा तुम जानते हो किस वजह से? अल्लाह तआला पहले और पिछले लोगों को एक मैदान में इस तरह जमा करेगा कि उन्हें एक दाई ही बात सुना सकेगा और सब पर नज़र चली जाएगी, सूरज क़रीब हो जाएगा, फिर लोगों को इस क़दर गम और तक्लीफ़ लाहिक़ होगी जिसकी वह ताक़त नहीं रखते होंगे फिर लोग एक दूसरे से कहेंगे क्या तुम देख नहीं रहे हो कि तुम्हें क्या तक्लीफ़ पहुंची है? क्या तुम ऐसा शख़्स नहीं देखते जो तुम्हारे परवरदिगार के पास सिफ़ारिश कर सके तो लोग एक दूसरे से कहेंगे, आदम (अलैहिस्सलाम) के पास जाओ, फिर वह आदम (अलैहिस्सलाम) के पास आकर कहेंगे, आप इंसानियत के बाप हैं। अल्लाह ने आप को अपने हाथ से पैदा करके आप में अपनी रूह फूंकी और फ़रिश्तों को हुक्म दिया उन्होंने आप को सज्दा किया, आप अपने रब से हमारी सिफ़ारिश करें। क्या आप नहीं देख रहे हैं कि हम किस मुसीबत में हैं? क्या आप नहीं देख रहे हमें क्या तक्लीफ़ पहुंची है? तो

إِلَى رَبِّكَ أَلاَ تَرَى مَا نَحْنُ فِيهِ؟ أَلاَ تَرَى مَا قَدْ بَلَغَنَا؟ فَيَقُولُ لَهُمْ آدَمُ: إِنَّ رَبِّي قَدْ غَضِبَ الْيَوْمَ غَضَبًا لَمْ يَغْضَبْ قَبْلَهُ مِثْلَهُ، وَلَنْ يَغْضَبَ بَعْدَهُ مِثْلَهُ وَإِنَّهُ قَدْ نَهَانِي عَنِ الشَّجَرَةِ فَعَصَيْتُ، نَفْسِي نَفْسِي نَفْسِي، اذْهَبُوا إِلَى غَيْرِي اذْهَبُوا إِلَى نُوحٍ، فَيَأْتُونَ نُوحًا فَيَقُولُونَ: يَا نُوحُ أَنْتَ أَوَّلُ الرُّسُلِ إِلَى أَهْلِ الأَرْضِ وَقَدْ سَمَّاكَ اللَّهُ عَبْدًا شَكُورًا اشْفَعْ لَنَا إِلَى رَبِّكَ أَلاَ تَرَى إِلَى مَا نَحْنُ فِيهِ؟ أَلاَ تَرَى مَا قَدْ بَلَغَنَا؟ فَيَقُولُ لَهُمْ نُوحٌ: إِنَّ رَبِّي قَدْ غَضِبَ الْيَوْمَ غَضَبًا لَمْ يَغْضَبْ قَبْلَهُ مِثْلَهُ وَلَنْ يَغْضَبَ بَعْدَهُ مِثْلَهُ وَإِنَّهُ قَدْ كَانَ لِي دَعْوَةٌ دَعَوْتُهَا عَلَى قَوْمِي، نَفْسِي نَفْسِي نَفْسِي، اذْهَبُوا إِلَى غَيْرِي، اذْهَبُوا إِلَى إِبْرَاهِيمَ فَيَأْتُونَ إِبْرَاهِيمَ فَيَقُولُونَ: يَا إِبْرَاهِيمُ أَنْتَ نَبِيُّ اللهِ وَخَلِيلُهُ مِنْ أَهْلِ الأَرْضِ اشْفَعْ لَنَا إِلَى رَبِّكَ، أَلاَ تَرَى مَا نَحْنُ فِيهِ؟ فَيَقُولُ: إِنَّ رَبِّي قَدْ غَضِبَ الْيَوْمَ غَضَبًا لَمْ يَغْضَبْ قَبْلَهُ مِثْلَهُ وَلَنْ يَغْضَبَ بَعْدَهُ مِثْلَهُ، وَإِنِّي قَدْ كَذَبْتُ ثَلاَثَ كَذِبَاتٍ، فَذَكَرَهُنَّ أَبُو حَيَّانَ فِي

आदम (عليه السلام) उनसे कहेंगे, मेरा रब आज इस क़दर गुस्से में है कि इस से पहले इतने गुस्से में कभी नहीं था और इसके बाद भी ऐसे गुस्से में नहीं होगा और उसने मुझे दरख़्त का फल खाने से मना किया था तो मैंने उसकी नाफ़रमानी की, नफ्सी- नफ्सी- नफ्सी[1] किसी और के पास जाओ तुम नूह (عليه السلام) के पास जाओ। फिर वह नूह(عليه السلام) के पास आकर कहेंगे, ''ऐ नूह! आप ज़मीन वालों की तरफ़ पहले रसूल थे और अल्लाह ने आप को "शुक्र गुज़ार बन्दे" का नाम दिया है। आप अपने रब से हमारी सिफ़ारिश करें क्या आप नहीं देख रहे कि हम किस मुसीबत में हैं? क्या आप नहीं देख रहे हमें क्या तक्लीफ़ पहुंची है? तो नूह (عليه السلام) उन से कहेंगे, ''मेरा रब आज इस क़दर गुस्से में है कि इस से पहले इतने गुस्से में कभी नहीं था और इस के बाद भी ऐसे गुस्से में नहीं होगा। मेरे लिए एक दुआ थी जो मैंने अपनी कौम के ऊपर कर ली थी। नफ्सी- नफ्सी- नफ्सी, किसी और के पास चले जाओ। इब्राहीम(عليه السلام) के पास जाओ, तो वह इब्राहीम (عليه السلام) के पास आकर कहेंगे, ''ऐ इब्राहीम (عليه السلام)! आप अल्लाह के नबी और ज़मीन वालों में से उस के खलील हैं। सो आप अपने रब से हमारी सिफ़ारिश कीजीये क्या आप नहीं देख रहे कि हम किस मुसीबत में हैं तो वह कहेंगे, ''मेरा रब आज इस क़दर गुस्से में है कि इस से पहले इतने गुस्से में कभी नहीं देखा था और इस के बाद भी ऐसे गुस्से में

الحَدِيثِ، نَفْسِي نَفْسِي نَفْسِي، اذْهَبُوا إِلَى غَيْرِي اذْهَبُوا إِلَى مُوسَى فَيَأْتُونَ مُوسَى فَيَقُولُونَ: يَا مُوسَى أَنْتَ رَسُولُ اللهِ فَضَّلَكَ اللَّهُ بِرِسَالَتِهِ وَبِكَلَامِهِ عَلَى البَشَرِ اشْفَعْ لَنَا إِلَى رَبِّكَ، أَلاَ تَرَى مَا نَحْنُ فِيهِ؟ فَيَقُولُ: إِنَّ رَبِّي قَدْ غَضِبَ اليَوْمَ غَضَبًا لَمْ يَغْضَبْ قَبْلَهُ مِثْلَهُ وَلَنْ يَغْضَبَ بَعْدَهُ مِثْلَهُ وَإِنِّي قَدْ قَتَلْتُ نَفْسًا لَمْ أُومَرْ بِقَتْلِهَا، نَفْسِي نَفْسِي نَفْسِي، اذْهَبُوا إِلَى غَيْرِي اذْهَبُوا إِلَى عِيسَى فَيَأْتُونَ عِيسَى فَيَقُولُونَ: يَا عِيسَى أَنْتَ رَسُولُ اللهِ وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا إِلَى مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِنْهُ وَكَلَّمْتَ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ اشْفَعْ لَنَا إِلَى رَبِّكَ أَلاَ تَرَى مَا نَحْنُ فِيهِ؟ فَيَقُولُ عِيسَى: إِنَّ رَبِّي قَدْ غَضِبَ الْيَوْمَ غَضَبًا لَمْ يَغْضَبْ قَبْلَهُ مِثْلَهُ وَلَنْ يَغْضَبَ بَعْدَهُ مِثْلَهُ وَلَمْ يَذْكُرْ ذَنْبًا، نَفْسِي نَفْسِي نَفْسِي، اذْهَبُوا إِلَى غَيْرِي اذْهَبُوا إِلَى مُحَمَّدٍ، قَالَ: فَيَأْتُونَ مُحَمَّدًا فَيَقُولُونَ: يَا مُحَمَّدُ أَنْتَ رَسُولُ اللهِ وَخَاتَمُ الأَنْبِيَاءِ وَقَدْ غُفِرَ لَكَ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ اشْفَعْ لَنَا إِلَى رَبِّكَ أَلاَ تَرَى مَا نَحْنُ فِيهِ؟ فَأَنْطَلِقُ فَآتِي تَحْتَ

नहीं होगा।'' और मैंने तीन झूठ बोले थे। ''अबू हय्यान ने हदीस में उनको ज़िक्र भी किया है। नफ्सी- नफ्सी- नफ्सी, किसी और के पास चले जाओ। तुम मूसा (عليه السلام) के पास जाओ तो लोग मूसा (عليه السلام) के पास आकर कहेंगे, ''ऐ मूसा(عليه السلام)! आप अल्लाह के रसूल हैं, अल्लाह ने आप को अपनी रिसालत और क़लाम के साथ लोगों पर फ़ज़ीलत दी आप अपने रब से हमारी सिफ़ारिश कीजीये, क्या आप नहीं देख रहे कि हम किस मुसीबत में हैं? तो वह कहेंगे: मेरा रब आज इस क़दर गुस्से में है कि इस से पहले इतने गुस्से में कभी नहीं था और इस के बाद भी ऐसे गुस्से में नहीं होगा।'' और मैंने एक इंसान को क़त्ल किया जिसे मुझे क़त्ल करने का हुक्म नहीं था। नफ्सी- नफ्सी- नफ्सी, किसी और के पास जाओ।तुम ईसा (عليه السلام) के पास जाओ। तो वह ईसा (عليه السلام) के पास आकर कहेंगे, ''ऐ ईसा! आप अल्लाह के रसूल और उसका कलिमा हैं। जिसे उस ने मरियम की तरफ़ डाला था और उसकी रूह हैं और आप ने गोद में लोगों से बातें कीं आप अपने रब से हमारी सिफ़ारिश कीजीये। तो ईसा (عليه السلام) कहेंगे: मेरा रब आज इस क़दर गुस्से में है कि इस से पहले इतने गुस्से में कभी नहीं था और इस के बाद भी ऐसे गुस्से में नहीं होगा।'' और वह किसी गलती का ज़िक्र नहीं करेंगे। नफ्सी- नफ्सी- नफ्सी, किसी और के पास चले जाओ। तुम मुहम्मद (ﷺ) के पास

الْعَرْشِ فَأَخِرُّ سَاجِدًا لِرَبِّي، ثُمَّ يَفْتَحُ اللَّهُ عَلَيَّ مِنْ مَحَامِدِهِ وَحُسْنِ الثَّنَاءِ عَلَيْهِ شَيْئًا لَمْ يَفْتَحْهُ عَلَى أَحَدٍ قَبْلِي، ثُمَّ يُقَالُ: يَا مُحَمَّدُ ارْفَعْ رَأْسَكَ سَلْ تُعْطَهْ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ، فَأَرْفَعُ رَأْسِي فَأَقُولُ: يَا رَبِّ أُمَّتِي يَا رَبِّ أُمَّتِي، يَا رَبِّ أُمَّتِي، فَيَقُولُ: يَا مُحَمَّدُ أَدْخِلْ مِنْ أُمَّتِكَ مَنْ لاَ حِسَابَ عَلَيْهِ مِنَ الْبَابِ الأَيْمَنِ مِنْ أَبْوَابِ الْجَنَّةِ وَهُمْ شُرَكَاءُ النَّاسِ فِيمَا سِوَى ذَلِكَ مِنَ الأَبْوَابِ، ثُمَّ قَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنَّ مَا بَيْنَ الْمِصْرَاعَيْنِ مِنْ مَصَارِيعِ الْجَنَّةِ كَمَا بَيْنَ مَكَّةَ وَهَجَرَ وَكَمَا بَيْنَ مَكَّةَ وَبُصْرَى.

जाओ। फिर वह मुहम्मद (ﷺ) के पास आकर कहेंगे: ''ऐ मुहम्मद (ﷺ) आप अल्लाह के रसूल और ख़ातमुल अंबिया हैं आप के पहले और पिछले तमाम गुनाह बख़्श दिए गए हैं। आप अपने रब से हमारी सिफ़ारिश कीजीए क्या आप नहीं देख रहे कि हम किस मुसीबत में हैं? तो मैं चलकर अर्श के नीचे आकर अपने रब के लिए सज्दे में गिर जाउंगा। फिर अल्लाह तआला मुझ पर अपनी तारीफ़ और अच्छी सना के लिए ऐसे दरवाज़े खोलेगा जो मुझ से पहले किसी पर नहीं खोले होंगे। फिर कहा जाएगा, ''ऐ मुहम्मद! अपना सर उठाइए सवाल करें आप को दिया जाएगा और सिफ़ारिश करें सिफ़ारिश मानी जाएगी, चुनांचे मैं अपना सर उठा कर कहूंगा, ''ऐ मेरे परवरदिगार! मेरी उम्मत को माफ़ फ़रमा दे। ऐ मेरे रब! मेरी उम्मत, ऐ मेरे रब! मेरी उम्मत तो कहा जाएगा: ''ऐ मुहम्मद (ﷺ) अपनी उम्मत में से उन लोगों को जिन पर हिसाब किताब नहीं है जन्नत के दायें दरवाज़े से जन्नत में दाखिल कर ले जाएँ वह बाकी दरवाजों से भी लोगों के साथ मिलकर जा सकते हैं।'' फिर आप (ﷺ) ने फ़रमाया, ''उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मेरी जान है! जन्नत के दरवाजों[2] में से दो दरवाजों का दर्मियानी फ़ासला ऐसे है जैसे मक्का से हिज्र या मक्का से बस्रा है।"

बुखारी:3340. मुस्लिम:194. निसाई:1140.

तौज़ीह: (1) نَفْسِي نَفْسِي . : यानी मेरी अपनी जान आज ज़्यादा हक्दार है कि उसकी सिफ़ारिश

की जाए। مَصَارِيع : जमा है مصرع की दरवाज़े के दोनों अतराफ़ जहां उसके पाट लगाए जाते हैं। यानी एक दहलीज़ से दूसरी तक का फ़ासला।

वज़ाहत: इस बारे में अबू बक्र सिद्दीक़, अनस, उक़्बा बिन आमिर और अबू सईद (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और अबी हय्यान का नाम यहया बिन कूफ़ी है। यह सिक़ह् हैं और अबू ज़ुर्आ बिन अम्र बिन जरीर का नाम हरम है।

11 بَابٌ مِنْهُ حديث (شَفَاعَتِي لأَهْلِ الكَبَائِرِ مِنْ أُمَّتِي.)

11 - हदीसे रसूल (ﷺ) मेरी सिफ़ारिश मेरी उम्मत के कबीरा गुनाह करने वाले लोगों के लिए होगी।

2435 - حَدَّثَنَا العَبَّاسُ العَنْبَرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: شَفَاعَتِي لأَهْلِ الكَبَائِرِ مِنْ أُمَّتِي.

2435 - सय्यदना अनस (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''मेरी शफ़ाअत मेरी उम्मत में कबीरा गुनाह करने वाले लोगों के लिए होगी।''

सहीह: अबू दाऊद:4739. अबू याला:3284.तयालिसी: 2026

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है और इस बारे में जाबिर (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

2436 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ الطَّيَالِسِيُّ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ ثَابِتٍ البُنَانِيِّ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: شَفَاعَتِي لأَهْلِ الكَبَائِرِ مِنْ أُمَّتِي قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ عَلِيٍّ: فَقَالَ لِي جَابِرٌ: يَا مُحَمَّدُ مَنْ لَمْ يَكُنْ مِنْ أَهْلِ الكَبَائِرِ فَمَا لَهُ وَلِلشَّفَاعَةِ.

2436 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''मेरी शफ़ाअत मेरी उम्मत में कबीरा गुनाह वालों के लिए होगी।'' मुहम्मद बिन अली कहते हैं, फिर जाबिर (ﷺ) ने मुझ से कहा: ''ऐ मुहम्मद! जिस के कबीरा गुनाह ही न हो उसे शफ़ाअत की क्या ज़रुरत?

सहीह: इब्ने माजह्:4310. तयालिसी:1669. इब्ने हिब्बान:6467.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है जो कि जाफ़र बिन मुहम्मद की वजह से ग़रीब है।

12 - सत्तर हज़ार लोग बग़ैर हिसाब (जन्नत में) दाख़िल होंगे और कुछ लोग भी सिफ़ारिश करेंगे।

12 بَابٌ مِنْهُ دخول سبعين ألفا بغير حساب و بعض من يشفع له.

2437 - सय्यदना अबू उमामा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना, ''मेरे परवरदिगार ने मुझ से वादा किया है कि वह मेरी उम्मत के सत्तर हज़ार लोगों को जन्नत में दाख़िल करेगा जिन पर कोई हिसाब और अज़ाब नहीं होगा। एक हज़ार के साथ सत्तर हज़ार होंगे और मेरे रब के भी तीन लप भर कर होंगे।

सहीह: इब्ने माजह:4286. मुसनद अहमद: 5/268. इब्ने अबी शैबा: 11/471.

2437 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَرَفَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَيَّاشٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ الأَلْهَانِيِّ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا أُمَامَةَ، يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: وَعَدَنِي رَبِّي أَنْ يُدْخِلَ الجَنَّةَ مِنْ أُمَّتِي سَبْعِينَ أَلْفًا لاَ حِسَابَ عَلَيْهِمْ وَلاَ عَذَابَ مَعَ كُلِّ أَلْفٍ سَبْعُونَ أَلْفًا وَثَلاَثُ حَثَيَاتٍ مِنْ حَثَيَاتِهِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

2438 - अब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ (رحمه الله) कहते हैं: मैं एक जमाअत के साथ ईलिया में था तो उन में से एक आदमी ने कहा: मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: ''मेरी उम्मत में से एक आदमी की सिफ़ारिश के साथ बनू तमीम के लोगों से भी ज़्यादा जन्नत में जायेंगे।'' कहा गया: ''ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ) आप के अलावा? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, ''मेरे अलावा ही।'' रावी कहते हैं:) जब वह उठ गए तो मैंने कहा, यह कौन हैं? लोगों ने कहा: यह इब्ने अबी जज़्आ (رضي الله عنه) हैं।

सहीह: बुख़ारी: 4316. मुसनद अहमद: 3/469.

2438 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ خَالِدٍ الحَذَّاءِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ شَقِيقٍ، قَالَ: كُنْتُ مَعَ رَهْطٍ بِإِيلِيَاءَ فَقَالَ رَجُلٌ مِنْهُمْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: يَدْخُلُ الجَنَّةَ بِشَفَاعَةِ رَجُلٍ مِنْ أُمَّتِي أَكْثَرُ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ، قِيلَ: يَا رَسُولَ اللهِ سِوَاكَ؟ قَالَ: سِوَايَ. فَلَمَّا قَامَ قُلْتُ: مَنْ هَذَا؟ قَالُوا: هَذَا ابْنُ أَبِي الجَذْعَاءِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। और इब्ने अबी जज़्आ (رضي الله عنه) का नाम अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) है। इन से यही एक हदीस मारूफ़ है।

2439 - حَدَّثَنَا أَبُو هِشَامٍ الرِّفَاعِيُّ الْكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ الْيَمَانِ، عَنْ جِسْرٍ أَبِي جَعْفَرٍ، عَنِ الْحَسَنِ الْبَصْرِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صلى الله عليه وسلم: يَشْفَعُ عُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ رضي الله عنه يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِمِثْلِ رَبِيعَةَ، وَمُضَرَ

2439 - सय्यदना हसन बसरी (رحمه الله) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''क़यामत के दिन उस्मान बिन अफ्फ़ान (رضي الله عنه) रबीया और मुज़र के बराबर लोगों के लिए सिफ़ारिश करेंगे।''

ज़ईफ़: मुहक़्क़िक़ ने इसकी तख़रीज ज़िक्र नहीं की।

2440 - حَدَّثَنَا أَبُو عَمَّارٍ الْحُسَيْنُ بْنُ حُرَيْثٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا الفَضْلُ بْنُ مُوسَى، عَنْ زَكَرِيَّا بْنِ أَبِي زَائِدَةَ، عَنْ عَطِيَّةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ مِنْ أُمَّتِي مَنْ يَشْفَعُ لِلْفِئَامِ مِنَ النَّاسِ وَمِنْهُمْ مَنْ يَشْفَعُ لِلْقَبِيلَةِ، وَمِنْهُمْ مَنْ يَشْفَعُ لِلْعَصَبَةِ، وَمِنْهُمْ مَنْ يَشْفَعُ لِلرَّجُلِ حَتَّى يَدْخُلُوا الجَنَّةَ.

2440 - सय्यदना अबू सईद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''मेरी उम्मत में से वह शख़्स भी है जो लोगों की कई जमाअतों के लिए सिफ़ारिश करेगा, कोई कबीले के लिए, कोई शख़्स एक जमाअत के लिए और कोई एक आदमी के लिए यहाँ तक कि वह जन्नत में चले जायेंगे।''

ज़ईफ़: मुसनद अहमद:6/28. इब्ने अबी शैबा:11/463.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

13 بَابٌ مِنْهُ حديث تخير النبي صلي الله عليه وسلم بن دخول نصف امته الجنة وبين الشفاعة واختياره الثاني.

13 - नबी (ﷺ) को अपनी आधी उम्मत को जन्नत में ले जाने और शफ़ाअत के दर्मियान इख़्तियार दिए जाने का तज़किरा और आपका शफ़ाअत को इख़्तियार करना।

2441 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي الْمَلِيحِ، عَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكٍ الأَشْجَعِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ

2441 - सय्यदना औफ़ बिन मालिक अशजई (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''मेरे रब की तरफ़ एक आने वाला मेरे पास आया, फिर उसने मुझे आधी उम्मत

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَتَانِي آتٍ مِنْ عِنْدِ رَبِّي فَخَيَّرَنِي بَيْنَ أَنْ يُدْخِلَ نِصْفَ أُمَّتِي الجَنَّةَ وَبَيْنَ الشَّفَاعَةِ، فَاخْتَرْتُ الشَّفَاعَةَ، وَهِيَ لِمَنْ مَاتَ لاَ يُشْرِكُ بِاللَّهِ شَيْئًا.

को जन्नत में ले जाने और शफ़ाअत के दर्मियान इख़्तियार दिया तो मैंने शफ़ाअत को इख़्तियार किया और यह शफ़ाअत उस शख़्स के लिए होगी जो इस हाल में मरा कि वह अल्लाह के साथ कुछ भी शिर्क नहीं करता था।''

सहीह: इब्ने माजह: 4317. तयालिसी:998. मुसनद अहमद:6/28.

वज़ाहत: अबू मलीह से एक और सहाबी-ए-रसूल के ज़रिए भी नबी (ﷺ) से हदीस मर्वी है और इसमें उन्होंने औफ़ बिन मालिक अशजई (رضي الله عنه) का ज़िक्र नहीं किया। नीज़ इस हदीस में एक लम्बा किस्सा भी है।

अबू ईसा कहते हैं, हमें क़ुतैबा ने वह कहते हैं, हमें अबू उयय्ना ने क़तादा से उन्होंने अबू मलीह से बवास्ता औफ़ बिन मालिक (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) से ऐसे ही रिवायत की है।

14 بَابُ مَا جَاءَ فِي صِفَةِ الحَوْضِ

14 - हौज़े कौसर कैसा होगा।

2442 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى، قَالَ: حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ شُعَيْبِ بْنِ أَبِي حَمْزَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ فِي حَوْضِي مِنَ الأَبَارِيقِ بِعَدَدِ نُجُومِ السَّمَاءِ.

2442 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''मेरे हौज़ में आसमान के सितारों की तादाद में सुराहियाँ होंगी।''

बुख़ारी:6580. मुस्लिम:2303. इब्ने माजह: 4305

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

2443 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ نَيْزَكَ البَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَكَّارٍ الدِّمَشْقِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ بَشِيرٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنِ الحَسَنِ، عَنْ سَمُرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ لِكُلِّ

2443 - सय्यदना समुरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''हर नबी का एक हौज़ होगा और वह दुसरे पर फ़ख़्र करेंगे कि किस के पास ज़्यादा लोग आते हैं और मुझे उम्मीद है कि इन में सब से ज़्यादा लोग मेरे पास आयेंगे।''

सहीह: तबरानी फ़िल कबीर:6881

نَبِيٍّ حَوْضًا وَإِنَّهُمْ يَتَبَاهَوْنَ أَيُّهُمْ أَكْثَرُ وَارِدَةً، وَإِنِّي أَرْجُو أَنْ أَكُونَ أَكْثَرَهُمْ وَارِدَةً.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है और अशअस बिन मालिक ने इस हदीस को बवास्ता हसन, नबी (ﷺ) से मुर्सल रिवायत किया है। इसमें समुरा (رضي الله عنه) का ज़िक्र नहीं किया और यह ज़्यादा सहीह है।

15 بَابُ مَا جَاءَ فِي صِفَةِ أَوَانِي الحَوْضِ

15 - हौज़ के बर्तन कैसे होंगे?

2444 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ صَالِحٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُهَاجِرِ، عَنِ العَبَّاسِ، عَنْ أَبِي سَلَّامٍ الحَبَشِيِّ، قَالَ: بَعَثَ إِلَيَّ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ العَزِيزِ فَحُمِلْتُ عَلَى البَرِيدِ، قَالَ: فَلَمَّا دَخَلَ عَلَيْهِ قَالَ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ لَقَدْ شَقَّ عَلَى مَرْكَبِي البَرِيدُ، فَقَالَ: يَا أَبَا سَلَّامٍ مَا أَرَدْتُ أَنْ أَشُقَّ عَلَيْكَ وَلَكِنْ بَلَغَنِي عَنْكَ حَدِيثٌ تُحَدِّثُهُ، عَنْ ثَوْبَانَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي الحَوْضِ فَأَحْبَبْتُ أَنْ تُشَافِهَنِي بِهِ، قَالَ أَبُو سَلَّامٍ، حَدَّثَنِي ثَوْبَانُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: حَوْضِي مِنْ عَدَنَ إِلَى عَمَّانَ البَلْقَاءِ، مَاؤُهُ أَشَدُّ بَيَاضًا مِنَ اللَّبَنِ وَأَحْلَى مِنَ العَسَلِ، وَأَكْوَابُهُ عَدَدُ نُجُومِ السَّمَاءِ، مَنْ شَرِبَ مِنْهُ شَرْبَةً لَمْ يَظْمَأْ بَعْدَهَا أَبَدًا، أَوَّلُ النَّاسِ وُرُودًا عَلَيْهِ فُقَرَاءُ الْمُهَاجِرِينَ، الشُّعْثُ رُءُوسًا، الدُّنْسُ ثِيَابًا الَّذِينَ لاَ يَنْكِحُونَ الْمُتَنَعِّمَاتِ وَلاَ تُفْتَحُ لَهُمْ أَبْوَابُ

2444 - अबू सल्लाम हबशी रिवायत करते हैं कि उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (رحمه الله) ने मुझे पैग़ाम भेजा तो मुझे एक ख़च्चर पर सवार किया गया फिर जब वह उनके पास गए तो कहने लगे, अमीरुल मोमिनीन मुझे ख़च्चर पर सवार होना गिराँ गुजरा? उन्होंने फ़रमाया, अबू सल्लाम मैं आपको मशक्क़त में डालना नहीं चाहता था लेकिन मुझे आप की तरफ़ से एक हदीस पहुंची थी जो आप बवास्ता सौबान (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) से हौज़ के बारे में बयान करते हैं तो मैंने चाहा कि आप से बिला वास्ता सुन लूं। अबू सल्लाम ने कहा, मुझे सौबान (رضي الله عنه) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''मेरा हौज़ अदन से बल्क़ा के अम्मान तक होगा, उसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा होगा। और उसके आब खोरे (जाम) आसमान के सितारों की तादाद में होंगे जो शख़्स एक घूँट पी लेगा उसके बाद कभी उसे प्यास नहीं लगेगी, उस पर सब से पहले आने वाले फ़ुक़रा मुहाज़िरीन, बिखरे बालों वाले, मैले कपड़ों वाले होंगे जो नाज़ो

السُّدَدِ قَالَ عُمَرُ: لَكِنِّي نَكَحْتُ الْمُتَنَعِّمَاتِ، وَفُتِحَ لِيَ السُّدَدُ، وَنَكَحْتُ فَاطِمَةَ بِنْتَ عَبْدِ الْمَلِكِ لاَ جَرَمَ أَنِّي لاَ أَغْسِلُ رَأْسِي حَتَّى يَشْعَثَ، وَلاَ أَغْسِلُ ثَوْبِي الَّذِي يَلِي جَسَدِي حَتَّى يَتَّسِخَ.

नेअ़्मत में पली औरतों से निकाह नहीं करते और न ही उनके लिए दरवाज़े खोले जाते हैं।''

सहीह: अल-मर्फ़ू मिन्हू: इब्ने माजह:4303. मुसनद अहमद: 5/275.हाकिम:4/184.

उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (ﷺ) ने कहा: लेकिन मैंने तो नाज़ो नेअ़्मत में पलने वाली औरतों से निकाह भी किया है और मेरे लिए दरवाज़े भी खोले गए। मैंने फातिमा बिन्ते अब्दुल मलिक से निकाह किया। हाँ यह ज़रूर है मैं अपना सर तब तक नहीं धोता जब तक बिखर न जाए और मेरे जिस्म के कपड़े जब तक मैले न हो जाएँ मैं नहीं धोता।

तौज़ीह: البريد : फारसी का लफ़्ज़ है जो खच्चर पर बोला जाता है और असल में इसका इस्तेमाल उस खच्चर पर होता था जो ख़ुतूत ले जाने के लिए इस्तेमाल किया जाता था।(अल-मोजमुल वसीत:पृ.63)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस ग़रीब है। और यह हदीस मैदान बिन अबी तल्हा से भी बवास्ता सौबान (ﷺ), नबी (ﷺ) से मर्वी है। अबू सल्लाम हबशी का नाम मम्तूर था। यह शाम के रहने वाले और सिक़ह रावी थे।

2445 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَبْدِ الصَّمَدِ العَمِّيُّ عَبْدُ العَزِيزِ بْنُ عَبْدِ الصَّمَدِ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عِمْرَانَ الجَوْنِيُّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الصَّامِتِ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ مَا آنِيَةُ الحَوْضِ قَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَآنِيَتُهُ أَكْثَرُ مِنْ عَدَدِ نُجُومِ السَّمَاءِ وَكَوَاكِبِهَا فِي لَيْلَةٍ مُظْلِمَةٍ مُصْحِيَةٍ مِنْ آنِيَةِ الجَنَّةِ، مَنْ شَرِبَ مِنْهَا شَرْبَةً لَمْ يَظْمَأْ، آخِرَ مَا عَلَيْهِ عَرْضُهُ مِثْلُ طُولِهِ مَا بَيْنَ عُمَانَ إِلَى أَيْلَةَ مَاؤُهُ أَشَدُّ بَيَاضًا مِنَ اللَّبَنِ وَأَحْلَى مِنَ العَسَلِ.

2445 - सय्यदना अबू ज़र (ﷺ) रिवायत करते हैं कि मैंने अर्ज़ किया, ''ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! हौज़े कौसर के बर्तन कैसे हैं? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, ''उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है उसके बर्तन आसमान के सितारों की तादाद से भी ज़्यादा हैं सितारे जो तारीक रात में साफ़ आसमान पर होते हैं। यह जन्नत के बर्तनों में से होंगे। जिसने उससे पानी पी लिया उसे आख़िर तक कभी प्यास नहीं लगेगी। इस हौज़ की चौड़ाई भी लम्बाई जितनी है जैसे ओमान से एला तक का फ़ासला, उसका पानी दूध से ज़्यादा सफेद और शहद से ज़्यादा मीठा होगा।''

सहीह: मुस्लिम:2300. मुसनद अहमद:5/149. इब्ने अबी शैबा:11/442.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। नीज़ इस बारे में हुज़ैफा बिन यमान, अब्दुल्लाह बिन अम्र, अबू बर्ज़ा अल अस्लमी, इब्ने उमर, हारिसा बिन वहब और मुस्तौरिद बिन शद्दाद (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ इब्ने उमर (رضي الله عنه) से मर्वी है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ''मेरे हौज़ का फ़ासला कूफा से हजरे अस्वद तक की तरह है।

16 - बग़ैर हिसाब जन्नत में दाख़िल होने वाले लोगों की सिफ़ात और इसमें उक्काशा की सबक़त का बयान।

16 - بَابٌ صفة الذين يدخلون الجنة بغير حساب وبيان سبق عكاشه بها.

2446 - सय्यदना इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) को जब (मेराज के मौक़ा पर) सैर कराई गई तो आप(ﷺ) एक नबी या कुछ नबियों के पास से गुजरने लगे जिनके साथ एक क़ौम थी, किसी नबी के साथ एक जमाअत थी और किसी नबी के साथ कोई भी नहीं था। यहाँ तक कि आप एक जम्मे ग़फ़ीर के पास से गुज़रे तो मैंने कहा: यह कौन हैं? कहा गया: यह मूसा (عليه السلام) और उनकी क़ौम है लेकिन आप(ﷺ) अपना सर उठा कर देखें'' आप (ﷺ) ने फ़रमाया, अचानक एक जम्मे ग़फ़ीर देखा जिसने आसमान के उस जानिब और इस जानिब वाले किनारे को भरा हुआ था।'' कहा गया, यह आप(ﷺ) की उम्मत है और इनके अलावा आप(ﷺ) की उम्मत में से सत्तर हज़ार बग़ैर हिसाब जन्नत में दाख़िल होंगे फिर आप (ﷺ) (घर में दाख़िल हो गए, न सहाबा ने आप(ﷺ) से पूछा न ही आप (ﷺ) ने वज़ाहत की तो वह आपस में कहने लगे, वह लोग हम होंगे। कुछ कहने वालों ने कहा, यह वह बच्चे

2446 - حَدَّثَنَا أَبُو حَصِينٍ عَبْدُ اللهِ بْنُ أَحْمَدَ بْنِ يُونُسَ كُوفِيٌّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْثَرُ بْنُ القَاسِمِ، قَالَ: حَدَّثَنَا حُصَيْنٌ هُوَ ابْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: لَمَّا أُسْرِيَ بِالنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَعَلَ يَمُرُّ بِالنَّبِيِّ وَالنَّبِيَّيْنِ وَمَعَهُمُ القَوْمُ وَالنَّبِيِّ وَالنَّبِيَّيْنِ وَمَعَهُمُ الرَّهْطُ وَالنَّبِيِّ وَالنَّبِيَّيْنِ وَلَيْسَ مَعَهُمْ أَحَدٌ حَتَّى مَرَّ بِسَوَادٍ عَظِيمٍ، فَقُلْتُ: مَنْ هَذَا؟ قِيلَ: مُوسَى وَقَوْمُهُ وَلَكِنِ ارْفَعْ رَأْسَكَ فَانْظُرْ. قَالَ: فَإِذَا هُوَ سَوَادٌ عَظِيمٌ قَدْ سَدَّ الأُفُقَ مِنْ ذَا الجَانِبِ وَمِنْ ذَا الجَانِبِ، فَقِيلَ هَؤُلَاءِ أُمَّتُكَ وَسِوَى هَؤُلَاءِ مِنْ أُمَّتِكَ سَبْعُونَ أَلْفًا يَدْخُلُونَ الجَنَّةَ بِغَيْرِ حِسَابٍ، فَدَخَلَ وَلَمْ يَسْأَلُوهُ وَلَمْ يُفَسِّرْ لَهُمْ فَقَالُوا: نَحْنُ هُمْ، وَقَالَ قَائِلُونَ: هُمْ أَبْنَاءُ الَّذِينَ وُلِدُوا عَلَى الفِطْرَةِ وَالإِسْلَامِ، فَخَرَجَ النَّبِيُّ

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: هُمُ الَّذِينَ لاَ يَكْتَوُونَ وَلاَ يَسْتَرْقُونَ وَلاَ يَتَطَيَّرُونَ وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ فَقَامَ عُكَّاشَةُ بْنُ مِحْصَنٍ فَقَالَ: أَنَا مِنْهُمْ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: نَعَمْ، ثُمَّ قَامَ آخَرُ فَقَالَ: أَنَا مِنْهُمْ؟ فَقَالَ: سَبَقَكَ بِهَا عُكَّاشَةُ.

होंगे जो फ़ित्रत और इस्लाम पर पैदा हुए होंगे। नबी (ﷺ) बाहर निकले और फ़रमाया, ''यह वह लोग होंगे जो दाग नहीं लगवाते ना दम करवाते हैं, न ही बद शुगूनी लेते हैं और अपने रब पर ही भरोसा करते हैं।" चुनाँचे उक्काशा बिन मेहसन खड़े होकर कहने लगे, '''ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! क्या मैं भी उन में हूँ? तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, ''हाँ फिर एक और आदमी आकर कहने लगा क्या मैं भी उनमें से हूँ तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, इसमें उक्काशा तुम से सबक़त ले गया।''

बुखारी:5752. मुस्लिम:220.

वज़ाहत: इस बारे में इब्ने मसऊद, और अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

17 - بَابُ حديث إضاعة الصلاة وحديث ذمائم العباد.

17 - लोगों का नमाज़ ज़ाया करना और क़ाबिले मज़म्मत लोग।

2447 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ بَزِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا زِيَادُ بْنُ الرَّبِيعِ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عِمْرَانَ الجَوْنِيُّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: مَا أَعْرِفُ شَيْئًا مِمَّا كُنَّا عَلَيْهِ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقُلْتُ: أَيْنَ الصَّلاَةُ؟ قَالَ: أَوَلَمْ تَصْنَعُوا فِي صَلاَتِكُمْ مَا قَدْ عَلِمْتُمْ.

2447 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के दौर में जिन कामों पर हम (अमल करते थे मैं) उनमें से कोई चीज़ नहीं पहचानता। (अबू इमरान जौफी कहते हैं:) मैंने कहा: नमाज़ कहाँ गई? उन्होंने फ़रमाया, क्या तुम बखूबी नहीं जानते जो कुछ तुम अपनी नमाज़ में करते हो!"

सहीह: बुखारी:529. मुसनद अहमद: 3/100. अबू याला:4184.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: अबू इमरान जौफी के तरीक़ से यह हदीस हसन ग़रीब है। और दीगर तुरूक़ (सनदों) से भी अनस (رضي الله عنه) से मर्वी है।

2448 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى الأَزْدِيُّ الْبَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ بْنُ عَبْدِ الوَارِثِ، قَالَ: حَدَّثَنَا هَاشِمٌ وَهُوَ ابْنُ سَعِيدٍ الكُوفِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي زَيْدٌ الخَثْعَمِيُّ، عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ عُمَيْسٍ الخَثْعَمِيَّةِ، قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: بِئْسَ العَبْدُ عَبْدٌ تَخَيَّلَ وَاخْتَالَ وَنَسِيَ الكَبِيرَ الْمُتَعَالِ، بِئْسَ العَبْدُ عَبْدٌ تَجَبَّرَ وَاعْتَدَى وَنَسِيَ الجَبَّارَ الأَعْلَى، بِئْسَ العَبْدُ عَبْدٌ سَهَا وَلَهَا وَنَسِيَ الْمَقَابِرَ وَالبِلَى، بِئْسَ العَبْدُ عَبْدٌ عَتَا وَطَغَى وَنَسِيَ الْمُبْتَدَا وَالْمُنْتَهَى، بِئْسَ العَبْدُ عَبْدٌ يَخْتِلُ الدُّنْيَا بِالدِّينِ، بِئْسَ العَبْدُ عَبْدٌ يَخْتِلُ الدِّينَ بِالشُّبُهَاتِ، بِئْسَ العَبْدُ عَبْدٌ طَمَعٌ يَقُودُهُ، بِئْسَ العَبْدُ عَبْدٌ هَوًى يُضِلُّهُ، بِئْسَ العَبْدُ عَبْدٌ رَغَبٌ يُذِلُّهُ.

2448 - सय्यदा अस्मा बिन्ते उमैस ख़सआमिया (ﷺ) रिवायत करती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: ''बुरा बन्दा वह है जो अपने आप को दूसरे से बेहतर समझे, तकब्बुर करे और बड़ी और बलंद ज़ात को भूल जाए, और वह भी बड़ा बुरा बन्दा है जो ज़ुल्म व ज़्यादती करे और बलंद जब्बार ज़ात को भूल जाए। वह बड़ा बुरा बन्दा है जो खेल और फुज़ूल कामों में लग कर क़ब्र और गलसड़ जाने को भूल जाए। वह बन्दा बड़ा बुरा बन्दा है जो हदों को पामाल और सरकशी करे और इब्तिदा या इंतिहा को भूल जाए। वह बन्दा बड़ा बुरा बन्दा है जो दीन की आड़ में दुनिया हासिल करे, वह बुरा बन्दा है जो मुश्तबा चीजों को दीन के साथ मिलाये, वह बड़ा बुरा बन्दा है जिसे लालच खींचती है, बुरा बन्दा है वह जिसे ख़्वाहिशात गुमराह कर दें और बुरा बन्दा है वह जिसे दीन से दूरी ज़लील कर दे।''

ज़ईफ़:अस-सुन्ना ले-इब्ने अबी आसिम: 10. 4/316

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस हदीस को हम इसी सनद से ही जानते हैं और इसकी सनद क़वी नहीं है।

18 - بَابٌ فِي ثواب الطعام و سقي و الكسو و حديث من خاف أدلج.

18 - खाना खिलाने, पानी पिलाने, और कपड़ा पहनाने की फ़ज़ीलत और वह हदीस कि जो शख़्स डर गया वह रात के इब्तिदाई हिस्से में चल पड़ा

2449 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ الْمُؤَدِّبُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَمَّارُ بْنُ مُحَمَّدٍ، ابْنُ أُخْتِ سُفْيَانَ الثَّوْرِيِّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الجَارُودِ الأَعْمَى

2449 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''जो मोमिन किसी मोमिन को भूक

وَاسْمُهُ زِيَادُ بْنُ الْمُنْذِرِ الهَمْدَانِيُّ، عَنْ عَطِيَّةَ العَوْفِيِّ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَيُّمَا مُؤْمِنٍ أَطْعَمَ مُؤْمِنًا عَلَى جُوعٍ أَطْعَمَهُ اللَّهُ يَوْمَ القِيَامَةِ مِنْ ثِمَارِ الجَنَّةِ، وَأَيُّمَا مُؤْمِنٍ سَقَى مُؤْمِنًا عَلَى ظَمَإٍ سَقَاهُ اللَّهُ يَوْمَ القِيَامَةِ مِنَ الرَّحِيقِ الْمَخْتُومِ، وَأَيُّمَا مُؤْمِنٍ كَسَا مُؤْمِنًا عَلَى عُرْيٍ كَسَاهُ اللَّهُ مِنْ خُضْرِ الجَنَّةِ.

की वजह से खाना खिलाए तो अल्लाह तआला कयामत के दिन उसे जन्नत के फल खिलायेगा, जो मोमिन किसी मोमिन को प्यास की वजह से पानी पिलाए तो क़यामत के दिन अल्लाह तआला उसे मोहर लगी हुई शराब पिलाएगा और जो मोमिन किसी मोमिन के बगैर लिबास होने की वजह से लिबास पहनाए तो अल्लाह तआला उसे जन्नत के सब्ज़ लिबास पहनायेगा।''

ज़ईफ़: अबू दाऊद: 1682. मुसनद अहमद: 3/13. अबू याला: 1111.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है और यह हदीस बवास्ता अतिय्या, सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) से मौकूफ़न भी मर्वी है और हमारे नज़दीक यह ज़्यादा सहीह और बेहतर है।

2450 - حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي النَّضْرِ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو النَّضْرِ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَقِيلٍ الثَّقَفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو فَرْوَةَ يَزِيدُ بْنُ سِنَانٍ التَّمِيمِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي بُكَيْرُ بْنُ فَيْرُوزَ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَنْ خَافَ أَدْلَجَ، وَمَنْ أَدْلَجَ بَلَغَ الْمَنْزِلَ، أَلاَ إِنَّ سِلْعَةَ اللهِ غَالِيَةٌ، أَلاَ إِنَّ سِلْعَةَ اللهِ الجَنَّةُ.

2450 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''जो शख़्स दुश्मन से डर जाए वह रात के पहले हिस्से में निकल जाता है और जो रात के शुरू में ही निकल खड़ा हो वह मंजिल तक पहुँच जाता है। आगाह हो जाओ अल्लाह का सामान महंगा है और सुनो अल्लाह का सामान जन्नत है।''

सहीह: अब्द बिन हुमैद: 1460. हाकिम: 4/307.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे अबू नज़र की सनद से ही जानते हैं।

19 - بَابٌ علامة التقوي ودع مالا باس به حذرا.

19 - तक़्वा की अलामत यह है कि उन कामों को भी छोड़ दे जिन में कोई हर्ज नहीं।

2451 - حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي النَّضْرِ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو النَّضْرِ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَقِيلٍ

2451 - सय्यदना अतिय्या सादी (ﷺ) जो नबी (ﷺ) के सहाबा में से हैं रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ''कोई शख़्स उस

الثَّقَفِيُّ عَبْدُ اللهِ بْنُ عَقِيلٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ قَالَ: حَدَّثَنِي رَبِيعَةُ بْنُ يَزِيدَ، وَعَطِيَّةُ بْنُ قَيْسٍ، عَنْ عَطِيَّةَ السَّعْدِيِّ، وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: لاَ يَبْلُغُ العَبْدُ أَنْ يَكُونَ مِنَ الْمُتَّقِينَ حَتَّى يَدَعَ مَا لاَ بَأْسَ بِهِ حَذَرًا لِمَا بِهِ البَأْسُ.

वक़्त तक परहेजगारों के दर्जे को नहीं पहुँच सकता जब तक वह शुब्हे वाली चीजों से बचने के लिए उन चीजों को न छोड़ दे जिन में कोई हर्ज नहीं है।''

ज़ईफ़: इब्ने माजह: 2415. हाकिम:4/ 319.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे इसी सनद से ही जानते हैं।

20– بَابٌ لَوْ أَنَّكُمْ تَكُونُونَ كَمَا تَكُونُونَ عِنْدِي.

20 - अगर तुम ऐसे ही रहो जैसे मेरे पास होते हो।

2452 - حَدَّثَنَا عَبَّاسٌ العَنْبَرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عِمْرَانُ القَطَّانُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الشِّخِّيرِ، عَنْ حَنْظَلَةَ الأُسَيِّدِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَوْ أَنَّكُمْ تَكُونُونَ كَمَا تَكُونُونَ عِنْدِي لأَظَلَّتْكُمُ الْمَلاَئِكَةُ بِأَجْنِحَتِهَا.

2452 - सय्यदना हंज़ला उसैदी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''अगर तुम ऐसे ही रहो जैसे मेरे पास रहते हो, तो फ़रिश्ते तुम पर अपने परों से साया करेंगे।''

मुस्लिम: 2750. इब्ने माजह:4239

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी(رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है। और यह हदीस एक और सनद से भी बवास्ता हंज़ला उसैदी नबी(ﷺ) से मर्वी है। नीज़ इस बारे में अबू हुरैरा (رضي الله عنه) की भी रिवायत है।

21 بَابٌ مِنْهُ حديث: {إِنَّ لِكُلِّ شَيْءٍ شِرَّةً}

21-हदीस: हर चीज़ की एक हिर्स और निशात है

2453 - حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ سَلْمَانَ أَبُو عُمَرَ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، عَنِ ابْنِ عَجْلاَنَ، عَنِ القَعْقَاعِ بْنِ حَكِيمٍ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ

2453 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ''हर एक चीज़ के लिए एक तेज़ी[1] और फुर्ती होती है और हर तेज़ी के लिए एक कमज़ोरी[2] होती है। अगर करने वाला दर्मियानी चाल चला और

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ لِكُلِّ شَيْءٍ شِرَّةً وَلِكُلِّ شِرَّةٍ فَتْرَةً، فَإِنْ كَانَ صَاحِبُهَا سَدَّدَ وَقَارَبَ فَارْجُوهُ، وَإِنْ أُشِيرَ إِلَيْهِ بِالأَصَابِعِ فَلاَ تَعُدُّوهُ.

हक़ के करीब रहा तो उसके लिए (बेहतरी की) उम्मीद रखो और उसकी तरफ़ उंगलियों के इशारे हों तो उसे किसी शुमार में न लाओ।''

हसन: इब्ने हिब्बान:349. शरह मुश्किलुल आसार:1242.

तौज़ीह: شِرَّة : तेज़ी , कहा जाता है:أعوذ بالله من شِرَّة الغضب : इसका मानी फुर्ती और निशात भी है जैसे: لِلشَّبَابِ شِرَّة : जवानी फुर्तीली होती है। (अल-मोजमुल वसीत:पृ.546)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। और अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) से भी मर्वी है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ''आदमी के लिए उतना शर ही काफ़ी है कि दीन या दुनिया के बारे में उसकी तरफ़ उंगलियाँ उठाई जाएँ सिवाए उस शख़्स के जिसे अल्लाह तआला बचा ले।''

22—بَابٌ: فِي تمثيل طول الامل. وازدياد حرص المرء كلما هرم. ووقوعه في هرم آخر الأمر

22 - लम्बी आरज़ूओं की मिसाल और आदमी जब बूढ़ा होता है तो उसकी हिर्स और ज़्यादा हो जाती है मगर आख़िर तो उसे बूढ़ा होना ही है।

2454 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي يَعْلَى، عَنِ الرَّبِيعِ بْنِ خُثَيْمٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: خَطَّ لَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَطًّا مُرَبَّعًا وَخَطَّ فِي وَسَطِ الخَطِّ خَطًّا وَخَطَّ خَارِجًا مِنَ الخَطِّ خَطًّا وَحَوْلَ الَّذِي فِي الوَسَطِ خُطُوطًا فَقَالَ: هَذَا ابْنُ آدَمَ وَهَذَا أَجَلُهُ مُحِيطٌ بِهِ، وَهَذَا الَّذِي فِي الوَسَطِ الإِنْسَانُ، وَهَذِهِ الخُطُوطُ عُرُوضُهُ إِنْ نَجَا مِنْ هَذَا يَنْهَشُهُ هَذَا، وَالخَطُّ الخَارِجُ الأَمَلُ.

2454 - अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमारे लिए एक मुरब्बा लकीर लगाई और उस लकीर के दर्मियान एक लकीर लगाई और उस मुरब्बा ख़त से बाहर निकलती हुई एक लकीर खींची और दर्मियान वाली लकीर के इर्द गिर्द भी लकीरें लगायीं फिर फ़रमाया, ''यह इब्ने आदम है और यह उसकी मौत उसे घेरे हुए है और यह दर्मियान में आदमी है और यह लकीरें उसे पेश आने वाले हादसात हैं। अगर उस से बच जाए तो यह पकड़ लेता है और बाहर निकलने वाली लकीर आरज़ूएं हैं।''

बुख़ारी:6417. इब्ने माजह:4231

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2455 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''इब्ने आदम बूढ़ा होता है और उसकी दो चीज़ें जवान होती हैं: माल की हिर्स (लालच)और उम्र की हिर्स (लालच)।''

2455 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَهْرَمُ ابْنُ آدَمَ وَتَشُبُّ مِنْهُ اثْنَتَانِ: الْحِرْصُ عَلَى الْمَالِ وَالْحِرْصُ عَلَى الْعُمُرِ.

सहीह: इसकी तख़रीज हदीस नम्बर 2339 के तहत मुलाहज़ा फ़रमाएं। तोहफतुल अशराफ़: 5352.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2456 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन शिख़्ख़ीर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''इब्ने आदम की सूरत इस तरह बनाई गई और उसके पहलु में 99 मसाइब व आलाम परेशानियाँ हैं अगर उस से यह तक्लीफ़ें खता भी हो जाएँ तो यह बुढ़ापे में चला जाता है।''

2456 - حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ مُحَمَّدُ بْنُ فِرَاسٍ الْبَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو قُتَيْبَةَ سَلْمُ بْنُ قُتَيْبَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الْعَوَّامِ وَهُوَ عِمْرَانُ الْقَطَّانُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ مُطَرِّفِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الشِّخِّيرِ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مُثِّلَ ابْنُ آدَمَ وَإِلَى جَنْبِهِ تِسْعَةٌ وَتِسْعُونَ مَنِيَّةً إِنْ أَخْطَأَتْهُ الْمَنَايَا وَقَعَ فِي الْهَرَمِ.

हसन: तख़रीज व वज़ाहत के लिए हदीस नम्बर 2150 देखें। तोहफतुल अशराफ़: 5352.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

23 - अल्लाह का ज़िक्र और रात के पिछले पहर में मौत को याद करने की तरग़ीब और नबी (ﷺ) पर कसरत से दरूद पढ़ने की फ़ज़ीलत।

23 بَابٌ فِي التَّرْغِيبِ فِي ذِكْرِ اللهِ الموت آخر الليل وفضل إكثار الصلاة علي النبي

2457 - सय्यदना उबय बिन काब (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि जब रात का दो तिहाई हिस्सा गुज़र जाता तो रसूलुल्लाह (ﷺ) खड़े हो कर फ़रमाते, ''ऐ लोगो! अल्लाह को याद करो, अल्लाह को याद करो। खड़खड़ाने वाली आ गई, उसके साथ पीछे आने वाली भी, मौत

2457 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ عَقِيلٍ، عَنِ الطُّفَيْلِ بْنِ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا ذَهَبَ ثُلُثَا اللَّيْلِ قَامَ فَقَالَ:

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا اللَّهَ اذْكُرُوا اللَّهَ جَاءَتِ الرَّاجِفَةُ تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ جَاءَ الْمَوْتُ بِمَا فِيهِ جَاءَ الْمَوْتُ بِمَا فِيهِ، قَالَ أُبَيٌّ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي أُكْثِرُ الصَّلَاةَ عَلَيْكَ فَكَمْ أَجْعَلُ لَكَ مِنْ صَلَاتِي؟ فَقَالَ: مَا شِئْتَ. قَالَ: قُلْتُ: الرُّبُعَ، قَالَ: مَا شِئْتَ فَإِنْ زِدْتَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ، قُلْتُ: النِّصْفَ، قَالَ: مَا شِئْتَ، فَإِنْ زِدْتَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ، قَالَ: قُلْتُ: فَالثُّلُثَيْنِ، قَالَ: مَا شِئْتَ، فَإِنْ زِدْتَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ، قُلْتُ: أَجْعَلُ لَكَ صَلَاتِي كُلَّهَا قَالَ: إِذًا تُكْفَى هَمَّكَ، وَيُغْفَرُ لَكَ ذَنْبُكَ.

अपनी सख़्तियों के साथ आ गई।'' उबय (ﷺ) कहते हैं: मैंने अर्ज़ किया, ''ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! मैं कस्रत से (ज़्यादा से ज़्यादा) आप(ﷺ) पर दरूद पढ़ता हूँ तो मैं अपनी दुआ का इसमें कितना हिस्सा रखूँ? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, जितना तुम चाहो'' मैंने कहा: चौथा हिस्सा? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, जितना तुम चाहो'' अगर ज़्यादा करो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। मैंने कहा: आधा? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, जैसे तुम चाहो" मैंने कहा: दो तिहाई? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, जो तुम चाहो'' लेकिन अगर ज़्यादा कर लो तो वह तुम्हारे लिए बेहतर होगा।'' मैंने अर्ज़ किया, मैं अपनी सारी दुआ आप(ﷺ) के लिए बना दूं? फिर आप (ﷺ) ने फ़रमाया, ''फिर तो सब फ़िक्रों से (यह दरूद) काफी होगा और तुम्हारे गुनाह भी बख़्श दिए जायेंगे।''

हसन: मुसनद अहमद: 5/136. हाकिम:2/421. हिल्या:1/256.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

24 - بَابٌ فِي بيان ما يقتضيه {الاِسْتِحْيَاءَ مِنَ اللهِ حَقَّ الحَيَاءِ}

24 - अल्लाह से कमा हक़्क़हू हया करना क्या तक़ाज़ा करता है।

2458 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ، عَنْ أَبَانَ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنِ الصَّبَّاحِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ مُرَّةَ الهَمْدَانِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اسْتَحْيُوا مِنَ اللهِ حَقَّ

2458 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''अल्लाह से ऐसे हया करो जैसे हक़ है। रावी कहते हैं, हमने अर्ज़ किया, ''ऐ अल्लाह के नबी! अल्हम्दुलिल्लाह हम (अल्लाह का) हया करते हैं।'' आप (ﷺ) ने फ़रमाया, ''यह

الحَيَاءِ. قَالَ: قُلْنَا: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّا نَسْتَحْيِي وَالحَمْدُ لِلَّهِ، قَالَ: لَيْسَ ذَاكَ، وَلَكِنَّ الإِسْتِحْيَاءَ مِنَ اللهِ حَقَّ الحَيَاءِ أَنْ تَحْفَظَ الرَّأْسَ وَمَا وَعَى، وَالبَطْنَ وَمَا حَوَى، وَلْتَذْكُرِ الْمَوْتَ وَالبِلَى، وَمَنْ أَرَادَ الآخِرَةَ تَرَكَ زِينَةَ الدُّنْيَا، فَمَنْ فَعَلَ ذَلِكَ فَقَدْ اسْتَحْيَا مِنَ اللهِ حَقَّ الحَيَاءِ.

चीज़ नहीं बल्कि अल्लाह से हया करने का मतलब यह है कि तुम सर(1) और उसकी तमाम चीजों की हिफाज़त करो, तुम मौत और गलसड़ जाने को याद रख और जो शख़्स आख़िरत को चाहता है वह दुनिया की ज़ीनत छोड़ देता है। जिसने यह काम किए उसने ही कमा हक़्क़हू अल्लाह तआला का हया किया।''

हसन:मुसनद अहमद:1/387. अबू याला: 5047.हाकिम:4/323

तौज़ीह: (1) सर और उसके मुताल्लिक़ा चीजें कान, ज़बान और आँखें वगैरह।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे अबान बिन इस्हाक़ के ज़रिए ही सबाह बिन मुहम्मद से जानते हैं।

25 . بَابٌ حديث : { الكَيِّسُ مَنْ دَانَ نَفْسَهُ وَعَمِلَ لِمَا بَعْدَ الْمَوْتِ }

25 - अक़्लमंद वह है जो अपना मुहासबा (आत्म अवलोकन) करे और मौत के बाद वाली ज़िन्दगी के लिए अमल करे।

2459 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ أَبِي مَرْيَمَ (ح) وحَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْنٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ أَبِي مَرْيَمَ، عَنْ ضَمْرَةَ بْنِ حَبِيبٍ، عَنْ شَدَّادِ بْنِ أَوْسٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: الكَيِّسُ مَنْ دَانَ نَفْسَهُ وَعَمِلَ لِمَا بَعْدَ الْمَوْتِ، وَالعَاجِزُ مَنْ أَتْبَعَ نَفْسَهُ هَوَاهَا وَتَمَنَّى عَلَى اللَّهِ.

2459 - सय्यदना शद्दाद बिन औस (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ''समझदार वह है जो अपना मुहासबा करे और मौत के बाद वाली ज़िन्दगी के लिए अमल करे और आजिज़ वह है जो अपने आप को ख़्वाहिशात के ताबे करके अल्लाह पर आरज़ू करे।

ज़ईफ़: अज़-ज़ईफ़ा:5319. इब्ने माजह: 4260. मुसनद अहमद: 4/124. हाकिम 1/57.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: مَنْ دَانَ نَفْسَهُ: का मानी है वह क़यामत के दिन हिसाब किए जाने से पहले दुनिया में ही अपना मुहासबा करता है।

उमर बिन ख़त्ताब (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं: मुहासबा किए जाने से पहले अपने आप का मुहासबा कर लो और

बड़ी पेशी के लिए तैयारी कर लो क्योंकि जिस ने दुनिया में अपना हिसाब कर लिया क़यामत के दिन उस पर हिसाब हल्का होगा।

महमूद बिन मेहरान फ़रमाते हैं: बन्दा उस वक़्त तक मुत्तक़ी नहीं हो सकता जब तक अपना मुहासबा न कर ले जैसे वह अपने शरीक से हिसाब लेता है कि उसका खाना और लिबास कहाँ से आया।

26 - बَابُ أَكْثِرُوا مِنْ ذِكْرِ هَاذِمِ اللَّذَّاتِ

26 - लज़्ज़तों को ख़त्म कर देने वाली को कसरत से (ज़्यादा से ज़्यादा) याद करो।

2460 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَحْمَدَ وَهُوَ ابْنُ مَدُّوَيْهِ، قَالَ: حَدَّثَنَا القَاسِمُ بْنُ الحَكَمِ العُرَنِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ الوَلِيدِ الوَصَّافِيُّ، عَنْ عَطِيَّةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، قَالَ: دَخَلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُصَلَّاهُ فَرَأَى نَاسًا كَأَنَّهُمْ يَكْتَشِرُونَ قَالَ: أَمَا إِنَّكُمْ لَوْ أَكْثَرْتُمْ ذِكْرَ هَاذِمِ اللَّذَّاتِ لَشَغَلَكُمْ عَمَّا أَرَى، فَأَكْثِرُوا مِنْ ذِكْرِ هَاذِمِ اللَّذَّاتِ الْمَوْتِ، فَإِنَّهُ لَمْ يَأْتِ عَلَى القَبْرِ يَوْمٌ إِلاَّ تَكَلَّمَ فِيهِ فَيَقُولُ: أَنَا بَيْتُ الغُرْبَةِ وَأَنَا بَيْتُ الوَحْدَةِ، وَأَنَا بَيْتُ التُّرَابِ، وَأَنَا بَيْتُ الدُّودِ، فَإِذَا دُفِنَ العَبْدُ الْمُؤْمِنُ قَالَ لَهُ القَبْرُ: مَرْحَبًا وَأَهْلاً أَمَا إِنْ كُنْتَ لأَحَبَّ مَنْ يَمْشِي عَلَى ظَهْرِي إِلَيَّ، فَإِذْ وُلِّيتُكَ اليَوْمَ وَصِرْتَ إِلَيَّ فَسَتَرَى صَنِيعِيَ بِكَ قَالَ: فَيَتَّسِعُ لَهُ مَدَّ بَصَرِهِ وَيُفْتَحُ لَهُ بَابٌ إِلَى

2460 - सय्यदना अबू सईद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने मुसल्ला पर तशरीफ़ लाये तो आप(ﷺ) ने लोगों को हँसते हुए देखा, आप(ﷺ) ने फ़रमाया, याद रखो! अगर तुम लज़्ज़तों को ख़त्म करने वाली (मौत) को कस्रत से याद रखो तो तुम्हें उस चीज़ से मशगूल कर दे जो मैं देख रहा हूँ, पस तुम लज़्ज़तों को ख़त्म करने वाली (मौत) को कस्रत से याद करो। क्योंकि क़ब्र हर आने वाले दिन में बात करते हुए कहती है: मैं अजनबी घर हूँ, मैं मिट्टी का घर हूँ और मैं कीड़े मकोड़ों का घर हूँ, फिर जब मोमिन बन्दा क़ब्र में दफ़न कर दिया जाता है तो क़ब्र उसे मर्हबा और खुश आमदेद कहती है। (और कहती है: तुम मेरी पुश्त (पीठ) पर चलने वालों में से मुझे सब से ज़्यादा महबूब थे। आज तुम मेरे सुपुर्द कर दिए गए हो और तुम मेरी तरफ़ आ गये हो तो तुम मेरा अपने साथ सुलूक देखोगे।'' आप (ﷺ) ने फ़रमाया, ''वह उसकी नज़र की इंतिहा तक वसीअ (बड़ा) हो जाती है और जन्नत की तरफ़ एक दरवाज़ा उसके लिए खोल दिया जाता है

الجَنَّةِ. وَإِذَا دُفِنَ العَبْدُ الفَاجِرُ أَوِ الكَافِرُ قَالَ لَهُ القَبْرُ: لاَ مَرْحَبًا وَلاَ أَهْلاً أَمَا إِنْ كُنْتَ لأَبْغَضَ مَنْ يَمْشِي عَلَى ظَهْرِي إِلَيَّ، فَإِذْ وُلِّيتُكَ اليَوْمَ وَصِرْتَ إِلَيَّ فَسَتَرَى صَنِيعِيَ بِكَ قَالَ: فَيَلْتَئِمُ عَلَيْهِ حَتَّى تَلْتَقِيَ عَلَيْهِ وَتَخْتَلِفَ أَضْلاَعُهُ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: بِأَصَابِعِهِ، فَأَدْخَلَ بَعْضَهَا فِي جَوْفِ بَعْضٍ قَالَ: وَيُقَيِّضُ اللَّهُ لَهُ سَبْعِينَ تِنِّينًا لَوْ أَنَّ وَاحِدًا مِنْهَا نَفَخَ فِي الأَرْضِ مَا أَنْبَتَتْ شَيْئًا مَا بَقِيَتِ الدُّنْيَا فَيَنْهَشْنَهُ وَيَخْدِشْنَهُ حَتَّى يُفْضَى بِهِ إِلَى الْحِسَابِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّمَا القَبْرُ رَوْضَةٌ مِنْ رِيَاضِ الجَنَّةِ أَوْ حُفْرَةٌ مِنْ حُفَرِ النَّارِ.

और जब फाज़िर या काफ़िर बन्दा दफ़न किया जाता है तो क़ब्र उस से कहती है: तुझे कोई मर्हबा और खुश आमदेद नहीं। तु मेरे ऊपर चलने वालों में मुझे सब से ज़्यादा नापसंद था। तो जब आज तुम मुझे सौंप दिए गए हो और तुम मेरे पास आ गए हो तो तुम अन्क़रीब मेरा अपने साथ मामला देख लोगे।'' आप (ﷺ) ने फ़रमाया, ''फिर वह उसे दबाती है यहाँ तक कि उस पर मिलकर उसकी पसलियाँ इधर उधर कर देती है।'' रावी कहते हैं: रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी उँगलियों को एक दूसरे में दाख़िल करके इशारा किया और फ़रमाया, ''अल्लाह तआला उस पर सत्तर सांप मुक़र्रर कर देते हैं अगर उन में से एक सांप ज़मीन पर फूँक मार दे तो यह रहती दुनिया तक कुछ न उगाये। वह उसे नोचते और ज़ख़्मी करते रहेंगे यहाँ तक कि उसे हिसाब की तरफ़ पहुंचा दिया जाएगा।'' रावी कहते हैं: रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''क़ब्र जन्नत के बागीचों में से एक बागीचा या जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा है।''

ज़ईफ़ जिद्दा।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे इसी सनद से ही जानते हैं।

27 - بَابٌ حديث مختصر: مالي وللدنيا ما أنا إلا كراب..

27 - मुख़्तसर हदीस: मुझे दुनिया से क्या ताल्लुक़ मैं तो एक मुसाफिर की तरह हूँ।

2461 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ

2461 - सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास गया तो आप (ﷺ) ख़ुजूर की शाख से

بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي ثَوْرٍ، قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ، يَقُولُ: أَخْبَرَنِي عُمَرُ بْنُ الخَطَّابِ، قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَإِذَا هُوَ مُتَّكِئٌ عَلَى رَمْلِ حَصِيرٍ فَرَأَيْتُ أَثَرَهُ فِي جَنْبِهِ.

बनी हुई चटाई[1] पर टेक लगाए हुए बैठे थे मैंने उसके निशान आप के पहलु पर देखे।

बुखारी:2468, मुस्लिम:1479.

तौज़ीह: رَمْل: का मानी है चटाई बुनना और حصير उस चटाई को कहा जाता है जो खुजूर के पत्तों से बनाई गई हो।(अल-मोजमुल वसीत:पृ.211,442)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और इस हदीस में एक लम्बा वाक़िया भी है।

28--بَابٌ حديث: وَاللّٰهِ مَا الفَقْرَ أَخْشَى عَلَيْكُمْ

28 - हदीस: अल्लाह की क़सम मुझे तुम पर फ़क़ीरी का डर नहीं है।

2462 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ مَعْمَرٍ، وَيُونُسَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَنَّ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ، أَخْبَرَهُ أَنَّ الْمِسْوَرَ بْنَ مَخْرَمَةَ، أَخْبَرَهُ أَنَّ عَمْرَو بْنَ عَوْفٍ، وَهُوَ حَلِيفُ بَنِي عَامِرِ بْنِ لُؤَيٍّ، وَكَانَ شَهِدَ بَدْرًا مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَ أَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ الجَرَّاحِ فَقَدِمَ بِمَالٍ مِنَ البَحْرَيْنِ، وَسَمِعَتِ الأَنْصَارُ بِقُدُومِ أَبِي عُبَيْدَةَ، فَوَافَوْا صَلَاةَ الفَجْرِ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَلَمَّا صَلَّى رَسُولُ اللهِ ﷺ انْصَرَفَ، فَتَعَرَّضُوا لَهُ، فَتَبَسَّمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَ

2462 - सय्यदना मिस्वर बिन मख़रमा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि अम्र बिन औफ़ (رضي الله عنه) ने, जो बनू आमिर बिन लूई के हलीफ़ और बद्र में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ शिर्कत करने वाले थे उन्हें बताया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उबैदा बिन जर्राह को रवाना किया वह बहरैन से माल लेकर आए तो अंसार ने अबू उबैदा के आने की ख़बर सुनी, वह फ़ज्र की नमाज़ में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ मिले जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ा कर सहाबा की तरफ़ मुंह फेरा तो वह रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने आए, जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें देखा तो आप मुस्कुरा दिए। फिर आप ने फ़रमाया, ''मेरे ख़याल में तुमने सुन लिया है कि अबू उबैदा कोई चीज़ लेकर आए हैं?'' उन्होंने अर्ज़ किया, जी अल्लाह के रसूल! आप ने फ़रमाया, ''फिर

رَآهُمْ، ثُمَّ قَالَ: أَظُنُّكُمْ سَمِعْتُمْ أَنَّ أَبَا عُبَيْدَةَ قَدِمَ بِشَيْءٍ. قَالُوا: أَجَلْ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: فَأَبْشِرُوا وَأَمِّلُوا مَا يَسُرُّكُمْ فَوَاللَّهِ مَا الفَقْرَ أَخْشَى عَلَيْكُمْ، وَلَكِنِّي أَخْشَى أَنْ تُبْسَطَ الدُّنْيَا عَلَيْكُمْ كَمَا بُسِطَتْ عَلَى مَنْ قَبْلَكُمْ فَ تَنَافَسُوهَا كَمَا تَنَافَسُوهَا فَتُهْلِكَكُمْ كَمَا أَهْلَكَتْهُمْ.

खुशख़बरी सुनो और ऐसी चीज़ की उम्मीद रखो जो तुम्हें खुश कर देगी। अल्लाह की क़सम! मुझे तुम पर फ़क़ीरी का डर नहीं है लेकिन मैं तुम पर डरता हूँ कि तुम्हारे ऊपर दुनिया ऐसे ही फैला दी जाएगी जैसे तुम से पहले लोगों पर फैला दी गई थी।फिर तुम भी इसमें ऐसे ही मगन हो जाओगे जैसे वह उस में मगन हो गए थे तो यह तुम्हें भी ऐसे ही बर्बाद कर देगी जिस तरह इस ने उनको हलाक कर दिया था।''

बुखारी:3158.मुस्लिम:2961. इब्ने माजह: 3997

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

29 - بَابٌ إِنَّ هَذَا الْمَالَ خَضِرَةٌ حُلْوَةٌ

29 - यह माल शादाब और मीठा है।

2463 - حَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، وَابْنِ الْمُسَيِّبِ، أَنَّ حَكِيمَ بْنَ حِزَامٍ، قَالَ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَعْطَانِي، ثُمَّ سَأَلْتُهُ فَأَعْطَانِي، ثُمَّ سَأَلْتُهُ فَأَعْطَانِي، ثُمَّ قَالَ: يَا حَكِيمُ، إِنَّ هَذَا الْمَالَ خَضِرَةٌ حُلْوَةٌ، فَمَنْ أَخَذَهُ بِسَخَاوَةِ نَفْسٍ بُورِكَ لَهُ فِيهِ، وَمَنْ أَخَذَهُ بِإِشْرَافِ نَفْسٍ لَمْ يُبَارَكْ لَهُ فِيهِ، وَكَانَ كَالَّذِي يَأْكُلُ وَلاَ يَشْبَعُ، وَالْيَدُ الْعُلْيَا خَيْرٌ مِنَ الْيَدِ السُّفْلَى. فَقَالَ حَكِيمٌ: فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالحَقِّ لاَ أَرْزَأُ أَحَدًا بَعْدَكَ شَيْئًا حَتَّى أُفَارِقَ الدُّنْيَا فَكَانَ أَبُو بَكْرٍ، يَدْعُو

2463 - सय्यदना हकीम बिन हिज़ाम (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सवाल किया: तो आप(ﷺ) ने मुझे माल दिया, मैंने फिर सवाल किया तो आप ने मुझे फिर माल दिया, फिर मैंने आप से सवाल किया: तो आप ने मुझे (माल) दिया, फिर आप(ﷺ) ने फ़रमाया, ''ऐ हकीम! यक़ीनन यह माल शादाब और मीठा है। जिसने इसे दिल की सखावत के साथ लिया तो उसके लिए इसमें बरकत होती है और जो इसे अपने नफ़्स को ज़लील करके हासिल करे उसके लिए बरकत नहीं होती और वह उस शख़्स की तरह हो जाता है जो खा कर भी सैर नहीं होता। नीज़ ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है।'' हकीम कहते हैं: मैंने कहा: ''ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! उस ज़ात की क़सम जिस ने आप

حَكِيمًا إِلَى الْعَطَاءِ فَيَأْبَى أَنْ يَقْبَلَهُ ثُمَّ إِنَّ عُمَرَ، دَعَاهُ لِيُعْطِيَهُ فَأَبَى أَنْ يَقْبَلَ مِنْهُ شَيْئًا، فَقَالَ عُمَرُ: إِنِّي أُشْهِدُكُمْ يَا مَعْشَرَ الْمُسْلِمِينَ عَلَى حَكِيمٍ أَنِّي أَعْرِضُ عَلَيْهِ حَقَّهُ مِنْ هَذَا الْفَيْءِ فَيَأْبَى أَنْ يَأْخُذَهُ فَلَمْ يَرْزَأْ حَكِيمٌ أَحَدًا مِنَ النَّاسِ شَيْئًا بَعْدَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى تُوُفِّيَ.

को हक़ देकर भेजा है! मैं आप(ﷺ) के बाद दुनिया छोड़ते वक़्त तक किसी का माल कम नहीं करूंगा। फिर अबू बक्र (رضي الله عنه) हकीम को कुछ देने के लिए बुलाते तो वह कुबूल करने से इन्कार कर देते थे। उमर (رضي الله عنه) ने माल देने के लिए बुलाया तो उन्होंने उन से भी कुछ लेने से इन्कार कर दिया। तो उमर (رضي الله عنه) ने फ़रमाया, ''ऐ मुसलमानों की जमाअत मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैंने हकीम पर माले ग़नीमत का हिस्सा पेश किया था लेकिन इन्होने लेने से इन्कार कर दिया फिर हकीम ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के बाद अपनी वफ़ात तक लोगों में से किसी एक से भी कोई चीज़ कम नहीं की।

बुख़ारी: 1427. मुस्लिम: 1034. निसाई:2531, 2603, 2601.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

30 - بَابٌ أحاديث : ابتلينا بالضراء ، {مَنْ كَانَتِ الآخِرَةُ هَمَّهُ} و أبن آدم تفرغ لعبادتي

30 - अहादीस: हमें तक़्लीफ़ों से आजमाया गया, जिसे आख़िरत का गम लाहिक़ हो जाए और (हदीसे क़ुदसी)ऐ इब्ने आदम! मेरी इबादत के लिए फ़ारिग हो जा।

2464 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو صَفْوَانَ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ، قَالَ: ابْتُلِينَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ بِالضَّرَّاءِ فَصَبَرْنَا، ثُمَّ ابْتُلِينَا بِالسَّرَّاءِ بَعْدَهُ فَلَمْ نَصْبِرْ.

2464 - सय्यदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ तक्लीफ़ों से आजमाया गया तो हम ने सब्र किया, फिर आप(ﷺ) के बाद हमें आसानियों से आजमाया गया तो हम सब्र न कर सके।

सहीहुल इस्नाद।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

2465 - سیدنا انس بن مالک ...

2465 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنِ الرَّبِيعِ بْنِ صَبِيحٍ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبَانَ وَهُوَ الرَّقَاشِيُّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ كَانَتِ الآخِرَةُ هَمَّهُ جَعَلَ اللَّهُ غِنَاهُ فِي قَلْبِهِ وَجَمَعَ لَهُ شَمْلَهُ، وَأَتَتْهُ الدُّنْيَا وَهِيَ رَاغِمَةٌ، وَمَنْ كَانَتِ الدُّنْيَا هَمَّهُ جَعَلَ اللَّهُ فَقْرَهُ بَيْنَ عَيْنَيْهِ، وَفَرَّقَ عَلَيْهِ شَمْلَهُ، وَلَمْ يَأْتِهِ مِنَ الدُّنْيَا إِلاَّ مَا قُدِّرَ لَهُ.

2465 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''जिसे आख़िरत का गम (और उसकी फ़िक्र) लाहिक़ हो जाए तो अल्लाह तआला उसके दिल में गिना रख देते हैं, इसके लिए उसके मुन्तशिर कामों को जमा कर देते हैं और दुनिया उसके पास ज़लील व रुस्वा हो कर आती है और जिसे दुनिया की फ़िक्र लाहिक़ हो जाए तो अल्लाह तआला उसकी आँखों के सामने उसकी फ़क़ीरी को रख देते हैं, उसके कामों को जुदा कर देते हैं और उसे दुनिया उतनी मिलती है जितनी उसकी तक़्दीर में है।''

सहीह: हिल्या:6/307.

2466 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ خَشْرَمٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ زَائِدَةَ بْنِ نَشِيطٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي خَالِدٍ الْوَالِبِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى يَقُولُ: يَا ابْنَ آدَمَ تَفَرَّغْ لِعِبَادَتِي أَمْلأْ صَدْرَكَ غِنًى وَأَسُدَّ فَقْرَكَ، وَإِلاَّ تَفْعَلْ مَلأْتُ يَدَيْكَ شُغْلاً وَلَمْ أَسُدَّ فَقْرَكَ.

2466 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ''ऐ इब्ने आदम! तु मेरी इबादत के लिए वक़्त निकाल मैं तुम्हारे सीने को गिना से भर दूंगा और अगर तूने यह न किया तो मैं तुम्हारे हाथों को मसरूफ़ियत से भर दूंगा और तुम्हारी फ़क़ीरी बंद नहीं करूंगा।''

सहीह: इब्ने माजह:4107. मुसनद अहमद: 2/358. हाकिम:2/442. इब्ने हिब्बान:393.

वज़ाहत:इमाम तिर्मिज़ी(رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है और अबू ख़ालिद वाल्बी का नाम हुर्मुज़ है।

31 - रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात के मुताल्लिक़ आयशा (رضي الله عنها) की हदीस।

31- بَابُ حديث عايشة: تُوُفِّيَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

2467 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ،

2467 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फौत हुए तो हमारे पास कुछ जौ थे, जब तक अल्लाह ने चाहा हम वह

قَالَتْ: تُوُفِّيَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَعِنْدَنَا شَطْرٌ مِنْ شَعِيرٍ فَأَكَلْنَا مِنْهُ مَا شَاءَ اللَّهُ، ثُمَّ قُلْتُ لِلْجَارِيَةِ: كِيلِيهِ، فَكَالَتْهُ فَلَمْ يَلْبَثْ أَنْ فَنِيَ قَالَتْ: فَلَوْ كُنَّا تَرَكْنَاهُ لأَكَلْنَا مِنْهُ أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ.

खाते रहे फिर मैंने लौंडी से कहा: इसे मापो। उसने मापा तो कुछ देर बाद ख़त्म हो गए। फ़रमाती हैं: अगर हम उसे छोड़े रखतीं तो हम उससे ज़्यादा अर्सा तक खा लेतीं।

बुख़ारी:3097. मुस्लिम:2973. इब्ने माजह:3345.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह है और شَطْرٌ مِنْ شَعِيرٍ का मतलब है कुछ जौ।

32. بَاب قوله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي القرام : إِنَّهُ يُذَكِّرُنِي الدُّنْيَا))

32 - मुनक़्क़श पर्दे को देखकर आप (ﷺ) ने फ़रमाया, इसने मुझे दुनिया याद करा दी है।

2468 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنْ دَاوُدَ بْنِ أَبِي هِنْدٍ، عَنْ عَزْرَةَ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الحِمْيَرِيِّ، عَنْ سَعْدِ بْنِ هِشَامٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: كَانَ لَنَا قِرَامُ سِتْرٍ فِيهِ تَمَاثِيلُ عَلَى بَابِي، فَرَآهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: انْزَعِيهِ فَإِنَّهُ يُذَكِّرُنِي الدُّنْيَا قَالَتْ: وَكَانَ لَنَا سَمَلُ قَطِيفَةٍ تَقُولُ عَلَمُهَا مِنْ حَرِيرٍ كُنَّا نَلْبَسُهَا.

2468 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) फ़रमाती हैं: हमारा एक बारीक[1] मुनक़्क़श पर्दा था जिसमें (बे जान अशिया) की तस्वीर बनी हुई थीं मेरे दरवाज़े पर था तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसे देखकर फ़रमाया, ''इसे उतार दो, इसने मुझे दुनिया की याद दिला दी है।'' फ़रमाती हैं, हमारे पास मखमल की एक पुरानी चादर थी। जिसकी झालर रेशम की थी हम उसे ओढ़ते थे।

मुस्लिम:2117.इब्नेमाजह:3653.निसाई:761, 5357, 5352

तौज़ीह: قِرَامٌ : मुनक़्क़श पर्दा, मोटा ऊनी कपड़ा जो मुख़्तलिफ़ रंगों का होता है। इससे पर्दे या हौदज का बिस्तर बनाया जाता है। इसकी जमा قرم आती है।(अल-मोजमुल वसीत:पृ.882)

سَمَلُ قَطِيفَةٍ: समल का मतलब है पुरानी और बोसीदा चीज़ और कतीफ़ा मखमल या उस जैसे सूती कपड़े की चादर को कहते हैं। ।(अल-मोजमुल वसीत:पृ.902,532)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस इस सनद से हसन सहीह ग़रीब है।

2469 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: كَانَتْ وِسَادَةُ رَسُولِ اللهِ ﷺ الَّتِي

2469 - आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि जिस गद्दे पर रसूलुल्लाह (ﷺ) लेटते थे उसमें खुजूर के पत्ते भरे हुए थे।

बुख़ारी:6456. मुस्लिम:2082. अबू दाऊद: 4146. इब्ने माजह:4151

يَضْطَجِعُ عَلَيْهَا مِنْ أَدَمٍ حَشْوُهَا لِيفٌ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

33-بَابٌ قوله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ في الشاة.

33 - बकरी के गोश्त के बारे में आप (ﷺ) का फ़रमान।

2470 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي مَيْسَرَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّهُمْ ذَبَحُوا شَاةً، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا بَقِيَ مِنْهَا؟ قَالَتْ: مَا بَقِيَ مِنْهَا إِلاَّ كَتِفُهَا قَالَ: بَقِيَ كُلُّهَا غَيْرَ كَتِفِهَا.

2470 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) से रिवायत है कि उन्होंने एक बकरी ज़बह की तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "इस (के गोश्त) में क्या बाकी बचा है?" उन्होंने कहा, सिर्फ़ एक शाना बाक़ी बचा है आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "उस शाने के अलावा सब बाकी बच गया।"(1)

सहीह: मुसनद अहमद: 6/50. हिल्या: 5/23.

तौज़ीह: (1) कंधे के अलावा बाकी सारा गोश्त लोगों में तक्सीम कर दिया था इसीलिए आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो गोश्त तक्सीम कर दिया गया है वही गोश्त हमारे लिए बचा है।" क्योंकि आख़िरत में हमें इसी का नफ़ा होगा।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह है। और अबू मैसरा, हम्दानी हैं, इनका नाम अम्र बिन शुरहबील है।

34-بَابٌ أحاديث عايشة وأنس وعلي وابي هريرة.

34 - आयशा, अनस और अबू हुरैरा (رضي الله عنهم) की अहादीस।

2471 - حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ إِسْحَاقَ الهَمْدَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: إِنْ كُنَّا آلَ مُحَمَّدٍ نَمْكُثُ شَهْرًا مَا نَسْتَوْقِدُ بِنَارٍ إِنْ هُوَ إِلاَّ الْمَاءُ وَالتَّمْرُ.

2471 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि हम आले मुहम्मद महीना भर आग जलाए बग़ैर रहते थे।(हमारी गुज़र बसर) सिर्फ़ पानी और खुजूर पर थी।

बुख़ारी:6458. मुस्लिम:2972. इब्ने माजह: 4144.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह है।

2472 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ أَسْلَمَ أَبُو حَاتِمٍ الْبَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا ثَابِتٌ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَقَدْ أُخِفْتُ فِي اللهِ وَمَا يُخَافُ أَحَدٌ، وَلَقَدْ أُوذِيتُ فِي اللهِ وَمَا يُؤْذَى أَحَدٌ، وَلَقَدْ أَتَتْ عَلَيَّ ثَلاَثُونَ مِنْ بَيْنِ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ وَمَا لِي وَلِبِلاَلٍ طَعَامٌ يَأْكُلُهُ ذُو كَبِدٍ إِلاَّ شَيْءٌ يُوَارِيهِ إِبْطُ بِلاَلٍ.

2472 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''मुझे अल्लाह की राह में इतना डराया गया कि उतना किसी को नहीं डराया गया होगा, मुझे अल्लाह की राह में इस क़दर तक्लीफ़ें दी गयीं कि उतनी तक्लीफ़ें किसी को नहीं दी गई होंगी और मुझ पर तीस दिन और रातें ऐसी भी आयीं कि मेरे और बिलाल के पास खाना नहीं था जिसे कोई जिगर वाला खा लेता सिवाए उस चीज़ के जिसको बिलाल के बगल ने छिपाया हुआ था।''

सहीह: इब्ने माजह:151. मुसनद अहमद: 3/120.इब्ने हिब्बान:6560.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और इससे मुराद वह वक़्त है जब नबी (ﷺ) मक्का वालों से बेज़ार होकर निकले थे आप(ﷺ) के साथ बिलाल (رضي الله عنه) भी थे। और बिलाल (رضي الله عنه) के पास उतना ही खाना था कि जो उनकी बगल में दबाया था।

2473 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ بُكَيْرٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زِيَادٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ كَعْبٍ الْقُرَظِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي مَنْ، سَمِعَ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ، يَقُولُ: خَرَجْتُ فِي يَوْمٍ شَاتٍ مِنْ بَيْتِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَقَدْ أَخَذْتُ إِهَابًا مَعْطُونًا فَجَوَّبْتُ وَسَطَهُ فَأَدْخَلْتُهُ عُنُقِي، وَشَدَدْتُ وَسَطِي فَحَزَمْتُهُ بِخُوصِ النَّخْلِ، وَإِنِّي لَشَدِيدُ الْجُوعِ، وَلَوْ كَانَ فِي بَيْتِ رَسُولِ

2473 - मुहम्मद बिन काब कुरज़ी कहते हैं: मुझे उस शख़्स ने बताया जिस ने अली बिन अबू तालिब(رضي الله عنه) को यह कहते हुए सुना था (वह फ़रमा रहे थे) मैं सर्दी के दिन में रसूलुल्लाह (ﷺ) के घर से निकला, मैंने एक बदबूदार चमड़ा[1] लिया जिसके बाल उतरे हुए थे, मैंने उसके दर्मियान में सूराख़[2] कर के उसे अपनी गर्दन में डाल लिया और अपने दर्मियान से उसे मज़बूत किया फिर उसे खुजूर के पत्तों की रस्सी से बाँध लिया, मुझे बहुत भूक लगी हुई थी और अगर रसूलुल्लाह (ﷺ) के घर में कोई चीज़ होती तो मैं खा लेता। फिर मैंने कुछ

اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَعَامٌ لَطَعِمْتُ مِنْهُ فَخَرَجْتُ أَلْتَمِسُ شَيْئًا فَمَرَرْتُ بِيَهُودِيٍّ فِي مَالٍ لَهُ وَهُوَ يَسْقِي بِبَكَرَةٍ لَهُ فَاطَّلَعْتُ عَلَيْهِ مِنْ ثُلْمَةٍ فِي الحَائِطِ. فَقَالَ: مَا لَكَ يَا أَعْرَابِيُّ؟ هَلْ لَكَ فِي كُلِّ دَلْوٍ بِتَمْرَةٍ؟ قُلْتُ: نَعَمْ، فَافْتَحِ البَابَ حَتَّى أَدْخُلَ فَفَتَحَ فَدَخَلْتُ فَأَعْطَانِي دَلْوَهُ فَكُلَّمَا نَزَعْتُ دَلْوًا أَعْطَانِي تَمْرَةً حَتَّى إِذَا امْتَلأَتْ كَفِّي أَرْسَلْتُ دَلْوَهُ وَقُلْتُ: حَسْبِي فَأَكَلْتُهَا ثُمَّ جَرَعْتُ مِنَ الْمَاءِ فَشَرِبْتُ ثُمَّ جِئْتُ الْمَسْجِدَ، فَوَجَدْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيهِ.

तलाश करने निकला तो मेरा गुज़र एक यहूदी के पास से हुआ जो अपने बाग़ में था और अपनी एक चरखी से बाग़ को पानी दे रहा था। मैंने दीवार के सूराख से उसे देखा तो उस ने कहा: ''ऐ आराबी! तुम्हें क्या मसला है? क्या एक डोल के बदले एक खुजूर लोगे? मैंने कहा: हाँ! दरवाज़ा खोलो ताकि मैं अन्दर आ सकूं उस ने दरवाज़ा खोला तो मैं दाख़िल हो गया, फिर उस ने मुझे अपना डोल दे दिया मैं जब एक डोल निकालता वह मुझे एक खुजूर दे देता, यहाँ तक कि जब मेरी मुट्ठी भर गई तो मैंने उसका डोल छोड़ कर कहा: मुझे काफी हैं मैंने वह खायीं और मैंने पानी के चंद घूँट पिए फिर मस्जिद में गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) को वहाँ पाया।

ज़ईफ़: इब्ने माजह:2447.

तौज़ीह: أهابا معوطبا: ऐसा चमड़ा जिससे बाल उतरे हुए थे और उस से बदबू आ रही थी। فجوبت: मैंने काटा यानी काट कर उसे अपने गले में पहनने के लिए सूराख किया। بكرة: चरखी जिसे कुएं से पानी निकालने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इसी तरह भारी अशिया को उठाने के लिए भी इस्तेमाल होती है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

2474 - حَدَّثَنَا أَبُو حَفْصٍ عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبَّاسٍ الجُرَيْرِيِّ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا عُثْمَانَ النَّهْدِيَّ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّهُمْ أَصَابَهُمْ جُوعٌ فَأَعْطَاهُمْ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَمْرَةً تَمْرَةً.

2474 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि उन लोगों को भूक लगी तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें एक खुजूर दी थी।

इब्ने माजह:4157, बुखारी:7/96.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2475 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ وَهْبِ بْنِ كَيْسَانَ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: بَعَثَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَحْنُ ثَلَاثُمِائَةٍ نَحْمِلُ زَادَنَا عَلَى رِقَابِنَا فَفَنِيَ زَادُنَا حَتَّى إِنْ كَانَ يَكُونُ لِلرَّجُلِ مِنَّا كُلَّ يَوْمٍ تَمْرَةٌ، فَقِيلَ لَهُ: يَا أَبَا عَبْدِ اللهِ وَأَيْنَ كَانَتْ تَقَعُ التَّمْرَةُ مِنَ الرَّجُلِ؟ فَقَالَ: لَقَدْ وَجَدْنَا فَقْدَهَا حِينَ فَقَدْنَاهَا وَأَتَيْنَا البَحْرَ فَإِذَا نَحْنُ بِحُوتٍ قَدْ قَذَفَهُ البَحْرُ فَأَكَلْنَا مِنْهُ ثَمَانِيَةَ عَشَرَ يَوْمًا مَا أَحْبَبْنَا.

2475 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें एक लश्कर के हमराह भेजा हम तीन सौ आदमी थे और अपना राशन अपनी गर्दनों पर उठाये हुए थे फिर हमारा राशन ख़त्म हो गया यहाँ तक कि हम में से हर एक आदमी के पास हर रोज़ एक खुजूर होती थी, उन से कहा गया: ''ऐ अबू अब्दुल्लाह! एक खुजूर से आदमी का क्या बनता है? उन्होंने कहा, जब ख़त्म हो गयीं तो हमें वह भी नहीं मिलती थी फिर हम समन्दर के साहिल पर पहुंचे तो अचानक एक मछली देखी जिसे समन्दर ने फ़ेंक दिया था चुनाँचे हम अठारह दिन तक जितना चाहते खाते रहे।

बुख़ारी:2483.मुस्लिम:1935. इब्ने माजह:4159. निसाई:4354, 4351

वज़ाहत:इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और कई तुरूक़ (सनदों) से सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (ﷺ) से मर्वी है। नीज़ मालिक बिन अनस ने वहब बिन कैसान से इस से लम्बी और मुकम्मल हदीस रिवायत की है।

35 - بَابٌ حديث علي في ذكر مصعب بن عمير.

35 - मुस्अब बिन उमैर के बारे में अली (ﷺ) की हदीस।

2476 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ بُكَيْرٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ قَالَ: حَدَّثَنِي يَزِيدُ بْنُ زِيَادٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ كَعْبٍ القُرَظِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي مَنْ، سَمِعَ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ، يَقُولُ: إِنَّا لَجُلُوسٌ مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ

2476 - मुहम्मद बिन काब कुरज़ी रिवायत करते हैं कि मुझे उस शख़्स ने बताया जिसने सय्यदना अली बिन अबी तालिब (ﷺ) से सुना वह फ़रमा रहे थे हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ मस्जिद में बैठे हुए थे कि हमारे पास मुस्अब बिन उमैर आए। और उनके बदन पर सिर्फ़ एक चादर थी जिस में चमड़े के पेवंद लगे

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَسْجِدِ إِذْ طَلَعَ مُصْعَبُ بْنُ عُمَيْرٍ مَا عَلَيْهِ إِلاَّ بُرْدَةٌ لَهُ مَرْقُوعَةٌ بِفَرْوٍ فَلَمَّا رَآهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَكَى لِلَّذِي كَانَ فِيهِ مِنَ النِّعْمَةِ وَالَّذِي هُوَ الْيَوْمَ فِيهِ، ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَيْفَ بِكُمْ إِذَا غَدَا أَحَدُكُمْ فِي حُلَّةٍ وَرَاحَ فِي حُلَّةٍ وَوُضِعَتْ بَيْنَ يَدَيْهِ صَحْفَةٌ وَرُفِعَتْ أُخْرَى وَسَتَرْتُمْ بُيُوتَكُمْ كَمَا تُسْتَرُ الكَعْبَةُ؟ قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ نَحْنُ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مِنَّا الْيَوْمَ نَتَفَرَّغُ لِلْعِبَادَةِ وَنُكْفَى الْمُؤْنَةَ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لأَنْتُمُ الْيَوْمَ خَيْرٌ مِنْكُمْ يَوْمَئِذٍ.

हुए थे। जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें देखा तो रो पड़े, इसलिए कि पहले वह किन नेअ्मतों में थे और आज किस हालत में हैं। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''उस वक़्त तुम्हारी हालत कैसी होगी जब तुम में से कोई शख़्स एक लिबास सुबह और एक शाम को पहनेगा, उसके सामने एक प्लेट रखी और दूसरी उठाई जाएगी। और तुम अपने घरों में इस तरह पर्दे लटकाओगे जैसे काबा को गिलाफ दिया जाता है।'' लोगों ने अर्ज़ किया, ''ऐ अल्लाह के रसूल! हम उस दिन आज से ज़्यादा बेहतर होंगे क्योंकि हम इबादत के लिए फ़ारिग़ होंगे और मेहनत व मशक्क़त से बचे होंगे। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''आज तुम उस दिन से ज़्यादा बेहतर हो।''

ज़ईफ़: अबू याला:502

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रह.) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। और यज़ीद बिन जियाद यह मैसरा के पोते और मदनी हैं इनसे मालिक बिन अनस और दीगर उलमा ने रिवायत ली है। जबकि यज़ीद बिन जियाद दमिश्क़ी जिसने ज़ोहरी से रिवायत की है उससे वकीअ़ और मरवान बिन मुआविया रिवायत करते हैं और यज़ीद बिन अबी जियाद कूफी से सुफ़ियान, शोबा, इब्ने उयय्ना और दीगर अइम्मा ने रिवायत की है।

36 - بَابٌ قصة أصحاب الصفة :

36 - अस्हाबे सुफ़्फ़ा का वाक़िया।

2477 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عُمَرُ بْنُ ذَرٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُجَاهِدٌ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: كَانَ أَهْلُ الصُّفَّةِ أَضْيَافُ أَهْلِ الإِسْلاَمِ لاَ يَأْوُونَ عَلَى

2477 - सय्यदना अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं कि सुफ़्फ़ा वाले अहले इस्लाम के मेहमान थे उनके अहलो माल नहीं थे, उस ज़ात की क़सम जिस के सिवा कोई माबूद नहीं! मैं भूक के मारे अपना सीना ज़मीन पर टेकता और भूक की वजह से ही अपने पेट पर पत्थर बांधता था। एक दिन मैं लोगों की गुज़रगाह पर बैठ गया तो अबू

أَهْلٍ وَلاَ مَالٍ، وَاللَّهِ الَّذِي لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ إِنْ كُنْتُ لأَعْتَمِدُ بِكَبِدِي عَلَى الأَرْضِ مِنَ الجُوعِ وَأَشُدُّ الحَجَرَ عَلَى بَطْنِي مِنَ الجُوعِ وَلَقَدْ قَعَدْتُ يَوْمًا عَلَى طَرِيقِهِمُ الَّذِي يَخْرُجُونَ فِيهِ فَمَرَّ بِي أَبُو بَكْرٍ فَسَأَلْتُهُ عَنْ آيَةٍ مِنْ كِتَابِ اللهِ مَا أَسْأَلُهُ إِلاَّ لِيَسْتَتْبِعَنِي، فَمَرَّ وَلَمْ يَفْعَلْ ثُمَّ مَرَّ بِي عُمَرُ فَسَأَلْتُهُ عَنْ آيَةٍ مِنْ كِتَابِ اللهِ مَا أَسْأَلُهُ إِلاَّ لِيَسْتَتْبِعَنِي، فَمَرَّ وَلَمْ يَفْعَلْ ثُمَّ مَرَّ أَبُو القَاسِمِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَتَبَسَّمَ حِينَ رَآنِي وَقَالَ: أَبَا هُرَيْرَةَ قُلْتُ: لَبَّيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: الحَقْ، وَمَضَى فَاتَّبَعْتُهُ وَدَخَلَ مَنْزِلَهُ فَاسْتَأْذَنْتُ فَأَذِنَ لِي فَوَجَدَ قَدَحًا مِنْ لَبَنٍ فَقَالَ: مِنْ أَيْنَ هَذَا اللَّبَنُ لَكُمْ؟ قِيلَ: أَهْدَاهُ لَنَا فُلاَنٌ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَبَا هُرَيْرَةَ قُلْتُ: لَبَّيْكَ. فَقَالَ: الحَقْ إِلَى أَهْلِ الصُّفَّةِ فَادْعُهُمْ، وَهُمْ أَضْيَافُ أَهْلِ الإِسْلاَمِ لاَ يَأْوُونَ عَلَى أَهْلٍ وَمَالٍ إِذَا أَتَتْهُ صَدَقَةٌ بَعَثَ بِهَا إِلَيْهِمْ وَلَمْ يَتَنَاوَلْ مِنْهَا شَيْئًا وَإِذَا أَتَتْهُ هَدِيَّةٌ أَرْسَلَ إِلَيْهِمْ فَأَصَابَ مِنْهَا وَأَشْرَكَهُمْ فِيهَا، فَسَاءَنِي ذَلِكَ وَقُلْتُ: مَا هَذَا القَدَحُ بَيْنَ أَهْلِ

बक्र मेरे पास से गुज़रे मैंने उन से किताबुल्लाह की एक आयत के बारे में पूछा। मैंने उनसे इसलिए पूछा था कि वह मुझे अपने पीछे ले जाएँ वह गुज़र गए और यह काम न किया, फिर उमर (رضي الله عنه) गुज़रे तो मैंने उन से भी किताबुल्लाह की एक आयत के बारे में पूछा कि वह मुझे अपने पीछे आने को कहेंगे वह भी गुज़र गए और यह काम न किया। फिर अबुल कासिम (ﷺ) गुज़रे तो जब आप ने मुझे देखा तो मुस्कुरा दिए और आप ने फ़रमाया, ''अबू हुरैरा हो?'' मैंने अर्ज़ किया, मैं हाज़िर हूँ, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आप ने फ़रमाया, ''(मेरे साथ) आओ।'' और आप चल दिए मैं भी आप के पीछे गया, आप(ﷺ) अपने घर में दाख़िल हो गए फिर मैंने भी इजाज़त मांगी तो इजाज़त मिल गई आप ने दूध का एक प्याला पाया आप ने फ़रमाया, ''यह दूध तुम्हें कहाँ से आया है?'' कहा गया: फुलां शख़्स ने तोहफा भेजा है। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''सुफ़्फ़ा वालों के पास जाकर उन्हें बुला लाओ।'' और यह मुसलमानों के मेहमान थे जिनका घर बार और माल नहीं था जब आप के पास सदक़ा आता तो आप(ﷺ) उनकी तरफ़ भेज देते और ख़ुद उससे कुछ भी न लेते और जब आपके पास तोहफा आता तो आप उनकी तरफ़ पैग़ाम भेजते फिर ख़ुद भी लेते और उनको भी शरीक करते मुझे यह बात अच्छी तो न लगी। मैंने कहा: सुफ़्फ़ा वालों का इस प्याले से क्या बनेगा? मुझे उनकी तरफ़ भेजा गया है फिर अन्क़रीब आप (ﷺ) मुझे हुक्म देंगे कि मैं उस

الصُّفَّةِ وَأَنَا رَسُولُهُ إِلَيْهِمْ فَسَيَأْمُرُنِي أَنْ أُدِيرَهُ عَلَيْهِمْ فَمَا عَسَى أَنْ يُصِيبَنِي مِنْهُ، وَقَدْ كُنْتُ أَرْجُو أَنْ أُصِيبَ مِنْهُ مَا يُغْنِينِي وَلَمْ يَكُنْ بُدٌّ مِنْ طَاعَةِ اللهِ وَطَاعَةِ رَسُولِهِ، فَأَتَيْتُهُمْ فَدَعَوْتُهُمْ فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ فَأَخَذُوا مَجَالِسَهُمْ فَقَالَ: أَبَا هُرَيْرَةَ، خُذِ القَدَحَ وَأَعْطِهِمْ فَأَخَذْتُ القَدَحَ فَجَعَلْتُ أُنَاوِلُهُ الرَّجُلَ فَيَشْرَبُ حَتَّى يَرْوَى، ثُمَّ يَرُدُّهُ فَأُنَاوِلُهُ الآخَرَ حَتَّى انْتَهَيْتُ بِهِ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَدْ رَوَى القَوْمُ كُلُّهُمْ فَأَخَذَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ القَدَحَ فَوَضَعَهُ عَلَى يَدَيْهِ ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ فَتَبَسَّمَ فَقَالَ: أَبَا هُرَيْرَةَ اشْرَبْ، فَشَرِبْتُ ثُمَّ قَالَ: اشْرَبْ فَلَمْ أَزَلْ أَشْرَبُ، وَيَقُولُ: اشْرَبْ حَتَّى قُلْتُ: وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالحَقِّ مَا أَجِدُ لَهُ مَسْلَكًا، فَأَخَذَ القَدَحَ فَحَمِدَ اللَّهَ وَسَمَّى ثُمَّ شَرِبَ.

प्याले को उन्हें दूं। मुझे नहीं लगता कि मुझे भी कुछ मिलेगा। हालांकि मैं चाहता था कि मुझे इतना मिल जाए जो मुझे काफी हो लेकिन अल्लाह और उसके रसूल की इताअत ज़रूरी थी, मैं उनके पास जाकर उन्हें बुला लाया जब वह आप (ﷺ) के पास आए, अपनी जगहों में बैठे तो आप ने फ़रमाया, ''अबू हुरैरा प्याला पकड़ कर उन्हें दो।'' मैं प्याला पकड़ कर शुरू हुआ एक आदमी को देता वह सैर होकर पीता फिर वह वापस कर देता तो दूसरे को दे देता। यहाँ तक कि मैं उसे लेकर रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास पहुँच गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने प्याले को पकड़ कर अपने हाथ पर रखा, फिर फ़रमाया, ''ऐ अबू हुरैरा पियो,'' मैंने पिया। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, ''पियो'' मैं पीता रहा और आप (ﷺ) फ़रमाते रहे : ''पियो'' फिर मैंने अर्ज़ किया, उस ज़ात की क़सम जिसने आप को हक़ दे कर भेजा है अब मुझ में गुंजाइश नहीं है। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने प्याला को पकड़ कर अल्हम्दुलिल्लाह और बिस्मिल्लाह कह कर पिया।

बुख़ारी:5375. मुसनद अहमद:515. इब्ने हिब्बान: 6535.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

37 - دنیا میں پیٹ بھر کر کھانے والا

37 - दुनिया में पेट भर कर खाने वाला

37—بَابٌ حديث أكثرهم شبعا في الدنيا.

2478 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حُمَيْدٍ الرَّازِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ العَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ القُرَشِيُّ، قَالَ:

2478 - सय्यदना इब्ने उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि एक आदमी ने नबी (ﷺ) के पास डकार ली तो आप ने फ़रमाया, ''अपनी डकार

حَدَّثَنَا يَحْيَى الْبَكَّاءُ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: تَجَشَّأَ رَجُلٌ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: كُفَّ عَنَّا جُشَاءَكَ فَإِنَّ أَكْثَرَهُمْ شِبَعًا فِي الدُّنْيَا أَطْوَلُهُمْ جُوعًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

को हमसे दूर रख, दुनिया में सब से ज़्यादा पेट भर के खाने वाला क़यामत के दिन सब से लम्बी भूक वाला होगा।''

हसन: इब्ने माजह:3350. तबरानी फ़िल औसत: 4121.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है। नीज़ इस बारे में अबू जुहैफ़ा (رضي الله عنه) से भी मर्वी है।

38 - بَابٌ فِي لبس الصوف.

38 - ऊन के कपड़े पहनना।

2479 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ بْنِ أَبِي مُوسَى، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: يَا بُنَيَّ لَوْ رَأَيْتَنَا وَنَحْنُ مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَصَابَتْنَا السَّمَاءُ لَحَسِبْتَ أَنَّ رِيحَنَا رِيحُ الضَّأْنِ.

2479 - सय्यदना अबू बुर्दा बिन अबू मूसा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि उनके वालिद ने कहा, ''ऐ बेटे! काश तुम हमें देखते जब हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ थे और हमारे ऊपर बारिश हुई तो तुम यकीन करते कि हमारी बू भेड़ की बू की तरह थी।''

सहीह: अबू दाऊद:4033.इब्ने माजह: 3562 मुसनद अहमद:4/407.

वज़ाहत:इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह है और इस हदीस का मतलब यह है कि उनके कपड़े ऊन के होते थे जब बारिश होती तो उनके कपड़ों से भेड़ की तरह महक आती थी।

39 - بَابٌ : البناء كله وبال.

39 - हर इमारत वबाल है।

2480 - حَدَّثَنَا الجَارُودُ بْنُ مُعَاذٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الفَضْلُ بْنُ مُوسَى، عَنْ سُفْيَانَ الثَّوْرِيِّ، عَنْ أَبِي حَمْزَةَ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ النَّخَعِيِّ، قَالَ: الْبِنَاءُ كُلُّهُ وَبَالٌ، قُلْتُ: أَرَأَيْتَ مَا لاَ بُدَّ مِنْهُ؟ قَالَ: لاَ أَجْرَ وَلاَ وِزْرَ.

2480 - अबू हम्ज़ा से रिवायत है कि इब्राहीम नखई ने फ़रमाया, ''हर इमारत तुम्हारे ऊपर वबाल है। मैंने कहा: यह बताइए कि जो ज़रूरी हो? उन्होंने फ़रमाया, ''न सवाब है न गुनाह।''

ज़ईफ़

2481 - حَدَّثَنَا عَبَّاسُ بْنُ مُحَمَّدٍ الدُّورِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ الْمُقْرِئُ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي مَرْحُومٍ عَبْدِ الرَّحِيمِ بْنِ مَيْمُونٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ مُعَاذِ بْنِ أَنَسٍ الجُهَنِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ تَرَكَ اللِّبَاسَ تَوَاضُعًا لِلَّهِ وَهُوَ يَقْدِرُ عَلَيْهِ دَعَاهُ اللَّهُ يَوْمَ القِيَامَةِ عَلَى رُءُوسِ الْخَلاَئِقِ حَتَّى يُخَيِّرَهُ مِنْ أَيِّ حُلَلِ الإِيمَانِ شَاءَ يَلْبَسُهَا.

2481 - सहल बिन मुआज़ बिन अनस (رضي الله عنه) अपने बाप से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''जिस ने अल्लाह के आजिज़ी करते हुए उम्दा लिबास छोड़ दिया हालांकि वह इस पर क़ादिर था, तो क़यामत के दिन अल्लाह तआला उसे सारी मख़्लूक़ के सामने बुला कर इख़्तियार देंगे कि ईमान का जो लिबास चाहे पहन ले।''

हसन: मुसनद अहमद:3/438. अल-मोजमुल औसत:9252. बैहक़ी:3/273.

वज़ाहत: यह हदीस हसन है और हुलले ईमान से मुराद यह है कि अहले ईमान को जन्नत के लिबास दिए जायेंगे।

40 - بَابٌ النَّفَقَةُ كُلُّهَا فِي سَبِيلِ اللهِ إِلاَّ البِنَاءَ

40 - इमारत के अलावा हर ख़र्च अल्लाह के रास्ते में सदक़ा है।

2482 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حُمَيْدٍ الرَّازِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَافِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ شَبِيبِ بْنِ بَشِيرٍ، هَكَذَا قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ حُمَيْدٍ: شَبِيبُ بْنُ بَشِيرٍ، وَإِنَّمَا هُوَ شَبِيبُ بْنُ بِشْرٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ النَّفَقَةُ كُلُّهَا فِي سَبِيلِ اللهِ إِلاَّ البِنَاءَ فَلاَ خَيْرَ فِيهِ.

2482 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''तमाम ख़र्च अल्लाह के रास्ते में सदके की तरह होता है सिवाए इमारत के इसमें भलाई नहीं है।''

ज़ईफ़: अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा: 1061. अल-कामिल:3/1087.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है।

2483 - हारिसा बिन मुज़र्रिब कहते हैं: हम ख़ब्बाब के पास उनकी इयादत करने गए उन्होंने सात दाग लगवाए हुए थे फ़रमाने लगे, मेरी बीमारी लम्बी हो गई है और अगर मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) को यह फ़रमाते हुए न सुना होता कि ''तुम मौत की आरज़ू न करो। तो मैं उसकी ख़्वाहिश करता'' और आप (ﷺ) ने फ़रमाया, ''आदमी को तमाम अख़राजात में सवाब मिलता है सिवाए मिट्टी (की इमारत) के।''

सहीह: इब्ने माजह:4163.

2483 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شَرِيكٌ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ حَارِثَةَ بْنِ مُضَرِّبٍ، قَالَ: أَتَيْنَا خَبَّابًا، نَعُودُهُ وَقَدْ اكْتَوَى سَبْعَ كَيَّاتٍ، فَقَالَ: لَقَدْ تَطَاوَلَ مَرَضِي، وَلَوْلاَ أَنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: لاَ تَمَنَّوْا الْمَوْتَ، لَتَمَنَّيْتُ، وَقَالَ: يُؤْجَرُ الرَّجُلُ فِي نَفَقَتِهِ كُلِّهَا إِلاَّ التُّرَابَ أَوْ قَالَ: فِي الْبِنَاءِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह है।

41 - किसी मुसलमान को लिबास देने का अज्र

41- بَابُ مَا جَاءَ فِي ثَوَابِ مَنْ كَسَا مُسْلِمًا

2484 - हुसैन (رحمه الله) बयान करते हैं कि एक साइल ने आकर सय्यदना इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से कुछ माँगा तो इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) ने साइल से कहा: क्या तुम गवाही देते हो कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं ? उस ने कहा: ''जी हाँ'' उन्होंने कहा: क्या तुम गवाही देते हो कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं? उसने कहा: ''जी हाँ'' उन्होंने कहा तुम रमज़ान के रोज़े रखते हो? उस ने कहा: ''जी हाँ'' उन्होंने कहा: साइल का हक़ होता है और हमारा हक़ बनता है कि तुझसे सिला रहमी करें, उसे एक कपड़ा दिया फिर फ़रमाने लगे: मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: ''जो मुसलमान किसी मुसलमान को कपड़ा पहना दे तो जब तक उस कपड़े में से एक टुकडा भी उस पर रहेगा यह देने वाला अल्लाह की हिफाज़त में रहता है।''

ज़ईफ़: हाकिम:4/ 196.

2484 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ الزُّبَيْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ طَهْمَانَ أَبُو الْعَلاَءِ، قَالَ: حَدَّثَنَا حُصَيْنٌ، قَالَ: جَاءَ سَائِلٌ فَسَأَلَ ابْنَ عَبَّاسٍ، فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ لِلسَّائِلِ: أَتَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: أَتَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: وَتَصُومُ رَمَضَانَ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: سَأَلْتَ وَلِلسَّائِلِ حَقٌّ، إِنَّهُ لَحَقٌّ عَلَيْنَا أَنْ نَصِلَكَ، فَأَعْطَاهُ ثَوْبًا ثُمَّ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: مَا مِنْ مُسْلِمٍ كَسَا مُسْلِمًا ثَوْبًا إِلاَّ كَانَ فِي حِفْظٍ مِنَ اللهِ مَا دَامَ مِنْهُ عَلَيْهِ خِرْقَةٌ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस इस सनद से हसन ग़रीब है।

42 - हदीस: सलाम को आम करो।

42- بَابٌ حديث: أفشوا السلام.

2485 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन सलाम (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब मदीना में तशरीफ़ लाये तो लोग आप की तरफ़ दौड़े[1] और कहा जाता था कि रसूलुल्लाह (ﷺ) आ गए हैं। फिर मैं भी लोगों के साथ आपको देखने गया। जब मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) का चेहरा देखा तो मैं जान गया कि आप का चेहरा किसी झूठे का चेहरा नहीं हो सकता और आप (ﷺ) ने जो पहली बात की वह ये थी कि आप ने फ़रमाया, ''ऐ लोगो! सलाम को आम करो, मिस्कीनों को खाना खिलाओ और जब लोग सो रहे हों तुम नमाज़ पढ़ो, तुम सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओगे।''

सहीह: इब्ने माजा: 1334, मुसनद अहमद:5/451, दारमी: 1468

2485 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الوَهَّابِ الثَّقَفِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، وَابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، وَيَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ عَوْفِ بْنِ أَبِي جَمِيلَةَ الأَعْرَابِيِّ، عَنْ زُرَارَةَ بْنِ أَوْفَى، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ سَلاَمٍ، قَالَ: لَمَّا قَدِمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ الْمَدِينَةَ انْجَفَلَ النَّاسُ إِلَيْهِ، وَقِيلَ: قَدِمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ، فَجِئْتُ فِي النَّاسِ لأَنْظُرَ إِلَيْهِ، فَلَمَّا اسْتَبَنْتُ وَجْهَ رَسُولِ اللهِ ﷺ عَرَفْتُ أَنَّ وَجْهَهُ لَيْسَ بِوَجْهِ كَذَّابٍ وَكَانَ أَوَّلُ شَيْءٍ تَكَلَّمَ بِهِ أَنْ قَالَ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ، أَفْشُوا السَّلاَمَ، وَأَطْعِمُوا الطَّعَامَ، وَصَلُّوا وَالنَّاسُ نِيَامٌ تَدْخُلُونَ الجَنَّةَ بِسَلاَمٍ.

तौज़ीह: إنجفل : आप की तरफ़ दौड़े, भाग कर आप (ﷺ) के पास गए।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

43 - हदीस: शुक्र गुज़ार खाना खाने वाला

43- بَابٌ حديث: الطاعم الشاكر:

2486 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ''खाना खा कर शुक्र करने वाला, सब्र करने वाले रोज़ेदार के मर्तबा में है।''

सहीह: इब्ने माजह: 1764. मुसनद अहमद 2/283.

2486 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مُوسَى الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَعْنٍ الْمَدَنِيُّ الغِفَارِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: الطَّاعِمُ الشَّاكِرُ بِمَنْزِلَةِ الصَّائِمِ الصَّابِرِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

44 - मुहाजिरीन का अपने साथ अंसार के हुस्ने सुलूक पर उनकी तारीफ़ करना।

44- بَابُ ثناء المهاجرين علي صنيع الأنصار مهم.

2487 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) जब मदीना तशरीफ़ लाये तो मुहाजिरीन ने आप(ﷺ) के पास आकर अर्ज़ किया, ''ऐ अल्लाह के रसूल! ज़्यादा माल से ख़र्च और कम माल से गमख्वारी करने वाली कोई कौम हम ने इस कौम से बढ़ कर नहीं देखी जिन के पास हम आए हैं, वह हमें मेहनत भी नहीं करने देते और हमें राहत व आराम में शरीक भी करते हैं। यहाँ तक कि हमें डर है कि वह सारा अज्र ले जायेंगे, तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ''नहीं, जब तक तुम अल्लाह से उन के लिए दुआ करते और उनकी तारीफ़ करते रहोगे।''

सहीह: अबू दाऊद:4812. मुसनद अहमद: 3/200. बैहक़ी:6/183.

2487 - حَدَّثَنَا الحُسَيْنُ بْنُ الحَسَنِ الْمَرْوَزِيُّ، بِمَكَّةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: لَمَّا قَدِمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَدِينَةَ أَتَاهُ الْمُهَاجِرُونَ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ، مَا رَأَيْنَا قَوْمًا أَبْذَلَ مِنْ كَثِيرٍ وَلاَ أَحْسَنَ مُوَاسَاةً مِنْ قَلِيلٍ مِنْ قَوْمٍ نَزَلْنَا بَيْنَ أَظْهُرِهِمْ لَقَدْ كَفَوْنَا الْمُؤْنَةَ وَأَشْرَكُونَا فِي الْمَهْنَإِ حَتَّى لَقَدْ خِفْنَا أَنْ يَذْهَبُوا بِالأَجْرِ كُلِّهِ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ مَا دَعَوْتُمُ اللَّهَ لَهُمْ وَأَثْنَيْتُمْ عَلَيْهِمْ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

45 - क़रीब रहने वाले आसानी करने वाले और बावक़ार रहने वाले की फ़ज़ीलत।

45- بَابُ فضل كل قريب هين سهل.

2488 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''क्या मैं तुम्हें वह शख़्स न बताऊँ जो आग पर हराम है और जिस पर आग हराम है? हर क़रीब रहने वाला बावक़ार[1] और आसानी करने वाले पर।''

2488 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو الأَوْدِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَلاَ أُخْبِرُكُمْ بِمَنْ يَحْرُمُ عَلَى النَّارِ أَوْ بِمَنْ

تَحْرُمُ عَلَيْهِ النَّارُ، عَلَى كُلِّ قَرِيبٍ هَيِّنٍ سَهْلٍ.

सहीह: मुसनद अहमद:415. अबू याला: 5053. इब्ने हिब्बान:469.

तौज़ीह: هَيِّن : هون से मुश्तक है जिसका मानी है सकीनत वक़ार और संजीदगी।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

2489 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنِ الحَكَمِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ يَزِيدَ، قَالَ: قُلْتُ لِعَائِشَةَ: أَيُّ شَيْءٍ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَصْنَعُ إِذَا دَخَلَ بَيْتَهُ؟ قَالَتْ: كَانَ يَكُونَ فِي مَهْنَةِ أَهْلِهِ فَإِذَا حَضَرَتِ الصَّلَاةُ قَامَ فَصَلَّى.

2489 - अस्वद बिन यज़ीद कहते हैं: मैंने अर्ज़ किया, ''ऐ आयशा (उम्मुल मोमिनीन)! नबी (ﷺ) जब अपने घर में आते तो आप क्या काम करते थे? फ़रमाने लगीं: आप (ﷺ) अपने घर का काम काज करने लगते फिर जब नमाज़ का वक़्त हो जाता तो आप खड़े होते फिर नमाज़ पढ़ते।

बुखारी:676. मुसनद अहमद:6/49. बैहक़ी: 2/215.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

46 - بَابٌ تواضعه صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مع جليسه:

46 - नबी (ﷺ) का अपने हम मजलिस के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आना।

2490 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ زَيْدٍ التَّغْلَبِيِّ، عَنْ زَيْدٍ العَمِّيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا اسْتَقْبَلَهُ الرَّجُلُ فَصَافَحَهُ لاَ يَنْزِعُ يَدَهُ مِنْ يَدِهِ حَتَّى يَكُونَ الرَّجُلُ الَّذِي يَنْزِعُ، وَلاَ يَصْرِفُ وَجْهَهُ عَنْ وَجْهِهِ حَتَّى يَكُونَ الرَّجُلُ هُوَ الَّذِي يَصْرِفُهُ وَلَمْ يُرَ مُقَدِّمًا رُكْبَتَيْهِ بَيْنَ يَدَيْ جَلِيسٍ لَهُ.

2490 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) के सामने जब कोई आदमी आकर आप(ﷺ) से मुसाफ़ा करता तो आप (ﷺ) अपना हाथ उस के हाथ से न खींचते यहाँ तक कि वह आदमी ख़ुद ही अपना हाथ खींचता और आप (ﷺ) अपना चेहरा उस के चेहरे से न फेरते, यहाँ तक कि वह आदमी ख़ुद ही अपना चेहरा फेरता और आप (ﷺ) को अपने हम मजलिस के सामने पाँव फैला कर बैठे हुए कभी नहीं देखा गया।

ज़ईफ़: इब्ने माजह:3716. अली बिन जाद: 3568. इब्ने साद:1/378.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है।

47 - तकब्बुर (घमण्ड) करने वालों के लिए सख़्त वईद है।

47 – بَابُ مَا جَاءَ فِي شِدَّةِ الوَعِيدِ لِلْمُتَكَبِّرِينَ.

2491 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ السَّائِبِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: خَرَجَ رَجُلٌ مِمَّنْ كَانَ قَبْلَكُمْ فِي حُلَّةٍ لَهُ يَخْتَالُ فِيهَا، فَأَمَرَ اللَّهُ الأَرْضَ فَأَخَذَتْهُ فَهُوَ يَتَجَلْجَلُ فِيهَا، أَوْ قَالَ: يَتَلَجْلَجُ فِيهَا، إِلَى يَوْمِ القِيَامَةِ.

2491 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''तुम से पहले लोगों में से एक आदमी अपने लिबास में इतराता हुआ निकला अल्लाह तआला ने ज़मीन को हुक्म दिया तो उस ने उसे पकड़ लिया वह क़यामत के दिन तक उस में धंसता[1] ही जाएगा।''

सहीह: मुसनद अहमद:2/222.

तौज़ीह: (1) रावी ने यहाँ शक के दो अल्फ़ाज़ बोले हैं: कि आप (ﷺ) ने يَتَجَلْجَلُ का लफ़्ज़ बोला या يَتَلَجْلَجُ लेकिन दोनों से मुराद एक ही है। "धंसना"

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह है।

2492 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَجْلاَنَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: يُحْشَرُ الْمُتَكَبِّرُونَ يَوْمَ القِيَامَةِ أَمْثَالَ الذَّرِّ فِي صُوَرِ الرِّجَالِ يَغْشَاهُمُ الذُّلُّ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ، فَيُسَاقُونَ إِلَى سِجْنٍ فِي جَهَنَّمَ يُسَمَّى بُولَسَ تَعْلُوهُمْ نَارُ الأَنْيَارِ يُسْقَوْنَ مِنْ عُصَارَةِ أَهْلِ النَّارِ طِينَةَ الخَبَالِ.

2492 - सय्यदना अम्र बिन शोऐब अपने बाप से वह अपने दादा सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (ﷺ) से रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ''क़यामत के दिन तकब्बुर करने वाले, मर्दों की शक्ल में ही छोटी-छोटी चींटीयों की तरह जमा किये जायेंगे उनको हर तरफ़ से ज़िल्लत ढांपे हुए होगी। उन्हें जहन्नम की बूलस नामी जेल की तरफ़ हांका जाएगा। आग का मज्मूआ उन पर चढ़ जाएगा। (और) उन्हें जहन्नमियों का उसारा तीनतुलख़बाल[1] पिलाया जाएगा।''

हसन: हुमैदी:598, मुसनद अहमद:2/179, अदबुल मुफ़रद:557.

तौज़ीह: عُصَارَة का नाम ही طِينَةُ الخَبَال है और عُصَارَة हर चीज़ के अर्क (निचोड़) को कहा जाता और जहन्नमियों के عُصَارَة से मुराद उनका ख़ून और पीप वगैरह है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह है।

48 - चार अहादीस पर मुश्तमिल एक बाब।

48- بَابٌ فيه أربعة أحاديث:

2493 - सय्यदना सहल बिन मुआज़ (رضي الله عنه) अपने बाप से रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ''जिस ने अपना गुस्सा पी लिया हालांकि वह जारी करने पर क़ादिर भी था तो क़यामत के दिन अल्लाह तआला उसे सारी मख़लूक़ के सामने बुला कर मन पसंद हूर के इन्तिख़ाब का इख़्तियार देंगे।''

हसन: तख़रीज के लिए हदीस नम्बर 2021. तोहफतुल अशराफ़: 11298.

2493 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، وَعَبَّاسُ بْنُ مُحَمَّدٍ الدُّورِيُّ، قَالاَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ الْمُقْرِئُ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو مَرْحُومٍ عَبْدُ الرَّحِيمِ بْنُ مَيْمُونٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ مُعَاذِ بْنِ أَنَسٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ كَظَمَ غَيْظًا وَهُوَ يَقْدِرُ عَلَى أَنْ يُنَفِّذَهُ دَعَاهُ اللَّهُ عَلَى رُءُوسِ الخَلاَئِقِ يَوْمَ القِيَامَةِ حَتَّى يُخَيِّرَهُ فِي أَيِّ الحُورِ شَاءَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

2494 - सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''जिस शख़्स में ये बातें हों। क़यामत के दिन अल्लाह तआला उस पर अपना बाज़ू फैलाएगा और उसे जन्नत में दाख़िल करेगा। कमज़ोर के साथ नर्मी करना, वालिदैन पर शफ़क़त करना और गुलाम पर एहसान करना''

मौज़ू: अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:92.

2494 - حَدَّثَنَا سَلَمَةُ بْنُ شَبِيبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الغِفَارِيُّ الْمَدِينِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ثَلاَثٌ مَنْ كُنَّ فِيهِ نَشَرَ اللَّهُ عَلَيْهِ كَنَفَهُ وَأَدْخَلَهُ جَنَّتَهُ: رِفْقٌ بِالضَّعِيفِ، وَشَفَقَةٌ عَلَى الوَالِدَيْنِ، وَإِحْسَانٌ إِلَى الْمَمْلُوكِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है और अबू बक्र बिन मुन्कदिर, मुहम्मद बिन मुन्कदिर के भाई हैं।

2495 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ لَيْثٍ، عَنْ شَهْرِ بْنِ حَوْشَبٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ غَنْمٍ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى: يَا عِبَادِي كُلُّكُمْ ضَالٌّ إِلاَّ مَنْ هَدَيْتُ فَسَلُونِي الهُدَى أَهْدِكُمْ، وَكُلُّكُمْ فَقِيرٌ إِلاَّ مَنْ أَغْنَيْتُ فَسَلُونِي أَرْزُقْكُمْ، وَكُلُّكُمْ مُذْنِبٌ إِلاَّ مَنْ عَافَيْتُ، فَمَنْ عَلِمَ مِنْكُمْ أَنِّي ذُو قُدْرَةٍ عَلَى الْمَغْفِرَةِ فَاسْتَغْفَرَنِي غَفَرْتُ لَهُ وَلاَ أُبَالِي، وَلَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ وَحَيَّكُمْ وَمَيِّتَكُمْ وَرَطْبَكُمْ وَيَابِسَكُمْ اجْتَمَعُوا عَلَى أَتْقَى قَلْبِ عَبْدٍ مِنْ عِبَادِي مَا زَادَ ذَلِكَ فِي مُلْكِي جَنَاحَ بَعُوضَةٍ، وَلَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ وَحَيَّكُمْ وَمَيِّتَكُمْ وَرَطْبَكُمْ وَيَابِسَكُمْ اجْتَمَعُوا عَلَى أَشْقَى قَلْبِ عَبْدٍ مِنْ عِبَادِي مَا نَقَصَ ذَلِكَ مِنْ مُلْكِي جَنَاحَ بَعُوضَةٍ، وَلَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ وَحَيَّكُمْ وَمَيِّتَكُمْ وَرَطْبَكُمْ وَيَابِسَكُمْ اجْتَمَعُوا فِي صَعِيدٍ وَاحِدٍ فَسَأَلَ كُلُّ إِنْسَانٍ مِنْكُمْ مَا بَلَغَتْ أُمْنِيَّتُهُ فَأَعْطَيْتُ كُلَّ سَائِلٍ مِنْكُمْ مَا سَأَلَ مَا نَقَصَ ذَلِكَ مِنْ مُلْكِي إِلاَّ كَمَا لَوْ أَنَّ أَحَدَكُمْ مَرَّ بِالبَحْرِ فَغَمَسَ فِيهِ إِبْرَةً ثُمَّ رَفَعَهَا إِلَيْهِ، ذَلِكَ بِأَنِّي جَوَادٌ وَاجِدٌ مَاجِدٌ أَفْعَلُ مَا

2495 - सय्यदना अबू ज़र (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''अल्लाह तआला फ़रमाते हैं, ऐ मेरे बन्दों! तुम सब गुमराह हो मगर जिसे मैं हिदायत दूं चुनाँचे तुम मुझ से हिदायत का सवाल करो, मैं तुम्हें हिदायत दूंगा, तुम सब फकीर हो मगर जिसे मैं माल दूं, तुम मुझ से मांगो मैं तुम्हें रिज़्क दूंगा, तुम सब गुनाहगार हो मगर जिसे मैं बचाऊँ, तुम में से जो शख़्स जानता है कि मैं बख़्शने पर क़ादिर हूँ फिर वह मुझ से बख़्शिश मांगे तो मैं उसे बख़्शने में परवाह नहीं करता। अगर तुम्हारे पहले, आख़िरी, ज़िंदा, मुर्दे तर और सूखे मेरे बन्दों में से एक बहुत ही मुत्तक़ी बन्दे के दिल की तरह मुत्तफ़िक़ हो जाएँ तो यह चीज़ मेरी बादशाहत में मच्छर के पर जितना भी इजाफा नहीं कर सकती। और अगर तुम्हारे पास पहले, आख़िरी, ज़िंदा, मुर्दे, तर और सूखे मेरे बन्दों में से एक बहुत ही बदबख़्त बन्दे के दिल पर जमा हो जाएँ तो यह चीज़ मेरी बादशाहत से मच्छर के पर जितना भी कम नहीं कर सकती, अगर तुम्हारे पहले, पिछले, ज़िंदा, मुर्दा, तर, सूखे एक ही मैदान में जमा हो कर हर इंसान अपनी ख़्वाहिशात के मुताबिक़ मांगने लगें फिर मैं हर साइल को दे दूं तो यह चीज़ मेरी बादशाहत से उतना ही कम करेगी जैसे तुम में से कोई शख़्स समन्दर के पास से गुज़रे तो उसमें एक सूई डुबो दे फिर उसे अपनी तरफ़ उठाये। यह इस वजह से है कि मैं जव्वाद, वाहिद और माजिद[1] हूँ, वही करता हूँ जो मैं

इरादा करूं, मेरी अता भी कलाम से ही हो जाती है और मेरा अज़ाब भी क़लाम से ही हो जाता है जब मैं किसी काम का इरादा करता हूँ उसे मैं कहता हूँ हो जा, तो वह हो जाता है।''

इन अल्फ़ाज़ के साथ ज़ईफ़ है। इब्ने माजह:4257. मुसनद अहमद:5/ 154.

أُرِيدُ عَطَائِي كَلَامٌ وَعَذَابِي كَلَامٌ إِنَّمَا أَمْرِي لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْتُهُ أَنْ أَقُولَ لَهُ: كُنْ، فَيَكُونُ.

तौज़ीह: 1) एक सब से बड़े मुत्तक़ी आदमी के दिल पर जमा होने का मतलब है कि दुनिया के सब से बड़े मुत्तक़ी आदमी जैसे तुम सब बन जाओ। इसी तरह बदबख़्त भी।

(2) جَوَادٌ وَاجِدٌ مَاجِدٌ : सख़ावत के दरजात हैं। यानी ऐसा सखी जो हर एक को दे, मांगने पर अता करे और न मांगने पर नाराज़ हो।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है और बअ़ज़ ने इस हदीस को शहर बिन हौशब से, उन्होंने मअदीक़रिब से बवास्ता अबू ज़र (ﷺ) नबी (ﷺ) से रिवायत किया है।

2496 - सय्यदना इब्ने उमर (ﷺ) रिवायत करते हैं कि मैंने नबी (ﷺ) से एक हदीस सुनी अगर मैंने एक या दो बार सुनी होती यहाँ तक कि सात बार तक गिना (तो मैं बयान न करता) बल्कि मैंने इससे भी ज़्यादा मर्तबा रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी है आप (ﷺ) ने फ़रमाया : ''बनी इस्राईल में किफ्ल नामी एक आदमी था जो कोई भी गुनाह करने से नहीं डरता था, उस के पास एक औरत आई तो उसने उससे मुबाशिरत करने की शर्त पर उसे साठ दीनार दिए, फिर जब उसके पास उस जगह बैठा जहां आदमी अपनी बीवी के साथ बैठता है तो वह कपकंपाने और रोने लगी, उसने कहा: क्यों रोती हो? क्या मैंने तुम्हें मजबूर किया है? उसने कहा, ''नहीं, लेकिन यह वह काम है जो मैंने कभी नहीं किया और मुझे इस पर सिर्फ़ ज़रुरत ने मजबूर किया है'' तो वह कहने लगा: तु यह

2496 - حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ أَسْبَاطِ بْنِ مُحَمَّدٍ الْقُرَشِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، قَالَ: حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ الرَّازِيِّ، عَنْ سَعْدٍ، مَوْلَى طَلْحَةَ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُحَدِّثُ حَدِيثًا لَوْ لَمْ أَسْمَعْهُ إِلاَّ مَرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ حَتَّى عَدَّ سَبْعَ مَرَّاتٍ، وَلَكِنِّي سَمِعْتُهُ أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ، سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: كَانَ الكِفْلُ مِنْ بني إسرائيل لاَ يَتَوَرَّعُ مِنْ ذَنْبٍ عَمِلَهُ، فَأَتَتْهُ امْرَأَةٌ فَأَعْطَاهَا سِتِّينَ دِينَارًا عَلَى أَنْ يَطَأَهَا، فَلَمَّا قَعَدَ مِنْهَا مَقْعَدَ الرَّجُلِ مِنْ امْرَأَتِهِ أَرْعَدَتْ وَبَكَتْ، فَقَالَ: مَا يُبْكِيكِ أَأَكْرَهْتُكِ؟ قَالَتْ: لاَ وَلَكِنَّهُ عَمَلٌ مَا

عَمِلْتُهُ قَطُّ، وَمَا حَمَلَنِي عَلَيْهِ إِلاَّ الحَاجَةُ، فَقَالَ: تَفْعَلِينَ أَنْتِ هَذَا وَمَا فَعَلْتِهِ؟ اذْهَبِي فَهِيَ لَكِ، وَقَالَ: لاَ وَاللَّهِ لاَ أَعْصِي اللَّهَ بَعْدَهَا أَبَدًا، فَمَاتَ مِنْ لَيْلَتِهِ فَأَصْبَحَ مَكْتُوبًا عَلَى بَابِهِ، إِنَّ اللَّهَ قَدْ غَفَرَ لِلْكِفْلِ.

काम करती है हालांकि तूने कभी ज़िना नहीं किया, जाओ वह माल भी तुम्हारा है और कहने लगा: अल्लाह की क़सम! मैं इसके बाद कभी अल्लाह की नाफ़र्मानी नहीं करूंगा, फिर वह उसी रात मर गया, जब सुबह हुई तो उस के दरवाज़े पर लिखा था यक़ीनन अल्लाह ने किफ़्ल को बख़्श दिया है।''

ज़ईफ़: मुसनद अहमद: 2/23. हाकिम: 4/254. बैहक़ी फ़ी शुअब:7108.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है। शैबान और दीगर रावियों ने आमश से बयान करते हुए इसे मर्फ़ू ज़िक्र किया है और बअ़ज़ ने आमश से रिवायत करते हुए मर्फ़ू ज़िक्र नहीं किया और अबू बक्र बिन अयाश ने इस हदीस को आमश से बयान करते हुए गलती करते हुए अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह से बवास्ता सईद, जुबैर, इब्ने उमर (رضي الله عنه) से रिवायत की है यह ग़ैर महफ़ूज़ है।

अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह अर्राज़ी कूफी थे उनकी दादी अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) की कनीज़ थीं। नीज़ उबैदा ज़ब्बी, हज्जाज बिन अर्तात और दीगर बड़े-बड़े उलमा ने भी अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह से रिवायत की है।

49 - بَابٌ فِي استعظام المومن ذنوبه.

49 - मोमिन अपने गुनाहों को बहुत बड़ा समझता है।

2497 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنِ الحَارِثِ بْنِ سُوَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْعُودٍ بِحَدِيثَيْنِ أَحَدِهِمَا عَنْ نَفْسِهِ وَالآخَرِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ عَبْدُ اللهِ: إِنَّ الْمُؤْمِنَ يَرَى ذُنُوبَهُ كَأَنَّهُ فِي أَصْلِ جَبَلٍ يَخَافُ أَنْ يَقَعَ عَلَيْهِ، وَإِنَّ الفَاجِرَ يَرَى ذُنُوبَهُ كَذُبَابٍ وَقَعَ عَلَى أَنْفِهِ قَالَ بِهِ هَكَذَا

2497 - हारिस बिन सुवैद (رحمه الله) कहते हैं हमें अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने दो अहादीस बयान की। एक अपनी तरफ़ से और दूसरी नबी (ﷺ) की तरफ़ से अब्दुल्लाह कहते हैं मोमिन अपने गुनाहों को ऐसे देखता है गोया वह पहाड़ की जड़ में है वह पहाड़ों के अपने ऊपर गिरने से डरता है जबकि फाजिर अपने गुनाहों को ऐसे देखता है जैसे एक मक्खी उसकी नाक पर बैठी उसने इस तरह इशारा किया तो उड़ गई।''

बुख़ारी:6308. मुस्लिम:8/92

2498 - रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला तुम में से किसी एक की तौबा की वजह से उस आदमी से भी ज़्यादा खुश होते हैं जो बयाबान ज़मीन में था जहाँ घास भी न थी और हलाकत का ख़ौफ़ भी था[1] और उस आदमी के साथ उसकी सवारी थी जिस पर उसका राशन खाना पीना और ज़रूरत की अशिया (चीज़ें) भी थीं फिर वह सवारी गुम हो गई, वह तलाश करने निकला यहाँ तक कि उसे मौत ने पा लिया, वह कहने लगा: मैं अपनी उसी जगह जाता हूँ जहां मैंने उसे गुम किया था कि वहीं मर जाउंगा, वह अपनी जगह वापस आया तो उसे नींद आ गई फिर जब बेदार हुआ तो उसकी सवारी उसके सिर के पास थी उस पर उसका खाना पीना और ज़रूरत की अशिया भी थी।"

2498 - فطَارَ وقَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَلَّهُ أَفْرَحُ بِتَوْبَةِ أَحَدِكُمْ مِنْ رَجُلٍ بِأَرْضٍ دَوِيَّةٍ مُهْلِكَةٍ مَعَهُ رَاحِلَتُهُ عَلَيْهَا زَادُهُ وَطَعَامُهُ وَشَرَابُهُ وَمَا يُصْلِحُهُ فَأَضَلَّهَا فَخَرَجَ فِي طَلَبِهَا، حَتَّى إِذَا أَدْرَكَهُ الْمَوْتُ قَالَ: أَرْجِعُ إِلَى مَكَانِي الَّذِي أَضْلَلْتُهَا فِيهِ فَأَمُوتُ فِيهِ، فَرَجَعَ إِلَى مَكَانِهِ فَغَلَبَتْهُ عَيْنُهُ فَاسْتَيْقَظَ فَإِذَا رَاحِلَتُهُ عِنْدَ رَأْسِهِ عَلَيْهَا طَعَامُهُ وَشَرَابُهُ وَمَا يُصْلِحُهُ.

बुखारी:6308. मुस्लिम:2744

तौज़ीह: دوية : जहाँ कोई भी नबातात न होती हो सेहरा और मह्लका जहाँ हलाकत का डर हो।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहिमहुल्लाह) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और इस बारे में अबू हुरैरा, नौमान बिन बशीर और अनस बिन मालिक (रज़ि०) भी नबी (ﷺ) से रिवायत करते हैं।

2499 - सय्यदना अनस बिन मालिक (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "आदम का हर बेटा खता करने वाला है और बेहतरीन खताकार तौबा करने वाले हैं"

हसन: इब्ने माजह:4251. मुसनद अहमद: 3/198.दारमी:2730.

2499 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ حُبَابٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مَسْعَدَةَ الْبَاهِلِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: كُلُّ ابْنِ آدَمَ خَطَّاءٌ وَخَيْرُ الخَطَّائِينَ التَّوَّابُونَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहिमहुल्लाह) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे बवास्ता अली बिन मस्अदा ही क़तादा से जानते हैं।

50 - जो शख़्स अल्लाह पर ईमान रखता है उसे चाहिए कि अपने मेहमान की इज़्ज़त करे।

50-بَابٌ حديث: مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهُ

2500 - حَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهُ، وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلْيَقُلْ خَيْرًا أَوْ لِيَصْمُتْ.

2500 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ''जो शख़्स अल्लाह और आख़िरत के दिन पर यक़ीन रखता है उसे अपने मेहमान की इज़्ज़त करनी चाहिए और जो शख़्स अल्लाह और आख़िरत के दिन पर यक़ीन रखता है उसे चाहिए कि वह भलाई की बात करे वरना ख़ामोश रहे।''

बुखारी: 6018. मुस्लिम:47. अबू दाऊद: 4154. इब्ने माजह:3971.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह है। नीज़ इस बारे में आयशा, अनस और अबू शुरैह काबी से भी जो अदवी ख़ुज़ाई हैं जिनका नाम खुवैलिद बिन अम्र है। हदीस मर्वी है।

2501 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ لَهِيعَةَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَمْرٍو الْمَعَافِرِيِّ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْحُبُلِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَمَتَ نَجَا.

2501 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''जो ख़ामोश रहा वह निजात पा गया।''

सहीह: मुसनद अहमद: 2/ 159. दारमी: 2716

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे इब्ने लहीया की सनद से ही जानते हैं और अबू अब्दुर्रहमान हुबुली का नाम अब्दुल्लाह बिन यज़ीद है।

51 - हदीस: अगर इस बात को समन्दर के पानी में मिला दिया जाए।

51-بَابٌ حديث: لو مزح بها ماء البحر.

2502 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ،

2502 - सय्यदा आयशा (ﷺ) बयान करती हैं कि मैंने नबी (ﷺ) के पास एक आदमी की कोई बात बयान की तो आप (ﷺ) ने

قَالاَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ الأَقْمَرِ، عَنْ أَبِي حُذَيْفَةَ،، وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ ابْنِ مَسْعُودٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: حَكَيْتُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلاً فَقَالَ: مَا يَسُرُّنِي أَنِّي حَكَيْتُ رَجُلاً وَأَنَّ لِي كَذَا وَكَذَا، قَالَتْ: فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ صَفِيَّةَ امْرَأَةٌ، وَقَالَتْ بِيَدِهَا هَكَذَا كَأَنَّهَا تَعْنِي قَصِيرَةً، فَقَالَ: لَقَدْ مَزَجْتِ بِكَلِمَةٍ لَوْ مَزَجْتِ بِهَا مَاءَ البَحْرِ لَمُزِجَ.

फ़रमाया, ''मुझे यह बात अच्छी नहीं लगती कि मैं किसी की कोई बात बयान करूं अगरचे मुझे इतना माल भी मिले।'' कहती हैं: मैंने कहा: ''ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! सफ़िया ऐसी औरत है और अपने हाथ से इशारा किया कि छोटी है, तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, तुमने अपनी बातों में ऐसी बात मिलायी है अगर इसे समन्दर के पानी के साथ मिला दिया जाए तो वह भी कड़वा हो जाए।''

सहीह: अबू दाऊद: 4875. मुसनद अहमद: 6/ 126

2503 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ الأَقْمَرِ، عَنْ أَبِي حُذَيْفَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَا أُحِبُّ أَنِّي حَكَيْتُ أَحَدًا وَأَنَّ لِي كَذَا وَكَذَا.

2503 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ)ने फ़रमाया, ''मैं नहीं चाहता कि मैं किसी के बारे में कुछ कहूं अगरचे मुझे इतना- इतना माल भी मिले।''

सहीह

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और अबू हुज़ैफा कूफी हैं जो कि इब्ने मसऊद के शागिर्द थे उनका नाम सलमा बिन सुहैबा था।

52 - بَابٌ

52 - इसी के मुताल्लिक़ बाब।

2504 - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعِيدٍ الجَوْهَرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا بُرَيْدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ: سُئِلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَيُّ الْمُسْلِمِينَ أَفْضَلُ؟ قَالَ: مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُونَ مِنْ لِسَانِهِ وَيَدِهِ.

2504 - सय्यदना अबू मूसा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा गया: कौन सा मुसलमान फ़ज़ीलत वाला है? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, ''जिसकी ज़बान और हाथ से मुसलमान महफ़ूज़ रहें''

बुखारी:11. मुस्लिम:42. निसाई:4999.

वज़ाहत: यह हदीस सय्यदना अबू मूसा (رضي الله عنه) के तरीक़ से सहीह ग़रीब है।

53 - जो शख़्स भाई को किसी गुनाह का ताना दे उसके लिए वईद।

53- بَابٌ في وعيد من عير أخاه بذنب

2505 - सय्यदना मुआज़ बिन जबल (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''जिस शख़्स ने अपने भाई को किसी गुनाह का ताना दिया वह तब तक नहीं मरेगा जब तक उसका गुनाह ख़ुद न कर ले।''

मौज़ू: अल-कामिल ले-इब्ने अदी:6/2181.

2505 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الحَسَنِ بْنِ أَبِي يَزِيدَ الهَمْدَانِيُّ، عَنْ ثَوْرِ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ خَالِدِ بْنِ مَعْدَانَ، عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَنْ عَيَّرَ أَخَاهُ بِذَنْبٍ لَمْ يَمُتْ حَتَّى يَعْمَلَهُ قَالَ أَحْمَدُ: قَالُوا: مِنْ ذَنْبٍ قَدْ تَابَ مِنْهُ.

वज़ाहत: इमाम अहमद कहते हैं कि उलमा का कहना है कि ऐसे गुनाह का ताना जिस से वह तौबा कर चुका हो।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। और इसकी सनद मुत्तसिल नहीं है ख़ालिद बिन मअ़दान ने मुआज़ बिन जबल (ﷺ) को नहीं पाया, ख़ालिद बिन मअ़दान से मर्वी है कि उन्होंने नबी (ﷺ) के सत्तर सहाबा को पाया है। मुआज़ बिन जबल (ﷺ) ने उमर बिन ख़त्ताब (ﷺ) की ख़िलाफ़त में वफ़ात पायी है जब कि उस वक़्त तक तो हज़ारों सहाबा मौजूद थे नीज़ ख़ालिद बिन मअ़दान ने मुआज़ बिन जबल (ﷺ) के कई शागिर्दों के वास्ते से मुआज़ बिन जबल (ﷺ) से कई अहादीस रिवायत की है।

54 - अपने भाई की तकलीफ़ पर ख़ुशी का इज़्हार न करो।

54- بَابٌ لاَ تُظْهِرِ الشَّمَاتَةَ لأَخِيكَ.

2506 - सय्यदना वासिला बिन अस्क़ा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''अपने भाई के लिए उसकी परेशानी पर ख़ुशी का इज़्हार न करो हो सकता है कि अल्लाह उस पर रहम कर दे और तुम्हें उस मुसीबत में मुब्तला कर दे।''

ज़ईफ़: अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा:5426

2506 - حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ بْنِ مُجَالِدِ بْنِ سَعِيدٍ الْهَمْدَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غِيَاثٍ (ح) وأَخْبَرَنَا سَلَمَةُ بْنُ شَبِيبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أُمَيَّةُ بْنُ القَاسِمِ الحَذَّاءُ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غِيَاثٍ، عَنْ بُرْدِ بْنِ سِنَانٍ،

عَنْ مَكْحُولٍ، عَنْ وَاثِلَةَ بْنِ الأَسْقَعِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ تُظْهِرِ الشَّمَاتَةَ لأَخِيكَ فَيَرْحَمَهُ اللَّهُ وَيَبْتَلِيكَ

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। और मक्हूल ने वासिला बिन अस्क़ा, अनस बिन मालिक और अबू हिन्द दारी (ﷺ) से सिमा (सुनना) किया है और कहा जाता है कि उन्होंने नबी (ﷺ) के सिर्फ़ इन्हीं तीन सहाबा से सिमाए हदीस किया है।

मक्हूल शामी की कुनियत अबू अब्दुल्लाह थी। यह गुलाम थे। फिर इन्हें आज़ाद किया गया था और मक्हूल अज्दी बस्रा के रहने वाले थे इन्होंने अब्दुल्लाह बिन अम्र (ﷺ) से हदीस सुनी है और इनसे उमारा बिन ज़ादान ने रिवायत की है।

अबू ईसा कहते हैं: हमें अली बिन हुज्र ने वह कहते हैं: हमें इस्माईल बिन अयाश ने बयान किया कि तमीम बिन अतिय्या कहते हैं: मैं अक्सर मक्हूल से सुना करता था इनसे सवाल किया जाता वह कहते हैं: ندانم यानी मैं नहीं जानता।

तौज़ीह: ندانم : यह फारसी का लफ़्ज़ है जिस का मतलब है मैं नहीं जानता।

55 - लोगों की तक्लीफ़ों पर सब्र करके उनके साथ मेलजोल रखने की फ़ज़ीलत।

55 – بَابٌ فِي فضل المخالطه مع الصبر علي أذى الناس.

2507 - यह्या बिन वस्साब नबी (ﷺ) के सहाबा में से एक बुजुर्ग से रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ''बेशक जो मुसलमान आदमी लोगों से मिल जुलकर रहे और उनकी तक्लीफ़ों पर सब्र करे (तो यह) उस मुसलमान से बेहतर है जो लोगों से मेल जोल नहीं रखता और न ही उनकी तक्लीफ़ों पर सब्र करता है।''

सहीह: इब्ने माजह:4032. तयालिसी: 1876. हिल्या:7/365.

2507 - حَدَّثَنَا أَبُو مُوسَى مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ سُلَيْمَانَ الأَعْمَشِ، عَنْ يَحْيَى بْنِ وَثَّابٍ، عَنْ شَيْخٍ، مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أُرَاهُ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: الْمُسْلِمُ إِذَا كَانَ يُخَالِطُ النَّاسَ وَيَصْبِرُ عَلَى أَذَاهُمْ خَيْرٌ مِنَ الْمُسْلِمِ الَّذِي لاَ يُخَالِطُ النَّاسَ وَلاَ يَصْبِرُ عَلَى أَذَاهُمْ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इब्ने अदी का कहना है कि शोबा के ख़याल में वह इब्ने उमर (رضي الله عنه) थे।

56 - आपस के झगड़ों में सुलह कराने की फ़ज़ीलत।

56- بَابٌ: فِي فضل صلاح ذات البين.

2508 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ''अपने आप को आपस की फूट (बुग्ज़) से बचाओ यक़ीनन ये मूंडने वाली है।''

हसन

2508 - حَدَّثَنَا أَبُو يَحْيَى مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ البَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ مَنْصُورٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ جَعْفَرٍ الْمَخْرَمِيُّ، هُوَ مِنْ وَلَدِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ مُحَمَّدٍ الأَخْنَسِيِّ، عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: إِيَّاكُمْ وَسُوءَ ذَاتِ البَيْنِ فَإِنَّهَا الحَالِقَةُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस सहीह ग़रीब है। और आपके फ़रमान (وَسُوءَ ذَاتِ البَيْنِ) से मुराद दुश्मनी और नफ़रत है और (الحَالِقَةُ) से मुराद यह है कि यह दीन को मूंड देती है।

2509 - सय्यदना अबू दर्दा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, '' क्या मैं तुम्हें रोज़े, नमाज़ और सदक़ा के दर्जात से अफ़ज़ल काम न बताऊँ?" लोगों ने अर्ज़ किया, ''ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! क्यों नहीं, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, ''आपस की दुश्मनी में सुलह कराना बेशक आपस का फ़साद मूंडने वाला है।''

सहीह: अबू दाऊद:4919. मुसनद अहमद: 6/444.

2509 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الجَعْدِ، عَنْ أُمِّ الدَّرْدَاءِ، عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: أَلاَ أُخْبِرُكُمْ بِأَفْضَلَ مِنْ دَرَجَةِ الصِّيَامِ وَالصَّلاَةِ وَالصَّدَقَةِ، قَالُوا: بَلَى، قَالَ: صَلاَحُ ذَاتِ البَيْنِ، فَإِنَّ فَسَادَ ذَاتِ البَيْنِ هِيَ الحَالِقَةُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह है। और नबी (ﷺ) से यह भी मर्वी है कि आप(ﷺ) ने फ़रमाया, ''यह मूंडने वाली है, मैं यह नहीं कहता कि यह बालों को मूंडती है बल्कि यह दीन को मूंड देती है।''

2510 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، عَنْ حَرْبِ بْنِ شَدَّادٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ يَعِيشَ بْنِ الوَلِيدِ، أَنَّ مَوْلًى لِلزُّبَيْرِ، حَدَّثَهُ أَنَّ الزُّبَيْرَ بْنَ العَوَّامِ، حَدَّثَهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: دَبَّ إِلَيْكُمْ دَاءُ الأُمَمِ قَبْلَكُمْ: الحَسَدُ وَالبَغْضَاءُ، هِيَ الحَالِقَةُ، لاَ أَقُولُ تَحْلِقُ الشَّعَرَ وَلَكِنْ تَحْلِقُ الدِّينَ، وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لاَ تَدْخُلُوا الجَنَّةَ حَتَّى تُؤْمِنُوا، وَلاَ تُؤْمِنُوا حَتَّى تَحَابُّوا، أَفَلاَ أُنَبِّئُكُمْ بِمَا يُثَبِّتُ ذَلِكَ لَكُمْ؟ أَفْشُوا السَّلاَمَ بَيْنَكُمْ.

2510 - सय्यदना ज़ुबैर बिन अव्वाम (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ''तुम्हारे अन्दर भी आहिस्ता- आहिस्ता तुम से पहले लोगों की बीमारियाँ हसद, बुग्ज़ आ गई है जो कि मूंडने वाली हैं। मैं यह नहीं कहता कि यह बालों को मूंडती है बल्कि यह दीन को मूंड देती है।'' उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मेरी जान है! तुम जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकते जब तक तुम ईमान न ले आओ और जब तक आपस में मोहब्बत न करने लगो तुम ईमान वाले नहीं हो सकते, क्या मैं तुम्हें उस चीज़ के बारे में न बताऊँ जिस के साथ यह चीज़ मज़बूत रहे, आपस में सलाम को फैलाओ।''

हसन: तयालिसी: 194. मुसनद अहमद: 1/ 167.

तौज़ीह: دَبَّ : रेंगना, आहिस्ता-आहिस्ता चलना कहा जाता है। دبت عقاربه : उसकी चुगुल खोरियाँ खूब असर कर गयीं, यानी पहली कौमों की आदात ने तुम में भी अपना असर दिखा दिया है।(अल-मोजमुल वसीत:317)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: मुहद्दिसीन ने इस हदीस को यह्या बिन अबी कसीर से रिवायत करने में इख़्तिलाफ़ किया है: बअज़ ने यह्या बिन अबी कसीर से बवास्ता यईश बिन वलीद, ज़ुबैर के मौला के ज़रिए नबी (ﷺ) से रिवायत की है इसमें ज़ुबैर का ज़िक्र नहीं किया।

57 - بَابٌ فِي عظم الوعيد على البغي و قطيعة الرحم.

57 - सरकशी और क़तअ़ रहमी (रिश्ते को तोड़ने) पर बहुत बड़ी वईद।

2511 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عُيَيْنَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي بَكْرَةَ، قَالَ: قَالَ

2511 - सय्यदना अबू बक्रा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''कोई गुनाह इस लायक़ नहीं है कि अल्लाह तआला उसे करने वाले को जल्दी ही दुनिया में

رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا مِنْ ذَنْبٍ أَجْدَرُ أَنْ يُعَجِّلَ اللَّهُ لِصَاحِبِهِ العُقُوبَةَ فِي الدُّنْيَا مَعَ مَا يَدَّخِرُ لَهُ فِي الآخِرَةِ مِنَ البَغْيِ وَقَطِيعَةِ الرَّحِمِ.

भी सज़ा दे दे और आख़िरत के लिए भी जमा करके रखे सिवाए सरकशी और रिश्तेदारी को तोड़ने के।''

सहीह: अबू दाऊद:4902. इब्ने माजह: 4211.इब्ने हिब्बान:455.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

58 - بَابٌ: أنظروا إلى من هو أسفل منكم.

58 - अपने से नीचे वाले को देखे।

2512 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، عَنِ الْمُثَنَّى بْنِ الصَّبَّاحِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ جَدِّهِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: خَصْلَتَانِ مَنْ كَانَتَا فِيهِ كَتَبَهُ اللَّهُ شَاكِرًا صَابِرًا، وَمَنْ لَمْ تَكُونَا فِيهِ لَمْ يَكْتُبْهُ اللَّهُ شَاكِرًا وَلاَ صَابِرًا، مَنْ نَظَرَ فِي دِينِهِ إِلَى مَنْ هُوَ فَوْقَهُ فَاقْتَدَى بِهِ، وَنَظَرَ فِي دُنْيَاهُ إِلَى مَنْ هُوَ دُونَهُ فَحَمِدَ اللَّهَ عَلَى مَا فَضَّلَهُ بِهِ عَلَيْهِ كَتَبَهُ اللَّهُ شَاكِرًا وَصَابِرًا، وَمَنْ نَظَرَ فِي دِينِهِ إِلَى مَنْ هُوَ دُونَهُ، وَنَظَرَ فِي دُنْيَاهُ إِلَى مَنْ هُوَ فَوْقَهُ فَأَسِفَ عَلَى مَا فَاتَهُ مِنْهُ لَمْ يَكْتُبْهُ اللَّهُ شَاكِرًا وَلاَ صَابِرًا.

2512 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आप फ़रमा रहे थे: ''दो खस्लतें ऐसी हैं जिसमें आ जाये अल्लाह तआला उसे शुक्र करने वाला सब्र करने वाला लिख देता है और जिस में यह ना हों, अल्लाह तआला उसे न शाकिर लिखता है न साबिर, जो शख़्स अपने दीन में अपने से ऊपर वाले को देख कर उस के पीछे चले और दुनिया के लिहाज़ से अपने से नीचे वाले को देख कर उस पर फ़ज़ीलत की वजह से अल्लाह का शुक्र करे। अल्लाह तआला उसे शाकिर, साबिर लिख देते हैं और जो शख़्स अपने दीन में अपने से नीचे वाले को देखे और दुनियावी एतबार से अपने से ऊपर वाले को देखकर न मिलने वाली चीजों पर अफ़सोस करे तो अल्लाह तआला उसे न शाकिर लिखता है न साबिर।''

ज़ईफ़: अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा:633

(अबू ईसा कहते हैं: हमें मूसा बिन हिजाम जो नेक आदमी थे। उन्होंने अली बिन इस्हाक़ से (वह कहते

हैं:) हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने उन्हें मुसन्ना बिन सबाह ने अम्र बिन शोऐब से उन्होंने अपने बाप से उन्होंने अपने दादा के ज़रिए नबी (ﷺ) से ऐसी ही हदीस बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। और सुवैद बिन नस्र ने अपनी हदीस में अम्र बिन शोऐब के बाप का ज़िक्र नहीं किया।

2513 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، وَوَكِيعٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: انْظُرُوا إِلَى مَنْ هُوَ أَسْفَلَ مِنْكُمْ، وَلاَ تَنْظُرُوا إِلَى مَنْ هُوَ فَوْقَكُمْ، فَإِنَّهُ أَجْدَرُ أَنْ لاَ تَزْدَرُوا نِعْمَةَ اللهِ عَلَيْكُمْ.

2513 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''(दुनिया के एतबार से) तुम उसे देखो जो तुम से नीचे है और अपने से ऊपर वाले को मत देखो। यह चीजें तुम्हें इस काबिल बना देगी कि तुम अल्लाह की नेअ्मत को छोटा न समझोगे जो तुम्हारे ऊपर है।''

बुख़ारी: बे-नह्विही:649. मुस्लिम:2963. इब्ने माजह:4142

59 - بَابٌ حديث حنظلة.

59 - हंज़ला (رضي الله عنه) की हदीस।

2514 - حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ هِلاَلٍ الْبَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ سَعِيدٍ الجُرَيْرِيِّ (ح) وحَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الْبَزَّازُ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَيَّارٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ سَعِيدٍ الجُرَيْرِيِّ، وَالْمَعْنَى وَاحِدٌ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ، عَنْ حَنْظَلَةَ الأُسَيِّدِيِّ،، وَكَانَ مِنْ كُتَّابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَنَّهُ مَرَّ بِأَبِي بَكْرٍ وَهُوَ يَبْكِي، فَقَالَ: مَا لَكَ يَا حَنْظَلَةُ؟ قَالَ: نَافَقَ حَنْظَلَةُ يَا أَبَا بَكْرٍ، نَكُونُ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُذَكِّرُنَا بِالنَّارِ وَالجَنَّةِ كَأَنَّا رَأْيَ عَيْنٍ، فَإِذَا رَجَعْنَا

2514 - अबू उस्मान नह्दी (رحمه الله) से रिवायत है कि हंज़ला असदी (رضي الله عنه) जो रसूलुल्लाह (ﷺ) के कातिबों में से थे। अबू बक्र (رضي الله عنه) के पास रोते हुए गुज़रे तो उन्होंने फ़रमाया, ''हंज़ला आप को क्या हुआ? कहने लगे: अबू बक्र हंज़ला मुनाफ़िक़ हो गया है। हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास होते हैं तो आप हमें जन्नत और जहन्नम की याद दिलाते हैं (तो ऐसा लगता है) गोया हम आँखों से देख रहे हैं फिर जब घरों को लौटते हैं तो बीवियों और सामाने दुनिया में मगन हो कर बहुत कुछ भुला देते हैं। (अबू बक्र ने) कहा: अल्लाह की क़सम! हम भी ऐसे ही हैं। हमारे साथ रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास चलो। हम चल

عَافَسْنَا الأَزْوَاجَ وَالضَّيْعَةَ وَنَسِينَا كَثِيرًا، قَالَ: فَوَاللَّهِ إِنَّا لَكَذَلِكَ، انْطَلِقْ بِنَا إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَانْطَلَقْنَا، فَلَمَّا رَآهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَا لَكَ يَا حَنْظَلَةُ؟ قَالَ: نَافَقَ حَنْظَلَةُ يَا رَسُولَ اللهِ، نَكُونُ عِنْدَكَ تُذَكِّرُنَا بِالنَّارِ وَالجَنَّةِ كَأَنَّا رَأْيَ عَيْنٍ، فَإِذَا رَجَعْنَا عَافَسْنَا الأَزْوَاجَ وَالضَّيْعَةَ وَنَسِينَا كَثِيرًا، قَالَ: فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَوْ تَدُومُونَ عَلَى الْحَالِ الَّتِي تَقُومُونَ بِهَا مِنْ عِنْدِي لَصَافَحَتْكُمُ الْمَلاَئِكَةُ فِي مَجَالِسِكُمْ، وَفِي طُرُقِكُمْ، وَعَلَى فُرُشِكُمْ، وَلَكِنْ يَا حَنْظَلَةُ سَاعَةً وَسَاعَةً.

दिए। फिर जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें देखा तो आप ने फ़रमाया, ''ऐ हंज़ला तुम्हें क्या हुआ?'' अर्ज़ किया, ''ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! हंज़ला मुनाफ़िक़ हो गया है। हम आप के पास होते हैं आप हम से दोज़ख़ और जन्नत का तजकिरा करते हैं (तो ऐसे लगता है कि) गोया हम आँख से देख रहे हैं फिर जब हम अपने घरों को लौट जाते हैं तो बीवियों और सामाने दुनिया में मगन होकर बहुत कुछ भूल जाते हैं। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया; ''अगर तुम हमेशा इसी हालत पर रहो जिस पर मेरे पास उठते हो तो फ़रिश्ते तुम्हारी मजलिसों, तुम्हारे बिस्तरों और तुम्हारे रास्तों में तुम से मुसाफ़ा करें लेकिन हंज़ला! वक़्त, वक़्त की बात होती है।''

मुस्लिम:2750. इब्ने माजह:4239.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2515 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لاَ يُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتَّى يُحِبَّ لأَخِيهِ مَا يُحِبُّ لِنَفْسِهِ.

2515 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ''तुम में से कोई शख़्स (उस वक़्त तक) मोमिन नहीं हो सकता जब तक अपने भाई के लिए भी वही पसन्द (न) करे जो अपने लिए पसंद करता है।''

बुखारी:31. मुस्लिम:45.इब्ने माजह:66. निसाई:5016.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह है।

2516 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ مُوسَى، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا لَيْثُ بْنُ سَعْدٍ، وَابْنُ لَهِيعَةَ، عَنْ قَيْسِ بْنِ الحَجَّاجِ (ح) وحَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ

2516 - सय्यदना इब्ने अब्बास (رضي الله عنهما) रिवायत करते हैं मैं एक दिन नबी (ﷺ) के पीछे (सवारी पर सवार) था कि आप (ﷺ) ने फ़रमाया, ''ऐ लड़के! मैं तुम्हें कुछ बातें सिखाता हूँ, तुम अल्लाह के अहकामात की

الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا أَبُو الوَلِيدِ، قَالَ: حَدَّثَنَا لَيْثُ بْنُ سَعْدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي قَيْسُ بْنُ الحَجَّاجِ، الْمَعْنَى وَاحِدٌ، عَنْ حَنَشٍ الصَّنْعَانِيِّ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: كُنْتُ خَلْفَ رَسُولِ اللهِ ﷺ يَوْمًا، فَقَالَ: يَا غُلَامُ إِنِّي أُعَلِّمُكَ كَلِمَاتٍ، احْفَظِ اللَّهَ يَحْفَظْكَ، احْفَظِ اللَّهَ تَجِدْهُ تُجَاهَكَ، إِذَا سَأَلْتَ فَاسْأَلِ اللَّهَ، وَإِذَا اسْتَعَنْتَ فَاسْتَعِنْ بِاللَّهِ، وَاعْلَمْ أَنَّ الأُمَّةَ لَوْ اجْتَمَعَتْ عَلَى أَنْ يَنْفَعُوكَ بِشَيْءٍ لَمْ يَنْفَعُوكَ إِلاَّ بِشَيْءٍ قَدْ كَتَبَهُ اللَّهُ لَكَ، وَلَوْ اجْتَمَعُوا عَلَى أَنْ يَضُرُّوكَ بِشَيْءٍ لَمْ يَضُرُّوكَ إِلاَّ بِشَيْءٍ قَدْ كَتَبَهُ اللَّهُ عَلَيْكَ، رُفِعَتِ الأَقْلَامُ وَجَفَّتْ الصُّحُفُ.

हिफ़ाज़त करो वह तुम्हारी हिफ़ाज़त करेगा, तुम अल्लाह की बातों की हिफ़ाज़त करो तो तुम उसे अपने सामने पाओगे, जब मांगो तो अल्लाह से मांगो और जान लो अगर सारी उम्मत तुम्हें नफ़ा देने पर इकट्ठी हो जाए तो तुम्हें वही कुछ फ़ायदा दे सकती है जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है और अगर तुम्हें नुकसान पहुंचाने पर जमा हो जाए तो वही नुकसान पहुंचा सकती हैं जो अल्लाह ने तुम्हारे ऊपर लिखा है, क़लमें उठा कर सहीफ़ों की सियाही को खुश्क कर दिया गया है।''

सहीह: मुसनद अहमद: 1/293, शोबुल ईमान: 10000

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

60. بَابٌ حدیث: اعْقِلْهَا وَتَوَكَّلْ

60 - ऊंटनी को बाँध कर अल्लाह पर भरोसा करो।

2517 - حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ القَطَّانُ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ بْنُ أَبِي قُرَّةَ السَّدُوسِيُّ، قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، يَقُولُ: قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللهِ أَعْقِلُهَا وَأَتَوَكَّلُ، أَوْ أُطْلِقُهَا وَأَتَوَكَّلُ؟ قَالَ: اعْقِلْهَا وَتَوَكَّلْ

2517 - सय्यदना अनस बिन मालिक (ﷺ) बयान करते हैं एक आदमी ने कहा: ''ऐ अल्लाह के रसूल! मैं इस ऊंटनी को बाँध कर अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा) करूं या इसे खोल कर तवक्कुल करूं? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, ''इसे बांधो फिर अल्लाह पर भरोसा करो।'' हसन: हिल्या: 8/390.

वज़ाहत: अम्र बिन अली कहते हैं: यह्या (ﷺ) ने फ़रमाया, मेरे नज़दीक यह हदीस मुन्कर है। इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: सय्यदना अनस बिन मालिक (ﷺ) से मर्वी हदीस ग़रीब है। हम इसे इसी सनद से ही जानते हैं। नीज़ अम्र बिन उमय्या ज़मरी भी नबी (ﷺ) से ऐसे ही एक रिवायत करते हैं।

2518 - حَدَّثَنَا أَبُو مُوسَى الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ إِدْرِيسَ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ بُرَيْدِ بْنِ أَبِي مَرْيَمَ، عَنْ أَبِي الحَوْرَاءِ السَّعْدِيِّ، قَالَ: قُلْتُ لِلْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ: مَا حَفِظْتَ مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ: حَفِظْتُ مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: دَعْ مَا يَرِيبُكَ إِلَى مَا لاَ يَرِيبُكَ، فَإِنَّ الصِّدْقَ طُمَأْنِينَةٌ، وَإِنَّ الكَذِبَ رِيبَةٌ وَفِي الحَدِيثِ قِصَّةٌ.

2518 - अबू हौरा सादी (ﷺ) कहते हैं: मैंने हसन बिन अली (ﷺ) से कहा: आप ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से क्या याद किया है? उन्होंने फ़रमाया, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से यह हदीस याद की है, जो चीज़ तुझे शक में डाले उसे छोड़ कर उस चीज़ की तरफ़ आ जाओ जो शक वाली नहीं है क्योंकि सच्चाई इत्मिनान और झूठ शक का बाइस है।" नीज़ इस हदीस में एक किस्सा भी है।

सहीह: निसाई:5711.दारमी:2535. मुसनद अहमद:1/200. इब्ने खुज़ैमा:2248.

वज़ाहत: अबू हौरा सादी का नाम रबीया बिन शैबान है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने उन्हें मुहम्मद बिन जाफ़र ने शोबा से ऐसे ही रिवायत की है।

2519 - حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ أَخْزَمَ الطَّائِيُّ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ أَبِي الوَزِيرِ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ جَعْفَرٍ الْمَخْرَمِيُّ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ نُبَيْهٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: ذُكِرَ رَجُلٌ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِعِبَادَةٍ وَاجْتِهَادٍ، وَذُكِرَ عِنْدَهُ آخَرُ بِرِعَةٍ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ يُعْدَلُ بِالرِّعَةِ

2519 - सय्यदना जाबिर (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) के पास एक आदमी की इबादत और कोशिश का ज़िक्र किया गया और दूसरे आदमी के वरा[1] का, तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया ''वरा के बराबर कोई चीज़ नहीं है।''

जईफ़।

तौज़ीह: رِعَة : वरा, ख़ौफ़े इलाही, तक़्वा और हराम से बचना, इन तमाम उमूर को शामिल है।

वज़ाहत: अब्दुल्लाह बिन जाफ़र, सय्यदना मिस्वर बिन मख़रमा (ﷺ) की औलाद में से हैं। यह मदनी और अहले हदीस के नज़दीक सिक़ह रावी हैं।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है हम इसे इसी सनद से जानते हैं।

2520 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، وَأَبُو زُرْعَةَ، وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا: أَخْبَرَنَا قَبِيصَةُ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ هِلَالِ بْنِ مِقْلَاصٍ الصَّيْرَفِيِّ، عَنْ أَبِي بِشْرٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَنْ أَكَلَ طَيِّبًا، وَعَمِلَ فِي سُنَّةٍ، وَأَمِنَ النَّاسُ بَوَائِقَهُ دَخَلَ الجَنَّةَ فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّ هَذَا اليَوْمَ فِي النَّاسِ لَكَثِيرٌ، قَالَ: وَسَيَكُونُ فِي قُرُونٍ بَعْدِي.

2520 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''जो शख़्स हलाल खाए, सुन्नत के मुताबिक़ अमल करे और लोग उसकी ईज़ा रसानियों (बद तमीज़ियों) से महफ़ूज़ हों वह जन्नत में दाख़िल होगा।'' एक आदमी ने कहा: ''ऐ अल्लाह के रसूल! ऐसे लोग आज भी बहुत हैं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, ''मेरे बाद वाले ज़मानों में भी होंगे।''

ज़ईफ़।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे इस्राईल के तरीक़ से ही जानते हैं। हमें अब्बास बिन मुहम्मद ने, उन्हें यह्या बिन अबी बुकैर ने इस्राईल से इसी सनद के साथ इसी मफ़्हूम की हदीस बयान की है मैंने मुहम्मद बिन इस्माईल से इस हदीस के बारे में पूछा तो वह सिर्फ़ इस्राईल की सनद से ही जानते थे। नीज़ उन्हें अबू बिशर के नाम का भी इल्म नहीं था। वह भी हिलाल बिन मिक़्लास के ज़रिए ही इस्राईल से क़बीसा की बयान कर्दा हदीस की तरह ही जानते थे।

2521 - حَدَّثَنَا عَبَّاسٌ الدُّورِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي مَرْحُومٍ عَبْدِ الرَّحِيمِ بْنِ مَيْمُونٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ مُعَاذِ بْنِ أَنَسٍ الجُهَنِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ أَعْطَى لِلَّهِ، وَمَنَعَ لِلَّهِ، وَأَحَبَّ لِلَّهِ، وَأَبْغَضَ لِلَّهِ، وَأَنْكَحَ لِلَّهِ، فَقَدْ اسْتَكْمَلَ إِيمَانَهُ.

2521 - सहल बिन मुआज़ बिन अनस जुहनी अपने बाप से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''जिसने अल्लाह के लिए दिया, अल्लाह के लिए रोका, अल्लाह के लिए मोहब्बत की, अल्लाह के लिए नफ़रत की और अल्लाह की रज़ा के लिए ही निकाह किया तो यक़ीनन उसने अपना ईमान मुकम्मल कर लिया।'

हसन: मुसनद अहमद: 3/438. हाकिम: 2/164. अबू याला: 1485.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस मुन्कर है।

2522 - حَدَّثَنَا عَبَّاسٌ الدُّورِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، قَالَ: أَخْبَرَنَا شَيْبَانُ، عَنْ

2522 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ''पहला गिरोह जो जन्नत में दाख़िल होगा

فِرَاسٍ، عَنْ عَطِيَّةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدِ الْخُ دْرِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: أَوَّلُ زُمْرَةٍ تَدْخُلُ الْجَنَّةَ عَلَى صُورَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ، وَالثَّانِيَةُ عَلَى لَوْنِ أَحْسَنِ كَوْكَبٍ دُرِّيٍّ فِي السَّمَاءِ، لِكُلِّ رَجُلٍ مِنْهُمْ زَوْجَتَانِ عَلَى كُلِّ زَوْجَةٍ سَبْعُونَ حُلَّةً يَبْدُو مُخُّ سَاقِهَا مِنْ وَرَائِهَا.

उनके चेहरे चौदहवीं के चाँद की तरह होंगे और दूसरे गिरोह (के लोगों के चेहरे) आसमान में बहुत ज़्यादा चमकने वाले सितारे के रंग पर होंगे, उन में से हर एक आदमी के लिए दो बीवियां होंगी। हर बीवी के बदन पर सत्तर लिबास होगा फिर भी उनके नीचे से उसकी पिंडली की हड्डी का गूदा नज़र आयेगा।

सहीह: मुसनद अहमद: 3/ 16.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

ख़ुलासा

- क़यामत के दिन हर इंसान अल्लाह के सामने आमाल के बदले के लिए पेश किया जाएगा।
- दुनिया में किसी पर की हुई हर ज़्यादती का हिसाब और किसास होगा।
- रोज़े क़यामत सूरज सर के बिल्कुल क़रीब आ जाएगा।
- लोग नंगे पाँव और नंगे बदन मैदाने महशर में जमा किए जायेंगे। रोज़े क़यामत दुनिया की हर नेअ्मत के बारे में सवाल किया जाएगा।
- एक ही सूर फूंकने से दुनिया ख़त्म हो जाएगी।
- क़यामत के दिन नबी करीम (ﷺ) अपनी उम्मत के लिए सिफ़ारिश करेंगे जो सिर्फ़ मुवह्हिदीन (तौहीद परस्तों) के लिए होगी।
- हौज़े कौसर का पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा होगा।
- इंसान की आरजूएं बहुत बड़ी लेकिन ज़िन्दगी बहुत थोड़ी है।
- समझदार और अक़्लमंद इंसान वह है जो अपना मुहासबा करे और आख़िरत की ज़िंदगी के लिए अमल करे।
- इंसान दुनिया में एक मुसाफ़िर की तरह है।
- अस्हाबे सुफ़्फ़ा ऐसे लोग थे जिनके पास कुछ न था इसके बावजूद उन्होंने दामने रसूल को नहीं छोड़ा।
- अगर सारी दुनिया के लोग अल्लाह तआला से मांगने लग जाएँ और अल्लाह सब को अता भी कर दे तो अल्लाह के ख़ज़ानों में कुछ भी कमी नहीं होती।
- अगर हम दुनिया के मामले में अपने से नीचे और दीन में ऊपर वाले को देखें तो हम ख़ुद भी बे परवाह हो जायेंगे।

मज़मून नम्बर 36.

أَبْوَابُ صِفَةِ الْجَنَّةِ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

रसूलुल्लाह (ﷺ) से मर्वी जन्नत की कैफ़ियत।

तआरुफ़

50 अहादीस और 27 अबवाब पर मुश्तमिल इस उन्वान के तहत आप पढ़ेंगे:

- जन्नत क्या है?
- जन्नत में अहले इस्लाम के लिए क्या कुछ तैयार किया गया है?
- जन्नती और उनकी नेमतें कैसी होंगी?

1 بَابُ مَا جَاءَ فِي صِفَةِ شَجَرِ الْجَنَّةِ

1 - जन्नत के दरख़्त कैसे हैं?

2523 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: إِنَّ فِي الجَنَّةِ لَشَجَرَةً يَسِيرُ الرَّاكِبُ فِي ظِلِّهَا مِائَةَ عَامٍ.

2523 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: ''जन्नत में एक ऐसा दरख़्त है कि ऊँट सवार उसके साए में सौ साल तक चलेगा।''

बुखारी:3252. मुस्लिम:2826. इब्ने माजह: 4335.

वज़ाहत: इस बारे में अनस और अबू सईद (رضي الله عنهما) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फरमाते हैं: यह हदीस सहीह है।

2524 - حَدَّثَنَا عَبَّاسٌ الدُّورِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ شَيْبَانَ، عَنْ فِرَاسٍ، عَنْ عَطِيَّةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: فِي الجَنَّةِ شَجَرَةٌ يَسِيرُ الرَّاكِبُ فِي ظِلِّهَا مِائَةَ عَامٍ لاَ يَقْطَعُهَا وَقَالَ: ذَلِكَ الظِّلُّ الْمَمْدُودُ.

2524 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया: ''जन्नत में एक दरख़्त है जिसके साए में ऊँट सवार एक सौ साल चल कर भी उसे उबूर (पार) नहीं कर सकेगा'' और आप (ﷺ) ने फ़रमाया: ''यही (ज़िल्ले मम्दूद) लंबा साया है।''

बुखारी:6553. मुस्लिम:2828.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फरमाते हैं: सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) के तरीक़ से यह हदीस हसन ग़रीब है।

2525 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: ''जन्नत में कोई दरख़्त ऐसा नहीं है जिसका तना सोने का न हो।''

सहीह: इब्ने हिब्बान:7410.

2525 - حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا زِيَادُ بْنُ الحَسَنِ بْنِ الفُرَاتِ القَزَّازُ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا فِي الجَنَّةِ شَجَرَةٌ إِلاَّ وَسَاقُهَا مِنْ ذَهَبٍ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फरमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है।

2 - जन्नत और उसकी नेअ़मतें कैसी होंगी?

2 بَابُ مَا جَاءَ فِي صِفَةِ الجَنَّةِ وَنَعِيمِهَا

2526 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि हमने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! हमारी क्या हालत है जब हम आप के पास होते हैं तो हमारे दिल नर्म होते हैं हम दुनिया से बेरग़बत और आख़िरत वालों में से होते हैं। फिर जब आप के पास से जाते हैं तो अपनी बीवियों से उन्स और अपनी औलाद से प्यार करते हैं तो हमारे दिल बदल जाते हैं? रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: ''जिस हालत पर तुम मेरे पास से जाते हो अगर तुम उसी हालत पर रहो तो फ़रिश्ते तुम्हारे घरों में तुम से मिलें और अगर तुम गुनाह न करो तो अल्लाह तआला नए लोग ले आए ताकि वह गुनाह करे फिर वह उन्हें माफ़ करे।'' रावी कहते हैं: मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! मख़लूक़ किस चीज़ से पैदा की गई है? आप(ﷺ) ने फ़रमाया: ''पानी से'' हम ने

2526 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ حَمْزَةَ الزَّيَّاتِ، عَنْ زِيَادٍ الطَّائِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قُلْنَا يَا رَسُولَ اللهِ: مَا لَنَا إِذَا كُنَّا عِنْدَكَ رَقَّتْ قُلُوبُنَا، وَزَهِدْنَا فِي الدُّنْيَا، وَكُنَّا مِنْ أَهْلِ الآخِرَةِ، فَإِذَا خَرَجْنَا مِنْ عِنْدِكَ فَآنَسْنَا أَهَالِينَا، وَشَمَمْنَا أَوْلاَدَنَا أَنْكَرْنَا أَنْفُسَنَا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَوْ أَنَّكُمْ تَكُونُونَ إِذَا خَرَجْتُمْ مِنْ عِنْدِي كُنْتُمْ عَلَى حَالِكُمْ ذَلِكَ لَزَارَتْكُمُ الْمَلاَئِكَةُ فِي بُيُوتِكُمْ، وَلَوْ لَمْ تُذْنِبُوا لَجَاءَ اللَّهُ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ كَيْ يُذْنِبُوا فَيَغْفِرَ لَهُمْ قَالَ: قُلْتُ يَا

رَسُولَ اللهِ مِمَّ خُلِقَ الخَلْقُ؟ قَالَ: مِنَ الْمَاءِ، قُلْتُ: الْجَنَّةُ مَا بِنَاؤُهَا؟ قَالَ: لَبِنَةٌ مِنْ فِضَّةٍ وَلَبِنَةٌ مِنْ ذَهَبٍ، وَمِلَاطُهَا الْمِسْكُ الأَذْفَرُ، وَحَصْبَاؤُهَا اللُّؤْلُؤُ وَاليَاقُوتُ، وَتُرْبَتُهَا الزَّعْفَرَانُ مَنْ دَخَلَهَا يَنْعَمُ وَلاَ يَبْأَسُ، وَيَخْلُدُ وَلاَ يَمُوتُ، لاَ تَبْلَى ثِيَابُهُمْ، وَلاَ يَفْنَى شَبَابُهُمْ ثُمَّ قَالَ: ثَلاَثٌ لاَ تُرَدُّ دَعْوَتُهُمْ، الإِمَامُ العَادِلُ، وَالصَّائِمُ حِينَ يُفْطِرُ، وَدَعْوَةُ الْمَظْلُومِ يَرْفَعُهَا فَوْقَ الغَمَامِ، وَتُفَتَّحُ لَهَا أَبْوَابُ السَّمَاءِ، وَيَقُولُ الرَّبُّ عَزَّ وَجَلَّ: وَعِزَّتِي لأَنْصُرَنَّكِ وَلَوْ بَعْدَ حِينٍ.

अर्ज़ किया, जन्नत किस चीज़ से बनी है? आप(ﷺ) ने फ़रमाया: " एक ईट चांदी की और एक सोने की, इसका मसाला (पलास्टर या गारा) बेहतरीन कस्तूरी, उसके कंकर, मोती और याकूत और उसकी मिट्टी ज़ाफ़रान है, जो उसमें दाखिल हो जाएगा नेअ्मतों में रहेगा, उसे तक्लीफ़ नहीं होगी, हमेशा रहेगा, मौत नहीं आयेगी न उनके कपड़े मैले होंगे और न ही उनकी जवानी ख़त्म होगी।'' फिर आप (ﷺ) ने फ़रमाया: '' तीन आदमियों की दुआ रद्द नहीं की जाती: इन्साफ करने वाले हाकिम की, रोज़ेदार की जब इफ़्तार करे और मज़्लूम की दुआ। अल्लाह उसे बादल के ऊपर उठाता है, इस लिए कि आसमान के दरवाज़े खोले जाते हैं और रब तबारक व तआला फरमाते हैं: मेरी इज्ज़त की क़सम! मैं तुम्हारी मदद ज़रूर करूंगा अगरचे कुछ अर्सा बाद ही।''

(مم خلق الخلق......) के अलावा बाकी हसन लिगैरिही है। मुस्लिम: मुख़्तसर: 2749

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फरमाते हैं: इस हदीस की सनद कवी नहीं है और मेरे नज़दीक यह मुत्तसिल भी नहीं है। नीज यह हदीस एक और सनद से भी अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से मर्वी है।

3 بَابُ مَا جَاءَ فِي صِفَةِ غُرَفِ الجَنَّةِ

3 - जन्नत के बाला खाने कैसे हैं?

2527 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:

2527 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: ''यक़ीनन जन्नत में कुछ ऐसे बालाखाने[1] हैं जिनके बाहर का हिस्सा अन्दर से और अन्दर का बाहर से देखा जा सकेगा।'' तो एक आराबी खड़ा होकर कहने लगा: ऐ अल्लाह के

إِنَّ فِي الْجَنَّةِ لَغُرَفًا تُرَى ظُهُورُهَا مِنْ بُطُونِهَا وَبُطُونُهَا مِنْ ظُهُورِهَا فَقَامَ إِلَيْهِ أَعْرَابِيٌّ فَقَالَ: لِمَنْ هِيَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: هِيَ لِمَنْ أَطَابَ الْكَلَامَ، وَأَطْعَمَ الطَّعَامَ، وَأَدَامَ الصِّيَامَ، وَصَلَّى لِلَّهِ بِاللَّيْلِ وَالنَّاسُ نِيَامٌ.

नबी(ﷺ)! यह किसके लिए हैं? आप(ﷺ) ने फ़रमाया: यह उस शख़्स के लिए हैं जो अच्छा कलाम करे, खाना खिलाये, हमेशा रोज़े रखे और जब लोग सो रहे हों तो यह रात को अल्लाह के लिए नमाज़ पढ़े।''

हसन: 1984. पर तख़रीज देखें।

तौज़ीह: غُرَفٌ: बाला खाना, किसी भी इमारत के ऊपर बनाया गया चबूतरा।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फरमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। और बअ़ज़ मुहद्दिसीन ने अब्दुर्रहमान बिन इस्हाक़ के बारे में इसके हाफ़िज़े की वजह से जरह की है। यह कूफा का रहने वाला था और अब्दुर्रहमान बिन इस्हाक़ कुरशी मदीना के रहने वाले और उस से ज़्यादा सिक़ह् है।

2528 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ الصَّمَدِ أَبُو عَبْدِ الصَّمَدِ الْعَمِّيُّ، عَنْ أَبِي عِمْرَانَ الْجَوْنِيِّ، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ قَيْسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: إِنَّ فِي الْجَنَّةِ جَنَّتَيْنِ مِنْ فِضَّةٍ آنِيَتُهُمَا وَمَا فِيهِمَا، وَجَنَّتَيْنِ مِنْ ذَهَبٍ آنِيَتُهُمَا وَمَا فِيهِمَا، وَمَا بَيْنَ الْقَوْمِ وَبَيْنَ أَنْ يَنْظُرُوا إِلَى رَبِّهِمْ إِلاَّ رِدَاءُ الْكِبْرِيَاءِ عَلَى وَجْهِهِ فِي جَنَّةِ عَدْنٍ، وَبِهَذَا الإِسْنَادِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ فِي الْجَنَّةِ لَخَيْمَةً مِنْ دُرَّةٍ مُجَوَّفَةٍ عَرْضُهَا سِتُّونَ مِيلاً، فِي كُلِّ زَاوِيَةٍ مِنْهَا أَهْلٌ لاَ يَرَوْنَ الآخَرِينَ يَطُوفُ عَلَيْهِمُ الْمُؤْمِنُ.

2528 - अबू बक्र बिन अब्दुल्लाह बिन कैस अपने बाप से रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया: "बेशक जन्नत में दो बाग़ हैं, उनके बर्तन और उनकी तमाम चीजें चांदी की हैं और दो बाग़ उन के बर्तन और जो कुछ उन दोनों में हैं सोने से बने हैं, नीज लोगों और उनके रब को देखने के दर्मियान जन्नते अदन में सिर्फ़ उसकी ज़ात पर किब्रियाई की चादर है।'' इसी सनद से यह भी मर्वी है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ''जन्नत में तराशे[1] गए मोती का एक खेमा है जिसकी चौड़ाई साठ मील है। उस के हर कोने में घर वाले हों और यह दूसरों को नहीं देख सकेंगे, मोमिन इन सब के पास जाएगा।'' (यानी हमबिस्तरी करेगा।)

बुख़ारी:4878. मुस्लिम:180. इब्ने माजह: 186

तौज़ीह: دُرَّةٍ مُجَوَّفَةٍ :वह मोती जिसे अल्लाह की तरफ़ से कुरेदा गया होगा और उसी से उस का महल तैयार किया जाएगा।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और अबू इमरान जौफी का नाम अब्दुल मलिक बिन हबीब है।

अबू बक्र बिन अबू मूसा के बारे में इमाम अहमद बिन हंबल फ़रमाते हैं: उनका नाम मारूफ़ नहीं है। अबू मूसा अशअरी (ﷺ) का नाम अब्दुल्लाह बिन कैस और अबू मालिक अशअरी का नाम साद बिन तारिक़ बिन अश्यम है।

4 - जन्नत के दरजात कैसे हैं?

4 بَابُ مَا جَاءَ فِي صِفَةِ دَرَجَاتِ الجَنَّةِ

2529 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''जन्नत में सौ दरजात[1] हैं। हर दो दरजात के दर्मियान सौ साल का फ़ासला है।''

मुसनद अहमद: 2/292. बुखारी:4/19. हाकिम: 1/80. बैहक़ी:9/18.

2529 - حَدَّثَنَا عَبَّاسٌ العَنْبَرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شَرِيكٌ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُحَادَةَ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: فِي الجَنَّةِ مِائَةُ دَرَجَةٍ مَا بَيْنَ كُلِّ دَرَجَتَيْنِ مِائَةُ عَامٍ.

तौज़ीह: دَرَجَة : मानवी लिहाज़ से दरजा सीढ़ी के ज़ीने को कहा जाता है। यहाँ पर हिस्सी दरजात मुराद हैं या मानवी इसका इल्म अल्लाह को है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

2530 - सय्यदना मुआज़ बिन जबल (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''जिसने रमजान के रोज़े रखे, नमाज़ अदा की और बैतुल्लाह का हज किया (रावी कहते हैं:) मैं नहीं जानता कि आप(ﷺ) ने ज़कात का ज़िक्र किया या नहीं? तो अल्लाह पर हक़ है कि वह उसे बख़्श दे उसने अल्लाह के रास्ते में हिजरत की हो या अपनी पैदाइश के इलाक़े में ठहरा हो।'' मुआज़ (ﷺ) ने अर्ज़ किया, क्या मैं यह बात लोगों को न बता दूं? तो

2530 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، وَأَحْمَدُ بْنُ عَبْدَةَ الضَّبِّيُّ البَصْرِيُّ، قَالاَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ العَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ صَامَ رَمَضَانَ وَصَلَّى الصَّلَوَاتِ وَحَجَّ البَيْتَ، لاَ أَدْرِي أَذَكَرَ الزَّكَاةَ أَمْ لاَ، إِلاَّ كَانَ حَقًّا عَلَى اللهِ أَنْ يَغْفِرَ لَهُ، إِنْ هَاجَرَ فِي سَبِيلِ اللهِ، أَوْ مَكَثَ بِأَرْضِهِ

الَّتِي وُلِدَ بِهَا قَالَ مُعَاذٌ: أَلاَ أُخْبِرُ بِهَذَا النَّاسَ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ذَرِ النَّاسَ يَعْمَلُونَ فَإِنَّ فِي الجَنَّةِ مِائَةَ دَرَجَةٍ مَا بَيْنَ كُلِّ دَرَجَتَيْنِ كَمَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ، وَالفِرْدَوْسُ أَعْلَى الجَنَّةِ وَأَوْسَطُهَا، وَفَوْقَ ذَلِكَ عَرْشُ الرَّحْمَنِ، وَمِنْهَا تُفَجَّرُ أَنْهَارُ الجَنَّةِ، فَإِذَا سَأَلْتُمُ اللَّهَ فَسَلُوهُ الفِرْدَوْسَ.

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, '' लोगों को आमाल करने दो, जन्नत में सौ दरजात हैं हर दो दरजों के दर्मियान ज़मीन से आसमान तक का फ़ासला है और फ़िरदौस[1] जन्नत का बलंद और दर्मियानी हिस्सा है, उस से ऊपर रहमान का अर्श है। उस से जन्नत की नहरें फूट रही हैं जब तुम अल्लाह से सवाल करो उससे फ़िरदौस मांगो।''

सहीह: इब्ने माजह:4331. मुसनद अहमद:5/322. तफ़सीर तबरी:16/38.

तौज़ीह: الفِرْدَوْس : फ़िरदौस का माना बाग़ होता है। ऐसा बाग़ जिस में हर क़िस्म का फल हो और जन्नत की चार नहरें एक दूध की दूसरी पानी की, तीसरी शराब और चौथी शहद की है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस इसी तरह हिशाम बिन साद से भी बवास्ता ज़ैद बिन असलम, अता बिन यसार के ज़रिए मुआज़ बिन जबल (رضي الله عنه) से मर्वी है।

मेरे नज़दीक यह हदीस हम्माम की ज़ैद बिन असलम से बवास्ता अता बिन यसार, सय्यदना उबादा बिन सामित से रिवायतकर्दा हदीस से ज़्यादा सहीह है। अता ने मुआज़ बिन जबल को नहीं पाया। उनकी वफ़ात पहले हो चुकी थी। यह उमर (رضي الله عنه) की ख़िलाफ़त में फौत हुए थे।

2531 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا هَمَّامٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: فِي الجَنَّةِ مِائَةُ دَرَجَةٍ مَا بَيْنَ كُلِّ دَرَجَتَيْنِ كَمَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ، وَالْفِرْدَوْسُ أَعْلاَهَا دَرَجَةً وَمِنْهَا تُفَجَّرُ أَنْهَارُ الجَنَّةِ الأَرْبَعَةُ، وَمِنْ فَوْقِهَا يَكُونُ العَرْشُ، فَإِذَا سَأَلْتُمُ اللَّهَ فَسَلُوهُ الفِرْدَوْسَ.

2531 - सय्यदना उबादा बिन सामित (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, जन्नत में एक सौ दरजात हैं। हर दो दरजों के दर्मियान ज़मीनों आसमान जितना फ़ासला है और फ़िरदौस सबसे बलंद दरजा में है इसी से जन्नत की चार नहरें बहती हैं इसके ऊपर अर्श है। जब अल्लाह से सवाल करो तो फ़िरदौस का सवाल करो।''

सहीह: अस-सिलसिला अस-सहीहा: 921. मुसनद अहमद:5/316.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: हमें अहमद बिन मुनीअ ने , उन्हें यज़ीद बिन हारून ने बवास्ता हम्माम, ज़ैद बिन असलम से ऐसे ही रिवायत की है।

2532 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ لَهِيعَةَ، عَنْ دَرَّاجٍ، عَنْ أَبِي الهَيْثَمِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: قَالَ: إِنَّ فِي الجَنَّةِ مِائَةَ دَرَجَةٍ، لَوْ أَنَّ العَالَمِينَ اجْتَمَعُوا فِي إِحْدَاهُنَّ لَوَسِعَتْهُمْ.

2532 - सय्यदना अबू सईद (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ''बेशक जन्नत में सौ दरजात हैं अगर तमाम आलम (जहां) एक दरजे में जमा हो जाएँ तो वही उन्हें काफी होगा।''

ज़ईफ़

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है।

5 بَابٌ فِي صِفَةِ نِسَاءِ أَهْلِ الجَنَّةِ

5 - जन्नतियों की बीवियां कैसी होंगी?

2533 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: حَدَّثَنَا فَرْوَةُ بْنُ أَبِي الْمَغْرَاءِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبِيدَةُ بْنُ حُمَيْدٍ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ السَّائِبِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ ، قَالَ: إِنَّ الْمَرْأَةَ مِنْ نِسَاءِ أَهْلِ الجَنَّةِ لَيُرَى بَيَاضُ سَاقِهَا مِنْ وَرَاءِ سَبْعِينَ حُلَّةً حَتَّى يُرَى مُخُّهَا، وَذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ يَقُولُ: {كَأَنَّهُنَّ اليَاقُوتُ وَالمَرْجَانُ} فَأَمَّا اليَاقُوتُ فَإِنَّهُ حَجَرٌ لَوْ أَدْخَلْتَ فِيهِ سِلْكًا ثُمَّ اسْتَصْفَيْتَهُ لَأُرِيتَهُ مِنْ وَرَائِهِ.

2533 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ''अहले जन्नत की औरतों में से एक औरत की पिंडली की सफेदी सत्तर लिबासों के पीछे से भी देखी जा सकेगी यहाँ तक कि उसका गूदा भी देखा जाएगा। यह इस लिए कि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: ''गोया वह याकूत व मर्जान हो।'' (अर्रहमान: 58) याकूत वह पत्थर है अगर तुम उस में धागा दाख़िल करके उसे साफ करो तो तुम्हें वह नज़र आयेगा।

ज़ईफ़: तफ़सीर तबरी:27/ 152. इब्ने हिब्बान: 7396.

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं, हमें हन्नाद ने वह कहते हैं, हमें उबैदा बिन हुमैद ने अता बिन साइब से बवास्ता अम्र बिन मैमून, सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (ﷺ) नबी (ﷺ) की ऐसी ही हदीस बयान की है।

2534 - अबू ईसा कहते हैं हमें हन्नाद ने वह कहते हैं हमें अबू अह्वस ने अता बिन साइब से बवास्ता अम्र बिन मैमून सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) से ऐसी ही हदीस बयान की है लेकिन वह मर्फ़ू नहीं है।

2534 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبِيدَةُ بْنُ حُمَيْدٍ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ السَّائِبِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَحْوَهُ.

ज़ईफ़: इब्ने अबी शैबा: 13/ 107. अज़्ज़ुहद ले- हन्नाद: 10

वज़ाहत: यह उबैदा बिन हुमैद की रिवायत से ज़्यादा सहीह है, जरीर और दीगर हज़रात ने भी अता बिन साइब से ऐसी ही रिवायत की है लेकिन वह भी मर्फ़ू नहीं है। अबू ईसा कहते हैं, हमें अबू कुतैबा ने वह कहते हैं हमें जरीर ने अता बिन साइब से अबू अहवस की हदीस से मिलती जुलती हदीस बयान की है और अता के शागिर्दों ने इसे मर्फ़ू ज़िक्र नहीं किया, यह ज़्यादा सहीह है।

2535 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ''पहला गिरोह जो कयामत के दिन जन्नत में दाख़िल होगा उनके चेहरे चौदहवीं के चाँद की तरह चमकते होंगे और दूसरे गिरोह के लोगों के चेहरे आसमान में सबसे ज़्यादा रोशन सितारे की तरह होंगे। उनमें से हर आदमी की दो बीवियां होंगी, हर बीवी के बदन पर सत्तर लिबास होंगे उनके पीछे उसकी पिंडली का गूदा देखा जाएगा।''

2535 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ فُضَيْلِ بْنِ مَرْزُوقٍ، عَنْ عَطِيَّةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ أَوَّلَ زُمْرَةٍ يَدْخُلُونَ الجَنَّةَ يَوْمَ القِيَامَةِ ضَوْءُ وُجُوهِهِمْ عَلَى مِثْلِ ضَوْءِ القَمَرِ لَيْلَةَ البَدْرِ، وَالزُّمْرَةُ الثَّانِيَةُ عَلَى مِثْلِ أَحْسَنِ كَوْكَبٍ دُرِّيٍّ فِي السَّمَاءِ، لِكُلِّ رَجُلٍ مِنْهُمْ زَوْجَتَانِ عَلَى كُلِّ زَوْجَةٍ سَبْعُونَ حُلَّةً يُرَى مُخُّ سَاقِهَا مِنْ وَرَائِهَا.

सहीह: 2522. के तहत तख़रीज देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

अबू ईसा कहते हैं, हमें अब्बास बिन मोहम्मद ने उन्हें उबैदुल्लाह बिन मूसा ने शैबान बिन फ़रास से बवास्ता अतिय्या, सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) से हदीस बयान की है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ''जन्नत में दाख़िल होने वाले गिरोह के लोगों के चेहरे चौदहवीं रात के चाँद की तरह होंगे और दूसरे गिरोह के चेहरे आसमान में सब से ज़्यादा खूबसूरत सितारे के रंग पर होंगे, उन में से हर आदमी की दो बीवियां होंगी, हर बीवी के बदन पर सत्तर लिबास होंगे उनके पीछे उसकी पिंडली का गूदा देखा जाएगा।''

वज़ाहत: देखिये: हदीस नम्बर।।2522.

6 - जन्नत वालों का (अपनी बीवियों से) जिमा (हमबिस्तरी) कैसा होगा?

6 بَابُ مَا جَاءَ فِي صِفَةِ جِمَاعِ أَهْلِ الجَنَّةِ

2536 - सय्यदना अनस (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जन्नत में मोमिन को जिमा (हमबिस्तरी) की इतनी-इतनी कुव्वत दी जाएगी।'' कहा गया, "ऐ अल्लाह के रसूल! क्या उस में इतनी ताक़त होगी? आप ने फ़रमाया, "उसे सौ आदमियों की कुव्वत दी जायेगी।''

हसन: सहीह: तयालिसी:2012. इब्ने हिब्बान: 7400

2536 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، وَمَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالاَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ الطَّيَالِسِيُّ، عَنْ عِمْرَانَ القَطَّانِ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: يُعْطَى الْمُؤْمِنُ فِي الجَنَّةِ قُوَّةَ كَذَا وَكَذَا مِنَ الجِمَاعِ، قِيلَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَوَ يُطِيقُ ذَلِكَ؟ قَالَ: يُعْطَى قُوَّةَ مِائَةٍ.

वज़ाहत: इस बारे में ज़ैद बिन अर्क़म (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस सहीह ग़रीब है हम इसे इमरान क़त्तान के तरीक़ से ही बवास्ता क़तादा, सय्यदना अनस (ﷺ) से जानते हैं।

7 - जन्नती कैसे होंगे?

7 بَابُ مَا جَاءَ فِي صِفَةِ أَهْلِ الجَنَّةِ

2537 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, " पहला गिरोह जो जन्नत में दाख़िल होगा उन की सूरतें बद्र के चाँद की तरह होंगी। वह थूकेंगे न नाक का मवाद निकालेंगे और न ही पाख़ाना करेंगे। जन्नत में उनके बर्तन सोने के उनकी कंघियाँ सोने और चांदी की, उनकी अंगेठियों[1] में जलाई जाने वाली चीज़ ऊद जब कि उनका पसीना कस्तूरी की तरह खुशबूदार होगा, उन में से हर एक की दो बीवियां होंगी जिनके हुस्न की वजह से उनकी

2537 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَوَّلُ زُمْرَةٍ تَلِجُ الجَنَّةَ صُورَتُهُمْ عَلَى صُورَةِ القَمَرِ لَيْلَةَ البَدْرِ لاَ يَبْصُقُونَ فِيهَا وَلاَ يَمْخُطُونَ وَلاَ يَتَغَوَّطُونَ، آنِيَتُهُمْ فِيهَا الذَّهَبُ، وَأَمْشَاطُهُمْ مِنَ الذَّهَبِ وَالفِضَّةِ، وَمَجَامِرُهُمْ مِنَ الأَلُوَّةِ،

وَرَشْحُهُمُ الْمِسْكُ، وَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمْ زَوْجَتَانِ يُرَى مُخُّ سُوقِهِمَا مِنْ وَرَاءِ اللَّحْمِ مِنَ الحُسْنِ لاَ اخْتِلاَفَ بَيْنَهُمْ وَلاَ تَبَاغُضَ، قُلُوبُهُمْ قَلْبُ رَجُلٍ وَاحِدٍ، يُسَبِّحُونَ اللَّهَ بُكْرَةً وَعَشِيًّا.

पिंडलियों का गूदा नज़र आयेगा उनके दर्मियान इख़्तिलाफ़ होगा न एक दूसरे से नफ़रत, उनके दिल एक आदमी के दिल की तरह होंगे, वह सुबह और शाम अल्लाह की तस्बीहात करेंगे।''

बुख़ारी:4/ 143. मुस्लिम:8/ 147.

तौज़ीह: الأَلُوَّة : ऊद लकड़ी जिस से कमरे में ख़ुशबू करने के लिए धूनी ली जाती है और مجمر उस अंगेठी को कहा जाता है जिस में कोयले रख कर उस में ऊद छिड़की जाती है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस सहीह है और الأَلُوَّة ऊदे हिन्दी को कहा जाता है।

2538 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ لَهِيعَةَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ دَاوُدَ بْنِ عَامِرِ بْنِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَوْ أَنَّ مَا يُقِلُّ ظُفُرٌ مِمَّا فِي الجَنَّةِ بَدَا لَتَزَخْرَفَتْ لَهُ مَا بَيْنَ خَوَافِقِ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ، وَلَوْ أَنَّ رَجُلاً مِنْ أَهْلِ الجَنَّةِ اطَّلَعَ فَبَدَا أَسَاوِرُهُ لَطَمَسَ ضَوْءَ الشَّمْسِ كَمَا تَطْمِسُ الشَّمْسُ ضَوْءَ النُّجُومِ.

2538 - सय्यदना साद बिन अबी वक़्क़ास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "अगर जन्नती चीजों में से नाख़ून के उठाने के बराबर[1] कोई चीज़ ज़ाहिर हो जाए तो वह आसमानों और ज़मीन के किनारों को ख़ूबसूरत बना दे और अगर जन्नत वालों में से कोई आदमी झाँक ले फिर कंगन ज़ाहिर हो जाए तो यह सूरज की रोशनी को मिटा दे जैसे सूरज सितारों की रोशनी को मिटा देता है।''

सहीह: मुसनद अहमद: 1/ 169. ज़ुहद ले-इब्ने मुबारक:416.

तौज़ीह: مَا يُقِلُّ ظُفُر : यानी जो चीज़ एक नाखून उठा सकता हो। मतलब यह है कि एक उंगली के उठाने वाली चीज़ के बराबर।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। हम इसे इब्ने लहीया की सनद से ही जानते हैं, नीज़ यह्या बिन अय्यूब ने इस हदीस को यज़ीद बिन अबी हबीब से रिवायत करते वक़्त उमर बिन साद बिन अबी वक़्क़ास का ज़िक्र किया है वह नबी (ﷺ) से रिवायत करते हैं।

8 بَابُ مَا جَاءَ فِي صِفَةِ ثِيَابِ أَهْلِ الجَنَّةِ

8 - अहले जन्नत के कपड़े कैसे होंगे?

2539 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، وَأَبُو هِشَامٍ الرِّفَاعِيُّ، قَالاَ: حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَامِرٍ الأَحْوَلِ، عَنْ شَهْرِ بْنِ حَوْشَبٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَهْلُ الجَنَّةِ جُرْدٌ مُرْدٌ كُحْلٌ لاَ يَفْنَى شَبَابُهُمْ وَلاَ تَبْلَى ثِيَابُهُمْ.

2539 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जन्नत वाले जुर्द मुर्द[1] और सुर्मई आँखों वाले होंगे, उनकी न जवानी खोएगी और न ही उनके कपड़े पुराने होंगे।''

हसन: दारमी:2829.

तौज़ीह: جُرْد : जिसके जिस्म पर गैर ज़रूरी बाल न हूँ। मसलन: जेरे नाफ़ और बगलों के बाल। مُرْد : वह जिसके दाढ़ी के बाल न उगे हो और كُحْل : से मुराद यह है कि उनकी आँखों की पलकें इस क़दर सियाह होंगी जैसे उन पर सुर्मा लगाया हो।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है।

2540 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا رِشْدِينُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ الحَارِثِ، عَنْ دَرَّاجٍ أَبِي السَّمْحِ، عَنْ أَبِي الهَيْثَمِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي قَوْلِهِ: {وَفُرُشٍ مَرْفُوعَةٍ} قَالَ: ارْتِفَاعُهَا لَكَمَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ مَسِيرَةَ خَمْسِمِائَةِ سَنَةٍ.

2540 - सय्यदना अबू सईद (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने अल्लाह तआला के फ़रमान, ''और बलंद बिस्तर होंगे।''' (अल-वाक़िया:34) के बारे में फ़रमाया, ''उनकी बलंदी आसमान और ज़मीन जितनी, यानी पांच सौ साल की मसाफ़त होगी।''

ज़ईफ़: मुसनद अहमद: 3/75. अबू याला:1395. तफ़सीर तबरी:27/185.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। हम इसे रिश्दीन बिन साद के तरीक़ से ही जानते हैं।

बअ़ज़ अहले इल्म इस हदीस की तफ़सीर में कहते हैं, इस का मतलब है कि बिस्तर दरजात में ही लगे होंगे और दरजात का आपस में फ़ासला ज़मीनों आसमान की तरह होगा।

9 بَابُ مَا جَاءَ فِي صِفَةِ ثِمَارِ أَهْلِ الْجَنَّةِ

2541 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ بُكَيْرٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ يَحْيَى بْنِ عَبَّادِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ، قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ ، وَذَكَرَ سِدْرَةَ الْمُنْتَهَى، قَالَ: يَسِيرُ الرَّاكِبُ فِي ظِلِّ الفَنَنِ مِنْهَا مِائَةَ سَنَةٍ، أَوْ يَسْتَظِلُّ بِظِلِّهَا مِائَةُ رَاكِبٍ، شَكَّ يَحْيَى، فِيهَا فِرَاشُ الذَّهَبِ كَأَنَّ ثَمَرَهَا الْقِلَالُ.

9 - अहले जन्नत के फल कैसे होंगे?

2541 - सय्यदा अस्मा बिन्ते अबी बक्र (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आप ने सिद्रतुल मुन्तहा का ज़िक्र किया, आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "सवार उसकी एक शाख के साए में सौ साल तक चलेगा उस के साए में सौ सवार साया हासिल करेंगे। रावी यह्या को शक है। उसमें सोने के परवाने होंगे, उसके फल मटकों की तरह होंगे।''

ज़ईफ़: तफ़सीर तबरी: 27/54. हाकिम: 2/469.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

10 بَابُ مَا جَاءَ فِي صِفَةِ طَيْرِ الجَنَّةِ

2542 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُسْلِمٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: سُئِلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا الكَوْثَرُ؟ قَالَ: ذَاكَ نَهْرٌ أَعْطَانِيهِ اللَّهُ، يَعْنِي فِي الجَنَّةِ، أَشَدُّ بَيَاضًا مِنَ اللَّبَنِ، وَأَحْلَى مِنَ العَسَلِ، فِيهَا طَيْرٌ أَعْنَاقُهَا كَأَعْنَاقِ الجُزُرِ قَالَ عُمَرُ: إِنَّ هَذِهِ لَنَاعِمَةٌ. قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَكَلَتُهَا أَنْعَمُ مِنْهَا.

10 - जन्नत के परिंदे कैसे होंगे?

2542 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा गया कौसर क्या है? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "वह एक नहर है जो अल्लाह ने मुझे जन्नत में दी है, उसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा है, उस में ऐसे परिंदे हैं जिनकी गर्दनें ऊंटों की गर्दनों की तरह हैं।'' उमर (رضي الله عنه) ने अर्ज़ किया, यह तो यक़ीनन बहुत बड़ी नेअ्मत है तो अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़रमाया, "उसे खाने वाले उस से भी ज़्यादा इन्आम के लायक़ है।''

हसन सहीह: मुसनद अहमद: 3/220. तफ़सीर तबरी:30/324.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है। और मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम, इब्ने शिहाब ज़ोहरी के भतीजे हैं और अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम ने इब्ने उमर और अनस बिन मालिक (ﷺ) से रिवायत ली है।

11 - जन्नत के घोड़े कैसे होंगे?

11 بَابُ مَا جَاءَ فِي صِفَةِ خَيْلِ الجَنَّةِ

2543 - सलमान बिन बुरैदा अपने बाप से रिवायत करते हैं कि एक आदमी ने नबी (ﷺ) से सवाल किया कहने लगा, ''ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! क्या जन्नत में घोड़े भी होंगे? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, " अगर अल्लाह ने तुम्हें जन्नत में दाख़िल कर दिया तो तुम चाहोगे कि तुम्हें एक सुर्ख याकूत के घोड़े पर सवार किया जाए वह तुम्हें जन्नत में लेकर उड़ता फिरे जहाँ तुम चाहो यह भी हो जाएगा।'' रावी कहते हैं, उस आदमी ने फिर सवाल किया, ''ऐ अल्लाह के रसूल! क्या जन्नत में ऊँट होंगे? आप ने फ़रमाया, "अगर अल्लाह ने तुम्हें जन्नत में दाख़िल कर दिया तो तुम्हारे लिए जन्नत में वही होगा जो तुम्हारा दिल चाहेगा, और जिससे तुम्हारी आखें लज्जत पाएंगी।''

हसन ज़ईफ़: मुसनद अहमद: 5/352.

2543 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَاصِمُ بْنُ عَلِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمَسْعُودِيُّ، عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ مَرْثَدٍ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بُرَيْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَجُلاً سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، هَلْ فِي الجَنَّةِ مِنْ خَيْلٍ؟ قَالَ: إِنِ اللَّهُ أَدْخَلَكَ الجَنَّةَ، فَلاَ تَشَاءُ أَنْ تُحْمَلَ فِيهَا عَلَى فَرَسٍ مِنْ يَاقُوتَةٍ حَمْرَاءَ يَطِيرُ بِكَ فِي الجَنَّةِ حَيْثُ شِئْتَ إِلاَّ فَعَلَتْ قَالَ: وَسَأَلَهُ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، هَلْ فِي الجَنَّةِ مِنْ إِبِلٍ؟ قَالَ: فَلَمْ يَقُلْ لَهُ مَا قَالَ لِصَاحِبِهِ قَالَ: إِنْ يُدْخِلْكَ اللَّهُ الجَنَّةَ يَكُنْ لَكَ فِيهَا مَا اشْتَهَتْ نَفْسُكَ وَلَذَّتْ عَيْنُكَ.

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं, हमें सुवैद बिन नस्र ने वह कहते हैं, हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने सुफ़ियान से बवास्ता अल्क़मा बिन मर्सद, अब्दुर्रहमान बिन साबित के ज़रिए नबी (ﷺ) की इसी मफ़हूम की हदीस बयान की है। और यह मसऊद की हदीस से ज़्यादा सहीह है।

2544 - सय्यदना अबू अय्यूब (ﷺ) रिवायत करते हैं कि एक आराबी नबी (ﷺ) के पास आकर कहने लगा, ''ऐ अल्लाह के

2544 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ بْنِ سَمُرَةَ الأَحْمَسِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنْ

وَاصِلٍ هُوَ ابْنُ السَّائِبِ، عَنْ أَبِي سَوْرَةَ، عَنْ أَبِي أَيُّوبَ، قَالَ: أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَعْرَابِيٌّ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي أُحِبُّ الخَيْلَ، أَفِي الجَنَّةِ خَيْلٌ؟ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنْ أُدْخِلْتَ الجَنَّةَ أُتِيتَ بِفَرَسٍ مِنْ يَاقُوتَةٍ لَهُ جَنَاحَانِ فَحُمِلْتَ عَلَيْهِ، ثُمَّ طَارَ بِكَ حَيْثُ شِئْتَ.

रसूल(ﷺ)! मुझे घोड़ों से मोहब्बत है। क्या जन्नत में घोड़े होंगे? रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''अगर तुम्हें जन्नत में दाख़िल कर दिया गया तो तुम्हें याकूत का घोड़ा दिया जाएगा जिसके दो पर होंगे चुनांचे तुम्हें उस पर सवार किया जाएगा फिर वह तुम्हें लेकर वहाँ उड़ेगा जहां तुम चाहोगे।''

ज़ईफ़

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस हदीस की सनद कवी नहीं है। और अबू अय्यूब से हमें सिर्फ़ इसी तरीक़ से मिलती है। नीज़ अबू अय्यूब के भतीजे अबू सौरा को हदीस के मामले में ज़ईफ़ कहा गया है उसे यह्या बिन सईद ने सख़्त ज़ईफ़ कहा है।

मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी फ़रमाते हैं, अबू सौरा मुन्करूल हदीस है। यह अबू अय्यूब (رضي الله عنه) से मुन्कर रिवायात बयान किया करता था जिन पर उसके साथ किसी ने मुताबअत नहीं की।

12 بَابُ مَا جَاءَ فِي سِنِّ أَهْلِ الجَنَّةِ

12 - जन्नतियों की उम्र।

2545 - حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ مُحَمَّدُ بْنُ فِرَاسٍ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عِمْرَانُ أَبُو العَوَّامِ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ شَهْرِ بْنِ حَوْشَبٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ غَنْمٍ، عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يَدْخُلُ أَهْلُ الجَنَّةِ الجَنَّةَ جُرْدًا مُرْدًا مُكَحَّلِينَ أَبْنَاءَ ثَلَاثِينَ أَوْ ثَلَاثٍ وَثَلَاثِينَ سَنَةً.

2545 - सय्यदना मुआज़ बिन जबल (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जन्नत वाले जन्नत में बगैर ग़ैर ज़रूरी बाल, बगैर दाढ़ी, सुर्मई आँखों के साथ तीस या तैंतीस साल की उम्र में दाख़िल किए जायेंगे।''

हसन: मुसनद अहमद: 5/ 243.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है और क़तादा के बअ़ज़ शागिर्दों ने इसे क़तादा से मुर्सल रिवायत किया है मुत्तसिल ज़िक्र नहीं किया।

13 – जन्नतियों की कितनी सफ़ें होंगी?

13 بَابُ مَا جَاءَ فِي صَفِّ أَهْلِ الجَنَّةِ

2546 - सय्यदना बुरैदा (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अहले जन्नत की एक सौ बीस सफ़ें होंगी, अस्सी सफ़ें इस उम्मत से और चालीस दीगर तमाम उम्मतों से।''

सहीह: इब्ने माजह:4289. मुसनद अहमद: 5/347. दारमी:2838.

2546 - حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ يَزِيدَ الطَّحَّانُ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ ضِرَارِ بْنِ مُرَّةَ، عَنْ مُحَارِبِ بْنِ دِثَارٍ، عَن ابْنِ بُرَيْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: **أَهْلُ الجَنَّةِ عِشْرُونَ وَمِائَةُ صَفٍّ ثَمَانُونَ مِنْهَا مِنْ هَذِهِ الأُمَّةِ وَأَرْبَعُونَ مِنْ سَائِرِ الأُمَمِ.**

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन है। यह हदीस अल्क़मा बिन मर्सद से बवास्ता सलमान बिन बुरैदा, नबी (ﷺ) से मुर्सल भी मर्वी है, उन में से कुछ ने सुलैमान बिन बुरैदा के ज़रिए उनके वालिद से रिवायत की है। नीज़ अबू सिनान की मुहारिब बिन दिसार से बयान कर्दा हदीस हसन है।

नीज़ अबू सिनान का नाम ज़िरार बिन मुर्रा और अबू सिनान शैबानी का नाम सईद बिन सिनान था। यह बस्रा के रहने वाले थे जब कि अबू सिनान शामी का नाम ईसा बिन सिनान क़स्मली है।

2547 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (ﷺ) से रिवायत है कि हम नबी (ﷺ) के साथ एक खेमे में चालीस के करीब अफ़राद थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हम से फ़रमाया, " क्या तुम राज़ी हो कि तुम जन्नतियों का चौथा हिस्सा हो? " लोगों ने कहा: जी हाँ'' क्या तुम राज़ी हो कि तुम जन्नतियों का तीसरा हिस्सा हो? उन्होंने कहा: जी हाँ'' आप ने फ़रमाया, " क्या तुम खुश हो कि तुम अहले जन्नत का आधा हिस्सा हो? बेशक जन्नत में सिर्फ़ मुसलमान ही जाएगा। तुम शिर्क करने वालों के मुकाबले में उस सफ़ेद बैल की तरह हो जो

2547 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، قَالَ: سَمِعْتُ عَمْرَو بْنَ مَيْمُونٍ يُحَدِّثُ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي قُبَّةٍ نَحْوًا مِنْ أَرْبَعِينَ، فَقَالَ لَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَتَرْضَوْنَ أَنْ تَكُونُوا رُبُعَ أَهْلِ الجَنَّةِ، قَالُوا: نَعَمْ، قَالَ: أَتَرْضَوْنَ أَنْ تَكُونُوا ثُلُثَ أَهْلِ الجَنَّةِ، قَالُوا: نَعَمْ، قَالَ: أَتَرْضَوْنَ

أَنْ تَكُونُوا شَطْرَ أَهْلِ الجَنَّةِ، إِنَّ الجَنَّةَ لاَ يَدْخُلُهَا إِلاَّ نَفْسٌ مُسْلِمَةٌ، مَا أَنْتُمْ فِي الشِّرْكِ إِلاَّ كَالشَّعْرَةِ البَيْضَاءِ فِي جِلْدِ الثَّوْرِ الأَسْوَدِ، أَوْ كَالشَّعْرَةِ السَّوْدَاءِ فِي جِلْدِ الثَّوْرِ الأَحْمَرِ.

सियाह रंग के बैल की जिल्द पर हो या उस सियाह बाल की तरह जो सफ़ेद रंग के बैल के जिस्म पर हो।''

बुख़ारी:6228. मुस्लिम:221. इब्ने माजह: 4283

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ इस बारे में इमरान बिन हुसैन और अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

14 بَابُ مَا جَاءَ فِي صِفَةِ أَبْوَابِ الجَنَّةِ

14 - जन्नत के दरवाज़े कैसे होंगे?

2548 - حَدَّثَنَا الفَضْلُ بْنُ الصَّبَّاحِ البَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنُ بْنُ عِيسَى القَزَّازُ، عَنْ خَالِدِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: بَابُ أُمَّتِي الَّذِي يَدْخُلُونَ مِنْهُ الجَنَّةَ عَرْضُهُ مَسِيرَةُ الرَّاكِبِ الْمُجَوِّدِ ثَلاَثًا، ثُمَّ إِنَّهُمْ لَيُضْغَطُونَ عَلَيْهِ حَتَّى تَكَادَ مَنَاكِبُهُمْ تَزُولُ.

2548 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मेरी उम्मत का वह दरवाज़ा जिससे यह दाख़िल होंगे उसकी चौड़ाई उम्दा ऊँट पर सवार शख़्स की तीन दिन की मसाफ़त जितनी होगी। फिर भी उस पर इतनी भीड़ होगी कि क़रीब होगा कि उनके कंधे हिल जाएँ।''

ज़ईफ़: अबू याला:5554

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। और मैंने इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी से इस हदीस के बारे में पूछा तो वह इसे नहीं जानते थे और कहने लगे: ख़ालिद बिन अबी बक्र, सालिम बिन अब्दुल्लाह से मुन्कर रिवायात ज़िक्र करता था।

15 بَابُ مَا جَاءَ فِي سُوقِ الجَنَّةِ

15 - जन्नत का बाज़ार।

2549 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عَمَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الحَمِيدِ بْنُ حَبِيبِ بْنِ أَبِي العِشْرِينَ، قَالَ:

2549 - सईद बिन मुसय्यब से रिवायत है कि उनकी अबू हुरैरा (ﷺ) से मुलाक़ात हुई तो अबू हुरैरा (ﷺ) ने फ़रमाया, मैं अल्लाह से सवाल करता हूँ कि वह मुझे और तुम्हें जन्नत के

حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَسَّانُ بْنُ عَطِيَّةَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، أَنَّهُ لَقِيَ أَبَا هُرَيْرَةَ فَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: أَسْأَلُ اللَّهَ أَنْ يَجْمَعَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ فِي سُوقِ الجَنَّةِ. فَقَالَ سَعِيدٌ: أَفِيهَا سُوقٌ؟ قَالَ: نَعَمْ، أَخْبَرَنِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَّ أَهْلَ الجَنَّةِ إِذَا دَخَلُوهَا نَزَلُوا فِيهَا بِفَضْلِ أَعْمَالِهِمْ، ثُمَّ يُؤْذَنُ فِي مِقْدَارِ يَوْمِ الجُمُعَةِ مِنْ أَيَّامِ الدُّنْيَا فَيَزُورُونَ رَبَّهُمْ، وَيُبْرِزُ لَهُمْ عَرْشَهُ وَيَتَبَدَّى لَهُمْ فِي رَوْضَةٍ مِنْ رِيَاضِ الجَنَّةِ، فَتُوضَعُ لَهُمْ مَنَابِرُ مِنْ نُورٍ وَمَنَابِرُ مِنْ لُؤْلُؤٍ، وَمَنَابِرُ مِنْ يَاقُوتٍ، وَمَنَابِرُ مِنْ زَبَرْجَدٍ، وَمَنَابِرُ مِنْ ذَهَبٍ، وَمَنَابِرُ مِنْ فِضَّةٍ، وَيَجْلِسُ أَدْنَاهُمْ وَمَا فِيهِمْ مِنْ دَنِيٍّ عَلَى كُثْبَانِ الْمِسْكِ وَالكَافُورِ، مَا يَرَوْنَ أَنَّ أَصْحَابَ الكَرَاسِيِّ بِأَفْضَلَ مِنْهُمْ مَجْلِسًا. قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ وَهَلْ نَرَى رَبَّنَا؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: هَلْ تَتَمَارَوْنَ فِي رُؤْيَةِ الشَّمْسِ وَالقَمَرِ لَيْلَةَ البَدْرِ؟ قُلْنَا: لاَ. قَالَ: كَذَلِكَ لاَ تَتَمَارَوْنَ فِي رُؤْيَةِ رَبِّكُمْ وَلاَ يَبْقَى فِي ذَلِكَ الْمَجْلِسِ رَجُلٌ إِلاَّ حَاضَرَهُ اللَّهُ مُحَاضَرَةً حَتَّى يَقُولَ لِلرَّجُلِ مِنْهُمْ: يَا فُلاَنُ ابْنَ فُلاَنٍ

बाज़ार में इकट्ठा करे। सईद कहने लगे: क्या उस में बाज़ार होगा? उन्होंने कहा: हाँ मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बताया कि अहले जन्नत जब जन्नत में जायेंगे तो अपने आमाल के मुताबिक उतरेंगे फिर दुनिया के दिनों के मुताबिक एक दिन की मिक़्दार में उन्हें इजाज़त दी जाएगी वह अपने रब की जियारत करेंगे, उनके लिए उसका अर्श ज़ाहिर होगा वह जन्नत के बागीचों में से एक बागीचे में ज़ाहिर होगा, फिर उनके लिए नूर, मोतियों, याकूत, ज़बर्जद, सोने और चान्दी के मिम्बर रखे जायेंगे और उन में से सब से नीचे दरजे वाला अगरचे उन में कोई अदना नहीं होगा वह भी कस्तूरी और काफूर के टीले पर होगा और उन्हें ख़याल तक नहीं आएगा कि कुर्सियों वाले उनसे अच्छी जगह बैठे हैं।'' अबू हुरैरा (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं, मैंने अर्ज़ किया, ''ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हम अपने रब को देखेंगे?'' आप ने फ़रमाया, '' हाँ'' क्या तुम सूरज या चौदहवीं रात के चाँद को देखने में शक करते हो? हमने अर्ज़ किया, नहीं, आप ने फ़रमाया, '' इसी तरह तुम अपने रब को देखने में भी शक नहीं करोगे। उस मजलिस में कोई एक आदमी भी बाकी नहीं रहेगा जिसे अल्लाह दीदार न कराये यहां तक कि उन में से एक आदमी को कहेगा, ऐ फुलां बिन फुलां! क्या तुम्हें वह दिन याद है जब तुमने यह बात कही थी फिर अल्लाह उसे दुनिया के कुछ फ़रेब याद दिलायेगा तो वह कहेगा, ऐ मेरे परवरदिगार! क्या तूने मुझे बख़्श नहीं दिया? अल्लाह

أَتَذْكُرُ يَوْمَ قُلْتَ: كَذَا وَكَذَا؟ فَيُذَكِّرُهُ بِبَعْضِ غَدْرَاتِهِ فِي الدُّنْيَا، فَيَقُولُ: يَا رَبِّ أَفَلَمْ تَغْفِرْ لِي؟ فَيَقُولُ: بَلَى، فَبِسَعَةِ مَغْفِرَتِي بَلَغْتَ مَنْزِلَتَكَ هَذِهِ، فَبَيْنَمَا هُمْ عَلَى ذَلِكَ غَشِيَتْهُمْ سَحَابَةٌ مِنْ فَوْقِهِمْ فَأَمْطَرَتْ عَلَيْهِمْ طِيبًا لَمْ يَجِدُوا مِثْلَ رِيحِهِ شَيْئًا قَطُّ، وَيَقُولُ رَبُّنَا تَبَارَكَ وَتَعَالَى: قُومُوا إِلَى مَا أَعْدَدْتُ لَكُمْ مِنَ الكَرَامَةِ فَخُذُوا مَا اشْتَهَيْتُمْ، فَنَأْتِي سُوقًا قَدْ حَفَّتْ بِهِ الْمَلاَئِكَةُ، فِيهِ مَا لَمْ تَنْظُرِ العُيُونُ إِلَى مِثْلِهِ، وَلَمْ تَسْمَعِ الآذَانُ، وَلَمْ يَخْطُرْ عَلَى القُلُوبِ فَيُحْمَلُ إِلَيْنَا مَا اشْتَهَيْنَا، لَيْسَ يُبَاعُ فِيهَا وَلاَ يُشْتَرَى، وَفِي ذَلِكَ السُّوقِ يَلْقَى أَهْلُ الجَنَّةِ بَعْضُهُمْ بَعْضًا، قَالَ: فَيُقْبِلُ الرَّجُلُ ذُو الْمَنْزِلَةِ الْمُرْتَفِعَةِ فَيَلْقَى مَنْ هُوَ دُونَهُ وَمَا فِيهِمْ دَنِيٌّ فَيَرُوعُهُ مَا يَرَى عَلَيْهِ مِنَ اللِّبَاسِ، فَمَا يَنْقَضِي آخِرُ حَدِيثِهِ حَتَّى يَتَخَيَّلَ عَلَيْهِ مَا هُوَ أَحْسَنُ مِنْهُ، وَذَلِكَ أَنَّهُ لاَ يَنْبَغِي لأَحَدٍ أَنْ يَحْزَنَ فِيهَا، ثُمَّ نَنْصَرِفُ إِلَى مَنَازِلِنَا، فَيَتَلَقَّانَا أَزْوَاجُنَا فَيَقُلْنَ مَرْحَبًا وَأَهْلاً، لَقَدْ جِئْتَ وَإِنَّ بِكَ مِنَ الجَمَالِ أَفْضَلَ مِمَّا فَارَقْتَنَا عَلَيْهِ، فَيَقُولُ: إِنَّا

फ़रमाएंगे : ज़रूर, मेरी बख़्शिश की वुस्अत की वजह से ही तू अपनी इस जगह पहुंचा है। यह लोग इसी हालत में ही होंगे कि उनके ऊपर एक बादल उन्हें ढांप कर उन पर ख़ुशबू बरसायेगा, उसकी खुशबू की मानिंद उन्होंने कभी कोई चीज़ नहीं पाई होगी और हमारा बा बरकत व बलंद परवरदिगार फ़रमाएगा: मैंने तुम्हारे लिए जो इन्आम तैयार किए हैं उनकी तरफ़ खड़े हो जाओ, जो चाहते हो ले लो फिर हम बाज़ार में आएंगे उसे फ़रिश्तों ने घेरा होगा उस में वह होगा जो आँखों ने देखा और कानों ने उस जैसा सुना तक न होगा और न ही दिलों में उसका तसव्वुर आया होगा, फिर हमें वही चीज़ दी जाएगी जो हम चाहेंगे न बेची जाएगी, न खरीदी जाएगी और उसी बाज़ार में जन्नती एक दूसरे से मिलेंगे, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, " एक बलंद मर्तबे वाला आदमी अपने से नीचे वाले को जब मिलेगा, हालांकि उन में कोई भी अदना नहीं होगा तो उसे उसका (बलंद मर्तबे वाले का) लिबास अच्छा लगेगा अभी उसकी बात पूरी नहीं होगी कि वह अपने ऊपर उस से बेहतर लिबास महसूस करेगा और यह इसलिये कि वहाँ किसी को ग़मगीन होना रवा नहीं होगा, फिर हम अपने घरों की तरफ़ आयेंगे तो हमें हमारी बीवियां आगे से मिलेंगी तो वह कहेंगी: खुश आमदेद, मर्हबा, आप तशरीफ़ लाये हैं, आप उस से भी ज़्यादा खूबसूरत हैं जब आप हमें छोड़ कर गए थे, तो हम कहेंगे: हम ने अपने जब्बार परवरदिगार के साथ मजलिस की है और हम

جَالَسْنَا الْيَوْمَ رَبَّنَا الْجَبَّارَ، وَيَحِقُّنَا أَنْ نَنْقَلِبَ بِمِثْلِ مَا انْقَلَبْنَا.

इसी के मुस्तहिक़ थे कि हम इसी हुस्नो जमाल के साथ वापस आयें जिस पर हम आयें हैं।''

ज़ईफ़: इब्ने माजह:4336. इब्ने हिब्बान: 7438. अल-मोजमुल औसत:1714.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। हम इसे सिर्फ़ इसी सनद से ही जानते हैं। और सुवैद बिन अम्र ने भी औज़ाई से इस हदीस का कुछ हिस्सा रिवायत किया है।

2550 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، وَهَنَّادٌ، قَالاَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ إِسْحَاقَ، عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: إِنَّ فِي الْجَنَّةِ لَسُوقًا مَا فِيهَا شِرَاءٌ وَلاَ بَيْعٌ إِلاَّ الصُّوَرَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ، فَإِذَا اشْتَهَى الرَّجُلُ صُورَةً دَخَلَ فِيهَا.

2550 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, " जन्नत में एक बाज़ार होगा जिसमें ख़रीदो फ़रोख्त नहीं होगी सिर्फ़ मर्दों और औरतों की तस्वीरें होंगी फिर जब कोई शख़्स किसी तस्वीर को पसंद करेगा वह उसमें दाख़िल हो जाएगा।''

ज़ईफ़: ज़ईफुत्तर्गीब:2235. तोहफतुल अशराफ़: 10297.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है।

16 بَابُ مَا جَاءَ فِي رُؤْيَةِ الرَّبِّ تَبَارَكَ وَتَعَالَى

16 - बलंद व बर्तर परवरदिगार का दीदार।

2551 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ الْبَجَلِيِّ، قَالَ: كُنَّا جُلُوسًا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَنَظَرَ إِلَى الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ، فَقَالَ: إِنَّكُمْ سَتُعْرَضُونَ عَلَى رَبِّكُمْ فَتَرَوْنَهُ كَمَا تَرَوْنَ هَذَا الْقَمَرَ لاَ تُضَامُونَ فِي رُؤْيَتِهِ، فَإِنِ اسْتَطَعْتُمْ أَنْ لاَ تُغْلَبُوا عَلَى صَلاَةٍ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَصَلاَةٍ قَبْلَ غُرُوبِهَا

2551 - सय्यदना जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि हम नबी (ﷺ) के पास बैठे हुए थे कि आप(ﷺ) ने चौदहवीं के चाँद की तरफ़ देख कर फ़रमाया, "बेशक अन्क़रीब तुम अपने रब पर पेश किए जाओगे तो तुम उसे ऐसे ही देखोगे जैसे तुम इस चाँद को देख रहे हो। तुम उसे देखने में भीड़ और मशक्क़त नहीं उठाओगे[1] फिर अगर तुम ताक़त रखते हो तो तुम सूरज तुलूअ होने से पहले की नमाज़ और सूरज गुरूब होने से पहले वाली नमाज़ से न हारो तो यह काम कर लो। फिर आप (ﷺ) ने यह आयत पढ़ी: "और

فَافْعَلُوا، ثُمَّ قَرَأَ: {وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ}.

सूरज निकलने और गुरूब होने से पहले अपने रब की हम्द के साथ उसकी तस्बीह करो।'' (क़ाफ़: 39)

बुख़ारी:554. मुस्लिम:633.अबू दाऊद: 4729.इब्ने माजह: 177

तौज़ीह: لَا تُضَامُون : तुम ज़ुल्म नहीं करोगे यानी इकट्ठे जमा होकर देखने के बावजूद तू धक्कम पेल कर के एक दूसरे को तंग नहीं करोगे।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2552 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ الْبُنَانِيِّ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ صُهَيْبٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي قَوْلِهِ: {لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَى وَزِيَادَةٌ} قَالَ: إِذَا دَخَلَ أَهْلُ الْجَنَّةِ الْجَنَّةَ نَادَى مُنَادٍ: إِنَّ لَكُمْ عِنْدَ اللهِ مَوْعِدًا، قَالُوا: أَلَمْ يُبَيِّضْ وُجُوهَنَا وَيُنَجِّنَا مِنَ النَّارِ وَيُدْخِلْنَا الْجَنَّةَ؟ قَالُوا: بَلَى، فَيُكْشَفُ الْحِجَابُ، قَالَ: فَوَاللَّهِ مَا أَعْطَاهُمْ شَيْئًا أَحَبَّ إِلَيْهِمْ مِنَ النَّظَرِ إِلَيْهِ.

2552 - सय्यदना सुहैब (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) से अल्लाह का फ़रमान: "नेकी वालों के लिए अच्छाई ही है। और मज़ीद भी कुछ होगा।'' (यूनुस: 26) के बारे में रिवायत करते हैं कि आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "जन्नत वाले जब जन्नत में दाख़िल हो जायेंगे तो एक ऐलान करने वाला ऐलान करेगा कि तुम्हारे लिए अल्लाह के यहाँ एक अह्द (वादा) है। वह कहेंगे: क्या उस ने हमारे चेहरों को रोशन कर के हमें जहन्नम से निजात देकर जन्नत में दाख़िल नहीं किया? फ़रिश्ते कहेंगे: क्यों नहीं। फिर हिजाब खोल दिया जाएगा। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह की क़सम! अल्लाह तआला ने उन्हें कोई ऐसी चीज़ नहीं दी होगी जो उस के दीदार से बढ़ कर उनको महबूब हो।''

मुस्लिम: 181. इब्ने माजह: 187

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस हदीस की सनद को सिर्फ़ हम्माद बिन सलमा ने ही मुत्तसिल और मर्फ़ू ज़िक्र किया है। जबकि सुलैमान बिन मुग़ीरा और हम्माद बिन ज़ैद ने इस हदीस को साबित बुनानी से अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला के कौल की सूरत में रिवायत किया है।

17 - वुजूहुय्यौमइज़िन नाज़िरा की तफ़सीर।

17 بَابٌ مِنْهُ تفسير قوله: {وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَاضِرَةٌ}.

2553 - सय्यदना इब्ने उमर (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मंजिल के लिहाज़ से जन्नतियों में सब से अदना वह शख़्स होगा जो अपने बाग़ात, अपनी बीवियों, नेअ्मतों, ख़ादिमों और तख़्तों की मसाफ़त एक हज़ार साल की देखेगा और उन में अल्लाह के यहाँ सब से ज़्यादा इज़्ज़त वाला वह होगा जो सुबह व शाम उस अल्लाह के चेहरे को देखेगा।'' फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने यह आयत पढ़ी "उस दिन कुछ चेहरे हश्शाश बश्शाश होंगे। अपने रब को देखने वाले होंगे।'' (अल- क़ियामा : 22- 23)

2553 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي شَبَابَةُ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ ثُوَيْرٍ، قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ، يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ أَدْنَى أَهْلِ الجَنَّةِ مَنْزِلَةً لَمَنْ يَنْظُرُ إِلَى جِنَانِهِ وَأَزْوَاجِهِ وَنَعِيمِهِ وَخَدَمِهِ وَسُرُرِهِ مَسِيرَةَ أَلْفِ سَنَةٍ، وَأَكْرَمَهُمْ عَلَى اللهِ مَنْ يَنْظُرُ إِلَى وَجْهِهِ غَدْوَةً وَعَشِيَّةً، ثُمَّ قَرَأَ رَسُولُ اللهِ ﷺ {وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَاضِرَةٌ إِلَى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ}.

ज़ईफ़: मुसनद अहमद: 2/13. अश-शरीया:629. हाकिम:2/509.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस कई तुरूक़ (सनदों) से इस्राईल से बवास्ता सुवैर, इब्ने उमर (رضي الله عنه) से मर्वी है, जबकि अब्दुल मलिक बिन अब्जर ने बवास्ता सुवैर, इब्ने उमर (رضي الله عنه) से मौक़ूफ़ रिवायत की है और इसी तरह उबैदुल्लाह अशजई ने भी सुफ़ियान से बवास्ता सुवैर, मुजाहिद के ज़रिए इब्ने उमर (رضي الله عنه) से ऐसे ही रिवायत की है और यह मर्फ़ू नहीं है।

2554 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या तुम बद्र का चाँद देखने में भीड़ करके एक दूसरे पर ज़्यादती करते हो? और क्या सूरज देखने में मुज़ाहमत करते हो? लोगों ने अर्ज़ किया, नहीं'' आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "यक़ीनन तुम अपने रब को भी ऐसे ही देखोगे जैसे तुम बद्र की रात चाँद को देखते हो तुम उसे

2554 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ طَرِيفٍ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَابِرُ بْنُ نُوحٍ الحِمَّانِيُّ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَتُضَامُونَ فِي رُؤْيَةِ القَمَرِ لَيْلَةَ البَدْرِ، وَتُضَامُونَ فِي رُؤْيَةِ الشَّمْسِ؟ قَالُوا: لاَ، قَالَ:

فَإِنَّكُمْ سَتَرَوْنَ رَبَّكُمْ كَمَا تَرَوْنَ الْقَمَرَ لَيْلَةَ الْبَدْرِ لاَ تُضَامُونَ فِي رُؤْيَتِهِ.

देखने में मुज़ाहमत नहीं करते।''

बुख़ारी बे-नह्विही:806.मुस्लिम:182.

वज़ाहतः इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। नीज़ यह्या बिन ईसा रमली और दीगर मुहद्दिसीन ने भी आमश से बवास्ता अबू सालेह, अबू हुरैरा (ﷺ) से नबी (ﷺ) की ऐसी ही हदीस रिवायत की है जबकि अब्दुल्लाह बिन इदरीस ने आमश से बवास्ता अबू सालेह, सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) से नबी (ﷺ) की हदीस ज़िक्र की है लेकिन अबू इदरीस की आमश से बयान कर्दा हदीस ग़ैर महफ़ूज़ जबकि अबू सालेह की अबू हुरैरा (ﷺ) से बयान की हुई हदीस ज़्यादा सहीह है। सहल बिन अबी सालेह ने भी अपने बाप से इसी तरह ही अबू हुरैरा (ﷺ) के ज़रिए नबी (ﷺ) से रिवायत की है नीज़ अबू सईद (ﷺ) से नबी (ﷺ) की इस जैसी कई और अहादीस मर्वी हैं वह भी सहीह अहादीस हैं।

18 – بَابٌ محاورة الرب أهل الجنة.

18 - परवरदिगार का अहले जन्नत से गुफ़्तगू करना।

2555 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ اللَّهَ يَقُولُ لأَهْلِ الجَنَّةِ: يَا أَهْلَ الجَنَّةِ، فَيَقُولُونَ: لَبَّيْكَ رَبَّنَا وَسَعْدَيْكَ، فَيَقُولُ: هَلْ رَضِيتُمْ؟ فَيَقُولُونَ: مَا لَنَا لاَ نَرْضَى وَقَدْ أَعْطَيْتَنَا مَا لَمْ تُعْطِ أَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ، فَيَقُولُ: أَنَا أُعْطِيكُمْ أَفْضَلَ مِنْ ذَلِكَ، قَالُوا: أَيُّ شَيْءٍ أَفْضَلُ مِنْ ذَلِكَ؟ قَالَ: أُحِلُّ عَلَيْكُمْ رِضْوَانِي فَلاَ أَسْخَطُ عَلَيْكُمْ أَبَدًا.

2555 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला अहले जन्नत से फ़रमाएंगे, ऐ जन्नत वालो! वह कहेंगे: ऐ हमारे रब! हम हाज़िर हैं और हम आप की बात सुनने को तैयार हैं। तो अल्लाह तआला फ़रमाएगा: क्या तुम ख़ुश हो? वह अर्ज़ करेंगे: हमें क्या हुआ कि हम राज़ी न हों, जब कि तूने हमें वह दिया है जो अपनी मख़्लूक़ में किसी को नहीं दिया। तो अल्लाह फ़रमाएगा: मैं तुम्हें इस से भी बेहतर अता करना चाहता हूँ वह अर्ज़ करेंगे: इस से बेहतर क्या चीज़ है? अल्लाह तआला फ़रमाएगा: मैं तुम पर अपनी रजामंदी उतारता हूँ मैं तुम से कभी नाराज़ नहीं हूंगा।''

बुख़ारी:6549.:2829

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

19 بَابُ مَا جَاءَ فِي تَرَائِي أَهْلِ الْجَنَّةِ فِي الْغُرَفِ

2556 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ هِلاَلِ بْنِ عَلِيٍّ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: إِنَّ أَهْلَ الجَنَّةِ لَيَتَرَاءَوْنَ فِي الغُرْفَةِ كَمَا يَتَرَاءَوْنَ الْكَوْكَبَ الشَّرْقِيَّ أَوِ الْكَوْكَبَ الْغَرْبِيَّ الْغَارِبَ فِي الأُفُقِ أَوِ الطَّالِعَ، فِي تَفَاضُلِ الدَّرَجَاتِ، فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ أُولَئِكَ النَّبِيُّونَ؟ قَالَ: بَلَى، وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ وَأَقْوَامٌ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَصَدَّقُوا الْمُرْسَلِينَ.

19 - जन्नतियों का बालाखानों से एक दूसरे को देखना।

2556 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "बेशक जन्नत वाले बालाखानों से एक दूसरे को ऐसे देखेंगे जैसे उफ़ुक़ में डूबते या निकलते हुए मशरिकी या मग़रिबी सितारे को देखते हैं" (यह रूयत) तफ़ाज़ुले दरजात की वजह से होगी। लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! यह अंबिया होंगे? आप ने फ़रमाया, "हाँ! उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है (अंबिया के साथ) वह लोग भी होंगे जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाये और पैगम्बरों की तस्दीक़ की।"

सहीह: मुसनद अहमद:2/335.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

20 بَابُ مَا جَاءَ فِي خُلُودِ أَهْلِ الْجَنَّةِ وَأَهْلِ النَّارِ

2557 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ العَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنِ العَلاَءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يَجْمَعُ اللَّهُ النَّاسَ يَوْمَ القِيَامَةِ فِي صَعِيدٍ وَاحِدٍ، ثُمَّ يَطَّلِعُ عَلَيْهِمْ رَبُّ

20 - जन्नती और जहन्नमी हमेशा रहेंगे।

2557 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "क़यामत के दिन अल्लाह तआला लोगों को एक मैदान में जमा करेगा, फिर रब्बुल आलमीन उन पर झाँक कर फ़रमाएगा गौर से सुनो! हर इंसान, उस चीज़ के पीछे चला जाए जिस की

الْعَالَمِينَ، فَيَقُولُ: أَلاَ يَتْبَعُ كُلُّ إِنْسَانٍ مَا كَانُوا يَعْبُدُونَ، فَيُمَثَّلُ لِصَاحِبِ الصَّلِيبِ صَلِيبُهُ، وَلِصَاحِبِ التَّصَاوِيرِ تَصَاوِيرُهُ، وَلِصَاحِبِ النَّارِ نَارُهُ، فَيَتْبَعُونَ مَا كَانُوا يَعْبُدُونَ، وَيَبْقَى الْمُسْلِمُونَ فَيَطَّلِعُ عَلَيْهِمْ رَبُّ الْعَالَمِينَ، فَيَقُولُ: أَلاَ تَتَّبِعُونَ النَّاسَ؟ فَيَقُولُونَ: نَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْكَ نَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْكَ، اللَّهُ رَبُّنَا، وَهَذَا مَكَانُنَا حَتَّى نَرَى رَبَّنَا وَهُوَ يَأْمُرُهُمْ وَيُثَبِّتُهُمْ، ثُمَّ يَتَوَارَى ثُمَّ يَطَّلِعُ فَيَقُولُ: أَلاَ تَتَّبِعُونَ النَّاسَ؟ فَيَقُولُونَ: نَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْكَ، نَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْكَ اللَّهُ رَبُّنَا، وَهَذَا مَكَانُنَا حَتَّى نَرَى رَبَّنَا وَهُوَ يَأْمُرُهُمْ وَيُثَبِّتُهُمْ قَالُوا: وَهَلْ نَرَاهُ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: وَهَلْ تُضَارُّونَ فِي رُؤْيَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ؟ قَالُوا: لاَ يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: فَإِنَّكُمْ لاَ تُضَارُّونَ فِي رُؤْيَتِهِ تِلْكَ السَّاعَةَ، ثُمَّ يَتَوَارَى ثُمَّ يَطَّلِعُ فَيُعَرِّفُهُمْ نَفْسَهُ، ثُمَّ يَقُولُ: أَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّبِعُونِي، فَيَقُومُ الْمُسْلِمُونَ وَيُوضَعُ الصِّرَاطُ، فَيَمُرُّونَ عَلَيْهِ مِثْلَ جِيَادِ الْخَيْلِ وَالرِّكَابِ، وَقَوْلُهُمْ عَلَيْهِ سَلِّمْ سَلِّمْ، وَيَبْقَى أَهْلُ النَّارِ فَيُطْرَحُ مِنْهُمْ فِيهَا فَوْجٌ، ثُمَّ يُقَالُ: هَلِ امْتَلأْتِ؟ فَتَقُولُ: {هَلْ مِنْ مَزِيدٍ} ثُمَّ يُطْرَحُ فِيهَا فَوْجٌ، فَيُقَالُ: هَلْ

वह इबादत करते रहे हैं, फिर सलीब वाले के लिए सलीब, तस्वीर की पूजा करने वाले के लिये तस्वीरें और आग वाले के लिए उसकी आग की तश्बीह बनाई जाएगी। वह जिसकी इबादत करते रहे होंगे उसी के पीछे चल देंगे और मुसलमान ठहरे रहेंगे। फिर रब्बुल आलमीन उनकी तरफ़ झाँक कर फ़रमाएगा, "तुम लोगों के पीछे क्यों नहीं जाते ? तो वह कहेंगे हम तुझसे अल्लाह की पनाह मांगते हैं हम तुझसे अल्लाह की पनाह मांगते है, अल्लाह ही हमारा रब है, जब तक हम अपने रब को न देख लें यही हमारा ठिकाना है। और वही उन्हें हुक्म देगा और उन्हें साबित क़दम रखेगा। लोगों ने अर्ज़ की! ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! क्या हम अल्लाह को देखेंगे? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, क्या तुम बद्र की रात चाँद को देखने में मुज़ाहमत करते हो, उन्होंने ने अर्ज़ किया: नहीं या रसूलल्लाह(ﷺ)! आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "बेशक उस घड़ी में भी उसे देखने में मुज़ाहमत नहीं करोगे फिर वह छिप जाएगा फिर ज़ाहिर होकर उन्हें अपनी पहचान करवा कर फ़रमाएगा: मैं तुम्हारा परवरदिगार हूँ, मेरे पीछे आओ, चुनांचे मुसलमान खड़े हो जायेंगे और पुल सिरात को रख दिया जाएगा फिर उसके ऊपर कुछ लोग तेज़ रफ़्तार उम्दा घोड़ों और ऊंटों की तरह गुजरेंगे और उस पुल पर उनकी बात सिर्फ़ سَلِّمْ سَلِّمْ (सलामती दे , सलामती दे) होगी और जहन्नमी बाकी रह जायेंगे फिर उनकी एक फ़ौज

امْتَلَأْتِ؟ فَتَقُولُ: {هَلْ مِنْ مَزِيدٍ}، حَتَّى إِذَا أُوعِبُوا فِيهَا وَضَعَ الرَّحْمَنُ قَدَمَهُ فِيهَا وَأَزْوَى بَعْضَهَا إِلَى بَعْضٍ، ثُمَّ قَالَ: قَطْ، قَالَتْ: قَطْ قَطْ، فَإِذَا أَدْخَلَ اللَّهُ أَهْلَ الجَنَّةِ الجَنَّةَ وَأَهْلَ النَّارِ النَّارَ، قَالَ: أُتِيَ بِالمَوْتِ مُلَبَّبًا، فَيُوقَفُ عَلَى السُّورِ الَّذِي بَيْنَ أَهْلِ الْجَنَّةِ وَأَهْلِ النَّارِ، ثُمَّ يُقَالُ: يَا أَهْلَ الجَنَّةِ، فَيَطَّلِعُونَ خَائِفِينَ، ثُمَّ يُقَالُ: يَا أَهْلَ النَّارِ، فَيَطَّلِعُونَ مُسْتَبْشِرِينَ يَرْجُونَ الشَّفَاعَةَ، فَيُقَالُ لأَهْلِ الجَنَّةِ وَأَهْلِ النَّارِ: هَلْ تَعْرِفُونَ هَذَا؟ فَيَقُولُونَ هَؤُلاَءِ وَهَؤُلاَءِ: قَدْ عَرَفْنَاهُ، هُوَ الْمَوْتُ الَّذِي وُكِّلَ بِنَا، فَيُضْجَعُ فَيُذْبَحُ ذَبْحًا عَلَى السُّورِ الَّذِي بَيْنَ الجَنَّةِ وَالنَّارِ، ثُمَّ يُقَالُ: يَا أَهْلَ الجَنَّةِ خُلُودٌ لاَ مَوْتَ، وَيَا أَهْلَ النَّارِ خُلُودٌ لاَ مَوْتَ.

उस जहन्नम में फेंकी जाएगी फिर पूछा जाएगा क्या तू भर गई है? तो वह कहेगी: क्या और हैं? (क़ाफ़:30) फिर एक फ़ौज को उसमें फेंका जाएगा, फिर पूछा जाएगा: क्या तु भर गई है? तो वह कहेगी: क्या और हैं? यहाँ तक कि जब वह सब उस में गिरा दिए जाएंगे तो रहमान अपना क़दम उस में रखेगा और उसका बअ़ज़ हिस्सा बअ़ज़ से मिला दिया जाएगा और वह जहन्नम कहेगी बस,बस! जब अल्लाह तआला जन्नतियों को जन्नत और जहन्नमियों को जहन्नम में दाख़िल कर देगा तो मौत को खींचते हुए लाया जाएगा फिर जन्नतियों जहन्मियों के दर्मियान एक दीवार पर उसे खड़ा कर दिया जाएगा फिर कहा जाएगा: ऐ जन्नत वालो! वह डरते डरते उधर देखेंगे, फिर कहा जाएगा: ऐ जहन्नम वालो! तो वह शफ़ाअत की उम्मीद से खुशी-खशी उधर देखेंगे फिर जन्नतियों जहन्नमियों से पूछा जाएगा: क्या तुम इसे जानते हो? तो यह भी और वह भी कहेंगे हम इसे जानते हैं। यह मौत है जो हमें दी गई थी। फिर उसे लटकाया जाएगा और जन्नत व दोज़ख़ के दर्मियान ही उसे ज़बह कर दिया जाएगा। फिर कहा जाएगा: ऐ जन्नत वालो! (तुम्हारे लिए जन्नत में) हमेशा रहना है, मौत नहीं आएगी और ऐ जहन्नम वालो (तुम्हारे लिए जहन्नम में) हमेशा रहना है मौत नहीं आयेगी।''

सहीह: बुख़ारी: 806. मुस्लिम: 182.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2558 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ فُضَيْلِ بْنِ مَرْزُوقٍ، عَنْ عَطِيَّةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، يَرْفَعُهُ، قَالَ: إِذَا كَانَ يَوْمُ القِيَامَةِ أُتِيَ بِالمَوْتِ كَالكَبْشِ الأَمْلَحِ، فَيُوقَفُ بَيْنَ الجَنَّةِ وَالنَّارِ، فَيُذْبَحُ وَهُمْ يَنْظُرُونَ، فَلَوْ أَنَّ أَحَدًا مَاتَ فَرَحًا لَمَاتَ أَهْلُ الجَنَّةِ، وَلَوْ أَنَّ أَحَدًا مَاتَ حُزْنًا لَمَاتَ أَهْلُ النَّارِ.

2558 - सय्यदना अबू सईद (رضي الله عنه) मर्फ़ू हदीस रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब क़यामत का दिन होगा तो मौत को एक चित्कबरे मेंढे की शक्ल में लाया जाएगा फिर उसे जन्नत और जहन्नम के दर्मियान खड़ा करके ज़बह कर दिया जाएगा और जन्नती और जहन्नमी उसे देख रहे होंगे अगर खुशी की वजह से कोई मरता तो अहले जन्नत मर जाते और अगर गम की वजह से कोई मरता तो अहले जहन्नम मर जाते।''

ولو أن أحدا...... के अलावा बाकी सब सहीह है। अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा: 2669.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। नबी (ﷺ) से ऐसी बहुत सी अहादीस मर्वी हैं जिन में दीदारे इलाही का ज़िक्र है कि लोग अपने रब को देखेंगे और उसके क़दम और दीगर आज़ा का भी ज़िक्र है। इस बारे में बहुत से अहले इल्म अइम्मा जैसे सुफ़ियान सौरी, मालिक बिन अनस, सुफ़ियान बिन उयय्ना, इब्ने मुबारक, वकीअ और दीगर अइम्म-ए-किराम का यही मज़हब है कि उन्होंने इन अशिया को रिवायत किया है फिर कहते हैं कि यह अहादीस मर्वी हैं और हमारा इन पर ईमान है लेकिन कैफ़ियत बयान नहीं की जा सकती और मुहद्दिसीन ने भी इसे ही इख़्तियार किया है कि उन अहादीस की रिवायत करें जैसे जैसे आयी हैं न उनकी तफ़सीर की जाए, न वहम किया जाये और न ही कैफ़ियत बयान की जाए। इसी बात को अहले इल्म ने पसंद किया है और यही उनका मज़हब है नीज़ हदीस में लफ्ज़ فيعر فهم نفسه का मतलब है वह उनके लिए ज़ाहिर होगा।

21 بَابُ مَا جَاءَ حُفَّتِ الجَنَّةُ بِالمَكَارِهِ وَحُفَّتِ النَّارُ بِالشَّهَوَاتِ

21 - जन्नत को मुश्किल कामों और जहन्नम को ख़्वाहिशात के साथ घेरा गया है।

2559 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ حُمَيْدٍ، وَثَابِتٍ، عَنْ

2559 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जन्नत को मुश्किल कामों और जहन्नम को ख़्वाहिशात व शहवात के साथ घेरा गया है।''

أَنَسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: حُفَّتِ الجَنَّةُ بِالمَكَارِهِ، وَحُفَّتِ النَّارُ بِالشَّهَوَاتِ.

सहीह: मुस्लिम:2822.मुसनद अहमद:3/254. इब्ने हिब्बान: 716.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है।

2560 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَمَّا خَلَقَ اللَّهُ الجَنَّةَ وَالنَّارَ أَرْسَلَ جِبْرِيلَ إِلَى الجَنَّةِ فَقَالَ: انْظُرْ إِلَيْهَا وَإِلَى مَا أَعْدَدْتُ لأَهْلِهَا فِيهَا، قَالَ: فَجَاءَهَا وَنَظَرَ إِلَيْهَا وَإِلَى مَا أَعَدَّ اللَّهُ لأَهْلِهَا فِيهَا، قَالَ: فَرَجَعَ إِلَيْهِ، قَالَ: فَوَعِزَّتِكَ لاَ يَسْمَعُ بِهَا أَحَدٌ إِلاَّ دَخَلَهَا، فَأَمَرَ بِهَا فَحُفَّتْ بِالمَكَارِهِ، فَقَالَ: ارْجِعْ إِلَيْهَا فَانْظُرْ إِلَى مَا أَعْدَدْتُ لأَهْلِهَا فِيهَا، قَالَ: فَرَجَعَ إِلَيْهَا فَإِذَا هِيَ قَدْ حُفَّتْ بِالمَكَارِهِ، فَرَجَعَ إِلَيْهِ فَقَالَ: وَعِزَّتِكَ لَقَدْ خِفْتُ أَنْ لاَ يَدْخُلَهَا أَحَدٌ، قَالَ: اذْهَبْ إِلَى النَّارِ فَانْظُرْ إِلَيْهَا وَإِلَى مَا أَعْدَدْتُ لأَهْلِهَا فِيهَا، فَإِذَا هِيَ يَرْكَبُ بَعْضُهَا بَعْضًا، فَرَجَعَ إِلَيْهِ فَقَالَ: وَعِزَّتِكَ لاَ يَسْمَعُ بِهَا أَحَدٌ فَيَدْخُلَهَا، فَأَمَرَ بِهَا فَحُفَّتْ بِالشَّهَوَاتِ،

2560 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने जब जन्नत और जहन्नम को बनाया तो जिब्रील (عليه السلام) को जन्नत की तरफ़ भेजा और हुक्म दिया कि उसे और जो कुछ मैंने उस में तैयार किया है उसे देखे। जिब्रील गए तो उसे जो उस में रहने वालों के लिए तैयार किया था उसे देख कर वापस आकर कहने लगे: (ऐ अल्लाह!) तेरी इज़्ज़त की क़सम! इस बारे में जो भी सुनेगा वह इसमें दाख़िल हो जाएगा। फिर अल्लाह तआला ने हुक्म दिया और मुश्किल और ना पसंदीदा कामों से ढाँप दिया गया: फिर फ़रमाया, "जाओ जाकर उसे और उन चीजों को देखो जो मैंने उस में रहने वालों के लिए तैयार की हैं। वह आए तो देखा उसे मुश्किल कामों से घेर दिया गया था फिर वापस आकर कहने लगे: तेरी इज़्ज़त की क़सम! मुझे डर है कि इसमें कोई नहीं जाएगा।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "जहन्नम की तरफ़ जाओ उसे और जो मैंने उसके अन्दर रहने वालों के लिए तैयार किया उसे देखो। उन्होंने देखा कि उसका एक हिस्सा दूसरे पर चढ़ रहा है वह वापस आए कहने लगे: तेरी इज़्ज़त की

فَقَالَ: ارْجِعْ إِلَيْهَا، فَرَجَعَ إِلَيْهَا فَقَالَ: وَعِزَّتِكَ لَقَدْ خَشِيتُ أَنْ لاَ يَنْجُوَ مِنْهَا أَحَدٌ إِلاَّ دَخَلَهَا.

क़सम! उसका हाल सुन कर कोई शख़्स उसमें दाख़िल नहीं होगा। तो अल्लाह तआला उसके बारे में हुक्म दिया तो उसे ख़्वाहिशात और शहवात के साथ घेर दिया गया, फिर फ़रमाया, "उसकी तरफ़ दोबारा जाओ। वह गए तो कहने लगे: तेरी इज्ज़त की क़सम! मुझे डर है कि उससे कोई भी निजात नहीं पा सकेगा बल्कि हर कोई उसमें दाख़िल हो जाएगा।''

हसन सहीह: अबू दाऊद: 4744.निसाई:3763. मुसनद अहमद:332.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

22 بَابُ مَا جَاءَ فِي احْتِجَاجِ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ

22 - जन्नत और जहन्नम की तकरार।

2561 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: احْتَجَّتِ الجَنَّةُ وَالنَّارُ، فَقَالَتِ الجَنَّةُ: يَدْخُلُنِي الضُّعَفَاءُ وَالمَسَاكِينُ، وَقَالَتِ النَّارُ: يَدْخُلُنِي الجَبَّارُونَ وَالمُتَكَبِّرُونَ، فَقَالَ لِلنَّارِ: أَنْتِ عَذَابِي أَنْتَقِمُ بِكِ مِمَّنْ شِئْتُ، وَقَالَ لِلْجَنَّةِ: أَنْتِ رَحْمَتِي أَرْحَمُ بِكِ مَنْ شِئْتُ.

2561 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जन्नत और जहन्नम का झगड़ा हुआ, जन्नत कहने लगी: मेरे अन्दर कमज़ोर लोग और मसाकीन दाख़िल होंगे और जहन्नम ने कहा: मेरे अन्दर ज़ालिम और तकब्बुर करने वाले दाख़िल होंगे। तो (अल्लाह तआला ने) जहन्नम से फ़रमाया, "तु मेरा अज़ाब है मैं तेरे साथ जिस से चाहूँगा इंतिकाम लूंगा और जन्नत से कहा: तु मेरी रहमत है। तेरे साथ मैं जिस पर चाहूँगा रहमत करूंगा।''

सहीह: बुख़ारी:4850. मुस्लिम: 2846. तोहफ़तुल अशराफ़: 15063.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

23 - अदना जन्नती की क्या इज़्ज़त अफ़ज़ाई होगी?

23 بَابُ مَا جَاءَ مَا لأَدْنَى أَهْلِ الجَنَّةِ مِنَ الكَرَامَةِ

2562 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मर्तबे के लिहाज़ से सब से अदना जन्नती वह होगा जिसके अस्सी हज़ार खादिम और बहत्तर बीवियां होंगी और उसके लिए मोटी, ज़बर्जद और याकूत का खेमा जाबिया से सन्आ तक की मसाफ़त जितना बनाया जाएगा।''

ज़ईफ़: मुसनद अहमद: 3/75. अबू याला:144. इब्ने हिब्बान:7401.

2562 - حَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا رِشْدِينُ بْنُ سَعْدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ الحَارِثِ، عَنْ دَرَّاجٍ، عَنْ أَبِي الهَيْثَمِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَدْنَى أَهْلِ الجَنَّةِ الَّذِي لَهُ ثَمَانُونَ أَلْفَ خَادِمٍ وَاثْنَتَانِ وَسَبْعُونَ زَوْجَةً، وَتُنْصَبُ لَهُ قُبَّةٌ مِنْ لُؤْلُؤٍ وَزَبَرْجَدٍ وَيَاقُوتٍ كَمَا بَيْنَ الجَابِيَةِ إِلَى صَنْعَاءَ. وَبِهَذَا الإِسْنَادِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ مَاتَ مِنْ أَهْلِ الجَنَّةِ مِنْ صَغِيرٍ أَوْ كَبِيرٍ يُرَدُّونَ بَنِي ثَلاَثِينَ فِي الجَنَّةِ لاَ يَزِيدُونَ عَلَيْهَا أَبَدًا، وَكَذَلِكَ أَهْلُ النَّارِ وَبِهَذَا الإِسْنَادِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ عَلَيْهِمُ التِّيجَانَ، إِنَّ أَدْنَى لُؤْلُؤَةٍ مِنْهَا لَتُضِيءُ مَا بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالمَغْرِبِ.

नीज़ इसी सनद से ही मर्वी है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो कोई भी छोटा या बड़ा जन्नती फौत होता है उसे जन्नत में तीस साल का बनाया जाएगा उस से कभी भी बड़े नहीं होंगे।''

और इसी सनद से यह भी मर्वी है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "उनके सरों के ऊपर ऐसे ताज होंगे जिनमें अदना सा मोती मशरिक़ व मग़रिब का दर्मियान रोशन कर दे।''

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। हम इसे रिश्दीन बिन साद के तरीक़ से ही जानते हैं।

2563 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मोमिन जब जन्नत में औलाद की ख़्वाहिश करेगा तो जिस तरह वह चाहेगा एक घड़ी में ही हमल, पैदाइश और (जन्नतियों के बराबर) उसकी उम्र हो जाएगी।''

सहीह: इब्ने माजह्:4338. मुसनद अहमद:3/9. दारमी:2837. इब्ने हिब्बान:744.

2563 - حَدَّثَنَا بُنْدَارٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ عَامِرٍ الأَحْوَلِ، عَنْ أَبِي الصِّدِّيقِ النَّاجِيِّ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الْمُؤْمِنُ إِذَا اشْتَهَى الوَلَدَ فِي الجَنَّةِ كَانَ حَمْلُهُ وَوَضْعُهُ وَسِنُّهُ فِي سَاعَةٍ كَمَا يَشْتَهِي.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है। और अहले इल्म का इस बारे में इख़्तिलाफ़ है। बअ़ज़ कहते हैं, जन्नत में जिमा (हमबिस्तरी) होगा लेकिन औलाद नहीं होगी, ताऊस, मुजाहिद और इब्राहीम से ऐसे ही मर्वी है।

इमाम मुहम्मद (बिन इस्माईल बूख़ारी) कहते हैं कि इस्हाक़ बिन इब्राहीम फ़रमाते हैं, नबी (ﷺ) की हदीस में है। " मोमिन जन्नत में औलाद की ख़्वाहिश करेगा तो जैसे उसकी ख़्वाहिश होगी एक घड़ी में हो जाएगा, लेकिन वह ख़्वाहिश ही नहीं करेगा।''

इमाम मुहम्मद (बिन इस्माईल बूख़ारी) फ़रमाते हैं, अबू रज़ीन उकैली से मर्वी है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जन्नतियों की जन्नत में औलाद नहीं होगी।'' अबू सिद्दीक़ नाजी का नाम बक्र बिन अम्र है उन्हें बक्र बिन कैस भी कहा जाता है।

24 - हुरैन की बातें।

24 بَابُ مَا جَاءَ فِي كَلَامِ الحُورِ العِينِ

2564 - सय्यदना अली (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, " जन्नत में हुरैन[1] की मजलिस होगी वह अपनी आवाजों को बलंद करेंगी, मख़्लूक़ ने ऐसी खुशकुन और शीरीं आवाज़ कभी नहीं सुनी होगी। वह कहेंगी: हम हमेशा रहने वालियां हैं हम कभी ख़त्म नहीं होंगी, हम नाज़ो नेअम में रहने वाली हैं हमें कभी मोहताजी नहीं आएगी,

2564 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، وَأَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَا: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ إِسْحَاقَ، عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ فِي الجَنَّةِ لَمُجْتَمَعًا لِلْحُورِ العِينِ يُرَفِّعْنَ بِأَصْوَاتٍ لَمْ يَسْمَعِ الخَلَائِقُ مِثْلَهَا، قَالَ:

يَقُلْنَ: نَحْنُ الخَالِدَاتُ فَلاَ نَبِيدُ، وَنَحْنُ النَّاعِمَاتُ فَلاَ نَبْأَسُ، وَنَحْنُ الرَّاضِيَاتُ فَلاَ نَسْخَطُ، طُوبَى لِمَنْ كَانَ لَنَا وَكُنَّا لَهُ.

हम खुश रहने वाली हैं हम नाराज़ नहीं होंगी, मुबारकबाद हो उसे जो हमारा और हम उसकी हैं।''

ज़ईफ़: 2550 के तहत तख़रीज देखें।

तौज़ीह: حُور العِين : आँख की सफ़ेदी बहुत सफ़ेद, सियाही बहुत सियाह, पतली और पलकें गोल हों तो उसे हूर कहा जाता है। अहले जन्नत के लिए पैदा की गई इस सिन्फ़ में यह सिफ़त होगी इसी लिए इन्हें हूरैन कहा जाता है और مجتمع का मतलब है जमा होने की जगह यानी एक मजलिस जहां जमा होंगी।

वज़ाहत: इस बारे में अबू हुरैरा, अबू सईद और अनस (رضی اللہ عنہم) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं, अली (رضی اللہ عنہ) की हदीस ग़रीब है।

2565 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، عَنِ الأَوْزَاعِيِّ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، فِي قَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ: {فَهُمْ فِي رَوْضَةٍ يُحْبَرُونَ} قَالَ: السَّمَاعُ وَمَعْنَى السَّمَاعِ مِثْلُ مَا وَرَدَ فِي الحَدِيثِ أَنَّ الحُورَ العِينَ يُرَفِّعْنَ بِأَصْوَاتِهِنَّ.

2565 - औज़ाई (رحمہ اللہ) से रिवायत है कि यह्या बिन अबी कसीर (رحمہ اللہ) अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के इस फ़रमान: "और उन्हें जन्नत में खुश कर दिया जाएगा। (अर्रूम: 15) के बारे में फ़रमाते हैं, इस से मुराद समा है और समा का मतलब वही होता है जो हदीस में आया है कि हूरैन अपनी आवाज़ें बलंद करेंगी।

सहीह। मुहक्किक़ ने इसकी तख़रीज ज़िक्र नहीं की।

25 بَابٌ أَحَادِيثُ فِي صِفَةِ الثَّلاثَةِ الَّذِينَ يُحِبُّهُمُ اللهُ.

25 - उन तीन आदमियों की सिफात जिन से अल्लाह मोहब्बत करता है।

2566 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ أَبِي اليَقْظَانِ، عَنْ زَاذَانَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ثَلاَثَةٌ عَلَى كُثْبَانِ الْمِسْكِ، أُرَاهُ قَالَ، يَوْمَ القِيَامَةِ، يَغْبِطُهُمُ الأَوَّلُونَ وَالآخِرُونَ: رَجُلٌ

2566 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضی اللہ عنہ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "क़यामत के दिन तीन आदमी कस्तूरी के टीलों पर होंगे उन पर पहले और पिछले तमाम लोग रश्क करते होंगे। पहला वह आदमी जो हर दिन और हर रात में पाँचों नमाज़ों की अज़ान देता है। दूसरा वह आदमी जो किसी

يُنَادِي بِالصَّلَوَاتِ الْخَمْسِ فِي كُلِّ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ، وَرَجُلٌ يَؤُمُّ قَوْمًا وَهُمْ بِهِ رَاضُونَ، وَعَبْدٌ أَدَّى حَقَّ اللهِ وَحَقَّ مَوَالِيهِ.

कौम का इमाम हो और वह लोग उस से खुश हों और तीसरा वह गुलाम जो अल्लाह और अपने मालिकों का हक़ अदा करे।''

ज़ईफ़: 1986 के तहत तख़रीज देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, अली (رضي الله عنه) की हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे सुफ़ियान सौरी की सनद से ही जानते हैं और अबू कत्तान का नाम उस्मान बिन उमैर या उस्मान बिन कैस है।

2567 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَيَّاشٍ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ رِبْعِيِّ بْنِ حِرَاشٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، يَرْفَعُهُ، قَالَ: ثَلاثَةٌ يُحِبُّهُمُ اللَّهُ، رَجُلٌ قَامَ مِنَ اللَّيْلِ يَتْلُو كِتَابَ اللهِ، وَرَجُلٌ تَصَدَّقَ صَدَقَةً بِيَمِينِهِ يُخْفِيهَا، أُرَاهُ قَالَ، مِنْ شِمَالِهِ، وَرَجُلٌ كَانَ فِي سَرِيَّةٍ فَانْهَزَمَ أَصْحَابُهُ فَاسْتَقْبَلَ الْعَدُوَّ.

2567 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) मर्फ़ू रिवायत करते हैं कि (रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया,)" तीन आदमियों से अल्लाह मोहब्बत करता है पहला वह आदमी जो रात के वक़्त खड़ा होकर किताबुल्लाह की तिलावत करता है। दूसरा वह आदमी जो अपने दायें हाथ से छिपाकर सदक़ा करता है मेरे ख़याल में यह कहा कि बाएं से छिपा कर और तीसरा वह आदमी जो एक लश्कर में हो तो उसके साथी शिकश्त खा कर आ जाएं और वह अकेला दुश्मन के सामने रहे।''

ज़ईफ़: अल-मोजमुल कबीर: 10486.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस सनद से यह हदीस ग़रीब है और गैर महफ़ूज़ भी। सहीह हदीस वह है जिसे शोबा वगैरह ने मंसूर से उन्होंने रिबई बिन हिराश से, उन्होंने ज़ैद बिन ज़िब्यान से बवास्ता अबू ज़र (رضي الله عنه) नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है। नीज़ अबू बक्र बिन अयाश बहुत गलतियाँ करता था।

2568 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالاَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مَنْصُورِ بْنِ الْمُعْتَمِرِ، قَالَ: سَمِعْتُ رِبْعِيَّ بْنَ حِرَاشٍ، يُحَدِّثُ عَنْ زَيْدِ بْنِ ظَبْيَانَ، يَرْفَعُهُ إِلَى أَبِي ذَرٍّ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى

2568 - सय्यदना अबू ज़र (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला तीन आदमियों से मोहब्बत और तीन लोगों से नफ़रत करता है। वह लोग जिन से अल्लाह मोहब्बत करता है (उन में से पहला) कोई शख़्स किसी कौम के पास जाकर अल्लाह के नाम से सवाल करता है, उन से क़राबत के नाम से सवाल

اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: ثَلَاثَةٌ يُحِبُّهُمُ اللَّهُ، وَثَلَاثَةٌ يُبْغِضُهُمُ اللَّهُ. فَأَمَّا الَّذِينَ يُحِبُّهُمُ اللَّهُ، فَرَجُلٌ أَتَى قَوْمًا فَسَأَلَهُمْ بِاللَّهِ وَلَمْ يَسْأَلْهُمْ بِقَرَابَةٍ بَيْنَهُ وَبَيْنَهُمْ فَمَنَعُوهُ، فَتَخَلَّفَ رَجُلٌ بِأَعْيَانِهِمْ فَأَعْطَاهُ سِرًّا لَا يَعْلَمُ بِعَطِيَّتِهِ إِلَّا اللَّهُ، وَالَّذِي أَعْطَاهُ، وَقَوْمٌ سَارُوا لَيْلَتَهُمْ حَتَّى إِذَا كَانَ النَّوْمُ أَحَبَّ إِلَيْهِمْ مِمَّا يُعْدَلُ بِهِ نَزَلُوا فَوَضَعُوا رُءُوسَهُمْ، فَقَامَ أَحَدُهُمْ يَتَمَلَّقُنِي وَيَتْلُو آيَاتِي، وَرَجُلٌ كَانَ فِي سَرِيَّةٍ فَلَقِيَ الْعَدُوَّ فَهُزِمُوا وَأَقْبَلَ بِصَدْرِهِ حَتَّى يُقْتَلَ أَوْ يُفْتَحَ لَهُ، وَالثَّلَاثَةُ الَّذِينَ يُبْغِضُهُمُ اللَّهُ، الشَّيْخُ الزَّانِي، وَالْفَقِيرُ الْمُخْتَالُ، وَالْغَنِيُّ الظَّلُومُ.

नहीं करता, तो वह उसे कुछ नहीं देते तो एक आदमी उन से पीछे हो कर चुपके से उसे कुछ दे देता है। उस अतिय्या को सिर्फ़ अल्लाह ही जानता है या वह शख़्स जिसने उसे दिया है। (दूसरा) कुछ लोग सारी रात चलते रहे यहाँ तक कि वह वक़्त आ गया जब नींद हर चीज़ से प्यारी हो जाती है तो उन्होंने अपने सर तकिये पर रखे और सो गए एक आदमी मुझ से दुआ करने लगा और मेरी आयात की तिलावत करने लगा और (तीसरा) वह आदमी है जो लश्कर में हो दुश्मन से मुठभेड़ की (तो उसके साथी) शिकस्त खा गए लेकिन यह अपना सीना तान कर आगे बढ़ा यहाँ तक कि शहीद हो गया या फतह मिल गई और वह तीन आदमी जिन से अल्लाह नफ़रत करता है वह बूढ़ा जानी, तकब्बुर करने वाला फ़क़ीर और ज़ुल्म करने वाला मालदार है।''

ज़ईफ़: निसाई: 1615. इब्ने अबी शैबा:5/289. मुसनद अहमद:5/153

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं, हमें महमूद बिन गैलान ने बवास्ता नज़र बिन शुमैल, शोबा से ऐसी ही हदीस बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस सहीह है और शाबान ने भी मंसूर से इसी तरह रिवायत की है। यह अबू बक्र बिन अयाश की रिवायत से ज़्यादा सहीह है।

26 - بَابٌ حديث: يُوشِكُ الفُرَاتُ يَحْسِرُ عَنْ كَنْزٍ مِنْ ذَهَبٍ.

26 - क़रीब है कि फ़ुरात सोने का ख़ज़ाना ज़ाहिर कर दे।

2569 - حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُقْبَةُ بْنُ خَالِدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ، عَنْ خُبَيْبِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ جَدِّهِ

2569 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "क़रीब है कि फ़ुरात सोने का ख़ज़ाना ज़ाहिर

حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يُوشِكُ الفُرَاتُ يَحْسِرُ عَنْ كَنْزٍ مِنْ ذَهَبٍ، فَمَنْ حَضَرَهُ فَلاَ يَأْخُذْ مِنْهُ شَيْئًا.

कर दे पस जो वहाँ मौजूद हो वह उस से कुछ भी न ले।''

बुख़ारी:7119. मुस्लिम:2894. अबू दाऊद:4313.इब्ने माजह:4046.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2570 - حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُقْبَةُ بْنُ خَالِدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِثْلَهُ، إِلاَّ أَنَّهُ قَالَ: يَحْسِرُ عَنْ جَبَلٍ مِنْ ذَهَبٍ.

2570 - आरज (ﷺ) भी सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) के ज़रिए नबी (ﷺ) से इस जैसी ही हदीस बयान करते हैं लेकिन उन्होंने यह कहा है कि वह सोने का पहाड़ ज़ाहिर कर दे।

अबू दाऊद:4314. बुख़ारी:9/73. मुस्लिम:175

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

27 بَابُ مَا جَاءَ فِي صِفَةِ أَنْهَارِ الجَنَّةِ

27 - जन्नत की नहरें कैसी होंगी?

2571 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا الجُرَيْرِيُّ، عَنْ حَكِيمِ بْنِ مُعَاوِيَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: إِنَّ فِي الجَنَّةِ بَحْرَ الْمَاءِ وَبَحْرَ العَسَلِ وَبَحْرَ اللَّبَنِ وَبَحْرَ الخَمْرِ، ثُمَّ تُشَقَّقُ الأَنْهَارُ بَعْدُ.

2571 - हकीम बिन मुआविया अपने बाप से रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जन्नत में एक पानी का दरिया, एक शहद का दरिया, एक दूध का दरिया और एक शराब का दरिया है फिर बाद में आगे नहरें निकलती हैं।''

सहीह: मुसनद अहमद: 5/5. दारमी 2839. इब्ने हिब्बान:3409.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। हकीम बिन मुआविया, बहज़ बिन हकीम के वालिद हैं और जरीर की कुनियत अबू मसऊद और नाम सईद बिन इयास है।

2572 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ بُرَيْدِ بْنِ أَبِي مَرْيَمَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ

2572 - सय्यदना अनस बिन मालिक (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स अल्लाह तआला से तीन मर्तबा जन्नत का सवाल करे तो जन्नत कहती

اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ سَأَلَ اللَّهَ الْجَنَّةَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ قَالَتِ الْجَنَّةُ: اللَّهُمَّ أَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ، وَمَنْ اسْتَجَارَ مِنَ النَّارِ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ قَالَتِ النَّارُ: اللَّهُمَّ أَجِرْهُ مِنَ النَّارِ.

है: ऐ अल्लाह! इसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा और जो शख़्स तीन दफ़ा जहन्नम से पनाह मांगे तो जहन्नम कहती है: ऐ अल्लाह! इसे जहन्नम से पनाह दे दे।''

सहीह: इब्ने माजह:4340. निसाई:5521.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यूनुस बिन अबू इस्हाक़ ने भी अबू इस्हाक़ से इस हदीस को बवास्ता बुरैद बिन अबी मरियम, सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) के ज़रिए नबी (ﷺ) से ऐसे ही रिवायत किया है।

इसी तरह अबू इस्हाक़ से बवास्ता बुरैद बिन अबी मरियम, सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) से मौक़ूफ़न इनका कौल भी मर्वी है।

ख़ुलासा

- जन्नत के दरख़्तों के साये बहुत लम्बे हैं। इतने लम्बे कि अगर घोड़ा सौ साल तक भी दौड़ता रहे तो उसका साया ख़त्म नहीं होगा।
- जन्नत के महल्लात मोतियों को तराश कर बनाए गए हैं जो इन्तिहाई शफ्फ़ाफ़ हैं।
- जन्नत में हर दो दरजों का दर्मियानी फासला ज़मीन से आसमान तक का होगा।
- जन्नती आदमी की दुनिया वाली औरतों से दो बीवियां होंगी जो इस क़दर खूबसूरत होंगी कि सत्तर लिबासों से भी उसका जिस्म नज़र आएगा।
- हर आने वाले दिन में जन्नतियों का हुस्न बढ़ता जाएगा।
- जन्नत वाले कभी बूढ़े नहीं होंगे और न उनके कपड़े मैले होंगे न ही उनका हुस्न खत्म होगा।
- जन्नत में चार चीजों की नहरें हैं, दूध, शहद, शराब और पानी की।
- जन्नतियों की कुल 120 सफें होंगी जिन में 80 सफें उम्मते मोहम्मदिया की होंगी।
- अहले जन्नत अपने रब का दीदार भी करेंगे जो सब से बड़ी नेअ्मत होगी।
- अहले जन्नत बाला खानों से एक दूसरे को देखेंगे।
- जन्नत को मुश्किल कामों से घेरा गया है।
- हुरैन वह पाकीज़ा बीवियां हैं जो एक मोमिन को जन्नत में दी जायेंगी।
- जन्नत वाले जन्नत में हमेशा रहेंगे।

मज़मून नम्बर-37.

أَبْوَابُ صِفَةِ جَهَنَّمَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

रसूलुल्लाह (ﷺ) से मर्वी जहन्नम की कैफ़ियत।

तआरुफ़

33 अहादीस और 13 अबवाब पर मुश्तमिल ये इन मजामीन पर मुश्तमिल है:

- जहन्नम कैसी है?
- जहन्नम में खाना और मशरूब कैसा होगा?
- जहन्नम में कौन ज़्यादा होंगे?

1 بَابُ مَا جَاءَ فِي صِفَةِ النَّارِ

2573 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، عَنِ العَلاَءِ بْنِ خَالِدٍ الكَاهِلِيِّ، عَنْ شَقِيقِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: يُؤْتَى بِجَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لَهَا سَبْعُونَ أَلْفَ زِمَامٍ، مَعَ كُلِّ زِمَامٍ سَبْعُونَ أَلْفَ مَلَكٍ يَجُرُّونَهَا

1 - जहन्नम कैसी है?

2573 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "उस (क़यामत के) दिन जहन्नम को लाया जाएगा उसकी सत्तर हज़ार लगामें होंगी, हर लगाम के साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते होंगे जो उसे खींच रहे होंगे।''

सहीह: मुस्लिम:2842. हाकिम:4/ 595.

वज़ाहत: अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान कहते हैं, सौरी (رحمه الله) ने इसे मर्फू रिवायत नहीं किया।

अबू ईसा तिर्मिज़ी कहते हैं, हमें अब्द बिन हुमैद ने अब्दुल मलिक बिन उमर और अबू आमिर अक्दी से बवास्ता सुफ़ियान, अला बिन ख़ालिद इसी सनद के साथ ऐसे ही रिवायत की है लेकिन इसे मर्फू ज़िक्र नहीं किया।

2574 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "क़यामत के दिन जहन्नम से एक गर्दन नुमूदार होगी जिसकी दहकती हुई दो आँखें, सुनते हुए दो कान और बोलती हुई ज़बान होगी, वह कहेगी : मुझे तीन आदमियों के सज़ा देने पर मुक़र्रर किया गया है: हर हद से बढ़ने वाला ज़ालिम, हर अल्लाह के साथ किसी और को पुकारने वाले और मुसव्विरीन (तस्वीर बनाने वाले) पर।''

सहीह: मुसनद अहमद:2/336.

2574 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُعَاوِيَةَ الجُمَحِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ العَزِيزِ بْنُ مُسْلِمٍ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: تَخْرُجُ عُنُقٌ مِنَ النَّارِ يَوْمَ القِيَامَةِ لَهَا عَيْنَانِ تُبْصِرَانِ وَأُذُنَانِ تَسْمَعَانِ وَلِسَانٌ يَنْطِقُ، يَقُولُ: إِنِّي وُكِّلْتُ بِثَلَاثَةٍ، بِكُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ، وَبِكُلِّ مَنْ دَعَا مَعَ اللهِ إِلَهًا آخَرَ، وَبِالمُصَوِّرِينَ.

वज़ाहत: इस बारे में अबू सईद (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है और बअ़ज़ ने आमश से बवास्ता अतिय्या, अबू सईद (ﷺ) से नबी (ﷺ) की ऐसी ही हदीस बयान की है। नीज़ अशअस बिन सवार ने बवास्ता अतिय्या, अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) से नबी (ﷺ) की ऐसी ही हदीस रिवायत की है।

2 - जहन्नम की गहराई का बयान।

2 بَابُ مَا جَاءَ فِي صِفَةِ قَعْرِ جَهَنَّمَ

2575 - हसन बसरी (ﷺ) से रिवायत है कि सय्यदना उत्बा बिन गज़्वान (ﷺ) ने हमारे इस बसरा के मिम्बर पर बयान किया कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया "बहुत बड़ी चट्टान को जहन्नम के क़रीब से गिराया जाएगा, वह सत्तर साल तक गिरती रहेगी फिर भी अपनी ठहरने की जगह तक नहीं पहुंचेगी।'' और (उत्बा ﷺ) ने कहा: उमर (ﷺ) फ़रमाया करते थे: जहन्नम को कसरत से (ज़्यादा से ज़्यादा) याद किया करो, उसकी गर्मी बहुत सख़्त है, उसका गढ़ा बहुत दूर और उसके हथौड़े[1] लोहे के हैं।

2575 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ عَلِيٍّ الجُعْفِيُّ، عَنْ فُضَيْلِ بْنِ عِيَاضٍ، عَنْ هِشَامِ بْنِ حَسَّانَ، عَنِ الحَسَنِ، قَالَ: قَالَ عُتْبَةُ بْنُ غَزْوَانَ، عَلَى مِنْبَرِنَا هَذَا مِنْبَرِ البَصْرَةِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: إِنَّ الصَّخْرَةَ العَظِيمَةَ لَتُلْقَى مِنْ شَفِيرِ جَهَنَّمَ فَتَهْوِي فِيهَا سَبْعِينَ عَامًا وَمَا تُفْضِي إِلَى قَرَارِهَا قَالَ: وَكَانَ عُمَرُ، يَقُولُ: أَكْثِرُوا ذِكْرَ النَّارِ فَإِنَّ حَرَّهَا شَدِيدٌ، وَإِنَّ قَعْرَهَا

بَعِيدٌ، وَإِنَّ مَقَامِعَهَا حَدِيدٌ.

सहीह: उमर (رضی اللہ عنہ) के किस्सा के अलावा बाकी मुस्लिम में है।2967.

तौज़ीह: مَقَامِعَ: مقمعة की जमा है मुड़े हुए किनारे वाला लोहा या लकड़ी जिस से हाथी को काबू करने के लिए उसके सिर पर मारा जाता है। कुरआन हकीम में भी है ولهم مقامع من حديد : (अल-मोजमुल वसीत:917)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं, हसन (رحمہ اللہ) का उत्बा बिन गज्वान (رضی اللہ عنہ) से सिमा (सुनना) करना हम नहीं जानते, उत्बा बिन गज्वान, उमर (رضی اللہ عنہ) के दौरे ख़िलाफ़त में बसरा आए थे और हसन बसरी जब पैदा हुए तो उमर की ख़िलाफ़त दो साल रह गई थी।

2576 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ مُوسَى، عَنِ ابْنِ لَهِيعَةَ، عَنْ دَرَّاجٍ، عَنْ أَبِي الهَيْثَمِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: الصَّعُودُ جَبَلٌ مِنْ نَارٍ يَتَصَعَّدُ فِيهِ الكَافِرُ سَبْعِينَ خَرِيفًا وَيَهْوِي فِيهِ كَذَلِكَ مِنْهُ أَبَدًا.

2576 - सय्यदना अबू सईद (رضی اللہ عنہ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "सऊद आग का एक पहाड़ है जिस पर काफ़िर को सत्तर साल में चढ़ाया जाएगा और उतनी ही देर में नीचे गिरेगा।"

ज़ईफ़: मुसनद अहमद:3/75. हाकिम:2/507. अबू याला 1383.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। हम इसे इब्ने लहीया के तरीक़ से ही मर्फ़ू जानते हैं।

3 - بَابُ مَا جَاءَ فِي عِظَمِ أَهْلِ النَّارِ

3 - जहन्नमियों के अज्साम (शरीर) बड़े होंगे।

2577 - حَدَّثَنَا عَبَّاسٌ الدُّورِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، قَالَ: أَخْبَرَنَا شَيْبَانُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: إِنَّ غِلَظَ جِلْدِ الكَافِرِ اثْنَتَانِ وَأَرْبَعُونَ ذِرَاعًا، وَإِنَّ ضِرْسَهُ مِثْلُ أُحُدٍ، وَإِنَّ مَجْلِسَهُ مِنْ جَهَنَّمَ كَمَا بَيْنَ مَكَّةَ وَالمَدِينَةِ.

2577 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضی اللہ عنہ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "काफ़िर की जिल्द की मोटाई बयालीस ज़िरा[1] होगी, उसकी दाढ़ उहुद की तरह और जहन्नम में उसके बैठने की जगह इतनी होगी जैसे मक्का और मदीना के दर्मियान फ़ासला है।"

सहीह: इब्ने हिब्बान:7486. हाकिम:4/595.

तौज़ीह: (1) हमारे पैमाने के मुताबिक़ एक ज़िरा 64 सेंटी मीटर का होता है। इस तरह बयालीस ज़िरा 2688 सेंटी मीटर या तक़रीबन 90 फिट बनते हैं। अल्लाह तआला जहन्नम से बचाए।

वज़ाहत: आमश के तरीक़ से यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है।

2578 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمَّارٍ قَالَ: حَدَّثَنِي جَدِّي مُحَمَّدُ بْنُ عَمَّارٍ، وَصَالِحٌ، مَوْلَى التَّوْأَمَةِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ضِرْسُ الكَافِرِ يَوْمَ القِيَامَةِ مِثْلُ أُحُدٍ، وَفَخِذُهُ مِثْلُ البَيْضَاءِ، وَمَقْعَدُهُ مِنَ النَّارِ مَسِيرَةُ ثَلَاثٍ مِثْلُ الرَّبَذَةِ.

2578 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "कयामत के दिन काफ़िर की दाढ़ उहुद की तरह, उसकी रान बैज़ा की तरह और जहन्नम में उसके बैठने की जगह रब्ज़ा की तरह तीन दिन की मसाफ़त होगी।''

हसन

वज़ाहत: आप के फ़रमान الربذة : से मुराद यह है कि जितना फ़ासला मदीना से रब्ज़ा का है और बैज़ा उहुद की तरह एक पहाड़ है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है।

2579 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُصْعَبُ بْنُ الْمِقْدَامِ، عَنْ فُضَيْلِ بْنِ غَزْوَانَ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، رَفَعَهُ قَالَ: ضِرْسُ الكَافِرِ مِثْلُ أُحُدٍ.

2579 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) मर्फू हदीस बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "काफ़िर की दाढ़ उहुद की तरह होगी।''

मुस्लिम:2851. इब्ने हिब्बान:7487.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन है। और अबू हाजिम अशजई हैं। उनका नाम सलमान बिन मौला अज्ज़ा अश्जईया है।

2580 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، عَنِ الفَضْلِ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ أَبِي الْمُخَارِقِ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ الكَافِرَ لَيُسْحَبُ لِسَانُهُ الفَرْسَخَ وَالفَرْسَخَيْنِ يَتَوَطَّؤُهُ النَّاسُ.

2580 - सय्यदना इब्ने उमर (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "बेशक काफ़िर अपनी ज़बान ज़मीन पर एक या दो फ़र्सख तक खींचेगा, लोग उसे रौन्देंगे।''

ज़ईफ़

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। हम इसे इसी सनद से ही जानते हैं,

फ़ज़ल बिन यज़ीद कूफी से कई अइम्मा ने रिवायत की है। नीज़ अबू मुख़ारिक़ मारूफ़ नहीं है।

4 بَابُ مَا جَاءَ فِي صِفَةِ شَرَابِ أَهْلِ النَّارِ

4 - जहन्नमियों का मशरूब कैसा होगा?

2581 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا رِشْدِينُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ الحَارِثِ، عَنْ دَرَّاجٍ، عَنْ أَبِي الهَيْثَمِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي قَوْلِهِ: {كَالمُهْلِ} قَالَ: كَعَكَرِ الزَّيْتِ، فَإِذَا قَرَّبَهُ إِلَى وَجْهِهِ سَقَطَتْ فَرْوَةُ وَجْهِهِ فِيهِ.

2581 - सय्यदना अबू सईद (ﷺ) नबी (ﷺ) से अल्लाह के फ़रमान: {كَالمُهْلِ} (अल-कहफ़: 29) के बारे में रिवायत करते हैं कि आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "वह तेल की तलछट की तरह होगी जब वह उसे अपने चेहरे के क़रीब करेगा तो उसके चेहरे की खाल(1) उसमें जा गिरेगी।''

ज़ईफ़:मुसनद अहमद 3/70 अबू याला 1375 हाकिम:2/501

तौज़ीह: (1) فَرْوَة : बालों समेत सर की खाल को कहा जाता है लेकिन यहाँ चेहरे के साथ बतौर इस्तिआरा आया है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, इस हदीस को हम रिश्दीन बिन साद के तरीक़ से ही जानते हैं और रिश्दीन के हाफ़िज़े की वजह से उस पर जरह की गई है।

2582 - حَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ يَزِيدَ، عَنْ أَبِي السَّمْحِ، عَنِ ابْنِ حُجَيْرَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: إِنَّ الحَمِيمَ لَيُصَبُّ عَلَى رُءُوسِهِمْ فَيَنْفُذُ الحَمِيمُ حَتَّى يَخْلُصَ إِلَى جَوْفِهِ فَيَسْلِتُ مَا فِي جَوْفِهِ، حَتَّى يَمْرُقَ مِنْ قَدَمَيْهِ وَهُوَ الصَّهْرُ ثُمَّ يُعَادُ كَمَا كَانَ.

2582 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "गर्म खौलता हुआ पानी उन जहन्नमियों के सरों पर डाला जाएगा तो पानी सरायत करके उनके पेट तक जा पहुंचेगा फिर जो कुछ उसके पेट में होगा उसे काट देगा यहाँ तक कि वह क़दमों से बाहर निकल जाएगा। यही सह्र[1] (पिघलाना) है। फिर वह पहले की तरह ठीक हो जाएगा।''

ज़ईफ़: मुसनद अहमद: 2/374. हाकिम; 2/387.

तौज़ीह: الصَّهْر: इसका ज़िक्र क़ुआने करीम में है यानी उस पानी से उनके जिस्मों को पिघला दिया जाएगा, सह्र का मानी पिघलाना होता है।

वज़ाहत: सईद बिन यज़ीद की कुनियत अबू शुजा थी। यह मिस्र के रहने वाले थे इन से लैस बिन साद ने रिवायत की है और इब्ने हुजैरा, अब्दुर्रहमान बिन हुजैरा मिस्री हैं।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है।

2583 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا صَفْوَانُ بْنُ عَمْرٍو، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ بُسْرٍ، عَنْ أَبِي أُمَامَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي قَوْلِهِ: {وَيُسْقَى مِنْ مَاءٍ صَدِيدٍ يَتَجَرَّعُهُ} قَالَ: يُقَرَّبُ إِلَى فِيهِ فَيَكْرَهُهُ، فَإِذَا أُدْنِيَ مِنْهُ شَوَى وَجْهَهُ وَوَقَعَتْ فَرْوَةُ رَأْسِهِ، فَإِذَا شَرِبَهُ قَطَّعَ أَمْعَاءَهُ حَتَّى تَخْرُجَ مِنْ دُبُرِهِ، يَقُولُ اللَّهُ: {وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ} وَيَقُولُ: {وَإِنْ يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الوُجُوهَ بِئْسَ الشَّرَابُ}.

2583 - सय्यदना अबू उमामा (ﷺ) नबी (ﷺ) से अल्लाह का फ़रमान: "उसे पीप का पानी पिलाया जाएगा, वह उसे बड़ी मुश्किल से घूँट- घूँट पिएगा।'' (इब्राहीम: 16- 17) के बारे में रिवायत करते हैं कि आप ने फ़रमाया, "वह उसके चेहरे के क़रीब किया जाएगा तो वह उस से कराहत करेगा फिर जब उसे उसके करीब किया जाएगा तो वह उसके चेहरे को भून देगा और उसके सर की जिल्द गिर जाएगी। फिर जब वह उसे पिएगा तो वह पानी उसकी अंतड़ियां काट देगा जो उसकी दुबुर से निकल जायेंगी अल्लाह तआला फ़र्माता: "उन्हें गर्म खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा जो उनकी आंतों को टुकड़े- टुकड़े कर देगा।'' (मुहम्मद: 15) नीज़ फ़रमाया, "अगर वह फ़रियाद रसी चाहेंगे तो उनको फ़रियाद रसी उस पानी से की जायेगी जो तेल की तलछट जैसा होगा जो चेहरा भून देगा, बड़ा ही बुरा पानी है और बड़ी ही बुरी आरामगाह।'' (अल- कहफ़: 29)

ज़ईफ़: मुसनद अहमद: 5/265. अल-मोजमुल कबीर:7460

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। मुहम्मद बिन इस्माईल ऐसे ही अब्दुल्लाह बिन बुस्र से रिवायत करते हुए कहते हैं, और उबैदुल्लाह बिन बुस्र की पहचान सिर्फ़ इसी हदीस में होती है।

नीज़ सफवान बिन अम्र ने नबी (ﷺ) के सहाबी अब्दुल्लाह बिन बुस्र (ﷺ) से और अहादीस रिवायत की हैं।

अब्दुल्लाह बिन बुस्र (ﷺ) के एक भाई भी था जिन्होंने नबी (ﷺ) से सिमा (सुनना) किया था और उनकी बहन ने भी नबी (ﷺ) से सिमा (सुनना) किया था। और उबैदुल्लाह बिन बुस्र जिन से

सफ़वान बिन अम्र ने अबी उमामा की हदीस रिवायत की है शायद यह अब्दुल्लाह बिन बुस्र (ﷺ) के भाई ही हों।

2584 - حَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا رِشْدِينُ بْنُ سَعْدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ الحَارِثِ، عَنْ دَرَّاجٍ، عَنْ أَبِي الهَيْثَمِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: {كَالمُهْلِ} كَعَكَرِ الزَّيْتِ، فَإِذَا قُرِّبَ إِلَيْهِ سَقَطَتْ فَرْوَةُ وَجْهِهِ فِيهِ. وَبِهَذَا الإِسْنَادِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لِسُرَادِقِ النَّارِ أَرْبَعَةُ جُدُرٍ كِثَفُ كُلِّ جِدَارٍ مِثْلُ مَسِيرَةِ أَرْبَعِينَ سَنَةً. وَبِهَذَا الإِسْنَادِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَوْ أَنَّ دَلْوًا مِنْ غَسَّاقٍ يُهْرَاقُ فِي الدُّنْيَا لأَنْتَنَ أَهْلَ الدُّنْيَا.

2584 - सय्यदना इब्ने उमर (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने {كَالمُهْلِ} के बारे में फ़रमाया, ''यह तेल की तलछट की तरह होगा, फिर जब उसके क़रीब किया जाएगा तो उसके चेहरे की जिल्द इसमें गिर जायेगी।'' इसी सनद के साथ नबी (ﷺ) से मर्वी है आप ने फ़रमाया, "जहन्नम के अहाता की चार दीवारें हैं हर दीवार की मोटाई चालीस साल की जितनी मसाफ़त होगी।'' नीज़ इसी सनद के साथ नबी (ﷺ) से मर्वी है कि गस्साक़[1] का एक डोल अगर दुनिया में बहा दिया जाए तो दुनिया वाले (गल सड़ कर) बदबूदार हो जाएँ।

ज़ईफ़: 2581 के तहत देखें।

तौज़ीह: غَسَّاق: जहन्नमियों के जिस्मों से निकलने वाली पीप। (तफ़सीर अहसनुल बयान, तफ़सीर सूर-ए-नबा आयत: 25)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, इस हदीस को हम रिश्दीन बिन साद की सनद से ही जानते हैं और रिश्दीन बिन साद के बारे में क़लाम है। उसके हाफ़िज़े की वजह से उस पर जरह की गई है। आप (ﷺ) के फ़रमान كِثَفُ كُلِّ جِدَارٍ से मुराद उसकी मोटाई है।

2585 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَرَأَ هَذِهِ الآيَةَ: {اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ

2585 - सय्यदना इब्ने अब्बास (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने यह आयत पढ़ी: "तुम अल्लाह से डरो जैसे उस से डरने का हक़ है और तुम इस्लाम की हालत में ही मरना।'' (अल-बकरा: 132) रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अगर ज़क़्क़ूम का एक

وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ] قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَوْ أَنَّ قَطْرَةً مِنَ الزَّقُّومِ قُطِرَتْ فِي دَارِ الدُّنْيَا لأَفْسَدَتْ عَلَى أَهْلِ الدُّنْيَا مَعَايِشَهُمْ، فَكَيْفَ بِمَنْ يَكُونُ طَعَامَهُ؟.

क़तरा दुनिया के घर में टपका दिया जाए तो यह दुनिया वालों पर उसकी मईशत खराब कर दे तो जिसका यह खाना है उसका क्या हाल होगा।''

ज़ईफ़: इब्ने माजह: 4325. तयालिसी: 2643. मुसनद अहमद: 300.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

5 بَابُ مَا جَاءَ فِي صِفَةِ طَعَامِ أَهْلِ النَّارِ

5 – जहन्नमियों का खाना कैसा होगा?

2586 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَاصِمُ بْنُ يُوسُفَ، قَالَ: حَدَّثَنَا قُطْبَةُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ شِمْرِ بْنِ عَطِيَّةَ، عَنْ شَهْرِ بْنِ حَوْشَبٍ، عَنْ أُمِّ الدَّرْدَاءِ، عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يُلْقَى عَلَى أَهْلِ النَّارِ الجُوعُ فَيَعْدِلُ مَا هُمْ فِيهِ مِنَ العَذَابِ فَيَسْتَغِيثُونَ فَيُغَاثُونَ بِطَعَامٍ مِنْ ضَرِيعٍ لاَ يُسْمِنُ وَلاَ يُغْنِي مِنْ جُوعٍ، فَيَسْتَغِيثُونَ بِالطَّعَامِ فَيُغَاثُونَ بِطَعَامٍ ذِي غُصَّةٍ، فَيَذْكُرُونَ أَنَّهُمْ كَانُوا يُجِيزُونَ الغَصَصَ فِي الدُّنْيَا بِالشَّرَابِ فَيَسْتَغِيثُونَ بِالشَّرَابِ فَيُرْفَعُ إِلَيْهِمُ الحَمِيمُ بِكَلاَلِيبِ الحَدِيدِ، فَإِذَا دَنَتْ مِنْ وُجُوهِهِمْ شَوَتْ وُجُوهَهُمْ، فَإِذَا دَخَلَتْ بُطُونَهُمْ قَطَّعَتْ مَا

2586 - सय्यदना अबू दर्दा(ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जहन्नमियों पर भूक डाली जाएगी तो वह उस अज़ाब के बराबर हो जायेगी जिस में वह मुब्तला होंगे फिर वह खाने की फ़रियाद करेंगे तो उन्हें ज़री[1] का खाना दिया जाएगा जो न मोटा करेगा और न ही भूक मिटाएगा, वह फिर खाने की फ़रियाद करेंगे तो उन्हें गले में अटकने वाला खाना दिया जाएगा। तो उन्हें याद आएगा कि दुनिया में वह अटकने वाली चीजों को पानी के साथ नीचे उतारा करते थे, फिर वह पानी की फ़रियाद करेंगे तो लोहे की कुण्डियों से उनकी तरफ़ खौलता पानी बढाया जाएगा जब वह उनके चेहरों के क़रीब होगा तो उनके चेहरों को भून देगा, फिर जब उनके पेटों में दाख़िल होगा तो उनके पेटों की हर चीज़ को काट देगा फिर वह कहेंगे: जहन्नम के दारोगों को बुलाओ तो वह कहेंगे: "क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल मोजिज़े लेकर नहीं आए थे? वह कहेंगे: क्यों नहीं। फिर तुम ही दुआ करो और काफ़िरों की दुआ महज़ बे

فِي بُطُونِهِمْ، فَيَقُولُونَ: ادْعُوا خَزَنَةَ جَهَنَّمَ، فَيَقُولُونَ: أَلَمْ {تَكُ تَأْتِيكُمْ رُسُلُكُمْ بِالبَيِّنَاتِ قَالُوا بَلَى قَالُوا فَادْعُوا وَمَا دُعَاءُ الكَافِرِينَ إِلاَّ فِي ضَلاَلٍ} قَالَ: فَيَقُولُونَ: ادْعُوا مَالِكًا، فَيَقُولُونَ: {يَا مَالِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ} قَالَ: فَيُجِيبُهُمْ {إِنَّكُمْ مَاكِثُونَ}، قَالَ الأَعْمَشُ: نُبِّئْتُ أَنَّ بَيْنَ دُعَائِهِمْ وَبَيْنَ إِجَابَةِ مَالِكٍ إِيَّاهُمْ أَلْفَ عَامٍ قَالَ، فَيَقُولُونَ: ادْعُوا رَبَّكُمْ فَلاَ أَحَدَ خَيْرٌ مِنْ رَبِّكُمْ، فَيَقُولُونَ: {رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ} قَالَ: فَيُجِيبُهُمْ {اخْسَئُوا فِيهَا وَلاَ تُكَلِّمُونِ} قَالَ: فَعِنْدَ ذَلِكَ يَئِسُوا مِنْ كُلِّ خَيْرٍ، وَعِنْدَ ذَلِكَ يَأْخُذُونَ فِي الزَّفِيرِ وَالحَسْرَةِ وَالوَيْلِ

असर और बे राह है।'' (अल- गाफिर: 50) नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर वह कहेंगे: मालिक (दारोग- ए- जहन्नम) को बुलाओ फिर कहेंगे: "ऐ मालिक तुम्हारा रब हमारा फैसला कर दे आप ने फ़रमाया, "वह उन्हें जवाब देगा तुम इसी के अन्दर रहने वाले हो। (अज़्ज़ुख़ुफ़: 77) आमश कहते हैं, मुझे बताया गया है कि उन के बुलाने और मालिक के उन्हें जवाब देने के दर्मियान एक हज़ार साल का वक्फ़ा होगा, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर वह कहेंगे अपने रब को पुकारो, तुम्हारे रब से बेहतर कोई नहीं है तो वह कहेंगे: "ऐ परवरदिगार हमारी बदबख़्ती हम पर ग़ालिब आ गई वाक़ेई हम गुमराह थे ऐ हमारे परवरदिगार! हमें यहाँ से निकाल ले अब भी हम ऐसा ही करें तो बेशक हम ज़ालिम हैं।'' (अल- मोमिनून: 106- 107) आप ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला उनको जवाब देगा: "फटकारे हुए यहीं पड़े रहो और मुझसे बात न करो।'' (अल- मोमिनून: 108) आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "उस वक़्त यह भलाई से नाउम्मीद हो जायेंगे और उसी वक़्त वह गधे की तरह चीखने और हसरतो हलाकत को पुकारने लगेंगे।''

ज़ईफ़: इब्ने अबी शैबा: 13/ 100.

तौज़ीह: ضَرِيع : यह एक काँटेदार दरख़्त होता है जिसे ख़ुश्क होने पर जानवर भी खाना पसंद नहीं करते। (तफ़सीर अहसनुल बयान :सूरह गाशिया: 6)

كلاليب: كلاب की जमा है दार तीन नोक वाली लोहे की सलाख़ जो किसी चीज़ को लटकाने या फंसी हुई चीज़ को निकालने के लिए इस्तेमाल की जाती है।अरब लोग उस पर गोश्त वगैरह लटकाया करते थे। लेकिन यहाँ ऐसी चीज़ के लिए बतौरे इस्तिआरा इस्तेमाल हुआ है जिस से अहले जहन्नम को पानी दिया जाएगा।

वज़ाहत: अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान कहते हैं, लोग इस हदीस को मर्फू बयान नहीं करते।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷀ) फ़रमाते हैं, यह हदीस आमश से बवास्ता शमर बिन अतिय्या, शहर बिन हौशब से उम्मे दर्दा के ज़रिए अबू दर्दा (ﷺ) से इनका कौल मर्वी है और मर्फू नहीं है। नीज़ कुत्बा बिन अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिसीन के नज़दीक सिक़ह् हैं।

2587 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, अल्लाह के फ़रमान, ''और वह वहाँ बदशक्ल बने हुए होंगे।'' (अल- मोमिनून: 104) के बारे में फ़रमाया, "आग उसे भूनेगी तो उसका ऊपर वाला होंट ऊपर को बढ़ जाएगा, यहाँ तक कि वह उसके सर के दर्मियान में पहुँच जाएगा और नीचे वाला होंट लटक कर उसकी नाफ़ तक आ जायेगा।

ज़ईफ़: मुसनद अहमद:3/88. अबू याला1367. हाकिम:2/395.

2587 - حَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ يَزِيدَ أَبِي شُجَاعٍ، عَنْ أَبِي السَّمْحِ، عَنْ أَبِي الهَيْثَمِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: {وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ} قَالَ: تَشْوِيهِ النَّارُ فَتَقَلَّصُ شَفَتُهُ العُلْيَا حَتَّى تَبْلُغَ وَسَطَ رَأْسِهِ وَتَسْتَرْخِي شَفَتُهُ السُّفْلَى حَتَّى تَضْرِبَ سُرَّتَهُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷀ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।और अबू हैसम का नाम सुलैमान बिन अम्र बिन अब्द अल- अतवारी है यह यतीम थे और अबू सईद (ﷺ) की परवरिश में थे।

6 - जहन्नम के गढ़े की गहराई।

6 بَابٌ فِي بعد قعر جهنم.

2588 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अगर इतना सा सीसा, आप ने सर की खोपड़ी[1] की तरफ़ इशारा किया, आसमान से ज़मीन की तरफ़ छोड़ा जाए और यह पांच सौ साल की मसाफ़त है तो यह रात से पहले ज़मीन में आ जाए और अगर उसे सिलसिला[2] की चोटी से छोड़ा जाये तो यह

2588 - حَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ يَزِيدَ، عَنْ أَبِي السَّمْحِ، عَنْ عِيسَى بْنِ هِلَالٍ الصَّدَفِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَوْ أَنَّ رَصَاصَةً مِثْلَ هَذِهِ وَأَشَارَ إِلَى مِثْلِ الجُمْجُمَةِ، أُرْسِلَتْ مِنَ السَّمَاءِ

إِلَى الأَرْضِ، وَهِيَ مَسِيرَةُ خَمْسِمِائَةِ سَنَةٍ لَبَلَغَتِ الأَرْضَ قَبْلَ اللَّيْلِ، وَلَوْ أَنَّهَا أُرْسِلَتْ مِنْ رَأْسِ السِّلْسِلَةِ لَسَارَتْ أَرْبَعِينَ خَرِيفًا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ قَبْلَ أَنْ تَبْلُغَ أَصْلَهَا أَوْ قَعْرَهَا.

चालीस साल तक दिन रात उसके गढ़े या तह में पहुँचने से पहले चलता रहे।''

ज़ईफ़: मुसनद अहमद: 2/197. हाकिम: 2/438.

तौज़ीह: (1) الجُمْجُمَة : पूरे सर और सर की खोपड़ी को भी الجُمْجُمَة कहा जाता है। इस की जमा جمجم और جماجم आती है यानी सीसा जो एक धातु है उसका सर जितना गोला मुराद है।

(2) السِّلْسِلَة: लुग्वी माना ज़ंजीर है। ज़ंजीर का ज़िक्र कुर्आन में है। (ثم في سلسلة زرعها سبعون ذراعا) या इस से मुराद जहन्नम का गढ़ा है। अल्लाह बेहतर जानता है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, इस हदीस की सनद हसन सहीह है और सईद बिन यज़ीद मिस्र के रहने वाले थे। इनसे लैस बिन साद और दीगर अइम्म-ए-किराम ने रिवायत की है।

7 بَابُ مَا جَاءَ أَنَّ نَارَكُمْ هَذِهِ جُزْءٌ مِنْ سَبْعِينَ جُزْءًا مِنْ نَارِ جَهَنَّمَ

7 - तुम्हारी यह दुनिया की आग जहन्नम की आग का सत्तरवां हिस्सा है।

2589 - حَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: نَارُكُمْ هَذِهِ الَّتِي يُوقِدُ بَنُو آدَمَ جُزْءٌ وَاحِدٌ مِنْ سَبْعِينَ جُزْءًا مِنْ حَرِّ جَهَنَّمَ، قَالُوا: وَاللَّهِ إِنْ كَانَتْ لَكَافِيَةً يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: فَإِنَّهَا فُضِّلَتْ بِتِسْعَةٍ وَسِتِّينَ جُزْءًا كُلُّهُنَّ مِثْلُ حَرِّهَا.

2589 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम्हारी यह आग जिसे बनू आदम जलाते हैं यह जहन्नम की गर्मी का सत्तरवां हिस्सा है।'' सहाबा ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! अल्लाह की क़सम! (जलाने के लिए तो) यही आग काफी है। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "यह उन्हत्तर(69) हिस्सों के साथ बर्तरी ले गई है हर हिस्सा उसकी गर्मी की तरह है।''

मुस्लिम: 8/149. बुख़ारी: 4/147. मोत्ता मालिक: 2098.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है और हम्माम बिन मुनब्बा, वहब बिन मुनब्बा के भाई हैं उन से वहब ने भी रिवायत की है।

2590 - حَدَّثَنَا العَبَّاسُ الدُّورِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، عَنْ فِرَاسٍ، عَنْ عَطِيَّةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: نَارُكُمْ هَذِهِ جُزْءٌ مِنْ سَبْعِينَ جُزْءًا مِنْ نَارِ جَهَنَّمَ لِكُلِّ جُزْءٍ مِنْهَا حَرُّهَا.

2590 - सय्यदना अबू सईद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम्हारी दुनिया की यह आग जहन्नम की आग का सत्तरवां हिस्सा है। हर हिस्से की इतनी ही तपिश और गर्मी है।''

सहीह पिछली हदीस देखें। 1334

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, सय्यदना अबू सईद (رضي الله عنه) की सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।

2591 - حَدَّثَنَا عَبَّاسٌ الدُّورِيُّ البَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي بُكَيْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شَرِيكٌ، عَنْ عَاصِمٍ هُوَ ابْنُ بَهْدَلَةَ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: أُوقِدَ عَلَى النَّارِ أَلْفَ سَنَةٍ حَتَّى احْمَرَّتْ، ثُمَّ أُوقِدَ عَلَيْهَا أَلْفَ سَنَةٍ حَتَّى ابْيَضَّتْ، ثُمَّ أُوقِدَ عَلَيْهَا أَلْفَ سَنَةٍ حَتَّى اسْوَدَّتْ فَهِيَ سَوْدَاءُ مُظْلِمَةٌ.

2591 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जहन्नम की आग को एक हज़ार साल भड़काया गया यहाँ तक कि वह सुर्ख़ हो गई, फिर उसे एक हज़ार साल दहकाया गया यहाँ तक कि वह सफ़ेद हो गई फिर उसे एक हजार साल तक दहकाया गया यहाँ तक कि वह सियाह हो गई पस यह सियाह और तारीक है।''

ज़ईफ़: इब्ने माजह:4320.

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं, हमें सुवैद बिन नस्र ने वह कहते हैं, हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने शरीक से उन्होंने आसिम से अबू सालेह या किसी और आदमी के वास्ते से अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से ऐसी ही हदीस बयान की है जिसे मर्फ़ू ज़िक्र नहीं किया गया है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस बारे में अबू हुरैरा (رضي الله عنه) की हदीस ज़्यादा सही है और मैं यह्या बिन अबी बुकैर के अलावा किसी को नहीं जानता जिस ने इसे शरीक से मर्फ़ू ज़िक्र किया हो।

9 بَابُ مَا جَاءَ أَنَّ لِلنَّارِ نَفَسَيْنِ، وَمَا ذُكِرَ مَنْ يَخْرُجُ مِنَ النَّارِ مِنْ أَهْلِ التَّوْحِيدِ

9 - जहन्नम दो सांस लेती है नीज़ मुवह्हिदीन इस से निकल आयेंगे।

2592 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُمَرَ بْنِ الوَلِيدِ الكِنْدِيُّ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمُفَضَّلُ بْنُ

2592 - . सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया,

صَالِحٍ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: اشْتَكَتِ النَّارُ إِلَى رَبِّهَا وَقَالَتْ: أَكَلَ بَعْضِي بَعْضًا، فَجَعَلَ لَهَا نَفَسَيْنِ، نَفَسًا فِي الشِّتَاءِ، وَنَفَسًا فِي الصَّيْفِ، فَأَمَّا نَفَسُهَا فِي الشِّتَاءِ فَزَمْهَرِيرٌ، وَأَمَّا نَفَسُهَا فِي الصَّيْفِ فَسَمُومٌ.

"जहन्नम ने अपने रब से शिकायत की, कहने लगी, मेरे बअ़ज़ (कुछ) हिस्सों ने बअ़ज़(कुछ) को खा लिया है तो अल्लाह ने उस के लिए दो सांस बना दिए एक सांस सर्दी में और और एक सांस गर्मी में, सर्दी में उसका सांस सर्दी का बाइस होता है और गर्मी में उसका सांस तपिश का बाइस होता है।''

बुख़ारी: 537. मुस्लिम:617. इब्ने माजह:4319.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और बवास्ता अबू हुरैरा (ﷺ) नबी (ﷺ) से कई तुरूक़ (सनदों) से मर्वी है। मुफ़ज़्ज़ल बिन सालेह मुहद्दिसीन के नज़दीक हाफ़िज़ नहीं है।

2593 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، وَهِشَامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يَخْرُجُ مِنَ النَّارِ، وَقَالَ شُعْبَةُ: أَخْرِجُوا مِنَ النَّارِ مَنْ قَالَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَكَانَ فِي قَلْبِهِ مِنَ الخَيْرِ مَا يَزِنُ شَعِيرَةً، أَخْرِجُوا مِنَ النَّارِ مَنْ قَالَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَكَانَ فِي قَلْبِهِ مِنَ الخَيْرِ مَا يَزِنُ بُرَّةً أَخْرِجُوا مِنَ النَّارِ مَنْ قَالَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَكَانَ فِي قَلْبِهِ مِنَ الخَيْرِ مَا يَزِنُ ذَرَّةً وقَالَ شُعْبَةُ: مَا يَزِنُ ذُرَةً مُخَفَّفَةً.

2593 - सय्यदना अनस (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "हिशाम ने (अपनी रिवायत में) यह कहा है कि जहन्नमी जहन्नम से निकल आयेंगे और शोबा ने ज़िक्र किया है की जहन्नम से निकाल लाओ जिस ने لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ कहा था और उस के दिल में जौ के दाने के बराबर भी भलाई है। (ऐ फरिश्तो! जहन्नम से उस शख़्स को भी निकाल लो जिस जिस ने لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ कहा है और उसके दिल में गंदुम के दाने के बराबर भी भलाई है, जहन्नम से उस शख़्स को निकाल लो जिसने لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ कहा है और उसके दिल में एक ज़र्रा के बराबर भी ईमान है।'' शोबा ने कहा है जो ज़ुरा[1] के बराबर है (रा की तख़्फ़ीफ़ के साथ)

बुख़ारी: 1/ 17. मुस्लिम: 1/ 123

तौज़ीह: ज़ाल के ऊपर ज़बर और पेश दोनों पढ़ी जा सकती हैं और रा को बग़ैर तश्दीद के साथ पढ़ा जाएगा तो उस से मुराद जवार होगी जो कि एक फ़सल का दाना होता है फारसी में उसे अर्जान कहा जाता है।

वज़ाहत: इस बारे में जाबिर, अबू सईद और इमरान बिन हुसैन (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2594 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला फ़रिश्तों से फ़रमाएगा: जहन्नम से हर उस शख़्स को निकाल लो जिस ने मुझे एक दफ़ा भी याद किया था या किसी भी जगह मुझ से डरा था।"

2594 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، عَنْ مُبَارَكِ بْنِ فَضَالَةَ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بَكْرِ بْنِ أَنَسٍ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ ، قَالَ: يَقُولُ اللَّهُ: أَخْرِجُوا مِنَ النَّارِ مَنْ ذَكَرَنِي يَوْمًا أَوْ خَافَنِي فِي مَقَامٍ

ज़ईफ़: ज़ुहद ले-इब्ने अहमद: 2164. हाकिम: 1/70.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है।

10 - जहन्नम से सबसे आख़िर में निकलने वाले आदमी का क़िस्सा

10 بَابٌ مِنْهُ قصة آخر أهل النار خروجها.

2595 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "बेशक मैं जहन्नम से सब से आखिर में निकलने वाले आदमी को खूब जानता हूँ यह वह आदमी है जो उस से घुटनों के बल निकलेगा तो कहेगा: ऐ मेरे परवरदिगार! लोग अपनी- अपनी जगह ले चुके हैं," आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "उस से कहा जाएगा: जन्नत की तरफ़ चलो, जन्नत में दाख़िल हो जाओ, आपने फ़रमाया, "फिर वह जन्नत में जाने के लिए चलेगा तो लोगों को देखेगा कि वह अपनी- अपनी जगह ले चुके हैं। वह वापस आकर कहेगा: ऐ मेरे परवरदिगार! लोगों ने अपनी जगहें ले ली हैं।" आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "उस से कहा जाएगा कि क्या तुम

2595 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَبِيدَةَ السَّلْمَانِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنِّي لأَعْرِفُ آخِرَ أَهْلِ النَّارِ خُرُوجًا رَجُلٌ يَخْرُجُ مِنْهَا زَحْفًا فَيَقُولُ: يَا رَبِّ قَدْ أَخَذَ النَّاسُ الْمَنَازِلَ قَالَ: فَيُقَالُ لَهُ: انْطَلِقْ فَادْخُلِ الجَنَّةَ، قَالَ: فَيَذْهَبُ لِيَدْخُلَ فَيَجِدُ النَّاسَ قَدْ أَخَذُوا الْمَنَازِلَ، فَيَرْجِعُ فَيَقُولُ: يَا رَبِّ قَدْ أَخَذَ النَّاسُ الْمَنَازِلَ قَالَ: فَيُقَالُ لَهُ: أَتَذْكُرُ الزَّمَانَ الَّذِي كُنْتَ فِيهِ؟

فَيَقُولُ: نَعَمْ، فَيُقَالُ لَهُ: تَمَنَّ، قَالَ: فَيَتَمَنَّى، فَيُقَالُ لَهُ: فَإِنَّ لَكَ مَا تَمَنَّيْتَ وَعَشْرَةَ أَضْعَافِ الدُّنْيَا قَالَ: فَيَقُولُ: أَتَسْخَرُ بِي وَأَنْتَ الْمَلِكُ، قَالَ: فَلَقَدْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ضَحِكَ حَتَّى بَدَتْ نَوَاجِذُهُ.

उस ज़माना को जानते हो जिस में तुम थे?'' वह कहेगा जी हाँ, फिर उस से कहा जाएगा: आरज़ू करो। तो वह आरज़ू करेगा। कहा जायेगा: जो तुमने आरज़ू की तुम्हारे लिए वह भी है, और दुनिया का दस गुना भी है।'' आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "वह कहेगा : (ऐ अल्लाह!) तु बादशाह होने के बावजूद मुझ से मज़ाक़ करता है।'' रावी कहते हैं, मैंने देखा रसूलुल्लाह (ﷺ) (इस क़दर) हँसे यहाँ तक कि आप की दाढ़ें ज़ाहिर हो गयीं।

बुख़ारी: 6571. मुस्लिम: 186. इब्ने माजह:4339.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहि.) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2596 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنِ الْمَعْرُورِ بْنِ سُوَيْدٍ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنِّي لأَعْرِفُ آخِرَ أَهْلِ النَّارِ خُرُوجًا مِنَ النَّارِ وَآخِرَ أَهْلِ الجَنَّةِ دُخُولاً الجَنَّةَ، يُؤْتَى بِرَجُلٍ فَيَقُولُ: سَلُوا عَنْ صِغَارِ ذُنُوبِهِ وَاخْبَئُوا كِبَارَهَا، فَيُقَالُ لَهُ: عَمِلْتَ كَذَا وَكَذَا يَوْمَ كَذَا وَكَذَا، عَمِلْتَ كَذَا وَكَذَا فِي يَوْمِ كَذَا وَكَذَا، قَالَ: فَيُقَالُ لَهُ: فَإِنَّ لَكَ مَكَانَ كُلِّ سَيِّئَةٍ حَسَنَةً، قَالَ: فَيَقُولُ: يَا رَبِّ لَقَدْ عَمِلْتُ أَشْيَاءَ مَا أَرَاهَا هَاهُنَا

2596 - सय्यदना अबू ज़र (रज़ि.) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं उस शख़्स को खूब पहचानता हूँ जो जहन्नमियों में से सब से आखिर में जहन्नम से निकलने वाला और जन्नत में सब से आखिर में जाने वाला जन्नती है। एक आदमी को लाया जाएगा फिर अल्लाह फ़रमाएगा: इस से इसके छोटे गुनाहों के बारे में पूछो और इस के कबीरा गुनाह छिपा लो, उस से कहा जायेगा: तुमने फुलां फुलां दिन यह यह काम किया था? तुमने फुलां फुलां दिन यह यह काम किया था? तुमने फुलां फुलां दिन ऐसे ऐसे किया था? आप ने फ़रमाया, "फिर उस से कहा जाएगा: तुम्हारे लिए हर बुराई की जगह नेकी है तो वह कहेगा: ऐ मेरे परवरदिगार! मैंने कुछ ऐसे काम भी किए थे जो मुझे यहाँ नज़र नहीं आ रहे हैं। रावी कहते हैं, मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) को

قَالَ: فَلَقَدْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَضْحَكُ حَتَّى بَدَتْ نَوَاجِذُهُ.

मुस्कुराते हुए देखा यहाँ तक कि आप की दाढ़ें ज़ाहिर हो गयीं।''

मुस्लिम: 190. मुसनद अहमद: 5/157. बैहक़ी: 10/190.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2597 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي سُفْيَانَ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يُعَذَّبُ نَاسٌ مِنْ أَهْلِ التَّوْحِيدِ فِي النَّارِ حَتَّى يَكُونُوا فِيهَا حُمَمًا ثُمَّ تُدْرِكُهُمُ الرَّحْمَةُ فَيُخْرَجُونَ وَيُطْرَحُونَ عَلَى أَبْوَابِ الجَنَّةِ قَالَ: فَيَرُشُّ عَلَيْهِمْ أَهْلُ الجَنَّةِ الْمَاءَ فَيَنْبُتُونَ كَمَا يَنْبُتُ الغُثَاءُ فِي حِمَالَةِ السَّيْلِ ثُمَّ يَدْخُلُونَ الجَنَّةَ.

2597 - सय्यदना जाबिर (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अहले तौहीद में से कुछ लोगों को जहन्नम में अज़ाब दिया जाएगा यहाँ तक कि वह उस में कोयला बन जायेंगे, फिर उन्हें रहमते इलाही आ पहुंचेगी तो उन्हें निकाल कर जन्नत के दरवाज़ों पर फ़ेंक दिया जाएगा, फिर जन्नत वाले उन पर पानी छिड़केंगे तो वह ऐसे उगेंगे जैसे सैलाब के कूड़े करकट में घास उगती है।[1] चुनांचे वह जन्नत में दाख़िल हो जायेंगे।''

सहीह: मुसनद अहमद: 3/301.

तौज़ीह: الغُثَاء : सैलाब जो भी घास फूस बहा कर लाये उसे الغُثَاء कहा जाता है। حِمَالَةِ السَّيْل या: حميل السيل भी उस कूड़े करकट को कहा जाता है जो सैलाब के बहाव के साथ आए, चुनांचे इस जुम्ले का मतलब यह है कि घास या किसी और चीज़ के दाने जो सैलाब के कूड़े करकट में होते है उनका पौधा बहुत जल्द नुमूदार हो जाता है इसी तरह यह लोग भी बहुत जल्दी ठीक हो जायेंगे।

वज़ाहत: यह हदीस हसन सहीह है और कई तुरूक़ (सनदों) से सय्यदना जाबिर (ﷺ) से मर्वी है।

2598 - حَدَّثَنَا سَلَمَةُ بْنُ شَبِيبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يُخْرَجُ مِنَ النَّارِ مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ مِنَ الإِيمَانِ قَالَ أَبُو سَعِيدٍ: فَمَنْ شَكَّ فَلْيَقْرَأْ: {إِنَّ اللَّهَ لاَ يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ}.

2598 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जहन्नम से हर वह शख़्स निकल आयेगा जिस के दिल में एक ज़र्रा के बराबर ईमान हुआ।'' अबू सईद फ़रमाते हैं, जिसे शक हो उसे यह आयत पढ़नी चाहिए: "बेशक अल्लाह तआला एक ज़र्रा के बराबर भी ज़ुल्म नहीं करेगा।'' (अन्निसा: 40)

बुख़ारी: 22. मुस्लिम: 183 इब्ने माजह: 60. निसाई: 5010.

वज़ाहत: यह हदीस हसन सहीह है।

2599 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا رِشْدِينُ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ أَنْعُمَ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ، أَنَّهُ حَدَّثَهُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: إِنَّ رَجُلَيْنِ مِمَّنْ دَخَلَ النَّارَ اشْتَدَّ صِيَاحُهُمَا، فَقَالَ الرَّبُّ عَزَّ وَجَلَّ: أَخْرِجُوهُمَا، فَلَمَّا أُخْرِجَا قَالَ لَهُمَا: لأَيِّ شَيْءٍ اشْتَدَّ صِيَاحُكُمَا؟ قَالاَ: فَعَلْنَا ذَلِكَ لِتَرْحَمَنَا، قَالَ: إِنَّ رَحْمَتِي لَكُمَا أَنْ تَنْطَلِقَا فَتُلْقِيَا أَنْفُسَكُمَا حَيْثُ كُنْتُمَا مِنَ النَّارِ، فَيَنْطَلِقَانِ فَيُلْقِي أَحَدُهُمَا نَفْسَهُ فَيَجْعَلُهَا عَلَيْهِ بَرْدًا وَسَلاَمًا، وَيَقُومُ الآخَرُ فَلاَ يُلْقِي نَفْسَهُ، فَيَقُولُ لَهُ الرَّبُّ عَزَّ وَجَلَّ: مَا مَنَعَكَ أَنْ تُلْقِيَ نَفْسَكَ كَمَا أَلْقَى صَاحِبُكَ؟ فَيَقُولُ: يَا رَبِّ إِنِّي لأَرْجُو أَنْ لاَ تُعِيدَنِي فِيهَا بَعْدَ مَا أَخْرَجْتَنِي، فَيَقُولُ لَهُ الرَّبُّ: لَكَ رَجَاؤُكَ، فَيَدْخُلاَنِ جَمِيعًا الجَنَّةَ بِرَحْمَةِ اللَّهِ.

2599 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जहन्नम में दाख़िल होने वालों में से दो आदमियों की चीखें बहुत बलंद होंगी तो अल्लाह तबारक व तआला फ़रमाएंगे: उन दोनों को निकाल दो। जब उन्हें निकाला जाएगा तो अल्लाह तआला उन से पूछेगा: किस वजह से तुम्हारी चीखें बलंद थीं? वह दोनों कहेंगे: यह काम हमने इसलिए किया कि तु हम पर रहम कर दे, अल्लाह फ़रमाएगा तुम्हारे लिए मेरी रहमत यही है कि तुम जाओ अपने आप को उसी आग में गिरा दो जहाँ तुम थे। वह दोनों चलेंगे फिर उन में से एक अपने आप को उस में गिरा देगा तो अल्लाह तआला उस पर उस आग को ठंडी और सलामत बना देगा और दूसरा खड़ा हो जाएगा वह अपने आप को नहीं गिरायेगा। तो अल्लाह अज्ज़ा व जल्ल उस से कहेंगे: तुम्हें अपने आप को गिराने से किस चीज़ ने रोका? जिस तरह तुम्हारे साथी ने छलांग लगाई है, तो वह कहेगा, ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे उम्मीद है कि तु मुझे निकालने के बाद इस आग में दोबारा नहीं भेजेगा तो अल्लाह तबारक व तआला उस से फ़रमाएंगे; तुम्हारे लिए तुम्हारी उम्मीद के मुताबिक जन्नत दी जाती है चुनांचे वह दोनों अल्लाह की रहमत से इकट्ठे जन्नत में दाखिल होंगे।

ज़ईफ़: अल-इलल अल-मुतनाहिया: 1566

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, इस हदीस की सनद ज़ईफ़ है क्योंकि यह रिश्दीन बिन साद से मर्वी है और रिश्दीन बिन साद अहले हदीस के नज़दीक ज़ईफ़ है। उस ने रिवायत भी इब्ने

अन्अम से की है और यह अफरीक़ी है, जब कि मुहद्दिसीन के नज़दीक अफरीक़ी भी ज़ईफ़ है।

2600 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ ذَكْوَانَ، عَنْ أَبِي رَجَاءٍ العُطَارِدِيِّ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: لَيَخْرُجَنَّ قَوْمٌ مِنْ أُمَّتِي مِنَ النَّارِ بِشَفَاعَتِي يُسَمَّوْنَ جَهَنَّمِيُّونَ.

2600 - सय्यदना इमरान बिन हुसैन (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "मेरी उम्मत में से एक कौम मेरी शफ़ाअत के साथ जहन्नम से निकलेगी उन्हें जहन्नमियों का ही नाम दिया जाएगा।"

बुख़ारी:6566. अबू दाऊद:4740. इब्ने माजह्:4315.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है और अबू रजा उतारिदी का नाम इमरान बिन तैम है। इन्हें इब्ने मिल्हान कहा जाता है।

2601 - حَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، عَنْ يَحْيَى بْنِ عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا رَأَيْتُ مِثْلَ النَّارِ نَامَ هَارِبُهَا، وَلاَ مِثْلَ الجَنَّةِ نَامَ طَالِبُهَا.

2601 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं ने जहन्नम जैसी कोई चीज़ नहीं देखी जिससे डर कर भागने वाला सो जाए। और जन्नत जैसी कोई चीज़ नहीं देखी जिसे तलाश करने वाला सो जाए।"

हसन: हिल्या: 8/178. अल-ज़ुहद ले इब्ने मुबारक:27.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, इस हदीस को हम यह्या बिन उबैदुल्लाह से ही जानते हैं और यह्या बिन उबैदुल्लाह अक्सर मुहद्दिसीन के नज़दीक ज़ईफ़ है इस के बारे में शोबा ने जरह की है। और यह्या बिन उबैदुल्लाह बिन मोहब मदीना के रहने वाले थे।

11 بَابُ مَا جَاءَ أَنَّ أَكْثَرَ أَهْلِ النَّارِ النِّسَاءُ

11 - जहन्नम में ज़्यादा तादाद औरतों की होगी।

2602 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ أَبِي رَجَاءٍ العُطَارِدِيِّ، قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ

2602 - सय्यदना इब्ने अब्बास (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैंने जन्नत में देखा तो मैंने उसके रहने वाले ज़्यादातर फ़ुक़रा (फ़क़ीरों को) देखे

عَبَّاسٍ، يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اطَّلَعْتُ فِي الجَنَّةِ فَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا الفُقَرَاءَ، وَاطَّلَعْتُ فِي النَّارِ فَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا النِّسَاءَ.

और मैंने जहन्नम में देखा तो मैंने उसकी अक्सरियत औरतों की देखी।''

मुस्लिम: 2737. मुसनद अहमद: 1/234

2603 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، وَعَبْدُ الوَهَّابِ الثَّقَفِيُّ، قَالُوا: حَدَّثَنَا عَوْفٌ هُوَ ابْنُ أَبِي جَمِيلَةَ، عَنْ أَبِي رَجَاءٍ العُطَارِدِيِّ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اطَّلَعْتُ فِي النَّارِ فَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا النِّسَاءَ، وَاطَّلَعْتُ فِي الجَنَّةِ فَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا الفُقَرَاءَ.

2603 - सय्यदना इमरान बिन हुसैन (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैंने जहन्नम में देखा तो मैं उसकी अक्सरियत औरतों की देखी और मैंने जन्नत में झांका तो उसकी अक्सरियत फ़ुक़रा की देखी।''

बुख़ारी:3231. मुसनद अहमद:4/429.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। इसी तरह ही औफ़ ने अबू रजा के ज़रिए इमरान बिन हुसैन (ﷺ) से और अय्यूब ने अबू रजा के ज़रिए इब्ने अब्बास (ﷺ) से रिवायत की है और दोनों सनदों में कोई एतराज़ नहीं है और हो सकता है कि अबू रजा ने दोनों सहाबा से सुना हो। नीज़ औफ़ के अलावा दीगर लोगों ने इस हदीस को बवास्ता अबू रजा, सय्यदना इमरान बिन हुसैन (ﷺ) से रिवायत किया है।

12 - بَابٌ صفة أهون أهل النار عذابا يوم القيامة.

12 - क़यामत के दिन सब से कम अज़ाब वाला जहन्नमी कैसा होगा।

2604 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ، أَنَّ رَسُولَ

2604 - सय्यदना नौमान बिन बशीर (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "क़यामत के दिन जहन्नम वालों में सब से हल्के अज़ाब वाला वह शख़्स होगा,

اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ أَهْوَنَ أَهْلِ النَّارِ عَذَابًا يَوْمَ القِيَامَةِ رَجُلٌ فِي أَخْمَصِ قَدَمَيْهِ جَمْرَتَانِ يَغْلِي مِنْهُمَا دِمَاغُهُ.

जिस के पैरों के तल्वों[1] में दो अंगारे रखे जायेंगे उनकी वजह से उनका दिमाग खोलेगा।''

बुख़ारी:6541. मुस्लिम:213

तौज़ीह: أَخْمَص : पाँव का तल्वा, वह हिस्सा जो ज़मीन पर नहीं लगता। (अल-मोजमुल वसीत:प।302)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ इस बारे में अबू हुरैरा, अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब और अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

13–بَابٌ من هم أهل الجنة ومن هم أهل النار

13 - कौन जन्नती हैं और कौन जहन्नमी?

2605 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مَعْبَدِ بْنِ خَالِدٍ، قَالَ: سَمِعْتُ حَارِثَةَ بْنَ وَهْبٍ الخُزَاعِيَّ، يَقُولُ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: أَلاَ أُخْبِرُكُمْ بِأَهْلِ الجَنَّةِ، كُلُّ ضَعِيفٍ مُتَضَعِّفٍ لَوْ أَقْسَمَ عَلَى اللهِ لأَبَرَّهُ، أَلاَ أُخْبِرُكُمْ بِأَهْلِ النَّارِ، كُلُّ عُتُلٍّ جَوَّاظٍ مُتَكَبِّرٍ.

2605 - सय्यदना हारिसा बिन वहब ख़ुज़ाई (ﷺ) रिवायत करते हैं मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "ख़बरदार! क्या मैं तुम्हें जन्नतियों के बारे में न बताऊँ? हर कमज़ोर जिसे लोग हक़ीर समझें (लेकिन) अगर वह अल्लाह पर क़सम उठा ले तो अल्लाह उसे बरी कर देता है, ख़बरदार! क्या मैं तुम्हें जहन्नमी लोगों के बारे में न बताऊँ? हर सरकश, बखील और मुतकब्बिर (जहन्नमी है।)''

बुख़ारी:4918. मुस्लिम:2853.इब्ने माजह:4116.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

ख़ुलासा

- क़यामत के दिन जहन्नम को सत्तर हज़ार ज़ंजीरों से जकड़ कर लाया जायेगा। हर ज़ंजीर के साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते होंगे।
- जहन्नम की गहराई सत्तर हज़ार साल की मसाफ़त से भी ज़्यादा है।
- जहन्नमियों के अज्साम (ज़िस्म) बहुत बड़े हो जायेंगे यहाँ तक कि एक उहुद पहाड़ की तरह होगा।
- जहन्नमियों का मशरूब गर्म खौलता हुआ पानी और पीप होगा और खाने के लिए थोहर और हलक़ में अटकने वाला खाना दिया जायेगा।
- जहन्नम की आग दुनिया की आग से सत्तर गुना सख़्त है।
- दुनिया की गर्मी भी जहन्नम की सांस का नतीजा है।
- बिल आख़िर जहन्नम से अहले तौहीद को निकाल लिया जाएगा।
- जहन्नम में औरतों की तादाद ज़्यादा होगी।
- बखील, सरकश और मुतकब्बिर के लिए जहन्नम की वईद सुनाई गई है।

मज़मून नम्बर 38.

أَبْوَابُ الْإِيمَانِ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

रसूलुल्लाह (ﷺ) से मर्वी ईमान के फ़ज़ाइल व मसाइल।

तआरुफ़

39 अहादीस और 18 अबवाब के इस उन्वान में आप पढ़ेंगे कि:

- ईमान और इस्लाम क्या है?
- ईमान कैसा होता है?
- ईमान की अलामतें क्या हैं?
- मुनाफ़िक़ कौन होता है?

1 بَابُ مَا جَاءَ أُمِرْتُ أَنْ أُقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَقُولُوا لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ

1 - जब तक लोग : لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ न कहें मुझे उन से लड़ने का हुक्म है।

2606 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أُمِرْتُ أَنْ أُقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَقُولُوا: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ، فَإِذَا قَالُوهَا عَصَمُوا مِنِّي دِمَاءَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ إِلاَّ بِحَقِّهَا وَحِسَابُهُمْ عَلَى اللَّهِ.

2606 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, " मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं काफ़िर लोगों से लड़ूँ यहाँ तक कि वह : لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّه कह दें, जब वह यह कह देंगे तो उन्होंने मुझसे अपने खून और माल बचा लिए, सिवाए उस (इस्लाम) के हक़[1] के और उनका हिसाब अल्लाह पर है।"

बुख़ारी:2946. मुस्लिम:21. अबू दाऊद:2640.इब्ने माजह:3927. निसाई:3090

तौज़ीह: حق الاسلام इस्लाम के तीन हक़ हैं, जिनकी बिना पर किसी मुसलमान को क़त्ल किया जाएगा: (1) क़ातिल को क़िसास में। (2) शादी शुदा जानी (3) इस्लाम से मुर्तद हो जाने वाला।

वज़ाहतः इस बारे में जाबिर, अबू सईद और इब्ने उमर (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2607 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: لَمَّا تُوُفِّيَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَاسْتُخْلِفَ أَبُو بَكْرٍ بَعْدَهُ كَفَرَ مَنْ كَفَرَ مِنَ العَرَبِ فَقَالَ عُمَرُ بْنُ الخَطَّابِ، لأَبِي بَكْرٍ: كَيْفَ تُقَاتِلُ النَّاسَ، وَقَدْ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أُمِرْتُ أَنْ أُقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَقُولُوا: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ، وَمَنْ قَالَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ عَصَمَ مِنِّي مَالَهُ وَنَفْسَهُ إِلاَّ بِحَقِّهِ وَحِسَابُهُ عَلَى اللهِ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: وَاللَّهِ لأُقَاتِلَنَّ مَنْ فَرَّقَ بَيْنَ الزَّكَاةِ وَالصَّلاَةِ، وَإِنَّ الزَّكَاةَ حَقُّ الْمَالِ، وَاللَّهِ لَوْ مَنَعُونِي عِقَالاً كَانُوا يُؤَدُّونَهُ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَقَاتَلْتُهُمْ عَلَى مَنْعِهِ فَقَالَ عُمَرُ بْنُ الخَطَّابِ: فَوَاللَّهِ مَا هُوَ إِلاَّ أَنْ رَأَيْتُ أَنَّ اللَّهَ قَدْ شَرَحَ صَدْرَ أَبِي بَكْرٍ لِلْقِتَالِ فَعَرَفْتُ أَنَّهُ الحَقُّ.

2607 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात हुई और अबू बक्र (ﷺ) आप के बाद ख़लीफ़ा बन गए तो अरब में से जिनको कुफ्र करना था किया, तो उमर बिन ख़त्ताब (ﷺ) ने अबू बक्र (ﷺ) से कहा: आप लोगों से लड़ाई कैसे करेंगे जब कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया था: "मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं लोगों से लड़ाई करूं यहाँ तक कि वह लोग : لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللّٰه कह दें, और जिस ने : لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللّٰه कह दिया उस ने मुझ से अपना माल और अपनी जान को बचा लिया, सिवाए उस इस्लाम के हक़ के, और उसका हिसाब अल्लाह पर है।" तो अबू बक्र (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह की क़सम! मैं नमाज़ और ज़कात में तफ़रीक़ करने वाले से ज़रूर लड़ाई करूंगा। बेशक ज़कात माल का हक़ है। अल्लाह की क़सम! अगर यह लोग मुझे ऊँट या बकरी का वह बच्चा भी देने से इन्कार करेंगे, जो वह रसूलुल्लाह (ﷺ) को दिया करते थे तो मैं उस इंकार पर उन से लड़ाई करूंगा। उमर बिन ख़त्ताब (ﷺ) कहते हैं, अल्लाह की क़सम! मैंने तो यही देखा कि अल्लाह तआला ने अबू बक्र के सीने को (मानईने ज़कात से) लड़ाई करने के लिए खोल दिया था फिर मैं जान भी गया कि यही हक़ है।

बुख़ारी:1399. मुस्लिम:20. अबू दाऊद:1556. निसाई:3091, 3094.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ शोऐब बिन अबी हम्ज़ा ने भी ज़ोहरी से बवास्ता उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उत्बा, सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत की है। जब कि इमरान क़त्तान ने इस हदीस को मामर से बवास्ता ज़ोहरी सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) के ज़रिए अबू बक्र (رضي الله عنه) से रिवायत किया है लेकिन यह हदीस खता है इमरान की मामर से रिवायत में इख़्तिलाफ़ है।

2 - नबी (ﷺ) का फ़रमान: मुझे उनके : لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ कहने और नमाज़ कायम करने तक लड़ाई का हुक्म दिया गया है।

2 بَابُ مَا جَاءَ فِي قَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أُمِرْتُ بِقِتَالِهِمْ حَتَّى يَقُولُوا لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَيُقِيمُوا الصَّلاَةَ

2608 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, " मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं लोगों से लड़ाई करूं यहाँ तक कि वह गवाही दे दें कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं है और मुहम्मद (ﷺ) उसके बन्दे और रसूल हैं और हमारे किब्ला की तरफ़ मुंह करें, हमारे ज़बह किए हुए जानवर खाएं और हमारी जैसी नमाज़ पढ़ें, चुनांचे जब वह यह काम कर लेंगे तो हमारे ऊपर उनके खून और माल हराम हो गए सिवाए इस्लाम के हक़ के, उनके लिए वही कुछ होगा जो मुसलमानों के लिए है और उनके ज़िम्मे वही काम होंगे जो मुसलमानों के ज़िम्मा हैं।''

2608 - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ يَعْقُوبَ الطَّالِقَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا حُمَيْدٌ الطَّوِيلُ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أُمِرْتُ أَنْ أُقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَشْهَدُوا أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، وَأَنْ يَسْتَقْبِلُوا قِبْلَتَنَا وَيَأْكُلُوا ذَبِيحَتَنَا، وَأَنْ يُصَلُّوا صَلاَتَنَا، فَإِذَا فَعَلُوا ذَلِكَ حُرِّمَتْ عَلَيْنَا دِمَاؤُهُمْ وَأَمْوَالُهُمْ إِلاَّ بِحَقِّهَا، لَهُمْ مَا لِلْمُسْلِمِينَ وَعَلَيْهِمْ مَا عَلَى الْمُسْلِمِينَ.

बुख़ारी:392. अबू दाऊद:2641. निसाई:3966. 3969

वज़ाहत: इस बारे में मुआज़ बिन जबल और अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। इसे यह्या बिन अय्यूब ने भी बवास्ता हुमैद अनस (رضي الله عنه) से ऐसे ही रिवायत किया है।

3 - इस्लाम (की इमारत) को पांच चीजों पर बनाया गया है।

3 بَابُ مَا جَاءَ بُنِيَ الإِسْلاَمُ عَلَى خَمْسٍ

2609 - सय्यदना इब्ने उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, **"इस्लाम की बुनियाद पांच चीजों पर है, यह गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, नमाज़ कायम करना, ज़कात देना, रमजान के रोज़े और बैतुल्लाह का हज।"**

बुखारी:8. मुस्लिम: 16. निसाई:5001

2609 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ سُعَيْرِ بْنِ الخِمْسِ التَّمِيمِيِّ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ أَبِي ثَابِتٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: بُنِيَ الإِسْلاَمُ عَلَى خَمْسٍ، شَهَادَةِ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ، وَإِقَامِ الصَّلاَةِ، وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ، وَصَوْمِ رَمَضَانَ، وَحَجِّ البَيْتِ.

वज़ाहत: इस बारे में जरीर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और कई तुरूक़ (सनदों) से बवास्ता इब्ने उमर (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) से ऐसे ही मर्वी है। नीज़ सुऐर बिन खिम्स मुहद्दिसीन के नज़दीक सिक़ह रावी हैं।

अबू ईसा कहते हैं, हमें अबू कुरैब ने वह कहते हैं, हमें वकीअ ने हंज़ला बिन अबी सुफ़ियान जमही से उन्होंने इक्रिमा बिन ख़ालिद मख्ज़ूमी से बवास्ता इब्ने उमर (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) से ऐसे ही रिवायत की है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, **यह हदीस भी हसन है।**

4 - जिब्रील का नबी (ﷺ) को ईमान और इस्लाम की सिफात बयान करना।

4 بَابُ مَا جَاءَ فِي وَصْفِ جِبْرِيلَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الإِيمَانَ وَالإِسْلاَمَ

2610 - यह्या बिन यामर (رحمه الله) कहते हैं, तक़दीर के बारे में सब से पहले माबद जुहनी ने बात की थी, कहते हैं, मैं और हुमैद बिन अब्दुर्रहमान हिम्यरी निकले यहाँ तक कि हम मदीना में पहुंचे हम ने कहा काश हमें नबी (ﷺ) का कोई सहाबी मिल जाए तो हम उस से उन लोगों की बिद्आत के बारे में पूछ लें,

2610 - حَدَّثَنَا أَبُو عَمَّارٍ الحُسَيْنُ بْنُ حُرَيْثٍ الخُزَاعِيُّ، قَالَ: أَخْبَرَنَا وَكِيعٌ، عَنْ كَهْمَسِ بْنِ الحَسَنِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ بُرَيْدَةَ، عَنْ يَحْيَى بْنِ يَعْمَرَ، قَالَ: أَوَّلُ مَنْ تَكَلَّمَ فِي القَدَرِ مَعْبَدٌ الجُهَنِيُّ، قَالَ:

فَخَرَجْتُ أَنَا وَحُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الحِمْيَرِيُّ حَتَّى أَتَيْنَا الْمَدِينَةَ، فَقُلْنَا: لَوْ لَقِينَا رَجُلاً مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَأَلْنَاهُ عَمَّا أَحْدَثَ هَؤُلاَءِ الْقَوْمُ، قَالَ: فَلَقِينَاهُ يَعْنِي عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ، وَهُوَ خَارِجٌ مِنَ الْمَسْجِدِ قَالَ: فَاكْتَنَفْتُهُ أَنَا وَصَاحِبِي قَالَ: فَظَنَنْتُ أَنَّ صَاحِبِي سَيَكِلُ الكَلاَمَ إِلَيَّ، فَقُلْتُ: يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ إِنَّ قَوْمًا يَقْرَءُونَ الْقُرْآنَ وَيَتَقَفَّرُونَ العِلْمَ، وَيَزْعُمُونَ أَنْ لاَ قَدَرَ وَأَنَّ الأَمْرَ أُنُفٌ، قَالَ: فَإِذَا لَقِيتَ أُولَئِكَ فَأَخْبِرْهُمْ أَنِّي مِنْهُمْ بَرِيءٌ وَأَنَّهُمْ مِنِّي بُرَآءُ، وَالَّذِي يَحْلِفُ بِهِ عَبْدُ اللهِ لَوْ أَنَّ أَحَدَهُمْ أَنْفَقَ مِثْلَ أُحُدٍ ذَهَبًا مَا قُبِلَ ذَلِكَ مِنْهُ حَتَّى يُؤْمِنَ بِالقَدَرِ خَيْرِهِ وَشَرِّهِ، قَالَ: ثُمَّ أَنْشَأَ يُحَدِّثُ فَقَالَ: قَالَ عُمَرُ بْنُ الخَطَّابِ: كُنَّا عِنْدَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَجَاءَ رَجُلٌ شَدِيدُ بَيَاضِ الثِّيَابِ شَدِيدُ سَوَادِ الشَّعَرِ، لاَ يُرَى عَلَيْهِ أَثَرُ السَّفَرِ وَلاَ يَعْرِفُهُ مِنَّا أَحَدٌ حَتَّى أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَلْزَقَ رُكْبَتَهُ بِرُكْبَتِهِ ثُمَّ قَالَ: يَا مُحَمَّدُ مَا الإِيمَانُ؟ قَالَ: أَنْ تُؤْمِنَ بِاللَّهِ

चुनांचे हम अब्दुल्लाह बिन उमर (ﷺ) से मिले वह मस्जिद से निकल रहे थे, रावी कहते हैं, मैं और मेरे साथी ने उन्हें घेर लिया, मुझे यक़ीन था कि मेरा साथी भी मुझे ही बात करने को कहेगा, तो मैंने अर्ज़ किया, ऐ अबू अब्दुर्रहमान! बेशक कुछ लोग क़ुरआन भी पढ़ते हैं और इल्म भी हासिल करते हैं लेकिन उनका कहना है कि तक़्दीर कुछ भी नहीं है और हर काम नया होता है यानी पहले से लिखा नहीं गया उन्होंने ने फ़रमाया, जब तुम उन लोगों से मिलो तो उन्हें बताना कि मैं उन से बरी हूँ और वह मुझ से बरी हैं। उस ज़ात की क़सम! जिसके नाम की अब्दुल्लाह क़सम उठाया करता है अगर उन में से कोई शख़्स उहुद पहाड़ के बराबर सोना भी ख़र्च कर दे तो यह उस से क़ुबूल नहीं किया जाएगा, जब तक वह तक़्दीर की भलाई या बुराई पर ईमान न ले आए। रावी कहते हैं फिर उन्होंने बयान करते हुए ज़िक्र किया कि उमर बिन ख़त्ताब (ﷺ) ने कहा: हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास थे कि बहुत ज़्यादा सफ़ेद कपड़ों और बहुत सियाह बालों वाला एक आदमी आया उस पर सफ़र के आसार नज़र नहीं आते थे और न ही हम में से कोई शख़्स उसे जानता था, वह नबी (ﷺ) के पास आया अपना घुटना आप (ﷺ) के घुटने से मिला लिया, फिर कहने लगा: ऐ मुहम्मद ! ईमान क्या है? आप ने फ़रमाया, यह कि तुम अल्लाह उसके फ़रिश्तों, उसकी किताबों, उसके पैगम्बरों, आख़िरत के दिन और अच्छी बुरी तक़्दीर पर

وَمَلاَئِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ، وَالْقَدَرِ خَيْرِهِ وَشَرِّهِ، قَالَ: فَمَا الإِسْلاَمُ؟ قَالَ: شَهَادَةُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، وَإِقَامُ الصَّلاَةِ، وَإِيتَاءُ الزَّكَاةِ، وَحَجُّ الْبَيْتِ وَصَوْمُ رَمَضَانَ. قَالَ: فَمَا الإِحْسَانُ؟ قَالَ: أَنْ تَعْبُدَ اللَّهَ كَأَنَّكَ تَرَاهُ، فَإِنَّكَ إِنْ لَمْ تَكُنْ تَرَاهُ، فَإِنَّهُ يَرَاكَ. قَالَ: فِي كُلِّ ذَلِكَ يَقُولُ لَهُ: صَدَقْتَ، قَالَ: فَتَعَجَّبْنَا مِنْهُ يَسْأَلُهُ وَيُصَدِّقُهُ، قَالَ: فَمَتَى السَّاعَةُ؟ قَالَ: مَا الْمَسْئُولُ عَنْهَا بِأَعْلَمَ مِنَ السَّائِلِ، قَالَ: فَمَا أَمَارَتُهَا؟ قَالَ: أَنْ تَلِدَ الأَمَةُ رَبَّتَهَا، وَأَنْ تَرَى الْحُفَاةَ الْعُرَاةَ الْعَالَةَ رِعَاءَ الشَّاءِ يَتَطَاوَلُونَ فِي الْبُنْيَانِ قَالَ عُمَرُ: فَلَقِيَنِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْدَ ذَلِكَ بِثَلاَثٍ، فَقَالَ: يَا عُمَرُ هَلْ تَدْرِي مَنِ السَّائِلُ؟ ذَاكَ جِبْرِيلُ أَتَاكُمْ يُعَلِّمُكُمْ أَمْرَ دِينِكُمْ.

यकीन रखो।'' उस ने कहा: इस्लाम क्या है? आप ने फ़रमाया, "यह गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं और मुहम्मद (ﷺ) उसके बन्दे और रसूल हैं, नमाज़ क़ायम करना, ज़कात अदा करना, बैतुल्लाह का हज करना और रमजान के रोज़े रखना।'' उस ने कहा: एहसान (नेकी) क्या है? आप ने फ़रमाया, "यह कि तुम अल्लाह की इबादत इस तरह करो गोया तुम उसे देख रहे हो फिर अगर तुम उसे नहीं देख सकते तो वह तुम्हें देखता है।'' उमर कहते हैं, वह (सवाल करने वाला) हर दफ़ा आप से कहता: आप ने सच फ़रमाया है। कहते हैं, हम ने इससे तअज्जुब किया कि आप से सवाल भी कर रहा है और आप की तस्दीक भी कर रहा है। फिर उस ने कहा: क़यामत कब आएगी? आप ने फ़रमाया, "जिस से पूछा गया वह पूछने वाले से ज़्यादा नहीं जानता।'' उस ने कहा: उसकी निशानियाँ क्या हैं? आप ने फ़रमाया, "(निशानियाँ यह हैं) कि लौंडी अपने आक़ा को जनेगी और तुम देखोगे कि नंगे पाँव, नंगे बदन वाले मोहताज, बकरियां चराने वाले इमारतों में एक दूसरे से ऊँची इमारतें बनाने में बढ़ेंगे। उमर (رضي الله عنه) कहते हैं, फिर इस के बाद तीन दिन के बाद नबी (ﷺ) मुझ से मिले तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "उमर! क्या तुम जानते हो कि वह साइल कौन था? वह जिब्रील थे जो तुम्हें तुम्हारे दीन के काम सिखाने आए थे।''

मुस्लिम:8. अबू दाऊद:4695. इब्ने माजह:63. निसाई:4990.

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं, हमें अहमद बिन मुहम्मद ने (वह कहते हैं) हमें इब्ने मुबारक ने कह्मस बिन हसन से इसी सनद के साथ इसी मफ़्हूम की हदीस बयान कि है।

हमें मुहम्मद बिन मुसन्ना ने भी मुआज़ बिन मुआज़ से बवास्ता कह्मस इसी सनद के साथ ऐसे ही हदीस बयान की है। इस बारे में तल्हा बिन उबैदुल्लाह अनस बिन मालिक और अबू हुरैरा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और कई इस्नाद के साथ उमर (ﷺ) से ऐसे ही मर्वी है। नीज़ यह हदीस इब्ने उमर (ﷺ) के ज़रिए भी नबी (ﷺ) से मर्वी है लेकिन सहीह वही है जो इब्ने उमर (ﷺ) से बवास्ता उमर (ﷺ) नबी करीम (ﷺ) से मर्वी है।

5 - फ़राइज़ की निस्बत ईमान की तरफ़ है।

5 بَابُ مَا جَاءَ فِي إِضَافَةِ الفَرَائِضِ إِلَى الإِيمَانِ

2611 - सय्यदना इब्ने अब्बास (ﷺ) बयान करते हैं कि जब अब्दुल कैस का वफ़्द रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आया तो उन्होंने अर्ज़ किया, इस क़बील- ए- रबीया की वजह से हम सिर्फ़ हुर्मत वाले महीने में ही आप के पास आ सकते हैं। आप हमें कोई हुक्म दे दीजिये जिसे हम आप से लेकर अपने पीछे वाले लोगों को दावत दे सकें, तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं तुम्हें चार चीजों का हुक्म देता हूँ अल्लाह पर ईमान लाना फिर उनके लिए तफ़सीर भी की; यह गवाही देना कि अल्लाह के अलावा कोई सच्चा माबूद नहीं और मैं (मुहम्मद (ﷺ)) अल्लाह का रसूल हूँ, नमाज़ कायम करना, ज़कात अदा करना और यह कि तुम्हें जो ग़नीमत मिले उसका पांचवां हिस्सा (बैतूल माल में) दो।"

बुख़ारी:53. मुस्लिम:17. अबू दाऊद:3692. निसाई:5031.

2611 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبَّادُ بْنُ عَبَّادٍ الْمُهَلَّبِيُّ، عَنْ أَبِي جَمْرَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ قَدِمَ وَفْدُ عَبْدِ القَيْسِ عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوا: إِنَّا هَذَا الحَيَّ مِنْ رَبِيعَةَ وَلَسْنَا نَصِلُ إِلَيْكَ إِلاَّ فِي أَشْهُرِ الحَرَامِ، فَمُرْنَا بِشَيْءٍ نَأْخُذُهُ عَنْكَ وَنَدْعُو إِلَيْهِ مَنْ وَرَاءَنَا. فَقَالَ: آمُرُكُمْ بِأَرْبَعٍ، الْإِيمَانِ بِاللَّهِ، ثُمَّ فَسَّرَهَا لَهُمْ، شَهَادَةُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَأَنِّي رَسُولُ اللهِ، وَإِقَامِ الصَّلاَةِ، وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ، وَأَنْ تُؤَدُّوا خُمْسَ مَا غَنِمْتُمْ.

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं, हमें कुतैबा ने वह कहते हैं, हमें हम्माद बिन ज़ैद ने अबू हम्ज़ा से बवास्ता इब्ने अब्बास (ﷺ) नबी (ﷺ) से इस जैसी हदीस बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और अबू हम्ज़ा ज़िबई का नाम नस्र बिन इमरान है और शोबा ने भी नस्र बिन इमरान से ऐसे ही रिवायत की है। उस में यह अल्फ़ाज़ भी हैं, "क्या तुम जानते हो कि ईमान क्या है? यह गवाही देना कि अल्लाह के अलावा कोई सच्चा माबूद नहीं और मैं अल्लाह का रसूल हूँ।'' फिर वही हदीस ज़िक्र की।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, मैंने कुतैबा बिन सईद से सुना वह फ़रमा रहे थे: मैंने उन चार फ़ुक़हा से बढ़ कर किसी को नहीं देखा: मालिक बिन अनस, लैस बिन साद, अब्बाद बिन अब्बाद मोहल्लबी और अब्दुल वह्हाब सक़फ़ी (ﷺ)। कुतैबा कहते हैं, हम चाहते थे कि हर दिन हम अब्बाद बिन अब्बाद से दो हदीसें लेकर आयें। नीज़ अब्बाद बिन अब्बाद, मोहल्लब बिन अबी सफ़रा (ﷺ) की औलाद से थे।

6 बَابُ مَا جَاءَ فِي اسْتِكْمَالِ الإِيمَانِ وَزِيَادَتِهِ وَنُقْصَانِهِ

6 - ईमान का कामिल होना और उसकी कमी व बेशी का बयान।

2612 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ البَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ ابْنُ عُلَيَّةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدٌ الحَذَّاءُ، عَنْ أَبِي قِلَابَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: إِنَّ مِنْ أَكْمَلِ الْمُؤْمِنِينَ إِيمَانًا أَحْسَنُهُمْ خُلُقًا وَأَلْطَفُهُمْ بِأَهْلِهِ.

2612 - सय्यदा आयशा (ﷺ) रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मोमिनों में से ईमान के लिहाज़ से कामिल तरीन वह शख़्स है जो उन में अच्छे अख़्लाक़ वाला और अपनी बीवी के साथ बहुत नर्मी करने वाला हो।''

ज़ईफ़: मुसनद अहमद: 6/47. इब्ने अबी शैबा:8/515.

वज़ाहत: इस बारे में अबू हुरैरा और अनस बिन मालिक (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और हम अबू किलाबा का आयशा (ﷺ) से सिमा (सुनना) करना नहीं जानते। नीज़ अबू किलाबा ने आयशा (ﷺ) के रज़ीअ (ले पालक) के ज़रिए आयशा (ﷺ) से इसके अलावा और अहादीस रिवायत की हैं।

अबू किलाबा का नाम अब्दुल्लाह बिन ज़ैद जरमी है।

अबू ईसा कहते हैं, हमें इब्ने अबी उमर ने बताया कि सुफ़ियान बिन उयय्ना कहते हैं अय्यूब सख़्तियानी ने अबू किलाबा का तज़किरा किया तो कहने लगे: अल्लाह की क़सम! वह अक़्लमन्द फ़ुकहा में से थे।

2613 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने लोगों को ख़ुत्बा दिया, उन्हें वाज़ किया तो फ़रमाया, "ऐ औरतों की जमाअत! सदक़ा करो तुम जहन्नम वालों में ज़्यादा हो।'' तो उन में से एक औरत कहने लगी, ऐ अल्लाह के रसूल किसलिए? आप ने फ़रमाया, "तुम्हारे ज़्यादा लानत करने की वजह से यानी तुम्हारी खाविंद की नाशुक्री करने की वजह से, मैंने तुम औरतों से बढ़ कर अक़्लो- दीन की कमी वाला, अक़्लमंदों और समझदार लोगों पर ग़ालिब आ जाने वाला कोई नहीं देखा।'' उन में से एक औरत ने कहा: उस के दीन और अक़्ल में कमी क्या है? आप ने फ़रमाया, "तुम में से दो औरतों की गवाही एक मर्द की गवाही के बराबर है। और तुम्हारे दीन की कमी हैज़ (की वजह से) है एक औरत तीन चार दिन नमाज़ नहीं पढ़ती (महीने में)।''

सहीह: मुस्लिम:80. इब्ने खुज़ैमा:1000

2613 - حَدَّثَنَا أَبُو عَبْدِ اللهِ هُرَيْمُ بْنُ مِسْعَرٍ الأَزْدِيُّ التِّرْمِذِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ العَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ سُهَيْلِ بْنِ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَطَبَ النَّاسَ فَوَعَظَهُمْ ثُمَّ قَالَ: يَا مَعْشَرَ النِّسَاءِ تَصَدَّقْنَ فَإِنَّكُنَّ أَكْثَرُ أَهْلِ النَّارِ فَقَالَتْ امْرَأَةٌ مِنْهُنَّ: وَلِمَ ذَاكَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: لِكَثْرَةِ لَعْنِكُنَّ، يَعْنِي وَكُفْرِكُنَّ العَشِيرَ. قَالَ: وَمَا رَأَيْتُ مِنْ نَاقِصَاتِ عَقْلٍ وَدِينٍ أَغْلَبَ لِذَوِي الأَلْبَابِ، وَذَوِي الرَّأْيِ مِنْكُنَّ، قَالَتْ امْرَأَةٌ مِنْهُنَّ: وَمَا نُقْصَانُ دِينِهَا وَعَقْلِهَا، قَالَ: شَهَادَةُ امْرَأَتَيْنِ مِنْكُنَّ بِشَهَادَةِ رَجُلٍ، وَنُقْصَانُ دِينِكُنَّ، الحَيْضَةُ، تَمْكُثُ إِحْدَاكُنَّ الثَّلاَثَ وَالأَرْبَعَ لاَ تُصَلِّي.

वज़ाहत: इस बारे में अबू सईद और इब्ने उमर (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, इस सनद से यह हदीस हसन सहीह है।

2614 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "ईमान के तिहत्तर से ज़्यादा[1] दरवाज़े हैं सब से कम दरजा रास्ते से तकलीफ़देह चीज़ को हटाना और सबसे बलंद لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ कहना है।''

बुख़ारी:9. मुस्लिम:35. अबू दाऊद:4676. इब्ने माजह:57. निसाई:5004

2614 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ سُهَيْلِ بْنِ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: الإِيمَانُ بِضْعٌ وَسَبْعُونَ بَابًا، فَ أَدْنَاهَا إِمَاطَةُ الأَذَى عَنِ الطَّرِيقِ، وَأَرْفَعُهَا قَوْلُ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ.

तौज़ीह: بِضْعٌ : का लफ्ज़ तीन से नौ तक बोला जाता है यानी कम अज कम तीन और ज़्यादा से ज़्यादा नौ।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और सहल बिन अबी सालेह ने भी अब्दुल्लाह बिन दीनार से बवास्ता अबू सालेह, अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से इसी तरह रिवायत की है। जबकि उमारा बिन गज़िय्या ने इस हदीस को बवास्ता अबू सालेह, सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत किया है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "ईमान के चौंसठ दरवाज़े हैं।''

अबू ईसा कहते हैं, हमें यह हदीस कुतैबा ने वह कहते हैं, हमें बक्र बिन मुज़र ने उमारा बिन गज़िय्या से उन्होंने अबू सालेह से बवास्ता सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) से बयान की है।

7 بَابُ مَا جَاءَ أَنَّ الحَيَاءَ مِنَ الإِيمَانِ

7 - हया ईमान (की शाखों में) से है।

2615 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، وَأَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، الْمَعْنَى وَاحِدٌ، قَالاَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّ بِرَجُلٍ وَهُوَ يَعِظُ أَخَاهُ فِي الحَيَاءِ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الحَيَاءُ مِنَ الإِيمَانِ قَالَ أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، فِي حَدِيثِهِ: إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَمِعَ رَجُلاً يَعِظُ أَخَاهُ فِي الحَيَاءِ.

2615 - सालिम (رحمه الله) अपने बाप से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक आदमी के पास से गुज़रे वह अपने भाई को हया करने की वजह से बुरा भला कह रहा था। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया; " हया ईमान की शाखों में से एक शाख है।'' अहमद बिन मुनी ने अपनी हदीस में कहा कि नबी (ﷺ) ने एक आदमी को सुना वह हया की वजह से अपने भाई को मलामत कर रहा था।

बुख़ारी:24. मुस्लिम:36

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ इस बारे में अबू हुरैरा, अबू बक्रा और अबू उमामा (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है।

8 بَابُ مَا جَاءَ فِي حُرْمَةِ الصَّلَاةِ

8 - नमाज़ की अज़्मत।

2616 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُعَاذٍ الصَّنْعَانِيُّ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ عَاصِمِ بْنِ أَبِي النَّجُودِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ،

2616 - सय्यदना मुआज़ बिन जबल (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं मैं नबी (ﷺ) के साथ एक सफ़र में था फिर एक दिन आप के क़रीब हो गया, हम चल रहे थे कि मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के

عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ، قَالَ: كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَفَرٍ، فَأَصْبَحْتُ يَوْمًا قَرِيبًا مِنْهُ وَنَحْنُ نَسِيرُ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ أَخْبِرْنِي بِعَمَلٍ يُدْخِلُنِي الجَنَّةَ وَيُبَاعِدُنِي عَنِ النَّارِ، قَالَ: لَقَدْ سَأَلْتَنِي عَنْ عَظِيمٍ، وَإِنَّهُ لَيَسِيرٌ عَلَى مَنْ يَسَّرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ، تَعْبُدُ اللَّهَ وَلاَ تُشْرِكْ بِهِ شَيْئًا، وَتُقِيمُ الصَّلاَةَ، وَتُؤْتِي الزَّكَاةَ، وَتَصُومُ رَمَضَانَ، وَتَحُجُّ البَيْتَ، ثُمَّ قَالَ: أَلاَ أَدُلُّكَ عَلَى أَبْوَابِ الخَيْرِ: الصَّوْمُ جُنَّةٌ، وَالصَّدَقَةُ تُطْفِئُ الخَطِيئَةَ كَمَا يُطْفِئُ الْمَاءُ النَّارَ، وَصَلاَةُ الرَّجُلِ مِنْ جَوْفِ اللَّيْلِ قَالَ: ثُمَّ تَلاَ {تَتَجَافَى جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ}، حَتَّى بَلَغَ {يَعْمَلُونَ} ، ثُمَّ قَالَ: أَلاَ أُخْبِرُكَ بِرَأْسِ الأَمْرِ كُلِّهِ وَعَمُودِهِ، وَذِرْوَةِ سَنَامِهِ؟ قُلْتُ: بَلَى يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: رَأْسُ الأَمْرِ الإِسْلاَمُ، وَعَمُودُهُ الصَّلاَةُ، وَذِرْوَةُ سَنَامِهِ الجِهَادُ، ثُمَّ قَالَ: أَلاَ أُخْبِرُكَ بِمَلاَكِ ذَلِكَ كُلِّهِ؟ قُلْتُ: بَلَى يَا نَبِيَّ اللهِ، فَأَخَذَ بِلِسَانِهِ قَالَ: كُفَّ عَلَيْكَ هَذَا، فَقُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللهِ، وَإِنَّا لَمُؤَاخَذُونَ بِمَا نَتَكَلَّمُ بِهِ؟ فَقَالَ: ثَكِلَتْكَ أُمُّكَ يَا مُعَاذُ، وَهَلْ يَكُبُّ النَّاسَ

रसूल! मुझे कोई ऐसा अमल बताईए कि जो मुझे जन्नत में दाख़िल और जहन्नम से दूर कर दे। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुमने मुझ से बहुत बड़ी चीज़ के बारे में सवाल किया है लेकिन यह उस शख़्स पर आसान है जिस पर अल्लाह तआला आसान कर दे तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके साथ किसी को शरीक न करो, नमाज़ क़ायम करो ज़कात अदा करो, रमजान के रोज़े रखो और बैतुल्लाह का हज करो।'' फिर आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या मैं भलाई के दरवाजों की तरफ़ तुम्हारी रहनुमाई न करूं? रोज़ा ढाल है, सदक़ा गुनाह को ऐसे बुझा देता है जैसे पानी आग को बुझाता है और आदमी का रात के दर्मियान में नमाज़ पढ़ना।'' रावी कहते हैं, फिर आप(ﷺ) ने यह आयत पढ़ी: "उन लोगों के पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं वह अपने रब को पुकारते हैं, आगे {يَعْمَلُونَ} तक पढ़ा। (अस्सज्दा: 16- 17) फिर आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या मैं तुम्हें तमाम दीन के सिरे, उसके सुतूनों और उसकी कोहान की बलंदी के बारे में न बताऊँ?'' मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! ज़रूर! आप ने फ़रमाया, "दीन का सिरा इस्लाम है, इसके सुतून नमाज़ हैं, और इसकी कोहान की बलंदी जिहाद है।'' फिर आप(ﷺ) ने फ़रमाया, " क्या मैं तुम्हें उस चीज़ के बारे में न बताऊँ जिस पर इन तमाम चीजों का मदार है?'' मैंने अर्ज़ किया, क्यों नहीं, तब आप(ﷺ) ने अपनी ज़बान पकड़ कर फ़रमाया, "इसे रोक कर रखना, मैंने कहा: ऐ अल्लाह के

فِي النَّارِ عَلَى وُجُوهِهِمْ أَوْ عَلَى مَنَاخِرِهِمْ إِلاَّ حَصَائِدُ أَلْسِنَتِهِمْ.

रसूल! हम जो बातें करते हैं क्या उन पर भी हमारा मुआखिज़ा होगा (पकड़ होगी)? आप ने फ़रमाया, "मुआज़ तेरी मां तुझे गुम पाए! लोगों को (जहन्नम की) आग में चेहरों और नथुनों के बल घसीटने वाली चीज़ उनकी ज़बानों की काटी हुई फसलों के अलावा और क्या है।

सहीह: इब्ने माजह:3973. मुसनद अहमद:5/231. अब्दुर्रज्ज़ाक़:20303

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2617 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ وَهْبٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ الحَارِثِ، عَنْ دَرَّاجٍ أَبِي السَّمْحِ، عَنْ أَبِي الهَيْثَمِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا رَأَيْتُمُ الرَّجُلَ يَتَعَاهَدُ الْمَسْجِدَ فَاشْهَدُوا لَهُ بِالإِيمَانِ، فَإِنَّ اللَّهَ تَعَالَى يَقُولُ: {إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسَاجِدَ اللهِ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَاليَوْمِ الآخِرِ وَأَقَامَ الصَّلاَةَ وَآتَى الزَّكَاةَ} الآيَةَ.

2617 - सय्यदना अबू सईद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब तुम ऐसे आदमी को देखो जो मस्जिद का ख्याल रखता है तो उसके ईमान की गवाही दो, बेशक अल्लाह तआला फ़रमाते हैं, "अल्लाह की मसाजिद को वही शख़्स आबाद करता है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाये, नमाज़ कायम करे और ज़कात अदा करे।'' (अत्तौबा: 18)

ज़ईफ़: इब्ने माजह: 802. मुसनद अहमद:3/68.दारमी: 1226.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है।

9 بَابُ مَا جَاءَ فِي تَرْكِ الصَّلاَةِ

9 - नमाज़ छोड़ना।

2618 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، وَأَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي سُفْيَانَ، عَنْ جَابِرٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: بَيْنَ الكُفْرِ وَالإِيمَانِ تَرْكُ الصَّلاَةِ.

2618- सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, "कुफ्र और ईमान के दर्मियान नमाज़ छोड़ने का फ़र्क है।''

सहीह: मुस्लिम:82. अबू दाऊद:4678.इब्ने माजह: 1078. तोहफतुल अशराफ़:2303.

2619 - अबू ईसा कहते हैं, हमें हन्नाद ने वह कहते हैं, हमें अस्बात बिन मुहम्मद ने आमश से इसी सनद के साथ ऐसे ही रिवायत की है (इसमें है कि) आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "मोमिन बन्दे और शिर्क या कुफ्र के दर्मियान (फ़र्क) नमाज़ छोड़ना है।" (सहीह।)

2619 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَسْبَاطُ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ، وَقَالَ: بَيْنَ العَبْدِ وَبَيْنَ الشِّرْكِ أَوِ الكُفْرِ تَرْكُ الصَّلاَةِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और अबू सुफ़ियान का नाम तल्हा बिन नाफ़े था।

2620 - सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "(मुसलमान) बन्दे और कुफ्र के दर्मियान नमाज़ छोड़ने का फ़र्क है।"

सहीह। पिछली हदीस की तरह।

2620 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: بَيْنَ العَبْدِ وَبَيْنَ الكُفْرِ تَرْكُ الصَّلاَةِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और अबू ज़ुबैर का नाम मुहम्मद बिन मुस्लिम बिन तदरूस है।

2621 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन बुरैदा अपने बाप (सय्यदना बुरैदा رضي الله عنه) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "वह अहद जो हमारे और उन काफ़िरों के दर्मियान है वह नमाज़ है जिसने इसे छोड़ा यक़ीनन उस ने कुफ्र किया।"

सहीह: इब्ने माजह: 1079. निसाई:463.

2621 - حَدَّثَنَا أَبُو عَمَّارٍ الحُسَيْنُ بْنُ حُرَيْثٍ، وَيُوسُفُ بْنُ عِيسَى، قَالاَ: حَدَّثَنَا الفَضْلُ بْنُ مُوسَى، عَنِ الحُسَيْنِ بْنِ وَاقِدٍ (ح) وحَدَّثَنَا أَبُو عَمَّارٍ، وَمَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالاَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الحُسَيْنِ بْنِ وَاقِدٍ، عَنْ أَبِيهِ (ح) وحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَلِيِّ بْنِ الحَسَنِ الشَّقِيقِيُّ، وَمَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالاَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الحَسَنِ بْنِ شَقِيقٍ، عَنِ الحُسَيْنِ بْنِ وَاقِدٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ بُرَيْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: العَهْدُ الَّذِي بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمُ الصَّلاَةُ، فَمَنْ تَرَكَهَا فَقَدْ كَفَرَ.

वज़ाहत: इस बारे में अनस और इब्ने अब्बास (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

2622 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ، عَنِ الْجُرَيْرِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْن شَقِيقٍ الْعُقَيْلِيِّ، قَالَ: كَانَ أَصْحَابُ مُحَمَّدٍ ﷺ لاَ يَرَوْنَ شَيْئًا مِنَ الأَعْمَالِ تَرْكُهُ كُفْرٌ غَيْرَ الصَّلاَةِ

2622 - अब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ उक़ैली (ﷺ) फ़रमाते हैं कि मुहम्मद (ﷺ) के सहाबा (ﷺ) नमाज़ के अलावा किसी अमल के छोड़ने को कुफ़्र ख़याल नहीं करते थे।

सहीह

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, मैंने अबू मुस्अब मदनी से सुना वह फ़रमा रहे थे: जो शख़्स यह कहे कि ईमान सिर्फ़ कौल का नाम है उस से तौबा करवाई जाए अगर तौबा कर ले तो ठीक वरना उसकी गर्दन उतार दी जाए।

10 - بَابٌ حديث: ((ذَاقَ طَعْمَ الإِيمَانِ.)) و حديث ((ثَلاَثٌ مَنْ كُنَّ فِيهِ وَجَدَ بِهِنَّ طَعْمَ الإِيمَانِ))

10 - हदीस: उस ने ईमान का ज़ायक़ा चख लिया और हदीस जिस में यह ख़स्लतें हों उनकी वजह से वह ईमान का मज़ा चख लेता है।

2623 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ الهَادِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ الحَارِثِ، عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، عَنِ العَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ذَاقَ طَعْمَ الإِيمَانِ، مَنْ رَضِيَ بِاللَّهِ رَبًّا، وَبِالإِسْلاَمِ دِينًا، وَبِمُحَمَّدٍ نَبِيًّا.

2623 - सय्यदना अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब (ﷺ) रिवायत करते हैं कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप फ़रमा रहे थे: " उस शख़्स ने ईमान का ज़ायक़ा चख लिया जो अल्लाह को रब, इस्लाम को दीन और मुहम्मद (ﷺ) के अपने नबी होने पर राजी हो गया।''

सहीह: मुस्लिम:34. मुसनद अहमद:1/308. इब्ने हिब्बान:1694

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2624 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الوَهَّابِ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ،

2624 - सय्यदना अनस बिन मालिक (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, " तीन चीजें जिस में हों वह उनकी

عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ثَلاَثٌ مَنْ كُنَّ فِيهِ وَجَدَ بِهِنَّ طَعْمَ الإِيمَانِ، مَنْ كَانَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِمَّا سِوَاهُمَا، وَأَنْ يُحِبَّ الْمَرْءَ لاَ يُحِبُّهُ إِلاَّ لِلَّهِ، وَأَنْ يَكْرَهَ أَنْ يَعُودَ فِي الكُفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنْقَذَهُ اللَّهُ مِنْهُ كَمَا يَكْرَهُ أَنْ يُقْذَفَ فِي النَّارِ.

बदौलत ईमान का ज़ायक़ा पा लेता है, जिस शख़्स को अल्लाह और उसका रसूल बाकी तमाम से ज़्यादा महबूब हो, वह किसी आदमी से मोहब्बत करे तो सिर्फ़ अल्लाह के लिए मोहब्बत करे और कुफ़्र से अल्लाह ने उसे निजात दी है तो वह उस में लौटना ऐसे ही नापसंद करे जैसे वह आग में फेंके जाने को नापसंद करता है।''

बुख़ारी:16. मुस्लिम:34. इब्ने माजह:4023. निसाई:4987. 4989.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। इसे क़तादा ने भी बवास्ता अनस बिन मालिक नबी (ﷺ) से रिवायत किया है।

11 بَابُ مَا جَاءَ لاَ يَزْنِي الزَّانِي وَهُوَ مُؤْمِنٌ

11 - ज़िना करते वक़्त ज़ानी मोमिन नहीं होता

2625 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبِيدَةُ بْنُ حُمَيْدٍ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: لاَ يَزْنِي الزَّانِي حِينَ يَزْنِي وَهُوَ مُؤْمِنٌ، وَلاَ يَسْرِقُ السَّارِقُ حِينَ يَسْرِقُ وَهُوَ مُؤْمِنٌ، وَلَكِنَّ التَّوْبَةَ مَعْرُوضَةٌ. وَفِي الْبَابِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، وَعَائِشَةَ، وَعَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى.

2625 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "ज़ानी जब ज़िना करता है तो वह मोमिन नहीं होता और चोर जब चोरी करता है तो वह मोमिन नहीं होता लेकिन तौबा (अल्लाह के सामने) पेश हो सकती है।''

बुख़ारी:2435. मुस्लिम:57. अबू दाऊद:4689. इब्ने माजह:3936. निसाई:4870, 4872.

वज़ाहत: इस बारे में इब्ने अब्बास, आयशा और अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है। **इमाम तिर्मिज़ी** (ﷺ) फ़रमाते हैं, सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) की हदीस इस सनद के साथ हसन सहीह ग़रीब है।

सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) से यह भी मर्वी है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब बन्दा ज़िना करता है तो ईमान उस से निकल कर एक साइबान की तरह उसके सर पर आ जाता है, फिर जब वह उस अमल से फ़ारिग़ हो जाता है तो ईमान उसकी तरफ़ वापस आ जाता है।''

अबू जाफ़र मुहम्मद बिन अली से मर्वी है कि यह ख़ुरूज ईमान से इस्लाम की तरफ़ होता है।

नीज़ यह कई तुरूक़ (सनदों) से मर्वी है कि नबी(ﷺ) ने ज़िना और चोरी के बारे में फ़रमाया, "जिसने इन में से कोई काम कर लिया फिर उस पर हद लग गई तो वह उसके गुनाह का कफ़्फ़ारा बन जाएगा, और जिस ने इन में कोई काम किया फिर अल्लाह ने उस पर पर्दा डाल दिया तो यह मामला अल्लाह की तरफ़ है अगर चाहे तो क़यामत के दिन उसे अज़ाब दे और अगर चाहे तो उसे बख़्श दे।''

यह हदीस अली बिन अबी तालिब, उबादा बिन सामित और खुज़ैमा बिन साबित (رضي الله عنهم) ने नबी (ﷺ) से रिवायत की है।

2626 - حَدَّثَنَا أَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ أَبِي السَّفَرِ وَاسْمُهُ أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الهَمْدَانِيُّ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ يُونُسَ بْنِ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ الهَمْدَانِيِّ، عَنْ أَبِي جُحَيْفَةَ، عَنْ عَلِيٍّ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ أَصَابَ حَدًّا فَعُجِّلَ عُقُوبَتَهُ فِي الدُّنْيَا فَاللَّهُ أَعْدَلُ مِنْ أَنْ يُثَنِّيَ عَلَى عَبْدِهِ العُقُوبَةَ فِي الآخِرَةِ، وَمَنْ أَصَابَ حَدًّا فَسَتَرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَفَا عَنْهُ فَاللَّهُ أَكْرَمُ مِنْ أَنْ يَعُودَ فِي شَيْءٍ قَدْ عَفَا عَنْهُ.

2626 - सय्यदना अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस शख़्स ने हद वाला गुनाह कर लिया, फिर दुनिया में जल्द ही उसकी सज़ा मिल गई, तो अल्लाह तआला बहुत अदल वाला है वह दूसरी मर्तबा आख़िरत में अपने बन्दे को सज़ा नहीं देगा और जिस ने हद वाला गुनाह किया फिर अल्लाह ने उस पर पर्दा रखा और उसे माफ़ कर दिया तो अल्लाह तआला बहुत इज़्ज़त वाला है कि उस काम में रुजू करे जिस से उसने माफ़ कर दिया था।''

ज़ईफ़: इब्ने माजह:2604. दार क़ुत्नी:3/215. हाकिम:2/445

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है। और अहले इल्म का भी यही कौल है हम किसी आलिम को नहीं जानते जिसने ज़िना, चोरी और शराब पीने की वजह से किसी को काफ़िर कहा हो।

12 - मुसलमान वह है जिसकी ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ (सुरक्षित) रहें।

12 بَابُ مَا جَاءَ فِي أَنَّ الْمُسْلِمَ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُونَ مِنْ لِسَانِهِ وَيَدِهِ

2627 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मुसलमान वह है जिसकी ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें। और मोमिन वह है जिसे लोग अपने खूनों और अपने मालों पर अमीन समझें।''

हसन: सहीह: निसाई: 8/104. इब्ने हिब्बान: 180. हाकिम: 1/10.

2627 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ عَجْلاَنَ، عَنِ الْقَعْقَاعِ بْنِ حَكِيمٍ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُونَ مِنْ لِسَانِهِ وَيَدِهِ، وَالْمُؤْمِنُ مَنْ أَمِنَهُ النَّاسُ عَلَى دِمَائِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और मर्वी है कि नबी (ﷺ) से पूछा गया मुसलमानों में कौन सा आदमी अफ़ज़ल है? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "जिसकी ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें'' नीज़ इस बारे में जाबिर, अबू मूसा और अब्दुल्लाह बिन अम्र (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

2628 - सय्यदना अबू मूसा अश्अरी (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) से सवाल किया गया: कौन सा मुसलमान अफ़ज़ल है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिसकी ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें''

तख़रीज के लिए देखें हदीस नम्बर 2504.

2628 - حَدَّثَنَا بِذَلِكَ إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعِيدٍ الْجَوْهَرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ بُرَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ جَدِّهِ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سُئِلَ أَيُّ الْمُسْلِمِينَ أَفْضَلُ؟ قَالَ: مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُونَ مِنْ لِسَانِهِ وَيَدِهِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, सय्यदना अबू मूसा अश्अरी (ﷺ) से मर्वी नबी (ﷺ) की यह हदीस सहीह ग़रीब हसन है।

13 - इस्लाम अज्नबी तौर पर शुरू हुआ दोबारा अज्नबी हो जाएगा।

13 بَابُ مَا جَاءَ أَنَّ الإِسْلَامَ بَدَأَ غَرِيبًا وَسَيَعُودُ غَرِيبًا

2629 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "इस्लाम अज्नबी की हालत में शुरू हुआ दोबारा अज्नबी हो जाएगा चुनांचे अज्नबियों को मुबारक हो।''

सहीह: इब्ने माजह:3988. अहमद:1/298. दारमी:2758

2629 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غِيَاثٍ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي الأَحْوَصِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: إِنَّ الإِسْلَامَ بَدَأَ غَرِيبًا وَسَيَعُودُ غَرِيبًا كَمَا بَدَأَ، فَطُوبَى لِلْغُرَبَاءِ.

वज़ाहत: इस बारे में सईद, इब्ने उमर, जाबिर, अनस और अब्दुल्लाह बिन अम्र (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, इब्ने मसऊद (ﷺ) की यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है। हम इसे हफ़्स बिन ग़ियास के ज़रिए ही आमश से जानते हैं। और अबू अह्वस का नाम मालिक बिन नज़ला जुशमी है। नीज़ इसे बयान करने में हफ़्स अकेले हैं।

2630 - कसीर बिन अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन औफ़ बिन ज़ैद बिन मिल्हा अपने बाप के ज़रिए अपने दादा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, " दीन हिजाज़ की तरफ़ ऐसे ही सिमट जाएगा जैसे सांप अपने बिल की तरफ़ सिमट जाता है और दीन हिजाज़ में ऐसे ही पनाह लेगा जैसी जंगली बकरी पहाड़ की चोटी पर पनाह लेती है, दीन अज्नबी के तौर पर शुरू हुआ और दोबारा अज्नबी हो जाएगा, अज्नबियों को मुबारक हो, वह लोग जो उस चीज़ की इस्लाह करेंगे जिसे मेरी सुन्नत में से लोगों ने बिगाड़ दिया होगा।'' (ज़ईफ़ जिद्दा)

2630 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ قَالَ: حَدَّثَنِي كَثِيرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ عَوْفِ بْنِ زَيْدِ بْنِ مِلْحَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ الدِّينَ لَيَأْرِزُ إِلَى الحِجَازِ كَمَا تَأْرِزُ الحَيَّةُ إِلَى جُحْرِهَا، وَلَيَعْقِلَنَّ الدِّينُ مِنَ الحِجَازِ مَعْقِلَ الأُرْوِيَّةِ مِنْ رَأْسِ الجَبَلِ، إِنَّ الدِّينَ بَدَأَ غَرِيبًا وَيَرْجِعُ غَرِيبًا، فَطُوبَى لِلْغُرَبَاءِ الَّذِينَ يُصْلِحُونَ مَا أَفْسَدَ النَّاسُ مِنْ بَعْدِي مِنْ سُنَّتِي.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

14 - मुनाफ़िक़ की निशानी।

14 بَابُ مَا جَاءَ فِي عَلَامَةِ الْمُنَافِقِ

2631 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मुनाफ़िक़ की तीन निशानियां हैं, जब बात करे तो झूठ बोले, जब वादा करे तो ख़िलाफ़ वर्ज़ी करे और जब उसे अमानत दी जाए तो वह ख़यानत करे।"

बुख़ारी:33. मुस्लिम:59. निसाई:5021.

2631 - حَدَّثَنَا أَبُو حَفْصٍ عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ قَيْسٍ، عَنِ الْعَلَاءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: آيَةُ الْمُنَافِقِ ثَلَاثٌ، إِذَا حَدَّثَ كَذَبَ، وَإِذَا وَعَدَ أَخْلَفَ، وَإِذَا اؤْتُمِنَ خَانَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस अला के तरीक़ से हसन ग़रीब है। नीज़ यह कई तुरूक़ (सनदों) से बवास्ता अबू हुरैरा (ﷺ) नबी करीम (ﷺ) से मर्वी है।

इस बारे में अब्दुल्लाह बिन मसऊद, अनस और जाबिर (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

अबू ईसा कहते हैं, हमें अली बिन हुज्र ने वह कहते हैं, हमें इस्माईल बिन जाफ़र ने अबू सहल बिन मालिक से उन्होंने अपने बाप के ज़रिए अबू हुरैरा (ﷺ) से और उन्होंने नबी (ﷺ) से ऐसे ही हदीस बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस सहीह है। और अबू सहल, इमाम मालिक बिन अनस (ﷺ) के चचा हैं। उनका नाम नाफ़े बिन मालिक बिन अबी आमिर अस्बही ख़ौलानी है।

2632- सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "चार चीज़ें जिस में हों वह मुनाफ़िक़ होता है और अगर उन में से कोई एक ख़स्लत उस में हो तो जब तक उसे छोड़ न दे उस में निफ़ाक़ की एक ख़स्लत होती है। वह शख़्स जब बात करे तो झूठ बोले जब वादा करे तो ख़िलाफ़वर्ज़ी करे जब झगड़ा करे तो गाली गलोच करे और जब अहद करे तो धोका दे।"

बुख़ारी:34. मुस्लिम:58.

2632 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ سُفْيَانَ، عَنِ الْأَعْمَشِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُرَّةَ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: أَرْبَعٌ مَنْ كُنَّ فِيهِ كَانَ مُنَافِقًا وَإِنْ كَانَتْ خَصْلَةٌ مِنْهُنَّ فِيهِ كَانَتْ فِيهِ خَصْلَةٌ مِنَ النِّفَاقِ حَتَّى يَدَعَهَا، مَنْ إِذَا حَدَّثَ كَذَبَ، وَإِذَا وَعَدَ أَخْلَفَ، وَإِذَا خَاصَمَ فَجَرَ، وَإِذَا عَاهَدَ غَدَرَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

अहले इल्म के नज़दीक इससे अमली निफ़ाक़ मुराद है जब कि निफ़ाक़े तकज़ीब (एताकादी निफ़ाक़) रसूलुल्लाह (ﷺ) के दौर में ही था। इस बारे में हसन बसरी से कुछ इस तरह मर्वी है कि निफ़ाक़ की दो किस्में हैं, (1) अमली निफ़ाक़: (2) निफ़ाक़े तकज़ीब:

अबू ईसा कहते हैं, हमें हसन बिन अली खल्लाल ने वह कहते हैं, हमें अब्दुल्लाह बिन नुमैर ने आमश से उन्होंने अब्दुल्लाह बिन मुर्रा से इसी सनद के साथ ऐसे ही रिवायत की है।

2633 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ طَهْمَانَ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ عَبْدِ الأَعْلَى، عَنْ أَبِي النُّعْمَانِ، عَنْ أَبِي وَقَّاصٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا وَعَدَ الرَّجُلُ وَيَنْوِي أَنْ يَفِيَ بِهِ فَلَمْ يَفِ بِهِ فَلاَ جُنَاحَ عَلَيْهِ.

2633 - सय्यदना ज़ैद बिन अर्क़म (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब कोई शख़्स वादा करे और उसकी नीयत उसे पूरा करने की हो फिर वह उसे पूरा न कर सके तो उस पर कोई गुनाह नहीं है।"

ज़ईफ़: अबू दाऊद:4995. बैहक़ी:10/198.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। इसकी सनद क़वी नहीं है। अली बिन अब्दुल आला तो सिक़ह् हैं लेकिन अबू नौमान और अबू वक़्क़ास मज्हूल रावी हैं।

15 بَابُ مَا جَاءَ سِبَابُ الْمُؤْمِنِ فُسُوقٌ

15 - मुसलमान को गाली देना नाफ़रमानी है।

2634 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ بَزِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الحَكِيمِ بْنُ مَنْصُورٍ الوَاسِطِيُّ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: قِتَالُ الْمُسْلِمِ أَخَاهُ كُفْرٌ، وَسِبَابُهُ فُسُوقٌ.

2634 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मुसलमान का अपने मुसलमान भाई से लड़ाई करना कुफ़्र और उसे गाली देना नाफ़रमानी (फ़िस्क़) है।"

सहीह: तख़रीज के लिए हदीस नम्बर 1983.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) की हदीस हसन सहीह है। और कई तुरूक़ (सनदों) से अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद (رضي الله عنه) से मर्वी है।

2635 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ زُبَيْدٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: سِبَابُ الْمُسْلِمِ فُسُوقٌ، وَقِتَالُهُ كُفْرٌ.

2635 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मुसलमान का किसी को गाली देना नाफ़रमानी और उसका किसी मुसलमान से लड़ाई करना कुफ्र है।''

सहीह: 1983 के तहत तख़रीज देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

और इस हदीस में ((قتاله كفر)) से दीने इस्लाम से ख़ारिज़ करने वाला कुफ्र मुराद नहीं है, इसकी दलील नबी (ﷺ) से मर्वी हदीस है कि आप(ﷺ) ने फ़रमाया, " जिसे जान बूझ कर क़त्ल किया गया हो तो मक़्तूल के वारिसीन को इख़्तियार है अगर चाहें तो क़िसास के तौर पर क़त्ल कर दें और अगर चाहें तो माफ़ कर दें और अगर क़त्ल करना कुफ्र होता तो उसे भी क़त्ल करना वाजिब होता।''

नीज़ इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) ताऊस और दीगर उलमा से मर्वी है कि एक कुफ्र, दूसरे कुफ्र से छोटा भी होता है (इसी तरह) फ़िस्क़ भी एक दूसरे से छोटा होता है।

16 بَابُ مَا جَاءَ فِيمَنْ رَمَى أَخَاهُ بِكُفْرٍ

16 - जो शख़्स अपने मुसलमान भाई को काफ़िर कह दे।

2636 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ يُوسُفَ الأَزْرَقُ، عَنْ هِشَامٍ الدَّسْتُوَائِيِّ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ ثَابِتِ بْنِ الضَّحَّاكِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَيْسَ عَلَى الْعَبْدِ نَذْرٌ فِيمَا لاَ يَمْلِكُ، وَلاَعِنُ الْمُؤْمِنِ كَقَاتِلِهِ، وَمَنْ قَذَفَ مُؤْمِنًا بِكُفْرٍ فَهُوَ كَقَاتِلِهِ،

2636 - सय्यदना साबित बिन ज़ह्हाक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "बन्दे पर उस काम में नज़्र पूरा करना वाजिब नहीं है जिसका वह मालिक ही न हो, मोमिन पर लानत करने वाला उसे क़त्ल करने वाले की तरह है, जिस ने किसी मोमिन को काफ़िर कहा वह भी उसे क़त्ल करने वाले की तरह है और जिस ने अपने आप को किसी चीज़ के साथ क़त्ल कर लिया तो क़यामत के दिन अल्लाह उस शख़्स

وَمَنْ قَتَلَ نَفْسَهُ بِشَيْءٍ عَذَّبَهُ اللَّهُ بِمَا قَتَلَ بِهِ نَفْسَهُ يَوْمَ القِيَامَةِ.

को उसी चीज़ के साथ अज़ाब देगा जिस से उस ने अपने आप को क़त्ल किया था।''

बुख़ारी:6047. मुस्लिम:110

वज़ाहत: इस बारे में अबू ज़र और इब्ने उमर (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2637 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: أَيُّمَا رَجُلٍ قَالَ لأَخِيهِ كَافِرٌ فَقَدْ بَاءَ بِهَا أَحَدُهُمَا.

2637 - सय्यदना इब्ने उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो आदमी अपने भाई को काफ़िर कहे तो उन दोनों में से एक उस (कुफ्र) के साथ लौटता है।'' (बुख़ारी:6104.मुस्लिम:60. अबू दाऊद:4687.)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। और लौटने से मुराद इक़रार करना है।

17 بَابُ مَا جَاءَ فِيمَنْ يَمُوتُ وَهُوَ يَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ

17 - जो शख़्स इस हालत पर मरे कि वह अल्लाह के एक होने की गवाही देता हो।

2638 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ عَجْلاَنَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَحْيَى بْنِ حَبَّانَ، عَنِ ابْنِ مُحَيْرِيزٍ، عَنِ الصُّنَابِحِيِّ، عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ، أَنَّهُ قَالَ: دَخَلْتُ عَلَيْهِ وَهُوَ فِي الْمَوْتِ فَبَكَيْتُ، فَقَالَ: مَهْلاً، لِمَ تَبْكِي؟ فَوَاللَّهِ لَئِنْ اسْتُشْهِدْتُ لأَشْهَدَنَّ لَكَ، وَلَئِنْ شُفِّعْتُ لأَشْفَعَنَّ لَكَ، وَلَئِنْ اسْتَطَعْتُ لأَنْفَعَنَّكَ، ثُمَّ قَالَ: وَاللَّهِ مَا مِنْ حَدِيثٍ سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى

2638 - सुनाबिही रिवायत करते हैं कि मैं उबादा बिन सामित (رضي الله عنه) के पास गया वह मर्ज़ुल मौत में थे, तो मैं रो पड़ा उन्होंने फ़रमाया, ठहरो क्यों रो रहे हो? अल्लाह की क़सम! अगर मुझ से गवाही तलब की गई तो मैं तुम्हारे हक़ में ज़रूर गवाही दूंगा, अगर मुझे सिफ़ारिश की इजाज़त मिली तो मैं तुम्हारे लिए ज़रूर सिफारिश करूंगा और अगर मुझ में ताक़त हुई तो मैं तुम्हें नफ़ा ज़रूर पहुंचाऊंगा, फिर फ़रमाने लगे: अल्लाह की क़सम! मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से जो हदीस भी सुनी थी जिसमें तुम्हारे लिए

اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَكُمْ فِيهِ خَيْرٌ إِلاَّ حَدَّثْتُكُمُوهُ إِلاَّ حَدِيثًا وَاحِدًا، وَسَوْفَ أُحَدِّثُكُمُوهُ الْيَوْمَ وَقَدْ أُحِيطَ بِنَفْسِي، سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: مَنْ شَهِدَ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللّٰهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ، حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ النَّارَ.

भलाई थी मैंने वह तुम्हारे लिए बयान कर दी है सिवाए एक हदीस के और आज वह भी तुम्हें बयान कर देता हूँ (क्योंकि) मेरी जान को घेरा जा चुका है मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "जिस शख़्स ने यह गवाही दे दी कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं अल्लाह तआला ने उस पर जहन्नम को हराम कर दिया।''

सहीहः मुस्लिम:29. मुसनद अहमद:5/318. इब्ने हिब्बान:202

वज़ाहतः इस बारे में अबू बक्र,उमर, उस्मान, अली,तल्हा, जाबिर, इब्ने उमर, और ज़ैद बिन ख़ालिद (رضی اللہ عنہ) से भी हदीस मर्वी है।

अबू ईसा कहते हैं, मैंने इब्ने अबी उमर से सुना वह कह रहे थे, इब्ने उयय्ना फ़रमाते हैं, मुहम्मद बिन अजलान सिक़ह् और मामून फ़िल हदीस हैं।

और सुनाबिही अबू अब्दुल्लाह, अब्दुर्रहमान बिन उसैला हैं, इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं, इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।मर्वी है कि इमाम ज़ोहरी (رحمہ اللہ) से नबी (ﷺ) के फ़रमानः "जिस ने لَا إِلَهَ إِلاَّ اللّٰهُ कह दिया वह जन्नत में चला गया:'' के बारे में पूछा गया तो उन्होंने फ़रमाया, यह शुरू इस्लाम में फ़राइज़ और अहकामात व नवाही के नाजिल होने से पहले था।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं, अहले इल्म के नज़दीक इस हदीस की तौजीह यह है कि अहले तौहीद जन्नत में दाख़िल कर दिए जायेंगे अगरचे उन्हें जहन्नम का अज़ाब उनके गुनाहों के सबब होगा लेकिन वह वहाँ हमेशा नहीं रहेंगे।

नीज़ अब्दुल्लाह बिन मसऊद, अबू ज़र, इमरान बिन हुसैन, जाबिर बिन अब्दुल्लाह, इब्ने अब्बास, अबू सईद और अनस बिन मालिक (رضی اللہ عنہ) से मर्वी है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जहन्नम से अहले तौहीद में से कुछ लोगों को निकाल कर जन्नत में दाख़िल किया जाएगा।''
इसी तरह सईद बिन जुबैर, इब्राहीम नखई और दीगर ताबेईन से भी और कई इस्नाद के साथ अबू हुरैरा (رضی اللہ عنہ) के वास्ते से नबी (ﷺ) से इस आयत : "काफ़िर लोग ख़्वाहिश करेंगे कि काश वह मुसलमान होते।'' (अल-हिज्र:2) की तफ़्सीर में मर्वी है कि जब अहले तौहीद को जहन्नम से निकाल कर जन्नत में दाख़िल किया जाएगा तो काफ़िर भी ख़्वाहिश करेंगे काश वह मुसलमान होते।

2639 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (ﷺ) रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "क़यामत के दिन अल्लाह तआला मेरी उम्मत में से एक आदमी को सारी मख़्लूक़ से अलाहिदा (अलग) करेगा फिर उसके सामने 99 रजिस्टर[1] फैलाएगा हर रजिस्टर नज़र की इन्तेहा तक होगा, फिर अल्लाह फ़रमाएगा: क्या तु इन में से किसी चीज़ का इन्कार करता है? क्या मेरे निगहबान कातिबीन ने तुझ पर ज़ुल्म किया है? वह कहेगा: ऐ मेरे परवरदिगार! नहीं, फिर अल्लाह फ़रमाएगा: क्या तुम्हारा कोई उज्ञ है? वह कहेगा: ऐ मेरे रब!नहीं, तो अल्लाह फ़रमाएगा:क्यों नहीं! हमारे पास तुम्हारी एक नेकी है क्योंकि आज तुम पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। फिर एक कागज़[2] का टुकड़ा लाया जाएगा, जिस पर अश्हदु अन् ला इलाहा इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहु लिखा होगा। अल्लाह फ़रमाएगा अपने आमाल का वज़न कराओ। वह कहेगा ऐ मेरे परवरदिगार! कागज़ के इस टुकड़े की इन रजिस्टरों के सामने क्या हैसियत है? तो अल्लाह वह फ़रमाएगा: तुम्हारे ऊपर ज़ुल्म नहीं होगा। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर उन दफ्तरों को एक पलड़े में और उस कार्ड को एक पलड़े में रख दिया जाएगा तो वह रजिस्टर हल्के और कागज़ का टुकड़ा भारी हो जाएगा, और अल्लाह के नाम से कोई चीज़ भारी नहीं हो सकती।''

सहीह: इब्ने माजह:4300. मुसनद अहमद:2/213. इब्ने हिब्बान:225

2639 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، عَنْ لَيْثِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عَامِرُ بْنُ يَحْيَى، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْمَعَافِرِيِّ ثُمَّ الحُبُلِيِّ، قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَمْرِو بْنِ العَاصِ، يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ اللَّهَ سَيُخَلِّصُ رَجُلاً مِنْ أُمَّتِي عَلَى رُءُوسِ الخَلاَئِقِ يَوْمَ القِيَامَةِ فَيَنْشُرُ عَلَيْهِ تِسْعَةً وَتِسْعِينَ سِجِلًّا كُلُّ سِجِلٍّ مِثْلُ مَدِّ البَصَرِ، ثُمَّ يَقُولُ: أَتُنْكِرُ مِنْ هَذَا شَيْئًا؟ أَظَلَمَكَ كَتَبَتِي الحَافِظُونَ؟ فَيَقُولُ: لاَ يَا رَبِّ، فَيَقُولُ: أَفَلَكَ عُذْرٌ؟ فَيَقُولُ: لاَ يَا رَبِّ، فَيَقُولُ: بَلَى إِنَّ لَكَ عِنْدَنَا حَسَنَةً، فَإِنَّهُ لاَ ظُلْمَ عَلَيْكَ اليَوْمَ، فَتَخْرُجُ بِطَاقَةٌ فِيهَا: أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، فَيَقُولُ: احْضُرْ وَزْنَكَ، فَيَقُولُ: يَا رَبِّ مَا هَذِهِ البِطَاقَةُ مَعَ هَذِهِ السِّجِلاَّتِ، فَقَالَ: إِنَّكَ لاَ تُظْلَمُ، قَالَ: فَتُوضَعُ السِّجِلاَّتُ فِي كَفَّةٍ وَالبِطَاقَةُ فِي كَفَّةٍ، فَطَاشَتِ السِّجِلاَّتُ وَثَقُلَتِ البِطَاقَةُ، فَلاَ يَثْقُلُ مَعَ اسْمِ اللهِ شَيْءٌ.

वज़ाहत: سجل : रजिस्टर वह किताब या कापी जिस में कोई चीज़ बतौरे हिफाज़त लिखी जाती है। इसकी जमा سجلات आती है। (अल-मोजमुल वसीत: पृ.494)

بطاقة : कार्ड पर्चा रुक्आ वगैरह। (अल-कामूसुल वहीद:पृ. 170)

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है। अबू ईसा कहते हैं, हमें कुतैबा ने वह कहते हैं, हमें इब्ने लहीया ने आमिर बिन यह्या से इसी सनद के साथ ऐसे ही रिवायत की है। और بطاقة : से मुराद (कागज़ का) टुकड़ा है।

18 مَا جَاءَ فِي افْتِرَاقِ هَذِهِ الأُمَّةِ

18 - इस उम्मत का गिरोहों में बंट जाना।

2640 - حَدَّثَنَا الحُسَيْنُ بْنُ حُرَيْثٍ أَبُو عَمَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الفَضْلُ بْنُ مُوسَى، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: تَفَرَّقَتِ اليَهُودُ عَلَى إِحْدَى وَسَبْعِينَ أَوْ اثْنَتَيْنِ وَسَبْعِينَ فِرْقَةً، وَالنَّصَارَى مِثْلَ ذَلِكَ، وَتَفْتَرِقُ أُمَّتِي عَلَى ثَلَاثٍ وَسَبْعِينَ فِرْقَةً.

2640 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "यहूदी इक्हत्तर या बहत्तर फ़िर्कों में तक्सीम हुए थे, ईसाई भी ऐसे ही और मेरी उम्मत तिहत्तर (73) फ़िर्कों में तक्सीम होगी।''

हसन: सहीह। अबू दाऊद:4586. इब्ने माजह:3991

वज़ाहत: इस बारे में साद, अब्दुल्लाह बिन अम्र और औफ़ बिन मालिक (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, अबू हुरैरा (رضي الله عنه) की हदीस हसन सहीह है।

2641 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ الحَفَرِيُّ، عَنْ سُفْيَانَ الثَّوْرِيِّ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ زِيَادٍ الأَفْرِيقِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَيَأْتِيَنَّ عَلَى أُمَّتِي مَا أَتَى عَلَى بني إسرائيل حَذْوَ النَّعْلِ بِالنَّعْلِ، حَتَّى إِنْ كَانَ مِنْهُمْ مَنْ أَتَى

2641 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मेरी उम्मत पर एक वक़्त ऐसा आएगा जैसा बनी इस्राईल पर आया था (यह दोनों ज़माने ऐसे बराबर होंगे) जैसे कि एक जूता दूसरे के बराबर होता है,यहाँ तक कि अगर उन में से किसी ने एलानिया अपनी मां से ज़िना किया होगा तो मेरी उम्मत में भी ऐसा करने वाला होगा।

أُمَّهُ عَلاَنِيَةً لَكَانَ فِي أُمَّتِي مَنْ يَصْنَعُ ذَلِكَ، وَإِنَّ بني إسرائيل تَفَرَّقَتْ عَلَى ثِنْتَيْنِ وَسَبْعِينَ مِلَّةً، وَتَفْتَرِقُ أُمَّتِي عَلَى ثَلاَثٍ وَسَبْعِينَ مِلَّةً، كُلُّهُمْ فِي النَّارِ إِلاَّ مِلَّةً وَاحِدَةً، قَالُوا: وَمَنْ هِيَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: مَا أَنَا عَلَيْهِ وَأَصْحَابِي.

और बनू इस्राईल बहत्तर फ़िर्कों में बटे जब कि मेरी उम्मत तिहत्तर फिर्कों में तक्सीम होगी, एक जमाअत के सिवा सभी जहन्नमी हैं।'' रावी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! वह कौन हैं? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "(इस तरीक़े पर चलने वाला) जिस पर मैं और मेरे सहाबा हैं।''

हसन: हाकिम: 1/ 129

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब और मुफ़स्सिर है। इस नहज पर हमें सिर्फ़ इसी तरीक़ से मिली है।

2642 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَرَفَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَيَّاشٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي عَمْرٍو السَّيْبَانِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الدَّيْلَمِيِّ، قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَمْرٍو، يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ خَلَقَ خَلْقَهُ فِي ظُلْمَةٍ، فَأَلْقَى عَلَيْهِمْ مِنْ نُورِهِ، فَمَنْ أَصَابَهُ مِنْ ذَلِكَ النُّورِ اهْتَدَى، وَمَنْ أَخْطَأَهُ ضَلَّ، فَلِذَلِكَ أَقُولُ: جَفَّ القَلَمُ عَلَى عِلْمِ اللَّهِ.

2642 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को सुना आप फ़रमा रहे थे: "अल्लाह तआला ने अँधेरे में अपनी मख़्लूक़ पैदा की फिर उन पर अपना नूर डाला जिसे उस नूर का कुछ हिस्सा पहुँच गया वह हिदायत पा गया और जिसे न पहुंचा वह गुमराह हो गया, इसी लिए मैं कहता हूँ कि (तक़्दीर का) क़लम इल्मे इलाही पर ख़ुश्क हो गया है।''

सहीह: मुसनद अहमद: 2/ 176. इब्ने हिब्बान: 6169. हाकिम: 1/ 30

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन है।

2643 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ، عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى

2643 - सय्यदना मुआज़ बिन जबल (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या तुम जानते हो कि बन्दों पर अल्लाह का क्या हक़ है?'' मैंने अर्ज़ किया, अल्लाह और उसके रसूल ख़ूब जानते हैं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "उसका बन्दों पर

اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَتَدْرِي مَا حَقُّ اللهِ عَلَى العِبَادِ؟ قُلْتُ: اللّٰهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ قَالَ: فَإِنَّ حَقَّهُ عَلَيْهِمْ أَنْ يَعْبُدُوهُ وَلاَ يُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا، قَالَ: أَتَدْرِي مَا حَقُّهُمْ عَلَيْهِ إِذَا فَعَلُوا ذَلِكَ قُلْتُ: اللّٰهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، قَالَ: أَنْ لاَ يُعَذِّبَهُمْ.

यह हक़ है कि वह उसकी इबादत करें, उसके साथ कुछ भी शरीक न करें।'' आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या तुम जानते हो कि जब वह यह काम करें तो अल्लाह पर उनका क्या हक़ है'' मैंने अर्ज़ किया, अल्लाह और उसके रसूल ही बेहतर जानते हैं। आप ने फ़रमाया, "(वह हक़ यह है कि) वह उन्हें अज़ाब न दे।''

बुख़ारी:2856. मुस्लिम:30. इब्ने माजह:4296.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है और कई तरीक से सय्यदना मुआज़ बिन जबल (رضي الله عنه) से मर्वी है।

2644 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ أَبِي ثَابِتٍ، وَعَبْدِ العَزِيزِ بْنِ رُفَيْعٍ، وَالأَعْمَشِ، كُلُّهُمْ سَمِعُوا زَيْدَ بْنَ وَهْبٍ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: أَتَانِي جِبْرِيلُ فَبَشَّرَنِي أَنَّهُ مَنْ مَاتَ لاَ يُشْرِكُ بِاللّٰهِ شَيْئًا دَخَلَ الجَنَّةَ، قُلْتُ: وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ؟ قَالَ: نَعَمْ.

2644 - सय्यदना अबू ज़र (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिब्रील ने मेरे पास आकर मुझे खुश ख़बरी दी कि जो शख़्स ऐसी हालत में फौत हुआ कि वह अल्लाह के साथ कुछ भी शरीक नहीं करता था तो वह जन्नत में दाख़िल होगा।मैंने कहा: अगरचे वह ज़िना करे या वह चोरी करे? उन्होंने कहा: हाँ''

बुख़ारी: 1237. मुस्लिम: 94

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है नीज़ इस बारे में अबू दर्दा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

ख़ुलासा

- काफ़िर के कलिम-ए- इस्लाम पढ़ने से उसका ख़ून और माल महफ़ूज़ हो जाता है।
- इस्लाम की इमारत को पांच सुतूनों पर खड़ा किया गया है; तौहीद, नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज्जे बैतुल्लाह।
- फ़राइज़ की अदायगी ईमान का जुज़्वे लाज़िम (लाज़िमी हिस्सा) है।
- ईमान में कमी व बेशी होती है और इस पर कुरआन व सुन्नत में बकस्रत दलाइल मौजूद हैं।
- हया भी ईमान का हिस्सा है।
- इस्लाम का सब से बड़ा और अहम फ़रीज़ा नमाज़ है। नमाज़ छोड़ने वाला काफ़िर है।
- ज़ानी जब ज़िना करता है तो उस वक़्त उस में ईमान नहीं होता।
- मुसलमान वह है जिसकी ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें।
- इस्लाम अज्नबी के तौर पर शुरू हुआ था फिर अज्नबी बन जाएगा।
- मुनाफ़िक़ की चार अलामतें हैं, झूठ, ख़यानत, वादा ख़िलाफ़ी, बद ज़बानी।
- मुसलमान को गाली देना नाफ़रमानी और उस से लड़ना कुफ़्र है।
- जिस के दिल में ज़र्रा बराबर भी ईमान हुआ उसे एक दिन जहन्नम से निकाल ही लिया जाएगा।
- इस उम्मत के तिहत्तर फ़िर्के होंगे।
- कबीरा गुनाह करने से कोई मुसलमान काफ़िर नहीं होता।

मज़मून नम्बर 39.

أَبْوَابُ الْعِلْمِ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

रसूलुल्लाह (ﷺ) से मर्वी इल्म की फ़ज़ीलत व अहमियत।

तआरुफ़

43 अहादीस के साथ 19 अबवाब पर मुश्तमिल इस उन्वान के तहत आप पढ़ेंगे कि:

- इल्म हासिल करने की क्या फ़ज़ीलत है?
- हक़ीक़त में आलिम कौन होता है?
- हदीसे रसूल (ﷺ) को बयान करने में किस क़दर एहतियात की जाए?

1 بَابُ إِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِعَبْدٍ خَيْرًا فَقَّهَهُ فِي الدِّينِ

2645 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ سَعِيدِ بْنِ أَبِي هِنْدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ ، قَالَ: مَنْ يُرِدِ اللَّهُ بِهِ خَيْرًا يُفَقِّهْهُ فِي الدِّينِ.

1 - अल्लाह तआ़ला जब किसी बन्दे से भलाई का इरादा करता है तो उसे दीन की समझ दे देता है।

2645 - सय्यदना इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस शख़्स के साथ अल्लाह भलाई का इरादा करता है तो उसे दीन में समझ अता कर देता है।"

सहीह: मुसनद अहमद:306. दारमी:231

वज़ाहत:इस बारे में उमर, अबू हुरैरा और मुआविया(رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। यह हदीस हसन सहीह है।

2 بَابُ فَضْلِ طَلَبِ الْعِلْمِ

2646 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ،

2 - इल्म हासिल करने की फ़ज़ीलत।

2646 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स किसी ऐसे रास्ते पर चले जिस में

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ سَلَكَ طَرِيقًا يَلْتَمِسُ فِيهِ عِلْمًا سَهَّلَ اللَّهُ لَهُ طَرِيقًا إِلَى الجَنَّةِ.

वह इल्म को तलाश करता है तो अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत के रास्ते को आसान कर देते हैं।''

मुस्लिम:2699.इब्ने माजह:225

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन है।

2647 - حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ يَزِيدَ العَتَكِيُّ، عَنْ أَبِي جَعْفَرٍ الرَّازِيِّ، عَنِ الرَّبِيعِ بْنِ أَنَسٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَنْ خَرَجَ فِي طَلَبِ العِلْمِ فَهُوَ فِي سَبِيلِ اللهِ حَتَّى يَرْجِعَ.

2647 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स तलबे इल्म के लिए निकले तो वापस आने तक वह अल्लाह के रास्ते में है।''

ज़ईफ़: मोजमुस सगीर: 380. हिल्या: 10/290.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है। और बअ़ज़ ने इसे मर्फू ज़िक्र नहीं किया।

2648 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حُمَيْدٍ الرَّازِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُعَلَّى، قَالَ: حَدَّثَنَا زِيَادُ بْنُ خَيْثَمَةَ، عَنْ أَبِي دَاوُدَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ سَخْبَرَةَ، عَنْ سَخْبَرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: مَنْ طَلَبَ العِلْمَ كَانَ كَفَّارَةً لِمَا مَضَى.

2648 - सय्यदना सख़्बरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस शख़्स ने इल्म हासिल किया तो वह इल्म उसके पिछले कामों का कफ़्फ़ारा हो जाएगा।''

मौज़ू: दारमी: 567. अल-मोजमुल कबीर:6616.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस जईफ़ुल इस्नाद है। अबू दाऊद का नाम नफ़ीउल आमा है इसके बारे में क़तादा और दीगर उलमा ने जरह की है। यह हदीस में जईफ है। नीज़ अब्दुल्लाह बिन सख़्बरा और उनके वालिद से कुछ ख़ास रिवायात मारूफ़ नहीं हैं।

3 بَابُ مَا جَاءَ فِي كِتْمَانِ العِلْمِ

3 - इल्म छिपाना।

2649 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ بُدَيْلِ بْنِ قُرَيْشٍ اليَامِيُّ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ نُمَيْرٍ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ زَاذَانَ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ

2649 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस शख़्स से इल्म की कोई ऐसी बात पूछी

الحَكَمِ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَنْ سُئِلَ عَنْ عِلْمٍ عَلِمَهُ ثُمَّ كَتَمَهُ أُلْجِمَ يَوْمَ القِيَامَةِ بِلِجَامٍ مِنْ نَارٍ.

जाए जिसे वह जानता हो फिर वह उसे छिपा ले तो क़यामत के दिन उसे आग की लगाम दी जायेगी।''

सहीह: अबू दाऊद: 3658. इब्ने माजह:261

वज़ाहत: इस बारे में जाबिर और अब्दुल्लाह बिन उमर (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) की हदीस हसन है।

4 بَابُ مَا جَاءَ فِي الِاسْتِيصَاءِ بِمَنْ يَطْلُبُ العِلْمَ

4 - तालिबे इल्म की ख़ैरख़्वाही करना।

2650 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ الحَفَرِيُّ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ أَبِي هَارُونَ العَبْدِيِّ، قَالَ: كُنَّا نَأْتِي أَبَا سَعِيدٍ، فَيَقُولُ: مَرْحَبًا بِوَصِيَّةِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، إِنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ النَّاسَ لَكُمْ تَبَعٌ، وَإِنَّ رِجَالاً يَأْتُونَكُمْ مِنْ أَقْطَارِ الأَرَضِينَ يَتَفَقَّهُونَ فِي الدِّينِ، فَإِذَا أَتَوْكُمْ فَاسْتَوْصُوا بِهِمْ خَيْرًا.

2650 - अबू हारून अब्दी रिवायत करते हैं कि हम अबू सईद के पास आए तो वह फ़रमाने लगे: रसूलुल्लाह (ﷺ) की वसीयत के साथ तुम्हें खुश आमदेद नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "लोग तुम्हारे पीछे ताबे हैं और ज़मीन के किनारों से कुछ लोग तुम्हारे पास दीन की समझ हासिल करने आयेंगे तो जब वह तुम्हारे पास आयें तो तुम उनकी ख़ैर ख़्वाही करना।''

ज़ईफ़: इब्ने माजह:249. अब्दुर्रज्जाक़:20466

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, अली बिन अब्दुल्लाह, यह्या बिन सईद का कौल नक़ल करते हैं कि शोबा, अबू हारून अब्दी को ज़ईफ़ कहा करते थे।

यह्या बिन सईद फ़रमाते हैं, इब्ने औन अपनी वफ़ात तक अबू हारून अब्दी से रिवायत करते रहे। अबू हारून का न. ा उमारा बिन जुवैन है।

2651 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا نُوحُ بْنُ قَيْسٍ، عَنْ أَبِي هَارُونَ العَبْدِيِّ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يَأْتِيكُمْ رِجَالٌ مِنْ قِبَلِ الْمَشْرِقِ يَتَعَلَّمُونَ، فَإِذَا جَاءُوكُمْ فَاسْتَوْصُوا بِهِمْ خَيْرًا

2651 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम्हारे पास मश्रिक़ की तरफ़ से कुछ लोग दीन सीखने आयेंगे चुनांचे जब वह तुम्हारे पास आएं तुम उनकी ख़ैर ख़्वाही करना।'' रावी कहते हैं, फिर अबू सईद (ﷺ) जब भी हमें

قَالَ: فَكَانَ أَبُو سَعِيدٍ، إِذَا رَآنَا قَالَ: مَرْحَبًا بِوَصِيَّةِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

देखते तो कहते रसूलुल्लाह (ﷺ) की वसीयत के मुताबिक़ तुम्हें ख़ुश आमदेद।

ज़ईफ़: गुज़िश्ता हदीस देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस हदीस को हम बवास्ता अबू हारून अब्दी ही अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) से जानते हैं।

5 بَابُ مَا جَاءَ فِي ذَهَابِ الْعِلْمِ

5 - इल्म का उठ जाना।

2652 - حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ إِسْحَاقَ الْهَمْدَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ اللَّهَ لاَ يَقْبِضُ الْعِلْمَ انْتِزَاعًا يَنْتَزِعُهُ مِنَ النَّاسِ وَلَكِنْ يَقْبِضُ الْعِلْمَ بِقَبْضِ الْعُلَمَاءِ، حَتَّى إِذَا لَمْ يَتْرُكْ عَالِمًا اتَّخَذَ النَّاسُ رُءُوسًا جُهَّالاً فَسُئِلُوا فَأَفْتَوْا بِغَيْرِ عِلْمٍ فَضَلُّوا وَأَضَلُّوا.

2652 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला इल्म को एक बार ही लोगों से खींच कर नहीं छीनेगा, बल्कि उलमा को कब्ज़ करके इल्म छीनेगा, यहाँ तक कि जब कोई आलिम नहीं बचेगा, तो लोग जाहिलों को सरदार बना लेंगे फिर उन से पूछा जाएगा तो वह बग़ैर इल्म फत्वा देकर ख़ुद भी गुमराह होंगे और लोगों को भी गुमराह करेंगे।''

बुख़ारी:100. मुस्लिम:2673. इब्ने माजह:52.

वज़ाहत: इस बारे में आयशा और ज़ियाद बिन लबीद (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है और यह हदीस ज़ोहरी से भी बवास्ता सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) से मर्वी है नीज़ बवास्ता उर्वा, सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) से भी नबी (ﷺ) की हदीस इसी तरह मर्वी है।

2653 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ صَالِحٍ قَالَ: حَدَّثَنِي مُعَاوِيَةُ بْنُ صَالِحٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ نُفَيْرٍ، عَنْ أَبِيهِ جُبَيْرِ بْنِ نُفَيْرٍ، عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ، قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ

2653 - सय्यदना अबू दर्दा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि हम नबी (ﷺ) के साथ थे तो आप ने अपनी निगाह आसमान की तरफ़ उठाई फिर फ़रमाया, "यह लोगों से इल्म छीन जाने का वक़्त है यहाँ तक कि उन्हें इस इल्म की किसी चीज़ पर कुदरत नहीं होगी।'' तो जियाद बिन

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَشَخَصَ بِبَصَرِهِ إِلَى السَّمَاءِ ثُمَّ قَالَ: هَذَا أَوَانُ يُخْتَلَسُ العِلْمُ مِنَ النَّاسِ حَتَّى لاَ يَقْدِرُوا مِنْهُ عَلَى شَيْءٍ فَقَالَ زِيَادُ بْنُ لَبِيدٍ الأَنْصَارِيُّ: كَيْفَ يُخْتَلَسُ مِنَّا وَقَدْ قَرَأْنَا القُرْآنَ فَوَاللَّهِ لَنَقْرَأَنَّهُ وَلَنُقْرِئَنَّهُ نِسَاءَنَا وَأَبْنَاءَنَا، فَقَالَ: ثَكِلَتْكَ أُمُّكَ يَا زِيَادُ، إِنْ كُنْتُ لأَعُدُّكَ مِنْ فُقَهَاءِ أَهْلِ الْمَدِينَةِ هَذِهِ التَّوْرَاةُ وَالإِنْجِيلُ عِنْدَ اليَهُودِ وَالنَّصَارَى فَمَاذَا تُغْنِي عَنْهُمْ؟ قَالَ جُبَيْرٌ: فَلَقِيتُ عُبَادَةَ بْنَ الصَّامِتِ، قُلْتُ: أَلاَ تَسْمَعُ إِلَى مَا يَقُولُ أَخُوكَ أَبُو الدَّرْدَاءِ؟ فَأَخْبَرْتُهُ بِالَّذِي قَالَ أَبُو الدَّرْدَاءِ قَالَ: صَدَقَ أَبُو الدَّرْدَاءِ، إِنْ شِئْتَ لأُحَدِّثَنَّكَ بِأَوَّلِ عِلْمٍ يُرْفَعُ مِنَ النَّاسِ؟ الخُشُوعُ، يُوشِكُ أَنْ تَدْخُلَ مَسْجِدَ جَمَاعَةٍ فَلاَ تَرَى فِيهِ رَجُلاً خَاشِعًا.

लबीद अंसारी (ﷺ) ने कहा: हम से इल्म कैसे छीना जाएगा? जब कि हम ने कुरआन पढ़ लिया है, अल्लाह की क़सम! हम इसे ख़ुद भी पढ़ेंगे और अपनी बीवियों और बेटों को पढ़ाते रहेंगे। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, " ऐ जियाद तुम्हें तुम्हारी मां गुम पाए, मैं तो तुम्हें मदीना के फ़ुक़हा में शुमार करता था, यह तौरात इंजील, यहूदियों और ईसाइयों के पास है फिर यह उनके क्या काम आयें?'' जुबैर कहते हैं, फिर मेरी मुलाक़ात उबादा बिन सामित (ﷺ) से हुई तो मैंने कहा: क्या आप ने अपने भाई अबू दर्दा की बात नहीं सुनी? फिर मैंने उन्हें अबू दर्दा (ﷺ) की बात बताई तो वह कहने लगे: अबू दर्दा (ﷺ) ने सच कहा, अगर तुम चाहते हो तो मैं तुम्हें वह इल्म ज़रूर बताऊँ जो लोगों के दिलों में से सब से पहले छीना जाएगा। वह खुशूअ है। क़रीब है कि जामा मस्जिद में जाओ तो तुम्हें अल्लाह से डरने वाला कोई भी नज़र न आए।

सहीह: दारमी: 294. हाकिम: 1/99.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है और मुआविया बिन सालेह अहले हदीस के नज़दीक सिक़ह हैं, यह्या बिन सईद क़त्तान के अलावा हम किसी को नहीं जानते जिसने उनके बारे में जरह की हो। मुआविया बिन सालेह से ऐसे ही मर्वी है। और बअ़ज़ ने इस हदीस को अब्दुर्रहमान बिन जुबैर बिन नुफ़ैर से उन्होंने अपने बाप से बवास्ता औफ़ बिन मालिक नबी (ﷺ) से रिवायत किया है।

6 بَابُ مَا جَاءَ فِيمَنْ يَطْلُبُ بِعِلْمِهِ الدُّنْيَا

6 - अपने इल्म से दुनिया हासिल करने वाला

2654 - حَدَّثَنَا أَبُو الأَشْعَثِ أَحْمَدُ بْنُ الْمِقْدَامِ العِجْلِيُّ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أُمَيَّةُ بْنُ خَالِدٍ،

2654 - सय्यदना काब बिन मालिक (ﷺ) रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप फ़रमा रहे थे: "जो शख़्स इसलिए

قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ يَحْيَى بْنِ طَلْحَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: مَنْ طَلَبَ العِلْمَ لِيُجَارِيَ بِهِ العُلَمَاءَ أَوْ لِيُمَارِيَ بِهِ السُّفَهَاءَ أَوْ يَصْرِفَ بِهِ وُجُوهَ النَّاسِ إِلَيْهِ أَدْخَلَهُ اللَّهُ النَّارَ.

इल्म हासिल करे कि उसके साथ उलमा से मुनाज़रा करे और बेवक़ूफ़ों से झगड़ा करे और लोगों के चेहरे अपनी तरफ़ मुतवज्जा करे तो अल्लाह उसे जहन्नम की आग में दाख़िल कर देगा।''

हसन: इब्ने हिब्बान: 1/ 133.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है: हम इसे इसी सनद से ही जानते हैं और इस्हाक़ बिन यह्या बिन तल्हा क़वी नहीं है उसके हाफ़िज़े की वजह से क़लाम की गई है।

2655 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ نَصْرِ بْنِ عَلِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادٍ الهُنَائِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ أَيُّوبَ السَّخْتِيَانِيِّ، عَنْ خَالِدِ بْنِ دُرَيْكٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ تَعَلَّمَ عِلْمًا لِغَيْرِ اللهِ أَوْ أَرَادَ بِهِ غَيْرَ اللهِ فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ.

2655 - सय्यदना इब्ने उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस ने गैरुल्लाह के लिए इल्म सीखा, या उसके साथ गैरुल्लाह का इरादा किया तो वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।''

ज़ईफ़: इब्ने माजह:258. अल-कामिल:5/ 1827

वज़ाहत: इस बारे में जाबिर (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे इसी सनद से ही अय्यूब के तरीक़ से जानते हैं।

7 بَابُ مَا جَاءَ فِي الحَثِّ عَلَى تَبْلِيغِ السَّمَاعِ

7 - दीन की सुनी हुई बातें आगे पहुंचाने की तरगीब।

2656 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عُمَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، مِنْ وَلَدِ عُمَرَ بْنِ

2656 - अब्दुर्रहमान बिन अबान बिन उस्मान अपने बाप से रिवायत करते हैं कि ज़ैद बिन साबित (رضي الله عنه) दोपहर के वक़्त मरवान के पास से निकले तो हमने कहा: उस (मरवान) ने

الخَطَّابِ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ أَبَانَ بْنِ عُثْمَانَ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: خَرَجَ زَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ، مِنْ عِنْدِ مَرْوَانَ نِصْفَ النَّهَارِ، قُلْنَا: مَا بَعَثَ إِلَيْهِ هَذِهِ السَّاعَةَ إِلاَّ لِشَيْءٍ يَسْأَلُهُ عَنْهُ، فَقُمْنَا فَسَأَلْنَاهُ، فَقَالَ: نَعَمْ، سَأَلَنَا عَنْ أَشْيَاءَ سَمِعْنَاهَا مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: نَضَّرَ اللَّهُ امْرَأً سَمِعَ مِنَّا حَدِيثًا فَحَفِظَهُ حَتَّى يُبَلِّغَهُ غَيْرَهُ، فَرُبَّ حَامِلِ فِقْهٍ إِلَى مَنْ هُوَ أَفْقَهُ مِنْهُ، وَرُبَّ حَامِلِ فِقْهٍ لَيْسَ بِفَقِيهٍ.

इस वक़्त उन्हें किसी चीज़ के बारे में पूछने के लिए ही बुलाया होगा, फिर हम खड़े हुए उन से पूछा तो उन्होंने फ़रमाया, " हाँ उस मरवान ने हम से कुछ चीजों के बारे में पूछा जो हम ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी थीं, मैंने अल्लाह के रसूल (ﷺ) से सुना आप फ़रमा रहे थे: "अल्लाह तआला उस बन्दे को शादाब रखे जिसने हम से हदीस सुनी फिर उसको याद रखा यहाँ तक कि किसी और तक उसे पहुंचा दिया, और कितने ही फिक़्ह को उठा कर उस शख़्स की तरफ़ ले जाते जो उन से भी बड़ा फ़क़ीह होता है और कितने ही फिक़्ह उठाने वाले फ़क़ीह नहीं होते।''

सहीह: अबू दाऊद:3660.इब्ने माजह:230

वज़ाहत: इस बारे में अब्दुल्लाह बिन मसऊद, मुआज़ बिन जबल, जुबैर बिन मुतइम, अबू दर्दा और अनस (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, ज़ैद बिन साबित (رضي الله عنه) की हदीस हसन है।

2657 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: نَضَّرَ اللَّهُ امْرَأً سَمِعَ مِنَّا شَيْئًا فَبَلَّغَهُ كَمَا سَمِعَ، فَرُبَّ مُبَلِّغٍ أَوْعَى مِنْ سَامِعٍ.

2657 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आप फ़रमा रहे थे: "अल्लाह तआला उस आदमी को शादाब रखे जिस ने हम से कुछ सुना, फिर उसे जिस तरह सुना था (आगे) पहुंचा दिया, कुछ लोग जिन्हें बात पहुंचाई जाती है वह सुनने वाले से ज़्यादा याद रखने वाले होते हैं।''

सहीह: इब्ने माजह:232. हुमैदी:88.मुसनद अहमद:1/436. इब्ने हिब्बान:66.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है और इसे अब्दुल मलिक बिन उमैर ने भी अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह से रिवायत किया है।

2658 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِيهِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: نَضَّرَ اللَّهُ امْرَأً سَمِعَ مَقَالَتِي فَوَعَاهَا وَحَفِظَهَا وَبَلَّغَهَا، فَرُبَّ حَامِلِ فِقْهٍ إِلَى مَنْ هُوَ أَفْقَهُ مِنْهُ " ثَلاَثٌ لاَ يُغِلُّ عَلَيْهِنَّ قَلْبُ مُسْلِمٍ: إِخْلاَصُ العَمَلِ لِلَّهِ، وَمُنَاصَحَةُ أَئِمَّةِ الْمُسْلِمِينَ، وَلُزُومُ جَمَاعَتِهِمْ، فَإِنَّ الدَّعْوَةَ تُحِيطُ مِنْ وَرَائِهِمْ.

2658 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (﵁) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फर्माया: "अल्लाह तआला उस आदमी को शादाब रखे जिसने मेरी बात को सुना, फिर उसे दिल में बिठाया, उसे याद रखा और आगे पहुंचाया, कुछ दीन की बात उसे पहुँचाते हैं जो उस से ज़्यादा फकीह होता है। तीन चीज़ों पर किसी मुसलमान का दिल ख़यानत नहीं करता; अल्लाह के लिए ख़ुलूस से अमल करना, मुसलमानों के हाकिमों की खैर ख़्वाही और उनकी जमाअत को लाजिम रखना, यक़ीनन दावत उनके पीछे से घेर लेगी।''

सहीह।

8 بَابُ مَا جَاءَ فِي تَعْظِيمِ الكَذِبِ عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

8 - रसूलुल्लाह (ﷺ) पर झूठ बोलना बहुत बड़ा गुनाह है।

2659 - حَدَّثَنَا أَبُو هِشَامٍ الرِّفَاعِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ عَيَّاشٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَاصِمٌ، عَنْ زِرٍّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ.

2659 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (﵁) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, "जिस ने मुझ पर जान बूझ कर झूठ बोला वह अपना ठिकाना जहन्नम की आग बना ले।''

सहीह मुतवातिर: इब्ने माजह:30. मुसनद अहमद:1/402. अबू याला 5251.

2660 - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ مُوسَى الفَزَارِيُّ، ابْنُ بِنْتِ السُّدِّيِّ، قَالَ: حَدَّثَنَا شَرِيكُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، عَنْ مَنْصُورِ بْنِ الْمُعْتَمِرِ، عَنْ رِبْعِيِّ بْنِ حِرَاشٍ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ

2660 - सय्यदना अली बिन अबी तालिब (﵁) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फर्माया, "मुझ पर झूठ न बोलो क्योंकि जिसने मुझ पर झूठ बोला वह जहन्नम में दाख़िल होगा।''

बुख़ारी:106. मुस्लिम:1. अबू दाऊद:31.

أَبِي طَالِبٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ تَكْذِبُوا عَلَيَّ فَإِنَّهُ مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ يَلِجُ فِي النَّارِ.

वज़ाहत: इस बारे में अबू बक्र, उमर, उस्मान, ज़ुबैर, सईद बिन ज़ैद, अब्दुल्लाह बिन अम्र, अनस, जाबिर, इब्ने अब्बास, अबू सईद, अम्र बिन अब्सा, उक़्बा बिन आमिर, मुआविया, बुरैदा, अबू मूसा, अबू उमामा, अब्दुल्लाह बिन उमर, मुक़्ने बिन औस सक़फ़ी (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, सय्यदना अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) की हदीस हसन सहीह है। अब्दुर्रहमान बिन महदी फ़रमाते हैं, मंसूर बिन मोतमिर अहले कूफ़ा में सब से ज़्यादा पुख़्ता रावी थे। वकीअ कहते हैं, रिबई बिन हिराश ने इस्लाम में एक भी झूठ नहीं बोला।

2661 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ بْنُ سَعْدٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ، حَسِبْتُ أَنَّهُ قَالَ، مُتَعَمِّدًا فَلْيَتَبَوَّأْ بَيْتَهُ مِنَ النَّارِ.

2661 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, "जिस ने मुझ पर झूठ बोला, (रावी कहते हैं) मेरे ख़याल में आप ने यह भी फ़रमाया, "जान बूझ कर'' तो वह अपना घर जहन्नम की आग बना ले।''

सहीह : बुख़ारी: 108 मुस्लिम; 2 अबू दाऊद:39 तोफतुल अशराफ़: 1525.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस सनद से बतरीके ज़ोहरी अनस (رضي الله عنه) से मर्वी यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है और यह हदीस कई तुरूक़ (सनदों) से बवास्ता सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) से मर्वी है।

9 بَابُ مَا جَاءَ فِيمَنْ رَوَى حَدِيثًا وَهُوَ يَرَى أَنَّهُ كَذِبٌ

9 - झूठी हदीस बयान करने वाला।

2662 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ أَبِي ثَابِتٍ، عَنْ مَيْمُونِ بْنِ أَبِي

2662 - सय्यदना मुग़ीरा बिन शोबा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़र्माया: "जिस ने मेरी तरफ़ से एक ऐसी हदीस बयान

شَبِيبٍ، عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ حَدَّثَ عَنِّي حَدِيثًا وَهُوَ يَرَى أَنَّهُ كَذِبٌ فَهُوَ أَحَدُ الكَاذِبِينَ.

की जो उसके मुताबिक़ झूठ है तो वह भी झूठों में से एक झूठा शख़्स है।''

इब्ने माजह:41. मुस्लिम:1/7.मुसनद अहमद:4/250.

वज़ाहत: इस बारे में अली बिन अबी तालिब और समुरा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और शोबा ने हकम से बवास्ता अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला, सय्यदना समुरा (ﷺ) के ज़रिए नबी (ﷺ) से इस हदीस को रिवायत किया है।

नीज़ आमश और इब्ने अबी लैला ने अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला से बवास्ता अली (ﷺ) नबी करीम (ﷺ) से रिवायत की है।

लेकिन अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला की समुरा से रिवायतकर्दा हदीस मुहद्दिसीन के नज़दीक ज़्यादा सहीह है। कहते हैं, मैंने अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान से हदीसे नबवी "जिस ने मेरी तरफ़ से कोई ऐसी हदीस बयान की जिसे वह झूठी समझता है तो वह एक झूठा है।" के बारे में पुछते हुए उनसे कहा जिसने कोई हदीस बयान की और उसे इल्म हो कि उसकी सनद सहीह नहीं है क्या इस बात का डर होगा कि यह नबी (ﷺ) की हदीस के हुक्म में दाख़िल है? या जब लोग कोई मुर्सल हदीस बयान करें फिर बअज़ उसे मुत्तसिल कर दें या उसकी सनद तब्दील कर दें तो यह नबी (ﷺ) की हदीस के हुक्म में दाख़िल होगा? तो उन्होंने कहा: नहीं, इस हदीस का मतलब यह है कि जब कोई शख़्स ऐसी हदीस बयान करे जिसकी असल नबी (ﷺ) से साबित न हो फिर भी वह इसे बयान कर दे तो मुझे डर है कि वह नबी (ﷺ) की इस हदीस के हुक्म में दाख़िल न हो जाये।

10 بَابُ مَا نُهِيَ عَنْهُ أَنْ يُقَالَ عِنْدَ حَدِيثِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

10 - हदीसे रसूल (ﷺ) सुनकर अपनी बातें न की जाए।

2663 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، وَسَالِمِ أَبِي النَّضْرِ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي رَافِعٍ، عَنْ أَبِي

2663 - सय्यदाना अबू राफ़े (ﷺ) और दीगर मर्फ़ू हदीस बयान करते हैं कि आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं तुम में से किसी शख़्स को अपनी मस्नद पर टेक लगाये हुए न पाऊँ

رَافِعٍ، وَغَيْرِهِ رَفَعَهُ قَالَ: لاَ أُلْفِيَنَّ أَحَدَكُمْ مُتَّكِئًا عَلَى أَرِيكَتِهِ يَأْتِيهِ أَمْرٌ مِمَّا أَمَرْتُ بِهِ أَوْ نَهَيْتُ عَنْهُ، فَيَقُولُ: لاَ أَدْرِي، مَا وَجَدْنَا فِي كِتَابِ اللهِ اتَّبَعْنَاهُ.

कि उसके पास मेरा कोई हुक्म या मेरी मनाकर्दा बात पहुंचे तो वह कहे: मैं नहीं जानता जो हम ने किताबुल्लाह में पा लिया है हम तो उसकी पैरवी करेंगे।''

सहीह: अबू दाऊद:4605.इब्ने माजह:13.मुसनद अहमद:6/8.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और बअ़ज़ ने इसे सुफ़ियान से बवास्ता इब्ने मुन्कदिर, नबी (ﷺ) से मुर्सल जबकि सालिम अबू नज़र से उबैदुल्लाह बिन अबी राफ़े के वास्ते के साथ उनके बाप के ज़रिए नबी (ﷺ) से मर्फू रिवायत किया है।

इब्ने उयय्ना जब इस हदीस को इन्फिरादी तौर पर बयान करते थे तो मुहम्मद बिन मुन्कदिर और सालिम बिन अबी नज़र की हदीस को वाज़ेह कर देते और जब इकट्ठा बयान करते तो इसी तरह रिवायत करते।

अबू राफ़े नबी (ﷺ) के आज़ादकर्दा थे। उनका नाम असलम था।

2664 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ صَالِحٍ، عَنِ الحَسَنِ بْنِ جَابِرٍ اللَّخْمِيِّ، عَنِ الْمِقْدَامِ بْنِ مَعْدِي كَرِبَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَلاَ هَلْ عَسَى رَجُلٌ يَبْلُغُهُ الحَدِيثُ عَنِّي وَهُوَ مُتَّكِئٌ عَلَى أَرِيكَتِهِ، فَيَقُولُ: بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ كِتَابُ اللهِ، فَمَا وَجَدْنَا فِيهِ حَلاَلاً اسْتَحْلَلْنَاهُ. وَمَا وَجَدْنَا فِيهِ حَرَامًا حَرَّمْنَاهُ، وَإِنَّ مَا حَرَّمَ رَسُولُ اللهِ كَمَا حَرَّمَ اللَّهُ.

2664 - सय्यदना मिक्दाम बिन मअदीकरिब (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया: "ख़बरदार! हो सकता है कि किसी आदमी को मेरी हदीस पहुंचे और अपनी मस्नद पर तकिया लगा कर बैठा हो चुनांचे वह कहे : हमारे और तुम्हारे दर्मियान अल्लाह की किताब ही काफी है। इसमें हमने जो हलाल पाया हलाल जान लिया और जो हराम पाया हराम जान लिया, लेकिन याद रखो! जो चीज़ अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने हराम की है वह ऐसे ही है जैसे अल्लाह ने हराम की है।''

सहीह: इब्ने माजह:12.अबू दाऊद:4604. मुसनद अहमद:4/132. दारमी:592.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।

11 بَابُ مَا جَاءَ فِي كَرَاهِيَةِ كِتَابَةِ العِلْمِ

11 - किताबते इल्म की कराहत।

2665 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، قَالَ: اسْتَأْذَنَّا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الكِتَابَةِ فَلَمْ يَأْذَنْ لَنَا.

2665 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि हमने नबी (ﷺ) से अहादीस लिखने की इजाज़त मांगी तो आप ने हमें इजाज़त न दी।

मुस्लिम:3004. दारमी:457.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस एक और सनद से भी ज़ैद बिन असलम से इसी तरह मर्वी है। इसे हम्माम ने ज़ैद बिन असलम से रिवायत किया है।

12 بَابُ مَا جَاءَ فِي الرُّخْصَةِ فِيهِ

12 - इस काम की इजाज़त।

2666 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ الخَلِيلِ بْنِ مُرَّةَ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: كَانَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ يَجْلِسُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَيَسْمَعُ مِنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الحَدِيثَ فَيُعْجِبُهُ وَلاَ يَحْفَظُهُ، فَشَكَا ذَلِكَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي أَسْمَعُ مِنْكَ الحَدِيثَ فَيُعْجِبُنِي وَلاَ أَحْفَظُهُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اسْتَعِنْ بِيَمِينِكَ، وَأَوْمَأَ بِيَدِهِ لِلْخَطِّ.

2666 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि अंसार का एक आदमी रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास बैठा करता था, वह नबी (ﷺ) से हदीस सुनता जो उसे अच्छी लगती, लेकिन वह उसे याद नहीं रख सकता था उस ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से शिकायत करते हुआ कहा: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! मैं आप से हदीस सुनता हूँ जो मुझे अच्छी लगती है लेकिन मैं उसे याद नहीं कर सकता तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अपने दायें हाथ से तआवुन ले लो।'' और आप(ﷺ) ने अपने हाथ से लिखने का इशारा किया।

ज़ईफ़: अल-कामिल: 3/928.

वज़ाहत: इस बारे में अब्दुल्लाह बिन उमर (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, इस हदीस की सनद मज़बूत नहीं है। मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी फ़रमाते हैं, ख़लील बिन मुर्रा मुन्करूल हदीस है।

2667 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى، وَمَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالاَ: حَدَّثَنَا الوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، عَنِ الأَوْزَاعِيِّ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَطَبَ فَذَكَرَ القِصَّةَ فِي الحَدِيثِ قَالَ أَبُو شَاهٍ: اكْتُبُوا لِي يَا رَسُولَ اللَّهِ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اكْتُبُوا لأَبِي شَاهٍ وَفِي الحَدِيثِ قِصَّةٌ.

2667 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने खुत्बा दिया। फिर हदीस में एक किस्सा बयान किया तो अबू शाह कहने लगा: ऐ अल्लाह के रसूल मुझे लिख दें तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अबू शाह को लिख दो।" नीज़ इस हदीस में एक किस्सा भी है।

बुख़ारी:112. मुस्लिम:1335. अबू दाऊद:2017.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और शैबान ने भी यह्या बिन अबी कसीर से ऐसी ही रिवायत की है।

2668 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ وَهْبِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَخِيهِ وَهُوَ هَمَّامُ بْنُ مُنَبِّهٍ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ: لَيْسَ أَحَدٌ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَكْثَرَ حَدِيثًا عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنِّي إِلاَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَمْرٍو فَإِنَّهُ كَانَ يَكْتُبُ وَكُنْتُ لاَ أَكْتُبُ.

2668 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) फ़रमाते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) के सहाबा में से कोई शख़्स मुझ से ज़्यादा रसूलुल्लाह (ﷺ) की अहादीस बयान करने वाला नहीं है सिवाए अब्दुल्लाह बिन अम्र के क्योंकि वह लिखा करते थे और मैं लिखता नहीं था।

बुख़ारी:113. मुसनद अहमद:2/248

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और वहब बिन मुनब्बेह के भाई हम्माम बिन मुनब्बेह हैं।

13 - बनी इस्राईल की रिवायात बयान करना।

13 بَابُ مَا جَاءَ فِي الحَدِيثِ عَنْ بني إسرائيل

2669 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया: "मेरी तरफ़ से लोगों को पहुंचा दो अगरचे एक आयत ही हो, बनी इस्राईल की तरफ़ से बयान करने में कोई हर्ज नहीं और जिसने मुझ पर जान बूझ कर झूठ बोला वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।"

बुख़ारी:3461.मुसनद अहमद:2/ 159.दारमी:548.

2669 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، عَنِ ابْنِ ثَوْبَانَ هُوَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ ثَابِتِ بْنِ ثَوْبَانَ، عَنْ حَسَّانَ بْنِ عَطِيَّةَ، عَنْ أَبِي كَبْشَةَ السَّلُولِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: بَلِّغُوا عَنِّي وَلَوْ آيَةً وَحَدِّثُوا عَنْ بني إسرائيل وَلاَ حَرَجَ وَمَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

अबू ईसा कहते हैं, हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने वह कहते हैं, हमें अबू आसिम ने औज़ाई से उन्होंने हस्सान बिन अतिय्या से बवास्ता अबू कब्शा सलूली, सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (ﷺ) से नबी (ﷺ) की ऐसी ही हदीस बयान की है। और यह हदीस सहीह है।

14 - नेकी की तरफ़ रहनुमाई करने वाला उस काम को करने वाले की तरह है।

14 بَابُ مَا جَاءَ الدَّالُّ عَلَى الخَيْرِ كَفَاعِلِهِ

2670 - सय्यदना अनस बिन मालिक (ﷺ) बयान करते हैं कि एक आदमी नबी (ﷺ) के पास आकर सवारी मांगने लगा तो आप(ﷺ) के पास कोई ऐसी चीज़ न थी जिस पर उसे सवार करते, चुनांचे आप(ﷺ) ने उसे किसी और का बताया तो उस ने उसे सवारी दे दी, फिर

2670 - حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ بَشِيرٍ، عَنْ شَبِيبِ بْنِ بِشْرٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلٌ يَسْتَحْمِلُهُ، فَلَمْ يَجِدْ عِنْدَهُ مَا يَحْمِلُهُ فَدَلَّهُ

عَلَى آخَرَ فَحَمَلَهُ، فَأَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرَهُ فَقَالَ: إِنَّ الدَّالَّ عَلَى الخَيْرِ كَفَاعِلِهِ.

वह नबी (ﷺ) के पास आया और आप(ﷺ) को इस बारे में आगाह किया तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अच्छे काम की रहनुमाई करने वाला उसे करने वाले की तरह ही है।''

हसन सहीह।

वज़ाहत: इस बारे में अबू मसऊद बद्री और बुरैदा (رضی اللہ عنہ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं, सय्यदना अनस बिन मालिक (رضی اللہ عنہ) के ज़रिए नबी (ﷺ) से मर्वी यह हदीस इस सनद से ग़रीब है।

2671 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الأَعْمَشِ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا عَمْرٍو الشَّيْبَانِيَّ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ البَدْرِيِّ: أَنَّ رَجُلاً أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْتَحْمِلُهُ فَقَالَ: إِنَّهُ قَدْ أُبْدِعَ بِي، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ائْتِ فُلاَنًا، فَأَتَاهُ فَحَمَلَهُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ دَلَّ عَلَى خَيْرٍ فَلَهُ مِثْلُ أَجْرِ فَاعِلِهِ، أَوْ قَالَ: عَامِلِهِ.

2671 - सय्यदना अबू मसऊद बद्री (رضی اللہ عنہ) से रिवायत है कि एक आदमी नबी (ﷺ) के पास आकर आप से सवारी मांगने लगा, उस ने कहा मेरा जानवर मर गया है तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "फुलां शख़्स के पास जाओ।'' वह उसके पास गया तो उसने सवारी दे दी फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस ने अच्छे काम पर रहनुमाई की उसके लिए भी काम करने वाले की तरह अज्र है। रावी कहते हैं, आप(ﷺ) ने अमल करने वाला कहा।''

मुस्लिम; 1893. अबू दाऊद:5129. मुसनद अहमद:4/120.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

और अबू अम्र शैबानी का नाम साद बिन इयास और अबू मसऊद बद्री का नाम उक़्बा बिन अम्र (رضی اللہ عنہ) है।

अबू ईसा कहते हैं, हमें हसन बिन अली खल्लाल ने वह कहते हैं, हमें अब्दुल्लाह बिन नुमैर ने आमश से बवास्ता अबू अम्र शैबानी, अबू मसऊद (رضی اللہ عنہ) से नबी (ﷺ) की ऐसी ही हदीस बयान की है। और مثل أجر فاعله कहा इसमें शक नहीं किया।

2672 - सय्यदना अबू मूसा अश्अरी (ﷺ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "सिफारिश किया करो तुम्हें अज्र मिलेगा और अल्लाह अपने नबी की ज़बान पर जो चाहता है फ़ैसला करता है।''

बुख़ारी:1432. मुस्लिम:2627. अबू दाऊद:5131.निसाई:2556.

2672 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، وَالحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، وَغَيْرُ وَاحِدٍ قَالُوا: حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ بُرَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ جَدِّهِ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: اشْفَعُوا وَلْتُؤْجَرُوا، وَلْيَقْضِ اللَّهُ عَلَى لِسَانِ نَبِيِّهِ مَا شَاءَ

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

और बुरैद बिन अब्दुल्लाह बिन अबू बुर्दा बिन अबू मूसा अश्अरी से , सौरी और सुफ़ियान बिन उयय्ना ने रिवायत की है। बुरैद की कुनियत अबू बुर्दा थी। यह कूफा के रहने वाले थे और हदीस में सिक़ह् थे इन से शोबा, सौरी और इब्ने उयय्ना ने रिवायत की है। यह अबू मूसा अश्अरी (ﷺ) के पोते थे।

2673 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया: "जिस जान को भी ज़ुल्म के साथ क़त्ल किया जाता है तो आदम के बेटे (काबील) पर उसके खून का हिस्सा होता है क्योंकि उस ने ही सब से पहले क़त्ल का तरीक़ा निकाला था।'' अब्दुर्रज़्ज़ाक ने (أَسَنَّ الْقَتْلَ) की बजाये سَنَّ الْقَتْلَ कहा है। (मतलब दोनों का एक ही है।)

बुख़ारी:3335.मुस्लिम:1677. इब्ने माजह्:3616. निसाई:3985.

2673 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، وَعَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُرَّةَ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا مِنْ نَفْسٍ تُقْتَلُ ظُلْمًا إِلاَّ كَانَ عَلَى ابْنِ آدَمَ كِفْلٌ مِنْ دَمِهَا، وَذَلِكَ لأَنَّهُ أَوَّلُ مَنْ أَسَنَّ القَتْلَ وقَالَ عَبْدُ الرَّزَّاقِ: سَنَّ القَتْلَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

अबू ईसा कहते हैं, हमें इब्ने अबी उमर ने बवास्ता सुफ़ियान बिन उयय्ना, आमश से इसी सनद के साथ इसी मफ़्हुम की हदीस बयान की है उन्होंने भी سَنَّ القَتْلَ ही कहा है।

15 - जो शख़्स हिदायत की तरफ़ बुलाये उसकी पैरवी की जाए (उसका अज्र) या गुमराही की तरफ़ बुलाने वाला।

15 بَابُ مَا جَاءَ فِيمَنْ دَعَا إِلَى هُدًى فَاتُّبِعَ أَوْ إِلَى ضَلاَلَةٍ

2674 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया: " जिसने हिदायत की तरफ़ दावत दी उसके लिए उसके पैरवी करने वालों के अज्र की तरह अज्र होगा, लेकिन यह उन अमल करने वालों के अज्रों से कुछ भी कम नहीं करेगा। और जिस ने गुमराही की तरफ़ दावत दी उस पर उसकी पैरवी करने वालों के गुनाहों की तरह गुनाह होगा यह उनके गुनाहों से कुछ भी कम नहीं करेगा।''

मुस्लिम:2674. अबू दाऊद:4609.इब्ने माजह:206.

2674 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنِ العَلاَءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ دَعَا إِلَى هُدًى كَانَ لَهُ مِنَ الأَجْرِ مِثْلُ أُجُورِ مَنْ يَتَّبِعُهُ لاَ يَنْقُصُ ذَلِكَ مِنْ أُجُورِهِمْ شَيْئًا، وَمَنْ دَعَا إِلَى ضَلاَلَةٍ كَانَ عَلَيْهِ مِنَ الإِثْمِ مِثْلُ آثَامِ مَنْ يَتَّبِعُهُ، لاَ يَنْقُصُ ذَلِكَ مِنْ آثَامِهِمْ شَيْئًا.

2675 - सय्यदना जरीर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया: "जिस ने कोई अच्छा तरीक़ा ईजाद किया फिर उसकी पैरवी की गई तो उसे अपना अज्र भी मिलेगा और उसकी पैरवी करने वालों का भी। नीज़ उनके अज्रों में भी कमी नहीं होगी और जिस ने कोई बुराई का तरीक़ा ईजाद किया फिर उसकी पैरवी की गई तो उस पर उसका अपना बोझ भी होगा और उसकी पैरवी करने वालों के गुनाहों के बोझ की तरह भी लेकिन उनके गुनाहों से भी कमी नहीं होगी।''

1017. इब्ने माजह:203. निसाई:2554.

2675 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا الْمَسْعُودِيُّ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنِ ابْنِ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ سَنَّ سُنَّةَ خَيْرٍ فَاتُّبِعَ عَلَيْهَا فَلَهُ أَجْرُهُ وَمِثْلُ أُجُورِ مَنْ اتَّبَعَهُ غَيْرَ مَنْقُوصٍ مِنْ أُجُورِهِمْ شَيْئًا، وَمَنْ سَنَّ سُنَّةَ شَرٍّ فَاتُّبِعَ عَلَيْهَا كَانَ عَلَيْهِ وِزْرُهُ وَمِثْلُ أَوْزَارِ مَنْ اتَّبَعَهُ غَيْرَ مَنْقُوصٍ مِنْ أَوْزَارِهِمْ شَيْئًا.

वज़ाहत: इस बारे में हुज़ैफा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और कई तुरूक़ (सनदों) से बवास्ता जरीर बिन अब्दुल्लाह (ﷺ) नबी (ﷺ) से ऐसे ही मर्वी है।

नीज़ यह हदीस मुन्ज़िर बिन जरीर बिन अब्दुल्लाह से भी उनके बाप के ज़रिए नबी (ﷺ) से मर्वी है। इसी तरह अब्दुल्लाह बिन जरीर से भी उनके बाप के ज़रिए नबी (ﷺ) से मर्वी है।

16 بَابُ مَا جَاءَ فِي الأَخْذِ بِالسُّنَّةِ وَاجْتِنَابِ البِدَعِ

16 - सुन्नत पर अमल करना और बिदअत से बचना।

2676 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا بَقِيَّةُ بْنُ الوَلِيدِ، عَنْ بَحِيرِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ خَالِدِ بْنِ مَعْدَانَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَمْرٍو السُّلَمِيِّ، عَنِ العِرْبَاضِ بْنِ سَارِيَةَ، قَالَ: وَعَظَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمًا بَعْدَ صَلَاةِ الغَدَاةِ مَوْعِظَةً بَلِيغَةً ذَرَفَتْ مِنْهَا العُيُونُ وَوَجِلَتْ مِنْهَا القُلُوبُ، فَقَالَ رَجُلٌ: إِنَّ هَذِهِ مَوْعِظَةُ مُوَدِّعٍ فَمَاذَا تَعْهَدُ إِلَيْنَا يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: أُوصِيكُمْ بِتَقْوَى اللهِ وَالسَّمْعِ وَالطَّاعَةِ، وَإِنْ عَبْدٌ حَبَشِيٌّ، فَإِنَّهُ مَنْ يَعِشْ مِنْكُمْ يَرَى اخْتِلَافًا كَثِيرًا، وَإِيَّاكُمْ وَمُحْدَثَاتِ الأُمُورِ فَإِنَّهَا ضَلَالَةٌ فَمَنْ أَدْرَكَ ذَلِكَ مِنْكُمْ فَعَلَيْهِ بِسُنَّتِي وَسُنَّةِ الخُلَفَاءِ الرَّاشِدِينَ الْمَهْدِيِّينَ، عَضُّوا عَلَيْهَا بِالنَّوَاجِذِ.

2676 - सय्यदना इर्बाज़ बिन सारिया (ﷺ) बयान करते हैं कि एक दिन फज्र की नमाज़ के बाद रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हमें एक कामिल वअज़ किया जिसकी वजह से आँखों में आंसू आ गए और दिल दहल गए, तो एक आदमी कहने लगा: यह अल्विदा करने वाले की नसीहत है ऐ अल्लाह के रसूल{ﷺ! आप हमें क्या वसीयत करते हैं? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं तुम्हें अल्लाह के तक़्वा,और अमीर की बात सुनने और मानने की वसीयत करता हूँ अगरचे वह अमीर हब्शी गुलाम ही हो, तुम में से जो शख़्स ज़िंदा रहा वह बहुत इख़्तिलाफ़ देखेगा और दीन में नए कामों से बचना, क्योंकि वह गुमराही हैं, चुनांचे तुम में जो शख़्स उस वक़्त को पाले तो तुम मेरी और समझदार हिदायत याफ्ता ख़ुलफ़ा की सुन्नत को इख़्तियार करना, उसे अपने दाढ़ों से पकड़ लेना।''

सहोह: अबू दाऊद:4607. इब्ने माजह:42. मुसनद अहमद:4/ 126. दारमी:96.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और सौर बिन यज़ीद ने भी ख़ालिद बिन मअ्दान से बवास्ता अब्दुर्रहमान अस्सुलमी, इर्बाज़ बिन सारिया (رضي الله عنه) से नबी (ﷺ) की ऐसी ही हदीस बयान की है।

हमें यह हदीस हसन बिन अली खल्लाल और दीगर रावियों ने अबू आसिम से उन्होंने सौर बिन यज़ीद से उन्होंने ख़ालिद बिन मअ्दान से उन्होंने अब्दुर्रहमान बिन अम्र अस्सुलमी से बवास्ता इर्बाज़ बिन सारिया (رضي الله عنه) नबी करीम (ﷺ) से ऐसे ही रिवायत की है।

इर्बाज़ बिन सारिया की कुनियत अबू नजीह थी। नीज़ यह हदीस हुज्र बिन हुज्र से बवास्ता इर्बाज़ बिन सारिया (رضي الله عنه) नबी करीम (ﷺ) से मर्वी है।

2677 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ مَرْوَانَ بْنِ مُعَاوِيَةَ الفَزَارِيِّ، عَنْ كَثِيرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِبِلاَلِ بْنِ الْحَارِثِ: اعْلَمْ عَمْرَو بْنَ عَوْفٍ قَالَ: مَا أَعْلَمُ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: إِنَّهُ مَنْ أَحْيَا سُنَّةً مِنْ سُنَّتِي قَدْ أُمِيتَتْ بَعْدِي، فَإِنَّ لَهُ مِنَ الأَجْرِ مِثْلَ مَنْ عَمِلَ بِهَا مِنْ غَيْرِ أَنْ يَنْقُصَ مِنْ أُجُورِهِمْ شَيْئًا، وَمَنْ ابْتَدَعَ بِدْعَةَ ضَلاَلَةٍ لاَ تُرْضِي اللَّهَ وَرَسُولَهُ كَانَ عَلَيْهِ مِثْلُ آثَامِ مَنْ عَمِلَ بِهَا لاَ يَنْقُصُ ذَلِكَ مِنْ أَوْزَارِ النَّاسِ شَيْئًا.

2677 - कसीर बिन अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन औफ़ मुज़नी अपने बाप के ज़रिए अपने दादा (अम्र बिन औफ़ رضي الله عنه) से रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने बिलाल बिन हारिस से फ़रमाया, "जान लो'' उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल मैं क्या जानूं? आप ने फ़रमाया, "जिस ने मेरी वह सुन्नत ज़िंदा की जो मेरे बाद मर चुकी थी उसके लिए उस पर अमल करने वालों जितना अज्र होगा लेकिन उन अमल करने वालों के अज्र में कमी नहीं होगी और जिसने कोई गुमराही की बिद्अत निकाली जिसे अल्लाह और उसके रसूल पसंद नहीं करते उस के लिए अमल करने वालों के गुनाहों जितना गुनाह होगा यह अमल करने वाले लोगों के गुनाहों के बोझों में भी कमी नहीं करेगा।''

ज़ईफ़: इब्ने माजह्:209. अब्द बिन हुमैद:289.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन है। और मुहम्मद बिन उयय्ना मसीसी शाम के रहने वाले थे। और कसीर बिन अब्दुल्लाह, अम्र बिन औफ़ मुज़नी (رضي الله عنه) के पोते हैं।

2678 - حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ حَاتِمٍ الأَنْصَارِيُّ الْبَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيُّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، قَالَ: قَالَ أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، قَالَ لِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَا بُنَيَّ، إِنْ قَدَرْتَ أَنْ تُصْبِحَ وَتُمْسِيَ لَيْسَ فِي قَلْبِكَ غِشٌّ لأَحَدٍ فَافْعَلْ ثُمَّ قَالَ لِي: يَا بُنَيَّ وَذَلِكَ مِنْ سُنَّتِي، وَمَنْ أَحْيَا سُنَّتِي فَقَدْ أَحَبَّنِي، وَمَنْ أَحَبَّنِي كَانَ مَعِي فِي الجَنَّةِ وَفِي الحَدِيثِ قِصَّةٌ طَوِيلَةٌ.

2678 - सय्यदना अनस बिन मालिक (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझ से फ़र्माया: "ऐ बेटे! अगर तुम में इस बात की कुदरत है कि तुम सुबह और शाम इस हालत में करो कि तुम्हारे दिल में किसी के लिए कीना न हो तो यह काम ज़रूर करो।'' फिर आप ने मुझ से फ़रमाया, "ऐ बेटे! यह मेरी सुन्नत है और जिस ने मेरी सुन्नत को ज़िंदा किया उसने मुझ से मोहब्बत की और जिस ने मुझ से मोहब्बत की वह जन्नत में मेरे साथ होगा।''

ज़ईफ़: 589 के तहत तख़रीज देखें।

वज़ाहत: इस हदीस में एक तवील (लम्बा) किस्सा भी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, इस सनद से यह हदीस ग़रीब है। और मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अंसारी और उनके वालिद सिक़ह थे। नीज़ अली बिन ज़ैद सदूक़ रावी हैं लेकिन वह बसा औकात एक रिवायत को मर्फ़ू कह देते थे जबकि दूसरे उसे मौकूफ़ कहते थे। मैंने मुहम्मद बिन बश्शार से सुना कि अबू वलीद ने ज़िक्र किया शोबा कहते हैं, अली बिन ज़ैद ने हदीस बयान की,जो बहुत ज़्यादा मर्फ़ू अहादीस बयान करने वाले थे और हम सईद बिन मुसय्यब की अनस (ﷺ) से यही एक लम्बी हदीस जानते हैं जबकि उबादा बिन मैसरा अल मुन्क़िरी ने इस हदीस को बवास्ता अली बिन ज़ैद, अनस (ﷺ) से रिवायत किया है इसमें सईद बिन मुसय्यब का ज़िक्र नहीं किया।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, मैंने मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी से इस का तजकिरा किया तो वह न तो इस हदीस को जानते थे और न ही सईद बिन मुसय्यब की अनस (ﷺ) से किसी और रिवायत को जानते थे।

अनस बिन मालिक (ﷺ) की वफ़ात (73) हिज्री में और सईद बिन मुसय्यब उन से दो साल बाद पचहत्तर हिज्री में फौत हुए।

17 - जिस काम से अल्लाह के रसूल रोक दें उस से बाज़ रहा जाए।

17 بَابٌ فِي الِانْتِهَاءِ عَمَّا نَهَى عَنْهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

2679 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: اتْرُكُونِي مَا تَرَكْتُكُمْ، فَإِذَا حَدَّثْتُكُمْ، فَخُذُوا عَنِّي، فَإِنَّمَا هَلَكَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ بِكَثْرَةِ سُؤَالِهِمْ وَاخْتِلاَفِهِمْ عَلَى أَنْبِيَائِهِمْ.

2679 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "जब तक मैं तुम्हें छोड़े रखूँ तुम भी मुझे छोड़ दो फिर जब मैं तुम्हें कुछ बयान करूं तो उसे मुझ से ले लो, बेशक तुम से पहले लोग ज़्यादा सवाल करने और अपने नबियों से इख़्तिलाफ़ की वजह से ही हलाक हुए हैं।"

बुख़ारी:7288. मुस्लिम:1337. इब्ने माजह:2. निसाई:2619

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

18 - मदीना के आलिम का बयान।

18 بَابُ مَا جَاءَ فِي عَالِمِ الْمَدِينَةِ

2680 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ الصَّبَّاحِ البَزَّارُ، وَإِسْحَاقُ بْنُ مُوسَى الأَنْصَارِيُّ، قَالاَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، رِوَايَةً: يُوشِكُ أَنْ يَضْرِبَ النَّاسُ أَكْبَادَ الإِبِلِ يَطْلُبُونَ العِلْمَ فَلاَ يَجِدُونَ أَحَدًا أَعْلَمَ مِنْ عَالِمِ الْمَدِينَةِ.

2680 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि क़रीब है कि लोग इल्म हासिल करने के लिए ऊंटों के जिगर मारेंगे[1] उन्हें मदीना के आलिम से बड़ा आलिम नहीं मिलेगा।"

ज़ईफ़: हुमैदी:1147. मुसनद अहमद:2/299. इब्ने हिब्बान:3736.

तौज़ीह: (1) أَكْبَادَ الإِبِلِ: ऊंटों के जिगर इस से मुराद है कि वह लम्बे लम्बे सफ़र करेंगे और ऊंटों को बहुत तेज़ दौड़ाएंगे।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और यह इब्ने उयय्ना की रिवायत है। नीज़ इब्ने उयय्ना से यह भी मर्वी है कि उन से मदीना के आलिम के बारे में सवाल किया गया था तो उन्होंने कहा था यह इमाम मालिक बिन अनस (رحمه الله) हैं।

इस्हाक़ बिन मूसा कहते हैं, मैंने इब्ने उयय्ना से सुना वह कह रहे थे यह उमरी जाहिद हैं। इनका नाम अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह है।

यह्या बिन मूसा कहते हैं कि अब्दुर्रज्जाक फ़रमाते हैं कि यह मालिक बिन अनस थे और उमरी, अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह हैं। जो कि उमर बिन खत्ताब की औलाद से हैं।

19 بَابُ مَا جَاءَ فِي فَضْلِ الفِقْهِ عَلَى العِبَادَةِ

19 - दीन को समझना इबादत से अफ़ज़ल है।

2681 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، قَالَ: أَخْبَرَنَا الوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ جَنَاحٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: فَقِيهٌ أَشَدُّ عَلَى الشَّيْطَانِ مِنْ أَلْفِ عَابِدٍ.

2681 - सय्यदना इब्ने अब्बास (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया: "एक फकीह, शैतान पर एक हज़ार इबादत गुज़ारों से भी भारी है।''

मौज़ू इब्ने माजह:222. तोहफतुल कामिल:3/1004. जामे बयानिल इल्म:1/26.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे इसी सनद से ही बतरीक़ वलीद बिन मुस्लिम जानते हैं।

2682 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ خِدَاشٍ البَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَزِيدَ الوَاسِطِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ رَجَاءِ بْنِ حَيْوَةَ، عَنْ قَيْسِ بْنِ كَثِيرٍ، قَالَ: قَدِمَ رَجُلٌ مِنَ الْمَدِينَةِ عَلَى أَبِي الدَّرْدَاءِ، وَهُوَ بِدِمَشْقَ فَقَالَ: مَا أَقْدَمَكَ يَا أَخِي؟ فَقَالَ: حَدِيثٌ بَلَغَنِي أَنَّكَ تُحَدِّثُهُ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: أَمَا جِئْتَ لِحَاجَةٍ؟ قَالَ: لاَ، قَالَ: أَمَا قَدِمْتَ لِتِجَارَةٍ؟ قَالَ: لاَ، قَالَ: مَا جِئْتُ إِلاَّ فِي طَلَبِ هَذَا الحَدِيثِ؟ قَالَ: فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ

2682 - कैस बिन कसीर (ﷺ) कहते हैं कि अबू दर्दा (ﷺ) दमिश्क़ में थे कि उनके पास मदीना से एक आदमी आया, उन्होंने फ़रमाया, ऐ मेरे भाई! कैसे आना हुआ? उसने कहा एक हदीस के लिए जो मुझे पहुंची है कि आप उसे रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ़ से बयान करते हैं। उन्होंने फ़रमाया, क्या तुम किसी और काम के लिए नहीं आए? उस ने कहा: नहीं " कहने लगे: क्या तुम तिजारत के लिए नहीं आए? उस ने कहा: नहीं'' मैं तो सिर्फ़ उस हदीस को तलाश करने आया हूँ। अबू दर्दा (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आप फ़रमा रहे थे: "जो शख़्स किसी रास्ते पर

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: مَنْ سَلَكَ طَرِيقًا يَبْتَغِي فِيهِ عِلْمًا سَلَكَ اللَّهُ بِهِ طَرِيقًا إِلَى الجَنَّةِ، وَإِنَّ الْمَلاَئِكَةَ لَتَضَعُ أَجْنِحَتَهَا رِضَاءً لِطَالِبِ العِلْمِ، وَإِنَّ العَالِمَ لَيَسْتَغْفِرُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الأَرْضِ حَتَّى الحِيتَانُ فِي الْمَاءِ، وَفَضْلُ العَالِمِ عَلَى العَابِدِ، كَفَضْلِ القَمَرِ عَلَى سَائِرِ الكَوَاكِبِ، إِنَّ العُلَمَاءَ وَرَثَةُ الأَنْبِيَاءِ، إِنَّ الأَنْبِيَاءَ لَمْ يُوَرِّثُوا دِينَارًا وَلاَ دِرْهَمًا إِنَّمَا وَرَّثُوا العِلْمَ، فَمَنْ أَخَذَ بِهِ أَخَذَ بِحَظٍّ وَافِرٍ.

चले जिस पर वह इल्म तलाश करता है तो अल्लाह उसे जन्नत के रास्ते पर चला देता है, फ़रिश्ते तालिबे इल्म की ख़ुशी के लिए अपने पर बिछाते हैं और आलिम के लिए आसमानों और ज़मीन वाले बख़्शिश मांगते हैं यहाँ तक कि पानी के अन्दर मछलियाँ भी और आलिम की इबादत गुज़ार पर इसी तरह फ़ज़ीलत हासिल है जैसे चाँद को तमाम सितारों पर। उलमा अंबिया के वारिस हैं। अंबिया ने दीनार व दिरहम विरासत में नहीं छोड़े। उन्होंने इल्म की विरासत दी जिस ने इसे ले लिया उस ने बहुत बड़ा हिस्सा ले लिया।''

सहीह: अबू दाऊद:3641. इब्ने माजह:233.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस हदीस को हम आसिम बिन रजा बिन हैवा के तरीक़ से ही जानते हैं और मेरे मुताबिक़ इस की सनद मुत्तसिल नहीं है। मुहम्मद बिन ख़िदाश ने भी इस हदीस को ऐसे ही बयान किया है और यह हदीस आसिम बिन रजा बिन हैवा से दाऊद बिन जमील के ज़रिए क़सीर बिन कैस से बवास्ता अबू दर्दा (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) से रिवायत की गई है और यह महमूद बिन ख़िदाश की हदीस से ज़्यादा सहीह है। नीज़ इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी की राय भी यही है कि यह हदीस ज़्यादा सहीह है।

2683 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ مَسْرُوقٍ، عَنِ ابْنِ أَشْوَعَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ سَلَمَةَ الجُعْفِيِّ، قَالَ: قَالَ يَزِيدُ بْنُ سَلَمَةَ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنِّي قَدْ سَمِعْتُ مِنْكَ حَدِيثًا كَثِيرًا أَخَافُ أَنْ يُنْسِيَنِي أَوَّلَهُ آخِرُهُ، فَحَدِّثْنِي بِكَلِمَةٍ تَكُونُ جِمَاعًا قَالَ: اتَّقِ اللَّهَ فِيمَا تَعْلَمُ.

2683 - सय्यदना यज़ीद बिन सलमा जोफ़ी रिवायत करते हैं कि उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ) ! मैं आप से बहुत सी अहादीस सुनता हूँ मुझे डर है कि बाद वाली पहली को भुला देंगी तो आप ने मुझे एक जामेअ बात बताई, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिन चीज़ों का तुम्हें इल्म है उन में अल्लाह से डरो।''

ज़ईफ़: अब्द बिन हुमैद:436. अल-मोजमुल कबीर:22/633.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस हदीस की सनद मुत्तसिल नहीं है और मेरे नज़दीक यह मुर्सल है और मेरे मुताबिक़ इब्ने अश्वा ने यज़ीद बिन सलमा को नहीं पाया और इब्ने अश्वा का नाम सईद बिन अश्वा था।

2684 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا خَلَفُ بْنُ أَيُّوبَ العَامِرِيُّ، عَنْ عَوْفٍ، عَنِ ابْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: خَصْلَتَانِ لاَ تَجْتَمِعَانِ فِي مُنَافِقٍ، حُسْنُ سَمْتٍ، وَلاَ فِقْهٌ فِي الدِّينِ.

2684 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया: "दो आदतें मुनाफ़िक़ में नहीं आ सकतीं: अच्छे अख़्लाक़ और दीन की समझ।"

सहीह: अल-मोजमुल औसत: 8006. अज़-ज़ुअफ़ लिल-उक़ैली:2/24.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। और हम सिर्फ़ उस बुज़ुर्ग ख़लफ़ बिन अय्यूब आमिरी के वास्ते ही इस हदीस को औफ़ से जानते हैं और मैं अबू कुरैब मुहम्मद बिन अला के अलावा किसी को नहीं जानता जिसने उसे रिवायत की हो और मुझे नहीं इल्म की (ख़लफ़ बिन अय्यूब) कैसे आदमी थे।

2685 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى الصَّنْعَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَلَمَةُ بْنُ رَجَاءٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الوَلِيدُ بْنُ جَمِيلٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا القَاسِمُ أَبُو عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي أُمَامَةَ البَاهِلِيِّ، قَالَ: ذُكِرَ لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلاَنِ أَحَدُهُمَا عَابِدٌ وَالآخَرُ عَالِمٌ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: فَضْلُ العَالِمِ عَلَى العَابِدِ كَفَضْلِي عَلَى أَدْنَاكُمْ. ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ اللَّهَ وَمَلاَئِكَتَهُ وَأَهْلَ السَّمَوَاتِ وَالأَرَضِينَ حَتَّى النَّمْلَةَ فِي جُحْرِهَا وَحَتَّى الحُوتَ لَيُصَلُّونَ عَلَى مُعَلِّمِ النَّاسِ الخَيْرَ.

2685 - सय्यदना अबू उमामा बाहिली (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास दो आदमियों का ज़िक्र किया गया उन में से एक आबिद था और दूसरा आलिम तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "आलिम की फ़ज़ीलत आबिद पर ऐसे ही है जैसे मेरी फ़ज़ीलत एक अदना आदमी पर है।" फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "बेशक अल्लाह तआला रहमत नाज़िल करता है और उसके फ़रिश्ते और आसमानों ज़मीन वाले यहाँ तक कि चींटी अपने बिल में और मछली भी लोगों को भलाई सिखाने वाले के लिए दुआए रहमत करते हैं,"

सहीह: अल-मोजमुल कबीर:7911.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है। और मैंने अबू अम्मार हुसैन बिन हुरैस ख़ुज़ाई से सुना वह कह रहे थे कि मैंने फुजैल बिन इयाज़ को फ़रमाते हुए सुना: आलिम बा अमल, लोगों को इल्म सिखाने वाला आसमानों की बादशाहत में "कबीर'' पुकारा जाता है।

2686 - حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ الشَّيْبَانِيُّ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ وَهْبٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ الحَارِثِ، عَنْ دَرَّاجٍ، عَنْ أَبِي الهَيْثَمِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَنْ يَشْبَعَ الْمُؤْمِنُ مِنْ خَيْرٍ يَسْمَعُهُ حَتَّى يَكُونَ مُنْتَهَاهُ الجَنَّةُ.

2686 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया: "मोमिन भलाई की बातें सुनने से कभी सैर नहीं होता यहाँ तक कि उसकी इन्तेहा जन्नत होती है।''

ज़ईफ़: इब्ने हिब्बान:903

2687 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُمَرَ بْنِ الوَلِيدِ الكِنْدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ نُمَيْرٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ الفَضْلِ، عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الكَلِمَةُ الحِكْمَةُ ضَالَّةُ الْمُؤْمِنِ، فَحَيْثُ وَجَدَهَا فَهُوَ أَحَقُّ بِهَا.

2687 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया: "दानाई की बात मोमिन की गुमशुदा चीज़ है। जहां उसे मिल जाए वह उसका ज़्यादा हक़दार है।''

ज़ईफ़ जिद्दा: इब्ने माजह:4169. अल-कामिल:232

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है।हम इसे इसी सनद से ही जानते हैं और इब्राहीम बिन फ़ज़ल मदनी अपने हाफ़िज़े की वजह से हदीस में ज़ईफ़ है।

ख़ुलासा

- जिस से अल्लाह भलाई का इरादा करता है उसे दीन की समझ अता करता है।
- तालिबे इल्म के लिए राहे जन्नत को आसान कर दिया जाता है और वह तलबे इल्म में जन्नत का राही होता है।
- आख़िर ज़माने में इल्म को उलमा की मौत के साथ ख़त्म किया जाएगा।
- हक़ीक़ी आलिम वह है जो अपने इल्म के मुताबिक़ अमल करता हो।
- दुनिया के लिए दीन पढ़ने वाला जहन्नमी है।
- हर मुसलमान पर लाज़िम है कि दीन की जिस बात का उसे इल्म हो वह आगे पहुंचा दे।
- अपनी किसी बात को रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ़ मंसूब करना जहन्नम में ले जाने का बाइस है।
- हदीसे रसूल को सुनकर फ़ौरन उसे तस्लीम कर लिया जाए।
- बनी इस्राईली रिवायात का बयान जायज़ है।
- अच्छे काम की तरफ़ रहनुमाई करने वाला उसे करने वाले की तरह है।
- अल्लाह उस बन्दे को शादाब रखे जो हदीस सुनकर आगे पहुंचाता है।

मज़मून नम्बर 40.

أَبْوَابُ الاِسْتِئْذَانِ وَالآدَابِ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

रसूलुल्लाह (ﷺ) से मर्वी इजाज़त लेने के आदाब व मसाइल।

तआरुफ़

48 अहादीस और 34 अबवाब पर मुश्तमिल इस उन्वान में आप पढ़ेंगे कि:

- सलाम क्या है और किस तरह सलाम कहा जाए?
- कौन किसे सलाम कहे?
- इजाज़त लेने के लिए इस्लाम ने क्या तरीक़ा बनाया है?

1 بَابُ مَا جَاءَ فِي إِفْشَاءِ السَّلاَمِ

2688 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لاَ تَدْخُلُوا الجَنَّةَ حَتَّى تُؤْمِنُوا، وَلاَ تُؤْمِنُوا حَتَّى تَحَابُّوا، أَلاَ أَدُلُّكُمْ عَلَى أَمْرٍ إِذَا أَنْتُمْ فَعَلْتُمُوهُ تَحَابَبْتُمْ؟ أَفْشُوا السَّلاَمَ بَيْنَكُمْ.

1 - सलाम को आम करना।

2688 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضی اللہ عنہ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया: "उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है जब तक तुम मोमिन न बन जाओ, तुम जन्नत में नहीं जा सकते और जब तक आपस में मोहब्बत न करो तुम मोमिन नहीं बन सकते, क्या मैं ऐसे काम की तरफ़ रहनुमाई न करूं कि जब तुम वह काम कर लोगे तो तुम एक दूसरे से मोहब्बत करोगे? आपस में सलाम करने को आम करो।"

मुस्लिम:54. अबू दाऊद:5193. इब्ने माजह:68

वज़ाहत: इस बारे में अब्दुल्लाह बिन सलाम, शुरैह बिन हानी अपने बाप से, अब्दुल्लाह बिन अम्र, बराअ, अनस और इब्ने उमर (رضی اللہ عنہم) भी रिवायत करते हैं।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2 - सलाम करने की फ़ज़ीलत।

2 بَابُ مَا ذُكِرَ فِي فَضْلِ السَّلاَمِ

2689 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، وَالحُسَيْنُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْجَرِيرِيُّ الْبَلْخِيُّ، قَالاَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ سُلَيْمَانَ الضُّبَعِيِّ، عَنْ عَوْفٍ، عَنْ أَبِي رَجَاءٍ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، أَنَّ رَجُلاً جَاءَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: السَّلاَمُ عَلَيْكُمْ، قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: عَشْرٌ ثُمَّ جَاءَ آخَرُ فَقَالَ: السَّلاَمُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: عِشْرُونَ. ثُمَّ جَاءَ آخَرُ فَقَالَ: السَّلاَمُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ثَلاَثُونَ.

2689 - सय्यदना इमरान बिन हुसैन (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि एक आदमी ने नबी (ﷺ) के पास आकर السَّلَامُ عَلَيْكُمْ कहा तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "(इस के लिए) दस (नेकियाँ) हैं" फिर एक और ने आकर السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ कहा: नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "बीस (नेकियाँ)" फिर एक और ने आकर السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ कहा तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "(इस के लिए) तीस (नेकियाँ) हैं।"

सहीह: अबू दाऊद:5195. मुसनद अहमद:439.दारमी:2643.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, सय्यदना इमरान बिन हुसैन (رضي الله عنه) की यह हदीस इस सनद से हसन सहीह ग़रीब है। नीज़ इस बारे में अबू सईद और सहल बिन हुनैफ़ (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

3 - तीन बार इजाज़त ली जाए।

3 بَابُ مَا جَاءَ فِي الاِسْتِئْذَانِ ثَلاَثَةً

2690 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، عَنِ الجُرَيْرِيِّ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، قَالَ: اسْتَأْذَنَ أَبُو مُوسَى عَلَى عُمَرَ فَقَالَ:

2690 - सय्यदना अबू सईद (رضي الله عنه) से रिवायत है कि अबू मूसा (رضي الله عنه) ने उमर (رضي الله عنه) के दरवाज़े पर इजाज़त मांगते हुए कहा: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ? तो उमर (رضي الله عنه) ने कहा: एक मर्तबा तुमने इजाज़त मांगी है,फिर वह थोड़ी देर ख़ामोश

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ أَأَدْخُلُ؟ قَالَ عُمَرُ: وَاحِدَةٌ، ثُمَّ سَكَتَ سَاعَةً، ثُمَّ قَالَ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ أَأَدْخُلُ؟ قَالَ عُمَرُ: ثِنْتَانِ، ثُمَّ سَكَتَ سَاعَةً فَقَالَ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ أَأَدْخُلُ؟ فَقَالَ عُمَرُ: ثَلَاثٌ، ثُمَّ رَجَعَ، فَقَالَ عُمَرُ لِلْبَوَّابِ: مَا صَنَعَ؟ قَالَ: رَجَعَ، قَالَ: عَلَيَّ بِهِ، فَلَمَّا جَاءَهُ، قَالَ: مَا هَذَا الَّذِي صَنَعْتَ؟ قَالَ: السُّنَّةُ، قَالَ: آلسُّنَّةُ؟ وَاللَّهِ لَتَأْتِيَنِّي عَلَى هَذَا بِبُرْهَانٍ أَوْ بِبَيِّنَةٍ أَوْ لَأَفْعَلَنَّ بِكَ، قَالَ: فَأَتَانَا وَنَحْنُ رُفْقَةٌ مِنَ الْأَنْصَارِ فَقَالَ: يَا مَعْشَرَ الْأَنْصَارِ أَلَسْتُمْ أَعْلَمَ النَّاسِ بِحَدِيثِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ أَلَمْ يَقُلْ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الِاسْتِئْذَانُ ثَلَاثٌ، فَإِنْ أُذِنَ لَكَ، وَإِلَّا فَارْجِعْ فَجَعَلَ الْقَوْمُ يُمَازِحُونَهُ، قَالَ أَبُو سَعِيدٍ: ثُمَّ رَفَعْتُ رَأْسِي إِلَيْهِ فَقُلْتُ: فَمَا أَصَابَكَ فِي هَذَا مِنَ الْعُقُوبَةِ فَأَنَا شَرِيكُكَ. قَالَ: فَأَتَى عُمَرَ فَأَخْبَرَهُ بِذَلِكَ، فَقَالَ عُمَرُ: مَا كُنْتُ عَلِمْتُ بِهَذَا.

रहे। फिर कहा: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ? उमर (رضي الله عنه) ने कहा: दो मर्तबा, फिर थोड़ी देर खामोश रहने के बाद कहने लगे: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ? उमर (رضي الله عنه) ने कहा: तीन हो गयीं। फिर अबू मूसा वापस चले गए तो उमर (رضي الله عنه) ने दरबान से कहा: अबू मूसा ने क्या किया? उसने कहा: वह चले गए हैं, कहने लगे; उन्हें मेरे पास लाओ, जब वह उनके पास गए तो उमर (رضي الله عنه) कहने लगे: यह आप ने क्या किया? उन्होंने कहा: यह सुन्नत है। उमर ने कहा: क्या यह सुन्नत है? अल्लाह की क़सम! आप मेरे पास इसकी कोई दलील लायें वर्ना मैं आप के साथ यह यह करूंगा। रावी कहते हैं, फिर वह हमारे पास आए। हम अंसार की जमाअत में थे कहने लगे: ऐ अंसार के लोगो! क्या तुम रसूलुल्लाह (ﷺ) की अहादीस को अच्छी तरह जानते हो? क्या रसूलुल्लाह ने यह नहीं फ़र्माया: "कि तलबे इजाज़त तीन दफा है फिर अगर साहिबे मंजिल तुम्हें इजाज़त दे दे तो ठीक वर्ना वापस चले जाओ'' तो लोग उन से मज़ाक करने लगे। (कि भाई इस हदीस का तो सब को इल्म है) अबू सईद कहते हैं, फिर मैंने उनकी तरफ़ सर उठा कर कहा: इस मामले में आपको जो सज़ा मिली है उसमें मैं आपका साथी हूँ। फिर वह उमर के पास गए। उन्हें यह हदीस सुनाई तो उमर (رضي الله عنه) ने कहा: मुझे इसका इल्म नहीं था।

बुख़ारी:6245, मुस्लिम:2153, अबू दाऊद:5180, इब्ने माजह:3706.

वज़ाहत: इस बारे में अली (ﷺ) और साद की आज़ादकर्दा उम्मे तारिक़ (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और जुरैरी का नाम सईद बिन इयास और कुनियत अबू मसऊद थी। नीज़ इनके अलावा और रावियों ने भी इस हदीस को अबू नजरः से ऐसे ही रिवायत किया है।अबू नजरा अब्दी का नाम मुन्ज़िर बिन मालिक बिन कतआ था।

2691 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ يُونُسَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ بْنُ عَمَّارٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو زُمَيْلٍ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ عَبَّاسٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عُمَرُ بْنُ الخَطَّابِ، قَالَ: اسْتَأْذَنْتُ عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلَاثًا فَأَذِنَ لِي.

2691 - सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब (ﷺ) से बयान है कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से तीन दफ़ा इजाज़त मांगी तो आप ने मुझे इजाज़त दे दी।

2461 नम्बर हदीस देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है। और अबू ज़ुमैल का नाम सिमाक हनफ़ी है।

सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब (ﷺ) ने अबू मूसा की इस रिवायत का इन्कार किया था कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "तीन दफ़ा इजाज़त मांगो, अगर इजाज़त मिल जाए तो ठीक वर्ना वापस चले जाओ।" जबकि सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब (ﷺ) ने नबी (ﷺ) से तीन दफ़ा इजाज़त मांगी थी तो आप ने उन्हें इजाज़त दे दी। उमर (ﷺ) अबू मूसा (ﷺ) की नबी (ﷺ) से रिवायतकर्दा हदीस को नहीं जानते थे कि आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अगर इजाज़त मिल जाए तो ठीक वर्ना लौट जाओ।"

4 بَابُ مَا جَاءَ كَيْفَ رَدُّ السَّلَامِ

4 - सलाम का जवाब कैसे दिया जाए?

2692 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ نُمَيْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ، عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: دَخَلَ رَجُلٌ الْمَسْجِدَ وَرَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَالِسٌ فِي نَاحِيَةِ

2692 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मस्जिद के कोने में तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक आदमी मस्जिद में दाख़िल हुआ फिर उसने नमाज़ पढ़ी फिर आकर आप को सलाम किया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "وَعَلَيْكَ (तुझ पर भी सलाम हो) वापस जाकर नमाज़ पढ़ो तुमने

الْمَسْجِدِ فَصَلَّى ثُمَّ جَاءَ فَسَلَّمَ عَلَيْهِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَعَلَيْكَ، ارْجِعْ فَصَلِّ فَذَكَرَ الحَدِيثَ بِطُولِهِ.

नमाज़ नहीं पढ़ी।'' फिर लम्बी हदीस बयान की।

बुख़ारी:757. मुस्लिम:397. अबू दाऊद:856. इब्ने माजह:1060. निसाई:844

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन है। और यह्या बिन सईद क़त्तान ने इस हदीस को बवास्ता उबैदुल्लाह बिन उमर सईद मक़्बुरी से बयान करते वक़्त उनके बाप के ज़रिए अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत की है। इसमें उसके सलाम करने का ज़िक्र है और न आपके जवाब देने का।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह्या बिन सईद की हदीस ज़्यादा सहीह है।

5 بَابُ مَا جَاءَ فِي تَبْلِيغِ السَّلَامِ

5 - किसी का सलाम दूसरे तक पहुंचाना।

2693 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْمُنْذِرِ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ زَكَرِيَّا بْنِ أَبِي زَائِدَةَ، عَنْ عَامِرٍ الشَّعْبِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ، أَنَّ عَائِشَةَ، حَدَّثَتْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ لَهَا: إِنَّ جِبْرِيلَ يُقْرِئُكِ السَّلَامَ، قَالَتْ: وَعَلَيْهِ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ.

2693 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिब्रील तुम्हें सलाम कहते हैं।'' उन्होंने कहा: उन पर भी सलाम और अल्लाह की रहमत व बरकत हो।

बुख़ारी:3217. मुस्लिम;2447. इब्ने माजह:3696. निसाई:3952, 3954.

वज़ाहत: इस बारे में बनू नुमैर के एक आदमी ने भी अपने बाप के ज़रिए अपने दादा से रिवायत की है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ ज़ोहरी ने भी इसी तरह ही बवास्ता अबू सलमा, सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) से रिवायत की है।

6 بَابُ مَا جَاءَ فِي فَضْلِ الَّذِي يَبْدَأُ بِالسَّلَامِ

6 - सलाम में पहल करने वाले की फ़ज़ीलत।

2694 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا قُرَّانُ بْنُ تَمَّامٍ الأَسَدِيُّ، عَنْ أَبِي فَرْوَةَ يَزِيدَ بْنِ سِنَانٍ، عَنْ سُلَيْمِ بْنِ عَامِرٍ، عَنْ أَبِي أُمَامَةَ، قَالَ: قِيلَ يَا رَسُولَ اللهِ الرَّجُلَانِ يَلْتَقِيَانِ أَيُّهُمَا

2694 - सय्यदना अबू उमामा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि अर्ज़ किया गया ''ऐ अल्लाह के रसूल! दो आदमी आपस में मिलते हैं उन में से सलाम करने में पहल कौन करे?'' तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "उन दोनों में जो अल्लाह

يَبْدَأُ بِالسَّلَامِ؟ فَقَالَ: أَوْلَاهُمَا بِاللَّهِ.

के ज़्यादा क़रीब है।''

सहीह: अबू दाऊद: 5197. मुसनद अहमद:5/254.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन है। मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी कहते हैं, अबू फ़र्वा रावी मुकारिबुल हदीस है। लेकिन उनका बेटा मुहम्मद बिन यज़ीद उन से मुन्कर रिवायत बयान करता है।

7 بَابُ مَا جَاءَ فِي كَرَاهِيَةِ إِشَارَةِ الْيَدِ بِالسَّلَامِ

7 - सलाम करते वक़्त हाथ से इशारा करना मना है।

2695 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ لَهِيعَةَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَيْسَ مِنَّا مَنْ تَشَبَّهَ بِغَيْرِنَا، لاَ تَشَبَّهُوا بِالْيَهُودِ وَلاَ بِالنَّصَارَى، فَإِنَّ تَسْلِيمَ الْيَهُودِ الإِشَارَةُ بِالأَصَابِعِ، وَتَسْلِيمَ النَّصَارَى الإِشَارَةُ بِالأَكُفِّ. هَذَا حَدِيثٌ إِسْنَادُهُ ضَعِيفٌ وَرَوَى ابْنُ الْمُبَارَكِ، هَذَا الحَدِيثَ عَنِ ابْنِ لَهِيعَةَ، فَلَمْ يَرْفَعْهُ.

2695 - अम्र बिन शोऐब अपने बाप से और वह अपने दादा (सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (ﷺ) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "वह शख़्स हम में से नहीं है जो किसी गैर से मुशाबहत करे, तुम यहूदियों और ईसाइयों से मुशाबहत न करो, यहूदियों का सलाम उँगलियों के इशारे से और ईसाइयों का सलाम हाथों के इशारे से होता है।''

हसन: अल-मोजमुल औसत:7376.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, इस हदीस की सनद ज़ईफ़ है और इब्ने मुबारक ने इस हदीस को इब्ने लहीया से बयान करते वक़्त मर्फ़ू ज़िक्र नहीं किया।

8 بَابُ مَا جَاءَ فِي التَّسْلِيمِ عَلَى الصِّبْيَانِ

8 - बच्चों को सलाम कहना।

2696 - حَدَّثَنَا أَبُو الخَطَّابِ زِيَادُ بْنُ يَحْيَى البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَتَّابٍ سَهْلُ بْنُ حَمَّادٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَيَّارٍ، قَالَ: كُنْتُ أَمْشِي مَعَ ثَابِتٍ البُنَانِيِّ، فَمَرَّ عَلَى

2696 - सय्यार (ﷺ) कहते हैं, मैं साबित बुनानी (ﷺ) के साथ चल रहा था कि वह बच्चों के पास से गुज़रे तो उन्हें सलाम कहा। फिर साबित कहने लगे: मैं अनस (ﷺ) के साथ था वह बच्चों के पास से गुज़रे तो उन्होंने

صِبْيَانٍ فَسَلَّمَ عَلَيْهِمْ فَقَالَ ثَابِتٌ: كُنْتُ مَعَ أَنَسٍ، فَمَرَّ عَلَى صِبْيَانٍ فَسَلَّمَ عَلَيْهِمْ، وَقَالَ أَنَسٌ: كُنْتُ مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَمَرَّ عَلَى صِبْيَانٍ فَسَلَّمَ عَلَيْهِمْ.

सलाम कहा, फिर अनस (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं नबी (ﷺ) के साथ था आप बच्चों के पास से गुज़रे तो आप(ﷺ) ने उन्हें सलाम कहा था।

बुख़ारी:6247.मुस्लिम:2168. अबू दाऊद:5202. इब्ने माजह; 3700

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस सहीह है और कई रावियों ने साबित से रिवायत की है नीज़ अनस (ﷺ) से कई तुरुक से मर्वी है।

अबू ईसा कहते हैं, हमें कुतैबा ने वह कहते हैं, हमें जाफ़र बिन सुलैमान ने साबित से बवास्ता अनस (ﷺ) नबी (ﷺ) से ऐसी ही हदीस बयान की है।

9 بَابُ مَا جَاءَ فِي التَّسْلِيمِ عَلَى النِّسَاءِ

9 - ख्वातीन को सलाम कहना।

2697 - حَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الحَمِيدِ بْنُ بَهْرَامَ، أَنَّهُ سَمِعَ شَهْرَ بْنَ حَوْشَبٍ، يَقُولُ: سَمِعْتُ أَسْمَاءَ بِنْتَ يَزِيدَ، تُحَدِّثُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّ فِي الْمَسْجِدِ يَوْمًا وَعُصْبَةٌ مِنَ النِّسَاءِ قُعُودٌ، فَأَلْوَى بِيَدِهِ بِالتَّسْلِيمِ وَأَشَارَ عَبْدُ الحَمِيدِ بِيَدِهِ.

2697 - सय्यदा अस्मा बिन्ते यज़ीद (ﷺ) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक दिन मस्जिद से गुज़रे और औरतों की एक जमाअत बैठी हुई थी तो आप (ﷺ) ने अपने हाथ से सलाम का इशारा किया, और अब्दुल हमीद ने भी (बयान करते वक़्त) अपने हाथ से इशारा किया।

सहीह: (إلا ألا لوأء با ليد) अबू दाऊद:5204. इब्ने माजह:3701. दारमी:2640

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं,यह हदीस हसन है।

इमाम अहमद बिन हंबल फ़रमाते हैं, अब्दुल हमीद बिन बहराम की शह्र बिन हौशब से बयान कर्दा हदीस में कोई कमज़ोरी नहीं है। मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी फ़रमाते हैं, शह्र बिन हौशब हस्नुल हदीस हैं। और उनकी सनद को कवी कहते हुए फ़रमाते हैं, उनके बारे में सिर्फ़ इब्ने औन ने क़लाम किया है। फिर उन्होंने बवास्ता हिलाल बिन अबी ज़ैनब शह्र बिन हौशब से रिवायत की है।

अबू ईसा कहते हैं, हमें अबू दाऊद मसाहिफ बल्खी ने, वह कहते हैं, हमें नज़र बिन शुमैल ने इब्ने औन से बयान किया है कि शह्र बिन हौशब के बारे में मुहद्दिसीन ने तअन किया है। अबू दाऊद, नज़र

(ﷺ) का कौल बयान करते हैं, कि نزكوا का मतलब है उन्होंने उनके बारे में तअन किया है और इसमें तअन का सबब यह है कि वह बादशाह के किसी काम के ज़िम्मेदार बन गए थे।

10 بَابُ مَا جَاءَ فِي التَّسْلِيمِ إِذَا دَخَلَ بَيْتَهُ

10 - घर में दाख़िल होते वक़्त सलाम कहना।

2698 - حَدَّثَنَا أَبُو حَاتِمٍ البَصْرِيُّ الأَنْصَارِيُّ مُسْلِمُ بْنُ حَاتِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيُّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَا بُنَيَّ إِذَا دَخَلْتَ عَلَى أَهْلِكَ فَسَلِّمْ يَكُونُ بَرَكَةً عَلَيْكَ وَعَلَى أَهْلِ بَيْتِكَ.

2698 - सय्यदना अनस बिन मालिक (ﷺ) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझ से फ़रमाया, "ऐ बेटे! जब तुम अहल (घरवालों) के पास जाओ तो सलाम कहा करो। यह तुम्हारे और तुम्हारे अहल पर बर्कत का बाइस होगा।"

ज़ईफ़।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं,यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

11 بَابُ مَا جَاءَ فِي السَّلَامِ قَبْلَ الكَلَامِ

11 - बात करने से पहले सलाम कहा जाए।

2699 - حَدَّثَنَا الفَضْلُ بْنُ الصَّبَّاحِ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ زَكَرِيَّا، عَنْ عَنْبَسَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زَاذَانَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: السَّلَامُ قَبْلَ الكَلَامِ..وَبِهَذَا الإِسْنَادِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: لَا تَدْعُوا أَحَدًا إِلَى الطَّعَامِ حَتَّى يُسَلِّمَ.

2699 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "सलाम कहना बात करने से पहले है।" नीज़ इसी सनद के साथ यह भी मर्वी है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "किसी को खाने की तरफ़ मत बुलाओ जब तक वह सलाम न कहे।"

मौज़ू:अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा: 1736.पहला हिस्सा हसन लिगैरिही है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस मुन्कर है। हम इसे इसी सनद से ही जानते हैं और मैंने मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (رحمه الله) से सुना वह अन्बसा बिन अब्दुर्रहमान को हदीस में ज़ईफ़ कहते थे। नीज़ मुहम्मद बिन ज़ाजान भी मुन्करूल हदीस है।

12 - ज़िम्मी (काफ़िर) को सलाम कहने (की कराहत) का बयान।

12 بَابُ مَا جَاءَ فِي التَّسْلِيمِ عَلَى أَهْلِ الذِّمَّةِ

2700 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ سُهَيْلِ بْنِ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لاَ تَبْدَأُوا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى بِالسَّلاَمِ، وَإِذَا لَقِيتُمْ أَحَدَهُمْ فِي طَرِيقٍ فَاضْطَرُّوهُ إِلَى أَضْيَقِهِ.

2700 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "यहूदो नसारा को सलाम में पहल न करो। जब तुम उनमें किसी को रास्ते में मिलो तो उसे ज़्यादा से ज्यादा तंग रास्ते की तरफ़ मजबूर कर दो।''(1)

मुस्लिम:2167, अबू दाऊद:5205.

तौज़ीह: (1) यानी उसे दर्मियान में न चलने दो बल्कि वह रास्ते के एक किनारे पर चले।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2701 - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْمَخْزُومِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: إِنَّ رَهْطًا مِنَ الْيَهُودِ دَخَلُوا عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوا: السَّامُ عَلَيْكَ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: عَلَيْكُمْ، فَقَالَتْ عَائِشَةُ: بَلْ عَلَيْكُمُ السَّامُ وَاللَّعْنَةُ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَا عَائِشَةُ، إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الرِّفْقَ فِي الأَمْرِ كُلِّهِ، قَالَتْ عَائِشَةُ: أَلَمْ تَسْمَعْ مَا قَالُوا؟ قَالَ: قَدْ قُلْتُ عَلَيْكُمْ.

2701 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि यहूदियों के कुछ लोग नबी (ﷺ) के पास आए तो उन्होंने السَّامُ عَلَيْكَ (आप पर मौत तारी हो) कहा, तो नबी (ﷺ) ने कहा: عَلَيْكُمْ (तुम पर भी) मैंने कहा तुम्हारे ऊपर मौत और लानत हो। तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ आयशा! अल्लाह तआला हर मामले में नर्मी को पसंद करता है।'' आयशा (رضي الله عنها) ने अर्ज़ किया, क्या आप ने उनकी बात नहीं सुनी थी? आप ने फ़रमाया, "मैंने عَلَيْكُمْ कहा था।''

बुख़ारी:2935. मुस्लिम:2165. इब्ने माजह:3689

वज़ाहत: इस बारे में अबू बस्रा गिफ़ारी, इब्ने उमर, अनस, और अबू अब्दुर्रहमान जुहनी से भी हदीस मर्वी है। **इमाम तिर्मिज़ी** (ﷺ) फ़रमाते हैं,यह हदीस हसन सहीह है।

13 بَابُ مَا جَاءَ فِي السَّلاَمِ عَلَى مَجْلِسٍ فِيهِ الْمُسْلِمُونَ وَغَيْرُهُمْ

13 - ऐसी मजलिस को सलाम कहना जिसमें मुसलमान और दीगर अक़्वाम (क़ौमे) भी हों।

2702 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، أَنَّ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ، أَخْبَرَهُ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَرَّ بِمَجْلِسٍ وَفِيهِ أَخْلاَطٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ وَاليَهُودِ فَسَلَّمَ عَلَيْهِمْ.

2702 - सय्यदना उसामा बिन ज़ैद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) एक मजलिस के पास से गुज़रे उस में मिले जुले लोग थे मुसलमान भी और यहूदी भी तो आप ने उन्हें सलाम कहा।

बुख़ारी:4566. मुस्लिम:1798

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं,यह हदीस हसन सहीह है।

14 بَابُ مَا جَاءَ فِي تَسْلِيمِ الرَّاكِبِ عَلَى الْمَاشِي

14 - सवार पैदल चलने वाले को सलाम करे।

2703 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَإِبْرَاهِيمُ بْنُ يَعْقُوبَ، قَالاَ: حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ الشَّهِيدِ، عَنِ الحَسَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يُسَلِّمُ الرَّاكِبُ عَلَى الْمَاشِي، وَالمَاشِي عَلَى القَاعِدِ، وَالقَلِيلُ عَلَى الكَثِيرِ، وَزَادَ ابْنُ الْمُثَنَّى فِي حَدِيثِهِ، وَيُسَلِّمُ الصَّغِيرُ عَلَى الكَبِيرِ.

2703 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "सवार पैदल को सलाम कहे, पैदल चलने वाला बैठे हुए को और थोड़े लोग ज़्यादा लोगों को।'' इब्ने मुसन्ना ने अपनी हदीस में इजाफा किया है कि "छोटा बड़े को सलाम करे।''

बुख़ारी:6231. मुस्लिम:2160. अबू दाऊद:5198.

वज़ाहत: इस बारे में अब्दुर्रहमान बिन शिब्ल, फ़ज़ाला बिन उबैद और जाबिर (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस कई तुरूक़ (सनदों) से अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से मर्वी है। अय्यूब सख़्तियानी, यूनुस बिन उबैद और अली बिन ज़ैद कहते हैं, हसन ने अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से सिमा (सुनना) नहीं किया।

2704 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يُسَلِّمُ الصَّغِيرُ عَلَى الكَبِيرِ، وَالمَارُّ عَلَى القَاعِدِ، وَالقَلِيلُ عَلَى الكَثِيرِ.

2704 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "छोटा बड़े को सलाम करे, गुजरने वाला बैठे हुए को और थोड़े लोग ज़्यादा लोगों को सलाम करें।''

बुख़ारी:8/64. अदबुल मुफ़रद:995.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2705 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَيْوَةُ بْنُ شُرَيْحٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو هَانِئٍ اسْمُهُ حُمَيْدُ بْنُ هَانِئٍ الخَوْلَانِيُّ، عَنْ أَبِي عَلِيٍّ الجَنْبِيِّ، عَنْ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يُسَلِّمُ الفَارِسُ عَلَى الْمَاشِي، وَالمَاشِي عَلَى القَائِمِ، وَالقَلِيلُ عَلَى الكَثِيرِ.

2705 - सय्यदना फ़ज़ाला बिन उबैद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "घोड़े पर सवार शख़्स, पैदल चलने वाले को सलाम कहे, पैदल चलने वाला खड़े हुए शख़्स को और थोड़े लोग ज़्यादा लोगों को।''

सहीह: मुसनद अहमद: 6/19. दारमी:2637. इब्ने हिब्बान:497.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और अबू अली जुहनी का नाम अम्र बिन मालिक था।

15 - मजलिस से उठते और बैठते वक़्त सलाम कहे।

15 بَابُ مَا جَاءَ فِي التَّسْلِيمِ عِنْدَ الْقِيَامِ وَعِنْدَ الْقُعُودِ

2706 - سय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब तुम में से कोई शख़्स किसी मजलिस में पहुंचे तो सलाम कहे फिर अगर वहाँ बैठना चाहता है तो बैठ जाए। फिर जब खड़ा हो तो सलाम कहे। पहली दफ़ा का सलाम आख़िरी दफ़ा के सलाम से ज़्यादा हक़दार नहीं है।''

हसन सहीह: अबू दाऊद:5208. मुसनद अहमद:2/230.

2706 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ عَجْلاَنَ، عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِذَا انْتَهَى أَحَدُكُمْ إِلَى مَجْلِسٍ فَلْيُسَلِّمْ، فَإِنْ بَدَا لَهُ أَنْ يَجْلِسَ فَلْيَجْلِسْ، ثُمَّ إِذَا قَامَ فَلْيُسَلِّمْ فَلَيْسَتِ الأُولَى بِأَحَقَّ مِنَ الآخِرَةِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं,यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ यह हदीस इसी तरह इब्ने अजलान से बवास्ता सईद मक़्बुरी उन के बाप के ज़रिए अबू हुरैरा (ﷺ) के वास्ते से नबी (ﷺ) से मर्वी है।

16 - घर के सामने खड़े हो कर इजाज़त मांगना।

16 بَابُ مَا جَاءَ فِي الاِسْتِئْذَانِ قُبَالَةَ الْبَيْتِ

2707 - सय्यदना अबू ज़र (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, " जिस ने इजाज़त मिलने से पहले पर्दा उठाकर अपनी नज़र घर में दाख़िल करके उसके अहल के पर्दों को देखा तो उस ने हद वाला काम किया जो उसे करना हलाल नहीं था, जिस वक़्त उसने अपनी नज़र को दाख़िल किया अगर सामने से कोई आदमी उसकी नज़र फोड़ दे तो मैं उसे मलामत न करता और अगर कोई

2707 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ لَهِيعَةَ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي جَعْفَرٍ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ الحُبُلِيِّ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ كَشَفَ سِتْرًا فَأَدْخَلَ بَصَرَهُ فِي البَيْتِ قَبْلَ أَنْ يُؤْذَنَ لَهُ فَرَأَى عَوْرَةَ أَهْلِهِ فَقَدْ أَتَى حَدًّا لاَ يَحِلُّ لَهُ أَنْ يَأْتِيَهُ، لَوْ أَنَّهُ حِينَ أَدْخَلَ بَصَرَهُ

اسْتَقْبَلَهُ رَجُلٌ فَفَقَأَ عَيْنَيْهِ مَا عَيَّرْتُ عَلَيْهِ، وَإِنْ مَرَّ الرَّجُلُ عَلَى بَابٍ لاَ سِتْرَ لَهُ غَيْرِ مُغْلَقٍ فَنَظَرَ فَلاَ خَطِيئَةَ عَلَيْهِ، إِنَّمَا الخَطِيئَةُ عَلَى أَهْلِ البَيْتِ.

शख़्स ऐसे खुले हुए दरवाजों के पास से गुज़रे जिस के आगे पर्दा न हो अगर वह देख ले तो उस पर कोई गुनाह नहीं है वह घर वालों की गलती है।''

ज़ईफ़: मुसनद अहमद:5/ 153

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। इस तर्ज़ पर हम इसे इब्ने लहीया से ही जानते हैं। और अबू अब्दुर्रहमान हुबुली का नाम अब्दुल्लाह बिन यज़ीद है।

17 بَابُ مَنْ اطَّلَعَ فِي دَارِ قَوْمٍ بِغَيْرِ إِذْنِهِمْ

17 - जो शख़्स बगैर इजाज़त किसी के घर में झांके।

2708 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الوَهَّابِ الثَّقَفِيُّ، عَنْ حُمَيْدٍ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَانَ فِي بَيْتِهِ فَاطَّلَعَ عَلَيْهِ رَجُلٌ فَأَهْوَى إِلَيْهِ بِمِشْقَصٍ فَتَأَخَّرَ الرَّجُلُ.

2708 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) अपने घर में थे कि एक आदमी ने आपको देखा तो आप ने उसकी तरफ़ तीर का फल[1] सीधा किया तो वह आदमी पीछे हट गया।

बुख़ारी:6242. मुस्लिम:2157. अबू दाऊद:5171. निसाई:4858.

तौज़ीह: مِشْقَص : तीर का लंबा फल। (अल-कामूसुल वहीद:प.877)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं,यह हदीस हसन सहीह है।

2709 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ، أَنَّ رَجُلاً اطَّلَعَ عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ جُحْرٍ فِي حُجْرَةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَمَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِدْرَاةٌ يَحُكُّ بِهَا رَأْسَهُ،

2709 - सय्यदना सहल बिन साइदी (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि एक आदमी ने नबी (ﷺ) के हुजरा के सूराख से रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा जब कि नबी (ﷺ) के पास लोहे या लकड़ी का एक कंघा[1] था जिस से आप अपने सर मुबारक खुजला रहे थे। नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "अगर मुझे इल्म होता कि तुम देख रहे हो तो मैं यही तुम्हारी आँख में मार देता,

فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَوْ عَلِمْتُ أَنَّكَ تَنْظُرُ لَطَعَنْتُ بِهَا فِي عَيْنِكَ، إِنَّمَا جُعِلَ الاِسْتِئْذَانُ مِنْ أَجْلِ البَصَرِ.

नज़र से बचने की वजह से ही तो इजाज़त का हुक्म दिया गया है।''

बुख़ारी:5924. मुस्लिम:2156. निसाई:4859.

तौज़ीह: المدري : कंघा लोहे का हो या लकड़ी का या किसी और चीज़ का। (अल-कामूसुल वहीद।प।520)

वज़ाहत: इस बारे में अबू हुरैरा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं,यह हदीस हसन सहीह है।

18 بَابُ مَا جَاءَ فِي التَّسْلِيمِ قَبْلَ الاِسْتِئْذَانِ

18 - इजाज़त लेने से पहले सलाम कहना।

2710 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ أَبِي سُفْيَانَ، أَنَّ عَمْرَو بْنَ عَبْدِ اللهِ بْنِ صَفْوَانَ، أَخْبَرَهُ أَنَّ كَلَدَةَ بْنَ حَنْبَلٍ، أَخْبَرَهُ أَنَّ صَفْوَانَ بْنَ أُمَيَّةَ بَعَثَهُ بِلَبَنٍ وَلِبَإٍ وَضَغَابِيسَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَالنَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِأَعْلَى الوَادِي، قَالَ: فَدَخَلْتُ عَلَيْهِ وَلَمْ أُسَلِّمْ وَلَمْ أَسْتَأْذِنْ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ارْجِعْ فَقُلْ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ أَأَدْخُلُ؟ وَذَلِكَ بَعْدَ مَا أَسْلَمَ صَفْوَانُ. قَالَ عَمْرٌو: وَأَخْبَرَنِي بِهَذَا الحَدِيثِ أُمَيَّةُ بْنُ صَفْوَانَ، عَنْ كَلَدَةَ بْنِ حَنْبَلٍ، وَلَمْ يَقُلْ سَمِعْتُهُ مِنْ كَلَدَةَ.

2710 - सय्यदना कलदा बिन हंबल (ﷺ) बयान करते हैं कि सफ़वान बिन उमय्या ने उन्हें दूध, लिबा[1] और ख़ीरे[2] देकर नबी (ﷺ) की तरफ़ रवाना किया और नबी (ﷺ) वादी की बालाई जानिब में थे। रावी कहते हैं, मैं आप(ﷺ) के पास गया लेकिन इजाज़त न मांगी और न ही सलाम कहा, तो नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, " वापस जाओ फिर السلام عليكم कहकर पूछो क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ?'' और यह सफ़वान के मुसलमान होने के बाद का वाक़िया है। रावी कहते हैं, मुझे यह हदीस उमैया बिन सफ़वान ने भी बयान की थी और उन्होंने कलदा से सुनने का ज़िक्र नहीं किया।

सहीह: अबू दाऊद:5176. मुसनद अहमद:3/414.अदबुल मुफ़रद:1081

तौज़ीह: لِبَأ : गाय, भैंस वग़ैरह का विलादत के बाद दो तीन रोज़ तक जारी होने वाला दूध لِبَأ कहलाता है। हिन्दी लोग इसे पियूसी और खीस जबकि पंजाब के लोग " बोहली'' कहते हैं। लुग्वी माना के लिए देखें (अल-कामूसुल वहीद:पृ. 1445)

ضَغَابِيس : ضغبوس की जमा है इसका माना है छोटे खीरे या ककड़ी वग़ैरह (अल-मोजमुल वसीत:प.635)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं,यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे इब्ने जुरैज के तरीक़ से ही जानते हैं और अबू आसिम ने भी इब्ने जुरैज से इसी तरह ही रिवायत की है।
नीज़ ضَغَابِيس बारीक-बारीक तरकारी होती है जिसे खाया जाता है।

2711 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: اسْتَأْذَنْتُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي دَيْنٍ كَانَ عَلَى أَبِي فَقَالَ: مَنْ هَذَا؟ فَقُلْتُ: أَنَا، فَقَالَ: أَنَا أَنَا كَأَنَّهُ كَرِهَ ذَلِكَ.

2711 - सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) बयान करते हैं मैंने एक क़र्ज़ के मामले में जो मेरे बाप पर था, नबी(ﷺ) के पास जाने की इजाज़त मांगी तो आप ने फ़रमाया, "कौन हो?'' मैंने अर्ज़ किया, मैं हूँ, आप(ﷺ) ने फ़रमाया, ''मैं-मैं क्या गोया आप(ﷺ) ने उसे पसंद नहीं किया।

बुख़ारी:6250. मुस्लिम; 2155. अबू दाऊद:5187. इब्ने माजह:3709.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं,यह हदीस हसन सहीह है।

19 بَابُ مَا جَاءَ فِي كَرَاهِيَةِ طُرُوقِ الرَّجُلِ أَهْلَهُ لَيْلاً

19 - सफ़र से वापसी पर अचानक रात के वक़्त बीवी के पास जाना ना पसंदीदा अमल है।

2712 - أَخْبَرَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ قَيْسٍ، عَنْ نُبَيْحٍ العَنَزِيِّ، عَنْ جَابِرٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَاهُمْ أَنْ يَطْرُقُوا النِّسَاءَ لَيْلاً.

2712 - सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) से रिवायत है, नबी (ﷺ) ने उन्हें मना किया कि वह रात को औरतों के पास घर आयें।(1)

बुख़ारी:1808. मुस्लिम:1928. अबू दाऊद:2776.

तौज़ीह: طروق : रात को घर जाना, आदमी अगर सफ़र से वापस आए तो उस के लिए बेहतर है कि अगर वह रात को वापस आना चाहता है तो घर वालों को इत्तिला दे दे अचानक घर में वारिद न हो। रात को ज़ाहिर होने वाले सितारों को الطارق इसी लिए कहा जाता है।

वज़ाहत: इस बारे में अनस, इब्ने उमर और इब्ने अब्बास (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और कई तुरूक़ (सनदों) से सय्यदना जाबिर (ﷺ) के ज़रिए नबी (ﷺ) से मर्वी है। नीज़ इब्ने अब्बास (ﷺ) से मर्वी है कि नबी (ﷺ) ने उन्हें रात के वक़्त औरतों के पास घर जाने से मना किया। इब्ने अब्बास (ﷺ) कहते हैं, फिर दो आदमी रसूलुल्लाह (ﷺ) के मना करने के बाद रात को अपनी बीवियों के पास आए तो हर आदमी ने अपनी बीवी के साथ एक आदमी को देखा।

20 بَابُ مَا جَاءَ فِي تَتْرِيبِ الكِتَابِ

2713 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا شَبَابَةُ، عَنْ حَمْزَةَ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِذَا كَتَبَ أَحَدُكُمْ كِتَابًا فَلْيُتَرِّبْهُ فَإِنَّهُ أَنْجَحُ لِلْحَاجَةِ.

20 - ख़त को मिट्टी लगाना।

2713 - सय्यदना जाबिर (ﷺ) से रिवायत है, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब तुम में से कोई शख़्स ख़त लिखे तो उसे अच्छी तरह मिट्टी लगा ले, यह ज़रूरत पूरा होने की ज़्यादा कामयाबी का सबब है।''

ज़ईफ़: इब्ने माजह:2774. इब्ने अबी शैबा:9/33.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस मुन्कर है। हम इसे इसी सनद से ही अबू ज़ुबैर से जानते हैं। नीज़ हम्ज़ा, मेरे नज़दीक अम्र नुसैबी का बेटा ही है जो हदीस के मामले में ज़ईफ़ है।

21. بَابٌ حديث: ضَعِ القَلَمَ عَلَى أُذُنِكَ

2714 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الحَارِثِ، عَنْ عَنْبَسَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زَاذَانَ، عَنْ أُمِّ سَعْدٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ، قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَبَيْنَ يَدَيْهِ كَاتِبٌ فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: ضَعِ القَلَمَ عَلَى أُذُنِكَ فَإِنَّهُ أَذْكَرُ لِلْمُمْلِي.

21 - हदीस : क़लम को अपने कान पर रखो।

2714 - ज़ैद बिन साबित (ﷺ) बयान करते हैं कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास गया आप के सामने एक कातिब (लिखने वाला) था तो मैंने आप(ﷺ) को यह फ़रमाते हुए सुना: "क़लम को अपने कान पर रखो क्योंकि यह लिखने को खूब याद करवाता है।''

मौज़ू: अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा:861. तोहफतुल अशराफ़:3743.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। हम इसे इसी सनद से ही जानते हैं और यह सनद ज़ईफ़ है। मुहम्मद बिन ज़ादान और अंबसा बिन अब्दुर्रहमान दोनों हदीस में ज़ईफ़ हैं।

22 بَابُ مَا جَاءَ فِي تَعْلِيمِ السُّرْيَانِيَّةِ

22 - सुर्यानी ज़बान सीखना।

2715 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي الزِّنَادِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ خَارِجَةَ بْنِ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ، عَنْ أَبِيهِ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ، قَالَ: أَمَرَنِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ أَتَعَلَّمَ لَهُ كَلِمَاتٍ مِنْ كِتَابِ يَهُودَ قَالَ: إِنِّي وَاللَّهِ مَا آمَنُ يَهُودَ عَلَى كِتَابٍ قَالَ: فَمَا مَرَّ بِي نِصْفُ شَهْرٍ حَتَّى تَعَلَّمْتُهُ لَهُ قَالَ: فَلَمَّا تَعَلَّمْتُهُ كَانَ إِذَا كَتَبَ إِلَى يَهُودَ كَتَبْتُ إِلَيْهِمْ، وَإِذَا كَتَبُوا إِلَيْهِ قَرَأْتُ لَهُ كِتَابَهُمْ.

2715 - सय्यदना ज़ैद बिन साबित (ﷺ) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे यहूदियों की किताबत की कुछ बातें सीखने का हुक्म दिया और आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह की क़सम! मैं अपने ख़त पर यहूदियों का यक़ीन नहीं करता।" रावी कहते हैं, आधा महीना भी नहीं गुजरा था कि मैंने वह ज़बान सीख ली। कहते हैं, जब मैंने सीख ली तो आप (ﷺ) जब भी यहूदियों को खत लिखते मैं उनकी तरफ़ लिखता और जब वह आप(ﷺ) की तरफ़ लिखते तो मैं आपको खत पढ़ कर सुनाता।

हसन सहीह: अबू दाऊद: 3645. मुसनद अहमद:5/186. हाकिम:1/75.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और दीगर इस्नाद से भी ज़ैद बिन साबित से मर्वी है। इसे आमश ने साबित बिन उबैद अंसारी से रिवायत किया है कि सय्यदना ज़ैद बिन साबित (ﷺ) फ़रमाते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे सुर्यानी ज़बान सीखने का हुक्म दिया।

23 بَابٌ فِي مُكَاتَبَةِ الْمُشْرِكِينَ

23 - मुश्रिकों से ख़त व किताबत।

2716 - حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ حَمَّادٍ الْبَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ

2716 - सय्यदना अनस बिन मालिक (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी वफ़ात से पहले किस्रा, कैसर, नजाशी और हर ज़ालिम बादशाह की तरफ़ ख़त लिख कर उन्हें अल्लाह की तरफ़ दावत दी। यह वह

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَتَبَ قَبْلَ مَوْتِهِ إِلَى كِسْرَى وَإِلَى قَيْصَرَ وَإِلَى النَّجَاشِيِّ وَإِلَى كُلِّ جَبَّارٍ يَدْعُوهُمْ إِلَى اللهِ وَلَيْسَ بِالنَّجَاشِيِّ الَّذِي صَلَّى عَلَيْهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

नजाशी नहीं हैं जिसकी नबी (ﷺ) ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ी थी।

मुस्लिम:1774. मुसनद अहमद:3/133. इब्ने हिब्बान:6553.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

24 بَابُ مَا جَاءَ كَيْفَ يُكْتَبُ إِلَى أَهْلِ الشِّرْكِ

24 - मुशरिकों को ख़त कैसे लिखा जाए?

2717 - حَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ، قَالَ: حَدَّثَنَا يُونُسُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّهُ أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا سُفْيَانَ بْنَ حَرْبٍ، أَخْبَرَهُ أَنَّ هِرَقْلَ أَرْسَلَ إِلَيْهِ فِي نَفَرٍ مِنْ قُرَيْشٍ، وَكَانُوا تُجَّارًا بِالشَّامِ فَأَتَوْهُ فَذَكَرَ الحَدِيثَ قَالَ: ثُمَّ دَعَا بِكِتَابِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُرِئَ، فَإِذَا فِيهِ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ مِنْ مُحَمَّدٍ عَبْدِ اللهِ وَرَسُولِهِ إِلَى هِرَقْلَ عَظِيمِ الرُّومِ السَّلَامُ عَلَى مَنْ اتَّبَعَ الهُدَى أَمَّا بَعْدُ.

2717 - सय्यदना इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि अबू सुफ़ियान बिन हर्ब (رضي الله عنه) ने बताया कि हिरक्ल ने कुरैशियों के चन्द लोगों समेत उसे अपने पास बुलाया और यह शाम में तिजारत की गरज़ से गए हुए थे, चुनांचे यह उसके पास आए और फिर सारा वाक़िया सुनाया, फिर उसने रसूलुल्लाह (ﷺ) का खत मंगवाया, उसे पढ़ा गया तो उस में था: " بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ अल्लाह के बन्दे और रसूल, मुहम्मद (ﷺ) की तरफ़ से रूम के बादशाह हिरक्ल की तरफ़। उस पर सलामती हो जिस ने हिदायत की पैरवी की। अम्मा बाद!

बुख़ारी:7. मुस्लिम:1773.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं,यह हदीस हसन सहीह है। और अबू सुफ़ियान (رضي الله عنه) का नाम सख़र बिन हर्ब था।

25 - ख़त पर मोहर लगाना।

25 بَابُ مَا جَاءَ فِي خَتْمِ الْكِتَابِ

2718 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) ने जब अज्मियों की तरफ़ ख़त लिखने का इरादा किया तो आप(ﷺ) से अर्ज़ किया गया कि अजमी लोग वही ख़त कुबूल करते हैं जिस पर मोहर लगी हो। तो आप ने (मोहर के लिए) एक अंगूठी[1] बनवाई गोया मैं अब भी आप की हथेली में उस की चमक देख रहा हूँ।

बुख़ारी:65. मुस्लिम:2092. अबू दाऊद:4214. निसाई:5201.

2718 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: لَمَّا أَرَادَ نَبِيُّ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَكْتُبَ إِلَى العَجَمِ قِيلَ لَهُ: إِنَّ العَجَمَ لاَ يَقْبَلُونَ إِلاَّ كِتَابًا عَلَيْهِ خَاتَمٌ فَاصْطَنَعَ خَاتَمًا، قَالَ: فَكَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى بَيَاضِهِ فِي كَفِّهِ.

तौज़ीह: خاتم : अंगूठी, आप (ﷺ) की यह अंगूठी मोहर का काम देती थी। क्योंकि इसमें मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) लिखा हुआ था।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

26 - सलाम कैसे कहा जाए?

26 بَابُ كَيْفَ السَّلاَمُ

2719 - सय्यदना मिक़्दाद बिन अस्वद (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैं और मेरे दो साथी आए, हमारे कान और आँख भूक की शिद्दत से कमज़ोर हो चुकी थीं, हम अपने आप को नबी (ﷺ) के सहाबा पर पेश करने लगे, हमें किसी ने भी कुबूल न किया तो हम नबी (ﷺ) के पास गए, आप(ﷺ) हमें अपने घर ले गए वहाँ तीन बकरियां थीं तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, " इनका दूध निकालो।'' हम इसे दुहते जाते और हर इंसान अपना हिस्सा पीता जाता, रसूलुल्लाह (ﷺ) का हिस्सा हम रख लेते,

2719 - حَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ الْمُغِيرَةِ، قَالَ: حَدَّثَنَا ثَابِتٌ الْبُنَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي لَيْلَى، عَنِ الْمِقْدَادِ بْنِ الأَسْوَدِ، قَالَ: أَقْبَلْتُ أَنَا وَصَاحِبَانِ لِي قَدْ ذَهَبَتْ أَسْمَاعُنَا وَأَبْصَارُنَا مِنَ الجَهْدِ، فَجَعَلْنَا نَعْرِضُ أَنْفُسَنَا عَلَى أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَلَيْسَ أَحَدٌ يَقْبَلُنَا، فَأَتَيْنَا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَتَى بِنَا

أَهْلَهُ، فَإِذَا ثَلاَثَةُ أَعْنُزٍ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: احْتَلِبُوا هَذَا اللَّبَنَ بَيْنَنَا، فَكُنَّا نَحْتَلِبُهُ، فَيَشْرَبُ كُلُّ إِنْسَانٍ نَصِيبَهُ، وَنَرْفَعُ لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَصِيبَهُ، فَيَجِيءُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنَ اللَّيْلِ فَيُسَلِّمُ تَسْلِيمًا، لاَ يُوقِظُ النَّائِمَ وَيُسْمِعُ الْيَقْظَانَ، ثُمَّ يَأْتِي الْمَسْجِدَ فَيُصَلِّي ثُمَّ يَأْتِي شَرَابَهُ فَيَشْرَبُهُ.

फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) रात को आते सलाम कहते, आप (अपने सलाम के साथ) सोने वाले को जगाते नहीं थे जब कि जागने वाले को सलाम सुना देते थे फिर आप मस्जिद में जाते, नमाज़ पढ़ते फिर अपने मशरूब के पास आकर उसे पीते।

मुस्लिम:2055. तयालिसी:1160.हिल्या:1/ 173

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

27 بَابُ مَا جَاءَ فِي كَرَاهِيَةِ التَّسْلِيمِ عَلَى مَنْ يَبُولُ

27 - जो शख़्स पेशाब कर रहा हो उसे सलाम न कहा जाए।

2720 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، وَنَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ، قَالاَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنِ الضَّحَّاكِ بْنِ عُثْمَانَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ: أَنَّ رَجُلاً سَلَّمَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَبُولُ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيْهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ السَّلاَمَ.

2720 - सय्यदना इब्ने उमर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि एक आदमी ने नबी (ﷺ) को सलाम कहा, और आप पेशाब कर रहे थे तो नबी (ﷺ) ने उसे सलाम का जवाब नहीं दिया।

मुस्लिम:370. अबू दाऊद:16. इब्ने माजह:353. निसाई:37

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं, हमें मुहम्मद बिन यहया निशापूरी ने उन्हें मुहम्मद बिन यूसफ़ ने सुफ़ियान से उन्हें ज़हहाक बिन उस्मान ने इसी सनद के साथ ऐसे ही हदीस बयान की है। नीज़ इस मसले में अल्क़मा बिन फ़गवा, जाबिर, बराअ और मुहाजिर बिन कुन्फ़ुज़ (رضي الله عنه) से भी अहादीस मर्वी हैं।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं,यह हदीस हसन सहीह है।

28 بَابُ مَا جَاءَ فِي كَرَاهِيَةِ أَنْ يَقُولَ عَلَيْكَ السَّلاَمُ مُبْتَدِئًا

2721 - حَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا خَالِدُ الحَذَّاءُ، عَنْ أَبِي تَمِيمَةَ الهُجَيْمِيِّ، عَنْ رَجُلٍ، مِنْ قَوْمِهِ قَالَ: طَلَبْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمْ أَقْدِرْ عَلَيْهِ فَجَلَسْتُ، فَإِذَا نَفَرٌ هُوَ فِيهِمْ وَلاَ أَعْرِفُهُ وَهُوَ يُصْلِحُ بَيْنَهُمْ، فَلَمَّا فَرَغَ قَامَ مَعَهُ بَعْضُهُمْ، فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ. فَلَمَّا رَأَيْتُ ذَلِكَ قُلْتُ: عَلَيْكَ السَّلاَمُ يَا رَسُولَ اللهِ، عَلَيْكَ السَّلاَمُ يَا رَسُولَ اللهِ، عَلَيْكَ السَّلاَمُ يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: إِنَّ عَلَيْكَ السَّلاَمُ تَحِيَّةُ الْمَيِّتِ، إِنَّ عَلَيْكَ السَّلاَمُ تَحِيَّةُ الْمَيِّتِ ثَلاَثًا، ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَيَّ فَقَالَ: إِذَا لَقِيَ الرَّجُلُ أَخَاهُ الْمُسْلِمَ فَلْيَقُلْ: السَّلاَمُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ، ثُمَّ رَدَّ عَلَيَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: وَعَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللهِ وَعَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللهِ، وَعَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللَّهِ.

28 - सलाम में पहल करने वाला عَلَيْكَ السَّلاَمُ न कहे।

2721 - अबू तमीमा हुजैमी अपनी कौम के एक आदमी से रिवायत करते हैं कि मैंने नबी (ﷺ) को तलाश किया लेकिन मैं कामयाब न हो सका, फिर मैं एक मजलिस में बैठ गया तो अचानक देखा कि आप (ﷺ) भी उन में ही थे, मैं आपको पहचानता नहीं था जबकि आप(ﷺ) उनके दर्मियान सुलह करवा रहे थे, जब आप फ़ारिग़ हुए तो आप(ﷺ) के साथ कुछ लोग खड़े होकर कहने लगे: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! जब मैंने यह मंज़र देखा तो मैंने अर्ज़ किया, عَلَيْكَ السَّلاَمُ يَا رَسُولَ اللهِ، عَلَيْكَ السَّلاَمُ يَا رَسُولَ اللهِ، عَلَيْكَ السَّلاَمُ يَا رَسُولَ اللهِ आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "عَلَيْكَ السَّلاَمُ मुर्दे को कहा जाने वाला सलाम है।'' फिर आप मेरी तरफ़ मुतवजेह होकर फ़रमाने लगे: "जब कोई आदमी अपने मुसलमान भाई से मिले तो उसे चाहिए कि السَّلاَمُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ कहे।'' फिर नबी (ﷺ) ने मुझे मेरे सलाम का जवाब दिया। : وَعَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللهِ وَعَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللهِ، وَعَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللَّهِ

सहीह: मुसनद अहमद:5/64.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, हदीस को अबू ग़िफ़ार ने बवास्ता अबू तमीमा जुहैमी, अबू जुरैरी जाबिर बिन अस्सुलमी हुजैमी से रिवायत किया है। वह बयान करते हैं मैं नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, फिर (मज्कूरा) हदीस ही बयान की, नीज़ अबू तमीमा का नाम तरीफ़ बिन मुजालिद है।

2722 - حَدَّثَنَا بِذَلِكَ الحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الخَلاَّلُ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ أَبِي غِفَارٍ الْمُثَنَّى بْنِ سَعِيدٍ الطَّائِيِّ، عَنْ أَبِي تَمِيمَةَ الهُجَيْمِيِّ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سُلَيمٍ، قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ: عَلَيْكَ السَّلاَمُ فَقَالَ: لاَ تَقُلْ: عَلَيْكَ السَّلاَمُ، وَلَكِنْ قُلْ: السَّلاَمُ عَلَيْكَ وَذَكَرَ قِصَّةً طَوِيلَةً.

2722 - सय्यदना जाबिर बिन सुलैम (ﷺ) बयान करते हैं कि मैं नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हो कर आप को عليك السلام कहा तो आप ने फ़रमाया, "عليك السلام न कहो बल्कि السلام عليك कहो।'' और रावी ने एक तवील क़िस्सा भी ज़िक्र किया।

सहीह: अबू दाऊद:4084.मुसनद अहमद:5/63. इब्ने अबी शैबा:8/618.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2723 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ بْنُ عَبْدِ الوَارِثِ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ: حَدَّثَنَا ثُمَامَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا سَلَّمَ سَلَّمَ ثَلاَثًا، وَإِذَا تَكَلَّمَ بِكَلِمَةٍ أَعَادَهَا ثَلاَثًا.

2723 - सय्यदना अनस बिन मालिक (ﷺ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) जब सलाम कहते तो तीन बार सलाम कहते और जब कोई बात करते तो उसे तीन दफ़ा दोहराते।

बुख़ारी:94. मुसनद अहमद:3/213.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है।

29 - بَابٌ فِي الثلاثة الذين أقبلوا في مجلس النبي صلي عليه وسلم وحديث جلوسهم في المجلس حيث انتهوا.

29 - उन तीन आदमियों का क़िस्सा जो नबी (ﷺ) की मजलिस में आए थे और जहां जगह मिली बैठ गए थे

2724 - حَدَّثَنَا الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، عَنْ أَبِي مُرَّةَ، عَنْ أَبِي وَاقِدٍ اللَّيْثِيِّ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى

2724 - सय्यदना अबू वाक़िद लैसी (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे और लोग आप(ﷺ) के साथ थे कि अचानक तीन आदमी आए, दो रसूलुल्लाह (ﷺ) की मजलिस की तरफ़ आ

اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَمَا هُوَ جَالِسٌ فِي الْمَسْجِدِ وَالنَّاسُ مَعَهُ إِذْ أَقْبَلَ ثَلاَثَةُ نَفَرٍ، فَأَقْبَلَ اثْنَانِ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَذَهَبَ وَاحِدٌ، فَلَمَّا وَقَفَا عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَلَّمَا، فَأَمَّا أَحَدُهُمَا فَرَأَى فُرْجَةً فِي الحَلْقَةِ فَجَلَسَ فِيهَا، وَأَمَّا الآخَرُ فَجَلَسَ خَلْفَهُمْ، وَأَمَّا الآخَرُ فَأَدْبَرَ ذَاهِبًا، فَلَمَّا فَرَغَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: أَلاَ أُخْبِرُكُمْ عَنِ النَّفَرِ الثَّلاَثَةِ أَمَّا أَحَدُهُمْ فَأَوَى إِلَى اللهِ فَآوَاهُ اللَّهُ، وَأَمَّا الآخَرُ فَاسْتَحْيَا فَاسْتَحْيَا اللَّهُ مِنْهُ، وَأَمَّا الآخَرُ فَأَعْرَضَ فَأَعْرَضَ اللَّهُ عَنْهُ.

गए और एक चला गया जब वह रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास रुके तो दोनों ने सलाम कहा, फिर उन दोनों में से एक ने हल्क़ा में खाली जगह देखी तो वहाँ बैठ गया और दूसरा लोगों के पीछे ही बैठा रहा और तीसरा पीठ फेर कर चला गया फिर जब रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़ारिग़ हुए तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या मैं तुम्हें उन तीन आदमियों के बारे में न बताऊँ? उन में से एक ने अल्लाह के नेक बन्दों की मजलिस की तरफ़ जगह चाही तो अल्लाह ने उसे जगह दे दी, दूसरे ने हया की तो अल्लाह तआला ने भी उससे हया की और एक ने मुंह फेर लिया तो अल्लाह ने भी उस से मुंह फेर लिया।''

बुख़ारी:66. मुस्लिम:2176.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और सय्यदना अबू वाकिद लैसी (رضي الله عنه) का नाम हारिस बिन औफ़ और उम्मे हानी बिन्ते अबी तालिब के मौला अबू मुर्रा का नाम यज़ीद था उसे मौला अकील बिन अबी तालिब भी कहा जाता था।

2725 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شَرِيكٌ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ: كُنَّا إِذَا أَتَيْنَا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَلَسَ أَحَدُنَا حَيْثُ يَنْتَهِي.

2725 - सय्यदना जाबिर बिन समुरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि हम जब नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होते तो हर शख़्स जहां पहुंचता वहीं बैठ जाता।

सहीह: अबू दाऊद: 4825. मुसनद अहमद: 5/ 91. इब्ने हिब्बान: 6433

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। इसे इसी तरह ज़ुहैर बिन मुआविया ने भी सिमाक से रिवायत किया है।

30 - रास्ते में बैठने वाले की ज़िम्मेदारी

30 بَابُ مَا جَاءَ فِي الجَالِسِ عَلَى الطَّرِيقِ

2726 - अबू इस्हाक़ (رحمه الله) बराअ (رضي الله عنه) से रिवायत करते हैं और उन्होंने ख़ुद बराअ (رضي الله عنه) से सिमा (सुनना) नहीं किया, कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अंसार के कुछ लोगों के पास से गुज़रे वह रास्ते में बैठे हुए थे तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अगर तुम ज़रूर ही यह काम करना चाहते हो तो सलाम का जवाब दो, मज़्लूम की मदद करो और पूछने वाले को रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करो।"

2726 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ البَرَاءِ، وَلَمْ يَسْمَعْهُ مِنْهُ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّ بِنَاسٍ مِنَ الأَنْصَارِ وَهُمْ جُلُوسٌ فِي الطَّرِيقِ فَقَالَ: إِنْ كُنْتُمْ لاَ بُدَّ فَاعِلِينَ فَرُدُّوا السَّلاَمَ، وَأَعِينُوا الْمَظْلُومَ، وَاهْدُوا السَّبِيلَ.

सहीह: दारमी: 2658. अबू याला 1717.

वज़ाहत: इस बारे में अबू हुरैरा और अबू शुरैह ख़ुज़ाई (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है।

31 - मुसाफ़ा का बयान।

31 بَابُ مَا جَاءَ فِي الْمُصَافَحَةِ

2727 - सय्यदना बराअ बिन आज़िब (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "दो मुसलमान आपस में मिलकर एक दूसरे से मुसाफ़ा करें तो अल्लाह तआला उन दोनों के जुदा होने से पहले उन्हें बख़्श देता है।"

2727 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، قَالاَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ نُمَيْرٍ، عَنِ الأَجْلَحِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ البَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا مِنْ مُسْلِمَيْنِ يَلْتَقِيَانِ فَيَتَصَافَحَانِ إِلاَّ غُفِرَ لَهُمَا قَبْلَ أَنْ يَفْتَرِقَا.

सहीह: अबू दाऊद: 5211. इब्ने माजह:3703.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, बवास्ता अबू इस्हाक़, सय्यदना बराअ बिन आज़िब (رضي الله عنه) से मर्वी हदीस हसन ग़रीब है। नीज़ यह हदीस कई तुरूक़ (सनदों) से बराअ बिन आज़िब (رضي الله عنه) से मर्वी है और अज्लह, अब्दुल्लाह बिन जुहैफ़ा बिन अदी के बेटे और किन्दा के रहने वाले थे।

2728 - حَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا حَنْظَلَةُ بْنُ عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللهِ الرَّجُلُ مِنَّا يَلْقَى أَخَاهُ أَوْ صَدِيقَهُ أَيَنْحَنِي لَهُ؟ قَالَ: لاَ، قَالَ: أَفَيَلْتَزِمُهُ وَيُقَبِّلُهُ؟ قَالَ: لاَ، قَالَ: أَفَيَأْخُذُ بِيَدِهِ وَيُصَافِحُهُ؟ قَالَ: نَعَمْ.

2728 - सय्यदना अनस बिन मालिक (ﷺ) रिवायत करते हैं कि एक आदमी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! हम में से एक आदमी अगर अपने भाई या दोस्त से मिले तो क्या उस के आगे झुके? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "नहीं" उस ने अर्ज़ किया, क्या उस के गले लगे और उसे बोसा दे ले? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "नहीं" उस ने कहा: तो क्या उसका हाथ पकड़ कर उस से मुसाफ़ा करे? आप ने फ़रमाया, "हाँ।"

हसन:इब्ने माजह:3702. मुस्नद अहमद:3/198. बैहक़ी:7/100.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन है।

2729 - حَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا هَمَّامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، قَالَ: قُلْتُ لأَنَسِ بْنِ مَالِكٍ: هَلْ كَانَتِ الْمُصَافَحَةُ فِي أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: نَعَمْ.

2729 - क़तादा (ﷺ) कहते हैं, मैंने सय्यदना अनस बिन मालिक (ﷺ) से पूछा क्या रसूलुल्लाह (ﷺ) के सहाबा में मुसाफ़ा राइज था? उन्होंने फ़रमाया, हां।"

बुख़ारी:6362. इब्ने अबी शैबा:8/619. इब्ने हिब्बान:492.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2730 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدَةَ الضَّبِّيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمٍ الطَّائِفِيُّ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ خَيْثَمَةَ، عَنْ رَجُلٍ، عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مِنْ تَمَامِ التَّحِيَّةِ الأَخْذُ بِالْيَدِ.

2730 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (ﷺ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "हाथ पकड़ना तहिय्या (सलाम) की तक्मील में से है।"

ज़ईफ़: अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:1288.

वज़ाहत: इस बारे में बराअ और इब्ने उमर (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। हम इसे बवास्ता यह्या बिन सुलैम ही सुफ़ियान से जानते हैं और मैंने मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी से इस हदीस के बारे में पूछा तो वह इसे महफ़ूज़ (सही) शुमार नहीं करते थे और उन्होंने कहा: मेरे मुताबिक इस से सुफ़ियान की मंसूर से बवास्ता ख़ैसमा उस शख़्स से बयान कर्दा हदीस मुराद है जिस ने इब्ने मसऊद से नबी (ﷺ) की हदीस बयान की है कि आप (ﷺ) ने फ़रमाया, " रात को इशा के बाद नमाज़ी या मुसाफिर बातें कर सकता है।''

मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (ﷺ) फ़रमाते हैं, और यह भी सिर्फ़ मंसूर से ही बवास्ता अबू इस्हाक़, अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद या किसी और से मर्वी है कि "मुसाफ़ा करने से सलाम मुकम्मल होता है।''

2731 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ زَحْرٍ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ يَزِيدَ، عَنِ القَاسِمِ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي أُمَامَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: تَمَامُ عِيَادَةِ الْمَرِيضِ أَنْ يَضَعَ أَحَدُكُمْ يَدَهُ عَلَى جَبْهَتِهِ، أَوْ قَالَ: عَلَى يَدِهِ، فَيَسْأَلُهُ كَيْفَ هُوَ، وَتَمَامُ تَحِيَّتِكُمْ بَيْنَكُمُ الْمُصَافَحَةُ.

2731 - सय्यदना अबू उमामा (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मरीज़ की इयादत इस तरह पूरी होती है कि तुम में से कोई शख़्स अपना हाथ उसकी पेशानी पर, या आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "उस के हाथ पर रख कर उस से पूछे वह कैसा है और तुम्हारे आपस के सलाम को पूरा करने वाला मुसाफ़ा है।''

ज़ईफ़: इब्ने अबी शैबा:8/620. मुसनद अहमद:5/259. अल-कामिल:4/1632.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह सनद क़वी नहीं है। मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (ﷺ) फ़रमाते हैं, उबैदुल्लाह बिन ज़हर सिक़ह् और अली बिन यज़ीद ज़ईफ़ है।

क़ासिम अब्दुर्रहमान के बेटे हैं। उनकी कुनियत अबू अब्दुर्रहमान थी। यह सिक़ह् थे और अब्दुर्रहमान बिन ख़ालिद बिन यज़ीद बिन मुआविया के मौला (आज़ादकर्दा थे) और कासिम शाम के रहने वाले थे।

32 بَابُ مَا جَاءَ فِي الْمُعَانَقَةِ وَالْقُبْلَةِ

32 - गले मिलना और बोसे देना।

2732 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يَحْيَى بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ عَبَّادٍ الْمَدِينِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي يَحْيَى بْنُ مُحَمَّدٍ،

2732 - सय्यदा आयशा (ﷺ) बयान करती हैं कि ज़ैद बिन हारिसा (ﷺ) मदीना में आए और रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे घर में थे फिर वह आप के पास आए तो दरवाज़ा खटखटाया,

عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ مُسْلِمٍ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: قَدِمَ زَيْدُ بْنُ حَارِثَةَ الْمَدِينَةَ وَرَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي بَيْتِي فَأَتَاهُ فَقَرَعَ البَابَ، فَقَامَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عُرْيَانًا يَجُرُّ ثَوْبَهُ، وَاللَّهِ مَا رَأَيْتُهُ عُرْيَانًا قَبْلَهُ وَلاَ بَعْدَهُ، فَاعْتَنَقَهُ وَقَبَّلَهُ.

रसूलुल्लाह (ﷺ) नंगे बदन अपना कपड़ा खींचते हुए उनकी तरफ़ गए, अल्लाह की क़सम! मैं इससे पहले और न इसके बाद आप(ﷺ) को कभी नंगे बदन देखा (यानी कभी भी आपको नंगे बदन नहीं देखा।) फिर आप(ﷺ) ने उन्हें गले लगाया और उन्हें बोसा दिया।

ज़ईफ़।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है।

33 بَابُ مَا جَاءَ فِي قُبْلَةِ اليَدِ وَالرِّجْلِ

33 - हाथ और पाँव को बोसा देना।

2733 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ إِدْرِيسَ، وَأَبُو أُسَامَةَ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ صَفْوَانَ بْنِ عَسَّالٍ، قَالَ: قَالَ يَهُودِيٌّ لِصَاحِبِهِ: اذْهَبْ بِنَا إِلَى هَذَا النَّبِيِّ فَقَالَ صَاحِبُهُ: لاَ تَقُلْ نَبِيٌّ، إِنَّهُ لَوْ سَمِعَكَ كَانَ لَهُ أَرْبَعَةُ أَعْيُنٍ، فَأَتَيَا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَأَلاَهُ عَنْ تِسْعِ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ. فَقَالَ لَهُمْ: لاَ تُشْرِكُوا بِاللَّهِ شَيْئًا، وَلاَ تَسْرِقُوا، وَلاَ تَزْنُوا، وَلاَ تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلاَّ بِالحَقِّ، وَلاَ تَمْشُوا بِبَرِيءٍ إِلَى ذِي سُلْطَانٍ لِيَقْتُلَهُ، وَلاَ تَسْحَرُوا، وَلاَ تَأْكُلُوا الرِّبَا، وَلاَ تَقْذِفُوا مُحْصَنَةً، وَلاَ تُوَلُّوا الفِرَارَ

2733 - सय्यदना सफ़वान बिन अस्साल (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि एक यहूदी ने अपने साथी से कहा: हमें उस नबी के पास लेकर चलो तो उस के साथी ने कहा: "तुम (उसे) नबी न कहो, अगर उस ने तुम्हें सुन लिया तो उसकी चार आँखें होंगी। फिर वह दोनों रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आए और आप से नौ वाज़ेह बातों के बारे में सवाल किया। आप (ﷺ) ने उनसे फ़रमाया, "तुम अल्लाह के साथ कुछ भी शरीक न करो, न चोरी करो न ज़िना करो, न उस जान को क़त्ल करो जिसे अल्लाह ने हराम किया है सिवाए हक़ के, न किसी बरी शख़्स को बादशाह के पास ले जाओ ताकि वह उसे क़त्ल कर दे, न जादू करो,न किसी पाक दामन औरत पर बोहतान लगाओ और न ही लड़ाई के दिन पीठ फेर कर भागो और यहूदियों! तुम्हारे लिए यह बात

يَوْمَ الزَّحْفِ، وَعَلَيْكُمْ خَاصَّةً اليَهُودَ أَنْ لاَ تَعْتَدُوا فِي السَّبْتِ، قَالَ: فَقَبَّلُوا يَدَيْهِ وَرِجْلَيْهِ. فَقَالاَ: نَشْهَدُ أَنَّكَ نَبِيٌّ. قَالَ: فَمَا يَمْنَعُكُمْ أَنْ تَتَّبِعُونِي؟ قَالُوا: إِنَّ دَاوُدَ دَعَا رَبَّهُ أَنْ لاَ يَزَالَ مِنْ ذُرِّيَّتِهِ نَبِيٌّ، وَإِنَّا نَخَافُ إِنْ تَبِعْنَاكَ أَنْ تَقْتُلَنَا اليَهُودُ.

ख़ास है कि तुम हफ्ते के दिन के बारे में हद से आगे न बढ़ो।'' रावी कहते हैं, उन यहूदियों ने आप(ﷺ) के हाथों और पावों को बोसा दिया फिर कहने लगे: हम गवाही देते हैं कि आप(ﷺ) नबी हैं, आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर तुम्हें मेरी पैरवी करने से क्या चीज़ रोकती है।'' वह कहने लगे: दाऊद (عليه السلام) ने अपने रब से दुआ की थी कि हमेशा उनकी औलाद में नबी रहे और हमें डर है अगर हम ने आप की पैरवी कर ली तो यहूदी हमें क़त्ल कर देंगे।

ज़ईफ़: मुसनद अहमद:4/239. इब्ने माजह:3705. हाकिम:1/9.

वज़ाहत: इस बारे में यज़ीद बिन अस्वद, इब्ने उमर और काब बिन मालिक (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

34 بَابُ مَا جَاءَ فِي مَرْحَبًا

34 - मर्हबा कहना।

2734 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مُوسَى الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ أَبِي النَّضْرِ، أَنَّ أَبَا مُرَّةَ، مَوْلَى أُمِّ هَانِئٍ بِنْتِ أَبِي طَالِبٍ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَمِعَ أُمَّ هَانِئٍ، تَقُولُ: ذَهَبْتُ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَامَ الفَتْحِ فَوَجَدْتُهُ يَغْتَسِلُ وَفَاطِمَةُ تَسْتُرُهُ بِثَوْبٍ، قَالَتْ: فَسَلَّمْتُ، فَقَالَ: مَنْ هَذِهِ؟ قُلْتُ: أَنَا أُمُّ هَانِئٍ فَقَالَ: مَرْحَبًا بِأُمِّ هَانِئٍ قَالَ: فَذَكَرَ فِي الحَدِيثِ قِصَّةً طَوِيلَةً.

2734 - सय्यदा उम्मे हानी (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि फ़तहे मक्का के साल मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास गई तो आप को गुस्ल करते हुए पाया और फ़ातिमा (رضي الله عنها) आप को एक कपड़े से आड़ किए हुए थीं। कहती हैं, फिर मैंने सलाम किया तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "कौन है?'' मैंने अर्ज़ किया, मैं उम्मे हानी हूँ। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "उम्मे हानी को मर्हबा (खुश आमदेद)'' रावी कहते हैं, फिर उन्होंने हदीस में एक लंबा किस्सा बयान किया।

बुख़ारी:357. मुस्लिम:719.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2735 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ مَسْعُودٍ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ مُصْعَبِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ بْنِ أَبِي جَهْلٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَوْمَ جِئْتُهُ: مَرْحَبًا بِالرَّاكِبِ الْمُهَاجِرِ.

2735 - सय्यदना इक्रिमा (رضي الله عنه) बिन अबी जहल रिवायत करते हैं जिस दिन मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आया तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "हिजरत करने वाले ऊँट सवार को मर्हबा।"

ज़ईफ़ुल इस्नाद: अल-मोजमुल कबीर:17/21. हाकिम:3/242.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस हदीस की सनद सहीह नहीं है। इस तर्ज़ पर हम सिर्फ़ इसी सनद से बवास्ता मूसा बिन मसऊद ही, सुफ़ियान से जानते हैं और अबू मूसा बिन मसऊद हदीस में ज़ईफ़ है। अब्दुर्रहमान बिन महदी ने इस हदीस को बवास्ता सुफ़ियान, अबू इस्हाक़ से मुर्सल रिवायत किया है और इसमें मुसअब बिन साद का ज़िक्र नहीं किया और यही ज़्यादा सहीह है।

मुहम्मद बिन बश्शार फ़रमाते हैं, मूसा बिन मसऊद हदीस में ज़ईफ़ है। नीज़ मुहम्मद बिन बश्शार कहते हैं, मैंने मूसा बिन मसऊद से बहुत कुछ लिखा फिर उसे छोड़ दिया।

ख़ुलासा

- सलाम को ख़ूब आम किया जाए यह अहले इस्लाम का शिआर है।
- पूरा सलाम कहने पर अल्लाह की तरफ़ से तीस नेकियाँ अता की जाती हैं।
- किसी के घर जाएँ तो तीन बार तक इजाज़त मांगें, इजाज़त मिल जाए तो ठीक, वर्ना वापस आ जाएं।
- किसी के ज़रिए अपने दोस्त या भाई को सलाम भिजवाया जा सकता है।
- सलाम में इब्तिदा करने वाला अल्लाह का महबूब हो जाता है।
- हाथ या सर के इशारे से सलाम न किया जाए क्योंकि यह यहूदियों का तरीक़ा है।
- बच्चों और ख़्वातीन को भी सलाम कहा जाए। • जब घर में दाख़िल हों तो सब से पहले सलाम करें।
- किसी गैर मुस्लिम को सलाम में पहल न की जाए और अगर वह सलाम कहें तो व अलैकुम कहा जाये।
- छोटा बड़े को, सवार पैदल को, गुजरने वाले बैठे हुए को और थोड़े लोग ज़्यादा लोगों को सलाम करें।
- घर के सामने खड़े हो कर इजाज़त न मांगें। इस से घर में नज़र पड़ने का खदशा है और ऐसा करने वाला मुज्रिम है।
- पहल करने वाला عليك السلام न कहे बल्कि السلام عليكم कहे।
- रास्ते पर बैठने वाले का हक़ है कि वह सलाम का जवाब दे।
- किसी की आमद पर मर्हबा (या खुश आमदेद) कहा जा सकता है।

मज़मून नम्बर 41.

أَبْوَابُ الأَدَبِ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

रसूलुल्लाह (ﷺ) से मर्वी ज़िन्दगी गुज़ारने के आदाब

तआरुफ़

123 अहादीस और 75 अबवाब के इस उन्वान में आप पढ़ेंगे कि:

- मुसलमानों के एक दूसरे पर क्या हुक़ूक़ हैं?
- सतर और पर्दे के अहकामात।
- एक मिसाली मुसलमान बनने के राह नुमा उसूल।

1 بَابُ مَا جَاءَ فِي تَشْمِيتِ العَاطِسِ

2736 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الحَارِثِ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لِلْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ سِتٌّ بِالمَعْرُوفِ، يُسَلِّمُ عَلَيْهِ إِذَا لَقِيَهُ، وَيُجِيبُهُ إِذَا دَعَاهُ، وَيُشَمِّتُهُ إِذَا عَطَسَ، وَيَعُودُهُ إِذَا مَرِضَ، وَيَتْبَعُ جَنَازَتَهُ إِذَا مَاتَ، وَيُحِبُّ لَهُ مَا يُحِبُّ لِنَفْسِهِ.

1 - छींकने वाले को يرحمك الله कहना।

2736 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मुसलमान के मुसलमान पर मारूफ़ तरीक़े से छ हुक़ूक़ हैं, जब उसे मिले तो सलाम कहे, जब उसे दावत दी जाए तो उसे क़ुबूल करे, जब उसे छींक आए तो उसे दुआ दे।[1] जब वह बीमार हो तो उसकी इयादत (बीमार पुर्सी) करे, जब वह मर जाए तो उसके जनाज़े के पीछे जाए और उसके लिए भी वही पसंद करे जो अपने लिए पसंद करता है।''

ज़ईफ़ इब्ने माजह: 1433. मुसनद अहमद: 1/88. दारमी: 2636.

तौज़ीह: تشميت : छींकने वाले को दुआ देना और उसके लिए रसूलुल्लाह (ﷺ) ने يرحمك الله के अल्फ़ाज़ कहने का हुक्म दिया है।

वज़ाहत: इस बारे में अबू हुरैरा, अबू अय्यूब, बरा और अबू मसऊद (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन है और कई तुरूक़ (सनदों) से नबी (ﷺ) से मर्वी है। नीज़ बअ्ज़ (कुछ) ने हारिस आवर के बारे में कलाम किया है।

2737 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُوسَى الْمَخْزُومِيُّ الْمَدِينِيُّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لِلْمُؤْمِنِ عَلَى الْمُؤْمِنِ سِتُّ خِصَالٍ، يَعُودُهُ إِذَا مَرِضَ وَيَشْهَدُهُ إِذَا مَاتَ، وَيُجِيبُهُ إِذَا دَعَاهُ، وَيُسَلِّمُ عَلَيْهِ إِذَا لَقِيَهُ، وَيُشَمِّتُهُ إِذَا عَطَسَ، وَيَنْصَحُ لَهُ إِذَا غَابَ أَوْ شَهِدَ.

2737 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "एक मोमिन के लिए दूसरे मोमिन के जिम्मे छः हुक़ूक़ हैं, जब वह बीमार हो जाए तो उसकी इयादत करे, जब वह मर जाए तो उसके जनाज़े में शरीक हो, जब वह उसे दावत दे तो उसकी दावत क़ुबूल करे, जब उसे मिले तो सलाम कहे, जब उसे छींक आए तो उसे दुआ दे और जब वह ग़ायब हो या मौजूद तो उसकी खैरख्वाही करे।"

मुस्लिम:2162 निसाई: 1938. मुसनद अहमद : 2/372

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है और मुहम्मद बिन मूसा मख़्ज़ूमी मदीना के रहने वाले सिक़ह् रावी थे। इनसे अब्दुल अज़ीज़ बिन मुहम्मद और इब्ने अबी फुदैक ने भी रिवायत की है।

2 بَابُ مَا يَقُولُ العَاطِسُ إِذَا عَطَسَ

2 - जब छींक आए तो छींकने वाला क्या कहे?

2738 - حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ مَسْعَدَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا زِيَادُ بْنُ الرَّبِيعِ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَضْرَمِيٌّ، مَوْلَى آلِ الْجَارُودِ عَنْ نَافِعٍ، أَنَّ رَجُلاً عَطَسَ إِلَى جَنْبِ ابْنِ عُمَرَ، فَقَالَ: الحَمْدُ لِلَّهِ، وَالسَّلاَمُ عَلَى رَسُولِ اللهِ قَالَ ابْنُ عُمَرَ: وَأَنَا أَقُولُ: الحَمْدُ لِلَّهِ وَالسَّلاَمُ عَلَى رَسُولِ اللهِ، وَلَيْسَ هَكَذَا عَلَّمَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، عَلَّمَنَا أَنْ نَقُولَ: الحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ.

2738 - नाफ़ेअ (ﷺ) बयान करते हैं कि अब्दुल्लाह बिन उमर (ﷺ) के साथ बैठे हुए एक शख़्स को छींक आयी तो उस ने कहा: الحَمْدُ لِلَّهِ وَالسَّلاَمُ عَلَى رَسُولِ اللهِ तो इब्ने उमर (ﷺ) ने फ़रमाया, " मैं भी الحَمْدُ لِلَّهِ وَالسَّلاَمُ عَلَى رَسُولِ اللهِ कह सकता हूँ लेकिन इस तरह हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तालीम नहीं दी आपने हमें तालीम दी है कि इस मौक़ा पर हम الحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ , (हर हाल में अल्लाह का शुक्र है) कहें।

हसन: हाकिम: 4/265

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। हम इसे जियाद बिन रबी की सनद से ही जानते हैं।

3 - छींक लेने वाले को क्या दुआ दी जाए?

3 بَابُ مَا جَاءَ كَيْفَ يُشَمَّتُ الْعَاطِسُ

2739 - सय्यदना अबू मूसा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि यहूदी नबी (ﷺ) के पास छींकते थे, उन्हें उम्मीद होती थी कि आप उनके लिए يَرْحَمُكُمُ اللَّهُ. कहें, आप (ﷺ) कहते: ": يَهْدِيكُمُ اللَّهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ. (अल्लाह तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारी हालत ठीक करे।) ''

सहीह: अबू दाऊद: 5038. मुसनद अहमद: 4/400. हाकिम: 4/268

2739 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ حَكِيمِ بْنِ دَيْلَمَ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ: كَانَ الْيَهُودُ يَتَعَاطَسُونَ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْجُونَ أَنْ يَقُولَ لَهُمْ: يَرْحَمُكُمُ اللَّهُ، فَيَقُولُ: يَهْدِيكُمُ اللَّهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ.

वज़ाहत: इस बारे में अली, अबू अय्यूब, सालिम बिन उबैद, अब्दुल्लाह बिन जाफ़र और अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2740 - सय्यदना सालिम बिन उबैद (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि वह लोगों के साथ एक सफ़र पर थे कि लोगों में से एक आदमी को छींक आई तो उस ने السَّلَامُ عَلَيْكُمْ कहा। उन्होंने कहा: तुम्हारे ऊपर भी और तुम्हारी मां पर भी सलामती हो, तो उस आदमी ने अपने दिल में गुस्सा किया, सालिम फ़रमाने लगे: मैंने वही कहा: जो नबी (ﷺ) ने कहा था। एक आदमी ने नबी (ﷺ) के पास छींक मारी, फिर उस ने कहा: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ": عَلَيْكَ وَعَلَى أُمِّكَ (तुम पर और तुम्हारी मां पर भी सलामती हो) जब तुम में से किसी को छींक

2740 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ الزُّبَيْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ هِلَالِ بْنِ يَسَافٍ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عُبَيْدٍ، أَنَّهُ كَانَ مَعَ الْقَوْمِ فِي سَفَرٍ فَعَطَسَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ، فَقَالَ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ، فَقَالَ: عَلَيْكَ وَعَلَى أُمِّكَ، فَكَأَنَّ الرَّجُلَ وَجَدَ فِي نَفْسِهِ، فَقَالَ: أَمَا إِنِّي لَمْ أَقُلْ إِلاَّ مَا قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، عَطَسَ رَجُلٌ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ، فَقَالَ

النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: عَلَيْكَ وَعَلَى أُمِّكَ، إِذَا عَطَسَ أَحَدُكُمْ فَلْيَقُلْ: الحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ العَالَمِينَ، وَلْيَقُلْ لَهُ مَنْ يَرُدُّ عَلَيْهِ: يَرْحَمُكَ اللَّهُ، وَلْيَقُلْ: يَغْفِرُ اللَّهُ لِي وَلَكُمْ.

आए तो वह الحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ العَالَمِينَ **कहे और जवाब देने वाला :** يَرْحَمُكَ اللَّهُ **कहे और यह (छींकने वाला)** يَغْفِرُ اللَّهُ لِي وَلَكُمْ **(अल्लाह मुझे और तुम्हें माफ़ फ़रमाए) कहे''**

ज़ईफ़: अबू दाऊद: 5038. हाकिम: 4/267. इब्ने हिब्बान: 599.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, मंसूर से इस हदीस की रिवायत में मुहद्दिसीन का इख़्तिलाफ़ है: बअ़ज़ ने हिलाल बिन यसाफ़ और सालिम के दर्मियान एक और आदमी को भी दाख़िल किया है।

2741 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ أَبِي لَيْلَى، عَنْ أَخِيهِ عِيسَى بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ أَبِي أَيُّوبَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِذَا عَطَسَ أَحَدُكُمْ فَلْيَقُلْ: الحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ، وَلْيَقُلِ الَّذِي يَرُدُّ عَلَيْهِ، يَرْحَمُكَ اللَّهُ، وَلْيَقُلْ هُوَ: يَهْدِيكُمُ اللَّهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ.

2741 - सय्यदना अबू अय्यूब (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब तुम में से किसी को छींक आए तो वह कहे: الحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ **उसे जवाब देने वाला** يَرْحَمُكَ اللَّهُ **कहे, और यह ख़ुद :** يَهْدِيكُمُ اللَّهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ. **कहे।''**

सहीह: इब्ने माजह: 3715. दारमी: 2662. हाकिम: 4/266.

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं हमें मुहम्मद बिन मुसन्ना ने उन्हें मुहम्मद बिन जाफ़र ने शोबा से इब्ने अबी लैला के ज़रिए इस सनद के साथ ऐसी ही हदीस बयान की है।

शोबा ने इस हदीस को इब्ने अबी लैला से बयान करते वक़्त ऐसे ही अबू अय्यूब (ﷺ) के ज़रिए नबी (ﷺ) से बयान किया है। लेकिन इब्ने अबी लैला इस हदीस में मुज़्तरिब हैं, कभी वह बवास्ता अबू अय्यूब (ﷺ) नबी (ﷺ) बयान करते हैं और कभी बवास्ता अली (ﷺ) नबी (ﷺ) से रिवायत करते हैं।

अबू ईसा कहते हैं, हमें मुहम्मद बिन बश्शार और मुहम्मद बिन यह्या सक़फ़ी मर्वज़ी ने यह दोनों कहते हैं, हमें यह्या बिन सईद क़त्तान ने इब्ने अबी लैला से उन्होंने अपने भाई ईसा से उन्होंने अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला से बवास्ता अली (ﷺ) नबी (ﷺ) से ऐसे ही हदीस बयान की है।

4 - छींकने वाले की الحمد لله सुनकर उसे जवाब दिया जाए।

4 بَابُ مَا جَاءَ فِي إِيجَابِ التَّشْمِيتِ بِحَمْدِ العَاطِسِ

2742 - सय्यदना अनस बिन मालिक (ﷺ) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) के पास दो आदमियों ने छींक मारी, आप ने उन में से एक को दुआ दी और दूसरे को न दी। जिसे आप(ﷺ) ने दुआ नहीं दी थी वह कहने लगा: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आप ने उसके छींक का जवाब दिया है लेकिन मुझे नहीं दिया, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "उस ने अल्लाह की तारीफ़ (हम्द) की थी और तुमने तारीफ़ नहीं की।''

बुख़ारी: 6221. मुस्लिम: 2991. अबू दाऊद: 5039. इब्ने माजह: 3713

2742 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ سُلَيْمَانَ التَّيْمِيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ رَجُلَيْنِ عَطَسَا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَشَمَّتَ أَحَدَهُمَا وَلَمْ يُشَمِّتِ الآخَرَ، فَقَالَ الَّذِي لَمْ يُشَمِّتْهُ: يَا رَسُولَ اللهِ شَمَّتَّ هَذَا وَلَمْ تُشَمِّتْنِي، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّهُ حَمِدَ اللَّهَ وَإِنَّكَ لَمْ تَحْمَدِ اللَّهَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।और बवास्ता अबू हुरैरा (ﷺ) भी नबी (ﷺ) से मर्वी है।

5 - छींक का कितनी बार जवाब दिया जाए।

5 بَابُ مَا جَاءَ كَمْ يُشَمَّتُ العَاطِسُ

2743 - इयास बिन सलमा (ﷺ) अपने बाप से रिवायत करते हैं कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास छींक मारी, मैं भी मौजूद था तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "يَرْحَمُكَ اللَّهُ फिर उस ने दूसरी और तीसरी मर्तबा छींक मारी तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "इस आदमी को ज़ुकाम है।''

मुस्लिम: 2993. अबू दाऊद: 5037.इब्ने माजह: 3714.

2743 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عِكْرِمَةُ بْنُ عَمَّارٍ، عَنْ إِيَاسِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: عَطَسَ رَجُلٌ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَا شَاهِدٌ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَرْحَمُكَ اللَّهُ، ثُمَّ عَطَسَ الثَّانِيَةَ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: هَذَا رَجُلٌ مَزْكُومٌ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने यह्या बिन सईद से उन्हें इक्रिमा बिन अम्मार ने इयास बिन सलमा से उनके बाप के ज़रिए नबी (ﷺ) से इसी तरह हदीस बयान की है लेकिन इसमें है कि आप (ﷺ) ने तीसरी मर्तबा फ़रमाया, " तुम्हें ज़ुकाम है।''

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस इब्ने मुबारक की रिवायत से ज़्यादा सहीह है। नीज़ शोबा ने भी इक्रिमा बिन अम्मार से इस हदीस को यह्या बिन सईद की तरह रिवायत किया है। हमें यह हदीस अहमद बिन हकम बसरी ने मुहम्मद बिन जाफ़र से बवास्ता शोबा इक्रिमा बिन अम्मार से बयान की है।

जबकि अब्दुर्रहमान बिन महदी ने भी इक्रिमा बिन अम्मार से इब्ने मुबारक की तरह रिवायत की है इसमें भी है कि आप ने तीसरी मर्तबा फ़रमाया, "तुम्हें ज़ुकाम है।'' यह हदीस हमें इस्हाक़ बिन मंसूर ने अब्दुर्रहमान बिन महदी से बयान की है।

2744 - حَدَّثَنَا القَاسِمُ بْنُ دِينَارٍ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ السَّلُولِيُّ الكُوفِيُّ، عَنْ عَبْدِ السَّلاَمِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَبِي خَالِدٍ، عَنْ عُمَرَ بْنِ إِسْحَاقَ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، عَنْ أُمِّهِ، عَنْ أَبِيهَا، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يُشَمَّتُ العَاطِسُ ثَلاَثًا، فَإِنْ زَادَ فَإِنْ شِئْتَ فَشَمِّتْهُ وَإِنْ شِئْتَ فَلاَ.

2744 - उमर बिन इस्हाक़ बिन अबू तल्हा अपनी मां से वह अपने बाप से रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "छींक मारने वाले को तीन दफा जवाब दो फिर अगर वह ज़्यादा मर्तबा छींक मारे तो अगर चाहो उसे जवाब दो ना चाहो तो न दो।''

ज़ईफ़: अबू दाऊद: 5036.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है और इसकी सनद भी मज्हूल है।

6 بَابُ مَا جَاءَ فِي خَفْضِ الصَّوْتِ وَتَخْمِيرِ الوَجْهِ عِنْدَ العُطَاسِ

6 - छींकते वक़्त आवाज़ को पस्त और चेहरे को ढाँप लिया जाये।

2745 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ وَزِيرٍ الوَاسِطِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَجْلاَنَ،

2745 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) को जब छींक आती तो आप अपने हाथ या कपड़े से अपने चेहरे को ढाँप

عَنْ سُمَيٍّ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا عَطَسَ غَطَّى وَجْهَهُ بِيَدِهِ أَوْ بِثَوْبِهِ وَغَضَّ بِهَا صَوْتَهُ.

लेते और उसके साथ अपनी आवाज़ को पस्त करते।

हसन सहीह: अबू दाऊद: 5029. हुमैदी: 1157. मुसनद अहमद: 2/439.हाकिम: 4/293.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

7 بَابُ مَا جَاءَ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْعُطَاسَ وَيَكْرَهُ التَّثَاؤُبَ

7 - अल्लाह तआला छींक को पसंद और जमाई (उबासी) को नापसंद करता है।

2746 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ ابْنِ عَجْلَانَ، عَنِ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: الْعُطَاسُ مِنَ اللهِ وَالتَّثَاؤُبُ مِنَ الشَّيْطَانِ، فَإِذَا تَثَاءَبَ أَحَدُكُمْ فَلْيَضَعْ يَدَهُ عَلَى فِيهِ، وَإِذَا قَالَ: آهْ آهْ فَإِنَّ الشَّيْطَانَ يَضْحَكُ مِنْ جَوْفِهِ، وَإِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْعُطَاسَ وَيَكْرَهُ التَّثَاؤُبَ، فَإِذَا قَالَ الرَّجُلُ: آهْ آهْ إِذَا تَثَاءَبَ فَإِنَّ الشَّيْطَانَ يَضْحَكُ فِي جَوْفِهِ.

2746 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, " छींक अल्लाह की तरफ़ से और जमाई (उबासी) शैतान की तरफ़ से है। चुनांचे जब किसी आदमी को जमाई (उबासी) आए तो उसे अपना हाथ अपने मुंह पर रख लेना चाहिए और जब आदमी आह आह कहता है तो शैतान अन्दर से हंसता है। नीज़ अल्लाह तआला छींक को पसंद और जमाई (उबासी) को नापसंद करता है,जब आदमी जमाई (उबासी) के वक़्त आह,आह कहता है तो शैतान अन्दर से हंसता है।''

बुख़ारी: 3289. अबू दाऊद: 5028.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2747 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الخَلاَّلُ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْعُطَاسَ

2747 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "बेशक अल्लाह तआला छींक को पसंद और जमाई (उबासी) को नापसंद करता है चुनांचे जब तुम में से कोई शख़्स छींक कर الحَمْدُ لِلّٰهِ **कहे तो हर सुनने वाले का हक़ है कि वह** يَرْحَمُكَ اللّٰهُ **कहे**

وَيَكْرَهُ التَّثَاؤُبَ، فَإِذَا عَطَسَ أَحَدُكُمْ فَقَالَ: الحَمْدُ لِلَّهِ فَحَقٌّ عَلَى كُلِّ مَنْ سَمِعَهُ أَنْ يَقُولَ: يَرْحَمُكَ اللَّهُ، وَأَمَّا التَّثَاؤُبُ، فَإِذَا تَثَاءَبَ أَحَدُكُمْ فَلْيَرُدَّهُ مَا اسْتَطَاعَ وَلاَ يَقُولَنَّ: هَاهْ هَاهْ، فَإِنَّمَا ذَلِكَ مِنَ الشَّيْطَانِ يَضْحَكُ مِنْهُ.

और रही जमाई (उबासी) पस जब तुम में से कोई शख़्स जमाई (उबासी) ले तो अपनी ताक़त के मुताबिक़ उसे रोके और हाह हाह न करे क्योंकि इस से शैतान हंसता है।''

बुख़ारी: 4/152. मुसनद अहमद: 2/428. अबू दाऊद: 5028

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।और इब्ने अजलान की हदीस से ज़्यादा सहीह है। नीज़ इब्ने अबी जिब, सईद मक़्बुरी की रिवायत को इब्ने अजलान से ज़्यादा याद रखने वाले और समझने वाले थे।

अबू ईसा कहते हैं, मैंने अबू बक्र अत्तार बसरी से सुना वह बवास्ता अली बिन मदीनी यह्या बिन सईद से ज़िक्र कर रहे थे कि मुहम्मद बिन अजलान कहते हैं, सईद मक़्बुरी की बअ़ज़ अहादीस ऐसी हैं जिन्हें सईद ने अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत किया है और बाज को सईद ने एक आदमी के वास्ते के साथ अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत किया है चुनाँचे ये मुझ पर गुडमुड हो गई लिहाजा मैंने उन्हें सईद मक़्बुरी के ज़रिए से ही अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत कर दिया।

8 بَابُ مَا جَاءَ أَنَّ العُطَاسَ فِي الصَّلاَةِ مِنَ الشَّيْطَانِ

8 - दौराने नमाज़ छींक भी शैतान की तरफ़ से होती है।

2748 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شَرِيكٌ، عَنْ أَبِي اليَقْظَانِ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، رَفَعَهُ قَالَ: العُطَاسُ وَالنُّعَاسُ وَالتَّثَاؤُبُ فِي الصَّلاَةِ وَالحَيْضُ وَالقَيْءُ وَالرُّعَافُ مِنَ الشَّيْطَانِ.

2748 - अदी बिन साबित अपने बाप के ज़रिए अपने दादा से मर्फ़ू रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "नमाज़ में छींक, ओंघ, जमाई (उबासी), हैज़, क़ै और नक्सीर शैतान की तरफ़ से है।''

ज़ईफ़: इब्ने माजह: 969.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। हम इसे शरीक के तरीक़ से ही अबू यक्ज़ान से जानते हैं और मैंने मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी से अदी की अपने बाप के ज़रिए अपने दादा से बयान कर्दा रिवायत के बारे में पूछा, मैंने कहा: अदी के दादा का क्या नाम था? उन्होंने फ़रमाया, "मैं नहीं जानता। नीज़ बयान किया जाता है कि यह्या बिन मईन कहते हैं, उनका नाम दीनार था।

9 بَابُ كَرَاهِيَةِ أَنْ يُقَامَ الرَّجُلُ مِنْ مَجْلِسِهِ ثُمَّ يُجْلَسُ فِيهِ

9 - किसी शख़्स को उठा कर उसकी जगह बैठना मना है।

2749 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لاَ يُقِيمُ أَحَدُكُمْ أَخَاهُ مِنْ مَجْلِسِهِ ثُمَّ يَجْلِسُ فِيهِ.

2749 - सय्यदना इब्ने उमर (رضی اللہ عنہ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम में से कोई शख़्स अपने भाई को उसकी जगह से न उठाए ताकि फिर उसकी जगह ख़ुद बैठ जाए।"

बुख़ारी: 911. मुस्लिम: 2177. अबू दाऊद: 4828.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2750 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ يُقِيمُ أَحَدُكُمْ أَخَاهُ مِنْ مَجْلِسِهِ ثُمَّ يَجْلِسُ فِيهِ.

2750 - सय्यदना इब्ने उमर (رضی اللہ عنہ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "कोई शख़्स अपने भाई को उसकी मजलिस से न उठाये कि फिर ख़ुद उसकी जगह बैठे।"

बुख़ारी: 911. मुस्लिम: 2177. अबू दाऊद: 4828.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं, यह हदीस सहीह है। सालिम कहते हैं, अगर कोई आदमी इब्ने उमर (رضی اللہ عنہ) के लिये खड़ा होता तो वह उस जगह नहीं बैठते थे।

10 بَابُ مَا جَاءَ إِذَا قَامَ الرَّجُلُ مِنْ مَجْلِسِهِ ثُمَّ رَجَعَ إِلَيْهِ فَهُوَ أَحَقُّ بِهِ

10 - जब कोई आदमी अपनी जगह से उठकर जाए फिर वापस आ जाए तो वही उस जगह का ज़्यादा हक़दार है।

2751 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الْوَاسِطِيُّ عَنْ عَمْرِو بْنِ يَحْيَى عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَحْيَى بْنِ حَبَّانَ عَنْ عَمِّهِ وَاسِعِ بْنِ حَبَّانَ عَنْ وَهْبِ بْنِ حُذَيْفَةَ , أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ

2751 - सय्यदना वहब बिन हुज़ैफ़ा (رضی اللہ عنہ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "आदमी अपनी बैठने की जगह का ज़्यादा हक़दार है अगर वह किसी काम से बाहर निकले फिर वापस आ जाए तो उस जगह पर

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ الرَّجُلُ أَحَقُّ بِمَجْلِسِهِ وَإِنْ خَرَجَ لِحَاجَتِهِ ثُمَّ عَادَ فَهُوَ أَحَقُّ بِمَجْلِسِهِ

बैठने का ज़्यादा हक़दार है।''

सहीह: मुसनद अहमद: 3/422. अल-मोजमुल कबीर: 22/359.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस सहीह ग़रीब है।नीज़ इस बारे में अबू बक्र, अबू सईद और अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

11 بَابُ مَا جَاءَ فِي كَرَاهِيَةِ الْجُلُوسِ بَيْنَ الرَّجُلَيْنِ بِغَيْرِ إِذْنِهِمَا

11 - दो आदमियों के दर्मियान उनकी इजाज़त के बग़ैर बैठना मना है।

2752 - حَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا أُسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لاَ يَحِلُّ لِلرَّجُلِ أَنْ يُفَرِّقَ بَيْنَ اثْنَيْنِ إِلاَّ بِإِذْنِهِمَا .

2752 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "किसी आदमी के लिए हलाल नहीं है कि वह दो आदमियों के दर्मियान उनकी इजाज़त के बग़ैर तफ़रीक़ करे।''

हसन सहीह: अबू दाऊद: 4844.मुसनद अहमद: 2/213. अदबुल मुफ़रद: 1142.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। इसे आमिर अहवल ने भी अम्र बिन शोऐब से इसी तरह रिवायत किया है।

12 بَابُ مَا جَاءَ فِي كَرَاهِيَةِ الْقُعُودِ وَسْطَ الْحَلْقَةِ

12- हल्क़े के दर्मियान (बीच में) बैठना मना है

2753 - حَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي مِجْلَزٍ، أَنَّ رَجُلاً قَعَدَ وَسْطَ الْحَلْقَةِ فَقَالَ حُذَيْفَةُ: مَلْعُونٌ عَلَى لِسَانِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَوْ لَعَنَ اللَّهُ عَلَى لِسَانِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ قَعَدَ وَسْطَ الْحَلْقَةِ.

2753 - अबू मिज्लज़ (رحمه الله) से रिवायत है कि एक आदमी लोगों के हल्क़े के दर्मियान बैठ गया तो हुज़ैफा (رضي الله عنه) ने फ़रमाया, मुहम्मद (ﷺ) की ज़बानी मलउन है या (यह कहा कि अल्लाह तआला ने मुहम्मद (ﷺ) की ज़बानी उस शख़्स पर लानत की जो हल्क़े के दर्मियान बैठे।

ज़ईफ़: अबू दाऊद: 4826. मुसनद अहमद: 5/384. हाकिम; 4/281

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और अबू मिज्लज़ (رحمه الله) का नाम लाहिक़ बिन हुमैद (رحمه الله) था।

13 بَابُ مَا جَاءَ فِي كَرَاهِيَةِ قِيَامِ الرَّجُلِ لِلرَّجُلِ

13 - किसी आदमी का दूसरे आदमी के लिए (ताज़ीमन) खड़े होना मना है।

2754 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَفَّانُ، قَالَ: أَخْبَرَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ حُمَيْدٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: لَمْ يَكُنْ شَخْصٌ أَحَبَّ إِلَيْهِمْ مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَكَانُوا إِذَا رَأَوْهُ لَمْ يَقُومُوا لِمَا يَعْلَمُونَ مِنْ كَرَاهِيَتِهِ لِذَلِكَ.

2754 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि उन (सहाबा किराम رضي الله عنهم) को रसूलुल्लाह (ﷺ) से ज़्यादा कोई शख़्स महबूब नहीं था। कहते हैं, वह भी आप (ﷺ) को देखकर खड़े नहीं होते थे इसलिए कि वह आप की तरफ़ से उसकी ना पसंदीदगी को जानते थे।

सहीह: इब्ने अबी शैबा: 8/586. मुसनद अहमद: 3/122. अबू याला: 3784.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस सनद से यह हदीस सहीह ग़रीब है।

2755 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ الشَّهِيدِ، عَنْ أَبِي مِجْلَزٍ، قَالَ: خَرَجَ مُعَاوِيَةُ، فَقَامَ عَبْدُ اللهِ بْنُ الزُّبَيْرِ وَابْنُ صَفْوَانَ حِينَ رَأَوْهُ. فَقَالَ: اجْلِسَا، سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَتَمَثَّلَ لَهُ الرِّجَالُ قِيَامًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ.

2755 - अबू मिज्लज़ (رحمه الله) बयान करते हैं कि मुआविया (رضي الله عنه) बाहर निकले तो अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर और इब्ने सुफ़ियान (رضي الله عنهما) ने जब उन्हें देखा तो खड़े हो गए, उन्होंने फ़रमाया, बैठ जाओ, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "कि जो शख़्स इस बात को पसन्द करे कि लोग उस के लिए खड़े हों तो वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।"

वज़ाहत: इस बारे में अबू उमामा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन है।

इमाम तिर्मिज़ी(رحمه الله) फ़रमाते हैं, हमें हन्नाद ने वह कहते हैं, हमें अबू उसामा ने हबीब बिन शहीद से उन्होंने अबू मिज्लज़(رحمه الله) से बवास्ता मुआविया(رضي الله عنه), नबी(ﷺ) से ऐसे ही हदीस बयान की है।

14 - नाख़ुन तराशना।

14 بَابُ مَا جَاءَ فِي تَقْلِيمِ الأَظْفَارِ

2756 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْحُلْوَانِيُّ وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: خَمْسٌ مِنَ الفِطْرَةِ، الاِسْتِحْدَادُ، وَالخِتَانُ، وَقَصُّ الشَّارِبِ، وَنَتْفُ الإِبْطِ، وَتَقْلِيمُ الأَظْفَارِ.

2756 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "पांच चीजें फ़ितरत से हैं, ज़ेरे नाफ़ बाल साफ़ करना, ख़तना, मूंछें काटना, बगलों के बाल उखाड़ना, और नाख़ुन तराशना।"

बुख़ारी: 5889. मुस्लिम: 257. अबू दाऊद: 4198. इब्ने माजह: 292. निसाई: 10, 11, 2525

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2757 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، وَهَنَّادٌ، قَالاَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ زَكَرِيَّا بْنِ أَبِي زَائِدَةَ، عَنْ مُصْعَبِ بْنِ شَيْبَةَ، عَنْ طَلْقِ بْنِ حَبِيبٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: عَشْرٌ مِنَ الْفِطْرَةِ، قَصُّ الشَّارِبِ، وَإِعْفَاءُ اللِّحْيَةِ، وَالسِّوَاكُ، وَالاِسْتِنْشَاقُ، وَقَصُّ الأَظْفَارِ، وَغَسْلُ البَرَاجِمِ، وَنَتْفُ الإِبِطِ، وَحَلْقُ العَانَةِ، وَانْتِقَاصُ الْمَاءِ قَالَ زَكَرِيَّا: قَالَ مُصْعَبٌ: وَنَسِيتُ الْعَاشِرَةَ، إِلاَّ أَنْ تَكُونَ الْمَضْمَضَةَ.

2757 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "दस चीजें फ़ितरत से (ताल्लुक़ रखती) हैं, मूंछें काटना, दाढ़ी बढ़ाना, मिस्वाक, नाक साफ़ करना, नाख़ुन काटना, उँगलियों के जोड़ धोना, बगलों के बाल उखाड़ना, ज़ेरे नाफ बाल मूंडना और पानी से इस्तिंजा करना।" ज़करिया का कहना है कि मुसअब कहते हैं, मैं दसवीं चीज़ भूल गया हूँ, हो सकता है कि वह कुल्ली करना हो।

मुस्लिम: 261. अबू दाऊद: 53. इब्ने माजह: 293. निसाई: 5040.

वज़ाहत: इस बारे में अम्मार बिन यासिर, इब्ने उमर और अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

अबू ईसा कहते हैं, यह हदीस हसन है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, وَانْتِقَاصُ الْمَاءِ पानी से इस्तिंजा करना ही होता है।

15 بَابٌ فِي التَّوْقِيتِ فِي تَقْلِيمِ الأَظْفَارِ وَأَخْذِ الشَّارِبِ

15 - नाख़ुन तराशने और मूंछें काटने के लिए वक़्त की हद।

2758 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ بْنُ عَبْدِ الوَارِثِ، قَالَ: حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ مُوسَى أَبُو مُحَمَّدٍ صَاحِبُ الدَّقِيقِ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عِمْرَانَ الجَوْنِيُّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ وَقَّتَ لَهُمْ فِي كُلِّ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً تَقْلِيمَ الأَظْفَارِ، وَأَخْذَ الشَّارِبِ، وَحَلْقَ العَانَةِ.

2758 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने उनके लिये हर चालीस रातों में नाख़ुन तराशने, मूंछें कटवाने और ज़ेरे नाफ बाल मुंडवाने को मुक़र्रर किया।

मुस्लिम: 1/153. अबू दाऊद: 4200. इब्ने माजह: 295.

2759 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ أَبِي عِمْرَانَ الجَوْنِيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: وُقِّتَ لَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَصَّ الشَّارِبِ، وَتَقْلِيمَ الأَظْفَارِ، وَحَلْقَ الْعَانَةِ، وَنَتْفَ الْإِبْطِ، لاَ يُتْرَكُ أَكْثَرَ مِنْ أَرْبَعِينَ يَوْمًا

2759 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें मूंछें काटने, नाख़ुन तराशने, ज़ेरे नाफ बाल मूंडने और बगलों के बाल उखाड़ने में यह वक़्त मुक़र्रर किया कि हम इन्हें चालीस दिन से ज़्यादा न छोड़ें।

मुस्लिम: 258. अबू दाऊद: 4200. इब्ने माजह: 295. निसाई: 14.

वज़ाहत: यह हदीस पिछली हदीस से ज़्यादा सहीह है और सदक़ा बिन मूसा इनके नज़दीक हाफ़िज़ नहीं है।

16 بَابُ مَا جَاءَ فِي قَصِّ الشَّارِبِ

16 - मूंछें काटना।

2760 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُمَرَ بْنِ الوَلِيدِ الكِنْدِيُّ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ،

2760 - सय्यदना इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) अपने मूंछों को

عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ سِمَاكٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُصُّ أَوْ يَأْخُذُ مِنْ شَارِبِهِ، قَالَ: وَكَانَ إِبْرَاهِيمُ خَلِيلُ الرَّحْمَنِ يَفْعَلُهُ.

छोटा करते या काटते थे और खलीलुर्रहमान इब्राहीम (عليه السلام) भी यह किया किया करते थे।

ज़ईफ़ुल इस्नाद: इब्ने अबी शैबा: 8/568. मुसनद अहमद: 1/301. अबू याला: 2715.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है।

2761 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبِيدَةُ بْنُ حُمَيْدٍ، عَنْ يُوسُفَ بْنِ صُهَيْبٍ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ لَمْ يَأْخُذْ مِنْ شَارِبِهِ فَلَيْسَ مِنَّا.

2761 - सय्यदना ज़ैद बिन अर्क़म (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स अपनी मूंछें न कटवाए वह हम में से नहीं है।"

सहीह: निसाई: 13. इब्ने हिब्बान: 5477. मुसनद अहमद: 4/366

वज़ाहत: इस बारे में मुग़ीरा बिन शोबा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

अबू ईसा कहते हैं, हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने वह कहते हैं, हमें यह्या बिन सईद ने यूसुफ़ बिन सुहैब से इसी सनद से ऐसे ही हदीस बयान की है।

17 بَابُ مَا جَاءَ فِي الأَخْذِ مِنَ اللِّحْيَةِ

17 - दाढ़ी के बाल उतारना।

2762 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ هَارُونَ، عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَأْخُذُ مِنْ لِحْيَتِهِ مِنْ عَرْضِهَا وَطُولِهَا.

2762 - अम्र बिन शोऐब अपने बाप से, वह अपने दादा (सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) से रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) अपनी दाढ़ी की लम्बाई और चौड़ाई से कुछ बाल उतारते थे।

मौज़ू: अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा: 288. अल-कामिल: 5/1689. अख़्लाकुन्नबी,प. 282.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। और मैंने मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी से सुना वह फ़रमा रहे थे, उमर बिन हारून मुकारिबुल हदीस हैं। मैं इनकी कोई ऐसी हदीस नहीं जानता

जिस की कोई असल न हो या यह कहा कि जिस में वह अकेले हों सिवाए इस हदीस के कि नबी (ﷺ) अपनी दाढ़ी मुबारक चौड़ाई और लम्बाई की तरफ़ से काटते थे। नीज़ हम इसे अम्र बिन हारून की सनद से ही जानते हैं और मैंने उन्हें (यानी इमाम बुख़ारी को) उमर बिन हारून के बारे में अच्छी राय वाला पाया है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, मैंने क़तादा को फ़रमाते हुए सुना कि उमर बिन हारून मोहद्दिस थे और कहा करते थे, ईमान कौल और अमल का नाम है।

मैंने कुतैबा से सुना कह रहे थे: हमें वकीअ बिन जर्राह ने एक आदमी के ज़रिए सौर बिन यज़ीद से बयान किया है कि नबी (ﷺ) ने ताइफ़ वालों पर (पत्थर बरसाने के लिए) मिन्जिनीक़ नसब की थी।

कुतैबा कहते हैं, मैंने वकीअ से पूछा यह आदमी कौन थे? उन्होंने कहा: तुम्हारे साथी उमर बिन हारून।

18 بَابُ مَا جَاءَ فِي إِعْفَاءِ اللِّحْيَةِ

18- दाढ़ी बढ़ाना।

2763 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الخَلاَّلُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ نُمَيْرٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: احْفُوا الشَّوَارِبَ وَاعْفُوا اللِّحَى.

2763 - सय्यदना इब्ने उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मूंछों को खूब काटो और दाढ़ियों को बढ़ाओ।''

बुख़ारी: 5893. मुस्लिम: 259. अबू दाऊद: 4199. निसाई: 15, 5044, 5066, तोहफतुल अशराफ़: 7945

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2764 - حَدَّثَنَا الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ نَافِعٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَرَنَا بِإِحْفَاءِ الشَّوَارِبِ وَإِعْفَاءِ اللِّحَى.

2764 - सय्यदना इब्ने उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मूंछों को अच्छी तरह काटने और दाढ़ियों को बढ़ाने का हुक्म दिया।

सहीह: देखिये हदीसे साबिक़: तोहफतुल अशराफ़: 8542.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और अबू बक्र बिन नाफ़े, इब्ने उमर के आज़ादकर्दा, सिक़ह् रावी थे। उमर बिन नाफ़े भी सिक़ह् थे और इब्ने उमर के आज़ादकर्दा

अब्दुल्लाह बिन नाफ़े को जईफ़ कहा गया है।

19 - लेट कर एक टांग दूसरी टांग पर रखना।

19 بَابُ مَا جَاءَ فِي وَضْعِ إِحْدَى الرِّجْلَيْنِ عَلَى الأُخْرَى مُسْتَلْقِيًا

2765 - अब्बाद बिन तमीम अपने चचा से रिवायत करते हैं कि उन्होंने नबी (ﷺ) को मस्जिद में चित लेटे हुए देखा आप अपनी एक टांग दूसरी टांग पर रखे हुए थे।

बुख़ारी: 475. मुस्लिम: 2100. अबू दाऊद: 4866. निसाई: 721.

2765 - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْمَخْزُومِيُّ وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عَبَّادِ بْنِ تَمِيمٍ، عَنْ عَمِّهِ، أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُسْتَلْقِيًا فِي الْمَسْجِدِ وَاضِعًا إِحْدَى رِجْلَيْهِ عَلَى الأُخْرَى.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और अब्बाद बिन तमीम के चचा सय्यदना अब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन आसिम माज़िनी हैं।

20 - इस तरह करने की कराहत।

20 بَابُ مَا جَاءَ فِي الْكَرَاهِيَةِ فِي ذَلِكَ

2766 - सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब तुम में से कोई शख़्स अपनी कमर के बल लेटे तो अपनी एक टांग दूसरी टाँग के ऊपर न रखे।"

मुस्लिम: 2099. अबू दाऊद: 4865.

2766 - حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ أَسْبَاطِ بْنِ مُحَمَّدٍ الْقُرَشِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، قَالَ: حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ التَّيْمِيُّ، عَنْ خِدَاشٍ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا اسْتَلْقَى أَحَدُكُمْ عَلَى ظَهْرِهِ فَلاَ يَضَعْ إِحْدَى رِجْلَيْهِ عَلَى الأُخْرَى.

वज़ाहत: इस हदीस को कई राविर्यो ने सुलैमान तैमी से रिवायत किया है और हम इस (सनद में ज़िक्रकर्दा) ख़िदाश को नहीं जानते कि यह कौन है और सुलैमान ने इस से और अहादीस भी रिवायत की हैं।

2767 - सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इश्तिमाले

2767 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى

اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ اشْتِمَالِ الصَّمَّاءِ وَالِاحْتِبَاءِ فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ، وَأَنْ يَرْفَعَ الرَّجُلُ إِحْدَى رِجْلَيْهِ عَلَى الْأُخْرَى وَهُوَ مُسْتَلْقٍ عَلَى ظَهْرِهِ.

सम्मा और एक कपड़े में गोठ मार कर बैठने[1] से मना फ़रमाया और इस से भी कि आदमी अपनी एक टांग दूसरी पर रख कर चित लेटे।

मुस्लिम:2029. अबूदाऊद: 4081. निसाई: 5342

तौज़ीह: اشْتِمَالِ الصَّمَّاءِ और حبوه या احتباء के बारे में तफ़्सील गुज़र पहले चुकी है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

21 بَابُ مَا جَاءَ فِي كَرَاهِيَةِ الِاضْطِجَاعِ عَلَى الْبَطْنِ

21 - पेट के बल (उलटा) लेटना मना है।

2768 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ، وَعَبْدُ الرَّحِيمِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: رَأَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلاً مُضْطَجِعًا عَلَى بَطْنِهِ فَقَالَ: إِنَّ هَذِهِ ضِجْعَةٌ لاَ يُحِبُّهَا اللَّهُ.

2768 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक आदमी को पेट के बल लेटे हुए देखा तो आप ने फ़रमाया, "लेटने के इस अंदाज़ को अल्लाह तआला पसंद नहीं करता।"

हसन सहीह: मुसनद अहमद: 2/287. इब्ने हिब्बान: 5549. हाकिम: 4/271

वज़ाहत: इस बारे में तिह्फा और इब्ने उमर (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह्या बिन अबी कसीर ने इस हदीस को अबू सलमा से बवास्ता यईश बिन तिह्फ़ा उनके बाप से रिवायत किया है। उन्हें तिख़्फ़ा भी कहा जाता है लेकिन सहीह तिह्फा ही है, तिह्फ़ा भी कहा गया और बअ़ज़ हुफ्फाज़े हदीस कहते हैं सहीह लफ्ज़ तिख़्फ़ा है।

22 بَابُ مَا جَاءَ فِي حِفْظِ الْعَوْرَةِ

22 - सतर की हिफाज़त करना।

2769 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا بَهْزُ بْنُ

2769 - बहज़ बिन हकीम (رحمه الله) बयान करते हैं कि मुझे मेरे बाप ने मेरे दादा से हदीस बयान किया, उन्होंने कहा: मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह

حَكِيمٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ جَدِّي، قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ عَوْرَاتُنَا مَا نَأْتِي مِنْهَا وَمَا نَذَرُ؟ قَالَ: احْفَظْ عَوْرَتَكَ إِلاَّ مِنْ زَوْجَتِكَ أَوْ مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ، فَقَالَ: الرَّجُلُ يَكُونُ مَعَ الرَّجُلِ؟ قَالَ: إِنْ اسْتَطَعْتَ أَنْ لاَ يَرَاهَا أَحَدٌ فَافْعَلْ، قُلْتُ: وَالرَّجُلُ يَكُونُ خَالِيًا، قَالَ: فَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ يُسْتَحْيَا مِنْهُ.

के रसूल(ﷺ)! हम अपने सतर किन से छिपाएं और किन से छोड़ें? (यानी न छिपाएं) आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अपने सतर की हिफाज़त करो सिवाए अपनी बीवी और अपनी लौंडी के। ''अर्ज़ किया, अगर कोई आदमी किसी दूसरे आदमी के साथ हो? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अगर तुम इस्तिताअत (ताकत) रखते हो कि (तुम्हारे) सतर कोई न देखे तो तुम ऐसे ज़रूर करो।'' मैंने अर्ज़ किया, फिर अगर आदमी तन्हा हो तो? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ज़्यादा हक़दार है कि उस से हया की जाए।''

हसन :अबू दाऊद:4017. इब्ने माजह:1920.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन है। और बहज़ के दादा का नाम मुआविया बिन हीदा कुशैरी है। नीज़ जुरैरी ने हकीम बिन मुआविया से भी रिवायत की है जो बहज़ के वालिद हैं।

23 بَابُ مَا جَاءَ فِي الاِتِّكَاءِ

23 - टेक लगाना।

2770 - حَدَّثَنَا عَبَّاسُ بْنُ مُحَمَّدٍ الدُّورِيُّ الْبَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ الْكُوفِيُّ، قَالَ: أَخْبَرَنَا إِسْرَائِيلُ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُتَّكِئًا عَلَى وِسَادَةٍ عَلَى يَسَارِهِ.

2770 - सय्यदना जाबिर बिन समुरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को एक तकिया[1] पर अपनी बाएँ जानिब टेक लगा कर बैठे हुए देखा।

सहीह :अबू दाऊद :4143. मुसनद अहमद:5/102. शमाइल:130

तौज़ीह : وسادة:तकिया बतौर तकिया सर के नीचे रखी जाने वाली इसे وساد भी कहा जाता है। इसकी जमा,وسادات،وسد और وسائد आती है। (अल-मोजमुल वसीत:पृ. 1253)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है। और कई रावियों ने इस हदीस को इस्राईल से बवासता सिमाक, जाबिर (رضي الله عنه) बिन समुरा से रिवायत किया है। वह कहते हैं मैंने नबी

(ﷺ) को एक तकिया पर टेक लगा कर बैठे हुए देखा। उन्होंने बाएं जानिब का ज़िक्र नहीं किया।

2771 - حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ عِيسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُتَّكِئًا عَلَى وِسَادَةٍ.

2771 - जाबिर बिन समुरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैंने नबी (ﷺ) को एक तकिया पर टेक लगा कर बैठे हुए देखा।

सहीह: देखिये साबिक़ हदीस।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

24 بَابُ حديث: لاَ يُؤَمُّ الرَّجُلُ فِي (سُلْطَانِهِ)

24 - हदीस किसी शख़्स को उसकी सल्तनत में मुक़्तदी न बनाया जाए।

2772 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ رَجَاءٍ، عَنْ أَوْسِ بْنِ ضَمْعَجٍ، عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لاَ يُؤَمُّ الرَّجُلُ فِي سُلْطَانِهِ وَلاَ يُجْلَسُ عَلَى تَكْرِمَتِهِ فِي بَيْتِهِ إِلاَّ بِإِذْنِهِ.

2772 - सय्यदना अबू मसऊद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "किसी शख़्स की सल्तनत में उसकी इमामत न की जाए और न ही उसके घर में उसकी इजाज़त के बग़ैर उसकी मस्नद पर बैठा जाए।"

सहीह: तख़रीज के लिए हदीस 235 देखिये।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

25 بَابُ مَا جَاءَ أَنَّ الرَّجُلَ أَحَقُّ بِصَدْرِ دَابَّتِهِ

25 - सवारी का मालिक आगे बैठने का ज़्यादा हक़दार है।

2773 - حَدَّثَنَا أَبُو عَمَّارٍ الحُسَيْنُ بْنُ حُرَيْثٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الحُسَيْنِ بْنِ وَاقِدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ بُرَيْدَةَ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي بُرَيْدَةَ، يَقُولُ: بَيْنَمَا النَّبِيُّ

2773 - सय्यदना अबू बुरैदा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पैदल चल रहे थे कि अचानक एक आदमी आप के पास आया उसके पास एक गधा था कहने लगा: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आप सवार हो जाएँ

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَمْشِي إِذْ جَاءَهُ رَجُلٌ وَمَعَهُ حِمَارٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ ارْكَبْ، وَتَأَخَّرَ الرَّجُلُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لأَنْتَ أَحَقُّ بِصَدْرِ دَابَّتِكَ، إِلاَّ أَنْ تَجْعَلَهُ لِي قَالَ: قَدْ جَعَلْتُهُ لَكَ، قَالَ: فَرَكِبَ. هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ مِنْ هَذَا الوَجْهِ.

और ख़ुद पीछे हट गया। तो अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़रमाया, " नहीं,'' तुम अपनी सवारी पर आगे बैठने के ज़्यादा हक़दार हो मगर तुम मुझे हक़ दे दो तो ठीक है।'' उस ने कहा :मैं आप(ﷺ) को हक़ देता हूँ। रावी कहते हैं, फिर आप सवार हो गए।

सहीह: अबू दाऊद:2572. मुसनद अहमद:5/353. इब्ने हिब्बान:4735.हाकिम:2/64.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है। और इस बारे में कैस बिन साद बिन उबादा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

26 بَابُ مَا جَاءَ فِي الرُّخْصَةِ فِي اتِّخَاذِ الأَنْمَاطِ

26 - क़ालीन (गालीचों) के इस्तेमाल की रुख़सत।

2774 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: هَلْ لَكُمْ أَنْمَاطٌ؟ قُلْتُ: وَأَنَّى تَكُونُ لَنَا أَنْمَاطٌ قَالَ: أَمَا إِنَّهَا سَتَكُونُ لَكُمْ أَنْمَاطٌ قَالَ: فَأَنَا أَقُولُ لِامْرَأَتِي أَخِّرِي عَنِّي أَنْمَاطَكِ فَتَقُولُ: أَلَمْ يَقُلِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّهَا سَتَكُونُ لَكُمْ أَنْمَاطٌ؟ قَالَ: فَأَدَعُهَا.

2774 - सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझ से फ़रमाया, " क्या तुम्हारे पास क़ालीन[1] हैं?'' मैंने अर्ज़ किया, हमारे पास क़ालीन कहाँ! आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अन्क़रीब तुम्हारे पास भी क़ालीन होंगे।'' रावी कहते हैं, फिर मैं अपनी बीवी से कहता कि मुझ से अपना क़ालीन दूर कर दो तो वह कहती: क्या रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नहीं फ़रमाया था कि अन्क़रीब तुम्हारे पास भी क़ालीन होंगे, कहते हैं, फिर मैं उसे छोड़ देता।

बुख़ारी:3631. मुस्लिम:2083. अबू दाऊद:4145. निसाई:3386.

तौज़ीह انماط : نمط की जमा है इसके बहुत से मतालिब हैं। मसलन: बिस्तर के ऊपर वाला कपड़ा, गालीचा, क़ालीन, होदज के ऊपर डाला जाने वाला झालरदार ऊनी कपड़ा, लेकिन सियाक़ के एतबार से यहाँ क़ालीन का माना ज़्यादा बेहतर है। (अल- कामूसुल वहीद:प. 1710)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस सनद से यह हदीस सहीह हसन है।

27 - तीन आदमियों का एक जानवर पर सवारी करना।

27 بَابُ مَا جَاءَ فِي رُكُوبِ ثَلَاثَةٍ عَلَى دَابَّةٍ

2775 - حَدَّثَنَا عَبَّاسٌ العَنْبَرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا النَّضْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ هُوَ الجُرَشِيُّ اليَمَامِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ بْنُ عَمَّارٍ، عَنْ إِيَاسِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: لَقَدْ قُدْتُ نَبِيَّ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالحَسَنَ وَالحُسَيْنَ عَلَى بَغْلَتِهِ الشَّهْبَاءِ حَتَّى أَدْخَلْتُهُ حُجْرَةَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، هَذَا قُدَّامُهُ، وَهَذَا خَلْفَهُ.

2775 - इयास बिन सलमा अपने बाप से रिवायत करते हैं कि मैंने नबी (ﷺ) की खच्चर शहबा को हांका जिस पर आप (ﷺ) हसन और हुसैन رضي الله عنهما) सवार थे यहाँ तक कि मैंने उसे नबी (ﷺ) के हुजरा में दाख़िल किया (और हसन व हुसैन (رضي الله عنهما) में से) एक आप के आगे थे और एक आप के पीछे थे।

मुस्लिम:2423. इब्ने हिब्बान:5618.

वज़ाहत: इस बारे में इब्ने अब्बास और अब्दुल्लाह बिन जाफ़र (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस तरीक़ से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

28 - अचानक पड़ जाने वाली नज़र।

28 بَابُ مَا جَاءَ فِي نَظْرَةِ الْفُجَاءَةِ

2776 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا يُونُسُ بْنُ عُبَيْدٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ بْنِ عَمْرِو بْنِ جَرِيرٍ، عَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ نَظْرَةِ الفُجَاءَةِ فَأَمَرَنِي أَنْ أَصْرِفَ بَصَرِي.

2776 - सय्यदना जरीर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अचानक पड़ जाने वाली नज़र के बारे में पूछा तो आप(ﷺ) ने मुझे नज़र फेर लेने का हुक्म दिया।

मुस्लिम:2159. अबू दाऊद:2148. मुसनद अहमद:4/358.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और अबू ज़ुर्आ का नाम हरम था।

2777 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شَرِيكٌ، عَنْ أَبِي رَبِيعَةَ، عَنِ ابْنِ بُرَيْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، رَفَعَهُ قَالَ: يَا عَلِيُّ لاَ تُتْبِعِ النَّظْرَةَ النَّظْرَةَ فَإِنَّ لَكَ الأُولَى وَلَيْسَتْ لَكَ الآخِرَةُ.

2777 - इब्ने बुरैदा अपने बाप से मर्फ़ू रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ अली! पहली नज़र के बाद दूसरी नज़र मत देखो पहली की तुम्हें छूट थी दूसरी की नहीं।''

हसन: लिग़ैरिही: सहीहुत्तर्ग़ीब:1903. अबू दाऊद:2149. तोहफतुल अशराफ़:2००7.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है हम इसे शरीक के तरीक़ से ही जानते हैं।

29 بَابُ مَا جَاءَ فِي احْتِجَابِ النِّسَاءِ مِنَ الرِّجَالِ

29 - औरतों का मर्दों से पर्दा करना।

2778 - حَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا يُونُسُ بْنُ يَزِيدَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ نَبْهَانَ، مَوْلَى أُمِّ سَلَمَةَ، أَنَّهُ حَدَّثَهُ أَنَّ أُمَّ سَلَمَةَ، حَدَّثَتْهُ أَنَّهَا كَانَتْ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَيْمُونَةَ قَالَتْ: فَبَيْنَا نَحْنُ عِنْدَهُ أَقْبَلَ ابْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ فَدَخَلَ عَلَيْهِ وَذَلِكَ بَعْدَ مَا أُمِرْنَا بِالحِجَابِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: احْتَجِبَا مِنْهُ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ أَلَيْسَ هُوَ أَعْمَى لاَ يُبْصِرُنَا وَلاَ يَعْرِفُنَا؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَفَعَمْيَاوَانِ أَنْتُمَا أَلَسْتُمَا تُبْصِرَانِهِ.

2778 - सय्यदा उम्मे सलमा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि मैं और मैमूना (رضي الله عنها) रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास थीं। फ़रमाती हैं, हम आप(ﷺ) के पास थीं कि इब्ने मक्तूम (رضي الله عنه) आप की ख़िदमत में हाज़िर हुए यह पर्दे के हुक्म के बाद का वाक़िया है तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम दोनों उस से पर्दा करो'' मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! क्या यह नाबीना नहीं हैं? हमें देख नहीं सकते और न ही हमें पहचानते हैं? तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या तुम दोनों भी नाबीनी (अंधी) हो? क्या तुम उसे नहीं देख रहीं?''

ज़ईफ़: अबू दाऊद:4112. मुसनद अहमद:6/296. अबू याला:6922.

तौज़ीह :हाफ़िज़ ज़ुबैर अली ज़ई (رحمه الله) ने इस हदीस को हसन क़रार दिया है। (जामेअ तिर्मिज़ी तबा दारुस्सलाम अर्रियाज़ हदीस नम्बर 2778)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

30 - शौहरों की इजाज़त के बग़ैर औरतों के पास जाना मना है।

30 بَابُ مَا جَاءَ فِي النَّهْيِ عَنِ الدُّخُولِ عَلَى النِّسَاءِ إِلَّا بِإِذْنِ الْأَزْوَاجِ

2779 - सय्यदना अम्र बिन आस (ﷺ) के मौला बयान करते हैं कि अम्र बिन आस (ﷺ) ने उन्हें अली (ﷺ) के पास भेजा वह अस्मा बिन्ते उमैस (ﷺ) के पास जाने की इजाज़त मांग रहे थे तो अली (ﷺ) ने उन्हें इजाज़त दे दी, जब वह अपनी हाजत से फ़ारिग हुए तो उस गुलाम ने अम्र बिन आस (ﷺ) से उस बारे में पूछा तो उन्होंने फ़रमाया, "नबी (ﷺ) ने औरतों के पास उनके शौहरों की इजाज़त के बग़ैर जाने से मना किया है।

सहीह: इब्ने अबी शैबा: 4/409. मुसनद अहमद:4/197. अबू याला:7341. बैहक़ी:7/90.

2779 - حَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الحَكَمِ، عَنْ ذَكْوَانَ، عَنْ مَوْلَى عَمْرِو بْنِ العَاصِ، أَنَّ عَمْرَو بْنَ العَاصِ، أَرْسَلَهُ إِلَى عَلِيٍّ يَسْتَأْذِنُهُ عَلَى أَسْمَاءَ بِنْتِ عُمَيْسٍ فَأَذِنَ لَهُ حَتَّى إِذَا فَرَغَ مِنْ حَاجَتِهِ سَأَلَ الْمَوْلَى عَمْرَو بْنَ العَاصِ عَنْ ذَلِكَ. فَقَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَانَا أَنْ نَدْخُلَ عَلَى النِّسَاءِ بِغَيْرِ إِذْنِ أَزْوَاجِهِنَّ.

वज़ाहत: इस बारे में उक़्बा बिन आमिर, अब्दुल्लाह बिन अम्र और जाबिर (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

31 - औरतों के फ़ित्ना से बचना।

31 بَابُ مَا جَاءَ فِي تَحْذِيرِ فِتْنَةِ النِّسَاءِ

2780 - उसामा बिन ज़ैद और सय्यदना सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल (ﷺ) से रिवायत किया है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैंने अपने बाद औरतों से बढ़ कर मर्दों को नुकसान देने वाला कोई और फ़ित्ना नहीं छोड़ा।''

बुख़ारी:5096. मुस्लिम:2740. इब्ने माजह:3998.

2780 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى الصَّنْعَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ، عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ، وَسَعِيدِ بْنِ زَيْدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ نُفَيْلٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَا تَرَكْتُ بَعْدِي فِي النَّاسِ فِتْنَةً أَضَرَّ عَلَى الرِّجَالِ مِنَ النِّسَاءِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। इस हदीस को कई सिक़ह् रावियों ने सुलैमान तैमी से बवास्ता अबू उस्मान, सय्यदना उसामा बिन ज़ैद के ज़रिए नबी (ﷺ) से रिवायत किया है और इसमें सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल (ﷺ) का ज़िक्र नहीं किया। मोतमिर के अलावा हम किसी को नहीं जानते जिस ने उसामा बिन ज़ैद और सईद बिन ज़ैद दोनों का ज़िक्र किया हो। इस बारे में अबू सईद (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

अबू ईसा कहते हैं, हमें इब्ने अबी उमर ने, उन्हें सुफ़ियान ने सुलैमान अत्तैमी से उन्होंने अबू उस्मान से बवास्ता उसामा बिन ज़ैद नबी (ﷺ) से ऐसे ही रिवायत की है।

32 بَابُ مَا جَاءَ فِي كَرَاهِيَةِ اتِّخَاذِ الْقُصَّةِ

32 - बालों का गुच्छा बनाना मना है।

2781 - حَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا يُونُسُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ: أَخْبَرَنَا حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّهُ سَمِعَ مُعَاوِيَةَ، بِالْمَدِينَةِ يَخْطُبُ يَقُولُ: أَيْنَ عُلَمَاؤُكُمْ يَا أَهْلَ الْمَدِينَةِ؟ إِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْهَى عَنْ هَذِهِ الْقُصَّةِ وَيَقُولُ: إِنَّمَا هَلَكَتْ بَنُو إِسْرَائِيلَ حِينَ اتَّخَذَهَا نِسَاؤُهُمْ.

2781 - हुमैद बिन अब्दुर्रहमान बयान करते हैं कि उन्होंने मुआविया से सुना जब वह मदीना में ख़ुत्बा दे रहे थे, फ़रमाने लगे :ऐ मदीना वालो! तुम्हारे उलमा कहाँ हैं? मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आप(ﷺ) इस कुस्सा[1] से मना करते थे और आप(ﷺ) फ़रमाते : "बनू इस्राईल तभी हलाक हुए जब उनकी औरतों ने यह बनाया।"

बुख़ारी:3468. मुस्लिम:2127. अबू दाऊद:4167. निसाई:50 92, 5248, 5245.

तौज़ीह : الْقُصَّةِ :बालों का गुच्छा, इस तरीक़ा से इस लिए मना किया है कि यह जानिया औरतों की निशानी थी।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और कई तुरुक़ (सनदों) से सय्यदना मुआविया (ﷺ) से मर्वी है।

33 - वासिला, मुस्तौसिला, वाशिमाऔर मुस्तौशिमा का बयान।

33 بَابُ مَا جَاءَ فِي الوَاصِلَةِ وَالمُسْتَوْصِلَةِ وَالوَاشِمَةِ وَالمُسْتَوْشِمَةِ

2782 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبِيدَةُ بْنُ حُمَيْدٍ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَعَنَ الوَاشِمَاتِ وَالمُسْتَوْشِمَاتِ وَالمُتَنَمِّصَاتِ مُبْتَغِيَاتٍ لِلْحُسْنِ مُغَيِّرَاتٍ خَلْقَ اللَّهِ.

2782 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضی اللہ عنہ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने गोदने वाली, गोदने का कहने वाली औरतों, हुस्न की तलाश के लिए दांतों के दर्मियान फ़ासला करने और फ़ासला करने का कहने वाली, अल्लाह की तख़्लीक़ को बदलने वाली औरतों पर लानत की है।[1]

बुख़ारी:4886. मुस्लिम: 2125. अबू दाऊद:4169. इब्ने माजह: 1989. निसाई:3416.

तौज़ीह : وا شمة: चेहरे के किसी भी हिस्से में सुर्मा या नील भरने वाली और متنمصة ख़ूबसूरती के लिए दांतों के दर्मियान फ़ासला करने वाली और واصلة, बालों के साथ बाल मिलाने वाली औरत को कहा जाता है। (इसकी तफ़सील पहले गुज़र चुकी है)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। इसे शोबा और दीगर अइम्मए हदीस ने भी मंसूर से रिवायत किया है।

2783 - حَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَعَنَ اللَّهُ الوَاصِلَةَ وَالمُسْتَوْصِلَةَ وَالوَاشِمَةَ وَالمُسْتَوْشِمَةَ قَالَ نَافِعٌ: الوَشْمُ فِي اللِّثَةِ.

2783 - सय्यदना इब्ने उमर (رضی اللہ عنہ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने बालों के साथ बाल मिलाने वाली, मिलाने का कहने वाली, सुर्मा भरने और भरने का कहने वाली औरत पर लानत की है।" नाफ़े कहते हैं, वश्म मसोढ़े में होता है।

सहीह: तख़रीज के लिए हदीस नम्बर 1759 देखिए।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ इस बारे में आयशा, माक़िल बिन यसार, अस्मा बिन्ते अबी बक्र और इब्ने अब्बास (رضی اللہ عنہ) से भी हदीस मर्वी है।

अबू ईसा कहते हैं,) हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने वह कहते हैं, हमें यह्या बिन सईद ने उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर ने नाफ़े से बवास्ता इब्ने उमर (رضی اللہ عنہ) नबी (ﷺ) से ऐसी ही हदीस बयान की है लेकिन इसमें नाफ़े के कौल का ज़िक्र नहीं है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

34 - मर्दों के साथ मुशाबहत करने वाली औरतें।

34 بَابُ مَا جَاءَ فِي الْمُتَشَبِّهَاتِ بِالرِّجَالِ مِنَ النِّسَاءِ

2784 - सय्यदना इब्ने अब्बास (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मर्दों के साथ मुशाबहत करने वाली औरतों और औरतों से मुशाबहत करने वाले मर्दों पर लानत की है।

बुख़ारी: 5885. अबू दाऊद:4097. इब्ने माजह: 1904.

2784 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ الطَّيَالِسِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، وَهَمَّامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: لَعَنَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمُتَشَبِّهَاتِ بِالرِّجَالِ مِنَ النِّسَاءِ وَالْمُتَشَبِّهِينَ بِالنِّسَاءِ مِنَ الرِّجَالِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2785 - सय्यदना इब्ने अब्बास (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने औरतों की तरह बनने वाले मर्दों और मर्दों की तरह बनने वाली औरतों पर लानत की है।

5886. अबू दाऊद:4930

2785 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الخَلَّالُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، وَأَيُّوبُ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: لَعَنَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمُخَنَّثِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالْمُتَرَجِّلَاتِ مِنَ النِّسَاءِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और इस बारे में आयशा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

35 - औरत को ख़ुशबू लगा कर बाहर निकलना मना है।

35 بَابُ مَا جَاءَ فِي كَرَاهِيَةِ خُرُوجِ الْمَرْأَةِ مُتَعَطِّرَةً

2786 - सय्यदना अबू मूसा (ﷺ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "हर आँख ज़िना करने वाली है और औरत जब

2786 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ القَطَّانُ، عَنْ ثَابِتِ بْنِ عُمَارَةَ

الحَنَفِيِّ، عَنْ غُنَيْمِ بْنِ قَيْسٍ، عَنْ أَبِي مُوسَى، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: كُلُّ عَيْنٍ زَانِيَةٌ، وَالمَرْأَةُ إِذَا اسْتَعْطَرَتْ فَمَرَّتْ بِالمَجْلِسِ فَهِيَ كَذَا وَكَذَا يَعْنِي زَانِيَةً.

ख़ुशबू लगा कर किसी मजलिस के पास से गुज़रे तो वह ऐसी ऐसी है।'' यानी जानिया है।

हसन: मुसनद अहमद: 394. इब्ने ख़ुज़ैमा:1681. अबू दाऊद:4137.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस मसला में अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ यह हदीस हसन सहीह है।

36 بَابُ مَا جَاءَ فِي طِيبِ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ

36 - मर्दों और औरतों की ख़ुशबू का बयान।

2787 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ الحَفَرِيُّ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنِ الجُرَيْرِيِّ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ رَجُلٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: طِيبُ الرِّجَالِ مَا ظَهَرَ رِيحُهُ وَخَفِيَ لَوْنُهُ، وَطِيبُ النِّسَاءِ مَا ظَهَرَ لَوْنُهُ وَخَفِيَ رِيحُهُ.

2787 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मर्दों की ख़ुशबू वह है जिसकी महक (ख़ुशबू) ज़ाहिर और रंग मख़फ़ी हो, जबकि औरतों की ख़ुशबू वह है जिसका रंग ज़ाहिर और ख़ुशबू मख़फ़ी हो।''

सहीह: अबू दाऊद:2174. निसाई:5117. मुसनद अहमद:2/447. शमाइले तिर्मिज़ी:219

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं, हमें अली बिन हुज्र ने वह कहते हैं, हमें इस्माईल बिन इब्राहीम ने जुरैरी से उन्होंने अबू नज़रा से बवास्ता तफावी, सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से नबी (ﷺ) की इसी हदीस की मफ़हूम बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस तो हसन है। लेकिन तफावी की पहचान भी हमें इसी हदीस की सनद से हुई है हम उनका नाम नहीं जानते और इस्माईल बिन इब्राहीम की हदीस मुकम्मल और लम्बी है और नीज़ इस बारे में इमरान बिन हुसैन (رضي الله عنه) से भी मर्वी है।

2788 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرٍ الحَنَفِيُّ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنِ الحَسَنِ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، قَالَ: قَالَ

2788 - सय्यदना इमरान बिन हुसैन (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी अकरम (ﷺ) ने मुझ से फ़रमाया, "मर्दों की बेहतरीन ख़ुशबू वह है जिसकी ख़ुशबू ज़ाहिर और रंग मख़फ़ी हो''

لِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ خَيْرَ طِيبِ الرَّجُلِ مَا ظَهَرَ رِيحُهُ وَخَفِيَ لَوْنُهُ، وَخَيْرَ طِيبِ النِّسَاءِ مَا ظَهَرَ لَوْنُهُ وَخَفِيَ رِيحُهُ، وَنَهَى عَنْ مِيثَرَةِ الأُرْجُوَانِ.

और आप ने रेशमी जीन पोश के इस्तेमाल से मना फ़रमाया।

सहीह: अबू दाऊद:4048. मुसनद अहमद:4/442. हाकिम:4/191.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है।

37 بَابُ مَا جَاءَ فِي كَرَاهِيَةِ رَدِّ الطِّيبِ

37 - खुशबू का तोहफ़ा वापस करना ना पसंद अमल है।

2789 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَزْرَةُ بْنُ ثَابِتٍ، عَنْ ثُمَامَةَ بْنِ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: كَانَ أَنَسٌ لاَ يَرُدُّ الطِّيبَ، وَقَالَ أَنَسٌ: إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ لاَ يَرُدُّ الطِّيبَ.

2789 - सय्यदना सुमामा बिन अब्दुल्लाह (رحمه الله) बयान करते हैं कि अनस (رضي الله عنه) ने खुशबू का तोहफा) वापस नहीं करते थे और अनस फ़रमाते हैं, नबी (ﷺ) खुशबू का तोहफ़ा वापस नहीं करते थे।

बुख़ारी: 2582. निसाई: 5258. मुसनद अहमद: 3/118.

वज़ाहत: इस बारे में अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2790 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي فُدَيْكٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُسْلِمٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ثَلاَثٌ لاَ تُرَدُّ: الوَسَائِدُ، وَالدُّهْنُ، وَاللَّبَنُ الدُّهْنُ: يَعْنِي بِهِ الطِّيبَ.

2790 - सय्यदना इब्ने उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "तीन चीजें वापस न की जाएँ तकिये, ख़ुशबू और दूध।"

हसन: शमाइले तिर्मिज़ी: 218.

वज़ाहत: الدُّهْنُ से मुराद खुशबू है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। और अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम, जुन्दुब के पोते हैं। यह मदीना के रहने वाले थे।

2791 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَلِيفَةَ أَبُو عُبَيْدِ اللهِ الْبَصْرِيُّ، وَعَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، قَالاَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، عَنْ حَجَّاجٍ الصَّوَّافِ، عَنْ حَنَانٍ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا أُعْطِيَ أَحَدُكُمُ الرَّيْحَانَ فَلاَ يَرُدَّهُ فَإِنَّهُ خَرَجَ مِنَ الجَنَّةِ.

2791 - सय्यदना अबू उस्मान नह्दी (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब तुम में से किसी को फूल[1] का तोहफ़ा दिया जाए वह उसे वापस न करे क्योंकि यह जन्नत से निकला है।"

ज़ईफ़: शमाइले तिर्मिज़ी: 221. मरासीले अबी दाऊद:501.

तौज़ीह : الرَّيْحَان :हर खुशबूदार पौधे को الرَّيْحَان कहा जाता है, खुशबू वाले हर फूल को भी الرَّيْحَان कहा जाता है। कहते हैं, المرأة ريحانة وليست بقهر مانة औरत एक फूल है घर की मुन्तज़िमा नहीं।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब हसन है और हम हन्नान की इसके अलावा कोई और हदीस नहीं जानते। नीज़ अबू उस्मान नहदी का नाम अब्दुर्रहमान बिन मल्ल है। उन्होंने नबी (ﷺ) का ज़माना पाया था लेकिन आप (ﷺ) को न देख सके और न ही आप से समाअत कर सके।

38 بَابٌ فِي كَرَاهِيَةِ مُبَاشَرَةِ الرِّجَالِ الرِّجَالَ وَالمَرْأَةِ الْمَرْأَةَ

38 - मर्द को मर्द और औरत को औरत का जिस्म देखना मना है।

2792 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ شَقِيقِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ تُبَاشِرُ الْمَرْأَةُ الْمَرْأَةَ حَتَّى تَصِفَهَا لِزَوْجِهَا كَأَنَّمَا يَنْظُرُ إِلَيْهَا.

2792 - सय्यदना अब्दुल्लाह (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "औरत, औरत का जिस्म न देखे कि वह अपने खाविंद से उसकी तारीफ़ करे गोया वह उसे देख रहा हो।"[1]

सहीह: अबू दाऊद:2150. इब्ने हिब्बान:4160. बैहक़ी:6/23.

तौज़ीह :مُبَاشَرَة :यह लफ्ज़ बिश्र से निकला है जिसका मानी है जिल्द या बदन और मुबाशिरत का मतलब होता है एक दूसरे से जिस्म मिलाना। लेकिन यहाँ सतर देखना मुराद है जैसा कि अगली हदीस में सराहत आ रही है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2793 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي زِيَادٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ حُبَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي الضَّحَّاكُ بْنُ عُثْمَانَ قَالَ: أَخْبَرَنِي زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ يَنْظُرُ الرَّجُلُ إِلَى عَوْرَةِ الرَّجُلِ، وَلاَ تَنْظُرُ الْمَرْأَةُ إِلَى عَوْرَةِ الْمَرْأَةِ، وَلاَ يُفْضِي الرَّجُلُ إِلَى الرَّجُلِ فِي الثَّوْبِ الوَاحِدِ، وَلاَ تُفْضِي الْمَرْأَةُ إِلَى الْمَرْأَةِ فِي الثَّوْبِ الوَاحِدِ.

2793 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मर्द किसी मर्द के सतर को न देखे, न औरत, किसी औरत के सतर को देखे, कोई मर्द किसी मर्द से एक कपड़े में (बग़ैर लिबास) न मिले और न ही कोई औरत किसी औरत से एक कपड़े में बग़ैर लिबास मिले।''

मुस्लिम:338. अबू दाऊद:4018. इब्ने माजह:661.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है।

39 بَابُ مَا جَاءَ فِي حِفْظِ العَوْرَةِ

39 - सतर की हिफ़ाज़त।

2794 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ مُعَاذٍ، وَيَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالاَ: حَدَّثَنَا بَهْزُ بْنُ حَكِيمٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، قَالَ: قُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللهِ عَوْرَاتُنَا مَا نَأْتِي مِنْهَا وَمَا نَذَرُ؟ قَالَ: احْفَظْ عَوْرَتَكَ إِلاَّ مِنْ زَوْجَتِكَ أَوْ مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ، قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ إِذَا كَانَ القَوْمُ بَعْضُهُمْ فِي بَعْضٍ؟ قَالَ: إِنْ اسْتَطَعْتَ أَنْ لاَ يَرَاهَا أَحَدٌ فَلاَ تُرِيَنَّهَا، قَالَ: قُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللهِ إِذَا كَانَ أَحَدُنَا خَالِيًا؟ قَالَ: فَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ يُسْتَحْيَا مِنْهُ مِنَ النَّاسِ.

2794 - बहज़ बिन हकीम अपने बाप के ज़रिए अपने दादा से रिवायत करते हैं कि मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! हम अपने सतर किन से छिपाएं? आप(ﷺ) ने फ़रमाया "अपने सतर की हिफ़ाज़त करो सिवाये अपनी बीवी या अपनी लौंडी के।'' कहते हैं, मैंने अर्ज़ किया, अगर लोग आपस में मिले जुले हों? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, " अगर तुम ताक़त रखते हो कि उसे कोई न देखे तो तुम हर्गिज़ न दिखाओ'' मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी(ﷺ)! जब कोई शख़्स तन्हा हो? आप ने फ़रमाया, " लोगों से ज़्यादा अल्लाह तआला हक़दार है कि उस से हया की जाए।

हसन: अबू दाऊद: 4017. इब्ने माजह: 1920.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

40 - रान भी छिपाने वाली चीज़ है।

40 بَابُ مَا جَاءَ أَنَّ الفَخِذَ عَوْرَةٌ

2795 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي النَّضْرِ، مَوْلَى عُمَرَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ زُرْعَةَ بْنِ مُسْلِمِ بْنِ جَرْهَدٍ الأَسْلَمِيِّ، عَنْ جَدِّهِ جَرْهَدٍ، قَالَ: مَرَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِجَرْهَدٍ فِي الْمَسْجِدِ وَقَدْ انْكَشَفَ فَخِذُهُ فَقَالَ: إِنَّ الفَخِذَ عَوْرَةٌ.

2795 - सय्यदना जर्हद (رضي الله عنه) बयान करते हैं, नबी (ﷺ) मस्जिद में जर्हद के पास से गुज़रे उन (जर्हद) की रान से कपड़ा लिपटा हुआ था तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "रान छिपाने वाली चीज़ है।"

सहीह: इब्ने अबी शैबा:9/118. मुसनद अहमद:3/479.दारमी 2653.

2796 - حَدَّثَنَا وَاصِلُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ أَبِي يَحْيَى، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: الْفَخِذُ عَوْرَةٌ.

2796 - इब्ने जर्हद अपने बाप से रिवायत करते हैं कि नबी अकरम (ﷺ) उनके पास से गुज़रे और वह अपनी रान से कपड़ा उठाए हुए थे तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "अपनी रान को ढाँप लो क्योंकि यह सतर है।"

सहीह: मुसनद अहमद: 3/478. अब्दुर्रज्ज़ाक़: 1115. इब्ने अबी शैबा:9/119. मुसनद अहमद:1/275. हाकिम:4/181.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2797 - حَدَّثَنَا وَاصِلُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، عَنِ الحَسَنِ بْنِ صَالِحٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ عَقِيلٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ جَرْهَدٍ الأَسْلَمِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: الفَخِذُ عَوْرَةٌ.

2797 - अब्दुल्लाह बिन जर्हद अल अस्लमी अपने बाप से रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "रान छिपाने वाली चीज़ है।"

सहीह: मुसनद अहमद: 3/478.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है।

2798 - حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْخَلاَّلُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ جَرْهَدٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ مَرَّ بِهِ وَهُوَ كَاشِفٌ عَنْ فَخِذِهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: غَطِّ فَخِذَكَ فَإِنَّهَا مِنَ العَوْرَةِ.

2798 - सय्यदना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास (ﷺ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "रान सतर वाली चीज़ है।"

सहीह: इब्ने अबी शैबा:9/119. मुसनद अहमद:1/275. हाकिम:4/181.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है। नीज़ इस मसले में अली और मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन जहश से भी हदीस मर्वी है। नीज़ यह कि अब्दुल्लाह बिन जहश और उनके बेटे सहाबी नहीं है।

41 بَابُ مَا جَاءَ فِي النَّظَافَةِ

41 - सफाई सुथराई का बयान।

2799 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ العَقَدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ إِلْيَاسَ، وَيُقَالُ ابْنُ إِيَاسٍ، عَنْ صَالِحِ بْنِ أَبِي حَسَّانَ، قَالَ: سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ، يَقُولُ: إِنَّ اللَّهَ طَيِّبٌ يُحِبُّ الطَّيِّبَ، نَظِيفٌ يُحِبُّ النَّظَافَةَ، كَرِيمٌ يُحِبُّ الكَرَمَ، جَوَادٌ يُحِبُّ الجُودَ، فَنَظِّفُوا، أُرَاهُ قَالَ، أَفْنِيَتَكُمْ وَلاَ تَشَبَّهُوا بِاليَهُودِ قَالَ: فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِمُهَاجِرِ بْنِ مِسْمَارٍ، فَقَالَ: حَدَّثَنِيهِ عَامِرُ بْنُ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِثْلَهُ، إِلاَّ أَنَّهُ قَالَ: نَظِّفُوا أَفْنِيَتَكُمْ.

2799 - सईद बिन मुसय्यब (ﷺ) फ़रमाते हैं, अल्लाह तआला पाक है पाकीजगी को पसंद करता है, नजीफ़ है सफ़ाई सुथराई को पसंद करता है। करीम है मोहब्बत व नर्मी को पसंद करता है। और सख़ी है सख़ावत को पसंद करता है। चुनांचे तुम अपने सहनों को साफ़ रखो और यहूदियों से मुशाबहत न करो। अबू हस्सान कहते हैं, मैंने यह बात मुहाजिर बिन मिस्मार से ज़िक्र की तो उन्होंने कहा :मुझे आमिर बिन साद बिन अबी वक्क़ास ने अपने बाप के ज़रिए नबी (ﷺ) से ऐसे ही हदीस बयान की थी लेकिन उन्होंने (बग़ैर शक) यह कहा है कि अपने सहनों को साफ़ रखो।

लेकिन जव्वाद से आखिर तक सहीह है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। और ख़ालिद बिन इयास ज़ईफ़ है। उसे इब्ने इयास भी कहा जाता है।

42 بَابُ مَا جَاءَ فِي الاِسْتِتَارِ عِنْدَ الجِمَاعِ

42 - जिमा (हमबिस्तरी) करते वक़्त बा पर्दा रहा जाए।

2800 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ نِيزَكَ البَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الأَسْوَدُ بْنُ عَامِرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُحَيَّاةَ، عَنْ لَيْثٍ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِيَّاكُمْ وَالتَّعَرِّيَ فَإِنَّ مَعَكُمْ مَنْ لاَ يُفَارِقُكُمْ إِلاَّ عِنْدَ الغَائِطِ وَحِينَ يُفْضِي الرَّجُلُ إِلَى أَهْلِهِ، فَاسْتَحْيُوهُمْ وَأَكْرِمُوهُمْ.

2800 - सय्यदना इब्ने उमर (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "नंगे होने से बचो, तुम्हारे साथ ऐसे भी फ़रिश्ते होते हैं जो सिर्फ़ क़ज़ाए हाजत के वक़्त और आदमी के अपनी बीवी के मिलने के वक़्त ही जुदा होते हैं, तो तुम उनसे हया करो और उनकी इज़्ज़त करो।''

ज़ईफ़

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। हम इसे इसी सनद से ही जानते हैं और अबू मुहय्यात का नाम यह्या बिन याला है।

43 بَابُ مَا جَاءَ فِي دُخُولِ الحَمَّامِ

43 - हम्माम में जाना।

2801 - حَدَّثَنَا القَاسِمُ بْنُ دِينَارٍ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُصْعَبُ بْنُ الْمِقْدَامِ، عَنِ الحَسَنِ بْنِ صَالِحٍ، عَنْ لَيْثِ بْنِ أَبِي سُلَيْمٍ، عَنْ طَاوُوسٍ، عَنْ جَابِرٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَاليَوْمِ الآخِرِ فَلاَ يَدْخُلِ الحَمَّامَ بِغَيْرِ إِزَارٍ، وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَاليَوْمِ الآخِرِ فَلاَ يُدْخِلْ حَلِيلَتَهُ الحَمَّامَ، وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَاليَوْمِ الآخِرِ فَلاَ يَجْلِسْ عَلَى مَائِدَةٍ يُدَارُ عَلَيْهَا بِالخَمْرِ.

2801 - सय्यदना जाबिर (ﷺ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है वह अपनी बीवी को हम्माम में न ले जाए। जो शख़्स अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है वह बग़ैर तहबन्द हम्माम में दाख़िल न हो और जो शख़्स अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है वह ऐसे दस्तर ख़्वान पर न बैठे जिस पर शराब का दौर चल रहा हो।''

हसन: अल-मोजमुल औसत:592. मुसनद अहमद:3/339. दारमी:2098.

तौज़ीह : حمام:लफ़्ज़ حميم (गर्म पानी) से निकला है यह ऐसे गुस्ल खाने होते थे जहां लोगों के गुस्ल के

लिए गर्म पानी का एहतमाम होता था फिर हर नहाने वाली जगह पर यह लफ़्ज़ बोला जाने लगा ख़्वाह वह गर्म पानी हो या ठंडा। यहाँ खादिम लोगों की ख़िदमत पर मामूर होते थे तो इस्लाम ने मर्दों को बगैर तहबन्द वहाँ जाकर नहाने से मना कर दिया और औरतों पर पाबंदी लगा दी क्योंकि औरत का सारा जिस्म ही सतर होता है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। हम इसे इसी सनद से ही बवास्ता ताऊस, जाबिर (رضي الله عنه) से जानते हैं।

इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी फ़रमाते हैं, लैस बिन अबी सुलैम सदूक़ हैं लेकिन बसा औक़ात कुछ चीजों में वहम भी कर जाते थे। मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी कहते हैं, इमाम अहमद बिन हंबल फ़रमाया करते थे कि लैस की रिवायत से दिल खुश नहीं होता, लैस कुछ ऐसी रिवायतों को मर्फ़ू बयान करते थे जिन्हें दूसरे मौकूफ़ कहते थे, इसी लिए मुहद्दिसीन ने इन्हें ज़ईफ़ कहा है।

2802 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने मर्दों और औरतों को हम्मामों में जाने से मना किया, फिर आप (ﷺ) ने मर्दों को तहबन्द के साथ जाने की रूख़सत दे दी।

ज़ईफ़: अबू दाऊद:4009. इब्ने माजह:4749.

2802 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ شَدَّادٍ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي عُذْرَةَ، وَكَانَ قَدْ أَدْرَكَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى الرِّجَالَ وَالنِّسَاءَ عَنِ الحَمَّامَاتِ ثُمَّ رَخَّصَ لِلرِّجَالِ فِي الْمَيَازِرِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस हदीस को हम हम्माद बिन सलमा के तरीक़ से ही जानते हैं और इसकी सनद मज़बूत नहीं है।

2803 - अबू मलीह हुज़ली (رحمه الله) रिवायत करते हैं कि हिम्स या इराक़ वालों की कुछ ख़्वातीन सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) के पास गयीं तो सय्यदा ने फ़रमाया, तुम्हीं वह औरत हो जो अपनी ख़्वातीन को हम्मामों में ले जाती हो? मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना था :"जो औरत अपने खाविंद के अलावा

2803 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مَنْصُورٍ، قَالَ: سَمِعْتُ سَالِمَ بْنَ أَبِي الجَعْدِ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي الْمَلِيحِ الهُذَلِيِّ، أَنَّ نِسَاءً مِنْ أَهْلِ حِمْصٍ، أَوْ مِنْ أَهْلِ الشَّامِ دَخَلْنَ عَلَى

عَائِشَةَ، فَقَالَتْ: أَنْتُنَّ اللاَّتِي يَدْخُلْنَ نِسَاؤُكُنَّ الحَمَّامَاتِ؟ سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: مَا مِنْ امْرَأَةٍ تَضَعُ ثِيَابَهَا فِي غَيْرِ بَيْتِ زَوْجِهَا إِلاَّ هَتَكَتِ السِّتْرَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ رَبِّهَا.

किसी दूसरे घर में अपने कपड़े उतारती है वह अपने और अपने रब के दर्मियान (हायल हया के) पर्दे को चाक कर देती है।''

सहीह: अबू दाऊद: 4010. इब्ने माजह्:3750. मुसनद अहमद:6/ 173. दारमी:2655.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन है।

44 بَابُ مَا جَاءَ أَنَّ الْمَلاَئِكَةَ لاَ تَدْخُلُ بَيْتًا فِيهِ صُورَةٌ وَلاَ كَلْبٌ

44 - जिस घर में तस्वीर या कुत्ता हो वहाँ फ़रिश्ते दाख़िल नहीं होते।

2804 - حَدَّثَنَا سَلَمَةُ بْنُ شَبِيبٍ، وَالحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الخَلاَّلُ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، وَغَيْرُ وَاحِدٍ وَاللَّفْظُ لِلْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ، قَالُوا: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ، أَنَّهُ سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ، يَقُولُ: سَمِعْتُ أَبَا طَلْحَةَ، يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: لاَ تَدْخُلُ الْمَلاَئِكَةُ بَيْتًا فِيهِ كَلْبٌ وَلاَ صُورَةُ تَمَاثِيلَ.

2804 - सय्यदना अबू तल्हा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना : "फ़रिश्ते उस घर में दाख़िल नहीं होते जिस में जानदारों की तस्वीर हो।''

बुख़ारी:3225. मुस्लिम:2106. अबू दाऊद:3153. इब्ने माजह्:3649. निसाई: 5347, 5350.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2805 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، أَنَّ رَافِعَ بْنَ إِسْحَاقَ، أَخْبَرَهُ قَالَ: دَخَلْتُ أَنَا وَعَبْدُ

2805 - राफे बिन इस्हाक़ बयान करते हैं कि मैं और अब्दुल्लाह बिन अबी तल्हा सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) की इयादत करने गए तो अबू सईद (رضي الله عنه) ने फ़रमाया, "रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें बयान किया कि फ़रिश्ते उस घर

اللهِ بْنُ أَبِي طَلْحَةَ، عَلَى أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ نَعُودُهُ، فَقَالَ أَبُو سَعِيدٍ: أَخْبَرَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَّ الْمَلاَئِكَةَ لاَ تَدْخُلُ بَيْتًا فِيهِ تَمَاثِيلُ، أَوْ صُورَةٌ شَكَّ إِسْحَاقُ لاَ يَدْرِي أَيُّهُمَا قَالَ.

में दाख़िल नहीं होते जिस में कोई तस्वीर हो। इस्हाक़ रावी को शक है कि उन (तमासील और सूरत) में से कौन सा लफ़्ज़ बोला है। (ताहम मानी एक ही मुराद है)

सहीह: मुसनद अहमद: 3/90. अबू याला:1303. इब्ने हिब्बान:5849.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2806 - حَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا يُونُسُ بْنُ أَبِي إِسْحَاقَ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُجَاهِدٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَتَانِي جِبْرِيلُ فَقَالَ: إِنِّي كُنْتُ أَتَيْتُكَ البَارِحَةَ فَلَمْ يَمْنَعْنِي أَنْ أَكُونَ دَخَلْتُ عَلَيْكَ البَيْتَ الَّذِي كُنْتَ فِيهِ إِلاَّ أَنَّهُ كَانَ فِي بَابِ البَيْتِ تِمْثَالُ الرِّجَالِ، وَكَانَ فِي البَيْتِ قِرَامُ سِتْرٍ فِيهِ تَمَاثِيلُ، وَكَانَ فِي البَيْتِ كَلْبٌ، فَمُرْ بِرَأْسِ التِّمْثَالِ الَّذِي بِالبَابِ فَلْيُقْطَعْ فَلْيُصَيَّرْ كَهَيْئَةِ الشَّجَرَةِ، وَمُرْ بِالسِّتْرِ فَلْيُقْطَعْ وَيُجْعَلْ مِنْهُ وِسَادَتَيْنِ مُنْتَبَذَتَيْنِ تُوطَآنِ، وَمُرْ بِالكَلْبِ فَيُخْرَجْ. فَفَعَلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَانَ ذَلِكَ الكَلْبُ جَرْوًا لِلْحَسَنِ أَوِ الحُسَيْنِ تَحْتَ نَضَدٍ لَهُ فَأَمَرَ بِهِ فَأُخْرِجَ.

2806 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिब्रील ने मेरे पास आकर कहा कि मैं कल रात भी आप(ﷺ) के पास आया था, और आप(ﷺ) के पास पहुँचने से इस लिए रुका था कि आप जिस घर में थे उस घर के दीवारों पर मर्दों की तस्वीरें थीं, उस घर में एक बारीक पर्दा था जिस में तस्वीरें थीं और उस घर में कुत्ता भी था पस आप दरवाज़े वाली तस्वीर का हुक्म दीजिए उसे काट दिया जाए वह दरख़्त की तरह बन जाए, पर्दे के बारे में हुक्म दीजीए उसे काट कर दो गद्दे बना लिए जाएँ वह पड़े रहें और उन्हें रौंदा जाए और कुत्ते के बारे में हुक्म दीजिए उसे घर से निकाल दिया जाए।'' तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ऐसे ही किया :और (रावी कहते हैं,) यह कुत्ता हसन या हुसैन (رضي الله عنه) (के खेलने के लिए लाया गया) कुत्ते का एक बच्चा था जो पलंग के नीचे था तो आप (ﷺ) ने हुक्म दिया तो उसे निकाल दिया गया।

सहीह: अबू दाऊद:4158. निसाई:5265.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ इस बारे में आयशा और अबू तल्हा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

45 - मर्दों को अस्फर से रंगे हुए और क़सी कपड़े पहनना मना है।

45 بَابُ مَا جَاءَ فِي كَرَاهِيَةِ لُبْسِ الْمُعَصْفَرِ لِلرَّجُلِ وَالْقَسِّيِّ

2807 - حَدَّثَنَا عَبَّاسُ بْنُ مُحَمَّدٍ البَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا إِسْرَائِيلُ، عَنْ أَبِي يَحْيَى، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: مَرَّ رَجُلٌ وَعَلَيْهِ ثَوْبَانِ أَحْمَرَانِ فَسَلَّمَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَلَمْ يَرُدَّ النَّبِيُّ ﷺ.

2807 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि एक आदमी गुजरा उस पर दो सुर्ख कपड़े थे, उस ने नबी (ﷺ) को सलाम कहा तो नबी (ﷺ) ने उसके सलाम का जवाब न दिया।[1]

ज़ईफ़: अबू दाऊद:4069.अब्दुर्रज्ज़ाक़। 19488. मुसनद अहमद:2/305.

तौज़ीह :(1) अस्फर और क़सी की वज़ाहत गुज़र चुकी है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस सनद से यह हदीस ग़रीब है। और मुहद्दिसीन के नज़दीक इस हदीस का मतलब यह है कि अस्फर से रंगा हुआ कपड़ा पहनना मना है और उनके ख़याल में गेरू वग़ैरह से रंगे सुर्ख कपड़े पहनने में कोई हर्ज नहीं है जब तक मुअस्फ़र न हो।

2808 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ هُبَيْرَةَ بْنِ يَرِيمَ، قَالَ: قَالَ عَلِيٌّ: نَهَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ خَاتَمِ الذَّهَبِ وَعَنِ القَسِّيِّ وَعَنِ الْمِيثَرَةِ وَعَنِ الجِعَةِ قَالَ أَبُو الأَحْوَصِ: وَهُوَ شَرَابٌ يُتَّخَذُ بِمِصْرَ مِنَ الشَّعِيرِ.

2808 - सय्यदना अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सोने की अंगूठी, क़सी, (सुर्ख रेशमी) ज़ीन पोश और जिआ से मना फ़र्माया है।

मुस्लिम बे-नहविही:2078. अबू दाऊद:4044. इब्ने माजह:3602.निसाई:1044, 1040.

अबू अह्वस कहते हैं, यह जिआ मिस्र में जौ से बनाई जाने वाली शराब थी।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2809 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ،

2809 - सय्यदना बराअ बिन आज़िब (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें सात कामों का हुक्म दिया और सात चीजों से

قَالاَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الأَشْعَثِ بْنِ سُلَيْمٍ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ سُوَيْدِ بْنِ مُقَرِّنٍ، عَنِ البَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ، قَالَ: أَمَرَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِسَبْعٍ وَنَهَانَا عَنْ سَبْعٍ، أَمَرَنَا بِاتِّبَاعِ الجَنَازَةِ، وَعِيَادَةِ الْمَرِيضِ، وَتَشْمِيتِ العَاطِسِ، وَإِجَابَةِ الدَّاعِي، وَنَصْرِ الْمَظْلُومِ، وَإِبْرَارِ الْمُقْسِمِ، وَرَدِّ السَّلاَمِ، وَنَهَانَا عَنْ سَبْعٍ، عَنْ خَاتَمِ الذَّهَبِ، أَوْ حَلْقَةِ الذَّهَبِ، وَآنِيَةِ الفِضَّةِ، وَلُبْسِ الحَرِيرِ وَالدِّيبَاجِ، وَالإِسْتَبْرَقِ، وَالقَسِّيِّ.

मना किया आप (ﷺ) ने हमें जनाज़े के पीछे जाने, मरीज़ की इयादत करने, छींकने वाले को दुआ देने, दावत कुबूल करने, मज़्लूम की मदद करने, क़सम उठाने वाले की क़सम को सच्चा करने और सलाम का जवाब देने का हुक्म दिया और आप (ﷺ) ने हमें इन सात चीजों से मना किया : सोने की अंगूठी या सोने के कड़े से, चांदी के बर्तन (में पीने खाने) से हरीर, दीबाज, इस्तब्रक और क़सी पहनने से।(1)

बुख़ारी:1239. मुस्लिम:2066. इब्ने माजह:2115. निसाई:1939, 3778.

तौज़ीह :रेशमी कपड़े की इन तमाम अक्साम (क़िस्मों) की वज़ाहत पहले गुज़र चुकी है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। अशअस बिन सुलैम, यह अशअस बिन अबी शअसा ही हैं जिनका नाम सुलैम बिन अस्वद था।

46 بَابُ مَا جَاءَ فِي لُبْسِ البَيَاضِ

46 - सफ़ेद कपड़ा पहनना।

2810 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ أَبِي ثَابِتٍ، عَنْ مَيْمُونِ بْنِ أَبِي شَبِيبٍ، عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدَبٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: البَسُوا البَيَاضَ فَإِنَّهَا أَطْهَرُ وَأَطْيَبُ، وَكَفِّنُوا فِيهَا مَوْتَاكُمْ.

2810 - . सय्यदना समुरा बिन जुन्दुब (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "सफ़ेद कपड़ा पहनो क्योंकि यह ज़्यादा पाकीज़ा और उम्दा है और इसी में ही अपने मुर्दों को कफ़न दिया करो।''

सहीह: इब्ने माजह:3567. शमाइले तिर्मिज़ी: 68. हाकिम:1/354.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ इस बारे में इब्ने अब्बास और इब्ने उमर (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है।

47 - मर्दों को सुर्ख़ (लाल) कपड़ा पहनने की रुख़्सत है।

47 بَابُ مَا جَاءَ فِي الرُّخْصَةِ فِي لُبْسِ الحُمْرَةِ لِلرِّجَالِ

2811 - सय्यदना समुरा बिन जुन्दुब (ﷺ) रिवायत करते हैं कि मैंने चांदनी रात में नबी(ﷺ) को देखा तो मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) और चाँद की तरफ़ देखने लगा, आप (ﷺ) के जिस्मे मुबारक पर सुर्ख़ हुल्ला(जोड़ा) था चुनांचे मेरे नज़दीक आप चाँद से भी ज़्यादा खूब सूरत थे।

सहीह: शमाइल: 10. दारमी:58.

2811 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْثَرُ بْنُ القَاسِمِ، عَنِ الأَشْعَثِ وَهُوَ ابْنُ سَوَّارٍ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي لَيْلَةٍ إِضْحِيَانٍ، فَجَعَلْتُ أَنْظُرُ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَإِلَى القَمَرِ وَعَلَيْهِ حُلَّةٌ حَمْرَاءُ، فَإِذَا هُوَ عِنْدِي أَحْسَنُ مِنَ القَمَرِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे अशअस की सनद से ही जानते हैं। नीज़ शोबा और सौरी ने भी इस्हाक़ से रिवायत की है कि बराअ बिन आज़िब फ़रमाते हैं, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) पर सुर्ख लिबास देखा था।

यह हदीस हमें महमूद बिन गैलान ने बवास्ता सुफ़ियान, अबू इस्हाक़ से बयान की है। नीज़ यह हदीस हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने मुहम्मद बिन जाफ़र से बवास्ता शोबा अबू इस्हाक़ से बयान किया है। और हदीस में इस से ज़्यादा कलाम भी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, मैंने मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी से सवाल किया कि अबू इस्हाक़ की बरा से रिवायतकर्दा हदीस ज़्यादा सहीह है या जाबिर बिन समुरा से? तो उन के मुताबिक़ दोनों हदीसें ही सहीह थीं। नीज़ इस बारे में बराअ और अबू जुहैफ़ा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

48 - सब्ज़ कपड़े का बयान।

48 بَابُ مَا جَاءَ فِي الثَّوْبِ الأَخْضَرِ

2812 - सय्यदना अबू रिम्सा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा आप पर दो सब्ज़ चादरें थीं।

सहीह: अबू दाऊद:4065. निसाई:1572. मुसनद अहमद:2/226. दारमी:2393.

2812 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ إِيَادِ بْنِ لَقِيطٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي

رِمْثَةَ، قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلَيْهِ بُرْدَانِ أَخْضَرَانِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे उबैदुल्लाह बिन इयाद के तरीक़ से ही जानते हैं और अबू रिम्सा अत्तैमी का नाम हबीब बिन हिब्बान बयान किया जाता है। यह भी कहा जाता है कि उनका नाम रिफ़ाआ बिन यस्रिबी था।

49 - सियाह कपड़े का बयान।

49 بَابُ مَا جَاءَ فِي الثَّوْبِ الأَسْوَدِ

2813 - सय्यदा आयशा (ﷺ) बयान करती हैं कि एक सुबह नबी (ﷺ) निकले आप (ﷺ) पर सियाह बालों की चादर थी।

मुस्लिम:2081. अबू दाऊद:4065.

2813 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ زَكَرِيَّا بْنِ أَبِي زَائِدَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي، عَنْ مُصْعَبِ بْنِ شَيْبَةَ، عَنْ صَفِيَّةَ بِنْتِ شَيْبَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ ذَاتَ غَدَاةٍ وَعَلَيْهِ مِرْطٌ مِنْ شَعَرٍ أَسْوَدَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

50 - ज़र्द (पीला) कपड़े का बयान।

50 بَابُ مَا جَاءَ فِي الثَّوْبِ الأَصْفَرِ

2814 - अब्दुल्लाह बिन हस्सान (ﷺ) से रिवायत है कि उन्हें उनकी दादियों सफिय्या बिन्ते उलैबा और दुहैबा बिन्ते उलैबा (ﷺ) कैला बिन्ते मख़्रमा से हदीस बयान की, यह दोनों उन (कैला) की परवरिश में थीं और कैला उन दोनों के बाप की नानी थीं वह कैला (ﷺ) बयान करती हैं कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आए। फिर लम्बी हदीस बयान की। यहाँ तक कि जब धुप हुई तो आप (ﷺ) के पास एक आदमी आया, उस ने सलाम कहा السلام عليك يا رسول الله **! तो रसूलुल्लाह**

2814 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَفَّانُ بْنُ مُسْلِمٍ الصَّفَّارُ أَبُو عُثْمَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ حَسَّانَ، أَنَّهُ حَدَّثَتْهُ جَدَّتَاهُ صَفِيَّةُ بِنْتُ عُلَيْبَةَ، وَدُحَيْبَةُ بِنْتُ عُلَيْبَةَ، حَدَّثَتَاهُ، عَنْ قَيْلَةَ بِنْتِ مَخْرَمَةَ، وَكَانَتَا رَبِيبَتَيْهَا، وَقَيْلَةُ جَدَّةُ أَبِيهِمَا أُمُّ أُمِّهِ، أَنَّهَا قَالَتْ: قَدِمْنَا عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَذَكَرَتِ الحَدِيثَ بِطُولِهِ، حَتَّى جَاءَ رَجُلٌ وَقَدْ ارْتَفَعَتِ الشَّمْسُ فَقَالَ: السَّلَامُ

عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَعَلَيْكَ السَّلاَمُ وَرَحْمَةُ اللهِ وَعَلَيْهِ، تَعْنِي النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَسْمَالُ مُلَيَّتَيْنِ كَانَتَا بِزَعْفَرَانٍ وَقَدْ نَفَضَتَا وَمَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَسِيبُ نَخْلَةٍ.

(ﷺ) ने फ़रमाया, "وَعَلَيْكَ السَّلاَمُ وَرَحْمَةُ اللهِ" **(कैला कहती हैं,) आप (ﷺ) पर दो अनसिले हुए पुराने कपड़े थे, जिन्हें ज़ाफ़रान से रंगा हुआ था (कसरते इस्तेमाल से) ज़ाफरान झड़ चुका था और आप के पास खुजूर की छड़ी थी।''**

हसन: अश-शमाइल: 66. अबू दाऊद:3070. तयालिसी:1658.

वज़ाहत: कैला की हदीस हमें अब्दुल्लाह बिन हस्सान के तरीक़ से ही मिलती है।

51 بَابُ مَا جَاءَ فِي كَرَاهِيَةِ التَّزَعْفُرِ وَالخَلُوقِ لِلرِّجَالِ

51 - मर्दों को ज़ाफ़रान और खलूक का इस्तेमाल मना है।

2815 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ (ح) وحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، عَنْ حَمَّادِ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ عَبْدِ العَزِيزِ بْنِ صُهَيْبٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ التَّزَعْفُرِ لِلرِّجَالِ.

2815 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मर्दों को ज़ाफ़रान (बतौरे खुशबू) इस्तेमाल करने से मना किया है।

बुखारी: 5846. मुस्लिम:2101. अबू दाऊद:4179. निसाई:5256.

तौज़ीह : خلوق :यह एक मुरक्कब खुशबू है जिसमें ज़्यादा हिस्सा ज़ाफ़रान का होता है, यह सुर्ख और ज़र्द रंग की हो जाती है मर्दों को इसका इस्तेमाल इस लिए मना है क्योंकि यह औरतों के लिए है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ शोबा ने भी इस हदीस को इस्माईल बिन उलय्या से बवास्ता अब्दुल अज़ीज़ बिन सुहैब सय्यदना अनस (رضي الله عنه) से रिवायत किया है कि नबी (ﷺ) ने ज़ाफ़रान (को बतौर खुशबू इस्तेमाल करने) से मना किया है। हमें यह हदीस अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने बवास्ता आदम, शोबा से बयान की है वह फ़रमाते हैं, मर्दों के लिए ज़ाफ़रान की कराहत से मुराद खुशबू के तौर पर इस्तेमाल करना है।

2816 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا

2816 - सय्यदना याला बिन मुर्रा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने एक आदमी को

أَبُو دَاوُدَ الطَّيَالِسِيُّ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ السَّائِبِ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا حَفْصِ بْنَ عُمَرَ، يُحَدِّثُ، عَنْ يَعْلَى بْنِ مُرَّةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَبْصَرَ رَجُلاً مُتَخَلِّقًا قَالَ: اذْهَبْ فَاغْسِلْهُ، ثُمَّ اغْسِلْهُ ثُمَّ لاَ تَعُدْ.

देखा जो ज़ाफ़रान की ख़ुशबू खलूक लगाए हुए था, आप ने फ़रमाया, "जा, इसे धो, फिर धो और फिर इस तरह न करना।''

ज़ईफ़ुल इस्नाद: निसाई:5121, 5125. इब्ने अबी शैबा:4/412. मुसनद अहमद:4/171.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन है और बअ़ज़ मुहद्दिसीन ने अता बिन साइब से उसकी सनद में इख़्तिलाफ़ किया है। अली बिन मदीनी यह्या बिन सईद का क़ौल नक़ल करते हैं कि जिस ने अता बिन साइब से अवाइल में सुना था उसका सिमा (सुनना) सहीह है। नीज़ शोबा और सुफ़ियान का भी अता बिन साइब से सिमा (सुनना) सहीह है सिवाए दो हदीसों के जो अता बिन साइब के वास्ते से ज़ाजान से मर्वी हैं। शोबा कहते हैं, मैंने उन्हें साइब की आख़िरी उमर में उन से सुना था।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, बयान किया जाता है कि अता बिन साइब की आख़िरी उमर में उनका हाफिज़ा खराब हो गया था नीज़ इस बारे में अम्मार, अबू मूसा और अनस (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है। और अबू हफ्स यह अबू हफ्स बिन उमर हैं।

52 بَابُ مَا جَاءَ فِي كَرَاهِيَةِ الحَرِيرِ وَالدِّيبَاجِ

52 - हरीर व रेशम की मुमानअत (मनाही)

2817 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ يُوسُفَ الأَزْرَقُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ أَبِي سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي مَوْلَى أَسْمَاءَ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ، يَذْكُرُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: مَنْ لَبِسَ الحَرِيرَ فِي الدُّنْيَا لَمْ يَلْبَسْهُ فِي الآخِرَةِ.

2817 - सय्यदना इब्ने उमर (ﷺ) रिवायत करते हैं कि मैंने उमर (ﷺ) से सुना वह बयान कर रहे थे कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, " जिस ने दुनिया में रेशम पहना वह आख़िरत में इसे नहीं पहन सकता।''

बुख़ारी:5834. मुस्लिम:2069. निसाई: 5305

वज़ाहत: इस बारे में अली, हुज़ैफ़ा, अनस और दीगर बहुत से सहाबए किराम (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है और हम ने इसे किताबुल्लिबास में ज़िक्र कर दिया है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और कई तुरूक़ (सनदों) से अम्र मौला अस्मा बिन्ते अबी बक्र सिद्दीक़ (ﷺ) से मर्वी है उनका नाम अब्दुल्लाह और कुनियत अबू उमर थी।

उन से अता बिन अबी रबाह और अम्र बिन दीनार ने भी रिवायत की है।

53 - नबी (ﷺ) का मख़्रमा (رضي الله عنه) के लिए क़बा रखना और उनके साथ नर्मी व मोहब्बत करना।

53 بَابٌ قصة خبئة صلي الله عليه وسلم قباء لمخرمة وملاطفه معه .

2818 - सय्यदना मिस्वर बिन मख़रमा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने कुछ क़बायें तक्सीम कीं और मख़रमा को कुछ भी न दिया, चुनांचे मख़रमा ने मुझ से कहा : ऐ मेरे बेटे! हमारे साथ रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास चलो, मैंने आप को बुलाया, नबी (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाये तो आप पर उन में से एक क़बा थी, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैंने यह तुम्हारे लिए रख ली थी।'' मिस्वर (رضي الله عنه) कहते हैं, आप(ﷺ) ने उनकी तरफ़ देख कर फ़रमाया, "मख़रमा खुश हो गया है।''

बुखारी:2599. मुस्लिम:1058. अबू दाऊद:4028. निसाई:5324.

2818 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَسَمَ أَقْبِيَةً وَلَمْ يُعْطِ مَخْرَمَةَ شَيْئًا، فَقَالَ مَخْرَمَةُ: يَا بُنَيَّ انْطَلِقْ بِنَا إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَانْطَلَقْتُ مَعَهُ قَالَ: ادْخُلْ فَادْعُهُ لِي، فَدَعَوْتُهُ لَهُ، فَخَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلَيْهِ قَبَاءٌ مِنْهَا فَقَالَ: خَبَأْتُ لَكَ هَذَا، قَالَ: فَنَظَرَ إِلَيْهِ فَقَالَ: رَضِيَ مَخْرَمَةُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और इब्ने अबी मुलैका का नाम अब्दुल्लाह बिन उबैदुल्लाह बिन अबी मुलैका है।

54 - अल्लाह तआला चाहता है कि उसके बन्दे पर उसकी नेअमतों के आसार नज़र आयें।

54 بَابُ مَا جَاءَ إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى يُحِبُّ أَنْ يَرَى أَثَرَ نِعْمَتِهِ عَلَى عَبْدِهِ

2819 - अम्र बिन शोऐब अपने बाप से और वह अपने दादा (अब्दुल्लाह बिन अम्र رضي الله عنه) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "बेशक अल्लाह तआला चाहता है कि उसके बन्दे पर उसकी नेअमतों के आसार

2819 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدٍ الزَّعْفَرَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَفَّانُ بْنُ مُسْلِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى

اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ أَنْ يَرَى أَثَرَ نِعْمَتِهِ عَلَى عَبْدِهِ.

नज़र आयें।''

हसन: सहीह: मुसनद अहमद: 2/181. इब्ने माजह्:3605. हाकिम:4/135.

वज़ाहत: इस बारे में अबू अह्वस की अपने बाप, इमरान बिन हुसैन और इब्ने मसऊद (رضي الله عنه) से भी रिवायत है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन है।

55 بَابُ مَا جَاءَ فِي الْخُفِّ الْأَسْوَدِ

55 - सियाह मोज़े का बयान।

2820 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ دَلْهَمِ بْنِ صَالِحٍ، عَنْ حُجَيْرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنِ ابْنِ بُرَيْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ النَّجَاشِيَّ أَهْدَى إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خُفَّيْنِ أَسْوَدَيْنِ سَاذَجَيْنِ فَلَبِسَهُمَا ثُمَّ تَوَضَّأَ وَمَسَحَ عَلَيْهِمَا.

2820 - सय्यदना बुरैदा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नजाशी ने नबी (ﷺ) को दो सियाह[1] मोज़े तोहफ़ा भेजा, आप(ﷺ) ने वह पहने, फिर वुज़ू किया और उन पर मसह किया।

सहीह: अबू दाऊद: 155. इब्ने माजह्:549. मुसनद अहमद:5/352.

तौज़ीह : سَاذَجَيْن :सादा जिस पर कोई नक्श निगार न हो और न ही उन में से किसी चीज़ की कोई आमेज़िश हो (अल-मोजमुल वसीत:पृ. 502)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन है। हम इसे दल्हम की सनद से ही जानते हैं इसे मुहम्मद बिन रबीया ने दल्हम से रिवायत किया है।

56 بَابُ مَا جَاءَ فِي النَّهْيِ عَنْ نَتْفِ الشَّيْبِ

56 - सफ़ेद बालों को उखाड़ना मना है।

2821 - حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ إِسْحَاقَ الهَمْدَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ نَتْفِ الشَّيْبِ، وَقَالَ: إِنَّهُ نُورُ الْمُسْلِمِ.

2821 - अम्र बिन शोऐब अपने बाप से वह अपने दादा (अब्दुल्लाह बिन अम्र رضي الله عنه) से रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने (बुढ़ापे के) सफ़ेद बालों को उखाड़ने से मना किया है। नीज़ आप ने फ़रमाया, " यह मुसलमान का नूर है।''

सहीह: अबू दाऊद:4202.इब्ने माजह्: 3721. निसाई:5068

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन है। इसे अब्दुर्रहमान बिन हारिस और दीगर रावियों ने भी अम्र बिन शोऐब से उनके बाप के ज़रिए उनके दादा से रिवायत किया है।

57 - जिससे मशवरा लिया जाए वह अमीन है।

57 بَابُ أَنَّ الْمُسْتَشَارَ مُؤْتَمَنٌ

2822 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस से मशवरा लिया जाए वह अमानत दार है।''(1)

सहीह: अबू दाऊद:5128. इब्ने माजह:3745,. 2369 के तहत तख़रीज देखें।

2822 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُوسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الْمُسْتَشَارُ مُؤْتَمَنٌ.

तौज़ीह :(1) जिस से मशवरा लिया जाता है उस के पास मशवरा लेने वाले की बात राज़ और अमानत है। उस बात को अपने तक महदूद रखना चाहिए।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन है। इसे बहुत से लोगों ने शैबान बिन अब्दुर्रहमान नहवी से रिवायत किया है जबकि शैबान साहिबे किताब और सहीहुल हदीस हैं उनकी कुनियत अबू मुआविया थी।

2823 - सय्यदा उम्मे सलमा (ﷺ) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिससे मशवरा लिया जाए वह अमीन है।''

सहीह: बाद वाली हदीस की तरह। अबू याला:6906

2823 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ دَاوُدَ بْنِ أَبِي عَبْدِ اللهِ، عَنِ ابْنِ جُدْعَانَ، عَنْ جَدَّتِهِ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الْمُسْتَشَارُ مُؤْتَمَنٌ.

वज़ाहत: इस बारे में इब्ने मसऊद, अबू हुरैरा और इब्ने उमर (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, उम्मे सलमा के तरीक़ से यह हदीस ग़रीब है। हमें अब्दुल जब्बार बिन अल अत्तार ने सुफ़ियान बिन उयय्ना से बयान किया कि अब्दुल मलिक बिन उमैर कहते हैं, मैं जो हदीस बयान करता हूँ उसमें एक हर्फ़ भी कमी नहीं करता।

58 - नहूसत का बयान।

58 بَابُ مَا جَاءَ فِي الشُّؤْمِ

2824 - सय्यदना इब्ने उमर (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "नहूसत इन तीन चीजों में है :औरत घर और सवारी।"

बुख़ारी:2858. मुस्लिम:2225. अबू दाऊद:3922. निसाई:3568.

2824 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، وَحَمْزَةَ، ابْنَيْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ عَنْ أَبِيهِمَا، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: الشُّؤْمُ فِي ثَلاثَةٍ، فِي الْمَرْأَةِ، وَالمَسْكَنِ، وَالدَّابَّةِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन है। ज़ोहरी के बअ़ज़ शागिर्द इसमें हम्ज़ा का ज़िक्र नहीं करते वह सालिम से उनके बाप के ज़रिए नबी (ﷺ) से रिवायत करते हैं और इमाम मालिक बिन अनस ने इस हदीस को जोहरी से इब्ने उमर (ﷺ) के बेटों हम्ज़ा और सालिम से उनके बाप से रिवायत किया है, इब्ने अबी उमर ने भी यह हदीस सुफ़ियान बिन उयय्ना से बवास्ता अब्दुल्लाह बिन उमर (ﷺ) के बेटों सालिम और हम्ज़ा उनके बाप के ज़रिए नबी (ﷺ) से रिवायत किया है।

अबू ईसा कहते हैं, हमें सईद बिन अब्दुर्रहमान मख़्ज़ूमी ने (वह कहते हैं,) हमें सुफ़ियान ने जोहरी से बवास्ता सालिम उनके बाप से नबी (ﷺ) की ऐसी ही हदीस बयान की है। इसमें सईद बिन अब्दुर्रहमान ने हम्ज़ा का ज़िक्र नहीं किया। नीज़ सईद की रिवायत ज़्यादा सहीह है क्योंकि अली बिन मदीनी और हुमैदी ने भी सुफ़ियान से बवास्ता जोहरी सालिम से ही रिवायत की है और इन दोनों ने ज़िक्र किया है कि सुफ़ियान कहते हैं, जोहरी ने हमें यह हदीस सिर्फ़ बवास्ता सालिम ही इब्ने उमर (ﷺ) से रिवायत की है। और मालिक बिन अनस ने इस हदीस को ज़ोहरी से रिवायत करते वक़्त इब्ने उमर (ﷺ) के बेटों सालिम और हम्ज़ा के ज़रिए उनके बाप से ज़िक्र किया है। नीज़ इस बारे में सहल बिन साद, आयशा और अनस (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "अगर नहूसत किसी चीज़ में होती तो औरत, सवारी और घर में होती।" और हकीम बिन मुआविया कहते हैं, मैंने नबी (ﷺ) से सुना आप फ़रमा रहे थे :"नहूसत नहीं है और बरकत घर, औरत और घोड़े में होती है।" हमें यह हदीस अली बिन हुज्र ने इस्माईल बिन अयाश से उन्होंने सुलैमान बिन सुलैम से उन्हें यह्या बिन जाबिर अत्ताई ने मुआविया बिन हकीम से उनके चचा हकीम बिन मुआविया के ज़रिए नबी (ﷺ) से बयान की है।

59 - दो आदमी तीसरे की मौजूदगी में उस से अलाहिदा(अलग) होकर सरगोशी न करें।

59 بَابُ مَا جَاءَ لاَ يَتَنَاجَى اثْنَانِ دُونَ ثَالِثٍ

2825 - सय्यदना अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब तुम तीन आदमी हो तो दो आदमी अपने साथी से अलाहिदा (अलग) होकर एक दूसरे से सरगोशी न करें।''

बुख़ारी :6290. मुस्लिम:2184. अबू दाऊद:4851. इब्ने माजह:3775

2825 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ (ح) وحَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ شَقِيقٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا كُنْتُمْ ثَلاَثَةً فَلاَ يَتَنَاجَى اثْنَانِ دُونَ صَاحِبِهِمَا وقَالَ سُفْيَانُ، فِي حَدِيثِهِ: لاَ يَتَنَاجَى اثْنَانِ دُونَ الثَّالِثِ، فَإِنَّ ذَلِكَ يُحْزِنُهُ.

और सुफ़ियान ने अपनी हदीस में कहा है कि "दो आदमी तीसरे से अलाहिदा हो कर एक दूसरे से सरगोशी न करें (क्योंकि) यह बात उसे ग़मज़दा कर देगी।''

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। नबी (ﷺ) से भी मर्वी है कि आप ने फ़रमाया, "एक आदमी को अकेला छोड़ कर दो आदमी एक दूसरे के कान में बात न करें, यह काम मोमिन को तक्लीफ़ देता है और अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल मोमिन की तक्लीफ़ को नापसंद करता है।''

नीज़ इस बारे में इब्ने उमर, अबू हुरैरा और इब्ने अब्बास (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है।

60 - वादा का बयान।

60 بَابُ مَا جَاءَ فِي العِدَةِ

2826 - सय्यदना अबू जुहैफ़ा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा आप का रंग सफ़ेद था और बुढ़ापा आ गया था और हसन बिन अली (رضي الله عنه) आप (ﷺ) के मुशाबेह थे, आप ने हमारे लिए दस ऊंटनियों का हुक्म दिया, हम उन्हें लेने गए तो हमें आपकी वफ़ात की ख़बर मिली, चुनांचे लोगों

2826 - حَدَّثَنَا وَاصِلُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، عَنْ أَبِي جُحَيْفَةَ، قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَبْيَضَ قَدْ شَابَ، وَكَانَ الحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ

يُشْبِهُهُ، وَأَمَرَ لَنَا بِثَلَاثَةَ عَشَرَ قَلُوصًا فَذَهَبْنَا نَقْبِضُهَا فَأَتَانَا مَوْتُهُ فَلَمْ يُعْطُونَا شَيْئًا، فَلَمَّا قَامَ أَبُو بَكْرٍ قَالَ: مَنْ كَانَتْ لَهُ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عِدَةٌ فَلْيَجِئْ، فَقُمْتُ إِلَيْهِ فَأَخْبَرْتُهُ، فَأَمَرَ لَنَا بِهَا.

ने हमें कुछ नहीं दिया फिर जब अबू बक्र (ﷺ) खड़े हुए तो उन्होंने फ़रमाया, "जिसका रसूल (ﷺ) से कोई वादा है वह आए। मैंने खड़े होकर उनको बताया तो उन्होंने हमारे लिए ऊंटनियों का हुक्म दिया।

बुख़ारी:3543. मुस्लिम:2342. इब्ने माजह:3662.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन है। और मुआविया बिन इमरान ने भी इस हदीस को अपनी सनद के साथ अबू जुहैफ़ा से ऐसे ही रिवायत किया है। नीज़ बहुत से लोगों ने बवास्ता इस्माईल बिन अबी ख़ालिद, सय्यदना अबू जुहैफ़ा (ﷺ) से रिवायत की है कि मैंने नबी (ﷺ) को देखा था और हसन बिन अली (ﷺ) आप से मिलते हैं उन लोगों ने इस से ज़्यादा रिवायत नहीं की।

2827 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو جُحَيْفَةَ، قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَكَانَ الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ يُشْبِهُهُ.

2827 - सय्यदना अबू जुहैफ़ा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि मैंने नबी (ﷺ) को देखा था और हसन बिन अली (ﷺ) आप (ﷺ) से मिलते थे।

सहीह: गुज़िश्ता हदीस देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, बहुत से रावियों ने इस्माईल बिन अबी ख़ालिद से ऐसे ही रिवायत की है। नीज़ इस बारे में जाबिर (ﷺ) से भी मर्वी है और अबू जुहैफ़ा का नाम वहब सवाई (ﷺ) था।

61 بَابُ مَا جَاءَ فِي فِدَاكَ أَبِي وَأُمِّي

61 - किसी से यह कहना कि तुझ पर मेरे मां बाप कुर्बान हों।

2828 - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعِيدٍ الجَوْهَرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ: مَا سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَمَعَ أَبَوَيْهِ لأَحَدٍ غَيْرَ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ.

2828 - सय्यदना अली (ﷺ) बयान करते हैं कि मैंने नहीं सुना कि नबी (ﷺ) ने किसी के लिए अपने मां बाप को जमा किया हो सिवाए साद बिन अबी वकास के।

बुख़ारी:2905. मुस्लिम:2411. इब्ने माजह:129.

2829 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ الصَّبَّاحِ البَزَّارُ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ ابْنِ جُدْعَانَ، وَيَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، سَمِعَا سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ، يَقُولُ: قَالَ عَلِيٌّ: مَا جَمَعَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَبَاهُ وَأُمَّهُ لأَحَدٍ إِلاَّ لِسَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، قَالَ لَهُ يَوْمَ أُحُدٍ: ارْمِ فِدَاكَ أَبِي وَأُمِّي، وَقَالَ لَهُ: ارْمِ أَيُّهَا الغُلَامُ الحَزَوَّرُ.

2829 - सय्यदना अली (ﷺ) फ़रमाते हैं कि नबी (ﷺ) ने किसी के लिए अपने मां बाप को जमा नहीं किया, सिवाए साद बिन अबी वक्क़ास के, आप ने उहुद के दिन उन से फ़रमाया, "तीर चलाओ तुम पर मेरे मां बाप कुर्बान हों।" और आप(ﷺ) ने उन से फ़रमाया "ऐ ताक़तवर लड़के तीर चलाओ।"

मुन्कर: (بذكر الغلام ألغرور)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और कई तुरूक़ (सनदों) से सय्यदना अली (ﷺ) से मर्वी है। नीज़ कई रावियों ने इस हदीस को यह्या बिन सईद से बवास्ता सईद बिन मुसय्यब, सय्यदना साद बिन अबी वक्क़ास (ﷺ) से रिवायत किया है वह फ़रमाते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उहुद के दिन मेरे लिए अपने मां बाप को जमा किया और फ़रमाया, "तीर चलाओ तुम पर मेरे मां बाप कुर्बान हों।"

2830 - حَدَّثَنَا بِذَلِكَ قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ بْنُ سَعْدٍ، وَعَبْدُ العَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، قَالَ: جَمَعَ لِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَبَوَيْهِ يَوْمَ أُحُدٍ.

2830 - सय्यदना साद बिन अबी वक्क़ास (ﷺ) बयान करते हैं कि उहुद के दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मेरे लिए अपने मां बाप को जमा किया।

बुख़ारी:3725. मुस्लिम:2412. इब्ने माजह:130.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है और दोनों हदीसें ही सहीह हैं।

62 بَابُ مَا جَاءَ فِي يَا بُنَيَّ

62 - किसी को बेटा कहना

2831 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ أَبِي الشَّوَارِبِ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عُثْمَانَ شَيْخٌ لَهُ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَهُ: يَا بُنَيَّ.

2831 - सय्यदना अनस (ﷺ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने उन से फ़रमाया, " يَا بُنَيَّ ऐ मेरे बेटे!"

सहीह: मुस्लिम:2151. अबू दाऊद:4964. तोहफतुल अशराफ़:514

वज़ाहत: इस बारे में मुग़ीरा और उमर बिन अबी सलमा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, इस तरीक़ से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। और एक दूसरी सनद से भी अनस (ﷺ) से मर्वी है।

अबू उस्मान यह सिक़ह् बुज़ुर्ग हैं। यह जअद बिन उस्मान हैं, उन्हें इब्ने दीनार भी कहा जाता है। यह बस्रा के रहने वाले थे इन से यूनुस बिन उबैद, शोबा और दीगर अइम्म-ए-किराम ने रिवायत की है।

63 - बच्चे का नाम जल्दी रखना।

63 بَابُ مَا جَاءَ فِي تَعْجِيلِ اسْمِ الْمَوْلُودِ

2832 - अम्र बिन शोऐब अपने बाप से वह अपने दादा से रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने सातवें दिन नौ मौलूद बच्चे का नाम रखने, उससे तकलीफ़ हटाने और अक़ीक़ा करने का हुक्म दिया है।

हसन।

2832 - حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عَمِّي يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ: حَدَّثَنَا شَرِيكٌ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَرَ بِتَسْمِيَةِ الْمَوْلُودِ يَوْمَ سَابِعِهِ وَوَضْعِ الأَذَى عَنْهُ وَالعَقِّ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है।

64 - बेहतरीन नाम।

64 بَابُ مَا جَاءَ مَا يُسْتَحَبُّ مِنَ الأَسْمَاءِ

2833 - सय्यदना इब्ने उमर (ﷺ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया "अल्लाह तआला को सब से ज़्यादा पसंद नाम अब्दुल्लाह और अब्दुर्रहमान हैं।''

मुस्लिम:2132. अबू दाऊद:4949. दारमी: 2698.

2833 - حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الأَسْوَدِ أَبُو عَمْرٍو الوَرَّاقُ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَمَّرُ بْنُ سُلَيْمَانَ الرَّقِّيُّ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ صَالِحٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُثْمَانَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: أَحَبُّ الأَسْمَاءِ إِلَى اللهِ عَبْدُ اللهِ وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।

2834 - حَدَّثَنَا عُقْبَةُ بْنُ مُكْرَمٍ العَمِّيُّ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ العُمَرِيِّ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: إِنَّ أَحَبَّ الأَسْمَاءِ إِلَى اللهِ عَبْدُ اللهِ وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ.

2834 - सय्यदना इब्ने उमर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया "अल्लाह तआला को सब से ज़्यादा पसंद नाम अब्दुल्लाह और अब्दुर्रहमान हैं।''

सहीह: दारमी: 2698. इब्ने माजह:3727

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।

65 بَابُ مَا يُكْرَهُ مِنَ الأَسْمَاءِ

65 - नापसंदीदा नाम।

2835 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، عَنْ عُمَرَ بْنِ الخَطَّابِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لأَنْهَيَنَّ أَنْ يُسَمَّى رَافِعٌ وَبَرَكَةُ وَيَسَارٌ.

2835 - सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया "मैं राफ़े, बरकत और यसार नाम रखने से ज़रूर मना करूंगा।''

सहीह: इब्ने माजह: 3729. तहजीबुल आसार:1/ 274. हाकिम:4/ 274.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है। इसे अबू अहमद ने भी सुफ़ियान से अबू ज़ुबैर के ज़रिए जाबिर से, उन्होंने उमर बिन ख़त्ताब (رضي الله عنه) से इसी तरह रिवायत किया है जबकि बाकी लोगों ने इसे सुफ़ियान से बवास्ता ज़ुबैर, जाबिर (رضي الله عنه) से उन्होंने नबी (ﷺ) से रिवायत किया है।

अबू अहमद सिक़ह् और हाफ़िज़ हैं। नीज़ यह हदीस बवास्ता अबू जाबिर ही नबी (ﷺ) से लोगों में मशहूर है। इसमें उमर (رضي الله عنه) का ज़िक्र नहीं है।

2836 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ هِلاَلِ بْنِ يَسَافٍ، عَنِ الرَّبِيعِ بْنِ عُمَيْلَةَ الفَزَارِيِّ، عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدَبٍ، أَنَّ رَسُولَ

2836 - सय्यदना समुरा बिन जुन्दुब (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया "अपने बच्चे का नाम :रबाह, अफ़्लह, यसार, और नजीह न रखो (इस लिए कि) कहा जाएगा: क्या वह (कामयाबी,आसानी)[1] यहाँ है? तो कहा जाएगा : "नहीं''

اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لاَ تُسَمِّي غُلاَمَكَ رَبَاحٌ وَلاَ أَفْلَحُ وَلاَ يَسَارٌ وَلاَ نَجِيحٌ. يُقَالُ: أَثَمَّ هُوَ؟ فَيُقَالُ: لاَ.

मुस्लिम:2136. तयालिसी:893. दारमी:2699. मुसनद अहमद:5/7.

तौज़ीह :(1) इन नामों के मआनी कामयाबी और आसानी के हैं। आप (ﷺ) ने यह नाम रखने से मना फ़रमाया है। इसी तरह दीगर नाम जिनके इस क़िस्म के मआनी हों वह रखना ममनूअ(मना) हैं।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2837 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَيْمُونٍ الْمَكِّيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، يَبْلُغُ بِهِ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: أَخْنَعُ اسْمٍ عِنْدَ اللهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ رَجُلٌ تَسَمَّى بِمَلِكِ الأَمْلاَكِ قَالَ سُفْيَانُ: شَاهَانْ شَاهْ، وَأَخْنَعُ: يَعْنِي وَأَقْبَحُ.

2837 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "क़यामत के दिन अल्लाह के यहाँ सबसे बुरा नाम वह होगा जिस आदमी ने अपना नाम मलिकुल अम्लाक (शहंशाह) रखा।" सुफ़ियान कहते हैं, इस से मुराद शाहाने शाह है और अख़्ना से मुराद बदतरीन है।

बुख़ारी:6205. मुस्लिम:2143. अबू दाऊद:4961.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

66 بَابُ مَا جَاءَ فِي تَغْيِيرِ الأَسْمَاءِ

66 - नाम तब्दील करना।

2838 - حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدَّوْرَقِيُّ، وَأَبُو بَكْرٍ مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ الْقَطَّانُ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غَيَّرَ اسْمَ عَاصِيَةَ وَقَالَ: أَنْتِ جَمِيلَةُ.

2838 - सय्यदना इब्ने उमर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने आसिया का नाम तब्दील कर दिया, आप ने फ़रमाया, "तुम जमीला हो।"

मुस्लिम:2139. अबू दाऊद:4952. इब्ने माजह:3733.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है। इसे सिर्फ़ यह्या बिन सईद अल-क़त्तान ने उबैदुल्लाह बिन उमर से बवास्ता नाफ़े, इब्ने उमर (رضي الله عنه) से मुत्तसिल ज़िक्र किया है। बअ़ज़ ने इस हदीस को अब्दुल्लाह से बवास्ता नाफ़े, उमर (رضي الله عنه) से मुर्सल रिवायत किया है।

नीज़ इस मसले में, अब्दुल्लाह बिन औफ़, अब्दुल्लाह बिन सलाम, अब्दुल्लाह बिन मुतीअ, हकम बिन सईद, मुस्लिम, उसामा बिन अख्दरी (ﷺ) शुरैह बिन हानी की अपने बाप और खैसमा बिन अब्दुर्रहमान की भी अपने बाप से रिवायत है।

2839 - حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ نَافِعٍ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ عَلِيٍّ الْمُقَدَّمِيُّ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يُغَيِّرُ الإِسْمَ القَبِيحَ.

2839 - सय्यदा आयशा (ﷺ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) बुरे नाम को तब्दील कर देते थे।

सहीह।

वज़ाहत: अबू बक्र बिन नाफ़े कहते हैं, कभी-कभी अम्र बिन अली इस हदीस को मुर्सल बयान करते हुए कहा करते थे कि हिशाम बिन उर्वा अपने बाप के ज़रिए नबी (ﷺ) से रिवायत करते हैं और इसमें आयशा (ﷺ) का ज़िक्र नहीं करते थे।

67 بَابُ مَا جَاءَ فِي أَسْمَاءِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

67 - नबी (ﷺ) के नामों का बयान।

2840 - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْمَخْزُومِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ لِي أَسْمَاءً، أَنَا مُحَمَّدٌ، وَأَنَا أَحْمَدُ، وَأَنَا الْمَاحِي الَّذِي يَمْحُو اللَّهُ بِيَ الكُفْرَ، وَأَنَا الحَاشِرُ الَّذِي يُحْشَرُ النَّاسُ عَلَى قَدَمِي، وَأَنَا العَاقِبُ الَّذِي لَيْسَ بَعْدِي نَبِيٌّ.

2840 - सय्यदना जुबैर बिन मुतइम (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मेरे कुछ नाम हैं, मैं मुहम्मद हूँ, मैं अहमद हूँ, मैं माही (मिटाने वाला) हूँ अल्लाह तआला मेरे जरिये कुफ़्र को मिटाएगा, मैं हाशिर हूँ, लोग मेरे क़दमों पर (यानी मेरे पीछे) जमा किए जायेंगे और मैं आक़िब हूँ जिसके बाद कोई नबी नहीं है।"

बुख़ारी:3532. मुस्लिम:2354

वज़ाहत: इस बारे में हुज़ैफा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

68 - नबी (ﷺ) के नाम और कुनियत को इकट्ठा रखना मकरूह है।

68 بَابُ مَا جَاءَ فِي كَرَاهِيَةِ الجَمْعِ بَيْنَ اسْمِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكُنْيَتِهِ

2841 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने किसी भी शख़्स को आप के नाम और कुनियत जमा करने और अपना नाम मुहम्मद अबुल कासिम रखने से मना फ़रमाया।

हसन: सहीह: अदबुल मुफ़रद:844. मुसनद अहमद:2/433. इब्ने हिब्बान:5814.

2841 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ عَجْلَانَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى أَنْ يَجْمَعَ أَحَدٌ بَيْنَ اسْمِهِ وَكُنْيَتِهِ، وَيُسَمِّيَ مُحَمَّدًا أَبَا القَاسِمِ.

वज़ाहत: इस बारे में जाबिर (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2842 - सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब तुम मेरे नाम जैसा नाम रखो तो कुनियत मेरी कुनियत पर मत रखो।

बुख़ारी:3114. मुस्लिम:2133. इब्ने माजह:3736.

2842 - حَدَّثَنَا الحُسَيْنُ بْنُ حُرَيْثٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الفَضْلُ بْنُ مُوسَى، عَنِ الحُسَيْنِ بْنِ وَاقِدٍ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا تَسَمَّيْتُمْ بِي فَلَا تَكْتَنُوا بِي.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है। और अहले इल्म ने इस बात को नापसंद किया है कि कोई आदमी नबी (ﷺ) के नाम और कुनियत को जमा करे जबकि बअज़ ने यह काम किया भी है। नीज़ मर्वी है कि नबी (ﷺ) ने बाज़ार में एक आदमी को सुना वह आवाज़ दे रहा था :ऐ अबुल क़ासिम! नबी (ﷺ) ने उधर देखा तो वह कहने लगा :मैंने आपको मुराद नहीं लिया फिर नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "मेरे जैसी कुनियत न रखो।"

हमें यह हदीस अली खल्लाल ने वह कहते हैं, हमें यज़ीद बिन हारून ने हुमैद से बवास्ता अनस नबी (ﷺ) से रिवायत की है। और इस हदीस में दलील है कि अबुल कासिम कुनियत रखना मकरूह है।

2843 - सय्यदना अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) से रिवायत है कि उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ

2843 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ القَطَّانُ، قَالَ: حَدَّثَنَا فِطْرُ بْنُ

خَلِيفَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي مُنْذِرٌ وَهُوَ الثَّوْرِيُّ، عَنْ مُحَمَّدِ ابْنِ الحَنَفِيَّةِ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ، أَنَّهُ قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَرَأَيْتَ إِنْ وُلِدَ لِي بَعْدَكَ أُسَمِّيهِ مُحَمَّدًا وَأُكَنِّيهِ بِكُنْيَتِكَ؟ قَالَ: نَعَمْ قَالَ: فَكَانَتْ رُخْصَةً لِي.

अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आप यह बताइए कि अगर आप(ﷺ) के बाद मेरे यहाँ बेटा पैदा हो तो मैं उसका नाम मुहम्मद रख कर आप की कुनियत रख लूं? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "हाँ" अली (رضي الله عنه) कहते हैं, यह मेरे लिए रूख़सत थी।

सहीह: अबू दाऊद:4967. अबू याला:303.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

69 بَابُ مَا جَاءَ إِنَّ مِنَ الشِّعْرِ حِكْمَةً

69 - कुछ अश्आर में दानाई की बातें होती हैं।

2844 - حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ أَبِي غَنِيَّةَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ عَاصِمٍ، عَنْ زِرٍّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ مِنَ الشِّعْرِ حِكْمَةً.

2844 - सय्यदना अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "बेशक कुछ अश्आर हिकमत (की बातों) वाले होते हैं।"

हसन सहीह: अबू याला:5104. इब्ने अबी शैबा:8/693.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस सनद से यह हदीस ग़रीब है। इसे सिर्फ़ अबू सईद अशज्ज ने ही इब्ने अबी गनिय्या से मर्फू रिवायत किया है जबकि बाकियों ने इस हदीस को इब्ने अबी गनिय्या से मौकूफ़ रिवायत किया है यह हदीस कई तुरूक़ (सनदों) से बवास्ता अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) से मर्वी है। नीज़ इस बारे में उबय बिन काब, इब्ने अब्बास, आयशा, बुरैदा (رضي الله عنه) और कसीर बिन अब्दुल्लाह की उनके बाप के ज़रिए उनके दादा से भी रिवायत है।

2845 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ مِنَ الشِّعْرِ حِكَمًا.

2845 - सय्यदना इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "बेशक कुछ अश्आर में हिक्मत की बातें भी होती हैं।"

हसन सहीह:अबू दाऊद:5011.इब्ने माजह:3756. मुसनद अहमद:1/303.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

70 - अशआर पढ़ना।

70 بَابُ مَا جَاءَ فِي إِنْشَادِ الشِّعْرِ

2846 - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ مُوسَى الفَزَارِيُّ، وَعَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ الْمَعْنَى وَاحِدٌ، قَالاَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي الزِّنَادِ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَضَعُ لِحَسَّانَ مِنْبَرًا فِي الْمَسْجِدِ يَقُومُ عَلَيْهِ قَائِمًا يُفَاخِرُ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَوْ قَالَتْ: يُنَافِحُ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَيَقُولُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ اللَّهَ يُؤَيِّدُ حَسَّانَ بِرُوحِ القُدُسِ مَا يُفَاخِرُ، أَوْ يُنَافِحُ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ.

2846 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि नबी (ﷺ) हस्सान (رضي الله عنه) के लिए मस्जिद में मिम्बर रखते, वह उस पर खड़े होकर रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ़ से फ़ख़रिया कलिमात कहते। या कहा कि वह रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ़ से एतराज़ात का जवाब देते थे और अल्लाह के रसूल (ﷺ) फ़रमाते : "अल्लाह तआला उस वक़्त तक हस्सान की रूहुल कुदुस (जिब्रील عليه السلام) के साथ ताईद करता है जब तक यह रसूलुल्लाह(ﷺ) की तरफ़ से मुफ़ाख़िरत या दिफ़ा करता है।

सहीह: मुस्लिम में मुतव्वल रिवायत है लेकिन उसमें मिम्बर का ज़िक्र नहीं है 2490. अबू दाऊद:5014. शमाइले तिर्मिज़ी:250. हाकिम:3/478.

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं, हमें इस्माईल बिन मूसा और अली बिन हुज्र ने वह कहते हैं, हमें इब्ने अबी ज़िनाद ने अपने बाप से बवास्ता उर्वा सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) से नबी (ﷺ) की ऐसी ही हदीस बयान की है।

इस बारे में अबू हुरैरा और बराअ (رضي الله عنهما) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है और यह इब्ने ज़िनाद की रिवायत है।

2847 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا جَعْفَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا ثَابِتٌ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَخَلَ مَكَّةَ فِي عُمْرَةِ القَضَاءِ وَعَبْدُ اللهِ بْنُ رَوَاحَةَ بَيْنَ يَدَيْهِ يَمْشِي وَهُوَ يَقُولُ: خَلُّوا بَنِي الكُفَّارِ عَنْ

2847 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) उम्र-ए- क़ज़ा के मौक़ा पर मक्का में दाख़िल हुए और अब्दुल्लाह बिन रवाहा (رضي الله عنه) आप के आगे- आगे चलते हुए कह रहे थे :ऐ कुफ़्फ़ार के बेटो! इस नबी का रास्ता छोड़ दो, आज हम तुम्हें इनके हुक्म पर मारेंगे, ऐसी मार जो खोपड़ी को उसकी जगह से हटा देगी, और दोस्त को दोस्त से गाफ़िल

سَبِيلِهِ الْيَوْمَ نَضْرِبْكُمْ عَلَى تَنْزِيلِهِ ضَرْبًا يُزِيلُ الْهَامَ عَنْ مَقِيلِهِ وَيُذْهِلُ الْخَلِيلَ عَنْ خَلِيلِهِ فَقَالَ لَهُ عُمَرُ: يَا ابْنَ رَوَاحَةَ بَيْنَ يَدَيْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَفِي حَرَمِ اللهِ تَقُولُ الشِّعْرَ؟ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: خَلِّ عَنْهُ يَا عُمَرُ، فَلَهِيَ أَسْرَعُ فِيهِمْ مِنْ نَضْحِ النَّبْلِ.

कर देगी। तो उमर (رضي الله عنه) ने कहा :ऐ इब्ने रवाहा! तुम रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने और हरम में अशआर कह रहे हो? तो अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़रमाया, " उमर उसे छोड़ दो, यह अशआर काफिरों के लिए तीर मारने से भी ज़्यादा असर रखते हैं।''

सहीह: शमाइले तिर्मिज़ी:246. निसाई:2783. अब्द बिन हुमैद: 1257. इब्ने खुजैमा:2680.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है। और अब्दुर्रज्ज़ाक ने भी इस हदीस को मामर से बवास्ता ज़ोहरी सय्यदना अनस (رضي الله عنه) से इसी तरह ही रिवायत की है जबकि दूसरी रिवायत में है कि नबी (ﷺ) उम्र–ए- क़ज़ा के मौक़ा पर मक्का में दाख़िल हुए तो आप के आगे- आगे काब बिन मालिक थे, और बअज़ मुहद्दिसीन के नज़दीक यही सहीह है क्योंकि अब्दुल्लाह बिन रवाहा (رضي الله عنه) मौता के दिन शहीद हुए हैं और उम्र- ए- क़ज़ा इसके बाद का वाक़िया है।

2848 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شَرِيكٌ، عَنِ الْمِقْدَامِ بْنِ شُرَيْحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَ: قِيلَ لَهَا: هَلْ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَمَثَّلُ بِشَيْءٍ مِنَ الشِّعْرِ؟ قَالَتْ: كَانَ يَتَمَثَّلُ بِشِعْرِ ابْنِ رَوَاحَةَ وَيَقُولُ: وَيَأْتِيكَ بِالأَخْبَارِ مَنْ لَمْ تُزَوِّدِ.

2848 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) से रिवायत है कि उन से कहा गया कि नबी (ﷺ) कभी अशआर पढ़ते थे? फ़रमाने लगीं :आप इब्ने रवाहा के अशआर पढ़ते थे और यह शेर भी पढ़ते :"और तुम्हारे पास वह ख़बरें भी आयेंगी।''

सहीह: अदबुल मुफ़रद: 867. शमाइल:241. मुसनद अहमद:6/ 138.

तौज़ीह :यह मुकम्मल शेर इस तरह है:

ستبدي لك الأيام ما كنت جاهلا　　وَيَأْتِيكَ بِالأَخْبَارِ مَنْ لَمْ تُزَوِّدِ

गर्दिशे अय्याम तुम्हारे लिए वह चीजें ज़ाहिर कर देगी जिससे तु जाहिल था और तुम्हारे पास वह खबरें आयेंगी जिनके लिये तुमने ज़ाद (तोशा) भी इकट्ठा नहीं कर रखा।

वज़ाहत: इस बारे में इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2849 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "(शोराये) अरब ने जो भी अशआर कहे हैं उन में सब से अच्छा शेर लबीद का है : " أَلاَ كُلُّ شَيْءٍ مَا خَلاَ اللَّهَ بَاطِلُ. (ख़बरदार! अल्लाह के सिवा हर चीज़ फानी है।"

बुख़ारी:3841. मुस्लिम:2256. इब्ने माजह:3757.

2849 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شَرِيكٌ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: أَشْعَرُ كَلِمَةٍ تَكَلَّمَتْ بِهَا العَرَبُ قَوْلُ لَبِيدٍ: أَلاَ كُلُّ شَيْءٍ مَا خَلاَ اللَّهَ بَاطِلُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। इसे सौरी और दीगर लोगों ने भी अब्दुल मलिक बिन उमैर से रिवायत किया है।

2850 - सय्यदना जाबिर (ﷺ) से रिवायत है कि मैं नबी (ﷺ) के साथ सौ मर्तबा से भी ज़्यादा बैठा हूँ, आप(ﷺ) के सहाबा एक दूसरे को अशआर सुनाते और जाहिलियत के कामों का एक दूसरे से ज़िक्र करते थे और आप (ﷺ) खामोश रहते, कभी- कभी आप उनके साथ मुस्कुरा भी देते थे।

मुस्लिम:670. निसाई:1358.

2850 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شَرِيكٌ، عَنْ سِمَاكٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ: جَالَسْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَكْثَرَ مِنْ مِائَةِ مَرَّةٍ، فَكَانَ أَصْحَابُهُ يَتَنَاشَدُونَ الشِّعْرَ، وَيَتَذَاكَرُونَ أَشْيَاءَ مِنْ أَمْرِ الجَاهِلِيَّةِ وَهُوَ سَاكِتٌ، فَرُبَّمَا يَتَبَسَّمُ مَعَهُمْ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। इसे ज़ुहैर ने भी सिमाक से इसी तरह रिवायत किया है।

71 - पेट को पीप से भर लेना, अशआर से भर लेने से बेहतर है।

71 بَابُ مَا جَاءَ لأَنْ يَمْتَلِئَ جَوْفُ أَحَدِكُمْ قَيْحًا خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَنْ يَمْتَلِئَ شِعْرًا

2851 - सय्यदना साद बिन अबी वक्कास (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम में से कोई शख़्स अपना पेट पीप से भर ले तो यह उसके लिए अशआर के साथ भरने से बेहतर है।"

बुख़ारी:6155. मुस्लिम:2257. अबू दाऊद: 5009. इब्ने माजह:3759.

2851 - حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ عُثْمَانَ بْنِ عِيسَى الرَّمْلِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَمِّي يَحْيَى بْنُ عِيسَى، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: لأَنْ يَمْتَلِئَ جَوْفُ أَحَدِكُمْ قَيْحًا يَرِيَهُ خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَنْ يَمْتَلِئَ شِعْرًا

वज़ाहत: इस बारे में साद, अबू सईद, इब्ने उमर और अबू दर्दा (رضي الله عنه) से भी मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2852 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ يُونُسَ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَاصٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لأَنْ يَمْتَلِئَ جَوْفُ أَحَدِكُمْ قَيْحًا خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَنْ يَمْتَلِئَ شِعْرًا.

2852 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम में से किसी शख़्स का पेट पीप से भर जाए तो जिसे वह देख रहा हो यह अश्आर के साथ भरने से बेहतर है।"[1]

मुस्लिम: 2258. इब्ने माजह:3760.

तौज़ीह :(1) जिन अश्आर की तरफ़ यहाँ इशारा है उनसे मुराद इश्किया या बेहूदा अश्आर हैं लेकिन जिन अश्आर में हिक्मत व दानाई और तौहीद की बातें हों उन्हें पढ़ने और सुनाने में कोई हर्ज नहीं है। वाज़ो-नसीहत और तक़ारीर में भी अश्आर कहे जा सकते हैं, मगर खुतबा (मुकर्रिरों) को चाहिए कि वह अपनी तकरीर का अक्सर हिस्सा अश्आर को न बनाए बल्कि मौज़ू के मुताबिक एक आध शेर पढ़ लिया करें और ज़्यादा से ज़्यादा कुरआन व हदीस बयान करें क्योंकि यह दोनों चीजें इंसान के दिल पर बहुत जल्द असर अंदाज़ होती हैं।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

72 بَابُ مَا جَاءَ فِي الفَصَاحَةِ وَالبَيَانِ

72 - फ़साहत और बयान।

2853 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى الصَّنْعَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ عَلِيٍّ الْمُقَدَّمِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا نَافِعُ بْنُ عُمَرَ الجُمَحِيُّ، عَنْ بِشْرِ بْنِ عَاصِمٍ، سَمِعَهُ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِنَّ اللَّهَ يَبْغَضُ البَلِيغَ مِنَ الرِّجَالِ الَّذِي يَتَخَلَّلُ بِلِسَانِهِ كَمَا تَتَخَلَّلُ البَقَرَةُ.

2853 - सय्यदना इब्ने उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, अल्लाह तआला लोगों में से बलीग़[1] आदमी से नफ़रत करता है जो अपनी ज़बान के साथ बातों को इस तरह लपेटता है जैसे गायचारा लपेटती है।"

सहीह: अबू दाऊद: 5005. इब्ने अबी शैबा9/15. मुसनद अहमद:2/165.

तौज़ीह : البَلِيغ :वह शख़्स जो खूब बातें बनाने और आगे बयान करने का माहिर हो उसकी बातें फुज़ूलियात पर मुश्तमिल हों।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस इस सनद से हसन ग़रीब है। और इस बारे में साद (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

2854 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مُوسَى الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ وَهْبٍ، عَنْ عَبْدِ الجَبَّارِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَنَامَ الرَّجُلُ عَلَى سَطْحٍ لَيْسَ بِمَحْجُورٍ عَلَيْهِ.

2854 - सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ऐसी छत पर सोने से मना किया जिस पर चार दीवारी न की गई हो।

सहीह।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। हम इसे इसी तरीक़ से ही बवास्ता मुहम्मद बिन मुन्कदिर, सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) से जानते हैं। नीज़ अब्दुल जब्बार बिन उमर ऐली ज़ईफ़ है।

2855 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَخَوَّلُنَا بِالمَوْعِظَةِ فِي الأَيَّامِ مَخَافَةَ السَّآمَةِ عَلَيْنَا.

2855 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) (हफ्ते के) दिनों में हमें वाज़ो-नसीहत में फुर्सत[1] भी देते थे हमारे उक्ता जाने के डर से।

बुख़ारी:68. मुस्लिम:2821.

तौज़ीह : يَتَخَوَّلُنَا بِالمَوْعِظَةِ :लुग्वी मानी नसीहत के साथ किसी की निगहदाश्त और जेहनी तरबियत करना (अल-कामूसुल वहीद:प. 486 और अल-मोजमुल वसीत:पृ. 309) मगर यहाँ मुराद है कि आप (ﷺ) तरबियत के साथ हमें फ़ुर्सत भी देते थे ताकि हम चुस्त रहें अगर हर वक़्त वाज़ो नसीहत जारी रखी जाए तो सामेईन के उक्ता जाने का ख़तरा होता है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। अबू ईसा कहते हैं, हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने यह्या बिन सईद से उन्हें सुफियान ने आमश से बवास्ता शकीक़ बिन सलमा, सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) से इसी तरह रिवायत की है।

73 - सब से अच्छा अमल वह है जिस पर हमेशगी की जाए अगरचे वह थोड़ा ही हो।

73 بَابٌ: أَحَبُّ العَمَلِ مَا دِيمَ عَلَيْهِ وَإِنْ قَلَّ.

2856 - अबू सालेह रिवायत करते हैं कि सय्यदा(رضي الله عنها) आयशा और उम्मे सलमा (رضي الله عنها) से पूछा गया कि कौन सा अमल रसूलुल्लाह (ﷺ) को सब से ज़्यादा पसंद था? वह फ़रमाने लगीं: जिसे हमेशा किया जाये ख़्वाह वह थोड़ा ही हो।

2856 - حَدَّثَنَا أَبُو هِشَامٍ الرِّفَاعِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، قَالَ: سُئِلَتْ عَائِشَةُ، وَأُمُّ سَلَمَةَ، أَيُّ العَمَلِ كَانَ أَحَبَّ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَتَا: مَا دِيمَ عَلَيْهِ وَإِنْ قَلَّ.

सहीह: मुसनद अहमद:6/32. शमाइले तिर्मिज़ी:312. अबू याला:4573.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। नीज़ हिशाम बिन उर्वा अपने बाप से रिवायत करते हैं कि सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) फ़रमाती हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) को सब से ज़्यादा वह अमल पसंद था जिस पर हमेशगी की जाए।

हमें हारून बिन इस्हाक़ हम्दानी ने भी अब्दा से उन्होंने हिशाम बिन उर्वा से उन्होंने अपने बाप से बवास्ता आयशा (رضي الله عنها) नबी (ﷺ) से इसी मफ़हूम की हदीस बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

74 - बर्तन ढाँप दो और मश्कीज़ों के मुंह बाँध दो।

(74 بَابٌ خَمِّرُوا الآنِيَةَ وَأَوْكُوا الأَسْقِيَةَ)

2857 - जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "रात को बर्तनों को ढाँप दो, मश्कीज़ों के मुंह बाँध दो दरवाज़े बंद कर दो और चिराग़ बुझा दो, इसलिए कि चूहा अक्सर औक़ात चिराग़ की बत्ती खींच कर घर वालों को जला देता है।''

2857 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ كَثِيرِ بْنِ شِنْظِيرٍ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رَبَاحٍ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: خَمِّرُوا الآنِيَةَ وَأَوْكُوا الأَسْقِيَةَ وَأَجِيفُوا الأَبْوَابَ وَأَطْفِئُوا الْمَصَابِيحَ فَإِنَّ الفُوَيْسِقَةَ رُبَّمَا جَرَّتِ الفَتِيلَةَ فَأَحْرَقَتْ أَهْلَ البَيْتِ.

बुख़ारी:3280. मुस्लिम:2012. अबू दाऊद:3731. इब्ने माजह:4310.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और कई तुरूक से बवास्ता जाबिर (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) से भी मर्वी है।

75 - दौराने सफ़र शादाब और क़हतज़दा इलाक़े से गुज़रते हुए ऊंटों का ख़याल रखना।

75 بَابٌ: مراعاة الأبل في الخصب (والسنة في السفر)

2858 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, " जब तुम हरे भरे इलाक़ों में सफ़र करो तो ऊँटनियों को ज़मीन के चारे से उनका हक़ दो, जब तुम क़हत ज़दा इलाक़े में सफ़र करो तो जब तक उनकी कुव्वत बाकी है जल्दी - जल्दी उन्हें ले चलो और जब तुम पड़ाव डालो तो रास्ते से बचो क्योंकि वह जानवरों का रास्ता और रात के वक़्त कीड़े मकोड़ों का ठिकाना होता है।

मुस्लिम: 1926. अबू दाऊद:2569. इब्ने खुज़ैमा: 2550.

2858 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ العَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ سُهَيْلِ بْنِ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِذَا سَافَرْتُمْ فِي الخِصْبِ فَأَعْطُوا الإِبِلَ حَظَّهَا مِنَ الأَرْضِ، وَإِذَا سَافَرْتُمْ فِي السَّنَةِ فَبَادِرُوا بِ نِقْيِهَا وَإِذَا عَرَّسْتُمْ فَاجْتَنِبُوا الطَّرِيقَ فَإِنَّهَا طُرُقُ الدَّوَابِّ وَمَأْوَى الهَوَامِّ بِاللَّيْلِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ इस बारे में अनस और जाबिर से भी हदीस मर्वी है।

ख़ुलासा

- मुसलमान का हक़ है कि जब उसे छींक आए तो उसका भाई उसे रहमत की दुआ दे और उसके लिए يرحمك الله के अल्फ़ाज़ हैं।
- छींकते वक़्त आवाज़ को पस्त किया जाए और जमाई (उबासी) के वक़्त हत्तल मक्दूर (ताकत भर) इसे रोकने की कोशिश की जाए।
- मजलिस में किसी को उठा कर उसकी जगह बैठना मना है लिहाज़ा इस काम से बचा जाए।
- किसी की ताज़ीम के लिए खड़ा होना मना है। क्लासरूम में उस्ताद की आमद पर बच्चों का खड़ा होना भी इसी ज़ुम्रा में आता है।

- नाख़ुन तराशना, मूंछें काटना और जिस्म के गैर ज़रूरी बाल उतारना फ़ितरत का हिस्सा हैं। इन कामों में चालीस दिन से ताख़ीर (देरी) न की जाए।
- दाढ़ी रखना फ़र्ज़ और इसे कटवाना या मुंडवाना हराम है।
- पेट के बल (उलटा) लेटना मना है, और जब लेटे हों तब भी अपने सतर की हिफ़ाज़त की जाए।
- अज्नबी औरत को देखना हराम है अगर अचानक नज़र पड़ जाए तो अपनी नज़र को फेर लिया जाए।
- जो औरतें घरों में अकेली हों उनके पास जाने से बचा जाए, क्योंकि इस काम में शैतान अपना वार कर देता है।
- विग का इस्तेमाल ग़ैर शरई और हराम है, और ऐसा करने वाली औरत पर लानत की गई है।
- खुशबू लगा कर बाज़ारों में जाने वाली औरत को ज़ानिया कहा गया है।
- खुशबू का तोहफ़ा वापस न किया जाए। नीज़ मर्दों और औरतों की खुशबू में फ़र्क है, लिहाज़ा सब को इसकी पहचान होनी चाहिए।
- कोई मर्द किसी मर्द का और कोई औरत किसी औरत का जिस्म न देखे।
- ब्यूटी पारलर्ज़ में जाकर ख्वातीन के सामने अपने महासिन को खोलने वाली औरत भी अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमान है।
- घर में तस्वीरों और कुत्तों की वजह से फ़रिश्ते नहीं आते।
- सफ़ेद हो जाने वाले बालों को न उखाड़ा जाए।
- बच्चों के नाम अच्छे और खूब सूरत रखे जाएँ क्योंकि नाम का भी शख्सिय्यत पर असर होता है।
- बुरे नाम तब्दील करके अच्छे नाम रखे जाएँ।
- फ़ुज़ूल और इश्क़िया अश्आर इंसान को बर्बाद कर देते हैं।
- सब से अच्छा अमल वह है जिस पर हमेशगी की जाए ख़्वाह वह बहुत छोटा ही क्यों न हो।

मज़्मून नम्बर 42.

أَبْوَابُ الأَمْثَالِ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

रसूलुल्लाह (ﷺ) से मर्वी अम्साल

तआरुफ़

16 अहादीस के साथ 7 अबवाब के इस उन्वान में आप पढ़ेंगे:

- बात समझाने के लिए किस तरह मिसाल दी जाए?
- नबी (ﷺ) की शरीअत की मिसाल कैसी है?
- सिराते मुस्तक़ीम और जन्नत की मिसाल क्या है?

1 بَابُ مَا جَاءَ فِي مَثَلِ اللهِ لِعِبَادِهِ

2859 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ السَّعْدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا بَقِيَّةُ بْنُ الوَلِيدِ، عَنْ بَحِيرِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ خَالِدِ بْنِ مَعْدَانَ، عَنْ جُبَيْرِ بْنِ نُفَيْرٍ، عَنِ النَّوَّاسِ بْنِ سَمْعَانَ الكِلَابِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ اللَّهَ ضَرَبَ مَثَلاً صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا، عَلَى كَنَفَيِ الصِّرَاطِ سُورَانِ لَهُمَا أَبْوَابٌ مُفَتَّحَةٌ، عَلَى الأَبْوَابِ سُتُورٌ وَدَاعٍ يَدْعُو عَلَى رَأْسِ الصِّرَاطِ وَدَاعٍ يَدْعُو فَوْقَهُ {وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ} وَالأَبْوَابُ الَّتِي عَلَى

1 - अल्लाह तआला की अपने बन्दों के लिए मिसाल।

2859 - सय्यदना नव्वास बिन समआन किलाबी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने सिराते मुस्तक़ीम की मिसाल बयान की है (वह इस तरह कि) रास्ते के दोनों अतराफ़(किनारों)में दो दीवारें हैं जिनमें दरवाज़े खुले हुए हैं, उन दरवाजों पर पर्दे हैं, एक दाई रास्ते के आखिर पर बुला रहा है जबकि एक दाई उस से भी आगे है, अल्लाह तआला सलामती के घर की तरफ़ बुलाता है और जिसे चाहता है सिराते मुस्तक़ीम की तरफ़ हिदायत देता है।''

सहीह :अस-सुन्ना ले-इब्ने अबी आसिम:18. अल-अम्साल ले-अबी शैख़ :280. मुसनद अहमद:4/ 182.

كَنَفَيِ الصِّرَاطِ حُدُودُ اللهِ فَلاَ يَقَعُ أَحَدٌ فِي حُدُودِ اللهِ حَتَّى يُكْشَفَ السِّتْرُ وَالَّذِي يَدْعُو مِنْ فَوْقِهِ وَاعِظُ رَبِّهِ.

रास्ते के दोनों अतराफ़ (किनारों) पर जो दरवाज़े हैं वह अल्लाह की हदें हैं कोई भी शख़्स उसी वक़्त अल्लाह की हदों में वाक़ेअ होगा जब वह पर्दा उठाएगा और जो शख़्स आगे बुला रहा है वह रब की तरफ़ से वाज़ करने वाला क़ुरआन है।''

(2859)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है। मैंने अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान से सुना वह कह रहे थे कि मैंने ज़करिया बिन अदी से सुना :अबू इस्हाक़ फजारी कहते हैं, बकिय्या से वह रिवायात ले लो जो वह सिक़ह् रावियों से बयान करें और इस्माईल बिन अयाश तुम्हें सिक़ह् या गैर सिक़ह् रावियों से जो भी बयान करे उसे मत लो।

2860 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ خَالِدِ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي هِلاَلٍ، أَنَّ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيَّ، قَالَ: خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمًا فَقَالَ: إِنِّي رَأَيْتُ فِي الْمَنَامِ كَأَنَّ جِبْرِيلَ عِنْدَ رَأْسِي وَمِيكَائِيلَ عِنْدَ رِجْلَيَّ يَقُولُ أَحَدُهُمَا لِصَاحِبِهِ: اضْرِبْ لَهُ مَثَلاً، فَقَالَ: اسْمَعْ سَمِعَتْ أُذُنُكَ وَاعْقِلْ عَقَلَ قَلْبُكَ، إِنَّمَا مَثَلُكَ وَمَثَلُ أُمَّتِكَ كَمَثَلِ مَلِكٍ اتَّخَذَ دَارًا ثُمَّ بَنَى فِيهَا بَيْتًا ثُمَّ جَعَلَ فِيهَا مَائِدَةً ثُمَّ بَعَثَ رَسُولاً يَدْعُو النَّاسَ إِلَى طَعَامِهِ، فَمِنْهُمْ مَنْ أَجَابَ الرَّسُولَ وَمِنْهُمْ مَنْ تَرَكَهُ، فَاللَّهُ هُوَ الْمَلِكُ وَالدَّارُ

2860 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) हमारे पास तशरीफ़ लाये आप ने फ़रमाया, "मैंने ख्वाब में देखा कि जिब्रील (عليه السلام) मेरे सर और मीकाईल (عليه السلام) मेरे पाँव के पास हैं उन में एक अपने साथी से कह रहा है कि इन (मुहम्मद ﷺ) की कोई मिसाल बयान करो तो उसने कहा :सुनें आप के कान सुनें और समझें आप का दिल इस मिसाल को समझे, आप और आप की उम्मत की मिसाल ऐसे है जैसे एक बादशाह ने महल बनाया फिर उस में एक घर बनाया, उस में दस्तरख्वान लगाया फिर लोगों को खाने की दावत देने के लिए एक कासिद रवाना किया, उन में से कुछ ने कासिद की दावत क़ुबूल कर ली और कुछ ने छोड़ दी। पस अल्लाह तआला बादशाह हैं। महल इस्लाम है। घर जन्नत है और

الإِسْلاَمُ وَالبَيْتُ الجَنَّةُ وَأَنْتَ يَا مُحَمَّدُ رَسُولٌ، فَمَنْ أَجَابَكَ دَخَلَ الإِسْلاَمَ، وَمَنْ دَخَلَ الإِسْلاَمَ دَخَلَ الجَنَّةَ، وَمَنْ دَخَلَ الجَنَّةَ أَكَلَ مَا فِيهَا.

ऐ मुहम्मद! आप रसूल (क़ासिद) हैं। जिसने आप की दावत क़ुबूल की वह इस्लाम में दाख़िल हो गया और जो शख़्स इस्लाम में आ गया वह जन्नत में दाख़िल हो गया और जो जन्नत में दाख़िल हुआ उस ने उसकी नेअ्मतें खा लीं।''

ज़ईफ़ुल इस्नाद :तफ़सीर तबरी : 11/ 104

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस मुर्सल है। सईद बिन अबी हिलाल ने जाबिर बिन अब्दुल्लाह को नहीं पाया। नीज़ इस बारे में इब्ने मसऊद (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है और यह हदीस इस से अच्छी सनद के साथ भी नबी (ﷺ) से मर्वी है।

2861 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ مَيْمُونٍ، عَنْ أَبِي تَمِيمَةَ الهُجَيْمِيِّ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ، عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: صَلَّى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ العِشَاءَ ثُمَّ انْصَرَفَ فَأَخَذَ بِيَدِ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ حَتَّى خَرَجَ بِهِ إِلَى بَطْحَاءِ مَكَّةَ فَأَجْلَسَهُ ثُمَّ خَطَّ عَلَيْهِ خَطًّا ثُمَّ قَالَ: لاَ تَبْرَحَنَّ خَطَّكَ فَإِنَّهُ سَيَنْتَهِي إِلَيْكَ رِجَالٌ فَلاَ تُكَلِّمْهُمْ فَإِنَّهُمْ لاَ يُكَلِّمُونَكَ. قَالَ: ثُمَّ مَضَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَيْثُ أَرَادَ، فَبَيْنَا أَنَا جَالِسٌ فِي خَطِّي إِذْ أَتَانِي رِجَالٌ كَأَنَّهُمُ الزُّطُّ أَشْعَارُهُمْ وَأَجْسَامُهُمْ لاَ أَرَى عَوْرَةً وَلاَ أَرَى قِشْرًا وَيَنْتَهُونَ إِلَيَّ، لاَ

2861 - अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इशा की नमाज़ पढ़ी फिर फ़ारिग हुए तो आप ने अब्दुल्लाह बिन मसऊद का हाथ पकड़ा उसे काबा की कंकरीली ज़मीन की तरफ़ ले गए, उसे बिठा कर आप ने उनके गिर्द एक लकीर लगाई फिर फ़रमाया, " तुम अपनी लकीर के अन्दर ही रहना क्योंकि तुम्हारे पास कुछ लोग आयेंगे तो तुम उनसे बात न करना वह भी तुमसे बात नहीं कर सकेंगे।'' रावी कहते हैं, फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) उधर चले गए जहां का इरादा था मैं अपनी लकीर में ही बैठा हुआ था कि अचानक मेरे पास कुछ आदमी आए जो अपने बालों और जिस्मों से ज़त[1] लग रहे थे न मैं उन्हें नंगा देख रहा और न ही मुझे लिबास नज़र आ रहा था, वह मेरी तरफ़ बढ़ते थे लेकिन लकीर से आगे नहीं आते थे। फिर वह रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ़ चले गए, यहाँ तक कि जब रात का आख़िरी हिस्सा आया तो रसूलुल्लाह (ﷺ)

يُجَاوِزُونَ الخَطَّ ثُمَّ يَصْدُرُونَ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، حَتَّى إِذَا كَانَ مِنْ آخِرِ اللَّيْلِ، لَكِنْ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ جَاءَنِي وَأَنَا جَالِسٌ، فَقَالَ: لَقَدْ أَرَانِي مُنْذُ اللَّيْلَةَ ثُمَّ دَخَلَ عَلَيَّ فِي خَطِّي فَتَوَسَّدَ فَخِذِي فَرَقَدَ وَكَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا رَقَدَ نَفَخَ، فَبَيْنَا أَنَا قَاعِدٌ وَرَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُتَوَسِّدٌ فَخِذِي إِذَا أَنَا بِرِجَالٍ عَلَيْهِمْ ثِيَابٌ بِيضٌ اللَّهُ أَعْلَمُ مَا بِهِمْ مِنَ الجَمَالِ فَانْتَهَوْا إِلَيَّ، فَجَلَسَ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ عِنْدَ رَأْسِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَطَائِفَةٌ مِنْهُمْ عِنْدَ رِجْلَيْهِ ثُمَّ قَالُوا بَيْنَهُمْ: مَا رَأَيْنَا عَبْدًا قَطُّ أُوتِيَ مِثْلَ مَا أُوتِيَ هَذَا النَّبِيُّ، إِنَّ عَيْنَيْهِ تَنَامَانِ وَقَلْبُهُ يَقْظَانُ، اضْرِبُوا لَهُ مَثَلاً مَثَلُ سَيِّدٍ بَنَى قَصْرًا ثُمَّ جَعَلَ مَأْدُبَةً فَدَعَا النَّاسَ إِلَى طَعَامِهِ وَشَرَابِهِ، فَمَنْ أَجَابَهُ أَكَلَ مِنْ طَعَامِهِ وَشَرِبَ مِنْ شَرَابِهِ وَمَنْ لَمْ يُجِبْهُ عَاقَبَهُ، أَوْ قَالَ: عَذَّبَهُ، ثُمَّ ارْتَفَعُوا، وَاسْتَيْقَظَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عِنْدَ ذَلِكَ فَقَالَ: سَمِعْتَ مَا قَالَ

मेरे पास तशरीफ़ लाये आप ने फ़रमाया, "आज रात मैंने अपने आप को देखा (यानी मैं सोया नहीं)'' फिर आप लकीर के अन्दर मेरे पास आ गये आप ने मेरी रान पर सर रखा और सो गए और रसूलुल्लाह (ﷺ) जब सोते तो खर्राटे लेते थे, मैं बैठा हुआ था और रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरी रान पर सर रखे हुए थे कि अचानक कुछ आदमी देखे जिन पर सफ़ेद लिबास थे अल्लाह ही खूब जानता है कि उनकी खूबसूरती कैसी थी, फिर वह मेरे पास आए उन में से एक गिरोह रसूलुल्लाह (ﷺ) के सर के पास और एक गिरोह आप के पाँव के पास बैठ गया, फिर वह आपस में कहने लगे : हमने कोई बन्दा ऐसा नहीं देखा जिसे इस क़दर फ़ज़ीलत मिली हो जिस क़दर इस नबी को दी गई है। इनकी आखें सोती हैं और दिल जागता है, इनकी मिसाल तो बयान करो। इनकी मिसाल ऐसे है जैसे कोई सरदार महल बनाए फिर उस में दस्तर ख्वान लगा कर लोगों को खाने और पीने की दावत दे तो जो शख़्स उसे कुबूल कर ले वह उसका खाना खा लेता है और पानी पी लेता है और जो कुबूल न करे तो वह सरदार उसे सज़ा देता है या कहा अज़ाब देता है। फिर वह उठ गए तो उसी वक़्त रसूलुल्लाह (ﷺ) बेदार हो गए। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुमने इन लोगों की बातें सुनीं और तुम जानते हो कि यह कौन थे?'' मैंने अर्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल ही बेहतर जानते हैं। आप ने फ़रमाया, "यह फ़रिश्ते थे, तुम जानते हो कि इन्होंने किया मिसाल बयान

هَؤُلَاءِ؟ وَهَلْ تَدْرِي مَنْ هَؤُلَاءِ؟ قُلْتُ: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، قَالَ: هُمُ الْمَلَائِكَةُ، فَتَدْرِي مَا الْمَثَلُ الَّذِي ضَرَبُوا؟ قُلْتُ: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، قَالَ: الْمَثَلُ الَّذِي ضَرَبُوا الرَّحْمَنُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى بَنَى الجَنَّةَ وَدَعَا إِلَيْهَا عِبَادَهُ، فَمَنْ أَجَابَهُ دَخَلَ الجَنَّةَ وَمَنْ لَمْ يُجِبْهُ عَاقَبَهُ أَوْ عَذَّبَهُ.

की है?'' मैंने कहा अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते हैं, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, " इन्होंने जिसकी मिसाल बयान की है वह रहमान अज्ज़ा व जल्ल जिसने जन्नत बना कर बन्दों को उसकी तरफ़ दावत दी। फिर जिस ने उसे कुबूल किया वह जन्नत में दाख़िल हो गया और जिसने उसे कुबूल न किया उसे वह अज़ाब या सज़ा देगा।''

हसन सहीह :दारमी: 12. मुसनद अहमद: 1/ 399.

तौज़ीह : زط :यह जिन्नात थे या इन्सान इसकी सराहत नहीं है। कहा जाता है कि " زط एक इलाका है जिसके रहने वालों को ज़ती कहा जाता है और यह भी बयान किया जाता है कि सूडानियों और हिन्दुस्तान के लोगों की एक क़िस्म को زط कहा जाता है और अजमी ज़बान में इसे "जट" भी कहते हैं। (अल्लाह बेहतर जानता है।)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है। अबू तमीमा हुजैमी हैं इनका नाम तरीफ़ बिन मुजालिद था और अबू उस्मान नहदी का नाम अब्दुर्रहमान बिन मुल्ल था नीज़ जिस सुलैमान अत्तैमी से इस हदीस को मोतमिर ने रिवायत किया है, यह सुलैमान बिन तर्खान हैं यह ख़ुद तैमी नहीं थे बल्कि यह बनू तमीम में आया करते थे चुनांचे उनकी तरफ़ ही निस्बत हो गई। अली बिन मदीनी, यह्या का कौल नक़्ल करते हैं कि मैंने सुलैमान तैमी से ज़्यादा अल्लाह का खौफ़ रखने वाला नहीं देखा।

2 بَابُ مَا جَاءَ فِي مَثَلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالأَنْبِيَاءِ قَبْلَهُ

2 - नबी (ﷺ) और दूसरे अंबिया की मिसाल।

2862 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنِ سِنَانٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَلِيمُ بْنُ حَيَّانَ بَصْرِيٌّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مِينَاءَ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى

2862 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मेरी और मुझसे पहले अंबिया की मिसाल उस आदमी की तरह है जिसने एक घर बनाया, उसे मुकम्मल करके खूब संवारा, लेकिन एक ईंट की जगह बाकी रखी, लोग

اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّمَا مَثَلِي وَمَثَلُ الأَنْبِيَاءِ قَبْلِي كَرَجُلٍ بَنَى دَارًا فَأَكْمَلَهَا وَأَحْسَنَهَا إِلاَّ مَوْضِعَ لَبِنَةٍ فَجَعَلَ النَّاسُ يَدْخُلُونَهَا وَيَتَعَجَّبُونَ مِنْهَا وَيَقُولُونَ لَوْلاَ مَوْضِعُ اللَّبِنَةِ.

उसमें दाख़िल होने लगे और उसको देख कर उस से तअज्जुब करते हुए कहते थे :काश! इस ईंट की जगह खाली न होती।''
बुख़ारी:3534. मुस्लिम:2287

वज़ाहत: इस बारे में अबू हुरैरा (رضي الله عنه) और उबय बिन काब (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।

3 بَابُ مَا جَاءَ فِي مَثَلِ الصَّلاَةِ وَالصِّيَامِ وَالصَّدَقَةِ

3 - नमाज़, रोज़े और सदके की मिसाल।

2863 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبَانُ بْنُ يَزِيدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ سَلاَّمٍ، أَنَّ أَبَا سَلاَّمٍ، حَدَّثَهُ أَنَّ الحَارِثَ الأَشْعَرِيَّ، حَدَّثَهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ اللَّهَ أَمَرَ يَحْيَى بْنَ زَكَرِيَّا بِخَمْسِ كَلِمَاتٍ أَنْ يَعْمَلَ بِهَا وَيَأْمُرَ بَنِي إِسرائيل أَنْ يَعْمَلُوا بِهَا، وَإِنَّهُ كَادَ أَنْ يُبْطِئَ بِهَا، فَقَالَ عِيسَى: إِنَّ اللَّهَ أَمَرَكَ بِخَمْسِ كَلِمَاتٍ لِتَعْمَلَ بِهَا وَتَأْمُرَ بَنِي إِسرائيل أَنْ يَعْمَلُوا بِهَا، فَإِمَّا أَنْ تَأْمُرَهُمْ، وَإِمَّا أَنَا آمُرُهُمْ. فَقَالَ يَحْيَى: أَخْشَى إِنْ سَبَقْتَنِي بِهَا أَنْ يُخْسَفَ بِي أَوْ أُعَذَّبَ، فَجَمَعَ

2863 - सय्यदना हारिस अशअरी (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने यह्या बिन ज़करिया को पांच बातों का हुक्म दिया कि ख़ुद भी उन पर अमल करें और बनी इस्राईल को उन पर अमल करने का हुक्म दें। क़रीब था कि वह इस काम में ताखीर करते, चुनांचे ईसा (عليه السلام) ने कहा :अल्लाह तआला ने आप को पांच बातों का हुक्म दिया है कि आप ख़ुद भी उन पर अमल करें और बनी इस्राईल को भी उन पर अमल करने का हुक्म दें, अब आप या तो उन्हें हुक्म दें या फिर मैं उन्हें हुक्म देता हूँ तो यह्या (عليه السلام) ने कहा :मुझे डर है कि आप अगर इस काम में मुझसे सबक़त ले गए तो कहीं मुझे ज़मीन में धंसा न दिया जाए या मुझे अज़ाब दिया जाए। फिर उन्होंने लोगों को बैतूल मक्दिस में जमा किया मस्जिद भर गई और लोग बलंद जगहों पर बैठ गए फिर उन्होंने

النَّاسَ فِي بَيْتِ الْمَقْدِسِ، فَامْتَلأَ الْمَسْجِدُ وَقَعَدُوا عَلَى الشُّرَفِ، فَقَالَ: إِنَّ اللَّهَ أَمَرَنِي بِخَمْسِ كَلِمَاتٍ أَنْ أَعْمَلَ بِهِنَّ، وَآمُرَكُمْ أَنْ تَعْمَلُوا بِهِنَّ: أَوَّلُهُنَّ أَنْ تَعْبُدُوا اللَّهَ وَلاَ تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا، وَإِنَّ مَثَلَ مَنْ أَشْرَكَ بِاللَّهِ كَمَثَلِ رَجُلٍ اشْتَرَى عَبْدًا مِنْ خَالِصِ مَالِهِ بِذَهَبٍ أَوْ وَرِقٍ، فَقَالَ: هَذِهِ دَارِي وَهَذَا عَمَلِي فَاعْمَلْ وَأَدِّ إِلَيَّ، فَكَانَ يَعْمَلُ وَيُؤَدِّي إِلَى غَيْرِ سَيِّدِهِ، فَأَيُّكُمْ يَرْضَى أَنْ يَكُونَ عَبْدُهُ كَذَلِكَ؟ وَإِنَّ اللَّهَ أَمَرَكُمْ بِالصَّلاَةِ، فَإِذَا صَلَّيْتُمْ فَلاَ تَلْتَفِتُوا فَإِنَّ اللَّهَ يَنْصِبُ وَجْهَهُ لِوَجْهِ عَبْدِهِ فِي صَلاَتِهِ مَا لَمْ يَلْتَفِتْ، وَآمُرُكُمْ بِالصِّيَامِ، فَإِنَّ مَثَلَ ذَلِكَ كَمَثَلِ رَجُلٍ فِي عِصَابَةٍ مَعَهُ صُرَّةٌ فِيهَا مِسْكٌ، فَكُلُّهُمْ يَعْجَبُ أَوْ يُعْجِبُهُ رِيحُهَا، وَإِنَّ رِيحَ الصَّائِمِ أَطْيَبُ عِنْدَ اللهِ مِنْ رِيحِ الْمِسْكِ،وَآمُرُكُمْ بِالصَّدَقَةِ فَإِنَّ مَثَلَ ذَلِكَ كَمَثَلِ رَجُلٍ أَسَرَهُ الْعَدُوُّ، فَأَوْثَقُوا يَدَهُ إِلَى عُنُقِهِ وَقَدَّمُوهُ لِيَضْرِبُوا عُنُقَهُ، فَقَالَ: أَنَا أَفْدِيهِ مِنْكُمْ بِالْقَلِيلِ وَالْكَثِيرِ، فَفَدَى نَفْسَهُ مِنْهُمْ، وَآمُرُكُمْ أَنْ تَذْكُرُوا اللَّهَ فَإِنَّ مَثَلَ ذَلِكَ كَمَثَلِ رَجُلٍ خَرَجَ الْعَدُوُّ فِي أَثَرِهِ سِرَاعًا حَتَّى إِذَا أَتَى عَلَى حِصْنٍ حَصِينٍ فَأَحْرَزَ نَفْسَهُ مِنْهُمْ،

फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने मुझे पांच बातों का हुक्म दिया है कि मैं ख़ुद भी उन पर अमल करूं और तुम्हें भी उन पर अमल करने का हुक्म दूं :पहली बात यह है कि तुम अल्लाह ही की इबादत करो उसके साथ किसी को भी शरीक न करो और अल्लाह के साथ शिर्क करने वाले की मिसाल उस आदमी की तरह है जिस ने अपने खालिस माल सोने या चांदी से एक गुलाम खरीदा फिर उस से कहा :यह मेरा घर और यह मेरा काम है। तुम काम करो और उसकी उज्रत मुझे दो फिर वह काम करके (कमाई की रक़म) अपने सरदार के अलावा किसी और को दे दे, तो तुम में से कौन चाहता है कि उसका गुलाम ऐसा हो ? और अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है कि जब तुम नमाज़ पढ़ो तो इधर उधर मत देखो क्योंकि अल्लाह तआला अपने चेहरे को नमाज़ में उस वक़्त तक अपने बन्दे की तरफ़ रखता है जब तक वह इधर उधर नहीं देखता, उस ने तुम्हें रोज़ों का हुक्म दिया है, उनकी मिसाल उस आदमी की तरह है जो एक जमाअत में हो उस के पास कस्तूरी की एक थैली भी हो तो सब लोगों को या उसे उसकी खुशबू अच्छी लगती है और रोजेदार के मुंह की खुशबू अल्लाह के यहाँ कस्तूरी की खुशबू से भी बेहतर है, उस ने तुम्हें सदक़ा का भी हुक्म दिया है उस की मिसाल उस आदमी की तरह है जिसे दुश्मन ने क़ैद करके उसके हाथ गर्दन के साथ बाँध दिए और उसकी गर्दन उतारने के लिए चले तो वह कहता हैं मैं तुम्हें अपने सारे माल के साथ फिद्या देता हूँ

كَذَلِكَ العَبْدُ لاَ يُحْرِزُ نَفْسَهُ مِنَ الشَّيْطَانِ إِلاَّ بِذِكْرِ اللهِ، قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَأَنَا آمُرُكُمْ بِخَمْسٍ اللَّهُ أَمَرَنِي بِهِنَّ، السَّمْعُ وَالطَّاعَةُ وَالجِهَادُ وَالهِجْرَةُ وَالجَمَاعَةُ، فَإِنَّهُ مَنْ فَارَقَ الجَمَاعَةَ قِيدَ شِبْرٍ فَقَدْ خَلَعَ رِبْقَةَ الإِسْلاَمِ مِنْ عُنُقِهِ إِلاَّ أَنْ يَرْجِعَ، وَمَنْ ادَّعَى دَعْوَى الجَاهِلِيَّةِ فَإِنَّهُ مِنْ جُثَا جَهَنَّمَ، فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللهِ وَإِنْ صَلَّى وَصَامَ؟ قَالَ: وَإِنْ صَلَّى وَصَامَ، فَادْعُوا بِدَعْوَى اللهِ الَّذِي سَمَّاكُمُ الْمُسْلِمِينَ الْمُؤْمِنِينَ، عِبَادَ اللَّهِ.

(इस तरह) वह अपने आप को उन से बचा लेता है, और उस अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है कि तुम अल्लाह का ज़िक्र करो उसकी मिसाल उस आदमी जैसे है जिसके पीछे दुश्मन लगा हो, यहाँ तक कि वह एक मज़बूत किले के पास पहुँच गया फिर उस ने अपने आप को उन (दुश्मनों) से बचा लिया इस तरह बन्दा सिर्फ़ अल्लाह के ज़िक्र के साथ अपने आप को शैतान से बचा सकता है।

सहीह :इब्ने खुज़ैमा:483. इब्ने हिब्बान:6233. अबू याला:1571. मुसनद अहमद:4/ 130.

नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "और मैं भी तुम्हें पांच बातों का हुक्म देता हूँ जिनका हुक्म मुझे अल्लाह ने ही दिया है :अमीर की बात सुनने, मानने, जिहाद करने, हिज्रत करने और जमाअत के साथ रहने का इसलिए कि जो शख़्स एक बालिश्त बराबर भी जमाअत से अलाहिदा (अलग) हुआ, उस ने अपनी गर्दन से इस्लाम के कपड़े (या रस्सी) को उतार दिया हाँ अगर वह रुजू कर ले तो ठीक है और जिसने जाहिलिय्यत की पुकार पुकारी वह जहन्नम की आग में होगा।'' एक आदमी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! अगरचे वह नमाज़ी रोज़ेदार ही हो? आप ने फ़रमाया, "अगरचे नमाज़ी और रोजेदार ही हो। सो (इसलिए) तुम अल्लाह के पुकारने की तरह पुकारो और उसने तुम्हारा नाम, मुस्लिमीन, मोमिनीन अल्लाह के बन्दे रखा है।''

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी फ़रमाते हैं, हारिसुल अशअरी (رضي الله عنه) सहाबी हैं उनकी इस के अलावा और भी अहादीस हैं।

2864 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ الطَّيَالِسِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبَانُ بْنُ يَزِيدَ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ

2864 - अबू ईसा कहते हैं, हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने अबू दाऊद तयालिसी से उन्हें अबान बिन यज़ीद ने यह्या बिन अबी कसीर से उन्होंने ज़ैद बिन सल्लाम से उन्होंने अबू सलाम से

سَلاَّمٍ، عَنْ أَبِي سَلاَّمٍ، عَنِ الحَارِثِ الأَشْعَرِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ نَحْوَهُ بِمَعْنَاهُ.

बवास्ता हारिस अशअरी (رضی اللہ) नबी (ﷺ) से इसी मफ्हूम की हदीस बयान की है।

सहीह: गुज़िश्ता हदीस देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं, यह हदीस भी हसन सहीह ग़रीब है। और अबू सल्लाम हब्शी का नाम मम्तूर था। नीज़ इस हदीस को अली बिन मुबारक ने भी यह्या बिन अबी कसीर से रिवायत किया है।

4 بَابُ مَا جَاءَ فِي مَثَلِ الْمُؤْمِنِ القَارِئِ لِلْقُرْآنِ وَغَيْرِ القَارِئِ

4 - कुरआन पढ़ने और न पढ़ने वाले मोमिन की मिसाल।

2865 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَثَلُ الْمُؤْمِنِ الَّذِي يَقْرَأُ القُرْآنَ كَمَثَلِ الأُتْرُجَّةِ رِيحُهَا طَيِّبٌ وَطَعْمُهَا طَيِّبٌ، وَمَثَلُ الْمُؤْمِنِ الَّذِي لاَ يَقْرَأُ القُرْآنَ كَمَثَلِ التَّمْرَةِ لاَ رِيحَ لَهَا وَطَعْمُهَا حُلْوٌ، وَمَثَلُ الْمُنَافِقِ الَّذِي يَقْرَأُ القُرْآنَ كَمَثَلِ الرَّيْحَانَةِ رِيحُهَا طَيِّبٌ وَطَعْمُهَا مُرٌّ، وَمَثَلُ الْمُنَافِقِ الَّذِي لاَ يَقْرَأُ القُرْآنَ كَمَثَلِ الحَنْظَلَةِ رِيحُهَا مُرٌّ وَطَعْمُهَا مُرٌّ.

2865 - अबू मूसा अशअरी (رضی اللہ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, " कुरआन पढ़ने वाले मोमिन की मिसाल तुरुंज[1] की तरह है जिसकी खुशबू भी अच्छी होती है और ज़ायक़ा भी, कुरआन न पढ़ने वाले मोमिन की मिसाल ख़ुजूर की तरह है जिसकी ख़ुशबू नहीं होती है लेकिन उसका ज़ायक़ा मीठा होता है, कुरआन पढ़ने वाले मुनाफ़िक़ की मिसाल रेहान[2] फूल की तरह है जिसकी खुशबू अच्छी और ज़ायक़ा कड़वा होता है और कुरआन न पढ़ने वाले मुनाफ़िक़ की मिसाल तुम्मे की तरह है जिसकी महक भी कड़वी है और ज़ायक़ा भी कड़वा होता है।

बुख़ारी:5020. मुस्लिम :797. अबू दाऊद:4830. इब्ने माजह:214. निसाई:5038

तौज़ीह : ترنج :संतरा या नारंगी, यह लफ्ज़ आम है जो मालटे, केनू और इस तरह के दीगर तुर्श फलों पर भी बोला जाता है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। इसे शोबा ने भी क़तादा से इसी तरह रिवायत किया है।

2866 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الخَلاَّلُ وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَثَلُ الْمُؤْمِنِ كَمَثَلِ الزَّرْعِ لاَ تَزَالُ الرِّيَاحُ تُفَيِّئُهُ، وَلاَ يَزَالُ الْمُؤْمِنُ يُصِيبُهُ بَلاَءٌ، وَمَثَلُ الْمُنَافِقِ مَثَلُ شَجَرَةِ الأَرْزِ لاَ تَهْتَزُّ حَتَّى تُسْتَحْصَدَ.

2866 - अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मोमिन की मिसाल एक खेती (फ़सल) की तरह है जिसे हवाएं दायें बाएं झुकाती रहती हैं और मोमिन के साथ हमेशा ही परेशानियां रहती हैं जबकि मुनाफ़िक की मिसाल सनूबर[1] के दरख़्त की तरह है जो हिलता नहीं है यहाँ तक कि उसे जड़ से काट दिया जाता है।''

बुख़ारी:5644. मुस्लिम:2809

तौज़ीह :الأَرْز :सनूबर (चील या सिम्बल वग़ैरह) का दरख़्त यह सदा बहार होता है, और इस से कश्तियाँ वग़ैरह बनाई जाती हैं। (अल-मोजमुल वसीत:पृ. 25)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2867 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مُوسَى الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ مِنَ الشَّجَرِ شَجَرَةً لاَ يَسْقُطُ وَرَقُهَا وَهِيَ مَثَلُ الْمُؤْمِنِ حَدِّثُونِي مَا هِيَ؟ قَالَ عَبْدُ اللهِ: فَوَقَعَ النَّاسُ فِي شَجَرِ البَوَادِي وَوَقَعَ فِي نَفْسِي أَنَّهَا النَّخْلَةُ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: هِيَ النَّخْلَةُ فَاسْتَحْيَيْتُ أَنْ أَقُولَ قَالَ عَبْدُ اللهِ: فَحَدَّثْتُ عُمَرَ، بِالَّذِي

2867 - सय्यदना इब्ने उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "दरख़्तों में से एक दरख़्त है जिसका पत्ता (ख़िज़ाँ के मौसम में भी) नहीं गिरता और यही मोमिन की मिसाल है। मुझे बताओ वह कौन सा दरख़्त है? अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) कहते हैं, लोग जंगल के दरख़्तों के बारे में सोचने लगे और मेरे दिल में यह बात आयी कि वह खुजूर का दरख़्त है। (जब किसी ने जवाब न दिया) तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "वह ख़ुजूर का दरख़्त है।'' मैंने बताने में हया की, अब्दुल्लाह कहते हैं, फिर मैंने उमर (رضي الله عنه) को वह बात बताई जो मेरे दिल में आई थी तो उन्होंने फ़रमाया, "अगर तुम यह बात कह देते तो मुझे

यह बात इतने माल से भी ज़्यादा महबूब होती।''

وَقَعَ فِي نَفْسِي. فَقَالَ: لأَنْ تَكُونَ قُلْتَهَا أَحَبَّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ يَكُونَ لِي كَذَا وَكَذَا.

बुख़ारी:61. मुस्लिम:2811.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और इस बारे में अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

5 - पांच नमाज़ों की मिसाल।

5 بَابُ مَثَلِ الصَّلَوَاتِ الخَمْسِ

2868 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम यह बतलाओ कि अगर तुम में से किसी शख़्स के दरवाज़े पर नहर हो वह उसके अन्दर हर रोज़ पांच मर्तबा नहाए, क्या उसकी मैल बाकी रहेगी?'' लोगों ने अर्ज़ किया उसकी मैल बाकी नहीं रहेगी, आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "यही पांच नमाज़ों की मिसाल है उनके साथ अल्लाह तआला गुनाहों को मिटा देता है।''

बुख़ारी:528. मुस्लिम:667. निसाई:462

2868 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ الهَادِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: أَرَأَيْتُمْ لَوْ أَنَّ نَهْرًا بِبَابِ أَحَدِكُمْ يَغْتَسِلُ مِنْهُ كُلَّ يَوْمٍ خَمْسَ مَرَّاتٍ هَلْ يَبْقَى مِنْ دَرَنِهِ شَيْءٌ؟ قَالُوا: لاَ يَبْقَى مِنْ دَرَنِهِ شَيْءٌ. قَالَ: فَذَلِكَ مَثَلُ الصَّلَوَاتِ الخَمْسِ يَمْحُو اللَّهُ بِهِنَّ الخَطَايَا.

वज़ाहत: इस बारे में जाबिर (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ हमें कुतैबा ने भी बवास्ता बक्र बिन मुज़र अल कुरशी, इब्ने हाद ने इसी तरह की हदीस बयान की है।

6 - मेरी उम्मत की मिसाल बारिश की तरह है

(6 بَابٌ: مَثَلُ أُمَّتِي مَثَلُ الْمَطَرِ)

2869 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मेरी उम्मत की मिसाल बारिश की तरह है यह मालूम नहीं होता कि उसका अव्वल बेहतर है या

2869 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ يَحْيَى الأَبَحُّ، عَنْ ثَابِتٍ البُنَانِيِّ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:

مَثَلُ أُمَّتِي مَثَلُ الْمَطَرِ لاَ يُدْرَى أَوَّلُهُ خَيْرٌ أَمْ آخِرُهُ.

आख़िर।''

हसन सहीह: तयालिसी: 2023. मुसनद अहमद:3/130. अबू याला:3475

वज़ाहत: इस बारे में उमारा, अब्दुल्लाह बिन अम्र और इब्ने उमर (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है, इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।

नीज़ अब्दुर्रहमान बिन महदी से मर्वी है कि वह हम्माद बिन यह्या को सबत (सिक़ह) रावी कहते थे और कहा करते थे कि उनका शुमार हमारे असातिज़ा में होता है।

7 بَابُ مَا جَاءَ فِي مَثَلِ ابْنِ آدَمَ وَأَجَلِهِ وَأَمَلِهِ

7 - इंसान, उसकी मौत और उम्मीदों की मिसाल।

2870 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا خَلاَّدُ بْنُ يَحْيَى، قَالَ: حَدَّثَنَا بَشِيرُ بْنُ الْمُهَاجِرِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ بُرَيْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: هَلْ تَدْرُونَ مَا هَذِهِ وَمَا هَذِهِ، وَرَمَى بِحَصَاتَيْنِ؟ قَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، قَالَ: هَذَاكَ الأَمَلُ وَهَذَاكَ الأَجَلُ.

2870 - सय्यदना बुरैदा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या तुम इस और इस कंकरी की मिसाल जानते हो?'' और आप ने दो कंकरियाँ फेंकी, लोगों ने अर्ज़ किया, अल्लाह और उसके रसूल ही बेहतर जानते हैं, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह आरज़ू है और यह मौत।''

ज़ईफ़

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।

2871 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مُوسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّمَا أَجَلُكُمْ فِيمَا خَلاَ مِنَ الأُمَمِ كَمَا بَيْنَ صَلاَةِ الْعَصْرِ إِلَى مَغَارِبِ الشَّمْسِ وَإِنَّمَا مَثَلُكُمْ وَمَثَلُ الْيَهُودِ

2871 - सय्यदना इब्ने उमर (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम्हारी मुद्दत पहली उम्मतों के मुकाबिले में ऐसे ही है जैसे अस्र की नमाज़ से लेकर सूरज गुरूब होने तक के दर्मियान वक्फ़ा होता है, नीज़ तुम्हारी और यहूदो नसारा की मिसाल उस आदमी की तरह है जिस ने कुछ मजदूर रखे उन से कहा कि कौन शख़्स आधे दिन तक एक

وَالنَّصَارَى كَرَجُلٍ اسْتَعْمَلَ عُمَّالاً، فَقَالَ: مَنْ يَعْمَلُ لِي إِلَى نِصْفِ النَّهَارِ عَلَى قِيرَاطٍ قِيرَاطٍ؟ فَعَمِلَتِ اليَهُودُ عَلَى قِيرَاطٍ قِيرَاطٍ، فَقَالَ: مَنْ يَعْمَلُ لِي مِنْ نِصْفِ النَّهَارِ إِلَى الْعَصْرِ عَلَى قِيرَاطٍ قِيرَاطٍ فَعَمِلَتِ النَّصَارَى عَلَى قِيرَاطٍ قِيرَاطٍ، ثُمَّ أَنْتُمْ تَعْمَلُونَ مِنْ صَلاَةِ العَصْرِ إِلَى مَغَارِبِ الشَّمْسِ عَلَى قِيرَاطَيْنِ قِيرَاطَيْنِ، فَغَضِبَتِ اليَهُودُ وَالنَّصَارَى وَقَالُوا: نَحْنُ أَكْثَرُ عَمَلاً وَأَقَلُّ عَطَاءً، قَالَ: هَلْ ظَلَمْتُكُمْ مِنْ حَقِّكُمْ شَيْئًا؟ قَالُوا: لاَ، قَالَ: فَإِنَّهُ فَضْلِي أُوتِيهِ مَنْ أَشَاءُ.

क़ीरात पर मेरा काम करेगा? तो यहूदी ने एक क़ीरात पर काम किया। फिर उसने कहा आधे दिन से लेकर नमाज़े अस्र तक एक क़ीरात पर कौन मेरा काम करेगा? तो ईसाइयों ने एक-एक कीरात पर काम किया, फिर तुम अस्र की नमाज़ से लेकर गुरूबे शम्स तक दो क़ीरात पर काम करने लगे तो यहूदी और ईसाई नाराज़ हो गए, और कहने लगे : हम काम ज़्यादा करें और उज्रत कम मिले? तो उस ने कहा :क्या मैंने तुम्हारे हक़ में कमी की है? कहने लगे :नहीं, तो उसने कहा :"यह मेरा फ़ज़ल है मैं जिसे चाहूँ दूं।''

बुख़ारी:577. इब्ने हिब्बान:6639.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2872 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الخَلاَّلُ وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّمَا النَّاسُ كَإِبِلٍ مِائَةٍ لاَ يَجِدُ الرَّجُلُ فِيهَا رَاحِلَةً.

2872 - सय्यदना इब्ने उमर (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "लोग उन सौ ऊंटों की तरह हैं जिन में आदमी को एक भी सवारी के काबिल नहीं मिलता।''

बुख़ारी:6498. मुस्लिम:2547. इब्ने माजह:3990.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2873 - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْمَخْزُومِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ، وَقَالَ: لاَ

2873 - सय्यदना इब्ने उमर (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "लोग उन सौ ऊंटों की तरह हैं जिन में तुम्हें एक भी बतौर सवारी नहीं मिलता या यह फ़रमाया

تَجِدُ فِيهَا رَاحِلَةً، أَوْ قَالَ: لاَ تَجِدُ فِيهَا إِلاَّ رَاحِلَةً.

कि तुम्हें उन में सिर्फ़ एक ही सवारी मिले।''

सहीह

2874 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّمَا مَثَلِي وَمَثَلُ أُمَّتِي كَمَثَلِ رَجُلٍ اسْتَوْقَدَ نَارًا، فَجَعَلَتِ الذُّبَابُ وَالفَرَاشُ يَقَعْنَ فِيهَا وَأَنَا آخُذُ بِحُجَزِكُمْ وَأَنْتُمْ تَقَحَّمُونَ فِيهَا.

2874 - . सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मेरी और मेरी उम्मत की मिसाल उस शख़्स की तरह है जिस ने आग जलाई और फिर जानवर और पतिंगे (परवाने) उस में गिरने लगे और मैं तुम्हारी कमरें पकड़ने वाला हूँ लेकिन तुम उसमें गिरते जाते हो।

बुख़ारी:3426. मुस्लिम:2284

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ एक और तरीक़ से भी मर्वी है।

ख़ुलासा

- बात समझाने के लिए मिसाल दी जा सकती है। क़ुरआन व हदीस में इस पर बहुत दलाइल हैं।
- नबी (ﷺ) की मिसाल उस क़ासिद की तरह है जिसे बादशाह खाने की दावत के लिए लोगों के पास भेजता है।
- नबी (ﷺ) की आँखें सोती थी मगर दिल नहीं सोता था।
- नबी (ﷺ)की बिअ्सत के साथ अंबिया की इमारत मुकम्मल हो गई।
- मुश्रिक की मिसाल उस गुलाम जैसी है जो अपनी कमाई किसी ग़ैर को देता है और अपने मालिक को भूल जाता है।
- रोज़े की मिसाल कस्तूरी की थैली जैसी है जिस से खुशबू फूटती है।
- सदक़ा करने के साथ इंसान अपने आप को अज़ाबे जहन्नम से बचा लेता है।
- क़ुरआन पढ़ने वाले मोमिन की मिसाल खुश ज़ायक़ा और खुशबूदार फल की तरह है।
- पांच नमाज़ें गुनाहों से इस तरह साफ़ कर देती हैं जैसे पांच दफा गुस्ल करना मैल से साफ़ कर देता है।
- नबी (ﷺ) ने भरपूर कोशिश की कि लोग आग में न जाएँ।

मज़मून नंबर 43.

أَبْوَابُ فَضَائِلِ الْقُرْآنِ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

रसूलुल्लाह (ﷺ) से मर्वी क़ुरआन के फ़ज़ाइल

तआरुफ़

52 अहादीस और 25 अबवाब का यह उन्वान इन बातों पर मुश्तमिल होगा:

- घरों से शयातीन को कैसे भगाया जा सकता है?
- अल्लाह की हिफाज़त कैसे हासिल होगी? बेहतरीन लोग कौन हैं?
- अल्लाह की हिफ़ाज़त कैसे हासिल होगी?
- बेहतरीन लोग कौन हैं?

1 بَابُ مَا جَاءَ فِي فَضْلِ فَاتِحَةِ الْكِتَابِ

2875 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنِ الْعَلَاءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَرَجَ عَلَى أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَا أُبَيُّ وَهُوَ يُصَلِّي، فَالتَفَتَ أُبَيٌّ وَلَمْ يُجِبْهُ، وَصَلَّى أُبَيٌّ فَخَفَّفَ، ثُمَّ انْصَرَفَ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَعَلَيْكَ السَّلَامُ، مَا

1 - फ़ातिहतुल किताब की फ़ज़ीलत।

2875 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) उबय बिन काब के पास गए, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ उबय!" वह नमाज़ पढ़ रहे थे। उबय ने आप की तरफ़ देखा लेकिन जवाब न दिया, और उबय ने हल्की नमाज़ पढ़ी फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हो कर कहने लगे : " السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ : अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़रमाया, " وَعَلَيْكَ السَّلَامُ، ऐ उबय जब मैंने तुम्हें बुलाया था तो तुम्हें जवाब देने से किस ने रोका? उन्होंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मैं नमाज़ में था आप (ﷺ) ने फ़रमाया, " क्या तुम मेरी तरफ़ अल्लाह की वहिकर्दा क़ुरआन में

مَنَعَكَ يَا أُبَيُّ أَنْ تُجِيبَنِي إِذْ دَعَوْتُكَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي كُنْتُ فِي الصَّلاَةِ، قَالَ: أَفَلَمْ تَجِدْ فِيمَا أُوحِي إِلَيَّ أَنْ {اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ} قَالَ: بَلَى وَلاَ أَعُودُ إِنْ شَاءَ اللَّهُ، قَالَ: تُحِبُّ أَنْ أُعَلِّمَكَ سُورَةً لَمْ يَنْزِلْ فِي التَّوْرَاةِ وَلاَ فِي الإِنْجِيلِ وَلاَ فِي الزَّبُورِ وَلاَ فِي الفُرْقَانِ مِثْلُهَا؟ قَالَ: نَعَمْ يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَيْفَ تَقْرَأُ فِي الصَّلاَةِ؟ قَالَ: فَقَرَأَ أُمَّ القُرْآنِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ مَا أُنْزِلَتْ فِي التَّوْرَاةِ وَلاَ فِي الْإِنْجِيلِ وَلاَ فِي الزَّبُورِ وَلاَ فِي الفُرْقَانِ مِثْلُهَا، وَإِنَّهَا سَبْعٌ مِنَ الْمَثَانِي وَالقُرْآنُ الْعَظِيمُ الَّذِي أُعْطِيتُهُ.

यह आयत नहीं पाते? "तर्जुमा: अल्लाह और उसके रसूल की बात का जवाब दो जब वह तुम्हें उस काम की तरफ़ बुलाये जो तुम्हें ज़िंदा करती है।'' कहने लगे क्यों नहीं अल्लाह ने चाहा तो मैं दोबारा ऐसा नहीं करूंगा, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें ऐसी सूरत सिखाऊँ इस जैसी तौरात, इंजील, ज़बूर और कुरआन में कोई सूरत नाजिल नहीं हुई? कहने लगे जी अल्लाह के रसूल(ﷺ)! तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, " तुम नमाज़ में कैसे पढ़ते हो?'' उन्होंने उम्मुल कुरआन (सूरह फातिहा) पढ़ी, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! तौरात, इंजील, ज़बूर और फुरकान (यानी कुरआन) में इस जैसी कोई और सूरत नाजिल नहीं हुई और यही बार बार पढ़ी जाने वाली सात आयात और कुरआने अजीम है जो मुझे अता किया गया है।''

सहीह:अख़रजहू अहमद :2/357. व दारमी:3376. व अबू याला:6482

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है नीज़ इस बारे में अनस बिन मालिक और अबू सईद बिन मुअला (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

2 بَابُ مَا جَاءَ فِي فَضْلِ سُورَةِ البَقَرَةِ وَآيَةِ الكُرْسِيِّ

2 - सूरह बक़रा और आयतल कुर्सी का बयान।

2876 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْخَلاَّلُ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الحَمِيدِ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ

2876 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक लश्कर रवाना किया, वह काफी तादाद में थे आप(ﷺ) ने उन से कुरआन पढ़वाया (यानी सुना) , आप(ﷺ) ने

عَطَاءٍ، مَوْلَى أَبِي أَحْمَدَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: بَعَثَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْثًا وَهُمْ ذُو عَدَدٍ فَاسْتَقْرَأَهُمْ، فَاسْتَقْرَأَ كُلَّ رَجُلٍ مِنْهُمْ مَا مَعَهُ مِنَ الْقُرْآنِ، فَأَتَى عَلَى رَجُلٍ مِنْ أَحْدَثِهِمْ سِنًّا، فَقَالَ: مَا مَعَكَ يَا فُلَانُ؟ قَالَ: مَعِي كَذَا وَكَذَا وَسُورَةُ الْبَقَرَةِ قَالَ: أَمَعَكَ سُورَةُ الْبَقَرَةِ؟ فَقَالَ: نَعَمْ، قَالَ: فَاذْهَبْ فَأَنْتَ أَمِيرُهُمْ، فَقَالَ رَجُلٌ مِنْ أَشْرَافِهِمْ: وَاللَّهِ يَا رَسُولَ اللهِ مَا مَنَعَنِي أَنْ أَتَعَلَّمَ سُورَةَ الْبَقَرَةِ إِلاَّ خَشْيَةَ أَلاَّ أَقُومَ بِهَا، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: تَعَلَّمُوا الْقُرْآنَ فَاقْرَءُوهُ وَأَقْرِئُوهُ، فَإِنَّ مَثَلَ الْقُرْآنِ لِمَنْ تَعَلَّمَهُ فَقَرَأَهُ وَقَامَ بِهِ كَمَثَلِ جِرَابٍ مَحْشُوٍّ مِسْكًا يَفُوحُ بِرِيحِهِ كُلُّ مَكَانٍ وَمَثَلُ مَنْ تَعَلَّمَهُ فَيَرْقُدُ وَهُوَ فِي جَوْفِهِ كَمَثَلِ جِرَابٍ أُوكِئَ عَلَى مِسْكٍ.

उन में से हर आदमी से कुरआन सुना, किसी को कुरआन नहीं आता था। फिर आप(ﷺ) उन में से सब से कम उम्र आदमी के पास आए और आप(ﷺ) ने फ़रमाया " ऐ फुलां! तुम्हें क्या आता है?'' उस ने अर्ज़ किया, मुझे फुलां फुलां और सूरह बक़रा याद है। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या तुम्हें सूरह बक़रा आती है?'' उस ने अर्ज़ किया :जी हाँ, आप (ﷺ)ने फ़रमाया, "जाओ तुम इनके अमीर हो।'' चुनांचे उनके मुअज्ज़ज़ लोगों में से एक आदमी कहने लगा :ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह की क़सम! मुझे सूरह बक़रा सीखने से सिर्फ़ इस डर ने रोका कि मैं उसके साथ क़यामुल्लैल नहीं कर सकूंगा। तो अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़रमाया, "कुरआन सीखो उसे पढ़ो क्योंकि कुरआन की मिसाल उसे सीखने, पढ़ने और उसके साथ क़याम करने वाले के लिए उस थैली की तरह है जो कस्तूरी से भरी हुई हो, उसकी खुशबू हर जगह फैलती है और उस शख़्स की मिसाल जो इसे सीख कर सो रहे जबकि कुरआन उसके दिल में हो, उस थैली की तरह है जिस में कस्तूरी डाल कर उसे बंद कर दिया गया हो।''

ज़ईफ़ :इब्ने माजह:217. निसाई फ़िल कुब्रा व इब्ने खुज़ैमा:1509.

<u>वज़ाहत:</u> इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन है और इस हदीस को लैस बिन साद ने भी सईद मक़्बुरी से बवास्ता अता मौला अबी अहमद, नबी (ﷺ) से इसी तरह मुर्सल ही रिवायत किया है।

हमें यह हदीस कुतैबा ने लैस बिन साद से उन्होंने सईद मक़्बुरी से बवास्ता अता, मौला अबी अहमद, नबी (ﷺ) से मुर्सल बयान की है और इसमें अबू हुरैरा का ज़िक्र नहीं किया।

नीज़ इस बारे में उबय बिन काब (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

2877 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ العَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ سُهَيْلِ بْنِ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لاَ تَجْعَلُوا بُيُوتَكُمْ مَقَابِرَ، وَإِنَّ البَيْتَ الَّذِي تُقْرَأُ فِيهِ البَقَرَةُ لاَ يَدْخُلُهُ الشَّيْطَانُ.

2877 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम अपने घरों को कब्रिस्तान मत बनाओ और जिस घर में सूरह बक़रा पढ़ी जाए उस घर में शैतान दाख़िल नहीं होता।''

सहीह मुस्लिम:780. अहमद:2/284. इब्ने हिब्बान:783

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2878 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا حُسَيْنٌ الجُعْفِيُّ، عَنْ زَائِدَةَ، عَنْ حَكِيمِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لِكُلِّ شَيْءٍ سَنَامٌ، وَإِنَّ سَنَامَ القُرْآنِ سُورَةُ البَقَرَةِ وَفِيهَا آيَةٌ هِيَ سَيِّدَةُ آيِ القُرْآنِ، هِيَ آيَةُ الكُرْسِيِّ.

2878 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "हर चीज़ की बलंदी होती है और कुरआन की बलंदी (कोहान) सूरह बक़रा है, इसमें एक आयत है जो कुरआन की तमाम आयात का सरदार है वह आयतल कुर्सी है।''

ज़ईफ़: अब्दुर्रज्जाक़:6019. हुमैदी:994. हाकिम:1/560.अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा:1348.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। हम इसे हकीम बिन जुबैर की सनद से ही जानते हैं और शोबा ने इस पर जरह करते हुए इसे जईफ़ कहा है।

2879 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ الْمُغِيرَةِ أَبُو سَلَمَةَ الْمَخْزُومِيُّ الْمَدِينِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي فُدَيْكٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ الْمُلَيْكِيِّ، عَنْ زُرَارَةَ بْنِ مُصْعَبٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ قَرَأَ حم الْمُؤْمِنَ

2879 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, " जिस ने सूरह حم الْمُؤْمِنَ शुरू से लेकर { إِلَيْهِ الْمَصِيرُ} (गाफ़िर: 1-3) और आयतल कुर्सी सुबह के वक़्त पढ़ी, तो शाम तक उसके साथ उसकी हिफ़ाज़त की जाती है और जिसने इन आयात को शाम के वक़्त पढ़ा तो सुबह तक इनकी वजह से आदमी हिफाज़त में रहता है।''

إِلَى {إِلَيْهِ الْمَصِيرُ} وَآيَةَ الْكُرْسِيِّ حِينَ يُصْبِحُ حُفِظَ بِهِمَا حَتَّى يُمْسِيَ، وَمَنْ قَرَأَهُمَا حِينَ يُمْسِي حُفِظَ بِهِمَا حَتَّى يُصْبِحَ.

ज़ईफ़: दारमी:3389. बग़वी:1198. ज़ईफ़ तिर्मिज़ी लिल अल्बानी:540

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। बअ़ज़ उलमा ने अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र बिन अबी मुलैका पर उसके हाफ़िज़े की वजह से कलाम की है। नीज़ ज़ुरारा बिन मुसअब, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (رضي الله عنه) के पोते और मुसअब मदनी के दादा हैं।

3 بَابٌ حديث أبي أيوب في الغلول:

3 - अबू अय्यूब (رضي الله عنه) की जिन्न के बारे में रिवायत।

2880 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ ابْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ أَخِيهِ عِيسَى، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ أَبِي أَيُّوبَ الأَنْصَارِيِّ، أَنَّهُ كَانَتْ لَهُ سَهْوَةٌ فِيهَا تَمْرٌ، فَكَانَتْ تَجِيءُ الغُولُ فَتَأْخُذُ مِنْهُ قَالَ: فَشَكَا ذَلِكَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: فَاذْهَبْ فَإِذَا رَأَيْتَهَا فَقُلْ: بِسْمِ اللهِ أَجِيبِي رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: فَأَخَذَهَا فَحَلَفَتْ أَنْ لاَ تَعُودَ فَأَرْسَلَهَا، فَجَاءَ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: مَا فَعَلَ أَسِيرُكَ؟ قَالَ: حَلَفَتْ أَنْ لاَ تَعُودَ: فَقَالَ: كَذَبَتْ، وَهِيَ مُعَاوِدَةٌ لِلْكَذِبِ، قَالَ: فَأَخَذَهَا مَرَّةً أُخْرَى فَحَلَفَتْ أَنْ لاَ تَعُودَ فَأَرْسَلَهَا،

2880 - सय्यदना अबू अय्यूब अंसारी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि उनका चबूतरा[1] था जिस में खुजूरें होती थीं। जिन्न[2] आकर उस से खुजूरें ले लेता, चुनांचे उन्होंने नबी (ﷺ) से यह शिकायत की, तो आप ने फ़रमाया, "जाओ। जब उसे देखो तो कहना रसूलुल्लाह (ﷺ)की बात सुनो।'' फिर उन्होंने उसे पकड़ लिया तो उस ने क़सम उठाई कि वह दोबारा नहीं आयेगा, उन्होंने छोड़ दिया। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप(ﷺ) ने पूछा : "तुम्हारे क़ैदी का क्या बना?'' कहने लगे :उस ने दोबारा न आने की क़सम उठाई है। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "उस ने झूठ बोला है वह दोबारा झूठ बोलेगा।'' रावी कहते हैं, उन्होंने दूसरी मर्तबा उसे पकड़ा तो उस ने दोबारा न आने की क़सम उठाई, उन्होंने उसे छोड़ दिया फिर नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया "तुम्हारे कैदी का क्या बना है?'' कहने लगे :उस ने फिर न आने की

فَجَاءَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: مَا فَعَلَ أَسِيرُكَ؟ قَالَ: حَلَفَتْ أَنْ لاَ تَعُودَ. فَقَالَ: كَذَبَتْ وَهِيَ مُعَاوِدَةٌ لِلْكَذِبِ، فَأَخَذَهَا. فَقَالَ: مَا أَنَا بِتَارِكِكِ حَتَّى أَذْهَبَ بِكِ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَقَالَتْ: إِنِّي ذَاكِرَةٌ لَكَ شَيْئًا آيَةَ الكُرْسِيِّ اقْرَأْهَا فِي بَيْتِكَ فَلاَ يَقْرَبُكَ شَيْطَانٌ وَلاَ غَيْرُهُ، قَالَ: فَجَاءَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: مَا فَعَلَ أَسِيرُكَ؟ قَالَ: فَأَخْبَرَهُ بِمَا قَالَتْ، قَالَ: صَدَقَتْ وَهِيَ كَذُوبٌ.

क़सम उठाई है। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "उसने झूठ बोला है वह दोबारा भी झूठ बोलेगा।'' फिर उन्होंने उस जिन्न को पकड़ लिया और कहने लगे :मैं तुम्हें उस वक़्त तक नहीं छोड़ने वाला जब तक मैं तुम्हें नबी (ﷺ) के पास न ले जाऊं। तो उसने कहा :मैं तुम्हें एक चीज़ बताता हूँ, आयतल कुर्सी अपने घर में पढ़ा करो, शैतान या कोई और तुम्हारे क़रीब नहीं आयेगा, फिर वह नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, " तुम्हारे कैदी का क्या बना? तो उन्होंने आप को उस जिन्न की बात सुनाई, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "है तो वह झूठा लेकिन बात सच्ची कही है। ''

सहीह: अहमद:5/423. तबरानी फ़िल कबीर:4011. हाकिम:3/459. सहीहुत्तर्गीब:1464.

तौज़ीह : سَهْوَةٌ :इसके मुख़्तलिफ़ मआनी हैं, (1) घरों के दर्मियान बना हुआ चबूतरा। (2) घर के आगे का पर्दा या दीवार (3) घर की चार दीवारी अहाता। (4) सामान रखने वाली अल्मारी (या भड़ूला वग़ैरह) । (अल-कामूसुल वहीद:817) यहाँ पर कोई ऐसी जगह मुराद है जहां पर खुजूरें रखी होती थीं। शायद वह ख़ज़ाना भड़ूला ही हो और वह किसी चबूतरे पर रखा हो। (अल्लाह बेहतर जानता है।

الغُولُ: इसकी जमा غيلان है। अरब लोगों का ख़याल था कि " गैलान'' शयातीन (जिन्नात) की एक क़िस्म है जो बयाबानों में लोगों के सामने मुख़्तलिफ़ शक्लों में ज़ाहिर होकर उन्हें हलाक कर देते हैं। या रास्ते से भटका देते हैं। (अल-मोजमुल औसत: प. 7979)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है।

4 بَابُ مَا جَاءَ فِي آخِرِ سُورَةِ البَقَرَةِ

4- सूरह बक़रा की आख़िरी आयात का बयान

2881 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَرِيرُ بْنُ عَبْدِ الحَمِيدِ، عَنْ مَنْصُورِ بْنِ الْمُعْتَمِرِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ

2881 - सय्यदना अबू मसऊद अंसारी(رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस ने रात को सूरह बक़रा की आख़िरी दो आयात पढ़ लीं वह उसके लिए

يَزِيدَ، عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الأَنْصَارِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ قَرَأَ الآيَتَيْنِ مِنْ آخِرِ سُورَةِ البَقَرَةِ فِي لَيْلَةٍ كَفَتَاهُ.

काफी होंगी।''

सहीह बुख़ारी: 4008. मुस्लिम:807. अबू दाऊद: 1397. इब्ने माजह: 1369.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2882 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ أَشْعَثَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الجَرْمِيِّ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَبِي الأَشْعَثِ الجَرْمِيِّ، عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ اللَّهَ كَتَبَ كِتَابًا قَبْلَ أَنْ يَخْلُقَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضَ بِأَلْفَيْ عَامٍ، أَنْزَلَ مِنْهُ آيَتَيْنِ خَتَمَ بِهِمَا سُورَةَ الْبَقَرَةِ، وَلاَ يُقْرَآنِ فِي دَارٍ ثَلاَثَ لَيَالٍ فَيَقْرَبُهَا شَيْطَانٌ.

2882 - सय्यदना नौमान बिन बशीर अंसारी (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने आसमानों और ज़मीन को बनाने से दो हज़ार साल पहले एक किताब लिखी थी उस से दो आयात नाजिल करके उनके साथ सूरह बक़रा का इख़्तिताम किया है। जिस घर में तीन रातें इन आयात को पढ़ लिया जाए शैतान उसके क़रीब नहीं आयेगा।''

सहीह: अहमद:4/ 274. दारमी:3390. इब्ने माजह:782. हाकिम: 1/ 562. सहीहुत्तर्गीब: 1467.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है।

5 بَابُ مَا جَاءَ فِي سُورَةِ آلِ عِمْرَانَ

5 - सूरह आले इमरान का बयान।

2883 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ أَبُو عَبْدِ الْمَلِكِ العَطَّارِ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ شُعَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنِ الوَلِيدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّهُ حَدَّثَهُمْ عَنْ جُبَيْرِ بْنِ نُفَيْرٍ، عَنْ

2883 - सय्यदना नव्वास बिन समआन (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "क़यामत के दिन कुरआन और दुनिया में इस पर अमल करने वाले लोग आयेंगे, सूरह बक़रा और आले इमरान इस कुरआन के आगे होंगी।'' नव्वास कहते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इन दोनों (सूरतों) की तीन मिसालें बयान कीं जिन्हें मैं अभी तक नहीं

نَوَّاسِ بْنِ سَمْعَانَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يَأْتِي الْقُرْآنُ وَأَهْلُهُ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ بِهِ فِي الدُّنْيَا تَقْدُمُهُ سُورَةُ الْبَقَرَةِ وَآلُ عِمْرَانَ قَالَ نَوَّاسٌ: وَضَرَبَ لَهُمَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلَاثَةَ أَمْثَالٍ مَا نَسِيتُهُنَّ بَعْدُ قَالَ: تَأْتِيَانِ كَأَنَّهُمَا غَيَابَتَانِ وَبَيْنَهُمَا شَرْقٌ، أَوْ كَأَنَّهُمَا غَمَامَتَانِ سَوْدَاوَانِ، أَوْ كَأَنَّهُمَا ظُلَّةٌ مِنْ طَيْرٍ صَوَافَّ تُجَادِلَانِ عَنْ صَاحِبِهِمَا.

भूला, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह दोनों दो छतरियों की मानिंद आयेगी उन दोनों के दर्मियान खाली जगह में रोशनी होगी, या दो सियाह बालों की मानिन्द या सफ़ बांधे हुए परिंदों के साइबान (झंडा या गोल) की मानिन्द, अपने साहब (पढ़ने और अमल करने वाले) की तरफ़ से झगड़ा करेंगी।"

सहीह मुस्लिम:805.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है। और अहले इल्म के नज़दीक इस हदीस का मतलब यह है कि उसकी किरअत का सवाब आयेगा बअ़ज़ मुफ़स्सिरीन ने भी इस हदीस की ऐसे ही तफ़सीर की है और इसके मुशाबेह दीगर अहादीस में भी कुरआन की किरअत के सवाब का आना मुराद है। नव्वास बिन समआन (رضي الله عنه) की नबी (ﷺ) से मर्वी हदीस में भी इस तफ़सीर की दलील है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "और उसके अहल जो दुनिया में उस पर अमल करते थे।" इस हदीस में दलील है कि अमल का सवाब आयेगा।

इस बारे में बुरैदा और अबू उमामा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

2884 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ،، فِي تَفْسِيرِ حَدِيثِ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: مَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ سَمَاءٍ وَلَا أَرْضٍ أَعْظَمَ مِنْ آيَةِ الْكُرْسِيِّ، قَالَ سُفْيَانُ: لِأَنَّ آيَةَ الْكُرْسِيِّ هُوَ كَلَامُ اللهِ، وَكَلَامُ اللهِ أَعْظَمُ مِنْ خَلْقِ اللهِ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ.

2884 - अबू ईसा कहते हैं कि मुझे मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी ने हुमैदी से ख़बर दी कि सुफ़ियान बिन उयय्ना, सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद की हदीस कि अल्लाह तआला ने ज़मीन व आसमान में यह आयतल कुर्सी से बड़ी कोई चीज़ नहीं बनाई, की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि आयतल कुर्सी अल्लाह का कलाम है और अल्लाह का कलाम ज़मीनों आसमान की तख़्लीक़ से बड़ा है।

सहीह: मुहक़्क़िक़ ने इस पर तख़रीज ज़िक्र नहीं की।

6 - सूरह कहफ़ की फ़ज़ीलत।

6 بَابُ مَا جَاءَ فِي فَضْلِ سُورَةِ الكَهْفِ

2885 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ يَقُولُ: بَيْنَمَا رَجُلٌ يَقْرَأُ سُورَةَ الكَهْفِ إِذْ رَأَى دَابَّتَهُ تَرْكُضُ، فَنَظَرَ فَإِذَا مِثْلُ الغَمَامَةِ أَوِ السَّحَابَةِ، فَأَتَى رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَذَكَرَ ذَلِكَ لَهُ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: تِلْكَ السَّكِينَةُ نَزَلَتْ مَعَ القُرْآنِ، أَوْ نَزَلَتْ عَلَى القُرْآنِ.

2885 - सय्यदना बराअ (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि एक आदमी सूरह कहफ़ पढ़ रहा था कि अचानक उस ने अपने जानवर को उछलते देखा, फिर बादल की तरह कोई चीज़ देखी, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आकर आप (ﷺ)से इस का ज़िक्र किया तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, " यह सकीनत थी जो कुरआन के साथ या कुरआन (की किरअत) पर नाजिल हुई थी।''

सहीह: बुख़ारी:3614. मुस्लिम:795.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और इस बारे में उसैद बिन हुज़ैर (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

2886 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الجَعْدِ، عَنْ مَعْدَانَ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ قَرَأَ ثَلاَثَ آيَاتٍ مِنْ أَوَّلِ الكَهْفِ عُصِمَ مِنْ فِتْنَةِ الدَّجَّالِ.

2886 - सय्यदना अबू दर्दा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस शख़्स ने सूरह कहफ़ की इब्तिदाई तीन आयतें पढ़ लीं उसे दज्जाल के फित्ने से बचा लिया गया।''

अल्बानी के नज़दीक यह हदीस इस लफ्ज़ के साथ शाज़ है। ज़ईफ़:1336. मुस्लिम:809. अबू दाऊद:4323.

वज़ाहत: मुहम्मद बिन बश्शार कहते हैं, हमें मुआज़ बिन हिशाम ने भी अपने बाप के ज़रिए क़तादा से इस सनद के साथ ऐसी ही हदीस बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

7 - सूरह यासीन की फ़ज़ीलत।

7 بَابُ مَا جَاءَ فِي فَضْلِ يس

2887 - सय्यदना अनस (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "हर चीज़ का दिल होता है और कुरआन का दिल यासीन है, जिसने सूरह यासीन पढ़ी अल्लाह तआला उसके लिए उसे पढ़ने की वजह से दस मर्तबा कुरआन पढ़ने का सवाब लिख देंगे।''

मौज़ू: दारमी:3419. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा:169.

2887 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، وَسُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالاَ: حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الرُّؤَاسِيُّ، عَنِ الحَسَنِ بْنِ صَالِحٍ، عَنْ هَارُونَ أَبِي مُحَمَّدٍ، عَنْ مُقَاتِلِ بْنِ حَيَّانَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ لِكُلِّ شَيْءٍ قَلْبًا، وَقَلْبُ القُرْآنِ يس، وَمَنْ قَرَأَ يس كَتَبَ اللَّهُ لَهُ بِقِرَاءَتِهَا قِرَاءَةَ القُرْآنِ عَشْرَ مَرَّاتٍ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे हुमैद बिन अब्दुर्रहमान की सनद से ही जानते हैं, और बस्रा में लोग क़तादा से सिर्फ़ इसी सनद से ही जानते हैं। नीज़ हारून अबू मुहम्मद मज्हूल रावी है। हमें अबू मूसा मुहम्मद बिन मुसन्ना ने वह कहते हैं हमें अहमद बिन सईद दारमी ने बवास्ता कुतैबा, हुमैद बिन अब्दुर्रहमान से यह हदीस बयान की है। इस बारे में अबू बक्र सिद्दीक़ (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है लेकिन अबू बक्र (ﷺ) की हदीस भी सनद के लिहाज़ से सहीह नहीं है, उसकी सनद भी ज़ईफ़ है। नीज़ इस बारे में अबू हुरैरा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

8 - सूरह हा'मीम दुखान की फ़ज़ीलत।

8 بَابُ مَا جَاءَ فِي فَضْلِ حم الدُّخَانِ

2888 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिसने रात को सूरह हा मीम दुखान पढ़ी वह सुबह करेगा तो सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके लिए बख्शिश की दुआ करते होंगे।''

मौज़ू: मौज़ूआत:1/248. अल-कामिल:5/1720. ज़ईफुत्तर्गीब:448.

2888 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ حُبَابٍ، عَنْ عُمَرَ بْنِ أَبِي خَثْعَمٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ قَرَأَ حم الدُّخَانَ فِي لَيْلَةٍ أَصْبَحَ يَسْتَغْفِرُ لَهُ سَبْعُونَ أَلْفَ مَلَكٍ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। हम इसे इसी सनद से ही जानते हैं और इमरान बिन अबी खस्अम ज़ईफ़ है। मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी कहते हैं, यह मुन्करूल हदीस है।

2889 - حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ حُبَابٍ، عَنْ هِشَامٍ أَبِي الْمِقْدَامِ، عَنِ الحَسَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَرَأَ حم الدُّخَانَ فِي لَيْلَةِ الجُمُعَةِ غُفِرَ لَهُ.

2889 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स जुमा की रात में सूरह हा मीम दुखान पढ़े उसे बख़्श दिया जाएगा।''

ज़ईफ़: अबू याला: 6224. अमलुल यौम वल्लैला:679. बैहक़ी:ज़ईफुत्तर्गीब:448.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। हम इसे सिर्फ़ इसी सनद से ही जानते हैं। नीज़ हिशाम अबू मिक्दाम ज़ईफ़ है और हसन ने भी अबू हुरैरा (ﷺ) से सिमा(सुनना) नहीं किया, अय्यूब, यूनुस बिन उबैद और अली बिन ज़ैद भी ऐसे ही कहते हैं।

9 بَابُ مَا جَاءَ فِي فَضْلِ سُورَةِ الْمُلْكِ

9 - सूरह मुल्क की फ़ज़ीलत।

2890 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ أَبِي الشَّوَارِبِ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ عَمْرِو بْنِ مَالِكٍ النُّكْرِيُّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي الجَوْزَاءِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: ضَرَبَ بَعْضُ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خِبَاءَهُ عَلَى قَبْرٍ وَهُوَ لاَ يَحْسِبُ أَنَّهُ قَبْرٌ، فَإِذَا فِيهِ إِنْسَانٌ يَقْرَأُ سُورَةَ تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ حَتَّى خَتَمَهَا، فَأَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي ضَرَبْتُ خِبَائِي عَلَى قَبْرٍ وَأَنَا لاَ أَحْسِبُ أَنَّهُ قَبْرٌ، فَإِذَا فِيهِ إِنْسَانٌ يَقْرَأُ سُورَةَ تَبَارَكَ الْمُلْكِ حَتَّى خَتَمَهَا. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ

2890 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (ﷺ) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) के किसी सहाबी ने क़ब्र पर अपना खेमा लगाया, उसे यह गुमान नहीं था कि यह क़ब्र है, अचानक पता चला कि वह एक इंसान की क़ब्र है वह (क़ब्र वाला) सूरह मुल्क पढ़ने लगा यहाँ तक कि उसे मुकम्मल किया, चुनांचे वह (ख़ेमा लगाने वाला) नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ करने लगा : ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! मैंने अपना ख़ेमा लगाया और मुझे मालूम नहीं था कि यह क़ब्र है इसमें एक इंसान सूरह मुल्क आखिर तक पढ़ रहा था तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह सूरह (अज़ाब को) रोकने वाली है, यह निजात दिलाने वाली है, जो क़ब्र के अज़ाब से निजात दिलायेगी।''

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: هِيَ الْمَانِعَةُ، هِيَ الْمُنْجِيَةُ، تُنْجِيهِ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ.

तबरानी फ़िल कबीर:12801. हिल्या:3/18. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1140. (هي المانعة) वाले अल्फ़ाज़ सहीह हैं।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है। और इस बारे में अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

2891 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ عَبَّاسٍ الْجُشَمِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ سُورَةً مِنَ الْقُرْآنِ ثَلاَثُونَ آيَةً شَفَعَتْ لِرَجُلٍ حَتَّى غُفِرَ لَهُ، وَهِيَ سُورَةُ تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ.

2891 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "कुरआन में तीस आयात की एक सूरत है जो आदमी के लिए सिफ़ारिश करेगी यहाँ तक कि उसे बख़्श दिया जाएगा और वह सूरत تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ **है।''**

हसन: अहमद:2/299. इब्ने हिब्बान:787. हाकिम:1/566. अबू दाऊद:1400. इब्ने माजह:3786. सहीहुत्तर्ग़ीब:1447.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन है।

2892 - حَدَّثَنَا هُرَيْمُ بْنُ مِسْعَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْفُضَيْلُ بْنُ عِيَاضٍ، عَنْ لَيْثٍ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ لاَ يَنَامُ حَتَّى يَقْرَأَ الْم تَنْزِيلُ، وَتَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ.

2892 - सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) उस वक़्त तक नहीं सोते थे जब तक الْم تَنْزِيلُ **(सूरह सज्दा) और** تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ **(सूरह मुल्क न) पढ़ लेते।**

सहीह: इब्ने अबी शैबा:10/424. अहमद:3/340. दारमी:3410. बुख़ारी फ़िल अदाबिल मुफ़रद:1207. अस-सिलसिला अस-सहीहा:585

वज़ाहत: इस हदीस को कई रावियों ने लैस बिन अबी सुलैम से इसी तरह रिवायत किया है, और मुग़ीरा बिन मुस्लिम ने भी अबू ज़ुबैर से बवास्ता जाबिर (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) से ऐसे ही रिवायत किया है।

ज़ुहैर कहते हैं मैंने अबू ज़ुबैर से पूछा :क्या आप ने जाबिर (رضي الله عنه) को यह हदीस ज़िक्र करते हुए सुना है? तो अबू ज़ुबैर ने कहा :मुझे सफ़वान या अबू सफ़वान ने बयान किया है गोया ज़ुहैर ने इस हदीस का अबू ज़ुबैर के वास्ते के साथ जाबिर (رضي الله عنه) से मर्वी होने का इन्कार किया।

अबू ईसा कहते हैं, हमें हन्नाद ने वह कहते हैं, हमें अबू अह्वस ने लैस से बवास्ता अबू ज़ुबैर सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) से नबी (ﷺ) की ऐसी ही हदीस बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी कहते हैं, हुरैम बिन मिस्अर ने फुज़ैल से बवास्ता लैस बयान किया है कि ताऊस फ़रमाते हैं, यह दोनों सूरतें नेकियों के एतबार से कुरआन की हर सूरत पर सत्तर दर्जे फ़ज़ीलत रखती हैं। अल्बानी ने कहा है। ज़ईफ़ है और मक़्तूअ भी।

10 بَابُ مَا جَاءَ فِي إِذَا زُلْزِلَتْ

10 - सूरह ज़िल्ज़ाल का बयान।

2893 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُوسَى الحَرَشِيُّ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ سَلْمِ بْنِ صَالِحٍ العِجْلِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا ثَابِتٌ البُنَانِيُّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ قَرَأَ إِذَا زُلْزِلَتْ عُدِلَتْ لَهُ بِنِصْفِ القُرْآنِ، وَمَنْ قَرَأَ قُلْ يَا أَيُّهَا الكَافِرُونَ عُدِلَتْ لَهُ بِرُبُعِ القُرْآنِ، وَمَنْ قَرَأَ قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ عُدِلَتْ لَهُ بِثُلُثِ القُرْآنِ.

2893 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस शख़्स ने सूरह إِذَا زُلْزِلَتْ पढ़ ली यह उसके लिए आधे कुरआन के बराबर है। जिस ने قُلْ يَا أَيُّهَا الكَافِرُونَ पढ़ी, यह उसके लिए एक चौथाई कुरआन के बराबर है और जिस ने قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ पढ़ी यह उसके लिए एक तिहाई कुरआन के बराबर है।"

सहीह(دون فضل زلزلت) : उकैली:1/243. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा: 1342.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। हम इसे इसी शैख़ हसन बिन मुस्लिम से ही जानते हैं नीज़ इस बारे में इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

2894 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا يَمَانُ بْنُ الْمُغِيرَةِ العَنَزِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَطَاءٌ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا زُلْزِلَتْ تَعْدِلُ نِصْفَ القُرْآنِ، وَقُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ تَعْدِلُ ثُلُثَ القُرْآنِ، وَقُلْ يَا أَيُّهَا الكَافِرُونَ تَعْدِلُ رُبُعَ القُرْآنِ.

2894 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "إِذَا زُلْزِلَتْ (सूरह ज़िल्ज़ाल) आधे कुरआन के बराबर है قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ एक तिहाई कुरआन के बराबर है और قُلْ يَا أَيُّهَا الكَافِرُونَ एक चौथाई कुरआन के बराबर है।"

सहीह(دون فضل زلزلت) : हाकिम: 1/566. अल-कामिल:7/2638. ज़ईफ़ा: 1342

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। हम इसे यमान बिन मुग़ीरा की सनद से ही जानते हैं।

2895 - حَدَّثَنَا عُقْبَةُ بْنُ مُكْرَمٍ العَمِّيُّ البَصْرِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي فُدَيْكٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا سَلَمَةُ بْنُ وَرْدَانَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِرَجُلٍ مِنْ أَصْحَابِهِ: هَلْ تَزَوَّجْتَ يَا فُلاَنُ؟ قَالَ: لاَ وَاللَّهِ يَا رَسُولَ اللهِ، وَلاَ عِنْدِي مَا أَتَزَوَّجُ بِهِ، قَالَ: أَلَيْسَ مَعَكَ قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ؟ قَالَ: بَلَى، قَالَ: ثُلُثُ القُرْآنِ، قَالَ: أَلَيْسَ مَعَكَ إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللهِ وَالفَتْحُ؟ قَالَ: بَلَى، قَالَ: رُبُعُ القُرْآنِ قَالَ: أَلَيْسَ مَعَكَ قُلْ يَا أَيُّهَا الكَافِرُونَ؟ قَالَ: بَلَى، قَالَ: رُبُعُ القُرْآنِ قَالَ: أَلَيْسَ مَعَكَ إِذَا زُلْزِلَتِ الأَرْضُ؟ قَالَ: بَلَى، قَالَ: رُبُعُ القُرْآنِ قَالَ: تَزَوَّجْ تَزَوَّجْ.

2895 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने सहाबा में से एक आदमी से फ़रमाया, "ऐ फुलां क्या तुमने शादी कर ली है?" उस ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! नहीं, और अल्लाह की क़सम न ही मेरे पास कुछ है जिस के साथ मैं शादी कर सकूं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या तुम्हारे पास قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ नहीं है?" उसने कहा :क्यों नहीं, आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "यह एक तिहाई कुरआन है। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या तुम्हारे पास إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللهِ وَالفَتْحُ नहीं है? उस ने अर्ज़ किया, क्यों नहीं, आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "यह कुरआन का चौथा हिस्सा है।" आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या तुम्हारे पास قُلْ يَا أَيُّهَا الكَافِرُونَ नहीं है? उस ने अर्ज़ किया जी बिलकुल है, आप (ﷺ)ने फ़रमाया, "यह भी कुरआन का चौथा हिस्सा है" आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या तुम्हारे पास إِذَا زُلْزِلَتِ الأَرْضُ नहीं है?" उस ने अर्ज़ किया, ज़रूर। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "यह भी कुरआन का चौथाई हिस्सा है" फिर फ़रमाया, शादी कर लो, शादी कर लो।"

ज़ईफ़:अहमद:3/ 146. बज़्ज़ार:2308. इब्ने हिब्बान:1/336. ज़ईफ़ुत्तर्ग़ीब:890.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन है।

11 بَابُ مَا جَاءَ فِي سُورَةِ الإِخْلَاصِ

11 - सूरह इख़्लास की फ़ज़ीलत।

2896 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالاَ:

2896 - सय्यदना अबू अय्यूब (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया,

حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَائِدَةُ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ هِلاَلِ بْنِ يَسَافٍ، عَنْ رَبِيعِ بْنِ خُثَيْمٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنِ امْرَأَةٍ وَهِيَ امْرَأَةُ أَبِي أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي أَيُّوبَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَيَعْجِزُ أَحَدُكُمْ أَنْ يَقْرَأَ فِي لَيْلَةٍ ثُلُثَ الْقُرْآنِ؟ مَنْ قَرَأَ: اللَّهُ الوَاحِدُ الصَّمَدُ فَقَدْ قَرَأَ ثُلُثَ الْقُرْآنِ.

"क्या तुममें से कोई शख़्स एक रात में एक तिहाई कुरआन पढ़ने से भी आजिज़ है? जिस ने اللَّهُ الوَاحِدُ الصَّمَدُ **(यानी सूरह इख़्लास) पढ़ी उस ने एक तिहाई कुरआन पढ़ लिया।''**

सहीह: लिगैरिही:अहमद:5/418. अब्द बिन हुमैद:226. तबरानी फ़िल कबीर:4026.निसाई:996. जईफुत्तर्गीब:1481.

वज़ाहत: इस बारे में अबू दर्दा, अबू सईद, क़तादा बिन नौमान, अबू हुरैरा, अनस, इब्ने उमर और अबू मसऊद (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन है। और हम किसी रावी को नहीं जानते। जिस ने ज़ायदा से अच्छी रिवायत की हो उनकी रिवायत पर इस्राईल और फुजैल बिन इयाज़ ने मुताबअत की है।

नीज़ शोबा और दीगर सिक़ह् मुहद्दिसीन ने भी इस हदीस को मंसूर से रिवायत किया है लेकिन इसमें इज़्तिराब है।

2897 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنِ ابْنِ حُنَيْنٍ، مَوْلًى لِآلِ زَيْدِ بْنِ الخَطَّابِ أَوْ مَوْلَى زَيْدِ بْنِ الخَطَّابِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: أَقْبَلْتُ مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَمِعَ رَجُلاً يَقْرَأُ: قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ اللَّهُ الصَّمَدُ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَجَبَتْ. قُلْتُ: مَا وَجَبَتْ؟ قَالَ: الجَنَّةُ.

2897 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि मैं नबी (ﷺ) के साथ आ रहा था कि आप(ﷺ) ने एक आदमी को सुना जो قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ اللَّهُ الصَّمَد **पढ़ रहा था तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "वाजिब हो गई।'' मैंने अर्ज़ किया, क्या वाजिब हो गई? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "जन्नत।''**

सहीह: मालिक:257. अहमद:2/302. हाकिम:1/566.निसाई:994. जईफुत्तर्गीब:1478.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। हम इसे मालिक बिन अनस के तरीक़ से ही जानते हैं और इब्ने हुनैन, उबैद बिन हुनैन हैं।

2898 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَرْزُوقٍ الْبَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ مَيْمُونٍ أَبُو سَهْلٍ، عَنْ ثَابِتٍ الْبُنَانِيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ قَرَأَ كُلَّ يَوْمٍ مِائَتَيْ مَرَّةٍ قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ مُحِيَ عَنْهُ ذُنُوبُ خَمْسِينَ سَنَةً إِلاَّ أَنْ يَكُونَ عَلَيْهِ دَيْنٌ. وَبِهَذَا الإِسْنَادِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ أَرَادَ أَنْ يَنَامَ عَلَى فِرَاشِهِ فَنَامَ عَلَى يَمِينِهِ ثُمَّ قَرَأَ قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ مِائَةَ مَرَّةٍ فَإِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ يَقُولُ لَهُ الرَّبُّ: يَا عَبْدِيَ ادْخُلْ عَلَى يَمِينِكَ الْجَنَّةَ.

2898 - सय्यदना अनस बिन मालिक (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स रोजाना दो सौ मर्तबा قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ पढ़े उसके पच्चास साल के गुनाह मिटा दिए जाते हैं, सिवाए क़र्ज़ के जो उस पर हो। और इसी सनद से मर्वी है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स अपने बिस्तर पर सोने का इरादा करे, फिर अपनी दायें करवट पर लेट कर सौ मर्तबा قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ पढ़े तो जब क़यामत का दिन होगा तो रब तबारक व तआला उस से फ़रमाएगा :ऐ मेरे बन्दे! अपनी दायें जानिब से जन्नत में दाख़िल हो जा।"

ज़ईफ़: अबू याला:3365. इब्ने हिब्बान:1/271. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:300. जईफुत्तर्गीब:348.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, साबित के ज़रिए अनस (ﷺ) से मर्वी यह हदीस ग़रीब है नीज़ यह हदीस एक और सनद से भी साबित से इस तरह मर्वी है।

2899 - حَدَّثَنَا الْعَبَّاسُ بْنُ مُحَمَّدٍ الدُّورِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُهَيْلُ بْنُ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ تَعْدِلُ ثُلُثَ الْقُرْآنِ.

2899 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ": قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ" एक तिहाई कुरआन के बराबर है।"

सहीह: इब्ने माजह:3787. तहावी फ़ी शरह मुश्किलुल आसार :1221.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2900 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, जमा हो जाओ मैं तुम पर एक तिहाई कुरआन पढ़ूंगा।'' चुनांचे जो लोग जमा हो सकते थे वह जमा हुए फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) (घर से) निकले तो आप ने قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ '' : पढ़ी, फिर अन्दर चले गए, हम ने एक दूसरे से कहा : रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तो फ़रमाया था: "कि मैं एक तिहाई कुरआन पढ़ूंगा।'' मेरा ख़याल तो यह है कि यह (दाख़िल होना) किसी ख़बर की वजह से है जो आसमान से आई है। फिर नबी (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाये तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैंने कहा था कि मैं तुम्हारे ऊपर एक तिहाई कुरआन पढ़ूंगा, आगाह हो जाओ! बेशक यह सूरह एक तिहाई कुरआन के बराबर है।''

2900 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ كَيْسَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو حَازِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: احْشُدُوا فَإِنِّي سَأَقْرَأُ عَلَيْكُمْ ثُلُثَ الْقُرْآنِ. قَالَ: فَحَشَدَ مَنْ حَشَدَ، ثُمَّ خَرَجَ نَبِيُّ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَرَأَ قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ثُمَّ دَخَلَ، فَقَالَ بَعْضُنَا لِبَعْضٍ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: فَإِنِّي سَأَقْرَأُ عَلَيْكُمْ ثُلُثَ الْقُرْآنِ إِنِّي لأَرَى هَذَا خَبَرًا جَاءَهُ مِنَ السَّمَاءِ. ثُمَّ خَرَجَ نَبِيُّ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِنِّي قُلْتُ سَأَقْرَأُ عَلَيْكُمْ ثُلُثَ الْقُرْآنِ، أَلاَ وَإِنَّهَا تَعْدِلُ بِثُلُثِ الْقُرْآنِ.

मुस्लिम:812. अहमद:2/429.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। और अबू हाज़िम अशजई का नाम सुलैमान था।

2901 - सय्यदना अनस बिन मालिक (ﷺ) बयान करते हैं कि अंसार का एक आदमी मस्जिदे कुबा में नमाज़ पढ़ाता था, वह जिस सूरत से भी नमाज़ में किरअत शुरू करता قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ : से शुरू करता फिर उसके साथ कोई सूरत पढ़ता और हर रकअत में ऐसे ही करता था तो उसके साथियों ने उस से बात करते हुए कहा : तुम यह सूरत पढ़ते हो फिर उसे भी काफी नहीं समझते, यहाँ तक कि तुम कोई दूसरी सूरत पढ़ते हो, वह कहने लगा मैं इसे छोड़ने वाला

2901 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ ثَابِتٍ الْبُنَانِيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: كَانَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ يَؤُمُّهُمْ فِي مَسْجِدِ قُبَاءَ، فَكَانَ كُلَّمَا افْتَتَحَ سُورَةً يَقْرَأُ لَهُمْ فِي الصَّلاَةِ يَقْرَأُ بِهَا، افْتَتَحَ بِقُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ حَتَّى يَفْرُغَ مِنْهَا، ثُمَّ يَقْرَأُ بِسُورَةٍ أُخْرَى

مَعَهَا، وَكَانَ يَصْنَعُ ذَلِكَ فِي كُلِّ رَكْعَةٍ. فَكَلَّمَهُ أَصْحَابُهُ، فَقَالُوا: إِنَّكَ تَقْرَأُ بِهَذِهِ السُّورَةِ، ثُمَّ لاَ تَرَى أَنَّهَا تُجْزِيكَ حَتَّى تَقْرَأَ بِسُورَةٍ أُخْرَى، فَإِمَّا أَنْ تَقْرَأَ بِهَا، وَإِمَّا أَنْ تَدَعَهَا وَتَقْرَأَ بِسُورَةٍ أُخْرَى، قَالَ: مَا أَنَا بِتَارِكِهَا، إِنْ أَحْبَبْتُمْ أَنْ أَؤُمَّكُمْ بِهَا فَعَلْتُ، وَإِنْ كَرِهْتُمْ تَرَكْتُكُمْ. وَكَانُوا يَرَوْنَهُ أَفْضَلَهُمْ، وَكَرِهُوا أَنْ يَؤُمَّهُمْ غَيْرُهُ. فَلَمَّا أَتَاهُمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَخْبَرُوهُ الخَبَرَ. فَقَالَ: يَا فُلاَنُ، مَا يَمْنَعُكَ مِمَّا يَأْمُرُ بِهِ أَصْحَابُكَ، وَمَا يَحْمِلُكَ أَنْ تَقْرَأَ هَذِهِ السُّورَةَ فِي كُلِّ رَكْعَةٍ؟ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي أُحِبُّهَا. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ حُبَّهَا أَدْخَلَكَ الجَنَّةَ.

नहीं, अगर तुम चाहते हो कि मैं इसी सूरत के साथ तुम्हारी इमामत कराऊँ, तो मैं करवा सकता हूँ और अगर नापसंद करते हो तो मैं तुम्हें इमामत करवाना छोड़ देता हूँ जबकि वह लोग उसे लोगों में सब से बेहतर समझते थे और किसी दूसरे की इमामत नापसंद करते थे। जब नबी (ﷺ) उनके पास गए, तो उन्होंने आप(ﷺ) को वाक़िया सुनाया : आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ फुलां! तुम्हें इस काम से क्या चीज़ रोकती है? जिसका तुम्हारे साथी तुम्हें हुक्म देते हैं, और हर रकअत में इस सूरत को पढ़ने पर क्या चीज़ उभारती है?" उस ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! मैं इस सूरत से मोहब्बत करता हूँ, तो अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़रमाया, "इसकी मोहब्बत ही तुम्हें जन्नत में ले जायेगी।"

हसन सहीह:अहमद:3/141. दारमी:3438. इब्ने खुज़ैमा:537. इब्ने हिब्बान:792. सहीहुत्तर्गीब:1484.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, बवास्ता उबैदुल्लाह बिन उमर, साबित बुनानी से मर्वी यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है। नीज़ मुबारक बिन फ़ज़ाला ने भी बवास्ता बुनानी, सय्यदना अनस (رضي الله عنه) से रिवायत की है कि एक आदमी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! मैं इस सूरत قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَد : से मोहब्बत करता हूँ : तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम्हारी इस से मोहब्बत ही तुम्हें जन्नत में दाख़िल कर देगी।"

12 بَابُ مَا جَاءَ فِي الْمُعَوِّذَتَيْنِ

12 - मुअव्विज़तैन (अल-फ़लक और अन्-नास) का बयान।

2902 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي خَالِدٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي قَيْسُ بْنُ أَبِي حَازِمٍ،

2902 - सय्यदना उक़्बा बिन आमिर जुहनी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, अल्लाह तआला ने मुझ पर कुछ ऐसी आयात उतारी हैं जिन जैसी किसी ने नहीं देखीं

عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ الجُهَنِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: قَدْ أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَيَّ آيَاتٍ لَمْ يُرَ مِثْلُهُنَّ {قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ} إِلَى آخِرِ السُّورَةِ، وَ {قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الفَلَقِ} إِلَى آخِرِ السُّورَةِ.

{قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ} आखिर तक और {قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الفَلَقِ} आख़िर सूरत तक।

मुस्लिम:814.अबू दाऊद:1462. निसाई:954. दारमी:3444.अहमद:4/ 144.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2903 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ لَهِيعَةَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ رَبَاحٍ، عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ، قَالَ: أَمَرَنِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ أَقْرَأَ بِالمُعَوِّذَتَيْنِ فِي دُبُرِ كُلِّ صَلَاةٍ.

2903 - सय्यदना उक़्बा बिन आमिर जुहनी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे हुक्म दिया : "कि मैं हर नमाज़ के बाद मुअव्विज़तैन पढ़ूँ।"

सहीह :अबू दाऊद:1523. निसाई:1336. इब्ने खुजैमा:755. इब्ने हिब्बान:2004.हाकिम:1/ 253.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं,यह हदीस हसन ग़रीब है।

13 بَابُ مَا جَاءَ فِي فَضْلِ قَارِئِ القُرْآنِ

13 - कुरआन पढ़ने वाले की फ़ज़ीलत।

2904 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ الطَّيَالِسِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، وَهِشَامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ زُرَارَةَ بْنِ أَوْفَى، عَنْ سَعْدِ بْنِ هِشَامٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الَّذِي يَقْرَأُ القُرْآنَ وَهُوَ مَاهِرٌ بِهِ مَعَ السَّفَرَةِ الكِرَامِ البَرَرَةِ، وَالَّذِي يَقْرَؤُهُ، قَالَ هِشَامٌ: وَهُوَ شَدِيدٌ عَلَيْهِ. قَالَ شُعْبَةُ: وَهُوَ عَلَيْهِ شَاقٌّ، فَلَهُ أَجْرَانِ.

2904 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "वह शख़्स जो कुरआन पढ़ता है और इसमें खूब[1] महारत है वह नेक व इताअत गुज़ार कासिद फ़रिश्तों[2] के साथ होगा, और जो शख़्स इसे पढ़ता है।" हिशाम ने कहा है: "वह उस पर सख़्त होता है।" और शोबा ने कहा :"वह उस पर मशक्क़त वाला है तो उसके लिए दो अज्र हैं।"

सहीह बुख़ारी:4937. मुस्लिम:798. अबू दाऊद:1454. इब्ने माजह:3779.

तौज़ीह : ماهر:जिसे कुरआन अच्छी तरह याद है उसे पढ़ने में किसी क़िस्म की दिक्क़त नहीं होती। السفرة : سافر की जमा है यह सफारत से है मुराद यहाँ वह फ़रिश्ते हैं जो अल्लाह की वहि उसके रसूलों तक पहुंचाते हैं यानी अल्लाह और उसके रसूल के दर्मियान सिफरात का काम करते हैं। (अत्तफ़सीर अहसनुल बयान सूरह अबस: 15)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2905 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا حَفْصُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ كَثِيرِ بْنِ زَاذَانَ، عَنْ عَاصِمِ بْنِ ضَمْرَةَ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ وَاسْتَظْهَرَهُ، فَأَحَلَّ حَلاَلَهُ، وَحَرَّمَ حَرَامَهُ أَدْخَلَهُ اللَّهُ بِهِ الجَنَّةَ وَشَفَّعَهُ فِي عَشَرَةٍ مِنْ أَهْلِ بَيْتِهِ كُلُّهُمْ قَدْ وَجَبَتْ لَهُ النَّارُ.

2905 - सय्यदना अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''जिस ने कुरआन पढ़कर उसे याद किया फिर उसके हलाल को हलाल और हराम को हराम समझा, अल्लाह तआला उसकी वजह से उसे जन्नत में दाख़िल करेगा और उसके घर वालों में से दस आदमियों के लिए उसकी सिफारिश कुबूल करेगा जिन पर जहन्नम वाजिब हो चुकी होगी।''

ज़ईफ़ जिद्दा :इब्ने माजह:216. जईफुत्तर्गीब:868. तबरानी फ़िल औसत:5126.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं,यह हदीस ग़रीब है हम इसे इसी सनद से ही जानते हैं और इसकी सनद सहीह नहीं है। नीज़ हफ्स बिन सुलैमान अबू उमर बजाजज़ कूफा का रहने वाला था उसे हदीस में ज़ईफ़ कहा गया है।

14 بَابُ مَا جَاءَ فِي فَضْلِ الْقُرْآنِ

14 - कुरआन की फ़ज़ीलत।

2906 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ عَلِيٍّ الجُعْفِيُّ، قَالَ: سَمِعْتُ حَمْزَةَ الزَّيَّاتَ، عَنْ أَبِي الْمُخْتَارِ الطَّائِيِّ، عَنِ ابْنِ أَخِي الحَارِثِ الأَعْوَرِ، عَنِ الحَارِثِ، قَالَ: مَرَرْتُ فِي الْمَسْجِدِ فَإِذَا النَّاسُ يَخُوضُونَ فِي الأَحَادِيثِ فَدَخَلْتُ

2906 - हारिस अल- आवर से रिवायत है कि मैं मस्जिद से गुजरा देखा लोग बातें बना रहे थे फिर मैं अली (رضي الله عنه) के पास गया। मैंने कहा :ऐ अमीरुल मोमिनीन क्या आप देखते नहीं कि लोग अहादीस में बातें बना रहे हैं? उन्होंने कहा : क्या उन्होंने ऐसा किया है? मैंने कहा :जी हाँ, उन्होंने कहा :मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना

عَلَى عَلِيٍّ، فَقُلْتُ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، أَلاَ تَرَى أَنَّ النَّاسَ قَدْ خَاضُوا فِي الأَحَادِيثِ، قَالَ: وَقَدْ فَعَلُوهَا؟ قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: أَمَا إِنِّي قَدْ سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: أَلاَ إِنَّهَا سَتَكُونُ فِتْنَةٌ. فَقُلْتُ: مَا الْمَخْرَجُ مِنْهَا يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: كِتَابُ اللهِ فِيهِ نَبَأُ مَا قَبْلَكُمْ وَخَبَرُ مَا بَعْدَكُمْ، وَحُكْمُ مَا بَيْنَكُمْ، وَهُوَ الفَصْلُ لَيْسَ بِالهَزْلِ، مَنْ تَرَكَهُ مِنْ جَبَّارٍ قَصَمَهُ اللَّهُ، وَمَنْ ابْتَغَى الهُدَى فِي غَيْرِهِ أَضَلَّهُ اللَّهُ، وَهُوَ حَبْلُ اللهِ الْمَتِينُ، وَهُوَ الذِّكْرُ الحَكِيمُ، وَهُوَ الصِّرَاطُ الْمُسْتَقِيمُ، هُوَ الَّذِي لاَ تَزِيغُ بِهِ الأَهْوَاءُ، وَلاَ تَلْتَبِسُ بِهِ الأَلْسِنَةُ، وَلاَ يَشْبَعُ مِنْهُ العُلَمَاءُ، وَلاَ يَخْلَقُ عَلَى كَثْرَةِ الرَّدِّ، وَلاَ تَنْقَضِي عَجَائِبُهُ، هُوَ الَّذِي لَمْ تَنْتَهِ الجِنُّ إِذْ سَمِعَتْهُ حَتَّى قَالُوا: {إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ} مَنْ قَالَ بِهِ صَدَقَ، وَمَنْ عَمِلَ بِهِ أُجِرَ، وَمَنْ حَكَمَ بِهِ عَدَلَ، وَمَنْ دَعَا إِلَيْهِ هَدَى إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ خُذْهَا إِلَيْكَ يَا أَعْوَرُ.

आप फ़रमा रहे थे:' "आगाह हो जाओ अन्क़रीब फ़ित्ना बरपा होगा'' मैंने अर्ज़ की : ऐ अल्लाह के रसूल! इस से निकलने का कौन सा रास्ता है?'' आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह की किताब, इसमें पहले लोगों के वाक़ियात, तुमसे बाद वालों के हालात और तुम्हारे आपस के झगड़ों का फैसला है। वह यक़ीनी अहकामात हैं कोई मजाक नहीं। जो जाबिर (ज़ालिम) भी उसे छोड़ेगा अल्लाह तआला उसे टुकड़े- टुकड़े कर देगा। जो शख़्स इसके अलावा किसी और चीज़ में हिदायत तलाश करेगा अल्लाह उसे गुमराह कर देगा। यह अल्लाह की मज़बूत रस्सी है, यह हिक्मत वाला ज़िक्र है, यही सिराते मुस्तक़ीम है, यही तो वह है जिसके साथ ख्वाहिशात टेढ़ी नहीं होतीं, ज़बानें खलत मलत नहीं होतीं, उलमा इस से सैर नहीं होते, बार बार पढ़ने से पुराना नहीं होता और इसके अजाइब ख़त्म नहीं होते, यह वह है जिसे जिन्नों ने सुना तो यह कहने पर मजबूर हो गए: हमने एक अजीब कुरआन सुना है जो भलाई का रास्ता बताता है हम तो उस पर ईमान ले आएंगे।'' (अल- जिन्न: 1- 2) जिस ने इस के साथ बात की उस ने सच बोला, जिसने इस पर अमल किया उसे अज्र मिलेगा। जिसने इसके साथ फैसला किया उस ने अदल किया और जिसने इसकी तरफ़ बुलाया उसे सिराते मुस्तक़ीम की हिदायत मिल गई।'' (फिर अली (رضي الله عنه)) कहने लगे : ऐ आवर इसे ले लो।

ज़ईफ़ :अहमद व दारमी :3334, अबू याला:367, अस- सिलसिला अज़- ज़ईफ़ा:6393

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। हम इसे हम्ज़ा ज़य्यात के तरीक़ से ही जानते हैं और इसकी सनद भी मज्हूल है। नीज़ हारिस की रिवायत में कलाम भी है।

15 - कुरआन की तालीम।

15 بَابُ مَا جَاءَ فِي تَعْلِيمِ الْقُرْآنِ

2907 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ قَالَ: أَنْبَأَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَلْقَمَةُ بْنُ مَرْثَدٍ، قَالَ: سَمِعْتُ سَعْدَ بْنَ عُبَيْدَةَ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلَّمَهُ قَالَ أَبُو عَبْدِ الرَّحْمَنِ: فَذَاكَ الَّذِي أَقْعَدَنِي مَقْعَدِي هَذَا، وَعَلَّمَ الْقُرْآنَ فِي زَمَنِ عُثْمَانَ حَتَّى بَلَغَ الحَجَّاجَ بْنَ يُوسُفَ.

2907 - सय्यदना उस्मान बिन अफ्फ़ान (रज़ि.) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम में से बेहतर वह शख़्स है जो कुरआन सीखे और दूसरों को इसकी तालीम दे।''

सहीह बुख़ारी:5027. अबू दाऊद:1452. इब्ने माजह:211

रावी अबू अब्दुर्रहमान कहते हैं, मुझे इसी हदीस ने ही इस जगह बिठाया है और इन्होंने उस्मान (रज़ि.) के ज़माने में कुरआन की तालीम दी यहाँ तक कि यह बात हज्जाज बिन यूसुफ़ तक पहुँच गई।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2908 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ السَّرِيِّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ مَرْثَدٍ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: خَيْرُكُمْ، أَوْ أَفْضَلُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلَّمَهُ.

2908 - सय्यदना उस्मान बिन अफ्फ़ान (रज़ि.) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम में सब से बेहतर या अफ़ज़ल वह शख़्स है जो कुरआन सीखे और दूसरों को सिखाये।''

सहीह: गुज़िश्ता हदीस देखें :दारमी:3340. बज़्ज़ार:698. इब्ने अबी शैबा:10/503. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा:1173

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। अब्दुर्रहमान बिन महदी और दीगर रावियों ने भी इसी तरह ही सुफ़ियान सौरी से बवास्ता अल्क़मा बिन मर्सद, अब्दुर्रहमान से बवास्ता उस्मान (ﷺ) नबी (ﷺ) से इसी तरह हदीस बयान की है सुफ़ियान इसमें साद बिन उबैदा का ज़िक्र नहीं करते।

नीज़ यह्या बिन सईद क़त्तान ने इस हदीस को सुफ़ियान और शोबा से बवास्ता अल्क़मा बिन मर्सद, साद बिन उबैदा से उन्होंने अबू अब्दुर्रहमान से बवास्ता उस्मान (ﷺ) रिवायत की है।

हमें यह हदीस मुहम्मद बिन बश्शार ने बवास्ता यह्या बिन सईद, सुफ़ियान और शोबा से बयान की है।

मुहम्मद बिन बश्शार कहते हैं, यह्या बिन सईद ने कई दफ़ा सुफ़ियान और शोबा से इसी तरह ही बवास्ता अल्क़मा बिन मर्सद, साद बिन उबैदा से उन्होंने अब्दुर्रहमान से बवासता उस्मान (ﷺ) नबी (ﷺ) से रिवायत ज़िक्र की है। मुहम्मद बिन बश्शार कहते हैं, सुफ़ियान के शागिर्द इसमें सुफ़ियान और साद बिन उबैदा के वास्ते का ज़िक्र नहीं करते। मुहम्मद बिन बश्शार कहते हैं, यही ज़्यादा सहीह है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, शोबा ने इस हदीस की सनद में साद बिन उबैदा का इजाफा किया है। गोया सुफ़ियान की हदीस ज़्यादा बेहतर है।

अली बिन अब्दुल्लाह ने यह्या बिन सईद (ﷺ) का कौल नक़ल किया है कि मेरे नज़दीक शोबा के बराबर कोई मोहद्दिस नहीं है। लेकिन जब सुफ़ियान उनकी मुख़ालिफ़त करें तो मैं सुफ़ियान के कौल को लेता हूँ।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, मैंने अबू अम्मार से सुना वह ज़िक्र कर रहे थे वकीअ (ﷺ) ने शोबा का कौल नक़ल किया है कि सुफ़ियान मुझ से बड़े हाफ़िज़ हैं सुफ़ियान मुझे किसी शख़्स की तरफ़ से कोई चीज़ बयान करते, फिर मैं उन से पूछता तो वह ऐसे ही होता था जैसे उन्होंने मुझे बयान किया होता था।

नीज़ इस बारे में अली और साद (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

2909 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الوَاحِدِ بْنُ زِيَادٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى

2909 - सय्यदना अली बिन अबी तालिब (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम में से बेहतर वह शख़्स है जो कुरआन सीखे और सिखाये।"

सहीह: गुज़िश्ता हदीस देखें दारमी:3340. बज़्ज़ार:698.

اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلَّمَهُ.

इब्ने अबी शैबा:10/503. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा:1173.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं,हम इस हदीस को बवास्ता अली, नबी (ﷺ) से सिर्फ़ अब्दुर्रहमान बिन इस्हाक़ के तरीक़ से ही जानते हैं।

16 بَابُ مَا جَاءَ فِيمَنْ قَرَأَ حَرْفًا مِنَ الْقُرْآنِ مَالَهُ مِنَ الأَجْرِ

16 - कुरआन का एक हर्फ़ पढ़ने वाले के लिए कितना अज्र है?

2910 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرٍ الحَنَفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الضَّحَّاكُ بْنُ عُثْمَانَ، عَنْ أَيُّوبَ بْنِ مُوسَى، قَالَ: سَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ كَعْبٍ القُرَظِيَّ يَقُولُ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ مَسْعُودٍ، يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ قَرَأَ حَرْفًا مِنْ كِتَابِ اللهِ فَلَهُ بِهِ حَسَنَةٌ، وَالحَسَنَةُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا، لاَ أَقُولُ الْم حَرْفٌ، وَلَكِنْ أَلِفٌ حَرْفٌ وَلاَمٌ حَرْفٌ وَمِيمٌ حَرْفٌ.

2910 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिसने अल्लाह की किताब का एक हर्फ़ पढ़ा उसके लिए एक नेकी है और नेकी दस गुना होती है। मैं यह नहीं कहता कि الم एक हर्फ़ है बल्कि अलिफ़ एक हर्फ़, लाम दूसरा हर्फ़ और मीम तीसरा हर्फ़ है।''

सहीह :बुख़ारी फ़ी तारिख़िही:1/679.हाकिम:1/555. अब्दुर्रज़्ज़ाक़:6017. तबरानी फ़िल कबीर:8647. अस-सिलसिला अस-सहीहा:660. सहीहुत्तर्गीब:1416

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं,इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। मैंने कुतैबा बिन सईद से सुना वह कह रहे थे मुझे यह ख़बर पहुंची है कि मुहम्मद बिन काब कुरज़ी नबी (ﷺ) की ज़िंदगी में पैदा हुए थे। यह हदीस एक दूसरी सनद से भी इब्ने मसऊद (رضي الله عنه) से मर्वी है इसे अबू अह्वस ने अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) से रिवायत किया है। बअ़ज़ ने इसे मर्फ़ू रिवायत किया है और बअ़ज़ ने इब्ने मसऊद (رضي الله عنه) से मौक़ूफ़ रिवायत की है। नीज़ मुहम्मद बिन काब की कुनियत अबू हम्ज़ा थी।

17-बन्दे किसी चीज के साथ इस क़दर अल्लाह के नज़दीक नहीं होते जितना उस चीज़ के साथ होते हैं जिसका उस ने हुक्म दिया है

17 بَابٌ ماتقرب العباد إلى الله بمثل ما خرج منه.

2911 - सय्यदना अबू उमामा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला किसी बन्दे के लिए उन दो रकअतों से ज़्यादा किसी चीज़ में कान नहीं लगाता जिन्हें वह पढ़ता है, और बन्दा जब तक नमाज़ में रहता है नेकी उसके सर पर छिड़की जाती है और बन्दे (इस क़दर) अल्लाह के नज़दीक किसी चीज़ के क़रीब नहीं होते जितना उस चीज़ के साथ होते हैं जो उस से निकली है।" अबू नज़र कहते हैं, इस से मुराद कुरआन है।

ज़ईफ़: अहमद:5/268. तबरानी फ़िल कबीर:7657. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा:1957.

2911 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو النَّضْرِ، قَالَ: حَدَّثَنَا بَكْرُ بْنُ خُنَيْسٍ، عَنْ لَيْثِ بْنِ أَبِي سُلَيْمٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْطَاةَ، عَنْ أَبِي أُمَامَةَ، قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا أَذِنَ اللَّهُ لِعَبْدٍ فِي شَيْءٍ أَفْضَلَ مِنْ رَكْعَتَيْنِ يُصَلِّيهِمَا، وَإِنَّ البِرَّ لَيُذَرُّ عَلَى رَأْسِ العَبْدِ مَا دَامَ فِي صَلَاتِهِ، وَمَا تَقَرَّبَ العِبَادُ إِلَى اللهِ بِمِثْلِ مَا خَرَجَ مِنْهُ.

वज़ाहत: यह हदीस ज़ैद बिन अर्तात से बवास्ता जुबैर बिन नुफ़ैर नबी (ﷺ) से मुर्सल भी मर्वी है।

2912 - सय्यदना जुबैर बिन नुफ़ैर (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम किसी चीज़ के साथ अल्लाह की तरफ़ इतना रुजू नहीं कर सकते जितना उस चीज़ के साथ कर सकते हो जो उसकी तरफ़ से निकली है।" (यानी कुरआन)

ज़ईफ़:हाकिम: 1/155. बैहक़ी:236. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा:1957.

2912 - حَدَّثَنَا بِذَلِكَ إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، عَنْ مُعَاوِيَةَ، عَنِ العَلَاءِ بْنِ الحَارِثِ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْطَاةَ، عَنْ جُبَيْرِ بْنِ نُفَيْرٍ، قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّكُمْ لَنْ تَرْجِعُوا إِلَى اللهِ بِأَفْضَلَ مِمَّا خَرَجَ مِنْهُ يَعْنِي القُرْآنَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। हम इसी सनद से ही जानते हैं और बक्र बिन ख़ुनैस के बारे में इब्ने मुबारक ने कलाम की है, और बिल आखिर उस से रिवायत लेना छोड़ दी थी।

18 - जिस शख़्स के दिल में क़ुरआन न हो वह वीरान घर की तरह है।

18 بَابٌ إِنَّ الَّذِي لَيْسَ فِي جَوْفِهِ شَيْءٌ مِنَ الْقُرْآنِ كَالبَيْتِ الخَرِبِ.:

2913 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ قَابُوسَ بْنِ أَبِي ظَبْيَانَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ الَّذِي لَيْسَ فِي جَوْفِهِ شَيْءٌ مِنَ القُرْآنِ كَالبَيْتِ الخَرِبِ.

2913 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "बेशक वह शख़्स जिसके दिल में कुछ भी क़ुरआन न हो वह वीरान घर की तरह है।''

ज़ईफ़: ज़ईफ़ुत्तर्ग़ीब:871.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2914 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ الحَفَرِيُّ، وَأَبُو نُعَيْمٍ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ عَاصِمِ بْنِ أَبِي النَّجُودِ، عَنْ زِرٍّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يُقَالُ، يَعْنِي لِصَاحِبِ الْقُرْآنِ،: اقْرَأْ وَارْتَقِ وَرَتِّلْ كَمَا كُنْتَ تُرَتِّلُ فِي الدُّنْيَا، فَإِنَّ مَنْزِلَتَكَ عِنْدَ آخِرِ آيَةٍ تَقْرَأُ بِهَا.

2914 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "साहिबे क़ुरआन से कहा जाएगा (क़ुरआन) पढ़ो और दरजात में) चढ़ो और इसी तरह ठहर ठहर कर पढ़ो जैसे दुनिया में ठहर ठहर पढ़ता था, तुम्हारी मंज़िल उस आख़िरी आयत पर होगी जिसे तुम पढ़ोगे।''

हसन: अबू दाऊद:1446. सहीहा:2240.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

2915 - حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الْجَهْضَمِيُّ،

2915 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "क़यामत

قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ بْنُ عَبْدِ الوَارِثِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَاصِمٍ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يَجِيءُ القُرْآنُ يَوْمَ القِيَامَةِ فَيَقُولُ: يَا رَبِّ حَلِّهِ، فَيُلْبَسُ تَاجَ الكَرَامَةِ، ثُمَّ يَقُولُ: يَا رَبِّ زِدْهُ، فَيُلْبَسُ حُلَّةَ الكَرَامَةِ، ثُمَّ يَقُولُ: يَا رَبِّ ارْضَ عَنْهُ، فَيَرْضَى عَنْهُ، فَيُقَالُ لَهُ: اقْرَأْ وَارْقَ، وَيُزَادُ بِكُلِّ آيَةٍ حَسَنَةً.

के दिन हाफ़िज़े कुरआन आएगा तो कुरआन कहेगा ऐ मेरे रब! इसे पहना, चुनांचे उसे बुज़ुर्गी का ताज पहनाया जाएगा। वह फिर कहेगा : ऐ मेरे रब! इस से खुश हो जा, तो अल्लाह उस से राज़ी हो जाएगा, फिर उस से कहा जाएगा (कुरआन) पढ़ और दरजात चढ़ और हर आयत के बदले एक नेकी का इज़ाफ़ा भी किया जाएगा।''

हसन:हाकिम:1/552 हिल्या:7/206 सहीहुत्तर्गीब : 1425.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने मुहम्मद बिन जाफ़र से उन्हें शोबा ने आसिम बिन बह्दला से बवास्ता अबू सालेह अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से ऐसे ही हदीस बयान की है। लेकिन वह मर्फू नहीं है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, हमारे नज़दीक यह हदीस अब्दुस्समद की शोबा से बयान कर्दा हदीस से ज़्यादा सहीह है। हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने अब्दुर्रहमान बिन महदी से भी बवास्ता सुफ़ियान, आसिम से इसी सनद के साथ ऐसे ही हदीस बयान की है।

19 بَابٌ لَمْ أَرَ ذَنْبًا أَعْظَمَ مِنْ سُورَةٍ مِنَ القُرْآنِ أَوْ آيَةٍ أُوتِيهَا رَجُلٌ ثُمَّ نَسِيَهَا

19-इस से बड़ा कोई गुनाह नहीं कि आदमी को एक सूरत अता की गई हो फिर वह उसे भुला दे

2916 - حَدَّثَنَا عَبْدُ الوَهَّابِ بْنُ الحَكَمِ الوَرَّاقُ البَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَجِيدِ بْنُ عَبْدِ العَزِيزِ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنِ الْمُطَّلِبِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ حَنْطَبٍ، عَنْ

2916 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मेरे सामने मेरी उम्मत के अज्र पेश किए गए यहाँ तक कि वह तिन्का भी जिसे आदमी मस्जिद से निकाल दे और मुझ पर मेरी

أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: عُرِضَتْ عَلَيَّ أُجُورُ أُمَّتِي حَتَّى الْقَذَاةُ يُخْرِجُهَا الرَّجُلُ مِنَ الْمَسْجِدِ، وَعُرِضَتْ عَلَيَّ ذُنُوبُ أُمَّتِي، فَلَمْ أَرَ ذَنْبًا أَعْظَمَ مِنْ سُورَةٍ مِنَ الْقُرْآنِ أَوْ آيَةٍ أُوتِيهَا رَجُلٌ ثُمَّ نَسِيَهَا.

उम्मत के गुनाह पेश किए गए मैंने कोई गुनाह कुरआन की उस सूरत या आयत से बढ़कर नहीं देखा जो आदमी को दी गई फिर वह उसे भूल गया।'' यानी कुर्आन को याद करके भुला देना सबसे बड़ा गुनाह है।

ज़ईफ़ :अबू याला:4265. इब्ने खुज़ैमा:1297. अबू दाऊद:461.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है हम इसे इसी सनद से ही जानते हैं और मैंने मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी से इसका ज़िक्र किया तो वह उसे नहीं जानते थे और उसे ग़रीब कहते थे। मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (ﷺ) फ़रमाते हैं, मैं मुत्तलिब बिन अब्दुल्लाह बिन हन्तब का नबी (ﷺ) के किसी सहाबी से सिमा (सुनना) नहीं जानता, सिवाए उनके इस कौल के कि मुझे नबी (ﷺ) के ख़ुत्बा में शरीक होने वाले एक शख़्स ने बयान किया।

अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहीम कहते हैं, हम मुत्तलिब का नाम नबी (ﷺ) के किसी सहाबी से सिमा(सुनना) करना नहीं जानते। अब्दुल्लाह कहते हैं, अली बिन मदीनी भी मुत्तलिब के अनस (ﷺ) से सिमा (सुनने) का इन्कार करते हैं।

(20 بَابٌ مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ فَلْيَسْأَلِ اللَّهَ بِهِ.

20 - जो शख़्स कुरआन पढ़े उसे अल्लाह से मांगना चाहिए।

2917 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ خَيْثَمَةَ، عَنِ الحَسَنِ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، أَنَّهُ مَرَّ عَلَى قَارِئٍ يَقْرَأُ، ثُمَّ سَأَلَ فَاسْتَرْجَعَ، ثُمَّ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ:

2917 - हसन बसरी (ﷺ) कहते हैं कि इमरान बिन हुसैन (ﷺ) एक क़ारी के पास से गुज़रे जो पढ़ रहा था। फिर उस ने सवाल किया तो इमरान (ﷺ) ने انا لله و انا إليه راجعون । पढ़ा फिर फ़रमाने लगे :मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आप फ़रमा रहे थे : "जो शख़्स कुरआन पढ़े उसे चाहिए कि अल्लाह से मांगे, बेशक कुछ लोग आयेंगे जो कुरआन पढ़कर उस के साथ लोगों से मांगेंगे।''

مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ فَلْيَسْأَلِ اللَّهَ بِهِ، فَإِنَّهُ سَيَجِيءُ أَقْوَامٌ يَقْرَءُونَ الْقُرْآنَ يَسْأَلُونَ بِهِ النَّاسَ.

हसन :इब्ने अबी शैबा:10/480. तबरानी फ़िल कबीर:18. रक़म:371, 370. अहमद:4/436. सहीहुत्तर्गीब :1433

वज़ाहत: महमूद कहते हैं, यह खैसमा बसरी हैं जिन से जाबिर जोफ़ी भी रिवायत करते हैं यह खैसमा बिन अब्दुर्रहमान नहीं हैं।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन है और खैसमा बस्रा के रहने वाले थे उनकी कुनियत अबू नस्र थी, उन्होंने अनस बिन मालिक (ﷺ) से काफी अहादीस रिवायत की हैं और इसी तरह जाबिर जोफ़ी ने खैसमा से रिवायत की है।

2918 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ الوَاسِطِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو فَرْوَةَ يَزِيدُ بْنُ سِنَانٍ، عَنْ أَبِي الْمُبَارَكِ، عَنْ صُهَيْبٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَا آمَنَ بِالقُرْآنِ مَنْ اسْتَحَلَّ مَحَارِمَهُ.

2918 - सय्यदना सुहैब (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "वह शख़्स कुरआन पर ईमान ही नहीं लाया जो उसकी हरामकर्दा चीज़ों को हलाल समझे।"

ज़ईफ़: इब्ने अबी शैबा:10/537. तबरानी फ़िल कबीर:7295. ज़ईफुत्तर्गीब:100.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, इस हदीस की सनद कुछ ख़ास नहीं है। वकी की रिवायत में इख़्तिलाफ़ किया गया है।

इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी फ़रमाते हैं, अबू फर्वा यज़ीद बिन सिनान रहावी की रिवायात में कोई मुजायका नहीं है सिवाए उसके बेटे की उसकी तरफ़ से रिवायत में वह उस से मुन्कर रिवायात करता था।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, मुहम्मद बिन सिनान ने अपने बाप से इस हदीस को रिवायत किया है तो इस सनद में मुजाहिद से बवास्ता सईद बिन मुसय्यब सुहैब (ﷺ) से रिवायत की है और मुहम्मद बिन यज़ीद की रिवायत में उसकी मुताबअत नहीं है। यह ज़ईफ़ है और अबू मुबारक मज्हूल आदमी है।

2919 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَرَفَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَيَّاشٍ، عَنْ بَحِيرِ بْنِ

2919 - सय्यदना उक़्बा बिन आमिर (ﷺ) रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आप फ़रमा रहे थे :"कुरआन को

سَعْدٍ، عَنْ خَالِدِ بْنِ مَعْدَانَ، عَنْ كَثِيرِ بْنِ مُرَّةَ الحَضْرَمِيِّ، عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: الجَاهِرُ بِالقُرْآنِ، كَالجَاهِرِ بِالصَّدَقَةِ، وَالمُسِرُّ بِالقُرْآنِ، كَالمُسِرِّ بِالصَّدَقَةِ.

एलानिया पढ़ने वाला एलानिया सदक़ा करने वाले की तरह है और कुरआन को छिप कर पढ़ने वाला सदक़ा को छिपाने वाले की तरह है।''

सहीह: अबू दाऊद: 1333. निसाई: 1663. अहमद:4/151. इब्ने हिब्बान:734. अबू याला: 1737.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है और इस हदीस का मतलब यह है कि जो शख़्स किरअते कुरआन को छिपाता है वह किरअत को ज़ाहिर करने वाले से बेहतर है, क्योंकि पोशीदा किया जाने वाला सदक़ा उलमा के नज़दीक एलानिया सदके से बेहतर है।

और उलमा के नज़दीक इसका मतलब यह है इस से आदमी बड़प्पन से महफ़ूज़ रहता है, क्योंकि चुपके से अमल करने वाले को बड़प्पन से ख़तरा नहीं होता जिस तरह कि एलानिया में डर होता है।

21 بَابٌ قراءة سورة بني إسرائيل والزمر قبل النوم.

21 - सोने से पहले सूरह बनी इस्राईल और अज़्ज़ुमर पढ़ना।

2920 - حَدَّثَنَا صَالِحُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَبِي لُبَابَةَ، قَالَ: قَالَتْ عَائِشَةُ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لاَ يَنَامُ حَتَّى يَقْرَأَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَالزُّمَرَ.

2920 - सय्यदा आयशा (ﷺ) बयान करती हैं कि नबी (ﷺ) अपने बिस्तर पर सोते नहीं थे जब तक सूरह बनी इस्राईल और ज़ुमर न पढ़ लेते।

सहीह: अहमद:6/68.इब्ने खुज़ैमा: 1163. हाकिम:2/343. अस-सिलसिला अस-सहीहा:641.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है और अबू लुबाबा बस्रा के रहने वाले बुज़ुर्ग हैं। उन से हम्माद बिन यज़ीद ने कई अहादीस रिवायत की हैं और बयान किया जाता है कि उनका नाम मरवान था हमें यह मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी ने किताबुत्तारीख़ में बयान की थी।

2921 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا بَقِيَّةُ بْنُ الوَلِيدِ، عَنْ بَحِيرِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ خَالِدِ بْنِ مَعْدَانَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بِلاَلٍ، عَنْ عِرْبَاضِ بْنِ سَارِيَةَ، أَنَّهُ حَدَّثَهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقْرَأُ الْمُسَبِّحَاتِ قَبْلَ أَنْ يَرْقُدَ وَيَقُولُ: إِنَّ فِيهِنَّ آيَةً خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ آيَةٍ.

2921 - सय्यदना इर्बाज़ बिन सारिया (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) सोने से पहले मुसब्बिहात[1] सूरतें पढ़ते थे और आप फ़रमाया करते थे : "कि इन सूरतों में एक आयत है जो एक हज़ार आयात से बेहतर है।"

ज़ईफ़ुल इस्नाद:अबू दाऊद:5057. ज़ईफ़ुत्तर्गीब:344. अहमद:4/ 128. तबरानी फ़िल कबीर: 18/6351.

तौज़ीह : الْمُسَبِّحَات :से मुराद वह सूरतें हैं जिनके शुरू में : سبح: يسبح आता है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है।

22 بَابٌ فِي فضل قراءة آخر سورة الحشر .

22- सूरतुल हश्र की आख़री आयात की फ़ज़ीलत

2922 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ الزُّبَيْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ طَهْمَانَ أَبُو العَلاَءِ الخَفَّافُ قَالَ: حَدَّثَنِي نَافِعُ بْنُ أَبِي نَافِعٍ، عَنْ مَعْقِلِ بْنِ يَسَارٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: مَنْ قَالَ حِينَ يُصْبِحُ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ: أَعُوذُ بِاللَّهِ السَّمِيعِ العَلِيمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ وَقَرَأَ ثَلاَثَ آيَاتٍ مِنْ آخِرِ سُورَةِ الحَشْرِ وَكَّلَ اللَّهُ بِهِ سَبْعِينَ أَلْفَ مَلَكٍ

2922 - सय्यदना माक़िल बिन यसार (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स सुबह के वक़्त तीन मर्तबा أَعُوذُ بِاللهِ السَّمِيعِ العَلِيمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ : पढ़ कर सूरह हश्र की आख़िरी तीन आयात पढ़े अल्लाह तआला उसके लिए सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर कर देता है, जो शाम तक उसके लिए दुआए रहमत करते हैं और अगर उस दिन के अन्दर मर जाए तो वह शहीद की हालत में मरेगा और जो शख़्स शाम के वक़्त कहे वह भी उसी मर्तबे में है।"

ज़ईफ़: अहमद:5/26. दारमी:2428. तबरानी फ़िल कबीर: 20/537.ज़ईफ़ुत्तर्गीब:379.

يُصَلُّونَ عَلَيْهِ حَتَّى يُمْسِيَ، وَإِنْ مَاتَ فِي ذَلِكَ الْيَوْمِ مَاتَ شَهِيدًا، وَمَنْ قَالَهَا حِينَ يُمْسِي كَانَ بِتِلْكَ الْمَنْزِلَةِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे इसी सनद से ही जानते हैं।

23 بَابُ مَا جَاءَ كَيْفَ كَانَتْ قِرَاءَةُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

23 - नबी (ﷺ) की किरअत कैसी थी।

2923 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ يَعْلَى بْنِ مَمْلَكٍ، أَنَّهُ سَأَلَ أُمَّ سَلَمَةَ، زَوْجَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ قِرَاءَةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَصَلاَتِهِ، فَقَالَتْ: مَا لَكُمْ وَصَلاَتَهُ؟ كَانَ يُصَلِّي ثُمَّ يَنَامُ قَدْرَ مَا صَلَّى، ثُمَّ يُصَلِّي قَدْرَ مَا نَامَ، ثُمَّ يَنَامُ قَدْرَ مَا صَلَّى حَتَّى يُصْبِحَ، ثُمَّ نَعَتَتْ قِرَاءَتَهُ، فَإِذَا هِيَ تَنْعَتُ قِرَاءَةً مُفَسَّرَةً حَرْفًا حَرْفًا.

2923 - याला बिन मम्लक (رحمه الله) से रिवायत है कि उन्होंने नबी (ﷺ) की जौजा मोहतरमा सय्यदा उम्मे सलमा (رضي الله عنها) से नबी (ﷺ) की किरअत और आप की नमाज़ के बारे में पूछा तो वह फ़रमाने लगीं :तुम्हें उनकी नमाज़ से क्या गरज़ है? आप(ﷺ) नमाज़ पढ़ते फिर इस क़दर सोते जितनी नमाज़ें पढ़ी होती, फिर सोने के वक़्त के बराबर नमाज़ पढ़ते, फिर नमाज़ के वक़्त जितना सोते यहाँ तक कि इस तरह सुबह हो जाती, फिर उन्होंने नबी (ﷺ) की किरअत बयान की कि वह किरअत को हर्फ़ ब हर्फ़ जुदा- जुदा करके बयान करने लगीं।

ज़ईफ़: अबू दाऊद:1446. निसाई:1022. अहमद: 6/294. इब्ने खुज़ैमा:1158. अब्दुर्रज्ज़ाक़: 4709.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। हम इसे लैस बिन साद से ही बवास्ता इब्ने अबी मुलैका, याला बिन मम्लक के ज़रिए उम्मे सलमा (رضي الله عنها) से जानते हैं।

नीज़ इब्ने जुरैज ने इस हदीस को बवास्ता इब्ने अबी मुलैका सय्यदा उम्मे सलमा (رضي الله عنها) से रिवायत किया है कि नबी (ﷺ) जुदा- जुदा किरअत करते थे लेकिन लैस की हदीस ज़्यादा सहीह है।

2924 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ صَالِحٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي قَيْسٍ، قَالَ: سَأَلْتُ عَائِشَةَ، عَنْ وِتْرِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَيْفَ كَانَ يُوتِرُ مِنْ أَوَّلِ اللَّيْلِ أَمْ مِنْ آخِرِهِ؟ فَقَالَتْ: كُلُّ ذَلِكَ قَدْ كَانَ يَصْنَعُ، رُبَّمَا أَوْتَرَ مِنْ أَوَّلِ اللَّيْلِ، وَرُبَّمَا أَوْتَرَ مِنْ آخِرِهِ. قُلْتُ: الحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي جَعَلَ فِي الأَمْرِ سَعَةً، فَقُلْتُ: كَيْفَ كَانَتْ قِرَاءَتُهُ؟ أَكَانَ يُسِرُّ بِالقِرَاءَةِ أَمْ يَجْهَرُ؟ قَالَتْ: كُلُّ ذَلِكَ كَانَ يَفْعَلُ، قَدْ كَانَ رُبَّمَا أَسَرَّ وَرُبَّمَا جَهَرَ. قَالَ: فَقُلْتُ: الحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي جَعَلَ فِي الأَمْرِ سَعَةً قَالَ: قُلْتُ: فَكَيْفَ كَانَ يَصْنَعُ فِي الجَنَابَةِ؟ أَكَانَ يَغْتَسِلُ قَبْلَ أَنْ يَنَامَ، أَمْ يَنَامُ قَبْلَ أَنْ يَغْتَسِلَ؟ قَالَتْ: كُلُّ ذَلِكَ قَدْ كَانَ يَفْعَلُ، فَرُبَّمَا اغْتَسَلَ فَنَامَ، وَرُبَّمَا تَوَضَّأَ فَنَامَ. قُلْتُ: الحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي جَعَلَ فِي الأَمْرِ سَعَةً.

2924 - अब्दुल्लाह बिन अबी कैस जो बसरा के रहने वाले एक आदमी हैं बयान करते हैं कि मैंने सय्यदा आयशा (ﷺ) से रसूलुल्लाह (ﷺ) के वित्र के बारे में पूछा कि आप वित्र कैसे पढ़ते थे? रात के पहले हिस्से में या आखिर में? तो वह फ़रमाने लगीं :आप(ﷺ) दोनों तरह ही कर लिया करते, कभी रात के पहले हिस्से में वित्र पढ़ लेते और कभी आख़िरी हिस्से में वित्र पढ़ते। मैंने कहा :तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने दीन में वुस्अत रखी है, फिर मैंने कहा :आप(ﷺ) की किरअत कैसी थी? आप(ﷺ) किरअत पस्त आवाज़ से करते थे या एलानिया? कहने लगीं :हर तरह से ही कर लेते थे कभी पोशीदा रखते और कभी ज़ाहिर करते। रावी कहते हैं, मैंने कहा :तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने दीन में वुस्अत रखी है, मैंने कहा :आप(ﷺ) हालते जनाबत में किया करते थे? क्या सोने से पहले गुस्ल करते या गुस्ल से पहले सो जाते थे? फ़रमाने लगीं :हर तरह से ही आप(ﷺ) ने किया है, कभी आप गुस्ल करके सोते और कभी वुज़ू करके सो जाते। तो मैंने कहा :तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने दीन में वुस्अत रखी है।

तख़रीज 449 के तहत गुज़र चुकी है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।

24 - क्या कोई ऐसा आदमी नहीं है जो मुझे अपनी कौम के पास ले जाये ताकि मैं अपने रब का कलाम पहुँचा दूँ

24 بَابٌ أَلاَ رَجُلٌ يَحْمِلُنِي إِلَى قَوْمِهِ؟ لأُبَلِّغَ كَلاَمَ رَبِّي.

2925 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (ﷺ) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) अपने आपको अरफ़ात में पेश करके फ़रमाते : "क्या कोई ऐसा आदमी नहीं है जो मुझे अपनी कौम के पास ले जाए, कुरैश ने मुझे अपने रब के कलाम पहुंचाने से रोक दिया है।''

सहीह :अबू दाऊद:4734. इब्ने माजह:201. अहमद:3/390. दारमी:3357. इब्ने अबी शैबा:14/310.

2925 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا إِسْرَائِيلُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ الْمُغِيرَةِ، عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الجَعْدِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ يَعْرِضُ نَفْسَهُ بِالْمَوْقِفِ، فَقَالَ: أَلاَ رَجُلٌ يَحْمِلُنِي إِلَى قَوْمِهِ؟ فَإِنَّ قُرَيْشًا قَدْ مَنَعُونِي أَنْ أُبَلِّغَ كَلاَمَ رَبِّي.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

25 - बाब।

25 بَابٌ

2926 - सय्यदना अबी सईद ख़ुदरी (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तबारक व तआला फ़रमाते हैं, जिस शख़्स को कुरआन (की तिलावत) मेरे ज़िक्र और मुझ से मांगने से मशगूल कर दे मैं उसे मांगने वालों से भी बेहतर अता कर दूंगा, और अल्लाह के कलाम की तमाम कलामों पर ऐसे फ़ज़ीलत है जैसे

2926 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا شِهَابُ بْنُ عَبَّادٍ العَبْدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الحَسَنِ بْنِ أَبِي يَزِيدَ الهَمْدَانِيُّ، عَنْ عَمْرِو بْنِ قَيْسٍ، عَنْ عَطِيَّةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ

اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَقُولُ الرَّبُّ عَزَّ وَجَلَّ: مَنْ شَغَلَهُ الْقُرْآنُ عَنْ ذِكْرِي وَمَسْأَلَتِي أَعْطَيْتُهُ أَفْضَلَ مَا أُعْطِي السَّائِلِينَ، وَفَضْلُ كَلاَمِ اللهِ عَلَى سَائِرِ الْكَلاَمِ كَفَضْلِ اللهِ عَلَى خَلْقِهِ.

अल्लाह की उस मख़्लूक़ पर फ़ज़ीलत है।''

ज़ईफ़ :दारमी :3359. बैहक़ी:1/372. उक़ैली:4/49. ज़ईफ़ुत्तर्गीब :860.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है।

ख़ुलासा

- सूरह फातिहा के मुख़्तलिफ़ नाम हैं जिन में दो का यहाँ पर ज़िक्र हुआ है। उम्मुल किताब और उम्मुल क़ुरआन
- जिस घर में सूरह बक़रा पढ़ी जाए शयातीन वहाँ से अपना बिस्तर उठा लेते हैं।
- आयतल कुर्सी पढ़ने से अल्लाह की हिफ़ाज़त हासिल हो जाती है।
- रात के वक़्त सूरह बक़रा की आखिरी दो आयात पढ़ी जाए।
- सूरह कहफ़ पढ़ने से फ़रिश्तों का नुज़ूल होता था।
- सूरह इख़्लास पढ़ना एक तिहाई क़ुरआन के बराबर है।
- श्यातीन के शर और हासिदों के हसद से बचने के लिए मुअव्विज़तैन का एहतमाम किया जाए।
- दुनिया में दो शख़्स बेहतरीन हैं एक क़ुरआन पढ़ने वाला दूसरा पढ़ाने वाला।
- क़ुरआन का एक हर्फ़ पढ़ने से दस नेकियाँ मिलती हैं।
- सोने से पहले सूरह बनी इस्राईल और सूरह ज़ुमर पढ़ना मुस्तहब है।

मज़मून नम्बर। 44.

أَبْوَابُ الْقِرَاءَاتِ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

रसूलुल्लाह (ﷺ) से कुरआन पढ़ने के अन्दाज़ और उसकी किरअत

तआरुफ़

23 अहादीस के साथ 13 अबवाब पर मुश्तमिल यह उन्वान इन मौज़ूआत पर मुहीत है:

- कुरआन की किरअतें कितनी थीं?
- कुरआन किस किरअत से पढ़ा जाए?
- कुरआन की किरअत करने वाले किस अज्र के मुस्तहिक़ हैं?

1 بَابٌ فِي فَاتِحَةِ الْكِتَابِ

2927 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ الأُمَوِيُّ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يُقَطِّعُ قِرَاءَتَهُ يَقْرَأُ: {الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ}، ثُمَّ يَقِفُ، {الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ}، ثُمَّ يَقِفُ، وَكَانَ يَقْرَؤُهَا: (مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ) .

1 - सूरह फ़ातिहा।

2927 - सय्यदा उम्मे सलमा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी किरअत को वक़्फ़ों में तक़सीम करते थे आप {الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ} पढ़ते, फिर वक़्फ़ा करके {الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ} पढ़ते, फिर वक़्फ़ा करते और (مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ) पढ़ते थे।

सहीह :अबू दाऊद:4001. अल-इर्वा :343. अहमद:6/302. इब्ने खुज़ैमा:493. अबू याला:6920

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। अबू उबैद ने भी इसे ही इख़्तियार किया है वह इसी तरह पढ़ते हैं, यह्या बिन सईद उमवी वग़ैरह ने इब्ने जुरैज से बवास्ता इब्ने मुलैका सय्यदा

उम्मे सलमा (رضي الله عنها) से ऐसे ही रिवायत की है लेकिन इसकी सनद मुत्तसिल नहीं है। इसलिए कि लैस बिन साद ने इस हदीस को इब्ने अबी मुलैका से बवास्ता याला बिन मम्लक, उम्मे सलमा (رضي الله عنها) से रिवायत है कि उन्होंने हर्फ़ ब हर्फ़ नबी (ﷺ) की किरअत बयान की, और लैस की हदीस ज़्यादा सहीह है नीज़ लैस की हदीस में (مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ) पढ़ने का ज़िक्र नहीं है।

2928 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी अकरम (ﷺ) अबू बक्र व उमर (رضي الله عنهما), ज़ोहरी कहते हैं, मेरे ख़याल में यह भी कहा कि और उस्मान (رضي الله عنه) यह सब (مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ) पढ़ते थे।

ज़ईफ़ुल इस्नाद :तहावी:5419. अबू दाऊद:मुर्सलन:4000.

2928 - حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرٍ مُحَمَّدُ بْنُ أَبَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَيُّوبُ بْنُ سُوَيْدٍ الرَّمْلِيُّ، عَنْ يُونُسَ بْنِ يَزِيدَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَنَسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ وَأَبَا بَكْرٍ وَعُمَرَ، وَأُرَاهُ قَالَ، وَعُثْمَانَ كَانُوا يَقْرَءُونَ {مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ}.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। हम इसे बवास्ता ज़ोहरी, अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) से सिर्फ़ इसी शैख़ अय्यूब बिन सुवैद रमली के तरीक़ से ही जानते हैं और ज़ोहरी के बअज़ शागिर्दों ने ज़ोहरी से रिवायत की है कि नबी (ﷺ), अबू बक्र और उमर (رضي الله عنهما) (مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ) पढ़ते थे, नीज़ अब्दुर्रज़्ज़ाक ने भी मामर से बवास्ता ज़ोहरी, सईद बिन मुसय्यब से रिवायत की है कि नबी अकरम (ﷺ) अबू बक्र व उमर (رضي الله عنهما) (مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ) पढ़ते थे।

2929 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी अकरम (ﷺ) ने पढ़ा : (أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالعَيْنُ بِالعَيْنِ) . (अल- माइदा:45)

2929 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ يُونُسَ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ أَبِي عَلِيِّ بْنِ يَزِيدَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَرَأَ: (أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالعَيْنُ بِالعَيْنِ)

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं, हमें सुवैद बिन नस्र ने वह कहते हैं हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने यूनुस बिन यज़ीद से इसी सनद के साथ ऐसे ही रिवायत की है, अबू अली बिन यज़ीद, यूनुस बिन यज़ीद के भाई हैं और यह हदीस हसन ग़रीब है।

इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (ﷺ) फ़रमाते हैं, इब्ने मुबारक इस हदीस को यूनुस बिन यज़ीद से रिवायत करने में अकेले हैं और अबू उबैद ने भी इसी हदीस की पैरवी करते हुए وَالعَيْنُ بِالعَيْنِ ही पढ़ा है।

2930 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا رِشْدِينُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ زِيَادِ بْنِ أَنْعُمَ، عَنْ عُتْبَةَ بْنِ حُمَيْدٍ، عَنْ عُبَادَةَ بْنِ نُسَيٍّ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ غَنْمٍ، عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَرَأَ: (هَلْ تَسْتَطِيعُ رَبَّكَ)

2930 - सय्यदना मुआज़ बिन जबल (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी अकरम (ﷺ) ने पढ़ा (: هَلْ تَسْتَطِيعُ رَبَّكَ)) . (अल- माइदा: 112)

ज़ईफ़ुल इस्नाद:तबरानी:20/ 128. फी मस्नदिश्शामिय्यीन:2244.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है। हम इसे रिश्दीन बिन साद की हदीस से ही जानते हैं इसकी सनद सहीह नहीं है। क्योंकि रिश्दीन बिन साद और अब्दुर्रहमान बिन ज़ियाद बिन अन्‌अम अफ्रीक़ी, दोनों हदीस में ज़ईफ़ हैं।

2 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ هُودٍ

2 - सूरह हुद

2931 - حَدَّثَنَا الحُسَيْنُ بْنُ مُحَمَّدٍ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ حَفْصٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا ثَابِتٌ البُنَانِيُّ، عَنْ شَهْرِ بْنِ حَوْشَبٍ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقْرَؤُهَا (إِنَّهُ عَمِلَ غَيْرَ صَالِحٍ) .

2931 - सय्यदा उम्मे सलमा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि नबी (ﷺ) पढ़ा करते थे (إِنَّهُ) عَمِلَ غَيْرَ صَالِحٍ (हूद: 46)

सहीह :अबू दाऊद:3983. अस-सिलसिला अस-सहीहा:2809. अबू याला:7020. हिल्या:8/ 301.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं, इस हदीस को कई रुवात ने साबित बुनानी से इसी तरह रिवायत किया है और यह साबित बुनानी की हदीस है। नीज़ यह हदीस बवास्ता शहर बिन हौशब सय्यदा अस्मा बिन्ते यज़ीद (رضي الله عنها) से भी इसी तरह मर्वी है। और मैंने अब्द बिन हुमैद से सुना वह कह रहे थे कि अस्मा बिन्ते यज़ीद उम्मे सलमा अन्सारिया ही हैं।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, मेरे नज़दीक यह दोनों हदीसें एक ही हैं, और शहर बिन हौशब ने उम्मे सलमा अन्सरिया से कई अहादीस रिवायत की हैं और वह अस्मा बिन्ते यज़ीद ही हैं।

नीज़ आयशा (رضي الله عنها) से भी नबी (ﷺ) की ऐसी ही हदीस मर्वी है।

2932 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، وَحَبَّانُ بْنُ هِلاَلٍ، قَالاَ: حَدَّثَنَا هَارُونُ النَّحْوِيُّ، عَنْ ثَابِتٍ البُنَانِيِّ، عَنْ شَهْرِ بْنِ حَوْشَبٍ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَرَأَ هَذِهِ الآيَةَ: (إِنَّهُ عَمِلَ غَيْرَ صَالِحٍ)

2932 - सय्यदा उम्मे सलमा (رضي الله عنها) रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) इस आयत को इस तरह पढ़ते थे: (إِنَّهُ عَمِلَ غَيْرَ صَالِحٍ) (हूद: 46)

सहीह: तख़रीज इस से पहली हदीस में गुज़र चुकी है।

3 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الْكَهْفِ

3 - सूरह कहफ़।

2933 - حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ نَافِعٍ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أُمَيَّةُ بْنُ خَالِدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الجَارِيَةِ العَبْدِيُّ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَرَأَ: {قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَدُنِّي عُذْرًا} مُثَقَّلَةً.

2933 - सय्यदना उबय बिन काब (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने { قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَدُنِّي عُذْرًا} सक़ल [1] के साथ पढ़ा। (अल-कहफ़: 76)

ज़ईफुल इस्नाद : अबू दाऊद:3985. तबरानी:543. तबरी फी तफ्सीरिही: 16/287.

तौज़ीह :(1) यानी ज़ाल पर पेश पढ़ी क्योंकि ज़ाल पर पेश पढ़ना ज़ज्म से सकील (भारी और मुश्किल) है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है हम इसे इसी सनद से ही जानते हैं। उमय्या बिन ख़ालिद सिक़ह् हैं, जबकि अबू जारिया अब्दी मज्हूल रावी है। मैं नहीं जानता कि यह कौन है? और मुझे इसका नाम भी मालूम नहीं।

2934 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ مَنْصُورٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ دِينَارٍ، عَنْ سَعْدِ بْنِ أَوْسٍ، عَنْ مِصْدَعٍ أَبِي يَحْيَى، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَرَأَ: {فِي عَيْنٍ حَمِئَةٍ}.

2934 - सय्यदना उबय बिन काब (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने पढ़ा : { فِي عَيْنٍ حَمِئَةٍ } (अल- कहफ़: 86)

सहीहुल मतन: अबू दाऊद:3986. तयालिसी:536. बसरी फी तफ्सीरिही12/ 165.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है हम इसे इसी सनद से ही जानते हैं और सहीह किरअत वही है जो इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से मर्वी है। नीज़ बयान किया जाता है कि इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) और अम्र बिन आस (رضي الله عنه) का इस आयत की किरअत में इख़्तिलाफ़ हुआ वह यह बात काब अह्बार के पास ले गए अगर उन (अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله عنه) के पास नबी (ﷺ) की कोई हदीस होती तो उन्हें यही काफी थी और काब के पास जाने की जरूरत नहीं थी।

4 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الرُّومِ

4 - सूरह रूम।

2935 - حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الجَهْضَمِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ سُلَيْمَانَ الأَعْمَشِ، عَنْ عَطِيَّةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: لَمَّا كَانَ يَوْمُ بَدْرٍ ظَهَرَتِ الرُّومُ عَلَى فَارِسَ، فَأَعْجَبَ ذَلِكَ الْمُؤْمِنِينَ، فَنَزَلَتْ {الم غُلِبَتِ الرُّومُ}، إِلَى قَوْلِهِ: {يَفْرَحُ الْمُؤْمِنُونَ} قَالَ: فَفَرِحَ الْمُؤْمِنُونَ بِظُهُورِ الرُّومِ عَلَى فَارِسَ.

2935 - सय्यदना अबू सईद (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि जब बद्र का दिन था तो { الم غُلِبَتِ الرُّومُ } से लेकर {يَفْرَحُ الْمُؤْمِنُونَ} तक (अर- रूम: 1- 4) आयात नाजिल हुई। अहले ईमान रूम के फारस पर गलबे की वजह से खुश हुए थे।

सहीह: तबरी फ़ी तफ्सीरिही:21/ 2021.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस इस सनद से हसन ग़रीब है नीज़ غُلِبَتِ और (1) غلبت दोनों तरह से पढ़ा गया है। वह मग्लूब हुए थे फिर ग़ालिब आ गए और नस्र बिन अली ने غَلَبَتْ ही पढ़ा है।

तौज़ीह :कुर्रा-ए-अशरा ने غُلِبَت ही पढ़ा है और غَلَبَتْ की किरअत शाज़ है।

2936 - अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि उन्होंने नबी (ﷺ) के सामने {خَلَقَكُمْ مِنْ ضَعْفٍ} (अर-रूम: 54) पढ़ा तो आप ने फ़रमाया, " (مِنْ ضُعْفٍ) . (पढ़ो)

हसन: अबू दाऊद:3978. अहमद:2/58. उकैली फी ज़ोफा:2/238.

2936 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حُمَيْدٍ الرَّازِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا نُعَيْمُ بْنُ مَيْسَرَةَ النَّحْوِيُّ، عَنْ فُضَيْلِ بْنِ مَرْزُوقٍ، عَنْ عَطِيَّةَ العَوْفِيِّ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّهُ قَرَأَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ {خَلَقَكُمْ مِنْ ضَعْفٍ} فَقَالَ: (مِنْ ضُعْفٍ) .

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं हमें अब्द बिन हुमैद ने उन्हें यज़ीद बिन हारून ने फ़ुज़ैल बिन मर्ज़ूक़ से उन्होंने अतिया से बवास्ता इब्ने उमर (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) से ऐसी ही हदीस बयान की है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़र्माते हैं: ये हदीस हसन गरीब है हम इसे फ़ुजैल बिन मर्जूक के तरीक़ से ही जानते हैं।

5 - सूरह क़मर।

5 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الْقَمَرِ

2937 - अब्दुल्लाह बिन मसऊद से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) {فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ} (अल-क़मर: 17) पढ़ा करते थे।

बुख़ारी:3341. मुस्लिम:823. अबू दाऊद:3994.

2937 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ الزُّبَيْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقْرَأُ: {فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ}.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

6 - सूरह वाक़िया।

6 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الْوَاقِعَةِ

2938 - حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ هِلَالٍ الصَّوَّافُ الْبَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ الضُّبَعِيُّ، عَنْ هَارُونَ الأَعْوَرِ، عَنْ بُدَيْلِ بْنِ مَيْسَرَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ شَقِيقٍ، عَنْ عَائِشَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقْرَأُ: {فَرُوحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّةُ نَعِيمٍ}.

2938 - सय्यदा आयशा (رضی اللہ عنہا) रिवायत करती हैं कि नबी (ﷺ) { فَرُوحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّةُ نَعِيمٍ} . : पढ़ा करते थे।

सहीहुल इस्नाद:अबू दाऊद:3991. अहमद:6/64. हाकिम:2/236. अबू याला:4515.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे हारून आवर की सनद से ही जानते हैं।

7 - सूरह लैल

7 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ اللَّيْلِ

2939 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، قَالَ: قَدِمْنَا الشَّامَ فَأَتَانَا أَبُو الدَّرْدَاءِ، فَقَالَ: أَفِيكُمْ أَحَدٌ يَقْرَأُ عَلَيَّ قِرَاءَةَ عَبْدِ اللهِ؟ قَالَ: فَأَشَارُوا إِلَيَّ، فَقُلْتُ: نَعَمْ أَنَا، قَالَ: كَيْفَ سَمِعْتَ عَبْدَ اللهِ، يَقْرَأُ هَذِهِ الآيَةَ {وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَى}؟ قَالَ: قُلْتُ: سَمِعْتُهُ يَقْرَؤُهَا: {وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَى} وَالذَّكَرِ وَالأُنْثَى، فَقَالَ أَبُو الدَّرْدَاءِ: وَأَنَا

2939 - अल्क़मा (رحمہ اللہ) रिवायत करते हैं; हम शाम गए तो हमारे पास सय्यदना अबू दर्दा (رضی اللہ عنہ) तशरीफ़ लाये, फ़रमाने लगे :क्या तुम में कोई शख़्स है जो अब्दुल्लाह बिन मसऊद की किरअत पर पढ़ सकता हो? रावी कहते हैं, लोगों ने मेरी तरफ़ इशारा कर दिया, मैंने कहा : जी मैं पढ़ सकता हूँ उन्होंने पूछा :तुमने अब्दुल्लाह बिन मसऊद को यह आयत { وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَى} (अल- लैल: 1) किस तरह पढ़ते हुए सुना है? मैंने कहा :मैंने उन्हें इस तरह पढ़ते सुना है : { وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَى وَالذَّكَرِ وَالأُنْثَى} तो अबू दर्दा

وَاللَّهِ هَكَذَا سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَقْرَؤُهَا، وَهَؤُلاَءِ يُرِيدُونَنِي أَنْ أَقْرَأَهَا {وَمَا خَلَقَ} فَلاَ أُتَابِعُهُمْ.

(ﷺ) ने फ़रमाया, " अल्लाह की क़सम! मैंने भी रसूलुल्लाह (ﷺ) को ऐसे ही पढ़ते सुना था और यह लोग चाहते हैं कि मैं {وَمَا خَلَقَ} पढ़ूँ, लेकिन मैं उनके पीछे नहीं लगूंगा।

बुख़ारी:4944. मुस्लिम:824.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और अब्दुल्लाह बिन मसऊद (ﷺ) की किरअत इस तरह थी: {وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَى وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّى وَالذَّكَرِ وَالأُنْثَى}

8 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الذَّارِيَاتِ

8 - सूरह ज़ारियात।

2940 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: أَقْرَأَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ (إِنِّي أَنَا الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ) .

2940 - अब्दुल्लाह बिन मसऊद बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे इस तरह पढ़ाया (إِنِّي أَنَا الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ:) (अज़-ज़ारियात:58)

सहीहुल मतन:अबू दाऊद:3993. अहमद:1/394. हाकिम:2/234. अबू याला:5333.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

9 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الْحَجِّ

9 - सूरह हज

2941 - حَدَّثَنَا أَبُو زُرْعَةَ، وَالفَضْلُ بْنُ أَبِي طَالِبٍ وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ بِشْرٍ، عَنِ الحَكَمِ بْنِ عَبْدِ الْمَلِكِ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ:

2941 - सय्यदना इमरान बिन हुसैन (ﷺ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने { وَتَرَى النَّاسَ سُكَارَى وَمَا هُمْ بِسُكَارَى} (अल- हज:22) पढ़ा।

सहीह।

أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَرَأَ:

{وَتَرَى النَّاسَ سُكَارَى وَمَا هُمْ بِسُكَارَى}.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन है, हकम बिन अब्दुल मलिक ने भी क़तादा से इसी तरह रिवायत की है और हम नहीं जानते कि क़तादा ने नबी (ﷺ) के सहाबा में से अबू तुफ़ैल और अनस (رضي الله عنه) के अलावा किसी से सिमा (सुनना) किया हो और मेरे नज़दीक यह हदीस मुख़्तसर है, जबकि क़तादा से बवास्ता हसन बिन इमरान बिन हुसैन (رضي الله عنه) से मर्वी है कि हम नबी (ﷺ) के साथ सफ़र में थे आप ने फ़रमाया, "{يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ} (अल-हज:22) पढ़ी फिर पूरी हदीस बयान की और मेरे नज़दीक हकम बिन अब्दुल मलिक की हदीस इस हदीस से मुख़्तसर है।

10 بَابُ فَاسْتَذْكِرُوا الْقُرْآنَ

2942 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مَنْصُورٍ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: بِئْسَمَا لأَحَدِهِمْ، أَوْ لأَحَدِكُمْ أَنْ يَقُولَ: نَسِيتُ آيَةَ كَيْتَ وَكَيْتَ بَلْ هُوَ نُسِّيَ، فَاسْتَذْكِرُوا الْقُرْآنَ، فَوَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَهُوَ أَشَدُّ تَفَصِّيًا مِنْ صُدُورِ الرِّجَالِ مِنَ النَّعَمِ مِنْ عُقُلِهِ.

10 - कुरआन को याद करते रहो।

2942 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ''इन में से किसी या तुम में से किसी शख़्स के लिए यह कहना बुरी बात है कि मैं फुलां फुलां आयत भूल गया, बल्कि उसे भुला दी गई है, चुनांचे तुम कुरआन को याद किया करो, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! कुरआन लोगों के सीने से रस्सियों में बंधने वाले ऊंटों से भी ज़्यादा जल्दी भागता है।''

बुख़ारी:5032. मुस्लिम:790. निसाई:943. इब्ने हिब्बान:762

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

11 - कुरआन सात हुरूफ़ (किरअतों) पर नाज़िल हुआ है।

11 بَابُ مَا جَاءَ أُنْزِلَ الْقُرْآنُ عَلَى سَبْعَةِ أَحْرُفٍ

2943 - सय्यदना मिस्वर बिन मख़रमा (رضي الله عنه) और अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल कारी बयान करते हैं कि उन्होंने उमर बिन ख़त्ताब (رضي الله عنه) से सुना वह कह रहे थे कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़िन्दगी में हिशाम बिन हकीम बिन हिजाम के पास से गुजरा वह सूरह फुर्कान पढ़ रहे थे मैंने उनकी तिलावत पर कान लगाए तो वह बहुत से अल्फ़ाज़ ऐसे पढ़ रहे थे जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे नहीं सिखाये थे, क़रीब था कि मैं उससे नमाज़ में ही लड़ पड़ता, फिर मैंने सलाम फेरने तक मोहलत दी। जब उन्होंने सलाम फेरा तो मैंने उन्हें उनकी चादर खींच लिया, मैंने कहा : जो किरअत मैंने तुम्हें करते हुए सुना यह सूरत तुम्हें किस ने पढ़ाई है? तो उन्होंने कहा : मुझे यह रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पढ़ाई थी, फिर मैं उन्हें खींचता हुआ रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास ले गया मैंने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! मैंने इस शख़्स को सुना यह सूरह फुर्कान ऐसे अल्फ़ाज़ के साथ पढ़ रहा था जो आप ने मुझे नहीं पढ़ाये हालांकि आप(ﷺ) ने मुझे भी सूरह फुर्कान पढ़ाई है, नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "उमर इसे छोड़ दो।" फिर फ़रमाया, "हिशाम तुम पढ़ो।" तो हिशाम ने वही

2943 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الخَلاَّلُ وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ، وَعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدٍ القَارِيِّ، أَخْبَرَاهُ أَنَّهُمَا سَمِعَا عُمَرَ بْنَ الخَطَّابِ، يَقُولُ: مَرَرْتُ بِهِشَامِ بْنِ حَكِيمِ بْنِ حِزَامٍ وَهُوَ يَقْرَأُ سُورَةَ الفُرْقَانِ فِي حَيَاةِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاسْتَمَعْتُ قِرَاءَتَهُ، فَإِذَا هُوَ يَقْرَأُ عَلَى حُرُوفٍ كَثِيرَةٍ لَمْ يُقْرِئْنِيهَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَكِدْتُ أُسَاوِرُهُ فِي الصَّلاَةِ، فَنَظَرْتُهُ حَتَّى سَلَّمَ، فَلَمَّا سَلَّمَ لَبَّبْتُهُ بِرِدَائِهِ، فَقُلْتُ: مَنْ أَقْرَأَكَ هَذِهِ السُّورَةَ الَّتِي سَمِعْتُكَ تَقْرَؤُهَا؟ فَقَالَ: أَقْرَأَنِيهَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. قَالَ: قُلْتُ لَهُ: كَذَبْتَ وَاللَّهِ، إِنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَهُوَ

أَقْرَأَنِي هَذِهِ السُّورَةَ الَّتِي تَقْرَؤُهَا. فَانْطَلَقْتُ أَقُودُهُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي سَمِعْتُ هَذَا يَقْرَأُ سُورَةَ الفُرْقَانِ عَلَى حُرُوفٍ لَمْ تُقْرِئْنِيهَا، وَأَنْتَ أَقْرَأْتَنِي سُورَةَ الفُرْقَانِ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَرْسِلْهُ يَا عُمَرُ، اقْرَأْ يَا هِشَامُ، فَقَرَأَ عَلَيْهِ القِرَاءَةَ الَّتِي سَمِعْتُ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: هَكَذَا أُنْزِلَتْ. ثُمَّ قَالَ لِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اقْرَأْ يَا عُمَرُ فَقَرَأْتُ القِرَاءَةَ الَّتِي أَقْرَأَنِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: هَكَذَا أُنْزِلَتْ. ثُمَّ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ هَذَا القُرْآنَ أُنْزِلَ عَلَى سَبْعَةِ أَحْرُفٍ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ.

किरअत की जो मैंने सुनी थी। नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "इसी तरह उतरी है।" फिर नबी (ﷺ) ने मुझ से फ़रमाया, "उमर तुम पढ़ो।" तो मैंने वही किरअत पढ़ी जो नबी (ﷺ) ने मुझे पढ़ाई थी, नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐसे ही उतरी है।" फिर नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह कुरआन सात हुरूफ़ (किरातों) पर नाज़िल हुआ है इन में से जो आसान लगे वही पढ़ो।"

बुख़ारी:2419. मुस्लिम:818. अबू दाऊद:1475. अहमद:1/40, 42

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है।

नीज़ मालिक बिन अनस ने भी इसे ज़ोहरी से इसी सनद के साथ ऐसे ही रिवायत किया है लेकिन इसमें मिस्वर बिन मख़रमा (رضي الله عنه) का ज़िक्र नहीं है।

2944 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ مُوسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، عَنْ عَاصِمٍ، عَنْ زِرِّ بْنِ حُبَيْشٍ، عَنْ أُبَيِّ

2944 - सय्यदना उबय बिन काब (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जिब्रील (عليه السلام) से मिले, आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ जिब्रील मुझे अनपढ़ उम्मत की तरफ़ भेजा गया

بْنِ كَعْبٍ، قَالَ: لَقِيَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جِبْرِيلَ، فَقَالَ: يَا جِبْرِيلُ إِنِّي بُعِثْتُ إِلَى أُمَّةٍ أُمِّيِّينَ: مِنْهُمُ العَجُوزُ، وَالشَّيْخُ الكَبِيرُ، وَالغُلَامُ، وَالجَارِيَةُ، وَالرَّجُلُ الَّذِي لَمْ يَقْرَأْ كِتَابًا قَطُّ، قَالَ: يَا مُحَمَّدُ إِنَّ القُرْآنَ أُنْزِلَ عَلَى سَبْعَةِ أَحْرُفٍ.

है जिनमें बूढ़ी औरत, बूढ़ा मर्द, लड़के लड़कियां और ऐसे शख़्स भी जिन्होंने कभी कोई किताब नहीं पढ़ी, उन्होंने कहा: ऐ मुहम्मद (ﷺ)! कुरआन सात हुरूफ़ (किरातों) पर नाज़िल किया गया है।

हसन सहीह: तयालिसी: 543. इब्ने अबी शैबा: 10/518. अहमद: 5/132. इब्ने हिब्बान: 739.

वज़ाहत: इस बारे में उमर, हुज़ैफा बिन यमान, अबू हुरैरा, अबू अय्यूब अंसारी की बीवी उम्मे अय्यूब, समुरा, इब्ने अब्बास, अबू जुहैम बिन हारिस बिन सिम्मा, अम्र बिन आस और अबू बक्र (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। और कई तुरुक से सय्यदना उबय बिन काब (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

12 بَابٌ مَا قَعَدَ قَوْمٌ فِي مَسْجِدٍ يَتْلُونَ كِتَابَ اللهِ وَيَتَدَارَسُونَهُ بَيْنَهُمْ إِلاَّ نَزَلَتْ عَلَيْهِمُ السَّكِينَةُ..

12 - जो लोग मस्जिद में बैठ कर अल्लाह की किताब की तिलावत करें उन पर सकीनत नाज़िल होती है।

2945 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ نَفَّسَ عَنْ أَخِيهِ كُرْبَةً مِنْ كُرَبِ الدُّنْيَا نَفَّسَ اللَّهُ عَنْهُ كُرْبَةً مِنْ كُرَبِ يَوْمِ القِيَامَةِ، وَمَنْ

2945 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस ने अपने भाई से दुनिया की तक्लीफ़ों में से कोई तक्लीफ़ दूर की अल्लाह तआला उस से क़यामत की तक्लीफ़ों में से एक तक्लीफ़ दूर कर देंगे, जिस ने मुसलमान के ऐब को छिपाया अल्लाह उसके उयूब को दुनिया और आख़िरत में छिपाएंगे, जिसने किसी तंगदस्त पर आसानी

سَتَرَ مُسْلِمًا سَتَرَهُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ، وَمَنْ يَسَّرَ عَلَى مُعْسِرٍ يَسَّرَ اللَّهُ عَلَيْهِ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ، وَاللَّهُ فِي عَوْنِ العَبْدِ مَا كَانَ العَبْدُ فِي عَوْنِ أَخِيهِ، وَمَنْ سَلَكَ طَرِيقًا يَلْتَمِسُ فِيهِ عِلْمًا سَهَّلَ اللَّهُ لَهُ طَرِيقًا إِلَى الجَنَّةِ، وَمَا قَعَدَ قَوْمٌ فِي مَسْجِدٍ يَتْلُونَ كِتَابَ اللهِ وَيَتَدَارَسُونَهُ بَيْنَهُمْ، إِلاَّ نَزَلَتْ عَلَيْهِمُ السَّكِينَةُ، وَغَشِيَتْهُمُ الرَّحْمَةُ، وَحَفَّتْهُمُ الْمَلاَئِكَةُ، وَمَنْ أَبْطَأَ بِهِ عَمَلُهُ لَمْ يُسْرِعْ بِهِ نَسَبُهُ.

की अल्लाह दुनिया व आख़िरत में उस पर आसानी करेंगे, अल्लाह तआला अपने बन्दे की मदद में रहते हैं जब तक बन्दा अपने भाई की मदद में रहता है, जो शख़्स किसी रास्ते पर चल कर उसमें इल्म तलाश करे अल्लाह तआला उस के लिए जन्नत के रास्ते को आसान कर देते हैं और जो लोग मस्जिद में बैठ कर अल्लाह की किताब की तिलावत करे और आपस में एक दूसरे को पढ़ाएं तो उन पर सकीनत नाजिल होती है, उन्हें रहमत ढाँप लेती है और फ़रिश्ते उनको घेर लेते हैं और जिस शख़्स को उसके अमल ने ही पीछे कर दिया उसे उसका नसब आगे नहीं बढ़ा सकता।''

इस की तख़रीज 1425 के तहत गुज़र चुकी है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, कई रावियों ने इसी तरह ही आमश से बवास्ता अबू सालेह, अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से नबी (ﷺ) की हदीस बयान की है। अस्बात बिन मुहम्मद रिवायत करते हैं कि आमश ने कहा :मुझे अबू सालेह से बवास्ता अबू हुरैरा (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) की हदीस बयान की गई है फिर इस हदीस का कुछ हिस्सा बयान किया।

13 بَابٌ فِي كَمْ أَقْرَأُ القُرْآنَ؟

13 - मैं कुरआन कितने दिन में पढ़ूं?

2946 - حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ أَسْبَاطِ بْنِ مُحَمَّدٍ القُرَشِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ مُطَرِّفٍ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ فِي كَمْ أَقْرَأُ القُرْآنَ؟ قَالَ: اخْتِمْهُ فِي شَهْرٍ.

2946 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं कितने दिनों में कुरआन पढ़ूं? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "इसे एक महीने में ख़त्म करो।'' मैंने अर्ज़ किया, मैं इस से ज़्यादा ताक़त रखता हूँ आप(ﷺ) ने फ़रमाया " इसे

قُلْتُ: إِنِّي أُطِيقُ أَفْضَلَ مِنْ ذَلِكَ. قَالَ: اخْتِمْهُ فِي عِشْرِينَ قُلْتُ: إِنِّي أُطِيقُ أَفْضَلَ مِنْ ذَلِكَ. قَالَ: اخْتِمْهُ فِي خَمْسَةَ عَشَرَ. قُلْتُ: إِنِّي أُطِيقُ أَفْضَلَ مِنْ ذَلِكَ. قَالَ: اخْتِمْهُ فِي عَشْرٍ. قُلْتُ: إِنِّي أُطِيقُ أَفْضَلَ مِنْ ذَلِكَ. قَالَ: اخْتِمْهُ فِي خَمْسٍ. قُلْتُ: إِنِّي أُطِيقُ أَفْضَلَ مِنْ ذَلِكَ. قَالَ: فَمَا رَخَّصَ لِي.

बीस दिनों में ख़त्म करो।'' मैंने अर्ज़ किया, मैं इस से ज़्यादा ताक़त रखता हूँ आप(ﷺ) ने फ़रमाया "इसे पन्द्रह दिनों में ख़त्म करो।'' मैंने अर्ज़ किया, मैं इस से ज़्यादा ताक़त रखता हूँ आप (ﷺ) ने फ़रमाया "इसे दस दिनों में ख़त्म करो।'' मैंने अर्ज़ किया, मैं इस से भी ज़्यादा ताक़त रखता हूँ आपने फ़र्माया: "इसे पाँच दिनों में ख़त्म करो।" मैंने अर्ज़ किया: "मैं इससे भी ज़्यादा ताक़त रखता हूँ। रावी कहते हैं, आप (ﷺ) ने मुझे रूख़्सत दे दी।

ज़ईफुल इस्नाद:अख़्रजहू बे-नहविही: 1978. मुस्लिम:1159. अबू दाऊद:1390. इब्ने माजह:1346. निसाई:2400.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है बतरीक अबू बुर्दा, अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) से ग़रीब समझी जाती है।

नीज़ यह हदीस कई तर्ज़ पर अब्दुर्रहमान बिन अम्र (رضي الله عنه) से मर्वी है।

अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स तीन दिन से कम में कुरआन पढ़े उस ने कुरआन समझा ही नहीं।'' और अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) से यह भी मर्वी है कि नबी (ﷺ) ने उन से फ़रमाया, "कुरआन चालीस दिनों में पढ़ा करो।''

इस्हाक़ बिन इब्राहीम कहते हैं, इस हदीस की वजह से हम इस बात को अच्छा नहीं समझते कि आदमी चालीस दिन गुज़ारे और उसने क़ुरआन न पढ़ा हो।

बअ़ज़ उलमा, नबी (ﷺ) से मर्वी हदीस की वजह से कहते हैं कि क़ुरआन तीन से कम दिनों में न पढ़ा जाए। जबकि बअ़ज़ उलमा ने इसकी रूख़्सत दी है।

सय्यदना उस्मान बिन अफ्फ़ान के बारे में मर्वी है कि वह वित्र की एक रकअत में क़ुरआन पढ़ते थे।

सईद बिन जुबैर (رضي الله عنه) से मर्वी है कि उन्होंने काबा के अन्दर एक रकअत में क़ुरआन पढ़ा था।

नीज़ अहले इल्म के नज़दीक किरअत में तर्तील (ठहर ठहर कर पढ़ना) मुस्तहब है।

2947 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "चालीस दिनों में कुरआन पढ़ा करो।"

सहीह :अबू दाऊद:1395. निसाई फ़ी फ़ज़ाइलिल - कुरआन:93.

2947 - حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي النَّضْرِ الْبَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْحَسَنِ هُوَ ابْنُ شَقِيقٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الْمُبَارَكِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ الفَضْلِ، عَنْ وَهْبِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَهُ: اقْرَأِ القُرْآنَ فِي أَرْبَعِينَ هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन ग़रीब है और बअज़ ने इसे मामर से बवास्ता सिमाक बिन फ़ज़ल, वहब बिन मुनब्बेह से रिवायत किया है कि नबी (ﷺ) ने अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) को हुक्म दिया कि वह चालीस दिनों में कुरआन पढ़ें।

2948 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि एक आदमी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! अल्लाह तआला को कौनसा अमल ज़्यादा पसंद है? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "उतरने वाला, कूच करने वाला" उस ने कहा :उतरने वाला, कूच करने वाला क्या है? आप ने फ़रमाया, "वह शख़्स जो शुरू से आख़िर तक कुरआन पढ़ता है जब भी उतरता है फिर कूच कर जाता है।"

ज़ईफ़ुल इस्नाद :अख़रजहू तबरानी फ़िल कबीर:12783. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा:1834.

2948 - حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الجَهْضَمِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الهَيْثَمُ بْنُ الرَّبِيعِ، قَالَ: حَدَّثَنَا صَالِحٌ الْمُرِّيُّ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ زُرَارَةَ بْنِ أَوْفَى، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللهِ أَيُّ العَمَلِ أَحَبُّ إِلَى اللهِ؟ قَالَ: الحَالُّ الْمُرْتَحِلُ. قَالَ: وَمَا الحَالُّ الْمُرْتَحِلُ؟ قَالَ: الَّذِي يَضْرِبُ مِنْ أَوَّلِ القُرْآنِ إِلَى آخِرِهِ كُلَّمَا حَلَّ ارْتَحَلَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस ग़रीब है हम इसी तरीक़ के ज़रिए ही इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से जानते हैं और यह सनद क़वी नहीं है।

अबू ईसा कहते हैं, हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने वह कहते हैं, हमें सलमा बिन इब्राहीम ने उन्हें सालेह मुर्री ने क़तादा से बवास्ता ज़ुरारा बिन औफ़ा, नबी (ﷺ) से इसी मफ़्हूम की हदीस बयान की है इसमें इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) का ज़िक्र नहीं किया।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, मेरे नज़दीक यह हदीस नस्र बिन अली की हैसम बिन रबीअ से रिवायतकर्दा हदीस से ज़्यादा सहीह है।

2949 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا النَّضْرُ بْنُ شُمَيْلٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الشِّخِّيرِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَمْ يَفْقَهْ مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ فِي أَقَلَّ مِنْ ثَلاَثٍ.

2949 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स तीन दिन से कम में कुरआन पढ़े उस ने कुरआन को समझा ही नहीं।''

सहीह :अबू दाऊद :1390. इब्ने माजह:1347. अहमद:2/ 164. दारमी:1501. इब्ने हिब्बान:758

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं, यह हदीस हसन सहीह है। हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने भी बवास्ता मुहम्मद बिन जाफ़र, शोबा से इसी सनद के साथ ऐसी ही हदीस बयान की है।

ख़ुलासा

- (مَٰلِكِ يَوْمِ الدِّينِ) की एक किरअत مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ भी है।
- किरअत वही अपनाई जाए जिस पर अहदे सहाबा में इत्तिफ़ाक़ था।
- किरअतों का इख़्तिलाफ़ उम्मत को इख़्तिलाफात में धकेल सकता था।
- सूरह क़मर में هل من مدكر दाल के साथ ही पढ़ा जाए।
- सूरह लैल के हवाले से अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) की किरअत शाज़ है। लिहाज़ा उस किरअत को पढ़ा जाए जिस पर इत्तिफ़ाक़ है।
- कुरआन को याद करते रहना चाहिए क्योंकि यह बहुत जल्दी भूल जाता है।
- कुरआन का नुज़ूल सात किरअतों पर हुआ था।
- कुरआन पढ़ने वाले लोगों पर अल्लाह की तरफ़ से सकीनत नाजिल होती है।
- तीन दिन से कम में कुरआन को ख़त्म नहीं करना चाहिए।